

दादा भगवान प्ररूपित

# पैसों का व्यवहार



पैसे कमाना बुद्धि का खेल नहीं है, न ही मेहनत का फल है,  
वह तो आपने पूर्व जन्म में जो पुण्य किए थे, उसके फलस्वरूप आपको मिलते हैं।

दादा भगवान प्ररूपित

# पैसों का व्यवहार

मूल गुजराती संकलन : डॉ. नीरू बहन अमीन  
हिन्दी अनुवाद : महात्मागण

**प्रकाशक** : अजीत सी. पटेल  
दादा भगवान विज्ञान फाउन्डेशन  
1, वरूण अपार्टमेन्ट, 37, श्रीमाणी सोसायटी,  
नवरंगपुरा पुलिस स्टेशन के सामने,  
नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380009,  
Gujarat, India.  
**फोन** : +91 93 2866 1166 / 93 2866 1177

© Dada Bhagwan Foundation,  
5, Mamta Park Society, B\h. Navgujarat College,  
Usmanpura, Ahmedabad - 380014, Gujarat, India.  
**Email** : info@dadabhagwan.org  
**Tel** : + 91 93 2866 1166 / 93 2866 1177  
**No part of this book may be used or reproduced in any manner  
whatsoever without written permission from the holder of the copyrights.**

**प्रथम संस्करण** : 500, प्रतियाँ, नवम्बर, 2020

**भाव मूल्य** : 'परम विनय' और 'मैं कुछ भी  
जानता नहीं', यह भाव!

**द्रव्य मूल्य** : 200 रुपए

**मुद्रक** : अंबा मल्टीप्रिन्ट  
B-99, इलेक्ट्रॉनिक्स GIDC,  
क-6 रोड, सेक्टर-25,  
गांधीनगर-382044.  
**फोन** : (079) 39830341

## त्रिमंत्र



नमो अरिहंताणं  
नमो सिद्धाणं  
नमो आयरियाणं  
नमो ऊवज्जायाणं  
नमो लोए सव्वसाहूणं  
एसो पंच नमुक्कारो  
सव्व पावप्पणासणो  
मंगलाणं च सव्वेसिं  
पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ३ ॥

जय सच्चिदानंद



## ‘दादा भगवान’ कौन ?

जून 1958 की एक संध्या का करीब छः बजे का समय, भीड़ से भरा सूरत शहर का रेल्वे स्टेशन, प्लेटफार्म नं. 3 की बेंच पर बैठे श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल रूपी देहमंदिर में कुदरती रूप से, अक्रम रूप में, कई जन्मों से व्यक्त होने के लिए आतुर ‘दादा भगवान’ पूर्ण रूप से प्रकट हुए। और कुदरत ने सर्जित किया अध्यात्म का अद्भुत आश्चर्य। एक घंटे में उन्हें विश्वदर्शन हुआ। ‘मैं कौन? भगवान कौन? जगत् कौन चलाता है? कर्म क्या? मुक्ति क्या?’ इत्यादि जगत् के सारे आध्यात्मिक प्रश्नों के संपूर्ण रहस्य प्रकट हुए। इस तरह कुदरत ने विश्व के सम्मुख एक अद्वितीय पूर्ण दर्शन प्रस्तुत किया और उसके माध्यम बने श्री अंबालाल मूलजी भाई पटेल, गुजरात के चरोतर क्षेत्र के भादरण गाँव के पाटीदार, कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय करनेवाले, फिर भी पूर्णतया वीतराग पुरुष!

‘व्यापार में धर्म होना चाहिए, धर्म में व्यापार नहीं’, इस सिद्धांत से उन्होंने पूरा जीवन बिताया। जीवन में कभी भी उन्होंने किसीके पास से पैसा नहीं लिया, बल्कि अपनी कमाई से भक्तों को यात्रा करवाते थे।

उन्हें प्राप्ति हुई, उसी प्रकार केवल दो ही घंटों में अन्य मुमुक्षुजनों को भी वे आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे, उनके अद्भुत सिद्ध हुए ज्ञानप्रयोग से। उसे अक्रम मार्ग कहा। अक्रम, अर्थात् बिना क्रम के, और क्रम अर्थात् सीढ़ी दर सीढ़ी, क्रमानुसार ऊपर चढ़ना। अक्रम अर्थात् लिफ्ट मार्ग, शॉर्ट कट।

वे स्वयं प्रत्येक को ‘दादा भगवान कौन?’ का रहस्य बताते हुए कहते थे कि “यह जो आपको दिखते हैं वे दादा भगवान नहीं हैं, वे तो ‘ए.एम.पटेल’ हैं। हम ज्ञानीपुरुष हैं और भीतर प्रकट हुए हैं, वे ‘दादा भगवान’ हैं। दादा भगवान तो चौदह लोक के नाथ हैं। वे आप में भी हैं, सभी में हैं। आपमें अव्यक्त रूप में रहे हुए हैं और ‘यहाँ’ हमारे भीतर संपूर्ण रूप से व्यक्त हुए हैं। दादा भगवान को मैं भी नमस्कार करता हूँ।”

## निवेदन

ज्ञानी पुरुष संपूज्य दादा भगवान के श्रीमुख से अध्यात्म तथा व्यवहारज्ञान से संबंधित जो वाणी निकली, उसको रिकॉर्ड करके, संकलन तथा संपादन करके पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया जाता है। विभिन्न विषयों पर निकली सरस्वती का अद्भुत संकलन इस पुस्तक में हुआ है, जो नए पाठकों के लिए वरदान रूप साबित होगा।

प्रस्तुत अनुवाद में यह विशेष ध्यान रखा गया है कि वाचक को दादाजी की ही वाणी सुनी जा रही है, ऐसा अनुभव हो, जिसके कारण शायद कुछ जगहों पर अनुवाद की वाक्य रचना हिन्दी व्याकरण के अनुसार त्रुटिपूर्ण लग सकती है, लेकिन यहाँ पर आशय को समझकर पढ़ा जाए तो अधिक लाभकारी होगा।

प्रस्तुत पुस्तक में कई जगहों पर कोष्ठक में दर्शाए गए शब्द या वाक्य परम पूज्य दादाश्री द्वारा बोले गए वाक्यों को अधिक स्पष्टतापूर्वक समझाने के लिए लिखे गए हैं। जबकि कुछ जगहों पर अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी अर्थ के रूप में रखे गए हैं। दादाश्री के श्रीमुख से निकले कुछ गुजराती शब्द ज्यों के त्यों *इटालिक्स* में रखे गए हैं, क्योंकि उन शब्दों के लिए हिन्दी में ऐसा कोई शब्द नहीं है, जो उसका पूर्ण अर्थ दे सके। हालांकि उन शब्दों के समानार्थी शब्द अर्थ के रूप में, कोष्ठक में और पुस्तक के अंत में भी दिए गए हैं।

ज्ञानी की वाणी को हिन्दी भाषा में यथार्थ रूप से अनुवादित करने का प्रयत्न किया गया है किन्तु दादाश्री के आत्मज्ञान का सही आशय, ज्यों का त्यों तो, आपको गुजराती भाषा में ही अवगत होगा। जिन्हें ज्ञान की गहराई में जाना हो, ज्ञान का सही मर्म समझना हो, वह इस हेतु गुजराती भाषा सीखें, ऐसा हमारा अनुरोध है।

अनुवाद से संबंधित कमियों के लिए आपसे क्षमाप्रार्थी हैं।



## आत्मज्ञान प्राप्ति की प्रत्यक्ष लिंक

‘मैं तो कुछ लोगों को अपने हाथों सिद्धि प्रदान करने वाला हूँ। बाद में अनुगामी चाहिए या नहीं चाहिए? बाद में लोगों को मार्ग तो चाहिए न?’

- दादाश्री

परम पूज्य दादाश्री गाँव-गाँव, देश-विदेश परिभ्रमण करके मुमुक्षुजनों को सत्संग और आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे। आप श्री ने अपने जीवनकाल में ही पूज्य डॉ. नीरू बहन अमीन (नीरू माँ) को आत्मज्ञान प्राप्त करवाने की ज्ञानसिद्धि प्रदान की थी। दादाश्री के देहविलय पश्चात् नीरू माँ उसी प्रकार मुमुक्षुजनों को सत्संग और आत्मज्ञान की प्राप्ति, निमित्त भाव से करवा रही थीं। पूज्य दीपक भाई देसाई को दादाश्री ने सत्संग करने की सिद्धि प्रदान की थी। नीरू माँ की उपस्थिति में ही उनके आशीर्वाद से पूज्य दीपक भाई देश-विदेश में कई जगहों पर जाकर मुमुक्षुओं को आत्मज्ञान करवा रहे थे, जो नीरू माँ के देहविलय पश्चात् आज भी जारी है। इस आत्मज्ञान प्राप्ति के बाद हजारों मुमुक्षु संसार में रहते हुए, ज़िम्मेदारियाँ निभाते हुए भी मुक्त रहकर आत्मरमणता का अनुभव करते हैं।

ग्रंथ में मुद्रित वाणी मोक्षार्थी को मार्गदर्शन में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी, लेकिन मोक्षप्राप्ति हेतु आत्मज्ञान प्राप्त करना ज़रूरी है। अक्रम मार्ग के द्वारा आत्मज्ञान की प्राप्ति का मार्ग आज भी खुला है। जैसे प्रज्वलित दीपक ही दूसरा दीपक प्रज्वलित कर सकता है, उसी प्रकार प्रत्यक्ष आत्मज्ञानी से आत्मज्ञान प्राप्त करके ही स्वयं का आत्मा जागृत हो सकता है।

## समर्पण

अणहक्क के पैसों में फल-फूल रहे  
अधोगामी मानवों को  
ज्ञानी द्वारा प्ररूपित  
सम्यक् समझ द्वारा  
चरम शुद्ध आदर्श  
'पैसों का व्यवहार'  
उत्थान करवाकर  
ऊर्ध्वगामी करवाने के लिए  
जगत् कल्याण हेतु से  
पतझड़ की आंधी में से  
बाहर निकालने वाले तरुवर वसंत को  
परम ऋणीय भाव से  
समर्पण



## संपादकीय

‘अणहक्क (बिना हक्क का, अवैध) का विषय नर्क में ले जाता है।’

‘अणहक्क की लक्ष्मी तिर्यच में (पशुयोनि में) ले जाती है।’

- दादाश्री

संस्कारी घरानों में, कई जगहों पर, अणहक्क के विषयों के प्रति जागृति का प्रचलन है लेकिन अणहक्क की लक्ष्मी से संबंधित जागृति मिलनी बहुत मुश्किल है। हक्क की और अणहक्क की लक्ष्मी के बीच की सीमा रेखा भी मिल पाए, ऐसा नहीं है, वह भी इस भयंकर कलिकाल में!

परम ज्ञानी दादाश्री ने अपनी स्याद्वाद देशना में आत्मधर्म के सर्वोत्तम शिखर के सभी रहस्य बताए हैं। इतना ही नहीं बल्कि व्यवहार धर्म के भी उतनी ही ऊँचाई वाले रहस्य बताए हैं ताकि निश्चय और व्यवहार, दोनों पंखों से समानान्तर मोक्षमार्ग में उड़ा जा सके! और इस काल में, व्यवहार में जिसे सब से अधिक प्राधान्य मिला हो तो वह है पैसों को! जब तक पैसों का व्यवहार आदर्श न हो जाए, तब तक व्यवहार शुद्धि नहीं मानी जा सकती और जिसका व्यवहार दूषित हुआ, उसका निश्चय दूषित हुए बिना रहेगा ही नहीं। इसलिए दादाश्री ने इस काल को ध्यान में रखकर, पैसों के संपूर्ण दोष रहित व्यवहार का सुंदर विश्लेषण किया है, और ऐसा संपूर्ण दोष रहित, लक्ष्मी का आदर्श व्यवहार उनके जीवन में देखने को मिला, महा-महा पुण्यशालियों को!

खुद दादाश्री ने धर्म में, व्यवसाय में, गृहस्थ जीवन में, लक्ष्मी के संबंध में शुद्ध रहकर जगत् को एक अद्भुत आदर्श प्रदर्शित किया। दादाश्री का सूत्र, ‘व्यापार में धर्म होना चाहिए लेकिन धर्म में व्यापार नहीं होना चाहिए’ यहाँ, दोनों की आदर्शता स्पष्ट की है। दादाश्री ने अपने जीवन में निजी एक्स्पेन्स (खर्च) के लिए कभी भी किसी का एक पैसा भी स्वीकार नहीं किया। खुद के पैसे खर्च करके जगह-जगह

सत्संग देने जाते, फिर चाहे ट्रेन से हो या प्लेन से हो! दादाश्री के आगे भाविकों ने करोड़ों रुपये, सोने के गहने अर्पण किए लेकिन दादाश्री ने उनको छूआ तक नहीं। जिन्हें दान देने की बहुत ही प्रबल इच्छा होती, उन लोगों को लक्ष्मी सुमार्ग में, मंदिर में या लोगों को भोजन करवाने में उपयोग करने की सलाह देते थे और वह भी उस व्यक्ति की निजी आमदनी की जानकारी, उससे और उसके परिवार वालों से पूरी तरह से जानने के बाद। सभी की सहमति है, ऐसा जानने के बाद ही 'हाँ' कहते थे!

संसार व्यवहार में आदर्श रहने वाले संपूर्ण वीतरागी पुरुष जो जगत् ने आज तक नहीं देखे थे, ऐसे ज्ञानी पुरुष इस काल में देखने को मिले। उनकी वीतराग वाणी सहज प्राप्त हुई। व्यवहारिक जीवन में जीविकोपार्जन के लिए लक्ष्मी प्राप्ति अनिवार्य है, फिर चाहे नौकरी करके या व्यवसाय करके या फिर अन्य किसी तरीके से लेकिन कलियुग में व्यापार करते हुए भी वीतरागों की राह पर किस तरह चला जाए, उसका अचूक मार्ग दादाश्री ने अपने अनुभव के निष्कर्ष द्वारा प्रकट किया है। दुनिया (के लोगों) ने कभी देखा तो क्या, सुना भी नहीं होगा, ऐसा बेजोड़ पार्टनर का 'रोल' उन्होंने दुनिया को दिखाया। आदर्श शब्द भी वहाँ बहुत छोटा प्रतीत होता है क्योंकि 'आदर्शता', वह तो सामान्य मनुष्यों द्वारा अनुभव के आधार पर तय की हुई चीज़ है। जबकि यह (दादाश्री का जीवन) तो अपवाद रूपी आश्चर्य है!

व्यापार में, कम उम्र से, बाईस साल की उम्र से ही जिनके साथ पार्टनरशिप की, तो अंत तक उनके बच्चों के साथ भी आदर्श रूप से पार्टनरशिप निभाई। कॉन्ट्रैक्ट के व्यापार में लाखों कमाए लेकिन उनका नियम यह था कि नॉन-मैट्रिक की डिग्री के साथ यदि वे खुद नौकरी करते तो कितनी तनखाह मिलती? पाँच सौ या छः सौ। तो उतने ही रुपये घर में आने देने चाहिए, बाकी का व्यापार में रखना चाहिए ताकि घाटे के समय में काम आए! और जीवन भर इस नियम का पालन किया! पार्टनर के वहाँ बेटे-बेटियों की शादी हो उसका खर्च भी दादाश्री

फिफ्टी-फिफ्टी पार्टनरशिप में करते! ऐसी आदर्श पार्टनरशिप वर्ल्ड में कहीं देखने को मिलेगी क्या?

दादाश्री ने व्यवसाय आदर्श रूप से, बेजोड़ तरीके से किया, फिर भी चित्त तो आत्मा प्राप्त करने में ही था। 1958 में ज्ञान प्राप्त हुआ उसके बाद भी कई सालों तक व्यवसाय चलता रहा लेकिन खुद आत्मा में रहकर, मन-वचन-काया, जगत् को आत्मा प्राप्त करवाने हेतु जगह-जगह, जगत् के कोने-कोने में पर्यटन करने में लगाए। उन्हें ऐसी कैसी दृष्टि मिली थी कि जीवन में व्यापार-व्यवहार और अध्यात्म, दोनों 'एट ए टाइम' (एक ही समय) सिद्धि के शिखर पर रहकर हो पाया!

लोकसंज्ञा में प्राधान्य लक्ष्मी का ही है, पैसे को ग्यारहवाँ प्राण कहा है, जीवन में उन प्राण समान पैसों का जो व्यवहार चल रहा है उसके संबंध में, आने-जाने के, फायदा-नुकसान के टिकने के और अगले जन्म में साथ ले जाने के, जो मार्मिक सिद्धांत हैं और लक्ष्मी मिलने के जो नियम हैं, उन सब को ज्ञान में देखकर और व्यवहार में अनुभव कर वाणी द्वारा जो ब्योरा प्राप्त हुआ, वह 'पैसों का व्यवहार' ग्रंथ के रूप में सुज्ञ पाठकों को जीवन भर सम्यक् जीवन जीने में सहायक हो, यही अभ्यर्थना!

- डॉ. नीरू बहन अमीन के जय सच्चिदानंद

# उपोद्घात

## [ 1 ] लक्ष्मी जी का आना-जाना

जहाँ प्रीति वहाँ एकाग्रता! प्रभु में प्रीति तो प्रभु भक्ति में एकाग्रता और पैसों में प्रीति तो पैसे गिनने में एकाग्रता।

जिसकी कीमत समझ में आए उस पर प्रीति बैठती है!

लक्ष्मी मेहनत से मिलती है या अक्ल से? मेहनत से मिलती तो मजदूरों के वहाँ पर भरमार दिखाई देती! और अक्ल से मिलती होती तो मुनीमों और चार्टर्ड अकाउन्टेन्टों के वहाँ ज़्यादा होती या मिल मालिकों के वहाँ? तब तो फिर अक्ल वालों को या मजदूरों को गरीबी ही कहाँ होती? जन्म से ही राजलक्ष्मी भोगने वालों की कहाँ अक्ल या मेहनत खर्च हुई? लक्ष्मी तो वास्तव में पुण्यशालियों के आगे-पीछे घूमती है।

पुण्य कैसे बंधता है?

समझे बिना भगवान को भजा या फिर औरों पर उपकार किया, गैरों का भला किया तो उससे पुण्य बंधता है। अनजाने में अग्नि में हाथ डालें तो भी जलेंगे तो सही न? सीधी तरह से परोक्ष भक्ति भी करे तो उसके घर लक्ष्मी की कभी कमी नहीं रहती।

कड़ी मेहनत और मजदूरी कम से कम, वह कम पुण्य कहलाता है। वाणी की मेहनत से कमाए (वकीलों के समान) उसका पुण्य थोड़ा अधिक कहलाता है और वाणी नहीं लेकिन मानसिक परिश्रम से लक्ष्मी मिले तो वह उत्तम पुण्य माना जाता है और सर्वोत्तम पुण्य कौन सा, तो वह यह कि संकल्प करते ही सब उसी अनुसार प्राप्त हो जाए!!!

अधिक लक्ष्मी कठोर परिश्रम करवाती है। पापानुबंधी लक्ष्मी तिर्यचगति में ले जाती है। पुण्यानुबंधी पुण्य वाले को परेशानी नहीं होती। इसमें ऐसे दानेश्वरी का काम हो जाता है।

मेहनत करने वाले भी होते हैं और आराम से भोगने वाले भी होते

हैं! मेहनत करने वालों में कर्तापन का अहंकार होता है और भोगने वालों को भोक्तापन का रस मिलता है।

भोगने वाला समझदार कहलाता है। जो गँवा दे, वह पागल कहलाता है और जो मेहनत करता है, वह मज़दूर कहलाता है!

लक्ष्मी हाथ के पसीने के समान है। किसी को अधिक मिलती है तो किसी को कम मिलती है।

बिना बरकत वाले के वहाँ लक्ष्मी ज़्यादा आती है। बरकत वाला तो जागृत होता है, उसके वहाँ लक्ष्मी प्रवेश नहीं करती क्योंकि वह जितना जागृत, उतना ही कषायी होता है।

पापानुबंधी पुण्य से लक्ष्मी तो बहुत अधिक मिलती है लेकिन वह क्लेश करवाती है और अधोगति के कर्म बंधवाती है जबकि जहाँ पुण्यानुबंधी पुण्य हो वहाँ निरंतर अंतर शांति के साथ भव्य वैभव होता है!

उच्च संस्कारी कुटुंबों में भी रोज़ सुबह नाश्ते के समय क्लेश ही होता है। ऐसा यह काल हो गया है।

इस काल की लक्ष्मी ही ऐसी गलत तरीके से आई है कि मन दुःखी रहता है और यदि निर्मल लक्ष्मी होती तो सुख-शांति देती।

संपूज्य दादाश्री अपनी नीति स्पष्ट करते हुए बताते हैं कि, 'हमने तो बचपन में ही तय कर लिया था कि जहाँ तक हो सके वहाँ तक अशुभ लक्ष्मी को घर में नहीं घुसने देंगे और साथ में यह भी तय किया था कि इतने रुपयों से घर चलाना है। व्यवसाय में लाखों रुपये कमाए लेकिन यदि यह 'पटेल', सर्विस करने जाए तो कितना वेतन मिलेगा? ज़्यादा से ज़्यादा छः सौ-सात सौ रुपये मिलेंगे। इसलिए घर में उतने ही रुपये खर्च करने चाहिए।' उन्होंने अंत तक ऐसा नियम निभाया।

लक्ष्मी के सहारे नहीं रहना है। उसका सहारा कब खिसक जाए, वह कह नहीं सकते। विनाशी वस्तुओं से प्राप्त सुख भी विनाशी होता

है। पैसों से प्राप्त किया हुआ सुख टेम्परेरी है, अतः वहाँ शांति से रुकने जैसा नहीं है।

सुगंधित लक्ष्मी को तो भगवान भी स्वीकार करते हैं। इस काल में तो वैसी लक्ष्मी दुर्लभ है।

क्या आयुष्य का एक्सटेन्शन मिलता है? अगर नहीं, तो क्यों अंधे की तरह लक्ष्मी के पीछे भागें?

जगत् में किसी को संडास जाने की भी स्वतंत्र शक्ति नहीं है! तो फिर पैसे कमाने की सत्ता कहाँ से होगी? अगर होती तो क्या कोई छोटी चीजों में हाथ डालता? टाटा-बिरला जैसे बनकर नहीं घूमते?

इट हैपन्स! पैसे कमाने में बहुत ध्यान नहीं देना है। वह तो अपने आप ही हो जाता है। कितने ही संयोग इकट्ठे होते हैं तब लक्ष्मी मिलती है। यह तो भ्रांति से मानता है कि, 'मैंने कमाया'। साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स से कमाता है।

खुद के पास कितना ज़्यादा धन है! दो आँखों की कीमत कितनी है? दो हाथ, दो पैर, दिमाग, कान, नाक, इन सब की कितनी कीमत आँकनी चाहिए? इतनी सारी पूंजी है फिर भी लोग 'मेरे पास कुछ नहीं है' कहकर व्यर्थ में दुःखी होते रहते हैं।

जगत् में दुःख है ही कहाँ? जिसका उपाय ही न हो उसे दुःख कैसे कह सकते हैं?

जब आर्थिक स्थिति कमज़ोर हो तब हाय-हाय किए बगैर, धीरज रखने की ज़रूरत है। व्यवसाय में प्रतिकूलता आए तब आत्मा की अनुकूलता कर लेनी चाहिए। उस समय भक्ति में और ज्ञान में रहना चाहिए। हमें तो अनुकूलता और प्रतिकूलता, दोनों में फायदा ही है। अनुकूलता, वह देह की खुराक है और प्रतिकूलता, वह आत्मा का विटामिन है। एक घंटे यदि 'दादा भगवान' का नाम ले तो पैसों का ढेर लग जाए लेकिन लोग ऐसा करें तब न!

इन्कम टैक्स के लाखों रुपये दबा लिए होते हैं और फिर भी हर वक्त इन्कम टैक्स कैसे बचाऊँ उसी का ध्यान करते रहते हैं और तिर्यचगति बाँध लेते हैं। करोड़ों रुपये होने पर भी अंतरशांति का अंश भी नहीं मिलता। ऐसे सेठ के घर में वैभव कौन भोगता है? वह खुद नहीं। रसोइया और नौकर लोग ही!

जितनी ज़्यादा पूंजी उतनी ज़्यादा उलझनें। अकेला था वहाँ से शादी करके बेहिसाब उलझनें बढ़ाई! इस तरह मनुष्यपन बर्बाद हो रहा है।

जीवन निर्वाह के साधन तो कुत्ते-बंदरों, बिल्लियों को भी गाँव में ही मिल जाते हैं जबकि आप लोगों को सागर पार जाना पड़ता है। निर्वाह के लिए या लोभ के लिए? फिर भी बैंक में कितने लाख जमा होते हैं?

लोगों ने पैसों को अनिवार्य मान लिया है इसलिए यदि पैसे हैं तो नाथालाल और पैसे नहीं होने से नाथिया कहलाता है। बिना पैसे का यानी बिना सेन्स वाला, नॉन-सेन्स माना जाता है।

जब पैसों की ज़रूरत नहीं रहेगी तब पैसे छलकेंगे।

अंधा बुनता है और बछड़ा चबाता जाता है। कमाता कौन है? भोगता कौन है? और मेहनत बेकार जाती है, उसे कहते हैं संसार।

पैसों के लिए चाहे कितनी भी हाय-हाय की फिर भी अमीरों में पहला नंबर किसका आया, इस रेसकोर्स में? पहला नंबर सिर्फ एक का लगता है और बाकी के घोड़ों को तो थककर चूर ही होना है न? लोभ ही दौड़ाता है न?

स्कूल में पास होते थे लेकिन दो-दो मिलें होते हुए भी हार्ट फेल हो जाता है।

ज्ञानी पुरुष कभी भी रेसकोर्स में नहीं उतरते। वे तो दूर से ही रेस देखते रहते हैं कि कौन पहला आया और कौन-कौन सिर्फ थककर, हाँफकर मर गए!

यदि पैसे साथ ले जा सकते तो ये लोग तो ऐसे हैं कि दस लाख

का कर्ज करके गठरी बाँधकर साथ ले जाएँ और पीछे बच्चे आराम से कर्ज चुकाते रहें।

दो नंबर के पैसे इकट्ठे करने से पशुयोनि का बंध पड़ता है।

संतोष रखना चाहते हुए भी नहीं रख पाते। जितनी सही समझ होगी परिणाम स्वरूप उतना संतोष रहेगा।

लक्ष्मी के लिए सोचना नहीं है। वह तो व्यवस्थित के अधीन आती है और जाती है। वह तो, धर्म में रहो तब भी उतनी ही आएगी और अधर्म में रहो तब भी उतनी ही आएगी। धर्म के फलस्वरूप सुखी होंगे और अधर्म के फलस्वरूप दुःखी।

जितना हिसाब होता है उतनी ही लक्ष्मी आती है और जितना हिसाब में होता है उतनी ही लक्ष्मी टिकती है। कार्य करते रहना, वह आपका फर्ज है और पैसे अपने आप ही आते हैं।

पैसों के ध्यान में नहीं रहना चाहिए। उससे मन चंचल हो जाता है!

जितना पैसों के पीछे भागते हैं, उतना ही वह दूर जाता है। वह तो, जैसे नींद अपने आप आती है, वैसे ही लक्ष्मी भी अपने आप आती है, उसे याद नहीं करना पड़ता।

जन्म के समय जितना वैभव होता है तो पूरी ज़िंदगी का स्टैन्डर्ड उसी अनुसार होना चाहिए। बाकी का सब एक्सेस है, जो ज़हर के समान है।

चिंता करने वाले के वहाँ पैसे कहाँ से आएँगे? आनंदित रहने वाले के वहाँ पैसे आते हैं।

पैसा सस्ता तो मनुष्य सस्ता और पैसा महँगा तो मनुष्य महँगा।

महँगाई बढ़ती है फिर भी चीज़ों का उपयोग उतना ही रहता है। यानी कैसे हिसाब बंधे होते हैं? पैसों से नहीं, चीज़ों से। वे चीज़ें महँगी हों या सस्ती, कुदरती तौर पर मिल ही जाती हैं।



बुद्धि के आशय में जो लेकर आए हैं, वह मिलता है लेकिन उसमें अपना पुण्य खर्च हो जाता है। जैसे, मोटर, बंगला, बेटा, बहू, उसमें भरा हो तो वे मिलते हैं और धर्म में ही सौ प्रतिशत भरा हो तो वह मिलता है। बुद्धि का आशय भरते समय जैसी समझ मिली होती है वैसा भरते हैं।

पहले जो इच्छा की थी उसके आधार पर अभी चीजें प्राप्त होती हैं लेकिन वर्तमान संयोगों के बदलने पर उसकी इच्छा भी बदल जाती है। फिर भी चीजें तो पहले की इच्छा के अनुसार ही भुगतनी पड़ती हैं। जिससे जीवन में भयंकर संघर्ष का अनुभव होता है।

जब पुण्य की लिंक शुरू हो तब अँधेरे में भी हाथ डाले तो एक के बाद दो, दो के बाद तीन, तीन के बाद चार इस तरह क्रमबद्ध, लिंक के मुताबिक मिलता है! और यदि पाप का उदय हो तो सत्तावन के बाद सात और सात के बाद दो आता है इसलिए इंसान को जीवन में सचेत रहना चाहिए।

पाप का 'पूरण' (चार्ज होना, भरना) तो किया लेकिन जब उस पाप का 'ग्लन' (डिस्चार्ज होना, खाली होना) होगा तब अग्नि से जलने जैसा अत्यंत कष्ट भुगतना पड़ेगा। जब पुण्य का ग्लन होगा तब अनोखा आनंद मिलेगा। अतः पूरण करते समय सोचना।

वास्तव में भुगतना पैसों से है या वेदनीय से? कुदरत तो वेदनीय के आधार पर ही भुगतना देखती है। करोड़ों रुपये हों लेकिन अशाता (दुःख-परिणाम) वेदनीय हो तो उसे देखा जाता है, न कि रुपयों को।

ग्यारह लाख कमाए, बाद में उसमें से पचास हजार का नुकसान हुआ तो जी जलाता रहता है। 'अरे, ग्यारह लाख में से पचास हजार घटा दे न!'

ईमानदारी से, साफ नीयत के साथ प्राप्त हुआ धन ही सुख देता है। कलियुग में पुण्य से ही धन आता है लेकिन पाप के बंध डलते जाते हैं, पापनुबंधी पुण्य। वे न हो तो ही अच्छा। सिर्फ पाप ही बंधवाते हैं।

कितनी लक्ष्मी होनी चाहिए? तंगी भी नहीं और संग्रह भी नहीं।  
सूख जाए या सूजन हो जाए - दोनों ही काम के नहीं हैं न!

लक्ष्मी तो चलती भली! रुकी हुई लक्ष्मी दुःख देती है।

नोट गिनने में कितना उपयोग बिगड़ जाता है? उसके बजाय अगर  
दो कम होंगे तो चलेगा, उतना तो गिनने का मेहनताने में चला जाएगा।

लक्ष्मी की कृपा कब मिलती है? जब मन-वचन-काया से चोरियाँ  
न हों तब। ट्रिक करना व मिलावट करना, वे सूक्ष्म चोरियाँ कहलाती हैं।  
वह हार्ड रौद्रध्यान कहलाता है। उसका फल नर्कगति है। इस तरह से  
मनुष्यपन की महान सिद्धि खर्च हो जाती है।

लक्ष्मी की इच्छा करने से वह बहुत देर से आती है। लक्ष्मी की  
इच्छा भी नहीं और तिरस्कार भी नहीं करना है। मोक्ष में जाने वाले को  
तो हक्र की लक्ष्मी लेनी चाहिए। छीनकर या ठगकर नहीं लेनी चाहिए।  
इस नियम को तोड़े तो लक्ष्मी जी की कृपा कहाँ से होगी? लक्ष्मी जी  
को धोने से क्या वे खुश होती हैं? फॉरेन में कौन उनको धोता है? फिर  
भी क्या वहाँ लोगों को लक्ष्मी जी की कोई कमी है?

संपूज्य दादाश्री खुद का लक्ष्मी जी के साथ व्यवहार व्यक्त करते  
हुए बताते हैं कि, ये लक्ष्मी जी जब भी हमें मिलती हैं, तब हम उन्हें  
कह देते हैं कि 'बड़ौदा में मामा की पोल का छठा मकान, जब अनुकूल  
हो तब पधारना और जब जाना हो तब चले जाना! आपका ही घर है,  
पधारना!' हम इतना ही कहते हैं। हम विनय नहीं चूकते! ऐसा सब कह  
सकते हैं न, लक्ष्मी जी से?

क्या लक्ष्मी जी को *तरछोड़* (तिरस्कार सहित दुत्कारना) मारना  
चाहिए? *तरछोड़* मारने वाले निःस्पृही साधु, महाराजों या बाबाओं को  
कितने ही जन्मों तक लक्ष्मी जी स्पर्श करने (छूने) भी नहीं मिलती!

लक्ष्मी जी को रोकने के बारे में दादाश्री कहते हैं, 'मुझे लक्ष्मी जी  
कहती हैं कि मैं तो इन सेठों के वहाँ बहुत ऊब गई हूँ। अतः अब मैं  
आपके महात्माओं के वहाँ ही जाऊँगी!'

ज्ञानी सस्पृह-निःस्पृह होते हैं। सामने वाले के आत्मा के लिए सस्पृह और भौतिक के लिए निःस्पृह। वर्ना जो सिर्फ निःस्पृही हो जाए वे लक्ष्मी का तिरस्कार करते हैं!

जो लक्ष्मी जी के नियम का पालन करते हैं, उनके वहाँ कभी कम नहीं होती। गलत रास्ते की लक्ष्मी नहीं लेनी चाहिए। सहज प्रयत्नों से प्राप्त हो, वही लेनी चाहिए। आती हुई लक्ष्मी जी को टुकराना नहीं है। किसी से रुपये उधार लिए हों तो वे लौटा देने चाहिए और जब तक न लौटा पाएँ तब तक, 'कब चुका दें', ऐसा भाव रखना है!

जब काले बाज़ार का पैसा बाढ़ की तरह आता है, तब घर बैठे पानी मिलने का आनंद उठाते हैं लेकिन बाढ़ के उतरने में देर नहीं लगती और उसके उतरते ही घर में कीचड़ ही कीचड़ करती जाती है और बल्कि महामारी भी फैलती है।

लक्ष्मी तो जीवन का बाइ प्रोडक्शन है। मुख्य प्रोडक्शन तो मोक्ष प्राप्त करना है। बाइ प्रोडक्शन तो सहज ही मुफ्त में मिलता है।

पागल की तरह लक्ष्मी इकट्ठी करते हैं और पूरे दिन गिनते रहते हैं। वे गिनने वाले तो चले गए और पैसे यहीं के यहीं रह गए!

पैसों का कुदरती नियम क्या कहता है? ग्यारह साल में पैसा बदल जाता है। पच्चीस करोड़ वाले के पास ग्यारहवें साल तक यदि एक आना भी न आए तो वह खत्म हो जाता है! अनाज तीसरे साल में निर्जीव हो जाता है, फिर नहीं उगता। दवाईयाँ भी दो साल बाद 'एक्सपायर' हो जाती हैं, उसी तरह लक्ष्मी की भी ग्यारह साल की 'एक्सपायरी डेट' होती है। हिन्दुस्तान में दो सौ साल पहले के व्यापारी वणिक दिवालियापन से बचने के लिए पूंजी की बेहतर व्यवस्था करते थे। लाख रुपये हों तो पच्चीस हजार संपत्ति (अचल) में, पच्चीस हजार सोने में, पच्चीस हजार ब्याज पर और पच्चीस हजार व्यवसाय में लगाते थे। ज़रूरत पड़ने पर पाँच हजार ब्याज पर लाते थे।

पापनुबंधी पुण्य की लक्ष्मी तो आएगी और तुरंत चली भी जाएगी।

पहले की लक्ष्मी तो पाँच पीढ़ियों तक टिकती थी। पुण्यानुबंधी पुण्य की लक्ष्मी हो तो दादा के पास आने देती है और सुमार्ग में खर्च करवाएँ।

## [ 2 ] लक्ष्मी से संबंधित व्यवहार

बच्चों के लिए, छोड़ जाने के लिए जैसे इकट्ठे किए तो पिछली पीढ़ी को भेजने के लिए क्या किया? पिता, दादा, परदादा के लिए क्या कुछ भेजा?

बड़े-बड़े मकान, दो-दो लाख के आलीशान शौचालय बनवाए, यानी वैराग्य आने का एक ही स्थान था, वह भी मिटा दिया। क्या यह सब साथ ले जा सकते हैं?

जगत् खुली आँखों से सोता है अर्थात् खुद के हित-अहित के प्रति मूर्च्छा।

जो मन के, वाणी के या देह के मालिक न रहे हों, वे भला पैसों के मालिक कैसे रहेंगे? घर में हीरा बा को और व्यवसाय में पार्टनर को ही पैसों का संपूर्ण लेन-देन सौंपकर, वीतराग रास्ते पर चले गए, ऐसे थे दादाश्री!

पापानुबंधी पुण्य यानी पिछले पुण्य के आधार पर वर्तमान में ढेर सारे पैसे आते हैं लेकिन रात-दिन बिना हक़ का भोगने में व्यस्त रहते हैं। जिससे पाप का नया बंध बाँधते हैं।

कमाता कौन है? वे, जिनका देने के लिए उदार मन हो! ऐसा नहीं है कि बुद्धिशाली को लक्ष्मी मिलती है, पुण्यवान को लक्ष्मी मिलती है। मुंबई में बड़े-बड़े सेठों के मुनीम बहुत बुद्धिशाली होते हैं।

पैसे बढ़ने पर उन्हें संभालना बहुत कठिन है! दादाश्री बहुत दयालु थे, वे वसूली करने जाते और उसे तंगी में देखकर, उसे और पैसे दे आते, खुद के पास जितने होते वे सारे!

जब पैसे खत्म हो जाएँ तब कैसे पुरुषार्थ करें? सगा भाई पैसे

दबा ले, नौकर दबा ले, व्यापार बंद हो जाए तब क्या पुरुषार्थ होना चाहिए? जीवन में ऐसे वक्त शांति कैसे रखें?

क्या कभी आपने किसी का अहंकार खरीदा है? वह क्या मार्केट में बिकता होगा? अरे, वह तो घर बैठे मिलता है। जो आपके पास पैसे माँगने आते हैं, वे हमें उनका अहंकार खरीदने का मौका देते हैं और अहंकार खरीदता है तब उनकी सारी शक्तियाँ हम में प्रकट हो जाती हैं। संपूज्य दादाश्री ने पूरी जिंदगी यही किया था, तब यह पद प्रकट हुआ।

कोई आपके पास पैसे माँगने आए और आपके पास यदि पैसे हों तो उसे पैसे देकर, उसका अहंकार खरीद लो। बहुत मजबूरी होती है तब पैसे माँगता है। ऐसा मौका कभी भी गँवाना नहीं चाहिए, उसका अहंकार खरीदने पर उसकी सारी शक्तियाँ हम में प्रकट हो जाती हैं।

हट्टाकट्टा भिखारी भीख माँगे तब क्या करना चाहिए? उसे दान न दो तो हर्ज नहीं है लेकिन उसे ताना दो या उसे दुःख हो क्या ऐसा बोलना चाहिए? क्या कभी किसी के विपरीत संयोग नहीं आ सकते?

बड़े बंगले, नौकर-चाकर इत्यादि भौतिक सुख बढ़ने पर आत्मा का विटामिन कम हो जाता है और दुःख तो आत्मा का विटामिन है। जबकि लोग आत्मा के विटामिन को दूर करने की कोशिश करते हैं।

सोने में एक चौथाई पूंजी इन्वेस्ट करनी चाहिए, वह भी गिन्नियों के रूप में, उसे अचल संपत्ति कहते हैं। ज़रूरत पड़ने पर तुरंत नकद मिल जाता है। शेयरबाज़ार में तो जाना ही नहीं चाहिए। उसमें तो पाँच-सात खिलाड़ी खेल खेलते हैं और बीच वाले मारे जाते हैं!

यदि पैसों का अपार सुख होगा तो अन्य कहीं, पति का, पत्नी का या बच्चों का, कहीं न कहीं अपार दुःख होगा!

जिन्होंने विदेश में अच्छा कमाया हो, उन्हें स्वदेश लौटने के लिए क्या तैयारी करनी चाहिए? वहाँ व्यापार करना हो तो पूंजी लगाने के लिए पर्याप्त धन तो होना चाहिए न? थोड़ा-बहुत बैंक से लेना पड़े तो

हर्ज नहीं है लेकिन लोगों से मिल सके, ऐसा यहाँ नहीं होगा। बाकी, उरने की कोई ज़रूरत नहीं है, आज ही वापस स्वदेश लौटने के लिए।

कई लोग बहुत लोभी होते हैं। चींटियाँ और कौए भी लोभी होते हैं, वे भी मुँह से उठाकर एक जगह इकट्ठा करते हैं।

किसी ने अमरीका में दादाजी से पूछा कि, 'मुझे शेरों का कामकाज करना चाहिए या नहीं?' तब उन्होंने जवाब दिया, 'बंद कर देना। आज तक जितना लगाया उतना धन वापस निकाल लो। वर्ना अमरीका में आना, न आने के बराबर हो जाएगा!'

ब्याज तो मुसलमान भी नहीं लेते। बैंक में ब्याज पर रखने में हर्ज नहीं है लेकिन जो डेढ़-दो प्रतिशत के लोभ में पड़ जाए उसके लिए कुछ नहीं कह सकते। ब्याजखोर होने के बाद मोक्ष तो मिलेगा ही नहीं!

निजी तौर पर तो उधार देना ही नहीं, वर्ना व्यक्ति का मन कसाई जैसा हो जाता है, निर्दयी हो जाता है!

किसी को उधार दिए हों तो बैंक रेट जितना ब्याज लेने में हर्ज नहीं है। ब्याज व दलाली का काम गलत है और अगर वह पैसे वापस न कर पाए तो मौन रहना। समुद्र में पैसे गिर जाएँ तो क्या करते हैं?

कीटनाशक दवाई के, किराने के काम में या किसी भी हिंसक व्यापार में, खुद के ही भीतर जीव मरते हैं और भीतर भयंकर जड़ता लाते हैं। जागृति ही खत्म हो जाती है। वकील और डॉक्टर पैसों के लिए जो भी उल्टे काम करते हैं, उनके लिए तो क्या कह सकते हैं? इन सब में खुद की ही जोखिमदारी है। उसके फल भुगते बिना छुटकारा ही नहीं है।

बुद्धि से हिंसा में तो, भीषण कलियुग में भी कपड़ा खींचकर देते हैं! बल्कि बुद्धि वकालत करती है कि 'जैसे सब करते हैं, वैसे ही मैं भी करता हूँ'। कला करके इन्कम टैक्स, सेल्स टैक्स की चोरियाँ करता है। इससे बल्कि लोभ नहीं बढ़ाया? वह सब तो लोभ कम करने के लिए है।

भगवान की भक्ति करने वाले को क्या दुःख हो सकता है ? बल्कि अपार सुख रहता है ।

दूसरों को अपनी चीज़ खिलाने से, लोगों की सेवा करने से अपार मानसिक शांति मिलती है । क्या उसका अनुभव किया है ? दादा के महात्माओं को पैसों का व्यवहार तो करना पड़ेगा लेकिन मन में सौ प्रतिशत ऐसा रखना है कि 'नहीं करना है, फिर भी करना पड़ रहा है । उसके शौकीन नहीं बनना है' ।

सब्जी वाली के साथ किच-किच करनी चाहिए क्या ? आठ आने, रुपया ज़्यादा देकर निपटा देना ! माँगने वाले के साथ भी कम-ज़्यादा करके निपटा देना ।

सम्यक् दृष्टि वाले किसी भी तरह, नुकसान सहन करके भी निपटारा ले आते हैं ।

पैसे रखने में आपत्ति या ममता रखने में आपत्ति ?

पुण्य क्या नहीं कर सकता ? जन्म से ही मोटर-बंगला, गाड़ियों की भरमार दिलवाता है ।

अपने ही पुण्य से शादी करने वाली बेटियों के लिए पिता कैसे कह सकता है कि, 'मैंने कितने धूमधाम से ब्याह करवाया ?' पिता तो सिर्फ घर के पैसों का लेन-देन करता है, बाकी, घर में तो सब अपना-अपना पुण्य खर्च करते हैं ।

पैसे उधार लेते समय जिसे दृढ़ निश्चय रहता है कि, 'मुझे वापस लौटा ही देना है', उसका व्यवहार कुछ अलग ही दिखता है ।

दादाश्री कहते हैं, 'वह बल्कि मुझसे कहता है कि मैं तो अब आपको देने वाला ही नहीं' तब मैं ऐसा नहीं कहता कि, 'मत देना । मैं समझ जाता हूँ कि यही नियम है' ।

कोई मृत्यु की कमाई करता है ? फिर भी... आराम से सोते-सोते

जाना पड़ता है न? चार लोग उठाते हैं, नारियल के साथ, वे भी बिना पानी वाले, है न?

चाहे जितना भी कमाया हो, लेकिन मरते समय सार आएगा, इसलिए सचेत रहना!

जब दो फुट चौड़ी बिना रेलिंग की पट्टी पर से पचास माईल का समुद्र पार करना हो तब क्या उस समय उसे कुछ याद आएगा? दुकान, अस्पताल में सोई हुई पत्नी या बेटियों की शादी करवाना? कुछ भी याद नहीं आता।

व्यापार के विचार कब तक करने चाहिए? तभी तक कि विचारों के भँवर में न फँसें। उससे आगे जाओगे तो समझना, मारे गए। बंद ही कर देना, वर्ना दो पैरों में से चार पैरों में जाने की नौबत आएगी।

इसीलिए कबीर जी सचेत करते हुए कहते हैं कि, 'ऊँचा चढ़ पुकारिया, बुम्मत मारी बहोत, चेतनहारे चेतना, सिर पे आई मौत।'

### [ 3 ] व्यवसाय, सम्यक् समझ से

जीवन किस हेतु से जीना है? या तो मोक्षार्थ या तो लक्ष्यार्थ। मोक्षार्थ, भारतीयों के जीवन का यही एक लक्ष्य होना चाहिए और उसके लिए आत्मज्ञान समझो।

जहाँ ईमानदारीपूर्वक जीवन जीते हैं, वहाँ सदा प्रभु का वास रहता है।

तीन चीजों में समा जाता है समग्र व्यवहार धर्म : (1) नीतिमत्ता (2) ओब्लाइजिंग नेचर (परोपकारी स्वभाव) (3) बदले में कुछ पाने की इच्छा नहीं!

भगवान से क्या कोई इच्छा करनी चाहिए? उनका तो नाम लेने से ही आवरण हट जाते हैं और आनंद होता है। उसके अलावा वहाँ से और कुछ विशेष नहीं मिलता।

ईमानदारी होगी तो फिर से मनुष्यपन प्राप्त होगा। जिसे बिना हक़



के विषय-लक्ष्मी भोगने की वृत्ति हो, उसे तो भुगतने के लिए पशुयोनि में ही जाना पड़ेगा। फिर चाहे वह कितनी भी भक्ति करता हो या दान-पुण्य करता हो।

जिनमें ईमानदारी, नैतिकता और ओब्लाइजिंग नेचर, ये तीन गुण हों, उनके अन्य सभी दुर्गुण अवश्य चले जाते हैं।

जहाँ नीति, वहाँ प्रभु का वास और जहाँ प्रभु का वास हो, वहाँ सुखधाम है। ईमानदार को मिलता है प्रभु का लाइसेन्स।

‘ऑनेस्टी इज़ द बेस्ट पॉलिसी’ के सूत्र को तो लोग ध्यान में नहीं लेते हैं। इसलिए दादाश्री ने जगत् को नया सूत्र दिया, ‘डिस्ऑनेस्टी इज़ द बेस्ट फूलिशनेस।’

ईश्वर कभी किसी को कुछ देते-करते नहीं हैं। हाँ, उन्हें याद करने से आनंद होता है, जैसे आम याद करते ही मुँह में पानी आ जाता है न? और ईश्वर तो हमारा खुद का ही स्वरूप हैं इसलिए उनका स्वाभाविक आनंद आता ही रहता है।

जहाँ सत्य-निष्ठा है, वहाँ ऐश्वर्य प्रकट होता है और उन्हें घर बैठे ही सब मिल आता है। उसमें ईश्वर कुछ नहीं करते।

रिश्वत देनी चाहिए या नहीं? अंत तक रोकना लेकिन यदि टूट जाए, गालियाँ खानी पड़ें वहाँ तक बात बढ़ जाए तो पकड़ छोड़ देना और रिश्वत देकर भी छूट जाना। रास्ते में यदि कोई लुटेरा आपसे पैसे माँगे तो दे देते हो या नहीं? या फिर सत्य के कारण नहीं देते? वहाँ क्यों दे देते हो? क्या ये रिश्वतखोर, आपको दूसरे प्रकार के आधुनिक सुधरे हुए लुटेरे नहीं लगते? वे पिस्तौल दिखाते हैं और ये व्यवसाय चौपट करने की धमकी देते हैं!

पत्थर के नीचे हाथ आ जाए तो युक्तिपूर्वक निकालना, वर्ना पत्थर के बाप का क्या जाएगा? सत्य की पूँछ तो सभी पकड़ाते हैं लेकिन ज्ञानी के अलावा ऐसा कौन सिखाएगा? उन्होंने जगत् के सत्य को सापेक्ष सत्य कहा है। हाँ, उससे किसी की हिंसा, दुःख या परेशानी नहीं होनी चाहिए।

दादाश्री कहते हैं कि ऐसा करते हुए जो भी जोखिमदारी आए, वह दादाश्री की। ये दादाश्री हर भूमिका में से गुज़र चुके हैं इसलिए यह अनुभवी वाणी निकलती है।

दादाश्री ने ज्ञानी पद पाया, बड़े व्यापार में संलग्न होते हुए भी!! और ये दोनों साथ-साथ क्यों नहीं हो सकते? आप अलग हैं और व्यापार अलग है। व्यापार चलेगा लेकिन उसमें खुद का उपयोग रहेगा तब न? दान देते समय मन अलग रखते हैं या नहीं? उसी तरह इस संसार में सब अलग ही रहता है।

दादाश्री ने ड्रामेटिक तरीके से व्यवसाय किया था। शुरू से ही पैसे कमाने में वृत्तियाँ बिगाड़ी ही नहीं और वृत्तियों की प्रवृत्ति हमेशा आत्मा की खोज में ही रही।

अनंत जन्मों से व्यापार ही किए लेकिन आत्मा का कभी कुछ हुआ?

जब व्यापार में चिंता होने लगे तब समझना कि अब सारे काम बिगड़ने वाले हैं। व्यापार में घर का हर एक व्यक्ति पार्टनर माना जाता है, फिर भी सिर्फ पिता ही चिंता करता रहता है न? सब मना करें तब भी?

पैसे क्या पुरुषार्थ से प्राप्त होते हैं? पुरुषार्थ से पाने वाले को कभी नुकसान होगा क्या?

और नुकसान हो, वह दुकान का या खुद का? दुकान तो जाते-जाते भी पगड़ी देती जाती है, और खुद जाता है तब?

जब बाज़ार में सब दुकान खोलें तब हमें भी खोलनी चाहिए और सब बंद करें तब बंद करनी चाहिए, उसे नॉर्मलिटी कहते हैं। व्यापार का विचार आधे घंटे से ज़्यादा और उससे भी ज़्यादा हुआ, तो वह मरा।

क्या ग्राहक की राह देखनी चाहिए? न आए तब तक भगवान का नाम लो और कर लो आत्म कल्याण।

व्यवसाय में भी ग्राहकों के साथ सत्य, हित, मित और प्रिय व्यवहार करना चाहिए। व्यवसाय ईमानदारी से करना चाहिए, फिर उसका हिसाब नहीं रखना। क्या कमाने में खटपट या हाय-हाय करनी चाहिए? अपने आप ही हिसाब से आता है।

पैसे आते हैं तो 'चैन' मिलता है न? और जाता है तब? जितना 'चैन', उतनी ही 'बेचैनी'।

व्यवसाय करने से पहले फायदे के बारे में सोच ले और यदि संयोगवश कम फायदा हो तो नुकसान हो गया ऐसा मानकर चिंता करने लगता है। दादाश्री तो, जहाँ पाँच लाख का फायदा होने वाला हो, वहाँ एक लाख का होगा ऐसा सोचकर शुरू करते और उससे अधिक आए तो उतना ज़्यादा फायदा।

व्यवसाय में नुकसान हो तो उसे घर के दस लोगों में बाँट दो तो *उपाधि* (बाहर से आने वाला दुःख) नहीं लगेगी। घर वालों का स्वास्थ्य आज अच्छा रहे, वही फायदा है।

फायदा या नुकसान रात को भी होता होगा न? क्या रात को कोई मेहनत करते हो? वह सब तो व्यवस्थित के ताबे में है।

जब धंधे में मंदी हो, तब सत्संग में तेज़ी कर लो।

आपकी दो आँखों की कीमत कितनी? दो कानों की कीमत कितनी? आपके पास इतनी ज़्यादा पूंजी है, फिर कैसे लुट गए आप?

आपको जितनी लक्ष्मी मिलती है, वह मिलना, नियमाधीन ही है, गप्प नहीं है।

व्यवसाय की नॉर्मलिटी क्या? खाने-पीने के समय चित्त व्यापार में न जाए और रात को अच्छी नींद आ जाए, वही।

यदि दो सौ साल के आयुष्य का एक्सटेन्शन मिलता हो तो क्या चार शिफ्ट चलाओगे?

दादाश्री अपने व्यवसाय की बात करते हुए बताते हैं कि, “हम से

लगाव रखने वाले यदि व्यापार के बारे में पूछते तो हम कहते, 'पचास हजार का नुकसान हुआ है, ज्यादा नहीं', ताकि उन्हें शांति रहे जबकि द्वेष भाव वालों के पूछने पर कहते कि पाँच लाख का नुकसान हुआ है तो उन्हें खुशी होती थी और नींद भी अच्छी आती। किसी को दुःखी नहीं करते थे!

दादाश्री उनके किसी कॉन्ट्रैक्ट के काम का अनुभव बताते हुए कहते हैं कि, 'हम जिसे चौकीदार रखते थे, वही व्यक्ति चोरियाँ करवाता था। दूसरे को रखा तो वह भी वैसा ही।' तब वे समझ गए कि चोरियों का हिसाब चुकाना पड़ रहा है। तो हर सप्ताह पुलिस को बुलाते। वे सब को धमकाते और अगले दिन से फिर चोरियाँ शुरू... और नाटक पूरा होता।

दादाश्री कहते हैं कि, 'हमने 1951 के बाद व्यवसाय में चोरियाँ करना बंद किया। साहूकार होकर क्या हमें चोरी करना शोभा देता? इससे तो चोर भले। कुदरत की कोर्ट में मिलावट करने वाला, इस चोर से अधिक गुनहगार माना जाएगा!'

दादाश्री के व्यवसाय में भी काले बाज़ार का पैसा घुस गया था। जब वह गया तब रोम-रोम में डंक मारकर गया, तब ठंडक हुई। पैसे गए, हम थोड़े ही गए हैं?

कौन सा व्यापार अच्छा है? जिसमें हिंसा न हो, वह। पहला नंबर हीरा-माणिक का, फिर सोने-चाँदी का, वह स्वच्छ व्यापार है। सब से खराब कसाई का काम, फिर कुम्हार का। किराने के व्यापार में भी अपार हिंसा और मिलावट है! वजन में कीड़े-मकोड़े के भी पैसे जोड़ लेते हैं। हिंसक काम वाले सुखी नहीं दिखाई देते, मुँह पर तेज नहीं दिखाई देता और पूरे दिन बेचैनी ही बेचैनी, अंत में तो सब व्यवस्थित ही है न?

क्या व्यापार में गलत काम करते हो? वह बंद कर दो, फिर देखो आपकी स्थिति। साफ-साफ बोलकर सामान बेचो कि, 'मैं इतना कमीशन लेकर बेचता हूँ।' खरीदने के लिए कोई न कोई ग्राहक तो आएगा न?

लेकिन धीरे-धीरे मार्केट में आपकी सही व्यापारी की छाप पड़ेगी और लोग खुद चलकर आपके पास आएँगे।

जो व्यवसाय में चालाकी करे, उसे भी उतना फायदा और न करे, उसे भी उतना ही फायदा। चालाकी का कर्म बाँधता है, वह अतिरिक्त फायदा!?

कोई हम से चालाकी करे तब हम भी करें, तो वह रोग हम में भी घुस जाएगा।

कपट और चालाकी में फर्क है। कपट का किसी को पता नहीं चलता, करने वाले को भी नहीं चलता। चालाकी का सब को पता चल जाता है, खुद को भी चल जाता है।

जहाँ 'व्यवस्थित' का ज्ञान वहाँ चालाकी का कहाँ स्थान?

सुबह नहाने के लिए बाल्टी भर पानी मिलेगा या नहीं, क्या ऐसा विचार आता है? रात में सोने के लिए गद्दा मिलेगा या नहीं, क्या ऐसा विचार आता है? वैसा ही इन पैसों का भी है। बिना सोचे मिल जाएँ, ऐसा है फिर भी लोग दिन भर पैसा, पैसा, पैसा करते रहते हैं!

पैसे कमाने की भावना करने का मतलब है, खुद पैसे खींच लेता है, उससे सामने वाले के हिस्से में नहीं आते। अतः हमारे लिए जो कुदरती क्वोटा है, क्या उसमें कम-ज्यादा करने की कोई आवश्यकता है? यदि इतना ही समझ लें तो बहुत सारे पाप होने रुक जाएँगे। प्रयत्न किए जाओ लेकिन कमाने की इच्छा मत करो। भगवान ने उसे रौद्रध्यान कहा है! अतः इच्छा बदलो।

व्यवसाय में स्पर्धा के विचार आते हैं लेकिन क्या उससे कुछ मिलता है? स्पर्धा तो वहाँ तक होती है कि सगा बाप भी अपने बेटे को आगे बढ़ने से रोक देता है। इसलिए दादाश्री ने कुटुंबीजनों से कहा था कि आप सब हम से आगे बढ़ो। सींग से मारने आओ (चाहे मेरा नुकसान करो) लेकिन आगे बढ़ो। मुझसे सीखो।

व्यवसाय बढ़ाना चाहिए या नहीं? सहज रूप से हो वह देखना। विचार कर-करके नहीं बढ़ाना। वह लोभ में जाएगा। चंदूभाई (फाइल नं.-1) क्या प्रयत्न करते हैं, यह आपको देखते रहना है।

सेठ को कर्मचारियों से किस तरह काम लेना चाहिए? क्या डॉट-डपटकर? सेठ यानी जो कभी डॉट ही नहीं, और डॉट वह मूर्ख! बीच में ऐसी एजेन्सियों से काम लेना जो कर्मचारियों को डॉट और फिर सेठ दोनों के बीच समाधान करवाए।

मंदी में सेठ लोग मजदूरों का शोषण करते हैं और तेज़ी में मजदूर सेठों का। तेज़ी-मंदी में समानता से रहने वाले का कोई नाम नहीं होगा, ऐसा जगत् का न्याय है!

लक्ष्मी पुण्य का प्रसाद है, न कि मेहनत का!

जिस व्यवसाय से घाव लगता है, उसी व्यवसाय से वह घाव भरता है! शेयरबाज़ार के नुकसान का किराने की दुकान से भरपाई नहीं होगा।

खेल खेलो लेकिन खिलाड़ी मत बनना। जो खिलाड़ी बने, वे मिट गए।

नीयत क्यों बिगड़ती है? पिछले ज्ञान के आधार पर, और यदि आज यथार्थ ज्ञान मिल जाए और प्रतिक्रमण करके बदल दें तो आगे जाकर साफ हो सकती है। यदि नीयत बिगड़ी तो दुःखी होगा।

यदि नीयत न बिगड़े तो सुखी होगा। जिसकी नीयत कर्ज चुकाने की है, वह चुकाता ही है। कर्ज के साथ मरे, लेकिन यदि अंत तक भाव कर्ज चुकाने का ही रहे तो वह मुक्त ही कहलाता है।

अन्यथा दो-पाँच साल के बाद तो बिल्कुल अंधेरा ही है। बड़ी-बड़ी पार्टियाँ डूब जाएँगी। अतः जो नीति, ईमानदारी से जीता है, दादा भगवान का नाम लेता है, उसे कुदरत मिटने नहीं देगी। वे निर्भय रह सकते हैं। यदि गलती हो जाए और मन में चुभता रहे तो वह 'महात्मा'। गलती करे और मन खुश हो, वे 'वह' सब।

कर्ज वसूलने वाले गालियाँ दे, वह 'एक्स्ट्रा आइटम' माना जाएगा।  
करार करते समय क्या कहीं गालियों का करार हुआ था ?

ज्ञान होने से पहले दादाश्री की भूमिका कैसी थी ? भूमिका में कुछ नहीं आता था इसलिए मैट्रिक में फेल हुए। चारित्रबल सब से ऊँचा। वैसे बचपन में चोरियाँ की थीं, दूसरों के खेतों से बेर, आम चोरी करके खाए थे लेकिन कभी घर नहीं ले गए।

अपने व्यवसाय के संबंध में कभी विचार नहीं किया था। कोई मिलने आते तो उन्हीं की मुश्किलों के बारे में पूछकर मदद करते क्योंकि किसी का दुःख नहीं देख सकते थे।

मान खाने के लिए लोगों को सलाह देते थे। इन्कम टैक्स, सेल्स टैक्स या किसी और से कैसे बचना उसकी युक्तियाँ बताते थे।

दादाश्री के पार्टनर अपने बेटों से कहकर गए थे कि, 'इन दादा की हाज़िरी ही श्रीमंताई है, मुझे कभी पैसों की कमी नहीं हुई'।

पार्टनर के साथ चालीस सालों तक व्यवसाय किया लेकिन कभी भी मतभेद नहीं हुआ। उसका क्या रहस्य है ? दादाश्री ने तय किया था कि खुद नॉन-मैट्रिक को कितनी तनख्वाह मिलेगी ? उतने ही रुपये घर भेजते। बाकी सारे व्यवसाय में, कभी नुकसान हो या खर्च आएँ या बेटे-बेटियों की शादी करवानी हो, तब उसमें से खर्च करते। उनके खुद के तो कोई बच्चे थे ही नहीं। पार्टनर की बेटियों और बेटों की शादियाँ पार्टनरशिप में ही करवाईं। क्या दुनिया में किसी को ऐसे पार्टनर मिलते हैं ? जन्म से ही कोई लोभ नहीं था।

जब व्यवसाय में दादाश्री पर क्रिमिनल केस हुआ था तब निर्दोष छूट गए थे ! लेकिन वीतरागता का उदाहरण दिखा दिया।

कर्ज वसूल करना चाहिए या पिछला हिसाब है, मानकर छोड़ देना चाहिए ? विनय-विवेकपूर्वक माँगना। फिर भी, यदि तंगी हो और न दे तो ऐसा समझ लेना कि अपना हिसाब चुकता हो गया।

दादाश्री ने जब पाँच सौ रुपये वापस माँगे तब बल्कि वह बोला कि, 'किस बात के पाँच सौ? मैंने आपको पाँच सौ उधार दिए थे क्या वह भूल गए?' दादाश्री ने तुरंत उसे दूसरे पाँच सौ रुपये चुका दिए। मन में ऐसा समझकर कि पाँच सौ में निपट गया। लाख माँगे होते तो ऐसे आदमी से कैसे निपटते? फिर किसी जन्म में अब उससे मिलना न हो, इसलिए दे दिए।

किसी को पैसा दो तो काले कपड़े में बाँधकर समुद्र में डाल दिए, ऐसा समझकर ही देना। फिर वापस मिलने की, आशा रखने की मूर्खता ही नहीं होगी न?

पैसों के लेन-देन के व्यवहार को हमेशा के लिए बंद करने के लिए दादाश्री ने रास्ता निकाला कि वसूली ही बंद कर दी। ताकि फिर वह माँगने ही न आए। बाद में पैसों का पूरा कारोबार हीरा बा को सौंप दिया।

जगत् व्यवहार हिसाबी है। ऐसा भी हो सकता है कि फोर्ट में गिरी हुई घड़ी कोई घर आकर भी दे जाए!

और जो हुआ सो न्याय! अन्य न्याय कहीं ढूँढना होता होगा?

वसूली की और नहीं मिला, वही न्याय और न्याय ढूँढे, वह बुद्धि!

आपको वसूली करते रहना है हँसते-हँसते, गपशप करते-करते, नाटक के समान।

जगत् महारानी के शिकंजे में नहीं फँसा बल्कि वसूली के पंजे में फँसा है।

दादाश्री वसूली करने जाते और वहाँ ढीलापन देखते तो बल्कि और देकर आते।

व्यवसाय में मदद करते हुए लुट जाने का अनुभव दादाश्री को कई बार हुआ था। किसी को सामान रखने के लिए जगह दी तो वह चोरी का माल निकला!



सहज प्रयत्न से ही वसूली करनी चाहिए। वसूली करने पर भी परिणाम न बदले तो घर बैठे आ जाएगी! ऐसा है यह विज्ञान।

वसूली करने पर भी पैसे न मिले तो उसके पीछे नहीं पड़ना चाहिए। वरना वह भूत बनकर बैर बाँधेगा!

समझदार लोग कोर्ट में नहीं जाते। वकीलों का चंगुल क्या कोई ऐसा-वैसा होता है?

यदि समय पर कोई पैसे न लौटाए तो क्या कुदरत की कोर्ट से कोई बच सकता है? कुदरत का ब्याज तो दो सौ-तीन सौ साल बाद भी चुकाना पड़ेगा।

खाने की चीजें, दवाईयाँ इत्यादि में मिलावट करने से ज्यादा भयंकर गुनाह और कोई नहीं है।

जितना *अणहक्क* (बिना हक का) का लोगे, उतनी अशांति भोगोगे। व्यवसाय में नीति तो बुनियादी तौर पर चाहिए!

दादाश्री ने जगत् को इस काल के अनुरूप गारन्टीपूर्वक नया सूत्र दिया है।

‘संपूर्ण नीति का पालन करो!’

यदि ऐसा न हो तो नीति का नियम से पालन करो।

और ऐसा भी न कर सको और अनीति करनी पड़े तो वह भी नियम में रहकर करो। नियम ही तुम्हें मोक्ष में ले जाएगा! (ज्ञानी पुरुष की आज्ञा में रहकर)।

यह तो ऐसा हुआ कि आग के पास घी रखा हो फिर भी घी न पिघले! अत्यंत गहराई से सोचने पर ही, किसी विरले और विचक्षण व्यक्ति को ही यह सूत्र समझ में आ सकता है!

अक्रम विज्ञान तो नीति-अनीति, दोनों को ही एक तरफ रख देता है, *निकाली* करके। दोनों के बीज को ही नष्ट कर देता है, ताकि वे फिर से उगें ही नहीं।

अक्रम विज्ञान भ्रांतदशा वाले को क्या सिखाता है ? द्रव्य किसी के वश में नहीं है, वह इफेक्ट है। आप तो सिर्फ भाव ही करो। गलती हो तो आप पछतावा करो, प्रतिक्रमण करो, फिर आपकी जवाबदारी नहीं रहती।

भगवान की दृष्टि में सही-गलत कुछ होता ही नहीं है। सब करेक्ट ही है। सही-गलत तो कल्पना है और यदि करेक्ट नहीं करें तो विकल्पी हो जाएँगे। निर्विकल्पी कब हो सकते हैं कि, जब 'हुआ वही करेक्ट', समझ में ही रहे, तब।

धन कमाने के लिए ज़ोर लगाने की ज़रूरत नहीं, उसमें बरकत कैसे होगी वह देखना है।

बिना बरकत का धन तो उपाधि, हाय-हाय, हाय-हाय और जलन व चिंता करवाता है।

बिना बरकत वाले धन को सदुपयोग में खर्च कर दो! दादा के महात्माओं को भोजन करवाना अति उत्तम है क्योंकि उन्हें किसी चीज़ की इच्छा ही नहीं रही! अतिरिक्त धन हो तो जहाँ भगवान के या सीमंधर स्वामी के मंदिर बनें, वहाँ दिया जाए तो उसके जैसा अन्य कोई स्थान नहीं है। जो ईश्वरीय बरकत में आ गए उनके वहाँ धन की कभी कमी नहीं होती। जहाँ दादा भगवान प्रकट हुए हैं वहाँ से कृपा उतरे तो वही ईश्वरीय बरकत है!

संसार का सार मिला? ज्ञानी पुरुष के अलावा सार कौन निकालके देगा?

#### [ 4 ] ममता रहितता

कब तक इकट्ठा करते रहना है? क्या कुछ साथ ले जा सकते हैं? या पीछे छोड़कर जाना है?

क्या हमारे जाने के बाद नहीं चलेगा? अपनी दशा कोल्हू के बैल जैसी करके अंत में तो पंगु ही होना है न?

‘सहज मिला सो दूध बराबर, माँग लिया सो पानी;  
खींच लिया सो रक्त बराबर, गोरख बोले वाणी।’

देना सीखे ? अनादिकाल से ग्रहण ही किया है। पुण्य और पाप के अधीन अच्छे या बुरे संयोग मिलते हैं।

लक्ष्मी कैसे मिलती है ? मेहनत से ? तब तो मजदूरों के वहाँ ही होती। अक्ल से ? तब तो सेठ के बजाय मुनीम के वहाँ ही होती। तब कैसे ? पुण्य से !

चेक भुनाने में क्या मेहनत ?

पुण्य का उपयोग भौतिक में किया, धर्म में नहीं !

वीतरागों की बात मानते हैं, अहिंसा धर्म का पालन करते हैं, इसलिए जैनों के वहाँ लक्ष्मी आती रहती है !

जैसे-जैसे लक्ष्मी बढ़ती है, वैसे-वैसे उसे संभालने की झंझट बढ़ती जाती है। बैंक में हों तो सगे-संबंधी माँगने आ जाते हैं।

बैंक में जमा करने के बाद ठानते हैं कि पैसे निकालने ही नहीं हैं लेकिन क्या निकाले बगैर रहता है ?

लक्ष्मी तो चंचल है। उसका आधार कभी नहीं लेना चाहिए। आधार तो आत्मा का लेना है।

ये मिल मालिक और करोड़पति लोग ‘पैसे नहीं हैं’ कहकर बेकार का रोना रोते हैं। पचास लाख बचे उसकी गिनती नहीं करते लेकिन एक करोड़ गए उसका रोना रोते हैं।

एक व्यक्ति कह रहा था कि कारखाने में लेबर ट्रबल है, तो क्या कारखाना गुजरात में शिफ्ट कर दूँ ? अरे, कौए सभी जगह काले ही होते हैं। तेरी माया आगे से आगे ही रहेगी। लेबर ट्रबल दूर करने के बजाय अपनी ही ट्रबल दूर कर न !

किसके साथ किच-किच कर सकते हैं ? इन मजदूरों के साथ या

रिक्शा वाले के साथ? वे कितने मार्क्स वाले? बत्तीस मार्क्स पर गधा और तैंतीस मार्क्स पर मनुष्य। एक मार्क गया देह में, बाकी गुण रह गए गधे के। उनके साथ क्या झगड़ा करना चाहिए? चाकू मार देगा, वह। वहाँ से तो दो-पाँच रुपये ज़्यादा देकर भी खिसक जाओ।

नौकर से प्याला फूटे तो सेठ कलह कर देता है। मंदिर से जूते चोरी हो जाएँ तो बड़ा सेठ चार दिन तक जूतों के लिए विलाप करता है। अरे, सिर्फ जमाई के मरने पर ही विलाप करना चाहिए। अब जूतों के लिए भी करने लगे!

लाचारी जैसा अन्य कोई महापाप नहीं है। सर्वस्व चला जाए लेकिन लाचारी नहीं होनी चाहिए। किसी को लाचार करें तो उसके अंदर बैठे हुए भगवान का भयंकर अपमान होता है।

समुद्र में कभी गिरना नहीं, और यदि गिरना अनिवार्य हो जाए तो फिर डरना नहीं। जो डरे नहीं, उनके साथ भगवान रहते हैं! और घुसने के बाद निकल जाए उसकी तो बात ही कुछ और है।

दादाश्री का व्यवसाय करने का तरीका कैसा था? स्टीमर समुद्र में छोड़ने से पहले सभी पूजाएँ करवा लेते, सत्यनारायण की और अन्य सभी, फिर अंत में स्टीमर के कान में फूँक मारते कि 'तुझे डूबना हो तब डूब जाना, हमारी इच्छा नहीं है'! फिर यदि डूब जाए, तो क्या कोई उपाधि होगी?

क्या गलत रास्ते से पैसे कमाने चाहिए? किसी को दुःख देकर कैसे सुखी हो सकते हैं? सही मार्ग से प्राप्त की हुई लक्ष्मी अंतरशांति देती है।

जो औरों के लिए करते हैं, वे खुद के लिए करते हैं। जीवमात्र में आत्मा है। अतः दूसरों की आत्मा के लिए करने से वह खुद के ही आत्मा को पहुँचता है। मोक्षफल मिलता है।

जो दूसरों की देह के लिए करते हैं उन्हें यहीं भौतिक सुख मिलते हैं।

व्यवसाय में क्या झूठ-कपट से लाभ होता होगा ?

वह तो लोकसंज्ञा से घुसी हुई उल्टी समझ है। जो सौ प्रतिशत अच्छा करे उस पर प्रभु खुश होते हैं या फिर सौ प्रतिशत खराब करे उस पर!

मंदी में व्यापार ढीला इसलिए चोरी के काम में तेजी!

जिन्हें ज्ञान न हो, उन्हें नीतिपूर्वक कमाई करनी चाहिए और ज्ञान हो, उन्हें तो जैसी कमाई है, वैसा खा! क्योंकि जैसे हिसाब बाँधे थे वैसा उदय में आएगा! उसमें किसी का नहीं चलेगा, ऐसा अक्रम विज्ञान कहता है। आप अपने स्वभाव भाव में आ जाओ!

व्यापार में पार्टनर ने फँसाया, वह क्या कोई गप्प होगी? जो हिसाब में हो, वही होता है। आज उसने फँसाया, कल शादी होगी तब बीवी फँसाएगी। उसमें भूल किसकी? भुगते उसकी।

यदि मेहनत से फायदा होता है, तो नुकसान भी मेहनत से ही होता है न?

जिसे रिफंड आने पर आनंद हो, उसे दंड मिलने पर अचूक दुःख होगा ही।

ईमानदारी, वह तो भगवान की आज्ञा का पालन करने के बराबर है। किसी को ठगना मत। निष्ठा से, ईमानदारी से कार्य करना। आपको निर्भयता रहेगी।

सत्य हमेशा देरी से ही प्रकट होता है! सत्यनिष्ठ को धीरज रखना चाहिए।

नीति तो व्यवहार का सार है! जहाँ नीति नहीं, वहाँ करोड़ों रुपये होने पर भी बेहिसाब अकुलाहट और घबराहट!

आत्म स्वरूपी के लिए सब *निकाली* है। नीति-अनीति पालन करने लगे तो शुद्धात्मा पद चला जाएगा। वह पौद्गलिक गुण है। यहाँ तो ज्ञानी की आज्ञा का पालन करना है, 'समभाव' से *निकाल* करो।

इस जन्म में इतने सारे ओवरड्राफ्ट लिए हैं कि कितना भी धन इकट्ठा करते रहें, फिर भी कर्ज कम नहीं होता। पुनिया श्रावक की इतनी सामायिक की, फिर भी ऊपर नहीं उठ पाता।

अब दुकान (का माल) खाली करके निकाल दो। नया माल मत भरना, सिर्फ गुड़ या शक्कर, इतना ही भरना, वर्ना ग्राहक चले जाएँगे! कर्ज वसूल करने वाले या धरोहर रखने वाले के साथ समाधान कर लेना।

जैसे ऑईल पेन्ट पर पानी गिरे तो चिपकता नहीं, वैसे ही रुपयों का होना चाहिए।

संग्रह करने में हर्ज नहीं है लेकिन वह याद नहीं रहना चाहिए।

जंक्शन पर अपनी गाड़ी का समय संभालना, वर्ना सभी गाड़ियाँ लेट हो जाएँगी।

व्यापार में सबकुछ संभालते हुए भी दादा का दिया हुआ आत्मा चला नहीं जाता। यह अक्रम विज्ञान का आश्चर्य तो देखो!

सत्संग में हर रोज पाँच-दस मिनट भी हाज़िरी देना, जब 'हम' हाज़िर हों तब!

दादाई ब्लैंक चेक ऐसा है कि जो भरो वह मिलता है! लेकिन उसका दुरुपयोग मत करना!

दादा का चेक तो जब अंतिम सांस के समय ज़रूरत पड़े तभी भुनाना है! क्या शादी में जाने के लिए भुनाना है?

दादा के बिना समय कैसे बिताएँ? फिर भी व्यवहार उदयाधीन है और निश्चय से दादा हमारे साथ ही हैं।

ममत्व रहितता तो ज्ञानी में ही संभव है! द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से और भाव से जिन्हें ममता न हो उनके लिए मोक्षमार्ग खुल जाता है!

ममता कब छूटती है ? जब सगे-संबंधी, माँ-बाप, भाई-बहन, सभी जगह वीतरागता रहे, तब !

बाकी, हजार गिनियाँ दे दें लेकिन एक रहने दे, वह वणिक ! क्षत्रिय एक भी नहीं रखते हैं ! तभी तो क्षत्रिय ही 'तीर्थकर' बनने के लायक माने जाते हैं !

दादाश्री की ममता तो कितने ही अवतारों से चली गई थी ! जिनका *पोतापणां* (मेरापन) गया वे भगवान कहलाते हैं !

एक वणिक सेठ को संकेत द्वारा समझाते हुए दादाश्री कहते हैं, 'आपकी सारी जायदाद में से बेटी को, दूसरों को, जितना देना हो उतना दे दो और जो बाकी बचे वह संघ को सौंप दो। जब ज़रूरत पड़े तब संघ से ले लेना, यदि आए तो वह भी संघ को दे देना ! इतनी आज्ञा का पालन करोगे तो आप हमारी तरह लगभग उदयाधीन के करीब आ जाओगे ! फिर पूरी ज़िम्मेदारी दादा की ! लेकिन ममता छोड़नी क्या इतना सरल है ?

ज्ञानी के कहे अनुसार करने से पूरी ममता छूट जाती है। यह चाहे जितनी सुंदर भक्ति हो लेकिन वह गिन्नी रखने की आदत कैसे जाए ? इतनी सी ही ममता सर्वस्व समर्पण नहीं होने देती !

सर्वस्व समर्पण होने पर मूल आत्मा में आ सकते हैं ! यह जो पैसों की बैठक रखी है, वह पूर्ण आत्मा में नहीं आने देती ! निरालंब दशा होते ही ज्ञानी पद आता है ! बैठक में 'मैं' और 'आत्मा' दो ही होते हैं। फिर तीसरी कोई चीज़ बैठक में रखी ही कैसे जा सकती है ?

ज्ञानी क्या करते हैं ? ज्ञान बता देते हैं। फिर जिसे जो अनुकूल हो वह ग्रहण करें। ज्ञानी को तो ज्ञान का भी आग्रह नहीं होता कि आप उसे ग्रहण करो !

व्यापार में सामने वाले को दुःख होता है लेकिन अगर भाव बढ़ाने के अलावा कोई चारा ही न हो तो वहाँ महात्मा को क्या करना चाहिए ?

वह व्यापार व्यवस्थित करवाता है न? खुद शुद्धात्मा पद में रहकर चंदूभाई से प्रतिक्रमण करवाना, खुद नहीं करना!

यदि महात्मा को इफेक्ट में ब्लैक मार्केटिंग करने का आए तो प्रकृति छोड़ेगी नहीं, करवाएगी लेकिन आपको तो 'प्रतिक्रमण' करके 'धोते' रहना है! ब्याज भी नहीं ले सकते, वर्ना कसाई जैसे हो जाओगे। फिर भी यदि चंदूभाई ले तो उसके लिए आपको प्रतिक्रमण करवाना है।

यदि चोरियाँ की हों तो उसका प्रतिक्रमण करना ताकि, 'चोरी करनी चाहिए', वह अभिप्राय खत्म हो जाए! जितनी बार दोष दिखें, उतनी बार फिर से प्रतिक्रमण करना।

बेईमानी, अनीति वगैरह के बार-बार प्रतिक्रमण करके धो देना।

यदि अंडरहैन्ड को डाँटो तो उसका प्रतिक्रमण करके छूट जाना!

दादाश्री ने एक बार ईनाम निकाला था, यदि कोई उनको एक तमाचा मारे तो उसे पाँच सौ रुपये का ईनाम! लेकिन ऐसा जोखिम कौन लेता? जिन्हें ऐसी मूल्यवान वस्तु की कीमत समझ में आए, उन्हें क्या अपमान का दुःख रहेगा?

## [ 5 ] लोभ से खड़ा हुआ संसार

जितना परिग्रह कम, उतनी जीवन में शांति। पूरा दिन लोभ में ही जाता है। खाने-पीने में, पहनने-ओढ़ने में भी चित्त न टिके।

लोभी तो उठते ही, जिस तरह लोभ की गांठ फूटती है उस तरह घूमता रहता है। सब्जी बाजार में भी सस्ते ढेर ढूँढता है! अरे, हँसने में भी लोभ! लोभी हर चीज़ सस्ती ढूँढता है! शौचालय में भी लोभ, पानी का कम उपयोग करता है! नहाते समय भी साबुन या पानी इस्तेमाल करने में लोभ! दीया जलाने में भी दो तीलियाँ नहीं जलाता! कुशलता से जलाता है।

सब से अधिक लोभी तो यह चींटी है! सुबह चार बजे देखो तब भी शक्कर लेकर दौड़ती रहती है! तेज़ी से बिल में इकट्ठा करती है!



आधा घंटा भी नहीं सोती! वह इकट्ठा करती है और दो चूहे साफ कर जाते हैं! लो, लोभी को कुल मिलाकर क्या मिला?

बेटी की शादी करने के लिए क्या पच्चीस साल पहले से इकट्ठा करना चाहिए? क्या इकट्ठा किया हुआ टिकता है?

आती हुई लक्ष्मी खर्च करनी चाहिए लेकिन सद् (सत्) रास्ते पर! कुछ ही धन रखकर बाकी का उचित जगह पर खर्च करना चाहिए!

पच्चीस लाख के आसामी को कोई पचास हजार का नुकसान करवा दे तो आर्तध्यान शुरू हो जाता है! 'साढ़े चौबीस लाख की ही पूंजी थी', ऐसा मान लेने पर क्या आर्तध्यान होगा?

नौकर से पुरानी मटकी फूट जाए तो? और एक दर्जन महंगे कप-प्लेट टूट जाएँ तो? सेठ की क्या स्थिति होगी? उसे कीमती माना उसी से परेशानी है न? डिवैल्यू कर दो न!

चाहे जितना भोग लें लेकिन तृप्ति नहीं होती है। थोड़ी देर संतोष होता है। तृप्ति यानी फिर कभी तृष्णा न हो! इच्छा न हो!

'साधनों में तृप्ति मानना, वह मनोविज्ञान है! और साध्य में तृप्ति मानना, वह आत्मविज्ञान है!' आत्मा प्राप्त हुए बिना संपूर्ण तृप्ति नहीं हो सकती।

लोभी और कंजूस में क्या फर्क है? कंजूस सिर्फ धन में ही रहता है और लोभी को तो हर बात में लोभ होता है! सबकुछ खींच लेता है!

कंजूसी और क्फायत में क्या फर्क है? क्फायत यानी हजार कमाए और आठ सौ में निर्वाह करे! पाँच सौ कमाए और चार सौ में निर्वाह करे! कर्ज लेकर खर्च न करे! जबकि कंजूस तो सिर्फ चार सौ ही खर्च करता है, फिर चाहे हजार-दो हजार कमाता हो।

दादाश्री तो सूक्ष्मता वाले भी थे, क्फायती भी और उड़ाऊ भी थे। फिर भी संपूर्ण एडजस्टेबल! औरों के लिए उड़ाऊ, खुद के लिए क्फायती और उपदेश देने में सूक्ष्मता वाले! सामने वाले को दादाश्री का प्रबंधन सूक्ष्मता वाला दिखाई देता था।

घर में सभी जगह किफायत स्वीकार्य है, सिर्फ रसोईघर को मुक्त रखना। उससे मन बिगड़ता है।

जिस लोभ से आचार बिगड़े उससे पशुगति में जाते हैं। यदि आचार न बिगड़े और लोभ हो तो उच्च प्रकार का लोभ माना जाता है और वह देवगति में ले जाता है।

अरे, मरने के बाद साँप बनकर घड़े (धन संग्रहित करके रखा हुआ बर्तन) को संभालता है, ऐसा लोभ होता है।

आठ आने खो गए हों तो आठ घंटे उन्हें ढूँढने में लगाते हैं।

गरीबी या अमीरी, दोनों ही अहितकारी हैं, नॉर्मेलिटी चाहिए। कबीर जी कहते हैं, 'खा-पी, खिला दे, कर ले अपना काम, चलते समय हे मानवों, संग न चले बादाम!'

लोभी तो पत्नी को भी ठगता है! सेठानी यात्रा के लिए पच्चीस हजार माँगे तो सेठ कहते हैं कि, 'अभी नहीं हैं' और बैंक में देखो तो पाँच लाख पड़े होते हैं!

लोभ तो हिंसक भाव है! दूसरों के पास से मेरे पास आए, उससे उसे दुःख हो वह हिंसक भाव है।

लोभ से संसार खड़ा है! जब लोभ पूर्ण रूप से चला जाएगा तभी आपका संसार अस्त होगा!

मान का रक्षक क्रोध है और लोभ का रक्षक कपट है।

लोभी को मान की नहीं पड़ी होती, सिर्फ लोभ में ही पड़ा रहता है! अपमान हो वहाँ भी लोभी हँसता है, ज्ञानी के जैसा ही बर्ताव करता है! उसका लक्ष्य तो खुद को क्या मिला वहीं रहता है!

लोभी सेठ तो सेठानी को सस्ती साड़ी ही पहनने को कहता है, बाहर खराब न लगे इसलिए। जबकि मानी तो लक्ष्मी का दिखावा करने के लिए, पत्नी को पाँच-सात हजार की साड़ी पहनाता है! मानी जल्दी

छूट जाता है, लोभी को बदलना महामुश्किल है! लोभ यानी अंधापन। मानी तो मान मिलते ही धोखा खा जाता है।

लोभी को किसी बात का असर ही नहीं होता, नुकसान के अलावा।

दादाश्री तो ज़िंदगी भर जान-बूझकर ही ठगे जाते रहे! और जो जान-बूझकर ठगे जाएँ, वे मोक्ष में जाते हैं! जो लोभी से ठगे जाएँ, वे श्रेष्ठ व्यक्ति!

ज्ञानी भोलपन में नहीं ठगे जाते, उस तरह तो अज्ञानी ठगे जाते हैं। ज्ञानी तो जान-बूझकर ठगे जाते हैं।

‘कबीर आप ठगाइए, और ठगे न कोय।

आप ठगे सुख उपजे, और ठगे दुःख होय।’

समझकर ठगे जाने से ब्रेन टॉप पर जाता है। सुप्रीम कोर्ट के जज जैसा ब्रेन हो जाता है।

‘मानी’ को मान देकर ‘लोभी’ से ठगे जाते हैं। सब का अहम् पोषकर, वीतराग चले जाते हैं। बदले की आशा के बिना बरतते हैं वीतराग!

दादाश्री ने तो खटमल को भी कभी खुद की (देहरूपी) होटल से भूखा नहीं जाने दिया। हमेशा चोविहार (सूर्यास्त से पहले भोजन करना), हमेशा कंदमूल का त्याग, हमेशा गरम पानी, वगैरह नियम रखे थे! अंत में ऐसा अक्रम विज्ञान प्रकट हुआ, जो पूरे जगत् को प्रभावित कर दे!

‘हमारे ठगे जाने से सामने वाला ज्यादा बिगड़ जाएगा, उसका क्या?’ इसके उत्तर में दादाश्री कहते हैं कि ऐसे दो-पाँच ही बिगड़ेंगे और कुदरत उन्हें योग्य दंड देगी ही। मेरा तमाचा धीरे से लगेगा क्योंकि हम दयालु हैं न! जबकि कुदरत बराबर तमाचा मारेगी।

समझकर ठगे जाने जैसा परमार्थ और पुरुषार्थ अन्य कोई नहीं है!

लोगों पर विश्वास एक ऊँची चीज़ है। चाहे कितना ही छल-कपट हो लेकिन विश्वास करना छोड़ नहीं देना चाहिए! अध्यात्म के लिए अहितकारी होता है।

जो समझकर ठगा गया, उसकी नैया पार...

दादाश्री ने नोट गिनने में कभी समय नहीं गँवाया। क्या ऐसे काम में उनकी हाई पावर मशीन रुकती होगी? उन्हें दो-पाँच कम आएँ, वह स्वीकार था लेकिन यह (गिनना) स्वीकार नहीं था। फिर भी लोगों को गिनकर लेने और गिनकर देने की सीख देते थे। क्योंकि कम-ज़्यादा हों तो क्या उन्हें वह स्वीकार होगा?

जब बड़ौदा से गाँव के लोगों द्वारा मँगवाई हुई चीज़ें लाते तब खुद नुकसान उठाकर दाम से दो रुपये कम लेते थे। चाहे खुद को अधिक दाम पर मिली हों तब भी? सामने वाले को शंका हो जाए तो प्रेम टूट जाता है न?

सरकार के ऐसे नियम आए कि व्यापारी ऊपर के पैसे रखने लगे। उसमें गुनहगार कौन? हाँ, चोरी करनी, वह सब गुनाह कहलाएगा।

अतः ये टैक्स के नियम आए, वह भी 'व्यवस्थित' और लोगों ने रास्ते निकाले, वह भी 'व्यवस्थित'। आपको तो शुद्धात्मा भाव से देखते रहना है, इस 'अपराधी' को!

युगांडा की सरकार ने दो नंबर के धन को भी लीगलाइज किया, फिर गुनाह करने को बचा ही नहीं न!

जैसे लोभी की जागृति लोभ में ही रहती है, वैसी ही जागृति यदि आत्मा में रहे तो संसार बाधक ही नहीं है।

यदि रेल्वे में वज़न के अनुसार टिकट का रेट होता तो लोभी पतले होने की इच्छा रखते। समेत शिखर, राजगृही, इन सब जगह पहाड़ पर चढ़ने के लिए डोलियों का चार्ज वज़न पर ही होता है न!

मान के हेतु से लोभ होता है। स्वरूप ज्ञान के बाद मान और लोभ

को देखते रहने से वे चले जाते हैं। यही उपाय है। वर्ना लोग तो उसमें उलझते ही रहेंगे।

लोभ की गांठ तोड़ने के लिए एक व्यक्ति को दादाश्री ने उपाय बताया था कि रोज़ पंद्रह-बीस रुपयों की चिल्लर गिराते जाना। दिनोंदिन, मन कम करने लगेगा, फिर एक सप्ताह के बाद एक साथ सौ रुपये गिराते आना ताकि मन ठिकाने पर आ जाए।

लोभ की गांठ पिघलाने का दूसरा उपाय है कि मन से सारी जायदाद, बैंक बैलेन्स को निकालकर दे देना। मन से, रूपक में नहीं। रूपक तो 'व्यवस्थित' के हाथ में है लेकिन भावना से दे तो भी सभी गांठें खुल जाएँगी।

यदि मरते समय साथ ले जा पाते तो लोग ऐसे नहीं हैं कि बेटे को भी देकर जाते।

लोभ तोड़ने के लिए, सब्ज़ी जिस भाव से मिले, ले लेना।

श्रीमद् राजचंद्र ने लिखा है कि 'ज्ञानी पुरुष की तन, मन और धन से सेवा करना'। अब, ज्ञानी पुरुष को धन की क्या ज़रूरत है? वे तो किसी चीज़ के इच्छुक नहीं हैं। उन्हें तो ज़रूरत नहीं है लेकिन आपकी लोभ की गांठ तुड़वाने के लिए वे आपसे कहते हैं कि फ़लाँ-फ़लाँ जगह पर पैसे दान कर आओ।

भयंकर नुकसान लोभ की गांठ को तुरंत तोड़ देता है!

जिसे कुछ भी नहीं चाहिए, जब लोभ की सारी गांठें टूट जाती हैं तब अनंत समाधि सुख रहता है!

अपने हिन्दुस्तान में लोभ फुल डेवेलप हुआ होता है। फ़ॉरेन वालों को बहुत कम होता है। वे पैसे बचा नहीं सकते। फ़ॉरेन में तो बेटा अठारह साल का हो जाए, तभी तक लोभ होता है! जबकि हमारे यहाँ सात पीढ़ी का लोभ। उस अंधे वणिक ने भगवान के पास माँगा था न, कि 'मेरे बेटे के बेटे की बहू हवेली की सातवीं मंजिल पर सोने के हिंडोले में देव जैसा बेटा झुलाए, वह मैं नीचे रहकर देखूँ।'।

जितना लोभ ज्यादा उतना संताप भी ज्यादा। इसीलिए लोभी को अत्यधिक जलन होती है।

अंतरसुख और बाह्यसुख का पलड़ा बैलेन्स में होना चाहिए। वह बैलेन्स अभी टूट गया है।

जिसके पैसे सही दिशा में जाए, वह सुखी, वर्ना गटर में तो जाने ही हैं।

‘लक्ष्मी कब नहीं मिलती? लोगों की निंदा-चुगली में पड़े रहें तब!’

मन की स्वच्छता, देह की स्वच्छता और वाणी की स्वच्छता हो तो लक्ष्मी मिलती है!

अपना देश कब ऊपर उठेगा? जब निंदा और तिरस्कार बंद होंगे तब। जब लोभ बढ़े तब निंदा और तिरस्कार, दोनों ही बंद हो जाते हैं।

हिन्दुस्तान में धीरे-धीरे सुख का लोभ बढ़ता जा रहा है और निंदा-चुगली कम हो रही है! अतः विश्व में हिन्दुस्तान जरूर ऊपर उठेगा!

साल 2005 में हिन्दुस्तान विश्व का केन्द्र बनेगा। युग परिवर्तन हो रहा है।

तब तक का समय भयंकर रहेगा। कुदरत की मार पड़ेगी लेकिन न्यायसंगत ही। कुदरत कभी एक मिनट भी न्याय से बाहर नहीं जाती। सुकाल हो तब भी न्याय और अकाल पड़े तब भी न्याय।

## [ 6 ] लोभ की समझ, सूक्ष्मता से

कई जन्मों तक भटकाने वाला कोई एक दोष है तो वह है, लोभ!

पापानुबंधी पुण्य ऐसा है कि अत्यधिक पैसा हो फिर भी सेठ का पूरा दिन पैसे की हाय-हाय में ही जाता है। भोग नहीं सकते और अगले जन्म के लिए पाप बाँधते हैं!

पुण्यानुबंधी पुण्य यानी सामने वाले को सुख देते समय किसी भी प्रकार की बदले की इच्छा न रखे!

जीवन जीना आया तो उसे कहा जाएगा कि खुद का सर्वस्व सही मार्ग में लगा दे। ऐसे भी एक दिन तो खुद खत्म होने ही वाला है।

साथ में क्या आएगा? औरों के दिलों को ठंडक पहुँचाई हो, वह! सगे-संबंधियों के दिलों को ठंडक पहुँचाई हो उसे तो, उनका हिसाब चुकाया, ऐसा माना जाएगा।

जिस सीक्वेन्स में जाते हैं, वह है क्रोध, फिर मान, फिर माया और अंत में जाता है लोभ!

कोई भी चीज़ देखी और उसे लेने का भाव हुआ, वह है लोभ। ली हुई चीज़ दिखाने का भाव हुआ, वह है मान। फिर जब कोई उसे लेने लगे तब उसका रक्षण करे तो वह है क्रोध और माल लेते समय बदल दे, वह है कपट।

जिन्हें किसी भी तरह की इच्छा ही नहीं है, उनमें कषाय बिल्कुल नहीं होते!

जो लोकसंज्ञा से ऐसा मानने लगे कि, 'पैसे इकट्ठे करने वाला सुखी हो जाएगा', तो वह बन जाएगा लोभी!

निन्यानवे का धक्का लगा कि घुसा लोभ!

सभी जगह किफायत कर सकते हैं लेकिन आत्मा के लिए नहीं! (सही मार्ग में उपयोग करने में)

लोभी और किफायती में क्या अंतर है?

लोभी का चित्त, खुद की पूंजी कम न हो, उसी में रहता है और किफायत यानी पैसा खर्च करते समय कैसे बचाएँ, उसमें रहता है। सब्जी लेने जाए तो पाँच मिनट ज्यादा घूमकर सस्ती लेकिन अच्छी सब्जी लाता है और लोभी, ढेर लगी हुई सब्जी, भले ही खराब हो, लेकिन सब से सस्ती लेकर आता है!

पैसे बचाकर अच्छे काम में खर्च किए कि लोभ टूटा!

लोभी किसी रंग में नहीं रंगता! सत्संग में भी नहीं! उसके भीतर यही गणित चलता रहता है कि किसकी गाड़ी में जाने मिले ताकि रिक्शा के पाँच रुपये बच जाएँ। जो सत्संग में भी घर-बार इत्यादि न भूले, वह लोभी!

सत्संग में ही नहीं बल्कि पत्नी, बच्चे या मित्र के रंग में भी न रंगे, उसे कहते हैं लोभी!

मान तो भोला है जो अपमान मिलते ही टूट जाता है। लोभी तो पूरे दिन आर्तध्यान-रौद्रध्यान करता रहता है!

मूल दृष्टि आत्मा की ओर न जाकर, चार ग्रंथियाँ – क्रोध, मान, माया व लोभ की ओर ऐसे टिकी रहती है कि वह छूटती ही नहीं!

मान की गांठ वाला, सुबह से ही मान पाने के गणित में लगा रहता है!

सब से बड़ी लोभ की गांठ। लोभ न टूटे तो दृष्टि बदलती ही नहीं! दिन भर ध्यान लोभ में ही रहता है!

लोभ का रक्षक कपट। कोई लोभ की गांठ तोड़ न दे, उसके लिए कपट रक्षण करता है। देने का समय आने पर कपट करके मौका छोड़ देता है!

वणिकों में लोभ की गांठ बहुत भारी होती है। क्षत्रियों को, जब तक गरीबी हो तभी तक लोभ रहता है। श्रीमंताई आए तो वह टूट जाती है। जन्म से ही बड़े मन वाला होता है लेकिन जहाँ वाह-वाह हो वहीं दान करता है!

दादाश्री खुद की मान की गांठ के लिए हमेशा कहते थे कि '(यह ज्ञान होने से पहले) हम भी जहाँ वाह-वाह हो, वहाँ लाखों रुपये उड़ा देते लेकिन ऐसे ही धर्म दान नहीं करते थे!'

मारवाड़ी बहुत लोभी लेकिन धर्म दान भी बहुत करते हैं। खुद पर खर्च नहीं करते!



जब सरकार अधिक टैक्स लगाए तब लोभ की गांठ टूटती है !

हाथ खाली हो लेकिन दिल का राजा हो, वह अच्छा !

यात्रा में खर्च हो तो उससे लोभ घटता है !

हम खुद के लोभ की निंदा करें, डाँटे, तब लोभ से छूट सकते हैं ।

जो ज्ञानी की भी न मानें, कई ऐसे लोभ की ग्रंथि वाले लोभी भी बहुत मिले हैं ।

पछतावा करने से, लोभ को 'देखते' रहने से वह जाता है, लेकिन वह ग्रंथि उसे जल्दी 'देखने' नहीं देती !

जागृति का प्रकाश लोभ पर पड़ने के बजाय यदि लोभ की परछाईं जागृति पर पड़े तो लोभ कैसे खत्म होगा ?

सत्संग का ज़्यादा परिचय लोभ की ग्रंथि तोड़ देता है और निजदोष दिखाकर उसे निर्मल बनाता है !

मोक्ष को ध्येय बनाकर आत्मरूप होने पर ही लोभ छूटता है और सब से अंत में जाता है लोभ !

आत्मा की ओर प्रगति तेजी से कब होती है ? जब खुद को सर्वाधिक प्रिय, अतिप्रिय चीज़ ज्ञानी को समर्पित कर दें, तब । तब से ज्ञानी के करीब आ जाता है ।

ज्ञानी किसी हेतु से ही पैसे खर्च करने का (रास्ता) दिखाते होंगे न ? अरे, खेतों में जो (फसल) हुई उसे फिर से उगाने के लिए बीज नहीं डालने पड़ेंगे ? ये पटेल लोग तो बीज भी खा जाते हैं !

सुमार्ग में खर्च की जाने वाली लक्ष्मी क्या अगले जन्म के लिए ओवरड्राफ्ट नहीं है ?

ज्ञान न हो तब भी लोभ छोड़ सकते हैं ! बड़ा मंदिर बनवाएँ और ओवरड्राफ्ट पाएँ (पुण्य उपार्जन करे) !

कृपालुदेव ने कहा है कि ज्ञानी पुरुष की तन, मन और धन से सेवा करनी चाहिए क्योंकि उसके बिना भक्ति परिणामित नहीं होती। जबकि ज्ञानी पुरुष को तो कुछ भी नहीं चाहिए। वे कुछ लेते भी नहीं हैं।

दादाश्री के पास सिर्फ रूखा अध्यात्म नहीं बल्कि साथ में आदर्श व्यवहार भी था। व्यवहार व निश्चय के दोनों पंखों से रॉकेट जैसी तेज गति से उड़कर मोक्ष में जा सकते हैं, ऐसा यह अक्रम विज्ञान दादाश्री के निमित्त से प्रकाशमान हुआ है।

जीवन कैसा होना चाहिए? परोपकार के लिए, पर-कल्याण के लिए। तीर्थकरों को ही देखो न! समग्र वैभव, राजसिंहासन, रानी, राजकुमारी, सब को छोड़कर निर्ग्रथ होकर चल पड़े थे। किसलिए? स्व-पर कल्याण के लिए! स्व का कल्याण हो चुका था फिर भी उसी तरह विचरे, औरों के कल्याण के लिए! उसे जीवन कहते हैं। पत्नी, बच्चों के लिए तो अनंत जन्म भटकें लेकिन एक जन्म तो दूसरों के लिए बिताकर देखो!

जो सेवाभाव का निश्चय करते हैं, उन्हें लक्ष्मी बाइ प्रोडक्शन में मिल ही जाती है।

आत्मा प्राप्त करने के लिए जो कुछ भी किया जाता है, वह मेन प्रोडक्शन है। बाइ प्रोडक्शन में उसे संसार की सारी ज़रूरतें मिल ही जाती हैं। दादाश्री कहते हैं, “मैं अपना एक ही प्रकार का प्रोडक्शन रखता हूँ। सारा जगत् परम शांति को प्राप्त करें और कुछ लोग मोक्ष को प्राप्त करें। बाइ प्रोडक्शन में हमें क्या कुछ नहीं मिलता!”

इसलिए जीवन का उद्देश्य बदलो और काम किए जाओ। मोक्ष के हेतु के बाद लक्ष्मी लक्ष्य में रहनी ही नहीं चाहिए। जगत् का काम करते जाओ, आपका काम जगत् कर लेगा।

## [ 7 ] दान का प्रवाह

अच्छे कार्य करना यानी क्या? क्या वह सिर्फ पैसों से ही हो

सकता है? ऐसा नहीं है। ओब्लाइजिंग नेचर से भी हो सकता है न? किसी का काम कर दें, चक्कर लगाएँ, किसी भी तरह से कर सकते हैं।

लक्ष्मी का सदुपयोग कैसे हो सकता है? औरों के लिए या भगवान के लिए खर्च करने से। बाकी सब गए गटर में। औरों के लिए खर्च करने से अगले जन्म के लिए खुद की सेफसाइड हो जाती है।

दान मोक्ष के लिए नहीं होता, सुख देकर सुख लेने के लिए होता है!

दान करना अच्छा है या उपवास करना? दान करना यानी खेत में बीज डालना और फिर फसल काटना। जबकि उपवास से जागृति बढ़ती है।

जीवित लोगों से क्लेश करते हैं और मंदिरों में लाखों का दान करते हैं, ऐसा कैसा?

यदि जीवित लोगों को दें तब तो परम कल्याण हो जाएगा! आजकल गरीब किसे कहना, वह मुश्किल है। वैसे तो भिखारी होते हैं लेकिन बैंक में लाख रुपये जमा होते हैं। भिखारी के नाम पर व्यापार शुरू हो गया है।

दान करके तख्ती में नाम लिखवाना, वह तो मिट्टी में मिलाने जैसा है। नाम की तो अर्थी उठेगी। अनामी बनेगा तो काम होगा।

लक्ष्मी क्यों नहीं टिकती? 1942 के बाद की लक्ष्मी टिके, ऐसी है ही नहीं। हाँ, उसका प्रवाह घुमा दो। सुमार्ग पर मोड़ दो। वर्ना गटर में तो जाने वाली ही है। महा पुण्यशाली हो, उसी की लक्ष्मी सुमार्ग पर खर्च होती है।

यदि कुमार्ग पर खर्च हो तो वहाँ कंट्रोल करो और सुमार्ग पर खर्च हो तो वहाँ डीकंट्रोल कर दो।

मन बिगड़ने के कारण धार्मिक कार्यों में नहीं दे पाता!

अंतराय कैसे डलते हैं? कोई दान दे रहा हो और कोई बुद्धिशाली

कहे कि, 'यह तो चोर कंपनी है, यहाँ क्या देना?', तो उसने अंतराय डाला। देने वाले ने दिया और लेने वाले ने लिया भी! लेकिन उसने, बिना मतलब के, सिर्फ बोलने के कारण अंतराय डाला!

मन से तो और भी भारी अंतराय पड़ते हैं। मन से डाले हुए अंतराय अगले जन्म में फलित होते हैं।

निश्चय करे, तय करे कि मुझे देने ही हैं, उससे अंतराय टूटते हैं! और यदि नेगेटिव विचार आएँ तो उनके प्रतिक्रमण करके धो देना होगा। तब अंतराय पड़ने से रुक जाएँगे।

सुषमकाल की लक्ष्मी मोह के लिए थी जबकि दूषमकाल में तो लक्ष्मी हार्ट अटैक करवाती है!

अतः इस लक्ष्मी को धर्म में लगाना। जरूरत पड़ने पर धर्म ही बचाएगा।

वीतरागों ने चार प्रकार के दान बताए हैं। 1. आहारदान 2. औषधदान 3. ज्ञानदान 4. अभयदान।

भूखे को खाना खिलाओ। उसे आज का तो जीवनदान मिला! फिर कल की चिंता मत करो। कल उसे कोई और मिल जाएगा। एक समय का खाना खिलाकर एक दिन का जीवनदान दो!

औषधदान यानी, यदि कोई असहाय व्यक्ति बीमार पड़े तो वह दवाई के पैसे कहाँ से लाएगा? वैसें को दवाई के पैसे देना या फिर दवाई लाकर मुफ्त में देना, उसे औषधदान कहते हैं। उस दवाई से जो दो-पाँच साल वह जीवित रह सका! और बीमारी से मुक्ति पा सका। औषधदान आहारदान से ऊँचा है!

औषधदान से ऊँचा है ज्ञानदान। जो लोगों को सन्मार्ग पर ला दे ऐसी पुस्तकें छपवाकर बाँटने को ज्ञानदान कहते हैं। यदि किसी को दादा का एक वाक्य भी मिल जाए तो वह कितना परिवर्तन कर देता है? यदि अधिक लक्ष्मी हो तो ज्ञानदान में उपयोग करना उत्तम है।

सब से ऊँचा अभयदान। किसी भी जीव को हमारे वर्तन, विचार और वाणी से किंचित्मात्र भी भय न लगे, उसे अभयदान कहते हैं।

दादाश्री बचपन में रात को बारह बजे घर आते तो जूते हाथ में लेकर धीरे से आते, जिससे कुत्तों की नींद में खलल न पहुँचे। उसे कहते हैं अभयदान।

अभयदान के लिए पैसों की भी जरूरत नहीं होती लेकिन वह हर किसी के बस की बात नहीं है। वह तो ज्ञानी या ज्ञानी का परिवार ही दे सकते हैं। इसलिए सब पैसे खर्च करके दान करना और 'अभयदान' का भाव करना!

वीतरागों ने कहीं भी दान में कैश (नकद) लक्ष्मी देने के लिए नहीं कहा है!

गाय जब मरने लगे तब उसे दान में देने का क्या अर्थ है? बचा हुआ भिखारी को खिलाते हैं, क्या ताजा बनाकर खिलाते हैं? वीतरागों के वहाँ गप्प नहीं चलती।

नाम कमाने के लिए जो पुस्तकें छपती हैं उन्हें कोई नहीं पढ़ता। लोगों के काम आए, ऐसी पुस्तकें छपे तो वह काम का है।

मुंबई से बड़े-बड़े दान के प्रवाह बहते हैं। मुंबई पुण्यशालियों की नगरी है। गटर में भी उतना ही धन जाता है।

मुंबई की धरती का गुण ऐसा है कि वहाँ अच्छी से अच्छी चीजें खिंची चली आती हैं। मुंबई की प्रजा सब से ज़्यादा संस्कारी है!

एक ज़माना था, स्वर्ण दान का जबकि आज है 'ऑन' (मूल कीमत से ज़्यादा में बेचना) के दान का!

एक ज़माने में भगवान दानी को 'श्रेष्ठी' कहते थे, जिसका आज अपभ्रंश हुआ और साउथ में 'शेट्टी' कहलाते हैं जबकि यहाँ अपभ्रंश होकर 'सेठ' कहलाते हैं? अरे! कितनी ही मिलों के सेठों को उनके नौकर एकांत में क्या कहते हैं? सेठ शब्द में 'से' के ऊपर से 'मात्रा' निकाल देने जैसा है (सठ = धूर्त)!

कर्ण बहुत बड़ा दानेश्वरी था लेकिन वह मोक्ष के लायक नहीं था क्योंकि वह मिथ्यात्वी के पक्ष में था। यदि कोई भी संतपुरुष मिथ्यात्वी के पक्ष में हों, तो वे भी मिथ्यात्वी हो जाते हैं। एक दिन भी मिथ्यात्वी के घर का अन्न खाएँ तो भी मिथ्यात्वी बन जाते हैं। और मिथ्यात्वी का एक शब्द भी कान में पड़ने से आवरण आ जाता है!

इतना धन कमाया लेकिन सुमार्ग पर कितने खर्च हुए?

सच्चे दानी के वहाँ लक्ष्मी कभी कम नहीं होती, फावड़े से खोद कर दान करे फिर भी!

क्या दो नंबर के पैसे दान करने पर पुण्य बंधता है? जरूर बंधता है, उतना खुद से त्याग हुआ न? त्याग की कीमत है! फिर किस तरह से आए, किस हेतु के लिए दिए इत्यादि की गणना होकर प्लस-माइनस हो जाता है।

हिंसाखोरी की कमाई दान में दे दे तो? उतनी उसकी जोखिमदारी नहीं रहेगी!

बिना अपेक्षा रखे दान करें, वह उत्तम।

अपेक्षा सहित किया हुआ दान सत्वहीन समान है।

दो नंबर का धन जहाँ जाए वहाँ देखने में तो लगता है कि मदद कर रहा है लेकिन उसे खत्म होने में देर नहीं लगती। कैमोफ्लेज (छद्मवेश) जैसा।

कुछ तस्कर लोग बड़ी चोरियाँ करते हैं और अल्प दान करते हैं, वे नर्क में जाते हैं। क्योंकि नीयत खराब है।

नाम कमाने के लिए खुद के पैसे खर्च करते हैं।

आजकल चाहे जितने भी दान किए जा रहे हों लेकिन धन जा रहा है गटर में! मंदिरों में, पाठशालाओं में, कॉलेजों में, अस्पतालों में अपार धन बह रहा है फिर भी बहाव है, गटर की ओर! ऐसा क्यों?

क्योंकि दान देने वाले के नाम की तख्तियाँ लगवाते हैं। यह तो, दो नंबरियों के अहंकार को पोषण देने का सरल साधन मिल गया!

लाख रुपयों का दान दे और तख्ती लगवाए, और गुप्तदान में एक रुपया ही दे, फिर भी वह गुप्तदान का रुपया अधिक कीमती माना जाएगा!

कीर्ति के लिए दान करे, वह तो बहुत नुकसानदायक है। मोक्षमार्ग में जाने वाले की कीर्ति तो बहुत फैलती है लेकिन उन्हें उसमें दिलचस्पी ही नहीं होती। मारवाड़ी मंदिरों में लाखों का गुप्तदान करते हैं, जो फलित होता है।

दादाश्री खुद की पूर्व की प्रकृति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि, 'साल 1935 से 1942 की बात है जब अगास जाते थे, तब सौ का नोट रखकर पचहत्तर वापस माँगते थे।' अब, वापस नहीं लेते तो भी चलता लेकिन मन कच्चा था। लोग उन्हें बहुत नोबल कहते थे। वह किसलिए? क्योंकि जहाँ वाह-वाह मिले वहाँ लाख रुपये खर्च कर देते, वर्ना एक रुपया भी नहीं निकल पाता था। इस तरह कमाई गवाँ दी, जिंदगी भर की।

लोग तो भगवान महावीर की वाह-वाह करते थे, लेकिन क्या भगवान महावीर उसे स्वीकार करते थे? जो स्वीकार करे, वह होता है रोगी और स्वीकार नहीं करता, वह रहता है निरोगी।

वाह-वाह करने वाला सत्कर्म की अनुमोदना करने का पुण्य बाँधता है और स्वीकार करने वाला मारा जाता है। वाह-वाह स्वीकार करने से तो उसके सारे पुण्य खर्च हो जाते हैं।

जिसके लिए दान करते हैं, उसे पुण्य नहीं मिलता। किसी के लिए खाना खाने से क्या उसे पहुँचता है? जो करता है, उसे प्राप्त होता है।

दादाश्री की भी हजारों लोग प्रशंसा करते। वह उन्हें अच्छा तो लगता लेकिन उस पर उन्हें राग नहीं होता था और कोई कड़वा बोलते तो उस पर द्वेष नहीं होता था।

आत्मज्ञान के बाद ही कषाय छूटते हैं और तब प्रकट होता है, शुद्ध मूल चारित्र!

ममता की बस्ती और विस्तार बहुत बड़ा है!

लक्ष्मी और विषय की ममता छूटी कि छूटा सब संसार।

स्थूल कर्म का फल स्थूल में, इसी जन्म में मिलता है और सूक्ष्म कर्म का फल अगले जन्म में फलित होता है।

गाली दी या धौल मारी, उसका फल इसी जन्म में मिलता है और मानसिक कर्म, भावकर्म हो तो उसका फल अगले जन्म में मिलता है। अतः शुभ भाव किए जाओ। धन सुमार्ग में खर्च हो, ऐसा भाव किए जाओ। फिर चाहे दे पाओ या नहीं, वह 'व्यवस्थित' के ताबे में है! वीतरागों को तो दान लेने या देने का भाव नहीं होता! वे तो स्वभाव-भाव में ही रहते हैं!

किसी के दबाव में आकर कोई पचास हजार दान दे और मन में भाव करे कि, 'एक पैसा भी देने जैसा नहीं था तो उसे वैसा फल मिलता है' और पाँच रुपये दान दे और मन में भाव करे कि, 'आज पाँच लाख होते तो सब दे देता, तो उसे वैसा फल मिलता है'। उल्टा भाव किया, उसका (दान) व्यर्थ हुआ। स्थूल फल मिलता है लेकिन सूक्ष्म में तो ज़ीरो हो गया, क्योंकि आगे (अगले जन्म) के लिए भाव उल्टा चार्ज किया!

स्वरूप ज्ञान वाले के लिए तो साइन्टिफिक रास्ता है! उन्हें तो ज्ञान हाज़िर रखते हुए खुद को सचेत करना है कि, 'क्या आपको ऐसा खराब विचार करना चाहिए!' इससे अगले जन्म के लिए छूट जाते हैं।

वीतराग विज्ञान कितना मुक्त रखवाता है!

ज्ञान के बिना क्या गति होती? उसके बिना तो बेड़ा पार ही नहीं होता। ज्ञान लेकर जो सत्संग में पड़े रहें, उनका तो काम ही हो गया न?

बेटों को कितना देना चाहिए? आपके पिता ने आपको जितना



दिया वह सब दे देना और बीच का माल आपका, उसे धर्म दान में खर्च करो! बेटों को अधिक देने से वे शराबी और जुआरी बन जाएँगे! उन्हें लिखा-पढ़ाकर नौकरी-धंधे में लगाना। फिर आपकी ज़िम्मेदारी नहीं रहेगी।

बेटे के साथ का व्यवहार और वसीयत किस तरह करनी चाहिए उसका आदर्श तरीका दादाश्री से ही मिलता है! बेटे का और खुद का हित संभल जाता है।

किसी की मृत्यु के बाद दान करने से क्या उनके आत्मा को शांति मिलती है? अहंकार को मिलती है, मूल आत्मा को नहीं। दादाश्री ने हीरा बा के (देहविलय के) बाद सब किया, वह अच्छे दिखने के लिए नहीं बल्कि हीरा बा की इच्छापूर्ति के लिए।

जो ठगा जाए, घिस जाए, नोबिलिटी रखे, वहाँ लक्ष्मी का वास होता है। चली गई हो तो भी थोड़े समय में लौट आती है।

‘दान देना है, देना है, दो लाख होंगे तब देंगे’, करते-करते साहब की आँखें बंद हो जाती हैं और सब रह जाता है। जब हों तभी सामर्थ्य के अनुसार दे दो न!

दादाश्री कहते हैं कि, ‘मेरे पास लक्ष्मी होती तो मैं भी देता। लेकिन ऐसी कोई लक्ष्मी अभी तक मेरे पास आई नहीं है और यदि आए तो अभी भी देने को तैयार हूँ।’

रामचंद्र जी वनवास गए और भरत को राज्य चलाने के लिए सौंपा और कहा कि प्रजा को दुःखी मत होने देना। तब भरत ने राज्य का भंडार खोलकर प्रजा में लुटा दिया और ‘कर’ बंद कर दिए। जिससे प्रजा आलसी होकर चौपट हो गई। दान भी विवेकपूर्ण नहीं होना चाहिए?

क्या ज़रूरतमंद को नकद पैसे देने चाहिए? उन्हें काम में मदद करनी चाहिए, चीज़ें दिलवाकर।

बवंडर का व्यवहार कैसा होता है? एक ही दरवाज़ा खुला हो तो

क्या अंदर आ सकेगा? यदि आमने-सामने दोनों ही दरवाजे खुले हों, आने-जाने के, तो? ऐसा ही इन लक्ष्मी जी का भी है। कौन से रास्ते से जाने देना है, वह आपको देखना है।

कमाई का पाँचवाँ हिस्सा औरों के लिए भगवान के वहाँ खर्च करने से अगले जन्म का ओवरड्राफ्ट मिलता है!

जो कुछ भी किया जाता है वह जाता है औरों के खेत में। वह परार्थी है। 'स्व' का अर्थात् आत्मार्थ के लिए करे तो वह स्वार्थी और परम अर्थ यानी मोक्ष ले जाए, वह परमार्थी।

मोक्ष का मार्ग क्या है? सुमार्ग पर लुटाते जाना। वैसे भी अंत में (मृत्यु समय) तो छोड़ना ही है न?

जिन्हें मोक्ष में ही जाना है, उनमें (औरों के लिए) लुटाने की हिम्मत होती है।

स्वरूप ज्ञान और लुटाना, दोनों साथ-साथ हों तो उनकी प्रोग्रेस की तो बात ही क्या करनी?

इकट्ठा करने की भावना, वह है, संसार मार्ग और (औरों के लिए) खर्च करने की भावना, वह है, मोक्षमार्ग।

ओवरड्राफ्ट किस तरह निकलवाना, कहाँ से निकलवाना, वह ज्ञानी से पूछ-पूछकर करना।

वाणी से और वर्तन से दान दिया जाए, लेकिन मन से न दिया जाए तो उसका फल नहीं आता।

मन से देता रहे और वाणी तथा वर्तन से न दिया जाए, तो भी उसका फल अगले जन्म में आएगा। वीतराग विज्ञान में भाव की कीमत है। मन, वाणी और वर्तन से देने की तो बात ही अलग है।

नकद रुपये दान में दिए जाएँ तो वह शराब पी लेता है!

नया कंबल ओढ़ाए, उसे बेचकर शराब पी आता है इसलिए

‘शुक्रवारी (बाजार)’ में से पुराने एक के बजाय तीन लाकर देना ताकि कोई वे खरीदे ही नहीं न! मिठाई या खाने की अन्य चीजें लाकर खिलानी चाहिए यानी विचारपूर्वक दान करना!

दादाश्री ने खुद पैसों का अत्यंत आदर्श व्यवहार रखा था! जीवन में कभी भी अपने निजी खर्च के लिए, किराए के लिए या कपड़ों के लिए किसी से नहीं लिए। अपनी ही कमाई के खर्च किए। इतना ही नहीं, अमरीका में उन्हें लोग ढेरों पैसे और चीजें देते थे, सोने की चैन पहनाते थे लेकिन वे उन्हें छूकर लौटा देते थे। उनके साथ रहने वालों को भी उन्होंने उसी आदर्श में रखा था। जिनके पास अतिरिक्त धन हो, उन्हें दान करने को कहते। सीमंधर स्वामी के मंदिरों में या पुस्तकें छपवाने में, वह भी हर तरह से पूछताछ करके, घर में सभी की सहमति लेकर ही पैसे दिलवाते थे और उस समय उनके साथ शर्त रखते थे कि, ‘ये तेरे पैसे संघ में जमा रहेंगे, जैसे बैंक में रखते हैं वैसे! और भविष्य में तुझे जब भी अड़चन आए, तो तुझे बिना संकोच के ले जाने की छूट है!’

सीमंधर स्वामी, जो महाविदेह क्षेत्र में हाज़िर तीर्थकर हैं, उनकी पौने दो लाख साल की उम्र है। दादाश्री उनसे संधान करवा देते हैं ताकि यहाँ से छूटकर वहाँ उनके पास महाविदेह क्षेत्र में जा सकें! वहाँ उनके दर्शन से ही सीधा मोक्ष मिलता है! इस समय इस काल में यहाँ भरत क्षेत्र से सीधा मोक्ष नहीं है।

‘दादा भगवान’ अर्थात् अंदर जो प्रकट हुए हैं, चौदह लोक के नाथ हैं, वे हैं! चार डिग्री कम पड़ गई है इसलिए दादाश्री भी भीतर बैठे हुए दादा भगवान की भक्ति करते हैं और ‘हमें भी सीमंधर स्वामी के पास जाने की ज़रूरत है’, इसलिए सीमंधर स्वामी की भक्ति करते और करवाते।

वैसे तो दादाश्री मुक्त ही थे लेकिन सीमंधर स्वामी तो पूर्ण मुक्त! चौदस और पूनम में जैसा अंतर होता है, वैसा!

दादाश्री कहते थे कि अपने इन महात्माओं को चाय-पानी-नाश्ता

करवाओ। उन्हें संतुष्ट करना, वही सब से अच्छा रास्ता है। ऐसे महात्मा वर्ल्ड में कहीं नहीं मिलेंगे!

‘ये महात्मा तो जीते-जागते देवता हैं। आत्मा भीतर प्रकट हो चुका है। एक क्षण भी आत्मा को नहीं भूलते।

ये महात्मा एकदम सही हैं उसकी गारन्टी देता हूँ। चाहे जैसे हों, धन-दौलत कम हो फिर भी उनकी नीयत साफ है! भावना भी अच्छी है। प्रकृति तो अलग-अलग हो ही सकती है!

अक्रम मार्ग में स्पर्धा नहीं होती। यहाँ बोली लगाना या (आरती के) घी की बोली लगाना या चढ़ावा वगैरह कुछ भी नहीं होता। स्पर्धा वगैरह तो दूषमकाल के लक्षण हैं।

यहाँ तो दीये भी जलते हैं, अपने-अपने घर के (खर्च से)!

दादाश्री ज़ोर देकर कहते थे कि हमारे यहाँ पैसों की माँग नहीं होती। खुशी से खुद ही दे, वही उत्तम। जो भी खर्च हो, पुस्तकों में या मंदिरों के लिए तो उनके पीछे निमित्त हैं ही। उसके लिए चिल्लाना या भीख माँगना नहीं पड़ता या माइक में चिल्ला-चिल्लाकर पैसों की माँग नहीं करनी पड़ती। अक्रम विज्ञान (मैगेज़ीन) में पैसे माँगने के लिए निवेदन नहीं करना पड़ता। पूज्य दादाश्री की (स्थूल) उपस्थिति में उन्होंने कभी भी अक्रम विज्ञान में या माइक में ऐलान करके पैसों की भीख नहीं माँगी। भूल से एक बार एक कार्यकर्ता ने माइक में माँग की तो उसे तुरंत बुलाकर कड़े शब्दों में डाँट दिया और सब के पैसे वापस करवाए! धन्य है ज्ञानी के ऐसे लक्ष्मी से संबंधित व्यवहार को! कोटि-कोटि प्रणाम है उन ज्ञानी के ज्ञान को!

पुस्तकें छपवाने का व्यवहार बताते गए कि प्रथम संस्करण फ्री ऑफ कॉस्ट देना और फिर लोग खुद अपने आप छपवा लेंगे। यह ज्ञान मिट न जाए इसलिए सब छपवा देना।

पैसे आएँ कि तुरंत ही खर्च कर देना, उसका बोझ कहाँ तक उठाना ?

पुस्तक की कीमत क्या? 'परम विनय' और 'मैं कुछ भी नहीं जानता' यह भाव!

## [ 8 ] लक्ष्मी और धर्म

जहाँ धर्म में सदुपयोग होता हो वहाँ दान देना चाहिए, वर्ना कहीं और देना चाहिए। गलत धन दान करोगे तो गलत राह पर ही जाएगा! सही धन सही रास्ते पर जाता है!

मोक्षमार्ग में दो चीजें नहीं चलती! विषय के विचार और लक्ष्मी के विचार! और सम्यक् दृष्टि होनी चाहिए।

किसी को दुःख न हो वैसा व्यवहार रहे, उसे व्यवहार चारित्र्य कहा है। व्यवहार चारित्र्य में भी लक्ष्मी और विषय नहीं रहने चाहिए!

स्त्री का हर्ज नहीं है, स्त्री को भोग का साधन माना है उसमें हर्ज है।

धर्म में फीस ली जाए तो वह हो गई रामलीला!

कुछ धर्मों में गुरु-महाराज भेंट लेते हैं। क्या भक्तों से पैसे या गहने लेने चाहिए?

बाप जी के पदार्पण करवाने के लिए अनिवार्य रूप से पैसे देने पड़ते हैं। फिर जितनी ज़्यादा बाप जी की वाह-वाह उतनी ज़्यादा उनकी फीस। गरीब के वहाँ पदार्पण नहीं होता। इस कलियुग के धर्मों को तो देखो!

दादाश्री के पास ऐसा सब नहीं होता था! यहाँ तो किसी की खुशामद नहीं चलती थी। कोई चाहे कितना भी मीठा-मीठा बोले पर फिर भी उनके पास नहीं चलती थी क्योंकि जिन्हें कुछ नहीं चाहिए, उनके पास किसकी चलेगी! जो खुद समग्र ब्रह्मांड के मालिक हैं, उन्हें कोई क्या देगा और क्या ठगेगा?

गुरु शुद्ध चारित्र वाले होने चाहिए।

जिनकी सर्वस्व प्रकार की भीख मिट गई है, मान की, कीर्ति की, लक्ष्मी की, विषयों की, शिष्यों की सभी प्रकार की भीख मिट गई है, उनके हाथ में आते हैं विश्व के तमाम सूत्र!

आजकल तो लोगों ने धर्म में बिजनेस शुरू कर दिया है। करोड़ों रुपयों का चंदा इकट्ठा करते हैं और आश्रम बनाते हैं। यदि एक भी पैसा घुसा तो फिर वह कहाँ तक घुसेगा उसका क्या ठिकाना? अतः कड़ा नियम होना चाहिए कि पैसे घुस ही न सकें!

जहाँ धर्म में फीस है वहाँ धर्म है ही नहीं। ऐसे में तो गरीब लोग कैसे धर्म का पालन कर सकेंगे?

जगह-जगह पर धर्म की अनेक तरह की दुकानें खुल गई हैं। ऊपर से उन्हें ग्राहक भी मिल जाते हैं। इसमें किसका दोष? ग्राहक का या दुकानदार का? ग्राहक को सोच-समझकर दुकान में घुसना चाहिए। वे दुकान खोलते हैं, उनकी जिम्मेदारी पर लेकिन क्या हमें सचेत नहीं रहना चाहिए?

पूजे जाने के लिए धर्मगुरुओं ने संप्रदाय बना लिए। यदि ग्राहक ही न हों तो दुकानदारी कैसे चलेगी?

आजकल संतों ने हिन्दुस्तान को खत्म कर दिया है, लोगों को मान देकर पैसे लेते हैं। लोग दुःखी होते हैं इसलिए शांति के लिए संत के पास जाते हैं, वे बल्कि पैसे ऐंठ लेते हैं।

अब लेने वाले को पता नहीं है कि वह किस कंगाली में धकेला जा रहा है। सिद्धि का दुरुपयोग होने पर सिद्धि खत्म हो जाती है।

कोई दादाश्री के पास पैसे रखता तो उन्हें वे तुरंत लौटा देते और हमेशा कहते कि, 'यहाँ पैसे नहीं रखे जाते, यहाँ तो माँगे जाते हैं।'

वे तो सब से कहते कि अपने सभी दुःख मुझे सौंप दो, हम तो सभी के दुःख लेने आए हैं!

कोई रिश्त (आशीर्वाद के बदले में पैसे) देने आए तो वे कड़े

शब्दों में कहते थे कि अपनी सिनक मुझे चुपड़ने आया है? मेरे पास बहुत सिनक आती है। मैं किसे चुपड़ने जाऊँ? जिसके पास रिश्त नही आती, जाकर उसे चुपड़।

पूरी दुनिया में सिर्फ दादा ही सर्व प्रकार से शुद्ध, प्योर हैं, उन्हें शुद्ध ही रहने दो। दादा को शुद्ध रहने दोगे तो जगत् को खूब लाभ मिलेगा। ज्ञानी के पास पैसे का या और किसी चीज़ का लेन-देन नहीं होता!

व्यापार में धर्म होना चाहिए लेकिन धर्म में व्यापार नहीं होना चाहिए! धर्म में व्यापार घुस जाएगा, तो वह विनाशकारी होगा! विनाशकारी कैसे? सिर्फ बच्चे ही नहीं... पर पत्थर का जन्म पाकर, पहाड़ बनकर लाखों सालों तक पड़े रहना पड़ेगा।

अभी भी समय है, जागो। अब बहुत अच्छा समय आ रहा है! महावीर के समय जैसा। अतः अभी भी संभल जाओ। सभी परिणतियों को बदल दो। अभी भी हृदयपूर्वक पछतावा करो। पछताने की ही सामायिक करो तो इसी जन्म में सारे पाप भस्मीभूत हो सकते हैं!

पछतावा किसका करना है? लोगों से गलत तरीके से पैसे लिए, व्यभिचार किया, दृष्टि बिगाड़ी, उन सब को याद करके प्रतिक्रमण करके धो डालो!

जब खुद प्योर बनेगा तभी इस लोक का कल्याण होगा। प्योरिटी ही जगत् को आकर्षित करती है!

- डॉ. नीरू बहन अमीन के जय सच्चिदानंद

# अनुक्रमणिका

## [ 1 ] लक्ष्मी जी का आना-जाना

एकाग्रता किसमें ?	1 संयोग ही कमाकर देते हैं	23
गरज हो उसमें...	2 सुख किसमें ?	24
प्रीति, लक्ष्मी की या नारायण की ?	3 जहाँ-जहाँ नजर जाए, वहाँ-वहाँ...	25
किसकी कीमत ज्यादा ?	4 खुद के पास कितनी जायजाद ?	25
क्या लक्ष्मी के बिना 'गाड़ी'...	4 दुःख है ही कहाँ ?	26
लक्ष्मी, अक्ल या मेहनत का...	5 दादा का नाम लें, वहाँ पैसों का...	26
...या पुण्य का उपार्जन ?	6 जहाँ अबव नॉर्मल, वहाँ कैसा...	28
कौन, किसके पीछे ?	6 लक्ष्मी खर्च करना आया ?	28
अक्लमंद, मुनीम या सेठ ?	8 लिया रिटर्न टिकट, तिर्यच का	29
सीधी परोक्ष भक्ति भी पैसे लिए	9 कमाता कौन है ? भोगता कौन है ?	29
मजदूरों की कैसी दशा ?	9 मनुष्यपन किसमें बर्बाद किया ?	30
सहकार किया, सर्वट के साथ ?	10 अधिक संपत्ति, अधिक उलझनें	30
पुण्य के प्रकार	11 बैंक में कितने जमा हुए ?	31
दुःख किसे कहेंगे ?	12 धन हो, तभी नाथालाल ?	32
लक्ष्मीवान, अंत में तो...	12 अंधा बुने और चबाए कौन ?	33
जो खर्च करे, उसका धन	13 पहले को ही ईनाम और बाकी...	34
लक्ष्मी का जाप करना चाहिए ?	13 जीना-मरना भी अनिवार्य	35
ऐसा नियम है, 'व्यवस्थित' का	14 'दादा' का गणित	36
सही लक्ष्मी कहाँ आती है ?	15 ज्ञानी, रेसकोर्स से दूर...	37
लक्ष्मी है, फिर भी अशांति क्यों ?	16 घुड़दौड़ के घोड़े की दशा	38
आती हुई लक्ष्मी का स्वयं...	16 वास्तव में जरूरत किसकी ?	39
सुगंधयुक्त लक्ष्मीवान	17 पैसों की प्राप्ति में पुरुषार्थ कहाँ ?	40
सुगंधयुक्त लक्ष्मी	18 क्या श्मशान में पैसे ढूँढने चाहिए ?	41
चाहिए, राजलक्ष्मी या मोक्षलक्ष्मी ?	19 पैसे आना, पसीने के बराबर	42
इच्छाएँ शेष की शेष क्यों ?	20 क्या चाहिए जगत् को ?	42
लक्ष्मी का बोझा 'हमें भी' था	21 भजना, भगवान की या पैसों की ?	43
आयुष्य का एक्स्टेन्शन करवाया ?	21 यदि साथ ले जा पाते, तो ?	44
पैसा प्रधान क्यों ?	21 कौन सा कर्मबंध दो नंबर के...	45
करते हो या इट हैपन्स ?	22 संतोष कैसे रहे ?	45
वह तो नैमित्तिक है	23 एट ए टाइम, दो काम	46



है क्या कभी लोभ का अंत ?	46	पापानुबंधी पुण्य	61
क्या उसका चिंतवन करना...	46	लक्ष्मी तो 'चलती' भली	61
घर बिगड़ें, उसका क्या ?	47	तंगी नहीं, बहुतायत नहीं	62
'आवन-जावन', हिसाब से ही	48	बहुतायत करवाए उपाधि	63
क्या लक्ष्मी के ध्यान में रहना...	48	यह देखो हूबहू, नोट गिनने...	63
याद करने पर वहाँ से वह भागे	49	क्या स्वीकार होगा, अतिवृष्टि या...	64
वे आती हैं या लानी पड़ती हैं ?	50	लक्ष्मी की कमी किस कारण से ?	65
ज़िंदगी की ज़रूरतों की सीमा...	50	लक्ष्मी जी क्या कहती हैं ?	66
चिंता हो, वहाँ लक्ष्मी टिकेगी ?	51	कौन से नियमों से लक्ष्मी ?	67
क्या सस्ता ? क्या महँगा ?	51	क्या लक्ष्मी जी को रोकना...	68
दो रुपयों में बादशाही देखी थी	51	उनका तिरस्कार कैसे कर सकते...	68
अनोखा हिसाब	52	उस तिरस्कार का परिणाम क्या ?	69
हिसाब किससे बंधते हैं ?	53	वहाँ तो लक्ष्मी जी भी उकता...	70
सेठ-नौकर मिले, किस आधार...	53	क्या लक्ष्मी जी के लिए...	70
इसमें दोष किसका निकालना ?	54	वहाँ ज्ञानी को कैसा बर्ताता है ?	70
पुण्य कैसे बढ़ता है ?	54	दोनों फीवर नहीं तो और क्या ?	71
वह 'साइन्स' क्या होगा ?	55	काले धन के परिणाम क्या ?	71
इच्छाएँ बनी कैसे ?	56	लक्ष्मी, मेन प्रोडक्शन या बाइ...	72
वहाँ टेन्डर कहाँ रहा ?	57	ज्ञानी की कृपा क्या नहीं कर...	73
पुण्य-पाप की 'लिंक' कैसी...	57	गिनने वाले चले गए और पैसे...	73
जब पाप-पुण्य का गलन हो तब ?	59	उसकी भी एक्सपायरी डेट	74
पूरण का गलन, स्वभाव से ही	59	दिवालियापन से कैसे बचें ?	75
भुगतना, रुपयों का या वेदनीय...	60	क्या उस वास्तविकता से विमुख...	76
ज़रूरत किसकी, अंदर की या...	60		

## [ 2 ] लक्ष्मी के संग संकलित व्यवहार

तो पिछली पीढ़ी का क्यों नहीं ?	77	कैफ, लक्ष्मी का	83
कुछ साथ ले जाना है ?	78	वह जाए तब, कौन सा पुरुषार्थ ?	84
भान, हिताहित का	79	खरीद लो, अहंकार	85
पैसे कमाना किसलिए ?	79	माँगने वाले के साथ...	86
अहो ! ब्रह्मांड के मालिक	79	वह तो है, आत्मा का विटामिन	87
पुण्य, लेकिन पापानुबंधी	80	नियम, निवेशन का	89
लक्ष्मी पधारती हैं, नोबल के वहाँ	81	सोने में निवेश	92
ज्यादा हो तब भी मुश्किल	82	विदेश की पॉलिसी	93

लक्ष्मी की लिमिट स्वदेश के लिए	94	वकालत, बुद्धि की भी	103
सुख किसमें ?	95	जहाँ भक्ति वहाँ दुःख नहीं	107
स्टोर भी नमस्कार करते हैं 'इन...	96	आनंद प्राप्ति के उपाय	108
वहाँ है, सिर्फ लोभ	97	समकिति का लक्ष्मी व्यवहार	109
उसमें खुद का कितना नुकसान ?	98	पुण्य क्या करता है ?	111
दूध से धोकर शेर में खोए	99	भाव में तो निरंतर...	112
पड़ गए, ब्याज के लालच में ?	100	जाते समय...	114
ब्याज और दलाली का व्यापार	100	अगले जन्म की संभाल...	115
हिंसक व्यापार	102	सिर पर आई मौत !	118

### [ 3 ] व्यवसाय, सम्यक् समझ से

इंजन घूमे लेकिन पट्टा कहाँ ?	119	कितने इकट्ठे हुए ?	138
जीवन, किस हेतु के लिए ?	121	क्या उसे पुरुषार्थ कहेंगे ?	139
वहाँ बसते हैं प्रभु ?	121	फायदा-नुकसान कौन करता है ?	139
तीन वस्तुओं से धर्म	122	नुकसान दुकान का या आपका ?	140
जहाँ भगवान, वहाँ आनंद	122	व्यापार के कान में फूँक	140
जहाँ ईमानदारी, वहीं प्रभु का...	123	ग्राहक के साथ...	141
वहाँ नहीं है बंधन	124	बैर से छूटो	143
अंत में तो कुदरत की जब्ती	125	उसमें भी सत्य, हित, मित...	143
ईमानदारी से धुले दुर्गुण	125	उसमें हाय-तौबा क्यों ?	144
नीति की भजना जरूरी	126	इस समझ से चिंता गई...	144
वहाँ संसार में भी सुख मिले	126	नुकसान मानकर, जोरदार...	146
उन्हें अनुमति प्रभु की	126	ये गिनती ऐसे होती है...	148
व्यापार की तीन चाबियाँ	127	रात में भी नुकसान होता है न ?	148
जहाँ सत्य-निष्ठा, वहाँ ऐश्वर्य	128	पतन के वक्त...	151
सत्य भी काल के अधीन	129	नॉर्मेलिटी, व्यापार के समय की	152
सुधरे हुए लुटेरे के सामने...	130	क्या आपकी संपत्ति की...	155
सभी भूमिकाओं में से गुजरे...	133	फायदा-नुकसान, खुद का या...	155
व्यापार होते हुए भी ज्ञानी	134	'अनामत' रखो, व्यापार में	156
व्यापार, ड्रामेटिक	135	नियम, स्पर्श के...	158
व्यापार में बीते कई जन्म...	136	जिसका अभिप्राय, उसका विचार	158
वनवास, व्यापार में...	136	समभाव	159
चिंता से व्यापार की मौत	136	हमारे व्यापार की बातें	159
कौन किसको नहीं छोड़ता !	138	दूसरों को ऐसे आनंदित करके...	160

ज्ञानी के अनुभवों का निष्कर्ष...	161	रоне की जगह नहीं चाहिए?	197
चोरियाँ भी होती थी... पुलिस...	163	हम पर भी फौजदारी केस	199
ऐसी चोरी शोभा नहीं देती	164	लेते समय भी उतना ही विवेक	205
काले बाज़ार के शिकंजे में	164	ऋण चुका के छूटे	206
बेइमानी का धन ही खाते हैं	167	समाधान किए, छूटने के लिए	208
अच्छा व्यापार कौन सा?	167	देना लेकिन गए, ऐसा समझकर	209
हिंसायुक्त व्यापार...	167	जगत् व्यवहार, मात्र हिसाब	209
व्यापार में सही-गलत	168	वह है कुदरत का न्याय	210
गलत करके कैसे जी सकते हैं?	169	वसूली की अनोखी रीत	210
प्रयत्न करो, परिणाम व्यवस्थित	171	करनी थी वसूली और हो गया...	212
बिना सोचे मिल जाए	172	धर्म करते हुए डाका	213
भाव ऐसे सुधारें	175	वसूली, सहज प्रयत्न से	216
व्यापार में स्पर्धा	175	तो घर बैठे वसूली मिले	217
आगे बढ़ते हुए को पछाड़ते हैं	176	और वह भूत लिपट जाता है	218
व्यापार बढ़ाना चाहिए या नहीं?	177	फिर वसूल करवाती है कुदरत	220
बीच में 'एजेन्सियों' से काम लो	179	और ऐसे हिसाब चुकाते हैं	221
ऐसे न्याय होता है	181	उसमें मिलावट का भयंकर गुनाह	222
लक्ष्मी, पुण्य से?	182	धर्म की नींव	223
व्यापार का नुकसान व्यापार ही...	183	अनीति लेकिन नियम से...	223
खराब नीयत, दुःखी हालत	183	वह तरीका है अधोगति का	225
भाव, कर्जा चुकाने का ही	185	इस तरह नियम रखो	225
कर्ज के साथ मर जाए तो?	187	फिर जोखिमदारी 'हमारी'	227
...तो कर्जा चुक सकता है	187	वहाँ नीति-अनीति नहीं है	227
भविष्य में तो है अंधकार	187	वहाँ निर्अहंकारी की कीमत	228
हिसाब का पता चलता है भाव...	189	आज्ञा में रहकर करोगे तभी...	229
यह तो है एक्स्ट्रा आइटम	190	नियम ही मोक्ष में ले जाएगा	230
देखे भूल खुद की ही	191	काल के अनुरूप, बीच का मार्ग	230
ज्ञान से पहले की भूमिका	192	झूठ बोलो, लेकिन नियम से	231
मान खाकर सलाह देता	193	चोरी करो लेकिन नियम से	231
'दादा' की उपस्थिति, वही...	195	बात को समझो, ज्ञानी की...	231
पार्टनर के साथ कभी मतभेद...	196	अग्नि में भी घी गाढ़ा	232
ऐसा हो, फिर मतभेद कैसा?	196	नियम तोड़े, उसकी गारन्टी नहीं	234
जन्म से ही लोभ नहीं	197	अक्रम विज्ञान में दोनों ही...	234

भाव-अभाव से परे	235	देखना, बरकत बढ़े वो	239
खुद को देखा करो	236	बरकत बगैर का धन	240
व्यापार में भी पूर्ण वीतराग	236	धन डालो सीमंधर स्वामी के...	241
वह प्रतिक्रमण से मिटे	236	कृपा से खुदाई बरकत	241
भगवान की दृष्टि से	238	संसार का हिसाब मिल गया ?	241
परिग्रह की बाउन्ड्री	239		

#### [ 4 ] ममता रहित

मरने के बाद भी चलेगा...	243	रिश्त का कारण	270
कोल्हू का बैल	244	उतरा हुआ चेहरा!	271
सहज मिला... वहाँ सिद्धियाँ	245	अक्रम विज्ञान की अनोखी समझ	271
देना नहीं सीखा	246	मतलब, मूँग पकाने से	272
संयोग, पाप-पुण्य के आधार पर	246	इसमें भूल किसकी ?	273
लक्ष्मी, किसके अधीन ?	246	फायदा-नुकसान एक ही नियम...	276
लक्ष्मी के लिए चार्जिंग	247	संसारी स्वार्थ	277
वीतरागों की आज्ञा का पालन	248	ईमानदारी, वह भगवान की आज्ञा	277
इसमें मेहनत कैसी ?	248	सत्य उजागर होता है देर से	278
वैसे उपाधि भी बढ़ेंगी	249	नीति : व्यवहार का सार	278
कुदरत का गणित	249	आत्मस्वरूप वाले का व्यवहार...	279
दुखिया की व्याख्या ?	251	सही समझ से	280
यह तो कैसी नादारी ?	252	लाए ओवरड्राफ्ट, बेहिसाब	282
कैसी उल्टी दृष्टि !	254	दुकान बंद करने की रीत	282
...फिर भी दुःखी ?	254	फिर भी हाथ में चिपचिपाहट...	284
नहीं, कौए सभी जगह काले	255	संग्रह की समझ	285
वहाँ केस सुलझा दो	257	धंधे में एक्सपर्ट फिर भी...	286
झगड़ा करने में भी विवेक	257	जंक्शन की देखभाल	286
प्याला फूटे तब...	259	कीमत, ज्ञानी के दर्शन की	287
जूतों के लिए भी विलाप	260	दादाई ब्लैंक चेक	288
लाचारी महापाप	261	बिना दादा के पल कैसे ?	288
जहाँ घाटा होता है, वहीं से...	262	ममता रहित पुरुष	289
दे कर पाओ	266	ममता-रहितता	289
करो औरों का और होगा खुद...	267	टकोर, ज्ञानी की	291
परिणाम, छल-कपट का	268	ज्ञान समझाएँ इशारों में	292
मंदी के नए धंधे	270	सर्वस्व समर्पण, सुचरणों में	293

में, आत्मा और बैठक	294	काले बाज़ार का भी प्रतिक्रमण	301
इस ज्ञान को समझो	296	चोरियों के भी प्रतिक्रमण	302
बिज्ञानेस में प्रतिक्रमण	297	खुद ही जज और खुद ही...	304
यह है अक्रम विज्ञान	299	डिस्ऑनेस्टी यानी बेस्ट...	304
ब्लैक मार्केटिंग का क्या ?	300	अनीति के अत्याधिक प्रतिक्रमण	305
व्याज ले सकते हैं या नहीं ?	300	अंतराय किस तरह रुकेंगे ?	305
दुःख हो जाए, वहाँ प्रतिक्रमण	301	अंडरहैन्ड को डाँटा, उसके...	306
करो उगाही वालों के प्रतिक्रमण	301	देने वाले को चुकाए	306

### [ 5 ] लोभ से खड़ा संसार

परिग्रह से हो अशांति...	308	वह है हिंसक भाव	326
श्मशान में भी बिछाया बिस्तर ?	309	लोभ से खड़ा हुआ संसार	326
आनंद के अभाव में अँधेरा	309	मान का रक्षक क्रोध	326
लोभी प्रकृति	310	लोभ-मान का पता कैसे चले ?	327
जहाँ जाए वहाँ खोजे सस्ता	311	जहाँ मान है वहाँ लोभ नहीं	328
लोभी का लेखा-जोखा	312	लोभी प्रतीत होते हैं ज्ञानी समान	329
चींटियों को कौन दौड़ाता है ?	312	दोनों प्रकृतियों में भिन्नता	330
वह संग्रहित करने से संग्रहित...	313	मानी और लोभी	331
नुकसान हो तो ?	314	मान तो भोला है	331
ज्ञानी की अद्भुत बोधकला	315	मानी की योजनाएँ	332
प्याले फूटें, वहाँ	316	मान खाने के लिए ठगा जाता है	332
संतोष कब रहता है ?	317	वहाँ पर असर, तो लोभ	333
मूल माल, भीतर ही	318	ऐसे खाए धोखे, मान से ही	334
तृष्णा, संतोष और तृप्ति	318	जो जान-बूझकर धोखा खाए...	335
लोभी और कंजूस	319	इस तरह बने भगवान	336
अर्थशास्त्र की समझ, ज्ञानी द्वारा	320	'हम' भोले ?	337
किफायत में रसोईघर अपवाद	321	तब प्रकटा यह अक्रम विज्ञान	337
वह भावना मतलब रौद्रध्यान	321	उसका रहस्य ज्ञान	338
वह सारा रौद्रध्यान	322	उसका फल तो समझो	341
लोभाचार, अधोगति का कारण	323	तय करने योग्य ध्येय	341
आठ आने के लिए आठ घंटे	323	अन्य विचारदशा में ही खत्म...	342
मरने के बाद साँप बनते हैं	323	विश्वासघात, फिर भी रहे...	343
क्या अच्छा ?	324	वह काम का नहीं	343
पत्नी को भी ठगता है	325	उसमें उपयोग नहीं बिगाड़ा	343

सिखाया इस तरह से व्यवहार	344	तब बरतती है समाधि	358
नुकसान उठाकर व्यवहार रोशन...	346	देशी-परदेशी में से श्रेष्ठ कौन ?	358
सामने वाले को खुश होने दिया	346	वहाँ कषाय विकसित नहीं हुए हैं	359
दूसरों की मुश्किलें दूर करने...	347	वर्ना मोक्ष नहीं सूझे	359
ऊपर के पैसे	347	लोभ कितनी पीढ़ी तक का ?	360
बात समझाई, ज्ञान दृष्टि से	348	भगवान को भी धोखा देने...	360
दो नंबर का धन नियमानुसार	348	दोनों प्रकार के सुख का...	361
ऐसी हो आत्मा की जागृति	349	धन बहे गटर में	362
लोभी की जागृति	350	वहाँ लक्ष्मी नहीं बसती	363
लोभ भी मान के हेतु वाला	351	तब प्रगति करेगा इन्डिया	363
मान का लोभ	352	वहाँ झूठा भी सच्चा माना जाएगा	365
वहाँ उपाय है देखना व जानना	353	मोह मिटाए निंदा	365
लोभ लाए रोग	353	ज्ञानी मोड़े पॉजिटिव पथ पर	366
यह उपाय करके तो देखो	354	2005 में वर्ल्ड का केन्द्र	366
ऐसी भावना से भी पिघलें...	355	बीच में कठिन काल	367
मानना पड़ेगा इस लोभी...	356	कुदरत हमेशा न्यायी	367
धन से सेवा, लेकिन किसलिए ?	356	कुदरत का न्याय न्यारा	368
नुकसान होने पर लोभ जाता है	357		

### [ 6 ] लोभ की समझ, सूक्ष्मता से

भटकाने वाला प्राकृत दोष	369	वहाँ भी उल्टा करना पड़ेगा	381
पुण्य, भोगते हैं दुःख में	369	लक्ष निरंतर लक्ष्मी में	382
पुण्य खर्च करते हुए भी पुण्य	370	देने से टूटता है	382
ज्ञानी सिखाते हैं...	371	लोभ और किफायत	383
पानी पिलाया गटर को	372	लोभी और कंजूस	384
तरीका, साथ ले जाने का	372	न रंगे किसी में भी	385
क्रोध-मान-माया-लोभ	373	दादा की मौलिक बातें	386
वह मान्यता लाई आफत...	374	मान तो भोला है ?	387
लोकसंज्ञा से फँसे	374	कषायों पर प्रकाश	388
निन्यानवे का धक्का...	376	उसका दिखना मुश्किल	390
सेठ ढूँढता है सड़ी हुई सब्जियाँ	379	वहाँ चढ़े बुखार	390
वह... अत्र, तत्र, सर्वत्र	380	न हो, वहाँ तक	391
शादी के समय भी चित्त लोभ में	380	वाह-वाही के लिए बर्बादी	392
पूरा दिन बितता है रक्षण में	381	हैं, फिर भी खर्च नहीं करता	393

तब मन पीछे हटता है	394	समर्पण का साइन्स	399
नुकसान, फिर भी उबार देता है	394	बीज, लेकिन क्या खा सकते हैं ?	400
यात्रा से लोभ घटे	395	तब लग जाता है चित्त भगवान...	401
निंदा करनी, निज लोभ की	396	सर्वस्व समर्पण, किसे ?	402
ज्ञानी को भी न माने	396	'दादा' के पास दोनों पंख	403
पछतावा कर देता है ढीला	397	संज्ञा समझो ज्ञानी की	403
और ऐसे ग्रंथि का छेदन होता...	397	जीवन जगमगाओ, मोमबत्ती...	404
उसमें जागृति की ही ज़रूरत	398	पाओ ज्ञानी का अंतर हेतु	405
गांठें पिघलें, सत्संग से ही	399	बदलो जीवन का हेतु, इस तरह	407
अब बदलो ध्येय	399		

### [ 7 ] दान के प्रवाह

अच्छे कार्य किसे कहेंगे ?	409	ये दान तो कैसे	425
लक्ष्मी का सदुपयोग किसमें ?	410	जो काम में आए वह पुस्तक...	426
दान में स्वार्थ	411	मुंबई यानी पुण्यशालियों का मेला	427
मंदिरों में या गरीबों में ?	411	धन चला, गटर में	428
दान किसे दे सकते हैं ?	413	स्वर्ण दान	428
लक्ष्मी दी और तख्ती ली	413	श्रेष्ठी-शेट्टी-सेठ-शठ	429
नामी की तो अर्थी	414	मिथ्यात्वी के पक्ष में मिथ्यात्वी	430
क्यों नहीं टिकती लक्ष्मी ?	414	सुमार्ग में खर्च करो	431
मन बिगड़े, इसलिए...	415	वास्तविक दानी	431
ऐसे पड़ते हैं अंतराय	415	स्वर्ग क्या और मोक्ष क्या ?	433
और ऐसे अंतराय खत्म होते हैं	416	वह धन पुण्य बाँधेगा	433
उसका प्रवाह बदलो	417	वह भी हिंसा ही है	434
बदले हुए प्रवाह की दिशाएँ	418	1942 के बाद की लक्ष्मी	435
प्रथम आहारदान	418	निरपेक्ष लुटाओ	435
औषधदान	419	वह है 'कैमोप्लेज' के समान	436
उत्तम है ज्ञानदान	420	अहरन चोरी, सुई जितना दान	436
सर्वोत्तम है अभयदान	420	गांठ के गोपीचंदन	438
ज्ञानी की दृष्टि से...	422	तख्ती में डूब गया दान	438
ज्ञानी ही देते हैं 'यह' दान	423	मान के भिखारी को...	439
फिर जिम्मेदारी 'हमारी'	424	दान भी गुप्त रूप से	440
'लक्ष्मी' तीनों में आती है	424	वाह-वाह की प्रीति	440
वह किस प्रकार दे सकते हैं ?	425	वहाँ 'खुद' स्वीकार नहीं करता	442

वहाँ खिलती हैं आत्मशक्तियाँ	443	बवंडर का व्यवहार	462
क्या किसी के निमित्त से...	444	दान, लेकिन उपयोग पूर्वक	463
वाह-वाही में पुण्य खर्च हो...	444	पाँचवाँ हिस्सा औरों के लिए	463
बाहर स्वीकारे, भीतर में वीतराग	445	स्वार्थी, परार्थी, परमार्थी	463
परिग्रह छूटने पर आत्मा प्रकट...	446	ऐसा है मोक्षमार्ग	464
सचेत करें ज्ञानी, लक्ष्मी-ममता से	446	भावना से है पुष्टि	466
वह थर्मामीटर ज्ञानी के पास	448	ज्ञानी से पूछ-पूछ कर...	466
स्थूल कर्म : सूक्ष्म कर्म	448	जैसा भाव, वैसा फल	467
शुभ भाव करते रहो	449	दान, समझदारी से	469
होता है आंतरिक भाव फलित	449	कहने वाला विश्वसनीय	471
साइन्टिफिक समझ	451	सरप्लस का ही दान	472
मुक्ति, वीतराग विज्ञान द्वारा	451	अनन्य भक्ति हो, वहाँ दे पाते हैं	473
अतिरिक्त बहा दो	452	सीमंधर स्वामी	474
बच्चों को दें कितना?	453	वे दोनों एक ही हैं	474
आदर्श विल (वसीयत)	455	ये हैं जीते-जागते देव	475
दुःख-आनंद का नियम	456	इस तरह समझाना भी पड़ता है	476
वह व्यवहार अच्छा माना जाएगा	457	स्पर्धा नहीं होती यहाँ	477
लक्ष्मी वहीं पर वापस आती है	457	घर के घी के दीये	478
देखना, दान रह न जाए	458	लेते हुए भी कितनी सूक्ष्म समझ!	478
रिवाज, भगवान के लिए ही...	458	पुस्तकें छपवाने की व्यवस्था	478
हैसियत के मुताबिक सहारा देना	459	यह है अमूल्य वाणी	479
हमारी भी सदा भावना रही	459	दादा के हृदय की बात	479
बात को समझने की ज़रूरत	460	यहाँ पैसे की ममता ही नहीं	480
लोभ से परेशानियाँ	461		

### [ 8 ] लक्ष्मी और धर्म

दान कहाँ देना चाहिए?	481	पधरावनी या पजलें	485
जैसा आया, वैसा जाएगा...	481	यहाँ मीठा-मीठा बोलने से...	486
वहाँ है सत्संग	482	प्योर ही प्योर बोल सकते हैं	487
तीन गुण होने चाहिए	482	शुद्ध चारित्र ही चाहिए	487
व्यवहार कैसा होना चाहिए?	483	उन्हें मिलेंगे जगत् के सभी सूत्र	488
उसमें है दृष्टि की भूल	483	धर्म या धंधा?	488
तो वह कहलाती है रामलीला	484	जहाँ फीस है, वहाँ नहीं है धर्म	489
पैसा कहाँ खर्च करना?	484	उसमें दोष किसका?	490



कलियुग, तेरी रीति उल्टी	491	रहने दो हमें शुद्ध	497
लेने वाला होगा दिवालिया	492	शुद्ध किसे कहें ?	497
यहाँ माँगो, रखो नहीं	493	वह तो, उच्छेद कर दे	497
पैसे नहीं, दुःख लेने आया हूँ	493	इसमें नहीं है कोई दोषित	498
‘हम’ आउट ऑफ बाउन्ड्री में	495	अब भी जागो	499
सोना या फ़ँदा ?	495	प्योरिटी ही आकर्षित करती है...	499
भगवान को अर्पण करो	496		



# पैसों का व्यवहार

[ 1 ]

लक्ष्मी जी का आना-जाना

एकाग्रता किसमें?

प्रश्नकर्ता : प्रभु स्मरण करते हैं लेकिन एकाग्रता प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : क्या प्रभु स्मरण करते समय एकाग्रता नहीं रहती?

प्रश्नकर्ता : ठीक तरह से नहीं हो पाती, ऐसा लगता है।

दादाश्री : जब बैंक से तनख्वाह लेने जाते हो, तब? रुपये गिनते समय एकाग्रता रहती है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : रहती है।

दादाश्री : एक-एक रुपये के नोट, दस हजार की संख्या में दें, तब गिनोगे या नहीं? या यों ही ले लोगे?

प्रश्नकर्ता : गिनना पड़ेगा न!

दादाश्री : क्या उस समय एकाग्र रहते हो?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : यदि उसमें एकाग्रता रहती है तो प्रभु में क्यों नहीं रहती?

**प्रश्नकर्ता :** वह पता नहीं चलता न!

**दादाश्री :** भगवान पर प्रेम है न?

**प्रश्नकर्ता :** है न।

**दादाश्री :** पैसों जितना?

**प्रश्नकर्ता :** पैसों जितना ही।

**दादाश्री :** अरे, पैसों जितना भी नहीं है। यदि भगवान पर पैसों जितना प्रेम रखते तब भी बहुत कल्याण हो जाता। वह अच्छा लगता है लेकिन प्रभु नहीं। जहाँ अच्छा लगे वहाँ एकाग्रता रहती है। जहाँ आपको अच्छा लगने लगे वहाँ एकाग्रता रहती है। अच्छा न लगे तो फिर एकाग्रता कैसे रहेगी?

रुपये गिनते समय यदि बेटा आ जाए तो उसे देखकर भी अनदेखा कर देते हैं, वरना हम भूल जाएँगे, सही बात है न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** तो देखो यह सब! पैसों में एकाग्र हुआ, इसमें नहीं होता अभी भी लेकिन भगवान में तो ज़रा सी भी रुचि नहीं है।

### गरज़ हो उसमें...

पैसे गिनते समय ध्यान इधर-उधर नहीं हो, ऐसा ध्यान रहना चाहिए। ध्यान किस कारण पैसे में रहता है और दूसरे में नहीं रहता? इसका कोई कारण तो होगा न? क्या कारण होगा?

**प्रश्नकर्ता :** मोह-माया में फँसे हैं?

**दादाश्री :** जो काम में आने वाला है उसमें ध्यान रहता है, भगवान क्या काम आएँगे? जो काम में आने वाले हों उनमें ध्यान रहता है या नहीं? पैसे काम आएँगे। कल सुबह तेल लाना है, घी लाना है, फलाना लाना पड़ेगा और भगवान क्या काम आएँगे? भगवान

काम नहीं आएँगे इसलिए ध्यान नहीं रहता। जब ऐसी गरज होगी, भगवान की ही गरज रहेगी तब ध्यान रहेगा। गरज नहीं है, गरज पैसों की है।

## प्रीति, लक्ष्मी की या नारायण की?

पूरी दुनिया ने लक्ष्मी को ही मुख्य माना है न! हर एक काम में लक्ष्मी ही मुख्य है इसलिए लक्ष्मी पर ही ज़्यादा प्रीति है। जब तक लक्ष्मी पर ज़्यादा प्रीति होगी तब तक भगवान पर प्रीति नहीं हो सकती। भगवान पर प्रीति होने के बाद लक्ष्मी पर से प्रीति खत्म हो जाएगी। दोनों में से एक पर ही प्रीति हो सकती है, या तो लक्ष्मी पर या नारायण पर। जहाँ आपको ठीक लगे वहाँ रहो। लक्ष्मी वैधव्य (दुःख) लाएगी। जो सुखी करती है वही रुलाती भी है जबकि नारायण रुलाते भी नहीं और हँसाते भी नहीं, निरंतर आनंद में रखते हैं, मुक्त भाव में रखते हैं।

ज्ञानी पुरुष के पास एक बार नाभि से (खुलकर) हँसे न, तभी भगवान के साथ तार जॉइन्ट हो जाता है, क्योंकि आपके अंदर भगवान बैठे हुए हैं। बस इतना ही है कि हमारे अंदर भगवान पूर्ण रूप से व्यक्त हो चुके हैं जबकि आपके अंदर व्यक्त नहीं हुए हैं लेकिन कैसे व्यक्त होंगे? जब तक भगवान के सम्मुख नहीं हुए हो, तब तक वे व्यक्त कैसे होंगे? क्या आप कभी भगवान के सम्मुख हुए थे?

**प्रश्नकर्ता :** वैसे तो हम लक्ष्मी के सम्मुख हुए हैं।

**दादाश्री :** वह तो सारी दुनिया ही लक्ष्मी के सम्मुख हुई है न? और सेठ, आप लक्ष्मी के सम्मुख हुए हो या विमुख?

**प्रश्नकर्ता :** मैं तो इसके प्रति उदासीन हूँ।

**दादाश्री :** ऐसा? यानी ऐसा है कि आप सम्मुख भी नहीं हो और विमुख भी नहीं? उदासीनता तो बहुत बड़ी चीज़ है। लक्ष्मी आए तो भी ठीक है और न आए तो भी ठीक है न!

## किसकी कीमत ज्यादा?

जबरदस्ती भगवान से प्रीति करने जाएँ तो उससे क्या फायदा? और रुपयों के प्रति देखो न, कोई कहता नहीं है, फिर भी इतना एकाग्र कि उस पल तो पत्नी-बच्चे, सब भूल जाता है!

लक्ष्मी का प्रताप कितना सुंदर है, नहीं? क्या और कोई ऐसी चीज़ है जो सब भुला दे? लक्ष्मी, सोना वगैरह सब एक में ही आ गया। अन्य ऐसी कोई चीज़ है, जो सबकुछ भुला दे? ऐसी, जो एकाग्र करवा दे?

**प्रश्नकर्ता :** याद नहीं आ रहा है।

**दादाश्री :** नहीं? स्त्री और लक्ष्मी। ये दोनों सभी कुछ भुला देते हैं। भगवान की तो याद ही नहीं आने देते। यह तो आपको थोड़े-बहुत याद आते हैं लेकिन एकाग्रता कैसे रह सकती है? भगवान के प्रति भाव ही नहीं है न! जहाँ रुचि, वहाँ एकाग्रता। नियम कैसा है? जहाँ रुचि, वहाँ एकाग्रता। अगर रुचि नहीं है तो एकाग्रता कैसे रहेगी?

अतः प्रीति पैसों पर है। जहाँ प्रीति हो वहाँ एकाग्रता रहती है। भगवान पर प्रीति नहीं है। इतनी ही प्रीति यदि भगवान पर हो जाए तो उनमें एकाग्रता रहेगी।

**प्रश्नकर्ता :** तो पैसों पर से प्रीति कैसे हटाएँ?

**दादाश्री :** इन दोनों में से किसकी कीमत ज्यादा है, सभी लोगों से पूछना है कि पैसों की कीमत ज्यादा है या भगवान की? जिसकी कीमत हो वहाँ प्रीति करो। हमें पैसों की ज़रूरत नहीं है क्योंकि हमें भगवान पर प्रीति है। चौबीसों घंटे भगवान के साथ रहते हैं इसलिए हमें पैसों की प्रीति नहीं है।

## क्या लक्ष्मी के बिना 'गाड़ी' चलेगी?

**प्रश्नकर्ता :** यदि किसी व्यक्ति को ज़रूरत हो तो पैसों के पीछे पड़ना ही पड़ता है न!

**दादाश्री** : यदि पीछे पड़ने से पैसे मिलते न, तो पहले इन मजदूरों को पैसे मिलते, क्योंकि ये तो बारह घंटों पैसों के पीछे पड़े रहते हैं।

**प्रश्नकर्ता** : पैसा विनाशी चीज़ है, फिर भी उसके बगैर चलता नहीं है न? गाड़ी में बैठने से पहले पैसे चाहिए।

**दादाश्री** : जिस प्रकार लक्ष्मी के बिना नहीं चलता उसी प्रकार लक्ष्मी मिलना या न मिलना, वह भी खुद की सत्ता की बात नहीं हैं न! यदि लक्ष्मी मेहनत से मिलती तब तो मजदूर मेहनत कर-करके मर जाते हैं फिर भी सिर्फ भोजन जितना ही मिल पाता है जबकि मिल मालिक तो बिना मेहनत के ही दो मिलों के मालिक होते हैं।

### लक्ष्मी, अक्ल या मेहनत का उपार्जन?

बात तो समझनी पड़ेगी न? इस तरह कब तक गड़बड़ घोटाला चलेगा? और *उपाधि* (बाहर से आने वाला दुःख) तो पसंद नहीं है। यह मनुष्य देह *उपाधि* से मुक्त होने के लिए है। सिर्फ पैसे कमाने के लिए नहीं है। पैसे कैसे कमाए जाते होंगे? मेहनत से कमाए जाते होंगे या बुद्धि से?

**प्रश्नकर्ता** : दोनों से ही।

**दादाश्री** : यदि पैसे मेहनत से कमाए जाते तो इन मजदूरों के पास बहुत पैसे होते, क्योंकि मजदूर ही ज्यादा मेहनत करते हैं न! यदि पैसे बुद्धि से कमाए जाते तो ये सब पंडित लोग हैं ही न! लेकिन उनकी तो चप्पलें आधी घिसी हुई होती हैं। पैसे कमाना बुद्धि का खेल नहीं है और न ही मेहनत का फल है। वह तो आपने पूर्व जन्म में जो पुण्य किए थे, उसके फलस्वरूप आपको मिलते हैं और नुकसान वह, जो पाप किए थे उसके फलस्वरूप है। लक्ष्मी पुण्य और पाप के अधीन है। इसलिए यदि लक्ष्मी चाहिए तो हमें पुण्य और पाप का ध्यान रखना चाहिए।

भूलेश्वर (मुंबई का एक उपनगर) में बहुत से अक्ल वाले हैं, जिनकी चप्पलें आधी घिसी हुई हैं। कोई व्यक्ति महीने के पाँच सौ कमाता है, कोई सात सौ कमाता है, कोई ग्यारह सौ कमाता है। बहुत खुश होकर कहता है कि 'ग्यारह सौ कमाता हूँ'। अरे, लेकिन तेरी चप्पलें तो अभी भी आधी ही हैं। देखो, अक्ल के कारखाने! वे कम अक्ल बहुत कमाते हैं। अक्लमंद पासे फेंके तो सीधे पड़ेंगे या मूर्ख आदमी के पासे सीधे पड़ेंगे?

**प्रश्नकर्ता :** जिसका पुण्य उसके सीधे पड़ेंगे।

**दादाश्री :** बस, इसमें तो अक्ल का चलेगा ही नहीं न! अक्ल वाले का तो बल्कि उल्टा हो जाएगा। अक्ल तो उसे दुःख में मदद करती है। दुःख में किस तरह वापस सबकुछ ठीक कर लें इसमें उसकी मदद करती है।

### ...या पुण्य का उपार्जन?

ये बड़े-बड़े चक्रवर्ती राजा थे, उन्हें इसका पता नहीं रहता था कि दिन है या रात। वे सूर्यनारायण को भी नहीं देख पाते थे, फिर भी राज करते थे, क्योंकि पुण्य काम करता है।

**प्रश्नकर्ता :** शालिभद्र सेठ के वहाँ पेटियाँ आती थीं न?

**दादाश्री :** हाँ।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा कहते हैं कि शालिभद्र को ऊपर से देवी-देवता रोज़ सोने के मुहरों की पेटियाँ देते थे तो क्या यह सच है?

**दादाश्री :** हाँ देते थे, सबकुछ देते थे। जब तक उनका पुण्य हो तब तक उन्हें क्या नहीं देंगे? पुण्य होगा तो क्या-क्या नहीं देंगे? और देवों के साथ ऋणानुबंध होता है, उनके रिश्तेदार वहाँ गए हों न और यदि उनका पुण्य हो तो उन्हें क्या-क्या नहीं देंगे?

### कौन, किसके पीछे?

लक्ष्मी जी तो पुण्यशालियों के पीछे घूमती रहती हैं और मेहनती

लोग लक्ष्मी जी के पीछे घूमते हैं। यानी हमें समझ लेना चाहिए कि पुण्य होगा तो लक्ष्मी जी पीछे आएँगी। वर्ना मेहनत से रोटी मिलेगी, खाने-पीने को मिलेगा और एकाध बेटी होगी तो उसकी शादी हो जाएगी। बाकी, पुण्य के बिना तो लक्ष्मी नहीं मिलती।

यानी वास्तव में क्या कहना चाहते हैं कि तुम यदि पुण्यशाली हो तो क्यों छटपटा रहे हो? और यदि तुम पुण्यशाली नहीं हो तो भी क्यों छटपटा रहे हो?

पुण्यशाली तो कैसे होते हैं? जब अधिकारी भी ऑफिस से उकताकर घर लौटते हैं न, तब मेम साहब क्या कहती है कि 'डेढ़ घंटे लेट हो गए, कहाँ गए थे?' ये देखो पुण्यशाली (!) पुण्यशाली के साथ कहीं ऐसा होता होगा? पुण्यशाली को हवा का एक उल्टा झोंका तक नहीं लगता। बचपन से ही वह क्वॉलिटी अलग होती है। अपमान का संयोग ही न मिला हो। जहाँ जाओ वहाँ 'आइए भाई, आइए' इस तरह से उनका लालन-पालन होता है, जबकि इसे तो, जहाँ जाए वहाँ टकराव ही टकराव। इसका क्या मतलब है? जब पुण्य खत्म हो जाए उसके बाद जैसे थे वैसे ही हो जाते हैं! यदि तुम पुण्यशाली नहीं हो और फिर अगर पूरी रात चेहरे पर नकाब बाँधकर घूमोगे, तब भी क्या सुबह तक पचास (रुपये) मिल जाएँगे? अतः छटपटाना बंद कर और जो भी मिले उसे खा-पीकर सो जा न चुपचाप।

**प्रश्नकर्ता :** यह तो प्रारब्धवाद हुआ न!

**दादाश्री :** नहीं, प्रारब्धवाद नहीं है। तुम अपनी ओर से प्रयत्न करो। मेहनत करके रोटी खाओ। बाकी बेकार में क्यों हाथ पैर मारते रहते हो? यहाँ से इकट्ठा कर लूँ, वहाँ से इकट्ठा कर लूँ! यदि तुम्हारा घर में मान नहीं है, बाहर मान नहीं है, फिर क्यों छटपटाते रहते हो? जो बहुत ज्यादा पुण्य लेकर आते हैं न, उनकी तो बात ही अलग होती है, उन्हें तो, जहाँ जाएँ वहाँ 'आइए बैठिए' कहने वाले होते हैं।

ये सेठ पूरी जिंदगी के लिए पच्चीस लाख लेकर आए हों तो वे



पच्चीस लाख के बाईस लाख कर देते हैं, लेकिन बढ़ाते नहीं हैं। कब बढ़ते हैं? जब हमेशा ही धर्म में रहें तब लेकिन खुद ही इसमें दखल करने गए कि बिगड़ा। कुदरत में हाथ डालने गया कि बिगड़ा। जब लक्ष्मी आती है तब उसे लगता है कि रेत से लक्ष्मी आ रही है इसलिए वह रेत को पेलता रहता है लेकिन कुछ भी नहीं मिलता है। लक्ष्मी तो पुण्य का फल है, सिर्फ पुण्य का ही फल है। यदि मेहनत का फल होता न, तब तो सारी मजदूरों के हाथ में ही गई होती और अक्ल का फल होता न, तो इन लोहे के व्यापारियों जैसी अक्ल वाला कोई नहीं है, पूरी लक्ष्मी वहाँ पर गई होती लेकिन ऐसा नहीं है। लक्ष्मी तो पुण्य का फल है।

लक्ष्मी तो पुण्य से आती है। बुद्धि का उपयोग करने से नहीं आती। मिल मालिकों और सेठों में नाम मात्र की भी बुद्धि नहीं होती फिर भी ढेर सारी लक्ष्मी आती रहती है और उनका मुनीम बुद्धि का ही उपयोग करता रहता है, इन्कम टैक्स के ऑफिस में जाए तब साहब की गालियाँ भी वही खाता है, जबकि सेठ तो आराम से सोते रहते हैं।

### अक्लमंद, मुनीम या सेठ?

लक्ष्मी जी कैसे आती हैं और कैसे चली जाती हैं वह हमें मालूम है। लक्ष्मी जी मेहनत से, अक्ल से या ट्रिक्स (चालाकी) अपनाने से नहीं आतीं। लक्ष्मी कैसे कमाई जाती है? यदि सीधी तरह से कमाई जाती तो प्रधानों को चार आने भी नहीं मिलते। लक्ष्मी तो पुण्य की कमाई है। पागल हो, वह भी पुण्य से कमाता है।

एक सेठ थे। सेठ और उसके मुनीम दोनों ही बैठे थे, अहमदाबाद की ही बात है! लकड़ी की पटिया और उसके ऊपर गद्दी, ऐसे पलंग, सामने टेबल! और उस पर भोजन की थाली रखी थी। सेठ खाना खाने बैठे थे। सेठ की डिज़ाइन बताऊँ। बैठे थे तीन फीट जमीन के ऊपर, जमीन से ऊपर डेढ़ फीट पर सिर था। चेहरे का आकार तिकोना था, बड़ी-बड़ी आँखें, मोटा नाक और होंठ तो मोटे-मोटे ढेबरे (एक तरह की मोटी रोटी) के समान और नज़दीक में फोन था। खाते-खाते जब

फोन आते तो बात करते। सेठ को खाना तो आता नहीं था। दो-तीन टुकड़े पूड़ी के, नीचे गिर गए थे और बहुत सारे चावल तो नीचे बिखरे थे। फोन की घंटी बजने पर सेठ कहते कि, 'दो हज़ार गठरियाँ ले लो' और अगले दिन दो लाख रुपये कमा लेते थे। मुनीम जी बैठे-बैठे माथापच्ची करते और सेठ बिना मेहनत किए कमाते। वैसे तो सेठ अक्ल से ही कमाते दिखते हैं लेकिन पुण्य के कारण ही अक्ल सही समय पर प्रकाश देती है। वह पुण्य के कारण है। वह तो सेठ और मुनीम जी को साथ-साथ रखो तब समझ में आता है। वास्तव में अक्ल तो सेठ के मुनीम की ही होती है, सेठ की नहीं। यह पुण्य कहाँ से आया? भगवान को समझकर भजा था, इसलिए? नहीं, समझे बिना भजा था इसलिए! किसी पर उपकार किए, किसी का भला किया, इन सब से पुण्य बंध गए। भगवान को समझे बिना भजा तब भी। यदि भूल से अग्नि में हाथ डाल दें तब भी जलेगा न?

### सीधी परोक्ष भक्ति भी कैसे लाए

जब तक 'प्रत्यक्ष' न मिले तब तक 'परोक्ष' करनी चाहिए लेकिन लोगों को 'परोक्ष' की सही भक्ति भी नहीं मिलती है। यदि परोक्ष की सही भक्ति मिलती न, तो घर में किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं आती। कभी भी ऐसा याद नहीं आता कि मेरा यह कम हो गया है, और यहाँ तो, दस दिन हुए कि 'आज शक्कर नहीं है, मिट्टी तेल नहीं है, फलाना नहीं है', ऐसा सुनना पड़ता है। बासमती चावल खत्म हो गए हैं, अब मोटे चावल लेकर आओ। तब क्या करेंगे? यदि परोक्ष भक्ति भी सचमुच की होती न, तो कुछ भी कम नहीं पड़ता। सोचना भी नहीं पड़ता कि, 'मुझे यह चाहिए।' हमें बिना सोचे ही चीज़ें मिल जाएँ। लेकिन परोक्ष भक्ति नहीं की इसलिए उसका क्या फल मिला? कि चीज़े लेने जाता है, दौड़-भाग करता है, फिर भी नहीं मिलती।

### मज़दूरों की कैसी दशा?

बहुत से मज़दूर पूरा दिन मेहनत करते हैं। वे बेचारे शाम को

सेठ से कहते हैं कि 'सेठ, मेरे घर में कुछ भी खाने को नहीं है इसलिए मैंने आपसे कहा था कि शाम को नकद पैसे दोगे तभी करूँगा।' तब सेठ कहते हैं, "हाँ, 'नकद दूँगा' कहा था लेकिन मेरे पास तो अभी सौ के नोट हैं। ला पचानवे रुपये और अपने पाँच रुपये ले ले, वर्ना जाना हो तो जा और रहना हो तो रह। नालायक है क्या?" ऐसे दो गालियाँ खाकर, बेचारे को पैसे लिए बिना घर जाना पड़ता है, क्या करे बेचारा? मज़दूर है न? तब सेठ का क्या दोष है? अभी जो भुगत रहा है, उसका दोष है। सेठ पाँच रुपये नहीं देते और ऊपर से डाँटते हैं। गालियाँ देते हैं, इसमें किसे भुगतना पड़ा? मज़दूर को। यानी मज़दूर की भूल है और जब सेठ को इसका फल मिलेगा तब सेठ की भूल होगी। मज़दूर को डाँटा, गालियाँ दीं, दुःख दिया, उसका फल उसे मिलेगा। उसको तो उसकी भूल का फल पका और अभी मिल गया। सेठ का तो बंध गया, उसका फल उत्पन्न होगा, पकेगा तब बारी आएगी। तब तक सेठ का तो काम चला।

### सहकार किया, सर्वट के साथ?

हमें वहाँ कैसी *लागणी* (लगाव, भावुकता वाला प्रेम) रखनी चाहिए? यदि हम धर्म को समझते हैं तो हमारे पास सौ की नोट हो तो कहीं से भी चिल्लर लाकर उसे पाँच रुपये दे देने चाहिए। वह बेचारा पाँच रुपयों के लिए पूरा दिन मेहनत करता है इसलिए हमें उसके आने से पहले बैठे रहना चाहिए कि वह कब आए और कब अपनी मज़दूरी ले जाए। उसके आते ही कहना चाहिए कि 'ले भाई, तेरे पाँच रुपये!' एक मिनट भी देर नहीं करनी चाहिए क्योंकि उसे तो अभी मिर्च लेनी होगी, इमली लेनी होगी और भी क्या-क्या नहीं लेना होगा? तेल की शीशी लेकर आया होगा, उसमें थोड़ा तेल ले जाएगा, ये सब लेकर घर जाएगा उसके बाद खाना बनाएगा। हमारे यहाँ तो काम पर मज़दूर होते हैं इसलिए हम यह सब जानते हैं। वहाँ हमारा नियम ऐसा था कि मज़दूर के पैसों में कुछ ऊपर-नीचे हो गया हो तो खबर ले लेते। बहुत कड़ा हिसाब। उन बेचारों को तो महादुःख, तो हम उन्हें और ज़्यादा मुश्किल में कैसे डाल सकते हैं?

## पुण्य के प्रकार

पुण्यशालियों को कम मेहनत से सब फलता है। वहाँ तक का पुण्य हो सकता है कि सहज सोचा ही, कुछ भी नहीं किया हो, और सारी चीजें जो सोचा हों, वे मिल जाएँ, वह सहज प्रयत्न है। प्रयत्न निमित्त है लेकिन सहज प्रयत्न को पुरुषार्थ कहना, ये सभी व्याख्याएँ गलत हैं।

इसलिए लक्ष्मी पुण्यशाली लोगों का काम है। पुण्य का हिसाब ऐसा है कि बहुत ज़्यादा मेहनत करने पर भी यदि बहुत थोड़ा मिले तो वह बहुत कम पुण्य कहलाता है। शारीरिक मेहनत बहुत ज़्यादा न करनी पड़े सिर्फ वाणी से ही काम लेना पड़े, वकीलों की तरह, वह पहले वाले से थोड़ा ज़्यादा पुण्य कहलाता है और उससे भी ज़्यादा कौन सा? वाणी से भी माथापच्ची न करनी पड़े, शारीरिक मेहनत भी न करनी पड़े। लेकिन जो मानसिक माथापच्ची से कमाएँ, वे अधिक पुण्यशाली कहलाते हैं और उससे भी ज़्यादा कौन सा? संकल्प करते ही काम हो जाए। संकल्प किया, उतनी ही मेहनत। संकल्प किया कि दो बंगले, एक गोडाउन, ऐसा संकल्प किया कि तैयार हो जाता है। वे महा पुण्यशाली। संकल्प किए, वही मेहनत, बस। संकल्प करना पड़ता है। संकल्प किए बिना नहीं होता। थोड़ी सी भी, कुछ मेहनत चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन मनुष्यों में ऐसा नहीं हो सकता है।

**दादाश्री :** मनुष्यों में भी हो सकता है। क्यों नहीं हो सकता है? मनुष्यों में तो जितना चाहिए उतना हो सकता है।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा कहा गया है कि देवलोक में ऐसा होता है।

**दादाश्री :** देवलोक में सब सिद्ध होता है। यहाँ भी किसी-किसी को संकल्पसिद्धि हो सकती है, सब हो सकता है, अपना पुण्य होना चाहिए। अभी पुण्य नहीं है। पुण्य कम पड़ रहे हैं।

जितनी मेहनत उतने अंतराय, क्योंकि मेहनत क्यों करनी पड़ रही है!

## दुःख किसे कहेंगे?

संसार, बिना मेहनत का फल है इसलिए भोग लो लेकिन भोगना आना चाहिए। भगवान ने कहा है कि इस दुनिया में जो आवश्यक चीजें हैं, जब उनमें कोई कमी आए, तब स्वाभाविक तौर पर तुम्हें दुःख रहेगा। यदि अभी हवा ही बंद हो जाए और सांस लेने में तकलीफ और घुटन होने लगे तो हम कह सकते हैं कि इन लोगों को दुःख है। ऐसा वातावरण हो जाए कि सांस और दम घुटने लगे तो उसे दुःख कहा जाएगा। दोपहर हो जाए और दो-तीन बजे तक खाना न मिले, तो हम समझ सकते हैं कि इसे कुछ दुःख है। जब ऐसी आवश्यक चीजें न मिलें, जिनके बिना शरीर जिंदा न रह सके, तब उसे दुःख कहा जाएगा। यह सब तो ढेर सारा है, इसे भोगते नहीं है और अन्य बातों में ही लगे हुए हैं। जब मिल मालिक खाने बैठें तो बत्तीस तरह के व्यंजन होते हैं लेकिन उसका ध्यान मिल में होता है। सेठानी पूछे कि पकोड़े किस चीज के बनाए हैं? तब कहते हैं, 'मुझे पता नहीं है, तुम पूछती मत रहो।' ऐसा है यह सब।

## लक्ष्मीवान, अंत में तो...

लक्ष्मी मनुष्य को मजदूर बना देती है। अगर ज़्यादा लक्ष्मी आ जाए तो फिर मनुष्य मजदूर जैसे हो जाते हैं। इनके पास बहुत ज़्यादा लक्ष्मी है, लेकिन साथ ही साथ ये दानेश्वरी भी हैं इसलिए अच्छा है। वर्ना तो मजदूर ही कहलाते न! वह दिन भर कड़ी मेहनत करता रहता है, उसे पत्नी की परवाह नहीं रहती है, बच्चों की परवाह नहीं रहती है, किसी की परवाह नहीं रहती है। सिर्फ लक्ष्मी की ही परवाह रहती है। यानी लक्ष्मी धीरे-धीरे मनुष्य को मजदूर बना देती है और फिर तिर्यचगति में ले जाती है क्योंकि पापानुबंधी पुण्य है न! पुण्यानुबंधी पुण्य हो तो कोई हर्ज नहीं है। पुण्यानुबंधी पुण्य किसे कहते हैं कि दिन भर में सिर्फ आधा घंटा ही मेहनत करनी पड़े। वह आधा घंटा मेहनत करे और पूरा काम सरलता से धीरे-धीरे चलता रहे। दानेश्वरी

हैं इसलिए यह लाभ हुआ, वर्ना भगवान के वहाँ ये भी मज़दूर ही माने (गिने) जाते हैं।

### जो खर्च करे, उसका धन

यह जगत् तो ऐसा ही है। यहाँ भोगने वाले भी हैं और मेहनत करने वाले भी, सब मिलाजुला है। मेहनत करने वाले को ऐसा लगता है कि मैं ही कर रहा हूँ। उसमें उसका अहंकार होता है। जबकि भोगने वाले में ऐसा अहंकार नहीं होता लेकिन उन्हें भोक्तापन का रस मिलता है। उन मेहनत करने वालों को अहंकार का गर्वरस मिलता है।

एक सेठ ने मुझसे कहा है कि, 'मेरे इस बेटे को कुछ कहिए न, मेहनत नहीं करता है। आराम से भोगता रहता है।' मैंने कहा कि 'कुछ भी कहने जैसा नहीं है। वह अपने हिस्से का पुण्य भोग रहा है, उसमें हमें क्यों दखल करना चाहिए?' तब वे मुझे कहने लगे कि 'उसे समझदार नहीं बनाना है?' मैंने कहा, 'जगत् में जो भोग रहे हैं वे समझदार कहलाते हैं। जो बाहर फेंक देते हैं, वे पागल कहलाते हैं और जो मेहनत करते रहें, वे तो मज़दूर कहलाते हैं।' लेकिन जो मेहनत करते हैं, उन्हें अहंकार का रस मिलता है न! जब लंबा कोट पहनकर जाते हैं तब लोग, 'सेठ आ गए, सेठ आ गए' करते हैं, बस इतना ही और भोगने वाले को तो सेठ वगैरह की कुछ पड़ी ही नहीं होती। उसने तो अपना जो भोगा, वही सही।

### लक्ष्मी का जाप करना चाहिए?

अभी जो है उसे तो लक्ष्मी ही नहीं कहेंगे। यह तो पापानुबंधी पुण्य वाली लक्ष्मी है। अज्ञान दशा में जो तप किए थे उससे पुण्य बंध गए थे। उसका फल आया है, उससे लक्ष्मी आई है। यह लक्ष्मी तो व्यक्ति को पागल सा बना देती है। इसे सुख ही कैसे कह सकते हैं? सुख तो, पैसों का विचार न आए उसे सुख कहते हैं। हमें तो साल में एकाध दिन ही विचार आते हैं कि जेब में पैसे हैं या नहीं हैं।

**प्रश्नकर्ता :** बोझ जैसा लगता है?

**दादाश्री :** नहीं, बोझ तो हमें रहता ही नहीं है और हमें तो इस बारे में सोचना ही नहीं पड़ता न! किसलिए सोचना है? सबकुछ आगे-पीछे तैयार ही होता है। जिस तरह खाने-पीने का आपके टेबल पर आता है या नहीं? कि सुबह से ही सोचने बैठ जाते हो? क्या माला फेरते रहते हो? कि 'खाने का हो जाएगा या नहीं? खाना मिलेगा या नहीं?' क्या ऐसा करते रहते हो? क्या खाने के लिए जाप नहीं करना पड़ता? या सुबह जल्दी उठकर जाप करते हो?

**प्रश्नकर्ता :** किसी को जाप करना भी पड़ता होगा।

**दादाश्री :** किसी और की चिंता क्यों कर रहे हो? क्या आपको कभी करना पड़ा?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** नहाने के लिए गरम पानी मिलेगा या नहीं, मिलेगा या नहीं, इस तरह रात से सोचते रहते हो सुबह तक? क्या इस तरह जाप करने की ज़रूरत पड़ती है? फिर भी सुबह नहाने के लिए गरम पानी मिलता है या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** मिलता है।

**दादाश्री :** ऐसा है, जो नेसेसिटी है, वह नेसेसिटी अपने टाइम पर मिल ही जाती है। उसका ध्यान करने की ज़रूरत नहीं है। इसीलिए तो कहा है न, लक्ष्मी तो हाथ का मैल है। जैसे पसीना आए बिना नहीं रहता, उसी तरह लक्ष्मी भी आए बिना नहीं रहती। किसी को अधिक पसीना आता है तो किसी को कम पसीना आता है। इसी तरह किसी को अधिक लक्ष्मी मिलती है तो किसी को कम लक्ष्मी मिलती है। बात तो समझनी पड़ेगी न?

**ऐसा नियम है, 'व्यवस्थित' का**

भगवान क्या कहते हैं, यदि तुम्हारा धन होगा न, तो पेड़ लगाने जाओगे और वहाँ तुम्हें मिल जाएगा। उसके लिए (पूरी) ज़मीन खोदने

की ज़रूरत नहीं है। धन के लिए बहुत माथापच्ची करने की ज़रूरत नहीं है। ज़्यादा मज़दूरी करने पर तो सिर्फ मज़दूरी का ही धन मिलता है। बाकी, लक्ष्मी के लिए बहुत मेहनत करने की ज़रूरत नहीं है। मोक्ष भी मेहनत से नहीं मिलता है। फिर भी, लक्ष्मी के लिए ऑफिस में जाकर बैठना पड़ता है उतनी मेहनत है। गेहूँ उगे हों या न उगे हों, फिर भी आपकी थाली में रोटी आती है या नहीं? 'व्यवस्थित' का नियम ही ऐसा है!

### सही लक्ष्मी कहाँ आती है?

दुनिया का नियम ऐसा है कि हिन्दुस्तान में जब बिना बरकत वाले लोग होते हैं तब लक्ष्मी भी बढ़ती जाती है और बरकत वाले हो तो धन नहीं मिलता। यानी बिना बरकत वाले लोगों के पास लक्ष्मी जमा हो गई है और टेबल पर खाना मिलता है। कैसे खाएँ-पीएँ, सिर्फ यही नहीं आता है।

इस काल के जीव भोले कहे जाएँगे। कोई ले ले तो भी कुछ नहीं। ऊँची जाति, नीची जाति, इससे कोई मतलब नहीं है। इतने भोले हैं इसलिए लक्ष्मी बहुत आती है। लक्ष्मी तो जो बहुत जागृत होते हैं उसे ही नहीं मिलती। जो बहुत जागृत होते हैं वे बहुत कषाय करते हैं। दिन भर कषाय करते रहते हैं। ये तो जागृत नहीं हैं, कषाय ही नहीं है न, कोई झंझट ही नहीं है न! वहाँ लक्ष्मी आती है लेकिन उपयोग करना ही नहीं आता। बेहोशी में ही चली जाती है पूरी।

यहाँ के लोग फ़ारैन वाले जैसे ही भोले हो गए हैं इसलिए लक्ष्मी आती है। यह सही लक्ष्मी नहीं आती। भोलेपन की लक्ष्मी, सही लक्ष्मी वाले तो जागृत रहते हैं, साथ ही दिलदार और भोले होते हैं और वे भोले तो जान-बूझकर सब जाने देते हैं। वह लक्ष्मी तो पुण्यानुबंधी पुण्य की होती है और इन्हें तो भान ही नहीं है न! ये तो सारी पापानुबंधी पुण्य की लक्ष्मी है। पलभर की भी शांति नहीं देती बल्कि दिन भर मूर्च्छित ही रहता है।



## लक्ष्मी है, फिर भी अशांति क्यों?

अभी जो धन है न, वह सारा ही धन गलत है। सही धन बहुत ही कम है। दो तरह के पुण्य होते हैं। एक, पापानुबंधी पुण्य जो कि अधोगति में ले जाता है और जो ऊर्ध्वगति में ले जाता है, वह पुण्यानुबंधी पुण्य है। वैसा धन बहुत कम बचा है। अभी सभी जगह जो रुपये दिखाई दे रहे हैं न, वे पापानुबंधी पुण्य के रुपये हैं और ये तो बहुत कर्म बाँधते हैं और भयंकर अधोगति में जा रहे हैं। पुण्यानुबंधी पुण्य कैसे होता है? निरंतर अंतरशांति के साथ शान-शौकत रहती है, वहाँ धर्म होता है।

आज की लक्ष्मी पापानुबंधी पुण्य की है इसलिए वह क्लेश कराए, ऐसी है इसलिए कम आए, वही अच्छा है। ताकि घर में क्लेश तो न हो! आज जहाँ-जहाँ लक्ष्मी घुसती है वहाँ क्लेश का वातावरण हो जाता है। एक रोटी और सब्जी अच्छी लेकिन बत्तीस तरह के पकवान किस काम के? यदि इस काल में तो सही लक्ष्मी आए तो एक ही रुपया, ओहोहो... कितना सुख देकर जाएगा! पुण्यानुबंधी पुण्य तो घर में सभी को सुख-शांति देकर जाती है, घर में सभी को सिर्फ धर्म के ही विचार रहते हैं।

## आती हुई लक्ष्मी का स्वयं कितना हक्रदार?

अभी तो दूषमकाल है, ऐसे दुःखमय काल में जीव कैसे होते हैं? कलह करने वाले, दिन भर कलह, कलह और कलह। अंतरशांति नहीं रहती। रुपयों से कोई शांति नहीं होती।

मुंबई में एक उच्च संस्कारी कुटुंब की बहन से मैंने पूछा, 'घर में क्लेश तो नहीं होता है न?' तब उस बहन ने कहा, 'रोज़ सुबह क्लेश का नाश्ता होता है।' मैंने कहा, 'तब तो तुम्हारे नाश्ते के पैसे बच गए। नहीं?' बहन ने कहा, 'नहीं, फिर भी निकालने पड़ते हैं, पावरोटी पर मक्खन लगाते जाते हैं', फिर क्लेश भी चलता रहता है और नाश्ता भी। अरे, किस तरह के जीव हैं?

**प्रश्नकर्ता :** कुछ लोगों के घरों में लक्ष्मी ही ऐसे प्रकार की होती है इसलिए क्लेश होता है ?

**दादाश्री :** लक्ष्मी के कारण ही ऐसा होता है। हमेशा ही लक्ष्मी यदि निर्मल हो तो सब अच्छा ही होता है, मन अच्छा रहता है। ये अशुभ लक्ष्मी आती है इसलिए क्लेश होता है। हमने बचपन में ही तय कर लिया था कि जहाँ तक हो सके वहाँ तक अशुभ लक्ष्मी घुसने ही नहीं देना है। आज छियासठ साल हो गए हैं लेकिन अशुभ लक्ष्मी घुसने नहीं दी इसलिए तो घर में कभी क्लेश हुआ ही नहीं। घर में तय किया था कि इतने पैसों से घर चलाना है। व्यापार में लाख रुपये कमाए लेकिन ये 'पटेल' सर्विस करने जाए तो कितनी तनख्वाह मिलेगी ? ज्यादा से ज्यादा छः सौ-सात सौ रुपये मिलेंगे। धंधा तो पुण्य का खेल है। इसलिए नौकरी में जितने मिले उतने ही पैसे घर में खर्च करने हैं, बाकी तो धंधे में ही रहने देने हैं। इन्कम टैक्स का नोटिस आए तो हमें कहना है कि 'वह जो रकम थी वह भर दो', कब कैसा 'अटैक' आ जाए उसका कोई ठिकाना नहीं है। यदि वह पैसे खर्च कर दें तो 'इन्कम टैक्स वाले का अटैक' आने से पहले तो हमें ही 'अटैक' आ जाएगा। सभी जगह अटैक घुस गया है न? इसे जीवन कैसे कहेंगे? आपको क्या लगता है? भूल लगती है या नहीं? तो हमें भूल सुधारनी है।

लक्ष्मी सहज भाव से आती हो तो आने देना चाहिए, लेकिन उसके सहारे मत रहना। 'सहारा' लेकर 'चैन' से बैठ जाएँ लेकिन वह सहारा कब चला जाएगा कुछ कहा नहीं जा सकता। इसलिए सावधान रहो ताकि *अशाता* (दुःख-परिणाम) वेदनीय में परेशान न होना पड़े।

### सुगंधयुक्त लक्ष्मीवान

लक्ष्मी जी हमेशा सुगंधयुक्त हों तो उसे भगवान ने भी स्वीकार किया है। मुंबई में इतने सारे लक्ष्मीवान हैं लेकिन क्या किसी की सुगंध आई ?

**प्रश्नकर्ता :** कोई तो होगा न?

**दादाश्री :** 'होगा' ऐसा बोलना बहुत ही जोखिम वाला है। या तो 'ना' बोलो या तो 'हाँ' बोलो। 'होगा', ऐसा ढीला बोलना, वह अत्यंत जोखिम है। पोल के कारण ही तो जगत् ऐसा हो गया है। जाँच तो करो और 'जैसा है वैसा' बोल दो कि भाई, मेरी जानकारी में तो अब तक कोई नहीं आया। हमें कहने का कितना राईट है? आज तक मुझे अपनी जिंदगी में जहाँ भी मैं गया हूँ, ऐसा कोई नहीं मिला है। वैसे, सुगंधयुक्त लक्ष्मी नहीं होती है। अभी, यदि इस काल में होगी तो बहुत कम होगी, कुछ ही जगह पर होगी।

### सुगंधयुक्त लक्ष्मी

**प्रश्नकर्ता :** सुगंधयुक्त लक्ष्मी, वह लक्ष्मी कैसी होती है?

**दादाश्री :** वह लक्ष्मी हमें ज़रा सी भी *उपाधि* नहीं करवाती। घर में सौ रुपये हों न तब भी हमें ज़रा सी भी *उपाधि* नहीं होती। यदि कोई कहे कि कल से शक्कर पर कंट्रोल आने वाला है, फिर भी मन में *उपाधि* नहीं रहती। *उपाधि* नहीं, हाय-हाय नहीं। वर्तन कितना सुगंधी वाला, वाणी कैसी सुगंधी वाली और उसे पैसे कमाने का विचार ही नहीं आता, ऐसा पुण्यानुबंधी पुण्य होता है। जिसकी पुण्यानुबंधी पुण्य वाली लक्ष्मी हो उसे पैसे बढ़ाने का विचार ही नहीं आता है। यह तो सारी पापानुबंधी पुण्य की लक्ष्मी है। इसे तो लक्ष्मी ही नहीं कह सकते। सारे पाप के ही विचार आते हैं, 'किस तरह से इकट्ठा कर लूँ, किस तरह से इकट्ठा कर लूँ', यही पाप है। तब कहते हैं कि पहले सेठ के वहाँ ऐसी लक्ष्मी होती थी? उनके वहाँ तो लक्ष्मी इकट्ठी हो जाती थी, इकट्ठी करनी नहीं पड़ती थी। जबकि इन लोगों को तो इकट्ठी करनी पड़ती है। वह लक्ष्मी तो सहज भाव से आती रहती थी। खुद ऐसा कहता था कि 'हे प्रभु, यह राजलक्ष्मी मेरे सपने में भी न हो', फिर भी वह आती ही रहती है। क्या कहता है कि आत्मलक्ष्मी हो लेकिन यह राजलक्ष्मी मेरे सपने में भी न हो। फिर भी

वह आती ही रहती थी, वह पुण्यानुबंधी पुण्य है। उसे लक्ष्मी तो बहुत सारी मिलती है, मिलने में कमी नहीं होती। कभी सोचता ही नहीं है और बल्कि ऊब गया होता है कि अब ज़रा कम आए तो अच्छा, लेकिन फिर भी लक्ष्मी आती है। लक्ष्मी आए तो उसका निपटारा तो करना पड़ेगा न? क्या करना पड़ेगा? निपटारा लाने में बहुत मेहनत करनी पड़ती है। क्या उसे रास्ते में यों ही फेंक सकते हैं? अब इसका निपटारा कैसा होना चाहिए कि लक्ष्मी वापस आकर इस तरह जाए कि फिर से बढ़-बढ़कर वापस आती रहे।

### चाहिए, राजलक्ष्मी या मोक्षलक्ष्मी?

यह सब डिस्चार्ज है, हो चुका है। उसमें अब तुम क्या कर सकते हो? ये जो तुम्हें ऑर्डर मिल रहे हैं वह सब पुण्य है और आर्डर न मिले, वह तो पाप का उदय हो तभी ऑर्डर नहीं मिलते हैं। अब इसके लिए फिर छल-कपट करते हैं, जो मिलने वाला ही है उसमें छल-कपट करते हैं, ट्रिक्स अपनाते हैं। ट्रिक्स अपनाते हैं या नहीं? भगवान को कोई ट्रिक्स आती होंगी? भगवान ने क्या कहा है कि 'यह राजलक्ष्मी मुझे सपने में भी नहीं चाहिए।' क्योंकि राज जैसी संपत्ति होगी और उसके मालिक बनने जाएँ तो फिर मोक्ष में कैसे जाएँगे? इसलिए वह संपत्ति तो सपने में भी नहीं चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** मोक्ष में क्यों नहीं जाने देती है?

**दादाश्री :** मोक्ष में कैसे जाने देगी? ये चक्रवर्ती राजा, सारा चक्रवर्ती राज्य छोड़कर चले जाते थे, तब मोक्ष में जाते थे। वर्ना चित्त तो सब में लगा रहता है। क्या उस समय अक्रम विज्ञान था? क्रमिक मार्ग था। यह तो अक्रम विज्ञान है इसलिए आराम से ज्ञान का उपयोग करके सो जाते हैं फिर पूरी रात अंदर समाधि रहती है।

**प्रश्नकर्ता :** आपने कहा था न कि अच्छे कुटुंब में जन्म लिया हो तो सब लेकर ही आए होते हैं इसलिए ज़्यादा माथापच्ची करना रहा ही नहीं, ऐसा है न?

**दादाश्री :** हाँ, सब लेकर ही आते हैं लेकिन सिर्फ व्यवहार चले उतना ही, खुद का सब ठीक से चल सके इतना ही। जबकि करोड़पति तो कुछ ही होते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** चक्रवर्ती राजा भी तो अंत में मोक्ष जाने को ही ज्यादा इम्पॉर्टेन्स देते थे न! महत्वपूर्ण तो मोक्ष ही है। चक्रवर्ती बनने में सुख नहीं है न?

**दादाश्री :** महत्वपूर्ण मोक्ष ही है, ऐसा नहीं, वह चक्रवर्ती पद उन्हें इतना अधिक चुभता था कि मन में ऐसा होता था कि अब कहाँ भाग जाऊँ? इसलिए मोक्ष याद आता था। कितने अधिक पुण्यशाली हों तब चक्रवर्ती बनते हैं लेकिन भाव तो मोक्ष में जाने का ही रहता है। लेकिन सारा पुण्य तो भोगना ही पड़ेगा न!

### इच्छाएँ शेष की शेष क्यों?

**प्रश्नकर्ता :** इतने सारे जन्मों में सभी कुछ भोगा, राजेश्री हुए, फिर भी इच्छाएँ बाकी रह जाती हैं, उसका क्या कारण होगा?

**दादाश्री :** कभी भोगा है? ऐसा तो, सिर्फ दिखाई देता है, इतना ही है। जब सामने देखते हैं तब भोग नहीं पाते। हमें पावागढ़ कब तक अच्छा लगता है? जब हम तय करते हैं कि फलाँ दिन पावागढ़ जाना है तब से मन में पावागढ़ के लिए बहुत आकर्षण रहता है। लेकिन जब पावागढ़ जाते हैं और देखते हैं तब आकर्षण खत्म हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** यानी हमारा यह टेस्ट अभी तक नहीं हुआ है? लक्ष्मी भोगने या विषय भोगने का टेस्ट अभी तक पूरा नहीं हुआ है? क्या इसलिए आज उसके विचार आते हैं?

**दादाश्री :** ऐसा है, यदि पिछले जन्म में श्रीमंत का जन्म रहा हो, श्रीमंत मतलब स्त्री, लक्ष्मी, सभी कुछ हो फिर भी मन ऊब जाता है कि इसके बजाय तो कम झंझट हो और सादगी वाला जीवन हो

तो अच्छा होता। तब फिर सारे विचार भी वैसे ही होते हैं और फिर गरीबी में जन्म हुआ हो तो उसे लक्ष्मी और विषय इत्यादि याद आते रहते हैं, ऐसा माल भरा होता है।

### लक्ष्मी का बोझा 'हमें भी' था

हमें भी संसार में अच्छा नहीं लगता था। मैं, अपने बारे में बताऊँ न, तो मुझे किसी चीज़ में रुचि ही नहीं थी। पैसे दें तो भी बोझा लगता था। मेरे ही रुपये देते तो भी अंदर बोझा लगता था। ले जाते हुए भी बोझा लगता था और लाते हुए भी बोझा लगता था। ज्ञान होने से पहले हर बात में बोझा लगता था।

### आयुष्य का एक्स्टेंशन करवाया?

**प्रश्नकर्ता :** हमारी सोच ऐसी है कि व्यापार में इतने ओतप्रोत रहते हैं कि लक्ष्मी का मोह जाता ही नहीं है, उसी में डूबे हुए हैं।

**दादाश्री :** तब भी पूरी तरह से संतोष नहीं रहता न! जैसे कि पच्चीस लाख इकट्ठा कर लूँ, पचास लाख इकट्ठा कर लूँ, ऐसा रहा करता है न? ऐसा है। पच्चीस लाख तो मैं भी इकट्ठा करने में रहा होता लेकिन मैंने तो हिसाब लगाकर देखा कि क्या यहाँ आयुष्य का एक्स्टेंशन कर देते हैं? आयुष्य में एक्स्टेंशन नहीं होता है! तो फिर हम क्यों उपाधि करें? सौ के बदले हजार साल का जीवन हो जाता तब तो ठीक था कि मेहनत करने में कोई फायदा है लेकिन इसका तो कोई ठिकाना ही नहीं है।

### पैसा प्रधान क्यों?

**प्रश्नकर्ता :** अभी पैसा ही प्रधान है, ऐसा क्यों?

**दादाश्री :** जब व्यक्ति को किसी तरह की सूझ नहीं पड़ती तब मान लेता है कि पैसों से सुख मिलेगा। वह दृढ़ हो जाता है, उसे लगता है कि पैसों से विषय भी मिलेंगे, अन्य सभी कुछ मिलेगा। अब

इसमें उसका भी दोष नहीं है। पहले (पूर्व जन्म में) ऐसे कर्म किए थे, उनका फल मिलता रहता है।

### करते हो या इट हैपन्स?

**प्रश्नकर्ता :** कुछ तरह के लोग पैसे कमाकर सिक््युरिटी प्राप्त करने में व्यस्त रहते हैं और कुछ तरह के लोग सद्गुरु से ज्ञान प्राप्त करके, आत्म दृष्टि पाने की सिक््युरिटी में लीन रहते हैं। तो, साधक को ज्ञान समझने के लिए कौन सा उचित व्यवसाय करना चाहिए? ज्ञान की प्रगति के लिए क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** तब तो आपको जानना चाहिए कि सचमुच आप पैसे कमाते हो या 'इट हैपन्स' है? वह आपको पहले से ही समझना चाहिए।

यह सब आप करते हो या कोई करवाता है! आपको क्या लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** सब हम ही तो करते हैं न! कोई करवाता नहीं है।

**दादाश्री :** नहीं, कोई और करवाता है और आपके मन में भ्रांति है कि मैं करता हूँ। यह तो, रुपये किसी को देते हो, वह भी कोई करवाता है और नहीं देते, वह भी कोई करवाता है। बिज़नेस है, वह भी कोई करवाता है। नुकसान होता है, वह भी कोई करवाता है, फायदा होता है वह भी कोई करवाता है। आपको ऐसा लगता है कि, 'मैं करता हूँ', वह इगोइज़म है। वह कोई करवाता है, वह समझना पड़ेगा न? हम वह समझा देते हैं। ज्ञान देते हैं तब पूरा समझा देते हैं कि करता कौन है?

एक स्वसत्ता है, दूसरा परसत्ता है। स्वसत्ता, जिसमें खुद परमात्मा हो सकता है। जब पैसा कमाने की सत्ता आपके हाथ में नहीं है, परसत्ता में है तो पैसा कमाना अच्छा है या परमात्मा होना अच्छा है? पैसा कौन देता है यह मैं जानता हूँ। पैसा कमाने की सत्ता आपके

हाथ में होती न, तो झगड़ा करके भी, कहीं से भी ले आते लेकिन वह परसत्ता में है। इसलिए चाहे कुछ भी कर लो पर कुछ हो नहीं पाएगा। एक व्यक्ति ने पूछा कि लक्ष्मी किसके जैसी है? तब मैंने कहा, 'नींद' जैसी है। कुछ लोगों को सोते ही नींद आ जाती है, कुछ लोग तो पूरी रात करवटें बदलते रहते हैं फिर भी नींद नहीं आती और कुछ लोग तो सोने के लिए गोलियाँ खाते हैं। यानी यह जो लक्ष्मी है, वह आपकी सत्ता में नहीं है, वह परसत्ता में है और हमें परसत्ता के लिए उपाधि करने की क्या ज़रूरत है?

### वह तो नैमित्तिक है

इसीलिए हम आपसे कहते हैं कि चाहे कितनी भी माथापच्ची कर लो फिर भी पैसा मिले, ऐसा नहीं है। वह तो 'इट हैपन्स' है। हाँ, और आप उसमें निमित्त हो। कोर्ट में जाना-आना वह निमित्त है। आपके मुख से जो वाणी निकलती है, वह सब निमित्त है इसलिए आप इसमें बहुत ध्यान मत दो। अपने आप ध्यान चला ही जाएगा और उससे आपको अड़चन आए ऐसा नहीं है।

यह तो मन में ऐसा मान बैठे हैं कि नहीं, यदि मैं नहीं होऊँगा तो चलेगा ही नहीं। कोर्ट बंद हो जाएँगे, ऐसा मान बैठे हैं लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं है।

### संयोग ही कमाकर देते हैं

यह लक्ष्मी मिलना, वह भी कितने ही कारण इकट्ठे होते हैं तब वह लक्ष्मी मिले, ऐसा है। किसी डॉक्टर के पिता के गले में बलगम जमा हो जाए न, तब उस डॉक्टर से कहें कि इतने बड़े-बड़े ऑपरेशन करते हो तो यह बलगम निकाल दो न, तो कहेगा, 'नहीं। निकालने से पहले तो मर जाएँगे।' यानी इसमें ज़रा सा भी नहीं चलता है। सारे एविडेन्स इकट्ठे हो जाते हैं। मैं ज्ञानी हुआ वह तो साइन्टिफिक सरकमस्टेंशियल एविडेन्स के आधार पर है। ये लोग करोड़धिपति खुद से नहीं बन गए हैं लेकिन वे मन में मानते हैं कि 'मैं बना' इतनी



ही भ्रांति है और ज्ञानी पुरुष को भ्रांति नहीं होती। जैसा है वैसा बता देते हैं कि, 'भाई, ऐसा हुआ था। मैं सूरत के स्टेशन पर बैठा था और ऐसा हो गया।' वह मानता है कि, 'मैंने दो करोड़ कमाए और मैंने तीन पत्नियाँ कीं!' लेकिन यह सब तो आप लेकर आए हो। यह तो आपने मन में मान लिया है कि, 'नहीं, मैं करता हूँ' इतना ही है। इगोइज़म है और वह इगोइज़म क्या करता है? खुद के लिए अगले जन्म की योजना बना रहा है। जीव इस तरह इस जन्म के बाद अगले जन्म की योजना बनाता ही रहता है। इस प्रकार कभी भी जन्म रुकते ही नहीं। जब योजना बंद हो जाएगी तब उसकी मोक्ष जाने की तैयारी होगी।

### सुख किसमें?

एक भी जीव ऐसा नहीं है जो सुख न ढूँढ रहा हो! और वह भी हमेशा का सुख ढूँढता है। वह ऐसा मानता है कि लक्ष्मी में सुख है लेकिन उससे भी भीतर जलन होने लगती है। जलन हो और हमेशा का सुख मिले ऐसा कभी हो ही नहीं सकता। दोनों विरोधाभासी हैं, इसमें लक्ष्मी का दोष नहीं है। उसका खुद का ही दोष है।

यदि आपको एक करोड़ रुपये दें तो आप क्या करोगे?

**प्रश्नकर्ता :** वह भी फिर उपाधि ही है न?

**दादाश्री :** दें तो क्या करोगे? हमें कहना चाहिए कि आपको दुःख है तो मुझे क्यों दे रहे हो? मैं क्यों आपका दुःख लूँ? आप वापस ले जाओ।

पैसों से कितना आनंद होता है! आपको पाँच लाख रुपये मिले, तो पहले उसे देखकर आपको बहुत आनंद होगा, फिर मन में उपाधि होगी कि अब कहाँ रखूँगा? कौन से बैंक में रखूँगा? फिर रास्ते से कोई लूट न ले, उसके लिए तैयारियाँ रखनी पड़ती हैं। रास्ते में यदि कोई लूट ले तो? अर्थात् वह सब सुख कहलाएगा ही नहीं। लुट जाने का भय है न, लुट जाएँगे, उस चीज़ को सुख कह ही नहीं सकते।

जगत् की सारी चीजें अप्रिय लग सकती हैं और आत्मा तो खुद का स्वरूप है, वहाँ दुःख है ही नहीं। जगत् में तो पैसे देने वाला भी अप्रिय लगता है। कहाँ रखें, फिर उपाधि हो जाती है।

### जहाँ-जहाँ नज़र जाए, वहाँ-वहाँ दुःख

पैसे हों तब भी दुःख और पैसे ना हों तब भी दुःख, बड़े प्रधान बन जाए तब भी दुःख, गरीब हो तब भी दुःख। भिखारी हो तब भी दुःख, विधवा को दुःख, सधवा (सुहागन) को दुःख, सात पति वाली को भी दुःख। दुःख, दुःख और दुःख। अहमदाबाद के सेठों को भी दुःख। इसका क्या कारण होगा ?

**प्रश्नकर्ता :** उसे संतोष नहीं है।

**दादाश्री :** उसमें सुख था ही कब? इसमें सुख था ही नहीं। वह तो भ्रांति से लगता है। जैसे शराब पीया हुआ व्यक्ति हो, उसका एक हाथ गटर में पड़ा हो तो कहता है, हाँ अंदर टंडक लग रही है। बहुत अच्छा है, वह शराब के कारण लगता है। बाकी, उसमें सुख होता ही कहाँ है? वह सब तो सिर्फ जूठन ही है।

इस संसार में सुख है ही नहीं। सुख हो ही नहीं सकता। यदि सुख होता तब तो मुंबई ऐसा नहीं होता। सुख है ही नहीं। वह तो भ्रांति का सुख है और वह सिर्फ टेम्पेरी एडजस्टमेन्ट है।

धन का बोझ रखने जैसा नहीं है। बैंक में जमा हो तो आनंद होता है और जाए तो दुःख होता है। इस जगत् में कुछ भी आनंद लेने जैसा नहीं है क्योंकि टेम्पेरी है।

### खुद के पास कितनी जायजाद ?

लोगों को क्या दुःख रहता है? एक व्यक्ति ने मुझसे कहा कि बैंक में मेरे पास कुछ नहीं है। एकदम खाली हो गया हूँ, दिवालिया हूँ। मैंने पूछा, 'कितना कर्ज़ था?' उसने कहा, 'कर्ज़ नहीं था।' तो उसे दिवालिया नहीं कहेंगे। बैंक में हजार-दो हजार रुपये पड़े हैं।

फिर मैंने कहा, 'वाइफ तो है न?' उसने कहा, 'वाइफ को क्या कहीं बेच सकते हैं?' मैंने कहा, 'नहीं, पर तुम्हारे पास दो आँखें हैं, वह क्या तुम्हें दो लाख में बेचनी है?' ये आँखें, ये हाथ, पैर, दिमाग, इन सारी जायदाद की तुम कीमत तो निकालो। यदि बैंक में पैसा न भी हो तब भी तुम करोड़पति हो। कितनी सारी जायदाद है तुम्हारी। चल, वह बेच देते हैं! ये दो हाथ भी तुम नहीं बेचोगे। तुम्हारे पास अपार जायदाद है। इन सब को जायदाद समझकर तुम्हें संतोष रखना चाहिए। पैसे आएँ या न आएँ लेकिन समय पर खाना मिलना चाहिए।

### दुःख है ही कहाँ?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, हमारे आर्थिक संयोग बदल गए हैं उसका क्या?

**दादाश्री :** वे तो बदलते रहते हैं। दिन के बाद रात होती है न? ये तो, आज नौकरी न हो लेकिन कल नई मिल जाती है। दोनों बदल जाते हैं। कितनी बार तो आर्थिक कारण होते ही नहीं हैं लेकिन उसे लोभ रहता है। कल के लिए सब्ज़ी के पैसे हैं या नहीं, इतना ही देख लेना चाहिए। इससे ज़्यादा देखने की ज़रूरत नहीं है। अब बोलो, क्या तुम्हें ऐसा दुःख है?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** तो फिर उसे दुःख कहेंगे ही कैसे? यह तो बिना दुःख के, दुःख का रोना रोता रहता है। तब फिर उससे हार्ट अटैक आता है। *अजंपा* (बेचैनी, अशांति) रहता है उसे खुद दुःख मान लेता है। जिसका उपाय नहीं है, उसे दुःख कह ही नहीं सकते। जिनके उपाय हैं, उनके तो उपाय करने चाहिए लेकिन उपाय ही न हों, तो वह दुःख है ही नहीं।

### दादा का नाम लें, वहाँ पैसों का ढेर

**प्रश्नकर्ता :** जीवन में आर्थिक परिस्थिति कमज़ोर हो तब क्या करें?

**दादाश्री :** यदि एक साल बारिश न हो तो किसान क्या कहते हैं कि हमारी आर्थिक स्थिति खत्म हो गई। ऐसा कहते हैं या नहीं? फिर अगले साल बारिश हो जाए तब उनका सुधर जाता है। इसलिए जब आर्थिक स्थिति कमजोर हो तब धैर्य रखना चाहिए। खर्चे कम कर देने चाहिए और किसी भी तरह से मेहनत व प्रयत्न अधिक करने चाहिए। यानी कमजोर परिस्थिति हो तभी यह सब करना चाहिए, बाकी, परिस्थिति अच्छी हो तब तो गाड़ी अपने आप चलती रहती है। अभी बहुत कमजोर स्थिति है? क्या-क्या परेशानियाँ आती हैं?

**प्रश्नकर्ता :** कोई भी इच्छित चीज़ प्राप्त करनी हो तो देर लगती है।

**दादाश्री :** ओहो, इच्छित चीज़! लेकिन इस शरीर को कौन सी चीज़ें चाहिए, क्या तुम जानते हो?

**प्रश्नकर्ता :** वैसे तो भगवान की प्राप्ति ही मुख्य वस्तु है।

**दादाश्री :** यह शरीर भगवान की प्राप्ति के लिए है लेकिन उसकी ज़रूरतें क्या-क्या हैं? रात को थोड़ी सी खिचड़ी दे दी हो तो तुम्हें सारी रात ध्यान करने देता है या नहीं? यानी यह शरीर और कुछ नहीं माँगता, बाकी सब तो मन के तूफान हैं। दो टाइम खाना मिलता है या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** मिलता है।

**दादाश्री :** इस देह को जितनी ज़रूरत है, हमें उतनी ही खुराक देने की ज़रूरत है। उसे और कुछ नहीं चाहिए, फिर रोज़ त्रिमंत्र एक-एक घंटे बोलना न! यह बोलोगे तो आर्थिक परिस्थिति सुधर जाएगी। उसका उपाय करना चाहिए। उपाय करने से सुधर जाएगी। आपको यह उपाय अच्छा लगेगा?

यदि एक घंटे दादा भगवान का नाम लें तो पैसों के ढेर लग जाएँगे। लेकिन ऐसा करते नहीं हैं न? जबकि हज़ारों लोगों को पैसा

मिला है। हज़ारों लोगों की अड़चनें खत्म हो गईं! यदि दादा भगवान का नाम लें और पैसे न आएँ तब तो वे दादा नहीं हैं! लेकिन ये लोग वापस घर जाकर नाम नहीं लेते न!

### जहाँ अबव नॉर्मल, वहाँ कैसा सुख?

लक्ष्मी तो कैसी है? कमाने में दुःख, संभालने में दुःख, रक्षण करने में दुःख और खर्च करने में भी दुःख। घर में लाख रुपये आ जाएँ तो उन्हें संभालने की परेशानी हो जाएगी। कौन से बैंक में रखना सेफसाइड है, वह खोजना पड़ेगा। फिर यदि रिश्तेदारों को पता चले तो तुरंत दौड़ पड़ेंगे। सारे मित्र भी दौड़ पड़ेंगे, कहेंगे, 'अरे यार, मुझ पर इतना भी विश्वास नहीं है? सिर्फ दस हज़ार चाहिए।' फिर उसे मजबूरी में देने पड़ते हैं। पैसे इकट्ठे हों जाएँ तब भी दुःख और कम हो जाएँ तब भी दुःख। नॉर्मल हो तो ही अच्छा है, वर्ना फिर लक्ष्मी खर्च करने में भी दुःख होगा।

### लक्ष्मी खर्च करना आया?

हम लोगों को लक्ष्मी संभालनी भी नहीं आती है और खर्च करना भी नहीं आता है। खर्च करते समय कहते हैं कि, 'इतना महँगा है? इतना महँगा लेना चाहिए क्या?' अरे, चुपचाप ले न! लेकिन भोगते समय भी दुःख, काम करते समय भी दुःख। लोग परेशान कर रहे हों तब भी कमाना पड़ता है। कई लोग तो उधारी के पैसे नहीं लौटाते हैं। यानी कमाने में भी दुःख और संभालने में भी दुःख। संभालते रहने पर भी बैंक में बचते नहीं हैं न! बैंक के खाते का नाम ही क्रेडिट और डेबिट, पूरण (चार्ज होना, भरना) और ग्लन (डिस्चार्ज होना, खाली होना)। लक्ष्मी जाए तब भी बहुत दुःख देती है। क्या इतने महँगे आम लेने चाहिए? क्यों इतनी महँगी सब्जियाँ ली? अरे, तुम सभी चीजों को महँगा है, महँगा है, बोल रहे हो? महँगा किसे कहते हो? और सस्ता किसे कहते हो? यह तो एक तरह की बुरी आदत पड़ी होती है। उसकी दृष्टि ऐसी हो चुकी है, तो फिर क्या हो

सकता है? हम क्या कहते हैं कि, 'जो भी आया, जिस महँगे भाव से आया, वह सब करेक्ट ही है।' व्यवस्थित ही है लेकिन उसे समझ में नहीं आता न! उसकी दृष्टि में जो पहले से बैठ चुका है, वह छूटता नहीं है न!

### लिया रिटर्न टिकट, तिर्यच का

कुछ लोग तो इन्कम टैक्स पचाकर बैठे होते हैं। पच्चीस-पच्चीस लाख रुपये दबाकर बैठे होते हैं। लेकिन वे नहीं जानते कि सारे रुपये चले जाएँगे। फिर जब इन्कम टैक्स वाले नोटिस देंगे तब रुपये कहाँ से निकालेंगे? यह तो सिर्फ झंझट ही है। ये ऊँचे पहुँचे हुए को तो बहुत खतरा है लेकिन वे जानते ही नहीं हैं न! बल्कि दिन भर किस तरह से इन्कम टैक्स बचाऊँ, वही ध्यान में रहता है इसीलिए तो हम कहते हैं न, कि ये तिर्यच की रिटर्न टिकट लेकर आए हैं।

ये तो लक्ष्मी जी की ओर ही ध्यान देते हैं, दूसरी ओर नहीं देखते हैं इसीलिए अपने संस्कार बिक गए हैं, गिरवी रख दिए हैं। इसे जीवन जीना कैसे कह सकते हैं? हम हिन्दुस्तान की आर्य प्रजा कहलाते हैं। आर्य प्रजा में ऐसा शोभा नहीं देता! आर्य प्रजा में तीन चीजें होती हैं : आर्य आचार, आर्य विचार और आर्य उच्चार (वाणी)। अब लोग तीनों में ही अनाड़ी हो गए हैं और मन में क्या मान बैठे हैं कि समकित हो गया है और मोक्ष हो जाने वाला है। अरे, तुम जो कर रहे हो उससे तो लाख अवतारों में भी ठिकाना नहीं पड़ेगा। मोक्षमार्ग ऐसा नहीं है।

### कमाता कौन है? भोगता कौन है?

जहाँ अंतरशांति नहीं है, वहाँ क्या सुख होगा? वैसा चाहे कितना भी करें लेकिन अंतरशांति नहीं होगी। उसकी बाहर से चाहे जितनी चमक-दमक दिखाई दे। आपको ऐसा लगेगा कि यह तो बहुत सुखी है लेकिन वह बहुत दुःखी होता है, क्योंकि उसे अंतरशांति नहीं होती है। हम अंतरशांति को सुख कहते हैं। बड़े-बड़े, दस-दस लाख के

फ्लैट होते हैं लेकिन आप अंदर जाओ तो श्मशान जैसा लगेगा। उसे सुख कह ही कैसे सकते हैं? क्योंकि अंतरशांति नहीं है। बंगले में अंतरशांति किसे-किसे होती है? एक रसोइये को, दूसरा नौकरों को होती है। हट्टे-कट्टे होते हैं, जो खाते-पीते और मौज करते हैं और सेठ को तो जुकाम हो गया हो तो कैसे खाएँगे। घर में फल आते ज़रूर हैं लेकिन कोई खा नहीं पाते और वे सब नौकर खाते हैं। तो ऐसे तगड़े हो जाते हैं! मैंने देखा है, तब लगा कि धन्य भाग्य कहा जाएगा न! इन रसोइयों के और नौकरों के भी पुण्य जागे हैं न!

### मनुष्यपन किसमें बर्बाद किया?

मनुष्यपन की एक मिनट की कीमत तो इतनी ज़्यादा है कि बताई नहीं जा सकती। यह बात हिन्दुस्तान के मनुष्यों के लिए है। हिन्दुस्तान के मनुष्यों को क्यों अलग रखा है क्योंकि इन लोगों की बिलीफ में पुनर्जन्म आ चुका है। हिन्दुस्तान के अलावा बाहर के लोगों की बिलीफ में पुनर्जन्म नहीं आया है इसलिए हिन्दुस्तान के मनुष्यों की एक मिनट की भी बहुत कीमत है लेकिन वह तो बेकार में खर्च हो जाता है। दिन भर बेहोशी में बेकार में खर्च हो जाते हैं। क्या आपका कोई क्षण व्यर्थ गया है?

**प्रश्नकर्ता :** बहुत व्यर्थ गए हैं।

**दादाश्री :** अच्छा? तो कितने काम में आए? किस काम में आए?

### अधिक संपत्ति, अधिक उलझनें

लोग दिन भर उलझनों में उलझे रहते हैं। साधु-सन्यासी, सभी उलझे रहते हैं, बड़े राजा हों या वकील लेकिन वे भी उसमें उलझे रहते हैं। जिनके पास संपत्ति कम हो वे भी उलझे रहते हैं और ज़्यादा संपत्ति हो तो ज़्यादा उलझे रहते हैं। सारा संसार उलझनों वाला है। इन उलझनों में से कैसे निकलें? इस बारे में सवाल पूछकर जवाब प्राप्त करना चाहिए और आपको इन उलझनों में से निकलने का रास्ता ढूँढना

चाहिए। जो उलझनों से निकल चुके हों वे ही आपको उलझनों से निकाल सकते हैं। वर्ना, जो उलझनों से निकला ही न हो वह आपको उलझनों में ही डालेगा न! क्या आपको कभी उलझनों से निकलने की इच्छा होती है?

यदि पैसों का बिस्तर बनाए तब भी नींद नहीं आती और उससे कोई सुख नहीं मिलता। चाहे जितने भी पैसे हों फिर भी दुःख। यानी दुःख, दुःख और दुःख ही है। जब जन्म लेते हैं, तब एक तरफ के रिश्तेदार, फादर, मदर और शादी करते हैं तब सास, ससुर, दादी सास, मौसी सास, वे सब मिल जाते हैं। उलझनें कम थीं जो और बढ़ा लीं!

### बैंक में कितने जमा हुए?

**दादाश्री :** आप धोराजी से यहाँ कोलकाता किसलिए आए?

**प्रश्नकर्ता :** जीवन-निर्वाह के लिए।

**दादाश्री :** जीवन-निर्वाह तो सभी जीव कर ही रहे हैं। कुत्ते, बिल्लियाँ, सभी अपने-अपने गाँव में रहकर जीवन-निर्वाह करते हैं। मथुरा के जो बंदर हैं न, वे भी वहीं के वहीं, किसी से भी चने लेकर अपना निर्वाह करते ही हैं, वे दूसरे गाँव नहीं जाते हैं, मथुरा में ही रहते हैं जबकि हम लोग सभी जगह जाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** लोभदृष्टि है न, इसलिए।

**दादाश्री :** हाँ! वह लोभ परेशान करता है, निर्वाह परेशान नहीं करता। यह निर्वाह परेशान करे, ऐसा है ही नहीं। निर्वाह तो, वह जहाँ होगा वहाँ उसे मिलेगा ही। मनुष्यपन, वह तो एक महान सिद्धि है। उसे हर एक चीज़ मिल आएगी लेकिन लोभ के कारण भटकता रहता है। 'इधर से लूँ या उधर से लूँ, इसमें से लूँ या उसमें से लूँ' करता रहता है। यहाँ कोलकाता तक आने के बाद भी कोई ऐसा नहीं कहता, 'मैं संतुष्ट हो चुका हूँ!'

**प्रश्नकर्ता :** संतोष हो तो फिर दुःख किस बात का?



**दादाश्री :** नहीं-नहीं, संतोष की बात नहीं है। यहाँ तक कमाने आए थे। अब कमाने के बाद कोई यह नहीं कहता कि 'मेरे पास पाँच अरब हो गए हैं, अब मुझे कोई ज़रूरत नहीं है। मुझे ऐसा कहने वाला कोई नहीं मिला। पाँच अरब नहीं लेकिन एक अरब हो गए हैं कोई ऐसा बोले तो मैं कहता कि भाई कोलकाता आए, उसके लिए शाबाश! बैंक में आपके पास कितने हैं? क्या लगभग पचास लाख रुपये हैं?

**प्रश्नकर्ता :** क्या बात करें साहब?

**दादाश्री :** क्या कह रहे हो सेठ? धोराजी से यहाँ आए तब भी बैंक में कुछ नहीं है? देखो, शर्मिदा होने जैसा हुआ। वहाँ से यहाँ आकर बल्कि फँस गए, न यहाँ के रहे न वहाँ के रहे!

भगवान की भाषा में संपत्ति किसे कहते हैं? जो संपत्ति गुणाकार वाली हो उसे! गुणाकार वाली संपत्ति साथ जाती है और खुद को संतोष भी रहता है। जो संपत्ति भागाकार वाली होती है, उसे भगवान ने संपत्ति नहीं माना है। भागाकार वाली संपत्ति तो यहीं खत्म हो जाती है और उसकी संपत्ति भी जाती है। जब संपत्ति में शांति नहीं है तब विपत्ति में शांति कहाँ से होगी? विपत्ति-संपत्ति में सुख नहीं है, निष्पत्ति में सुख है। अब मुझे पैसों की ज़रूरत नहीं है, कोई ऐसा नहीं कहता न? कोई संतुष्ट नहीं है? क्या जौहरियों को संतोष होगा? जौहरियों को भी संतोष नहीं है?

### धन हो, तभी नाथालाल?

**प्रश्नकर्ता :** यदि पैसे न हों तो वे लोग नॉनसेन्स में गिने जाएँगे न? और पैसे हों तो फिर पैसे कि खुमारी रहती है न?

**दादाश्री :** पैसे के बिना तो नॉनसेन्स में ही गिना जाएगा। अक्ल वाला होगा तो भी कहेंगे, 'ए, घर में मत घुसना!' अक्ल वालों का चलता नहीं है न! नॉनसेन्स में गिना जाता है! और फिर सेन्सिबल। सेन्स वाला इससे ऊपर आउट सेन्स और हम 'आउट ऑफ सेन्स' कहलाते हैं। हम में सेन्स नहीं है, थोड़ी सी भी बुद्धि नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** पैसों के बिना तो हमें कोई पूछता ही नहीं। पैसे न हों तो हमें कोई कुछ पूछता भी नहीं है और कोई बात भी नहीं करता।

**दादाश्री :** मेरे पास चार आने भी नहीं हैं। मेरी जेब में देख लो, फिर भी सब मुझे पूछते हैं।

जब आपको पैसों की जरूरत नहीं होगी न, तब आपके पास बहुत पैसा होगा। ये तो जब तक मन भिखारी है कि, 'मेरे पास पच्चीस हजार रुपये हैं', तब तक वह उसी में लीन (मग्न) रहता है। अरे, वह तुझे क्या दे देगा? और क्या लगभग दस लाख रुपये इकट्ठे कर लिए हैं? तब फिर कितने इकट्ठे कर लिए हैं?

### अंधा बुने और चबाए कौन?

ऐसा है न, लोग बचपन से पैसे कमाने में लगे रहते हैं लेकिन बैंक में देखने जाएँ तो कहेंगे कि 'दो हजार ही पड़े हैं!' जबकि दिन भर, हाय-हाय, हाय-हाय, दिन भर कलह, क्लेश और झगड़े। अब, अनंत शक्ति है। आप जैसा सोचो न, तो वैसा ही बाहर हो जाए, इतनी ज्यादा शक्ति है। लेकिन यहाँ तो सोचना तो क्या, मेहनत करके करने जाते हैं तब भी बाहर वैसा नहीं होता। अब बताओ, मनुष्यों में कितनी कमजोरी आ गई है!

अंधा बुने और बछड़ा चबाए उसे कहते हैं संसार। अंधा रस्सी बुनता जाता है, आगे-आगे बुनता जाता है और पीछे रस्सी पड़ी होती है, जिसे वह बछड़ा चबाते जाता है। इसी तरह सारी अज्ञान क्रियाएँ बेकार जाती हैं बल्कि मरने के बाद अगला जन्म बिगाड़ता है, जिससे मनुष्यपन भी नहीं मिलता! अंधे को लगता है कि, 'ओहो, पचास फीट रस्सी बन गई', और जब लेने जाए तब कहेगा कि 'यह क्या हो गया? अरे, वह बछड़ा सब चबा गया!'

पूरी दुनिया की मेहनत घानी पेरने में व्यर्थ जा रही है। वह बैल को खली देता है जबकि यहाँ बीवी हांडवे का टुकड़ा देती है। फिर चला! पूरे दिन बैल की तरह घानी पेरता रहता है।

## पहले को ही इनाम और बाकी को?

मुंबई शहर में रात-दिन, पैसों के बारे में कौन नहीं सोचता होगा? सफेद और भगवे कपड़े वाले कुछ ही साधु ऐसे हैं कि जो पैसे नहीं लेते, पैसों को छूते भी नहीं हैं।

**प्रश्नकर्ता :** जिनके पास है, वे ज्यादा पाने के लिए और जिनके पास नहीं है, वे पाने के लिए क्यों बेचैन रहते हैं?

**दादाश्री :** यहाँ क्या पाने की बात है?

**प्रश्नकर्ता :** ये आर्थिक बात है, भौतिक बात है। जिन्हें भौतिक मिला हुआ है उन्हें ज्यादा पाने के लिए बेचैनी रहती है और जिन्हें नहीं मिला है उन्हें पाने के लिए व्यग्रता रहती है, ऐसा क्यों होता है?

**दादाश्री :** लोगों को रेसकोर्स में उतरना है। रेसकोर्स में जो घोड़े दौड़ते हैं, उनमें से कौन से घोड़े को इनाम मिलता है?

**प्रश्नकर्ता :** पहले घोड़े को।

**दादाश्री :** आपके गाँव में कौन सा घोड़ा पहले नंबर पर है? जो रेसकोर्स में पहला आया हो उसमें किसका नाम है? यानी सभी घोड़े दौड़ते रहते हैं और हाँफ-हाँफकर मर जाते हैं लेकिन पहला नंबर किसी का भी नहीं लगता है। इस दुनिया में किसी का भी पहला नंबर नहीं आया है। बेकार ही दौड़ में पड़े हैं फिर हाँफ-हाँफकर मर जाते हैं और इनाम तो किसी एक को ही मिलना है। यानी इस दौड़ में पड़ने जैसा नहीं है। हमें अपने आप, शांतिपूर्वक काम करते रहना चाहिए। अपने सभी फर्ज निभाने हैं लेकिन इस रेसकोर्स में पड़ने जैसा नहीं है। क्या आपको इस रेसकोर्स में उतरना है?

**प्रश्नकर्ता :** इस जीवन में आए हैं तो रेसकोर्स में उतरना ही पड़ेगा न?

**दादाश्री :** तो दौड़ो, कौन मना करता है? जितना दौड़ सकते

हो उतना दौड़ो लेकिन हम आपसे कह देते हैं कि फर्ज अच्छी तरह और शांतिपूर्वक निभाना। हमें रात को ग्यारह बजे सभी जगह जाँच कर लेना चाहिए कि सब लोग सो गए हैं या नहीं? और जब पता चले कि सब लोग सो गए हैं तब हमें भी दौड़ना बंद कर देना चाहिए और ओढ़कर सो जाना चाहिए। लोग सो गए हों और हम अकेले बेकार ही भागदौड़ करें, वह कैसा? वह क्या है? लोभ नाम का गुण है, जो परेशान करता है।

### जीना-मरना भी अनिवार्य

जिंदगी भर जैसे शकरकंद भट्टी में भुनता है न, वैसे ही ये मनुष्य भी भुन रहे हैं।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, तपते हुए ही जी रहे हैं।

**दादाश्री :** न जीएँ तो क्या करें? वे कहाँ जाएँ? जीना भी तो अनिवार्य है, और मरने की सत्ता भी किसी के हाथ में नहीं है। जब मरने जाएँगे तब पता चलेगा। पुलिस वाला पकड़कर केस कर देगा। जैसे जेल में गए हुए व्यक्ति को अनिवार्य रूप से सब काम करने पड़ते हैं न, वैसे ही यह जीना भी अनिवार्य है और पैसे भी अनिवार्य हैं।

इसलिए, क्या लक्ष्मी की हाय-हाय करनी चाहिए? और उनकी हाय-हाय करके कोई तृप्त हुआ है? क्या ऐसा लगता है कि दुनिया में किसी का भी पहला नंबर आया हो? क्या मुंबई की म्युनिसिपालिटी में किसी का नाम लिखा हुआ है कि यह फर्स्ट नंबर पर आया है और यह सेकन्ड नंबर पर? क्या ऐसे नाम लिखे हुए हैं? ये तो जन्म लेते हैं, करोड़ों रुपये कमाते हैं और फिर मर जाते हैं। कुत्ते की मौत मरते हैं! कुत्ते की मौत क्यों कहता हूँ कि डॉक्टरों के पास जाना पड़ता है। पहले तो लोग मनुष्य की मौत मरते थे। वे क्या कहते थे कि 'भाई, अब मेरे जाने का टाइम आ गया है', तब फिर घर के लोग दिया जलाते थे और अभी तो अंतिम समय में बेहोश हो जाते हैं। कुत्ते भी मरते समय बेहोश नहीं होते!

आजकल तो मनुष्य, मनुष्य ही नहीं रहा न! और इनकी मौत तो देखो! कुत्तों की तरह मरते हैं। अणहक्क (बिना हक्क का, अवैध) के विषय भोगते हैं, यह उसका फल है। बुद्धि विपरीत हो गई है इसीलिए जिनके पास लक्ष्मी है उन्हें भी अनंत दुःख हैं। सम्यक् बुद्धि सुखी करती है।

अहमदाबाद के सेठों के पास दो-दो मिलें हैं फिर भी उनके अंदर की बेचैनी तो ऐसी है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। दो-दो मिलें होने के बावजूद भी, वे कब फेल हो जाएँ, कहा नहीं जा सकता। वैसे तो स्कूल में अच्छी तरह पास हुए थे पर यहाँ आकर फेल हो जाते हैं क्योंकि उन्होंने बेस्ट फूलिशनेस की शुरुआत कर दी है। डिस्ऑनेस्टी इज़ दी बेस्ट फूलिशनेस! फूलिशनेस की तो कोई हद होती होगी न कि बेस्ट तक पहुँचना है? वे आज बेस्ट फूलिशनेस तक पहुँच गए हैं!

### ‘दादा’ का गणित

मैंने तो पैसों का हिसाब निकाला। मैंने सोचा, ‘हम पैसा बढ़ाते रहें तो कहाँ तक बढ़ेगा?’ फिर हिसाब लगाया कि इस दुनिया में किसी का पहला नंबर नहीं आया है। लोग कहते हैं कि ‘फोर्ड का पहला नंबर है’ लेकिन चार साल बाद किसी दूसरे का नाम सुनने को मिलता है। यानी, किसी का भी नंबर टिकता नहीं है, बेकार ही दौड़-भाग करते रहें, इसका क्या अर्थ है? पहले घोड़े पर इनाम होता है, दूसरे पर थोड़ा देते हैं और तीसरे को भी देते हैं। चौथे को तो ज्ञाग निकाल-निकालकर मर जाना है? मैंने कहा, ‘मैं क्यों इस रेसकोर्स में उतरूँ?’ ये लोग तो चौथा, पाँचवाँ, बारहवाँ और सौवाँ नंबर देंगे न? फिर, हम क्यों बेकार मेहनत करें? क्या फिर ज्ञाग नहीं निकलेगा? पहला आने के लिए दौड़े और आए बारहवें, फिर तो चाय भी नहीं पिलाते हैं। आपको क्या लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** सही है।

**दादाश्री** : अर्थात् यह सारा गणित कर दिया था। दादा का गणित! बहुत सुंदर गणित है। यह मैथमैटिक्स इतना ज्यादा सुंदर है। वह एक साहब तो कहते थे कि दादा का यह गणित तो जानने जैसा है।

दौड़, दौड़, दौड़, पर किसलिए? नंबर लगने वाला हो तो चलो चलते हैं! देह का जो होना होगा, वह होगा लेकिन यह तो नंबर भी नहीं और इनाम भी नहीं, कुछ भी नहीं और झाग ही झाग। किसी और जगह नहीं घिसा (दिया), इसी में दौड़, दौड़, दौड़! बल्कि सब जगह से नीरस हो गया, खाने में भी कोई रुचि नहीं रही!

क्या यह गणित सीखने जैसा नहीं लगता?

**प्रश्नकर्ता** : आप जिस तरह से बता रहे हैं, वह कुछ वर्णन करने जैसा भी नहीं है। ऐसा ही हो गया है।

**दादाश्री** : यानी ये तो अनुभव की बात बता रहा हूँ न! मुझे जो अनुभव हुआ है वही!

### ज्ञानी, रेसकोर्स से दूर...

शादी में ऐसा होता था कि हमारे भतीजे हैं, उनके वहाँ शादी हो तो, क्योंकि वे भतीजे होते हैं न, इसलिए वे चाचा को आगे बिठाते, बीच में। मतलब, चाचा का दूसरा, तीसरा नंबर तो होता ही और चाचा बैठते भी थे। फिर झवेरचंद, लक्ष्मीचंद आते तब, 'आइए, आइए, पधारिए' कहते तब उन्हें बीच में बिठाकर हमें खिसक जाना होता था। इस तरह से खिसक-खिसककर आठवें नंबर पर पहुँचते। मैंने कहा, यह तो अपमान की जगह हो गई, यह मान की जगह नहीं है। फिर तो मैं जब भी जाता था न, तब आगे की जगह का ध्यान नहीं रखता था। वे लोग दूँढते थे कि चाचा कहाँ गए? चाचा कहाँ गए? और चाचा उस तरफ चाय पीते रहते थे। वे चले जाते तब फिर आकर दूर बैठकर देखता रहता था। हम चाय पीते जाते और कौन सा घोड़ा पहला आता है, वह देखते रहते थे।

तब हमारे भतीजे कहते, 'चाचा यहाँ नहीं बैठते, यह तो खराब

लगता है न!' मैंने कहा, 'भाई, यह रेसकोर्स मुझे पसंद नहीं आता, मुझसे दौड़ा नहीं जाता।' मेरी कमर टूट गई है इसलिए दौड़ा नहीं जाता। तब कहता, 'इसे तो आपकी शरारत कहेंगे, ऐसा मजाक करना तो मुझे भी आता है।' मैंने कहा, 'मेरा तो जो है वह ऐसा ही है।' ऐसे खिसक-खिसक कर सात फेरे तक फाउंडेशन के साथ खींचना होता! इसलिए फिर देखने की आदत हो गई। वहाँ शादी में जाने पर तो देखने की, ज्ञाता-द्रष्टा रहने की आदत हो गई थी। ज्ञान नहीं हुआ था। ऐसे ही ज्ञाता-द्रष्टा, व्यवहारिक ज्ञाता-द्रष्टा!

### घुड़दौड़ के घोड़े की दशा

जैन धर्म के संघ के एक प्रेसिडेंट थे। वे उनके मंदिरों के प्रेसिडेंट थे। वैसे तो अच्छे व्यक्ति थे। बड़े वकील थे। वे शादी में आए तब 'आइए, आइए चंदूभाई, आइए' कहकर उन्हें बिठाया। फिर जौहरी लक्ष्मीचंद आए, तो 'आइए, आइए' कहकर उन्हें इस तरह बिठाया कि चंदूभाई को खिसकना पड़ा। पूरी सीट के साथ खिसकना पड़ा। यों दो-चार सीट खिसकना पड़ा न तो मुँह लटक गया था। पहली बार खिसके तो थोड़ा लटका, दूसरी बार ज़रा ज़्यादा, तीसरी और चौथी बार तो पूरा लटक गया था, मैं वह देख रहा था। मैंने कहा, 'इस बेचारे की क्या दशा हो गई! अरेरे... यहाँ फर्स्ट क्लास बाजे बज रहे हैं, ये लोग शरबत पी रहे हैं और यहाँ, इनकी कैसी दशा हो गई है? वे मन ही मन सोच रहे थे। ये समझदार नहीं हैं लेकिन बोलना चाहते थे फिर भी बोल नहीं पा रहे थे और शरबत में भी स्वाद नहीं आ रहा था। मधुर बाजे बज रहे थे। कितने अच्छे-अच्छे लोग हैं लेकिन चेहरा देखने में आनंद नहीं आ रहा। मुझे देखने में आनंद आ रहा था कि ये कैसे फँस गए हैं! फिर वे खड़े हो गए, तब मैं उनके पास पहुँच गया। मैंने कहा, 'चंदूभाई साहब कैसे हैं...' तब उन्होंने कहा, 'आप पटेल लोगों का काम बहुत खराब...'। मैंने कहा, 'मैं वैसा नहीं हूँ'। फिर मुझे कहने लगे, 'वे आए, वे आए, उन सभी को आगे बिठाए जा रहे हैं, वे ऐसा नहीं समझते कि ये कौन है, वे कौन है?'

ऐसा समझना चाहिए न! मैंने कहा, 'उनमें समझ नहीं है न! तब वे थोड़े खुश हो गए। कहा, 'चलो, चाय-वगैरह पीकर जाओ।' लेकिन फिर भी आगे की सीट नहीं छोड़ना चाहते हैं। फिर भी मन में ऐसा नहीं होता है कि हम दूसरी बार सचेत हो जाएँ। यहाँ तो इस रेसकोर्स में नंबर नहीं लगने वाला और बेकार में ही हाँफते रहना है। न तो घर में रुचि रही, न ही चाय-पानी में रुचि रही। सिर्फ यही रुचि!

मैंने पुस्तक में लिखा है कि, ब्रह्मांड में ऐसी कोई चीज़ बाकी नहीं है, जिस पर मैंने विचार न किया हो। क्या ऐसा होना चाहिए? हाँफ-हाँफकर मर गए फिर भी अभी तक सीट नहीं छोड़ते, स्वादिष्ट खाने-पीने को होता है। फिर भी किसी चीज़ में रस ही नहीं आता न!

यह बात ज़रा अनुभव में आए, ऐसी है न?

**प्रश्नकर्ता :** बहुत ही अच्छा मज़ा आया।

**दादाश्री :** जब आप व्यवहारिक बातें समझ जाओगे न, तब व्यवहार पक्का हो जाएगा। आदर्श हो गया मतलब, ऑल राइट हो गया।

### वास्तव में ज़रूरत किसकी?

**प्रश्नकर्ता :** लक्ष्मी न हो तो साधन नहीं होगा और साधन के लिए लक्ष्मी की ज़रूरत है इसलिए यदि हम बिना लक्ष्मी, साधन के ज्ञान लेने की ठानें तो कब मिलेगा? यानी क्या ऐसा नहीं लगता कि लक्ष्मी, ज्ञान की पाठशाला में जाने के लिए पहला साधन है?

**दादाश्री :** नहीं। लक्ष्मी बिल्कुल भी साधन नहीं है। ज्ञान के लिए तो नहीं है बल्कि ये तो किसी भी तरह से साधन है ही नहीं। यदि दुनिया में ऐसी कोई चीज़ है जिसकी ज़रूरत नहीं है तो वह है, लक्ष्मी। भ्रांति और नासमझी से मान लेने के कारण उसकी ज़रूरत लगती है। किस चीज़ की ज़रूरत है? सब से पहले, हवा की ज़रूरत है। यदि हवा न हो तो तुम कहोगे न कि हवा की ज़रूरत है क्योंकि हवा के बिना मर जाते हैं। किसी को लक्ष्मी के बिना मरते हुए नहीं



देखा गया है। जो ऐसा कहते हैं कि लक्ष्मी ज़रूरी साधन है यह तो सारी मेडनेस है क्योंकि दो मिल के मालिकों को भी लक्ष्मी चाहिए, एक मिल वाले को भी लक्ष्मी चाहिए, मिल के सेक्रेटरी को भी लक्ष्मी चाहिए और मिल के मज़दूरों को भी लक्ष्मी चाहिए। तो फिर इनमें सुखी कौन है? विधवा भी रोती है, सुहागन भी रोती है और सात पतियों वाली भी रोती है। विधवा रोए तो हम समझ सकते हैं कि उसका पति मर गया है, लेकिन ये तो सुहागन है, तू क्यों रो रही है? तब वह कहती है, 'मेरा पति निठल्ला है' और सात पतियों वाली तो मुँह ही नहीं खोलती है, ऐसा ही लक्ष्मी के बारे में है। लक्ष्मी के पीछे क्यों पड़े हो? ऐसे कहाँ फँस गए आप?

### पैसों की प्राप्ति में पुरुषार्थ कहाँ?

**प्रश्नकर्ता :** हमारे पास पुण्य की लक्ष्मी आने वाली है या नहीं उसके लिए कुछ सहज पुरुषार्थ तो होना चाहिए न?

**दादाश्री :** पुण्य की लक्ष्मी के लिए कैसा पुरुषार्थ होता है? यों सरल और सीधा पुरुषार्थ होता है। यह तो जो सरल और सीधा है, नासमझी से उसे हम कठिन बना देते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** जब हमें ऐसा लगे कि यह सरल और सीधा नहीं बल्कि कठिन है तब फिर क्या उसे छोड़ देना चाहिए? हमें जब ऐसा लगे कि हमारा पुण्य इतना नहीं है कि लक्ष्मी सरल रास्ते से आए, तब फिर क्या वहाँ हमें सहज हो जाना चाहिए?

**दादाश्री :** नहीं-नहीं, धीरज रखोगे तो अपने आप ही सब सरल हो जाता है लेकिन यह तो धीरज नहीं रहता है और दौड़-भाग करते रहते हैं और सब बिगाड़ देते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** धीरज नहीं रहता है और, 'ऐसा कर लूँ, वैसा कर लूँ', ऐसा हो जाता है।

**दादाश्री :** हाँ, 'ऐसा कर लूँ, वैसा कर लूँ', उससे सब उलझ

जाता है। जब ट्रेन पकड़नी हो तब भी उसे धीरज नहीं रहता। क्या उस समय आराम से चाय पीता है? नहीं, वह तो गाड़ी अभी आ जाएगी, गाड़ी अभी आ जाएगी, उसी में रहता है। उसे कहें कि 'भाई, ज़रा यहाँ आओ, बातचीत करनी है' फिर भी वह नहीं सुनता, उसी तरह धीरज रखे बिना, 'ऐसे कर लूँ, वैसे कर लूँ' करता है। फिर इस तरह क्लेश और थकान का अनुभव करता है।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा है, व्यवसाय में अपने सिर पर स्वाभाविक तौर पर कुछ तलवारें लटकती रहती हैं कि इन्कम टैक्स देना है, सेल्स टैक्स देना है, पेमेंट बढ़ाना है, इस दबाव के कारण बेकार ही कोशिश करता रहता है कि ऐसा कर लूँ, वैसे कर लूँ!

**दादाश्री :** फिर भी कुछ नहीं हो पाता, बेकार कोशिश करने वाले को तो वैसे ही भटकते रहना है।

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् आपने बताया वैसे धीरज रखें तो क्या अपने आप व्यवस्था हो जाएगी?

**दादाश्री :** धीरज से ही सबकुछ होता है। शांति रखने पर सब मिलता है। वह घर बैठे हमें बुलाने आएँगे और ऐसा भी नहीं कि बाज़ार में ढूँढना पड़ेगा। बाकी तो, मेहनत करके मर जाए, बुद्धि लगाकर मर जाए, फिर भी आज चार आने नहीं मिलते और ऐसे वह अकेला कहाँ पीछे पड़ा है? पूरी दुनिया ही लक्ष्मी के पीछे पड़ी है।

### क्या श्मशान में पैसे ढूँढने चाहिए?

पैसों के पीछे ही पड़े हैं कि कहाँ से पैसे लाएँ, कहाँ से पैसे लाएँ। अरे, श्मशान में क्यों पैसे ढूँढ रहे हो? यह संसार तो श्मशान जैसा हो गया है। प्रेम जैसा तो कुछ दिखाई नहीं देता। पैसे जिस तरह आने वाले हैं वह रास्ता कुदरती है, 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' है। हमें उसके पीछे पड़ने की क्या ज़रूरत है? यदि वही हमें मुक्त करे तो बहुत अच्छा है न!

लक्ष्मी 'लिमिटेड' है और लोगों की माँगें 'अन्लिमिटेड' हैं।

## पैसे आना, पसीने के बराबर

किसी में विषय की गांठ पड़ी होती है, किसी में मान की गांठ पड़ी होती है, ऐसी तरह-तरह की गांठें पड़ी हुई होती हैं। किसी में, 'कहाँ से कमाऊँ, कहाँ से कमाऊँ', ऐसी गांठ पड़ी हुई होती है। यानी कि इस तरह पैसों की गांठ पड़ी हुई होती है, सुबह उठते तब से पैसों का ध्यान रहा करता है। वह भी बड़ी गांठ कहलाती है।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन पैसों के बिना चलता नहीं है न!

**दादाश्री :** चलता नहीं है, लेकिन लोग यह नहीं जानते हैं कि पैसा कैसे आता है और उसके पीछे भाग दौड़ करते हैं। पैसे तो पसीने की तरह आते हैं। जैसे किसी को पसीना ज़्यादा आता है और किसी को कम आता है। जैसे पसीना आए बिना नहीं रहता है उसी तरह से लोगों के पास पैसा आता ही है।

हम में तो मूल में ही पैसों की गांठ नहीं थी। हम बाईस साल के थे तब से व्यवसाय कर रहे थे। फिर भी हमारे घर जो भी आते थे, उन्हें हमारे व्यवसाय की बात पता ही नहीं होती थी। बल्कि हम उनसे पूछते कि आप किस मुश्किल में हैं?

## क्या चाहिए जगत् को?

**दादाश्री :** क्या आपको रात-दिन लक्ष्मी के सपने आते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** सपने तो नहीं आते लेकिन उस सपने की इच्छा ज़रूर रखता हूँ।

**दादाश्री :** फिर तो कोई मुश्किल हो और आपसे सौ रुपये माँगने आए, तब आपकी क्या दशा होगी? अरे बाप रे, कम हो जाएँगे तो? ऐसा हो जाता है? कम होने के लिए ही तो हैं रुपये, इन्हें कोई साथ नहीं ले जाता। यदि साथ ले जाने होते न, तो ये वणिक लोग तो बहुत अक्लमंद हैं लेकिन अपनी जाति में पूछकर देख लो क्या कोई ले गया है? मुझे लगता है कि वे अंटी में बाँधकर ले जाते होंगे।

यदि पैसे साथ ले जाने होते तब तो हम उसका ध्यान भी करते, लेकिन वे साथ नहीं ले जाने हैं न?

**प्रश्नकर्ता** : तो फिर लोगों की वृत्ति पैसे पाने की ओर क्यों रहती होगी ?

**दादाश्री** : लोगों को देख-देखकर ऐसा करते रहते हैं। उसने ऐसा किया और मैं रह गया, उसे ऐसा लगता रहता है। इसके अलावा उसके मन में ऐसा है कि, 'पैसा होगा तो सब मिलेगा। पैसों से सब मिलता है।' लेकिन वह दूसरा नियम नहीं जानता कि पैसा किस आधार पर आता है। जैसे शरीर तंदुरस्त हो तब नींद आती है वैसे ही मन की तंदुरस्ती हो तो लक्ष्मी जी आती हैं।

**प्रश्नकर्ता** : फिर भी अभी तो किसी को मोक्ष नहीं चाहिए, सिर्फ पैसे ही चाहिए।

**दादाश्री** : इसीलिए तो भगवान ने कहा है न, कि ये जानवर की मौत मरते हैं। जैसे कुत्ते, गधे, आदि जानवर मरते हैं न, वैसे ही ये मनुष्य मर जाते हैं, बेमौत मरते हैं। हाय पैसा, हाय पैसा! करते-करते मरते हैं!

### भजना, भगवान की या पैसों की?

पैसे तो, याद आना, वह भी बड़ा जोखिम है, फिर पैसों की भजना करनी वह तो कितना ज्यादा जोखिम होगा? मैं क्या कहना चाहता हूँ, वह आपको समझ में आता है?

**प्रश्नकर्ता** : वह तो समझ में आया लेकिन इसमें क्या जोखिम है, वह समझ में नहीं आया। इसमें तो तुरंत ही, तात्कालिक लाभ होता है न! पैसे हों तो सभी चीजें मिल जाती हैं। ठाठ-बाट, मोटर, बंगला, सबकुछ प्राप्त होते हैं न?

**दादाश्री** : लेकिन क्या कोई पैसे की भजना करता है?

**प्रश्नकर्ता** : यही तो करते हैं न?

**दादाश्री** : फिर तो ऐसा हो गया न, कि महावीर की भजना बंद हो गई और यह भजना शुरू हो गई? मनुष्य एक ही जगह भजना कर सकता है, पैसे की या फिर आत्मा की। मनुष्य दो जगह पर उपयोग नहीं रख सकता। दो जगहों पर उपयोग कैसे रहेगा? एक ही जगह पर उपयोग रह सकता है, तो अब क्या करें? लेकिन इतना अच्छा है कि अब लोगों को पैसे साथ ले जाने की छूट मिली है। यह अच्छा है न?

**प्रश्नकर्ता** : पैसे कहाँ साथ ले जा सकते हैं? सब यहीं पर तो छोड़कर जाते हैं, कुछ साथ नहीं आता।

**दादाश्री** : अच्छा? लेकिन लोग तो साथ ले जाते हैं न! नहीं, आपको वह कला नहीं आती! ब्लड प्रेशर वाले से पूछो कि वह कला कैसी है? वह आप नहीं जानते।

### यदि साथ ले जा पाते, तो?

एक सेठ मिले थे। वैसे तो लखपति थे। मुझे से पंद्रह साल बड़े थे लेकिन मेरे साथ उठते-बैठते थे। एक दिन मैंने उन सेठ से कहा 'सेठ, ये बच्चे, कोट-पतलून पहनकर घूमते हैं और आप इतनी सी धोती और वह भी दोनों घुटने खुले दिखते हैं, ऐसा क्यों पहनते हो?' जब वे सेठ मंदिर में दर्शन करने जाते न, तब ऐसे खुले दिखाई देते थे। इतनी सी धोती, ऐसा लगता कि लंगोट बाँधकर जा रहे हैं। इतनी सी बंडी और सफेद टोपी, वे दर्शन करने दौड़ते हुए जाते। मैंने कहा कि 'मुझे लगता है कि यह सब साथ ले जाओगे?' तब मुझे कहने लगे कि 'नहीं ले जा सकते, अंबालाल भाई। साथ नहीं ले जा सकते!' मैंने कहा कि 'आप तो अक्लमंद हैं, हम पटेलों को तो समझ नहीं है। आप तो अक्लमंद जाति वाले, कुछ खोज निकाला होगा?' तो कहने लगे 'नहीं, कोई भी नहीं ले जा सकता।' फिर उनके बेटे से पूछा कि 'पिता जी तो ऐसा कह रहे थे!' तब उसने कहा कि 'वह तो अच्छा है कि साथ नहीं ले जा सकते। यदि साथ ले जा सकते न,

तो मेरे पिता जी ऐसे हैं कि तीन लाख का कर्ज हमारे लिए छोड़कर जाते! मेरे पिता जी तो बड़े पक्के हैं। नहीं ले जा सकते वही अच्छा है, वरना पिता जी तो तीन लाख का कर्ज छोड़कर हमें भटकने के लिए छोड़ दें। मेरे पास तो पहनने के लिए कोट-पतलून भी नहीं रहते। यदि साथ ले जा पाते न, तो हमें निपटा देते, ऐसे पक्के हैं!’

**प्रश्नकर्ता :** कर्ज लेकर भी ले जाते?

**दादाश्री :** पैसा कर्ज लेकर भी साथ ले जाते पर देखो वह कह रहा है न, कि ‘नहीं ले जा सकते यही अच्छा है वरना मेरे पिता जी तो तीन लाख का कर्ज छोड़कर जाएँ, ऐसे हैं!’

### कौन सा कर्मबंध दो नंबर के पैसों से?

**प्रश्नकर्ता :** मुंबई के सेठ दो नंबर के पैसे जमा करते हैं, उसका क्या इफेक्ट होता है?

**दादाश्री :** उससे कर्म का बंध पड़ता है। वे तो दो नंबर के और एक नंबर के होते हैं। खरे-खोटे, सभी पैसे कर्म का बंध पड़वाते हैं। वैसे भी कर्म का बंध तो पड़ता है, जब तक आत्मज्ञान नहीं होता तब तक कर्म का बंध पड़ता है। दो नंबर के पैसों से खराब बंध पड़ते हैं। उससे जानवर की गति में जाना पड़ता है, पशुयोनि में जाना पड़ता है।

### संतोष कैसे रहे?

**प्रश्नकर्ता :** लोग तो पैसों के पीछे पड़े हैं, संतोष क्यों नहीं रखते?

**दादाश्री :** यदि हम से कोई कहे कि संतोष रखो तो हमें कहना चाहिए कि भाई, आप क्यों नहीं रखते? और मुझसे कह रहे हो? वस्तुस्थिति में संतोष, रखने से रह पाए, ऐसा नहीं है। उसमें भी किसी के कहने पर रहे, ऐसा नहीं है। संतोष तो, स्वाभाविक रूप से अपने आप जितना ज्ञान हो उस हिसाब से रहता ही है। संतोष करने जैसी चीज नहीं है। वह तो परिणाम है। जैसी आपने परीक्षा दी होगी वैसा ही परिणाम आएगा। उसी तरह जितना ज्ञान होगा उतना संतोष रहेगा।

संतोष रहे इसीलिए तो ये लोग इतनी मेहनत करते हैं! देखो न, संडास में भी दो काम करते हैं। दाढ़ी बनाना और शौच, दोनों करते हैं। इतना ज्यादा लोभ होता है। यह सब इंडियन पज़ल कहलाते हैं इसीलिए तो इंडियन पज़ल कहा है न!

### एट ए टाइम, दो काम

वकील लोग तो अंदर शौचालय में बैठकर दाढ़ी बनाते हैं और मुझसे इनकी वाइफ कह रही थीं कि मेरे साथ कभी बात नहीं करते हैं। तब वे कितने एकांतिक हो गए हैं! एक ही ओर, यही कोना, और फिर दौड़-भाग होती है न! जब लक्ष्मी आए न, तब वहाँ खर्च कर आते हैं! लो, यहाँ गाय को दुह कर वहाँ गधे को पिला देते हैं!

### है क्या कभी लोभ का अंत?

ये कलियुग में पैसों का लोभ करके अपना जन्म बिगाड़ रहे हैं। मनुष्यपन में आर्तध्यान-रौद्रध्यान होता रहता है, जिससे मनुष्यत्व चला जाता है। बड़े-बड़े राजपाट भोग-भोगकर आए हुए हैं। ये कोई बिल्कुल भिखारी नहीं थे लेकिन अभी मन भिखारी जैसा हो गया है इसलिए यह चाहिए और वह चाहिए, होता रहता है। वर्ना जिसका मन संतुष्ट हो चुका हो न उसे कुछ भी न दें फिर भी राजश्री होगा। पैसा ऐसी चीज़ है जो मनुष्य की दृष्टि लोभ की ओर करवा देता है। लक्ष्मी तो बैर बढ़ाने वाली चीज़ है। उससे जितना दूर रह सकें उतना उत्तम और यदि खर्च करना हो तो अच्छे काम में करो तो अच्छी बात है।

लेकिन पैसा 'व्यवस्थित' के अधीन है। चाहे धर्म में रहो या अधर्म में, फिर भी पैसा तो आता ही रहेगा।

### क्या उसका चिंतवन करना चाहिए?

पैसा तो जितना आना होगा उतना ही आएगा। धर्म में रहेगा तब भी उतना आएगा और अधर्म में रहेगा तब भी उतना ही आएगा। लेकिन यदि अधर्म में पड़ेगा तो दुरुपयोग होगा और दुःखी होगा। धर्म में

सदुपयोग होगा तो सुखी होगा और बल्कि मोक्ष में जा सकेगा। बाकी, पैसा तो उतना ही आना है।

पैसों के लिए सोचना एक बुरी आदत है। वह कैसी बुरी आदत है कि यदि एक व्यक्ति को बहुत तेज़ बुखार आया हो तो उसे भाप देकर उसका बुखार उतारते हैं। भाप देने से उसे बहुत ज्यादा पसीना आएगा। इस तरह फिर रोज़ भाप देकर पसीना निकालते रहें तो उसकी क्या दशा होगी? वह समझता है कि इस तरह एक दिन मुझे बहुत फायदा हुआ था, मेरा शरीर हल्का हो गया था तो अब यह रोज़ की आदत बना लेनी है। रोज़ भाप ले और पसीना निकालते रहे तो क्या होगा?

**प्रश्नकर्ता :** शरीर में से पूरा पानी निकल जाएगा।

**दादाश्री :** फिर वह लकड़ी जैसा हो जाएगा। जैसे प्याज़ को सुखाते हैं न? इसी तरह, लक्ष्मी का चिंतवन करना भी उसके जैसा ही है। जैसे यह पसीना हिसाब से ही निकलता है, उसी तरह लक्ष्मी भी हिसाब से ही आती रहती है। आपको तो अपना काम करते रहना है। काम में असावधान नहीं रहना है। लक्ष्मी तो आती ही रहेगी। लक्ष्मी के बारे में सोचना नहीं है कि, 'इतनी आना और उतनी आना' या 'आए तो अच्छा', ऐसा मत सोचना। उससे तो लक्ष्मी जी बहुत चिढ़ जाती हैं। मुझे लक्ष्मी जी रोज़ मिलती हैं तब मैं उनसे पूछता हूँ कि 'पैसों, आप क्यों रूठे हो?' तब लक्ष्मी जी कहती हैं कि 'अब ये लोग ऐसे हो गए हैं कि, 'आपको मेरे यहाँ से जाना नहीं है', ऐसा कहते हैं।' तो क्या, लक्ष्मी जी अपने मायके न जाएँ? क्या लक्ष्मी जी को घर में रोककर रखना चाहिए?

### घर बिगड़ें, उसका क्या?

जिस तरह हाथ में मैल जमता रहता है, उसी तरह लक्ष्मी जी भी हर एक के हाथ में हिसाब के अनुसार आती ही रहती हैं। जो लोभांध हो जाता है उसकी सारी दिशाएँ बंद हो जाती हैं। उसे और



कुछ भी नहीं दिखाई देता। एक सेठ का चित्त तो दिन भर धंधे में और पैसे कमाने में था और उसके घर के बेटे-बेटियाँ कॉलेज के बजाय कहीं और जाते थे तो सेठ कहीं उन्हें देखने जाते हैं? अरे, तुम कमाते रहते हो और इधर घर तो बिगड़ रहा है! हम तो साफ-साफ उसके हित की बात कह देते हैं।

### ‘आवन-जावन’, हिसाब से ही

लक्ष्मी तो हाथ का मैल है, वह तो नैचुरल आने वाली है। आपको इस साल पाँच हजार सात सौ पाँच रुपये और तीन आने का हिसाब में होगा न, वह हिसाब के बाहर कभी जाता नहीं है और फिर भी जो अधिक आता हुआ दिखाई देता है, वह तो बुलबुले के समान फूट भी जाता है लेकिन जितना हिसाब है उतना ही रहेगा। आधी पतीली दूध हो और नीचे लकड़ी जलाकर, दूध की पतीली ऊपर रख दें तो क्या दूध पूरी पतीली जितना हो जाएगा न? उफनने से पूरी पतीली भर जाती है लेकिन क्या वह भरा हुआ टिकता है? वह उफना हुआ टिकता नहीं है। यानी जितना हिसाब होगा उतनी ही लक्ष्मी रहेगी। यानी लक्ष्मी तो अपने आप आती ही रहती है। मैं ‘ज्ञानी’ हुआ हूँ, हमें सांसारिक विचार ही नहीं आते, फिर भी लक्ष्मी आती रहती है न! आपके पास भी अपने आप आती है, लेकिन आप काम करने के लिए बाध्य हो। आपके लिए अनिवार्य क्या है? वर्क है।

### क्या लक्ष्मी के ध्यान में रहना चाहिए?

लक्ष्मी, वह तो बाइ प्रोडक्ट है। जिस तरह, हमारा हाथ ठीक रहेगा या पाँव ठीक रहेगा, क्या उसके बारे में रात-दिन सोचना पड़ता है? नहीं, क्यों? क्या हाथ-पाँव की हमें ज़रूरत नहीं है? है, लेकिन उस बारे में सोचना नहीं पड़ता। उसी तरह, लक्ष्मी के बारे में नहीं सोचना चाहिए। हमारा हाथ यहाँ दुःख रहा हो तो उसे ठीक करने जितना ही सोचना पड़ता है। ऐसा कभी सोचना पड़े वह सिर्फ उस समय के लिए ही। बाद में सोचना ही नहीं है, दूसरे झंझट में नहीं

पड़ना है। क्या लक्ष्मी के स्वतंत्र ध्यान में डूबना चाहिए? एक ओर लक्ष्मी का ध्यान हो तो दूसरी ओर अन्य ध्यान चूक जाते हैं। स्वतंत्र ध्यान तो लक्ष्मी का ही नहीं बल्कि स्त्री का भी ध्यान नहीं करना चाहिए। स्त्री का ध्यान करोगे तो स्त्री जैसे हो जाओगे! लक्ष्मी के ध्यान में रहोगे तो चंचल हो जाओगे। लक्ष्मी भी घूमती रहती है और वह भी घूमता रहता है। लक्ष्मी तो बड़ा रौद्रध्यान है, वह आर्तध्यान नहीं है, रौद्रध्यान है क्योंकि खुद के घर खाने-पीने का है, सब है, लेकिन अभी भी लक्ष्मी जी की ओर अधिक आशा रखता है। यानी उतनी किसी और के वहाँ कमी हो जाती है। दूसरों के वहाँ कमी हो जाए उतना प्रमाण भंग मत करो। वर्ना आप गुनहगार हो। अपने आप सहज रूप से आए तो उसके लिए आप गुनहगार नहीं हो। सहज रूप से तो पाँच लाख आएँ या पचास लाख आएँ लेकिन आने के बाद फिर लक्ष्मी को रोककर नहीं रखना चाहिए। लक्ष्मी तो क्या कहती है? हमें रोकना नहीं चाहिए, जितनी आई उतनी लौटा दो।

### याद करने पर वहाँ से वह भागे

एक भाई यहाँ आए थे। उन बेचारे को व्यापार में हर महीने नुकसान हो रहा था तो पैसों के लिए बेचैन रहते थे। मैंने उनसे पूछा, 'पैसों की बात क्यों करते हो? पैसों को याद करना बंद कर दो', और तब से उनके पैसे बढ़ने लगे। फिर हर महीने तीस हजार रुपयों का मुनाफ़ा होने लगा। वर्ना पहले तो बीस हजार रुपयों का नुकसान होता था। तो क्या पैसों को याद करना चाहिए? लक्ष्मी जी तो भगवान की पत्नी कहलाती हैं। क्या उनका नाम लेना चाहिए?

पैसों के अंतराय कब तक होते हैं? जब तक कमाने की इच्छा हो, तब तक। पैसों की ओर लक्ष्य हटे तो वह ढेर सारा आएगा।

खाने की ज़रूरत नहीं है? संडास जाने की ज़रूरत नहीं है? वैसे ही लक्ष्मी की भी ज़रूरत है। जैसे संडास याद किए बिना आती है वैसे ही लक्ष्मी भी याद किए बिना आ जाती हैं।

## वे आती हैं या लानी पड़ती हैं?

पैसे जमा करने की इच्छा है लेकिन पैसे कैसे आते हैं वह पता नहीं है। एक व्यक्ति ने पूछा 'दादा, लक्ष्मी कैसे आती है?' मैंने कहा, 'जैसे नींद आती है वैसे।' हाँ, कितने ही लोगों को तो नींद बिल्कुल ही नहीं आती है न? तो वैसे ही, वहाँ रुपये भी नहीं दिखते। रुपये और नींद, ये दोनों सिमिली (उपमा) हैं। जैसे नींद आती है न, उसी तरह लक्ष्मी आती है। नींद लाने के लिए आपको कुछ करना नहीं पड़ता और यदि प्रयत्न करोगे तो और भी दूर जाएगी। नींद लाने के लिए प्रयत्न करोगे तो दूर जाएगी। आज करके देख लेना न!

मुंबई शहर में सब दुःखी हैं क्योंकि जो पाँच लाख पाने की पात्रता रखते हैं, वे करोड़ का सिक्का लगाकर बैठे हैं और जो हज़ार पाने की पात्रता रखते हैं, वे लाख का सिक्का लगाकर बैठे हैं।

## ज़िंदगी की ज़रूरतों की सीमा क्या?

ये तो चिंता करते हैं, वह भी पड़ोसियों को देखकर। पड़ोसी के घर में गाड़ी है और अपने घर में नहीं! अरे, जीवन निर्वाह के लिए कितना चाहिए? तुम एक बार तय कर लो कि, 'इतनी-इतनी मेरी ज़रूरतें हैं।' जैसे कि घर में खाने-पीने का पर्याप्त होना चाहिए। रहने के लिए घर चाहिए। घर चल सके उतनी लक्ष्मी चाहिए। उतना तो आपको मिल ही जाएगा लेकिन पड़ोसी ने बैंक में दस हज़ार रखे हों, तो आपको अंदर चुभता रहता है। उसी से तो दुःख खड़े होते हैं। दुःख को तो खुद ही आमंत्रण देते हैं। एक ज़मींदार मेरे पास आए मुझसे पूछने लगे कि 'जीवन निर्वाह के लिए कितना चाहिए?' मेरे पास हज़ार बीघा जमीन है, बंगला है, दो मोटर कार हैं और अच्छा बैंक बैलेन्स भी है तो मुझे कितना रखना चाहिए?' तब मैंने कहा, 'देखो भाई, हर एक की ज़रूरतें कितनी होनी चाहिए इसका हिसाब उसके जन्म के समय कितना वैभव था उस आधार पर सारी ज़िंदगी का स्तर आप तय करो। दरअसल, यही नियम है। ये सब तो एक्सेस में जाता है और एक्सेस तो ज़हर है, मर जाओगे!'

## चिंता हो, वहाँ लक्ष्मी टिकेगी?

**प्रश्नकर्ता :** यदि ऐसा हो तो फिर लोग कमाने ही नहीं जाएँगे और चिंता ही नहीं करेंगे।

**दादाश्री :** नहीं, कमाने जाते हैं, वह भी उनके हाथ में नहीं है न! ये तो लट्टू हैं। ये सब नेचर के घुमाने से घूमते हैं और बोलकर अहंकार करते हैं कि मैं कमाने गया था और बेकार में चिंता करते हैं। फिर वह भी देखा-देखी से कि फलाना भाई तो देखो न, बेटी की शादी करवाने की कितनी चिंता करता है और मैं चिंता नहीं करता। फिर चिंता ही चिंता में खरबूजे जैसा हो जाता है और बेटी की शादी के समय हाथ में चार आने भी नहीं होते। चिंता करने वाला रुपये कहाँ से लाएगा? लक्ष्मी जी का स्वभाव कैसा है? जो आनंदी हो, उसके वहाँ लक्ष्मी जी निवास करती हैं। बाकी, चिंता करने वाले के वहाँ निवास नहीं करती। जो आनंदी होते हैं, जो भगवान को याद करते हैं, लक्ष्मी जी उनके वहाँ जाती हैं।

## क्या सस्ता? क्या महँगा?

**प्रश्नकर्ता :** अभी तो पैसा सस्ता हो गया है।

**दादाश्री :** पैसा सस्ता हो गया है। पैसा सस्ता हो तो इंसान सस्ता हो जाता है। पैसा महँगा हो तब इंसान महँगा हो जाता है। इंसान की कीमत कहाँ तक है? पैसा महँगा हो वहाँ तक। पैसा सस्ता हो जाए तो व्यक्ति की कीमत कम हो जाती है! तब फिर बाल कटवाना भी महँगा हो जाता है।

सन् 1942 से गवर्नमेन्ट ने जिस दिन पहली बार एक रुपये का नोट निकाला था, 'विदाउट प्रोमिस टु पे' वाला नोट, तभी से यह पैसा रद्दी होने लगा था।

## दो रुपयों में बादशाही देखी थी

जब लक्ष्मी की कीमत बढ़ जाती है तब उसके साथ ही इंसान

की कीमत भी बढ़ जाती है। जब लक्ष्मी की कीमत बढ़ जाती है तब रुपया, रुपये जैसा फल देता है। उस समय लोग अच्छे होंगे। अभी तो यह रुपया फल ही नहीं दे रहा है न! वर्ना, उस समय तो हमारा कॉन्ट्रैक्ट का काम था, तब हम दो रुपये लेकर निकलते थे। सिर्फ दो रुपये जेब में होते थे तो दिन भर सात दोस्त पीछे-पीछे घूमते रहते थे! चाय पिलाते, तांगे में, बग्घी में बिठाते। पूरे दिन सब साथ-साथ घूमते रहते थे, दो ही रुपयों में! और अब तो, सौ में भी पूरा नहीं होता। वैसा आनंद नहीं मिलता। अब तो वैसे घोड़े ही देखने को नहीं मिलते न! हम जैसे तांगे में बैठे थे न! वैसे घोड़े देखने को नहीं मिलते, घोड़े ऐसे दिखते थे, राजश्री जैसे दिखते थे! अब तो सब गया।

**प्रश्नकर्ता :** वह जमाना गया।

**दादाश्री :** लेकिन फिर से आएगा!

### अनोखा हिसाब

**प्रश्नकर्ता :** हमें आज ऐसा लगता है कि अपनी प्रजा कितना ज्यादा रुपये खर्च करती है और हमारे जमाने में बाजरा एक रुपये मन (20 kg) था और अब?

**दादाश्री :** बात सही है। ऐसा है न, मैं आपको सही बात बताता हूँ। वह हकीकत जानने जैसी है कि यदि इतनी महँगाई हो जाए तो 'पब्लिक' को खाने-पीने का, कुछ भी न मिले। तब फिर मैंने ज्ञान से देखा कि 'यह क्या है? सामान्य लोग किस तरह तेल खरीदकर खाते हैं? इतनी महँगी चीजें वे किस तरह खाते होंगे?' वह पूरा हिसाब निकाला। अंत में ज्ञान से देखा तब पता चला कि वहाँ पर रुपयों का झंझट नहीं है। कितना घी, कितना तेल, कितना दूध, इन सब का हिसाब आपके साथ 'जाइन्ट' होता है, इसीलिए ये सब चीजें मिलती हैं। वर्ना, यह तो किसी को नहीं मिलता, श्रीमंतों (अमीरों) को भी नहीं मिलता।

## हिसाब किससे बंधते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** यह जो लौकिक व्यवहार हुआ, क्या वह विज्ञान का ही परिणाम है?

**दादाश्री :** कौन सा व्यवहार?

**प्रश्नकर्ता :** हमारा किसी से लेना-देना, घटना-बढ़ना।

**दादाश्री :** वह हिसाब ही है। विज्ञान यानी यह तो हिसाब ही है यानी डिस्चार्ज के रूप में रखा हुआ है। उसी हिसाब से सब आता है। यह कोई रुपये का लेन-देन नहीं है कि रुपये लेकर हम...। ऋणानुबंध रुपयों का नहीं होता है। उसका भाव है कि मुझे ऐसे पिता मिलें तो अच्छा। यानी, ऐसे पिता नहीं चाहिए लेकिन ऐसे विचारों वाले पिता मिलें, ऐसे विचारों वाले बच्चे मिलें, तो वैसा हो जाता है। बस, और कुछ नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** यानी बुद्धि के आशय के अनुसार मिलता है।

**दादाश्री :** हाँ, सब मिलता है। बाकी, रुपयों का लेन-देन जैसा यहाँ कुछ नहीं है। सिर्फ राग-द्वेष के अधीन है। राग-द्वेष हैं, यानी ऐसे आशय वाले चार लोग हों, उनमें राग-द्वेष किसके साथ है, उससे है यह। उसके साथ जाइन्ट हो जाता है। दूसरा बिना राग-द्वेष वाला हो तो नहीं चलेगा। हिसाब से ही है यानी कुदरती तौर पर ही होता है। सब नैचुरल, इसमें किसी को कुछ भी करने के लिए आना नहीं पड़ता है।

## सेठ-नौकर मिले, किस आधार पर?

यह सब पुण्य चलाता है। तुम्हें दस हजार वेतन कौन देता है? वेतन देने वाला तुम्हारा सेठ भी पुण्य के अधीन है। यदि पाप घेर लें तो कर्मचारी सेठ को भी मारते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** सेठ ने भाव किया होगा, इसे नौकरी में रखना है

और इसने भाव किया होगा कि वहाँ नौकरी करनी है, इसलिए वे मिल गए?

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा भाव नहीं होता।

**प्रश्नकर्ता :** तो क्या वह लेन-देन होगा?

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** फिर उसके पास नौकरी करने क्यों गया?

**दादाश्री :** नहीं, यह सब तो उसका हिसाब है। सेठ की और उसकी जान-पहचान भी नहीं है। सेठ की बुद्धि के आशय में ऐसा हो कि मुझे ऐसे नौकर चाहिए और नौकर की बुद्धि के आशय में हो कि मुझे ऐसे सेठ चाहिए। यानी बुद्धि के आशय में छपा हुआ होता है वैसा मिल ही जाता है।

### इसमें दोष किसका निकालना?

सेठ इनाम दें, वह हमारा व्यवस्थित है और यदि हमारा व्यवस्थित उल्टा आए तो सेठ के मन में होगा कि इस बार इसका वेतन काट लेना चाहिए, इसलिए सेठ वेतन काट लेता है। तब उसके मन में ऐसा होता है कि यह सेठ 'नालायक' है। ऐसा नालायक मुझे मिला लेकिन इंसान को ऐसा हिसाब करना नहीं आता कि यदि ये नालायक थे तो फिर इनाम क्यों देते थे! यानी कहीं भूल है। सेठ 'टेढ़ा' नहीं है, यह तो हमारा 'व्यवस्थित' बदलता है।

### पुण्य कैसे बढ़ता है?

यानी यह जो पुण्य है न, वह हम जैसी माँग करते हैं न, उसमें बँट जाता है। कोई कहेगा, 'मुझे इतनी शराब चाहिए, यह चाहिए, वह चाहिए', तो उसमें बँट जाता है। कोई कहेगा, 'मुझे मोटर और घर चाहिए', फिर कहता है, 'दो रूम होगा तो चलेगा'। दो रूम के घर में उसे संतोष होता है और मोटर चलाने को मिलती है।

क्या इन छोटी-छोटी झोंपड़ियों में रहने वाले सभी लोगों को संतोष रहता होगा? वास्तविक संतोष, इसलिए तो उन्हें वैसा घर अच्छा लगता है, वैसा हो तभी अच्छा लगता है। अभी उस आदिवासी को अपने यहाँ बुलाकर देखो! चार दिन रखो तो उन्हें यहाँ चैन नहीं मिलेगा क्योंकि उसकी बुद्धि का आशय है न, तो उस हिसाब से पुण्य का डिविजन होता है। टेन्डर के अनुसार आइटम मिलता है।

### वह 'साइन्स' क्या होगा?

हर एक व्यक्ति को अपने घर में आनंद आता है। झोंपड़ी वाले को बंगले में आनंद नहीं आता और बंगले वाले को झोंपड़ी में आनंद नहीं आता। इसका कारण उनकी बुद्धि का आशय है। बुद्धि के आशय में जो जैसा लेकर आया है उसे वैसा ही मिलता है। बुद्धि के आशय में जो भरा हुआ हो उसके दो हिस्से होते हैं: (1) पापफल और (2) पुण्यफल। बुद्धि के आशय का हर एक ने विभाजन किया तो सौ प्रतिशत में से अधिकतर मोटर, बंगले, बेटे-बेटियाँ और पत्नी इन सब के लिए भरा तो वह सब प्राप्त करने में सारा पुण्य खर्च हो गया और धर्म के लिए मुश्किल से एक या दो प्रतिशत ही बुद्धि के आशय में भरे हैं।

दो चोर चोरी करते हैं, उनमें से एक पकड़ा जाता है और दूसरा आराम से छूट जाता है। यह क्या दर्शाता है? चोरी करनी है, ऐसा दोनों चोर अपनी-अपनी बुद्धि के आशय में लेकर आए थे। लेकिन उनमें से जो पकड़ा गया यह उसका पापफल उदय में आया और खर्च हुआ। जबकि दूसरा छूट गया, उसका पुण्य उसमें खर्च हो गया। उसी तरह हर एक के बुद्धि के आशय में जो होता है, उसमें पाप और पुण्य काम करते हैं। बुद्धि के आशय में लक्ष्मी प्राप्त करनी है, ऐसा भरकर लाया हो तो उसका पुण्य खर्च हुआ और ढेर सारी लक्ष्मी मिलती है। दूसरा, बुद्धि के आशय में इतना तो भरकर लाया है कि लक्ष्मी प्राप्त करनी है लेकिन उसमें पुण्य खर्च होने के बजाय पापफल सामने आया तो लक्ष्मी जी मुँह ही नहीं दिखाती। अरे, यह तो इतना साफ-सुथरा



हिसाब है कि किसी का कुछ भी चले ऐसा नहीं है। जबकि ये अकर्मि लोग ऐसा मान लेते हैं कि मैंने दस लाख रुपये कमाए। अरे, यह तो पुण्य खर्च हुआ और वह भी उल्टे रास्ते पर। इसके बजाय तो अपनी बुद्धि का आशय बदलो। धर्म के लिए ही बुद्धि का आशय करने जैसा है। ये जड़ वस्तुएँ, मोटर, बंगला, रेडियो, इन सब की भजना करके उन्हीं के लिए बुद्धि का आशय करने जैसा नहीं है। धर्म के लिए ही-आत्मधर्म के लिए ही बुद्धि का आशय रखो। अभी आपको जो प्राप्त हुआ है वह भले ही हो, लेकिन अब तो आशय बदलकर संपूर्ण सौ प्रतिशत, सिर्फ धर्म के लिए ही रखो।

हम अपनी बुद्धि के आशय में सौ प्रतिशत धर्म और जगत् कल्याण की भावना लाए हैं। हमारा पुण्य और कहीं भी खर्च ही नहीं हुआ। पैसे, मोटर, बंगला, बेटा, बेटी, कहीं भी नहीं।

हम से जो भी मिले और ज्ञान ले गए, उन्होंने दो-पाँच प्रतिशत धर्म के लिए, मुक्ति के लिए रखे थे इसलिए हम मिले। हमने पूरे सौ प्रतिशत धर्म में डाले, इसलिए सभी जगह से हमें धर्म के लिए 'नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट' मिला है।

### इच्छाएँ बनी कैसे?

यह सब आपका ही है। इसमें कोई करने वाला नहीं है, ये सब आपकी इच्छा के अनुसार ही विभाजित हुआ है। इच्छा के अनुसार होता रहता है। पहले जो इच्छा थी, आपकी वह इच्छा नौवें माइल पर थी। अब यह जगत् प्रवाह के रूप में है। अब इच्छा नौवें माइल पर की थी और उस इच्छा को भोगने का समय बारहवें माइल पर आया, तब उस समय आप में बदलाव आ जाता है कि, 'यहाँ तो ऐसा चाहिए था!' इच्छा की थी नौवें माइल पर और आया बारहवें माइल पर! नौवें माइल के आधार पर क्या इच्छा की थी? घूस-रिश्वत कुछ भी नहीं लेना चाहिए। रिश्वत लेने जैसा कोई तरीका चाहिए ही नहीं। गलत काम करना ही नहीं चाहिए। अब नौवें माइल पर उस समय वैसे संयोग

थे। अब बारहवें माइल पर ऐसे संयोग होते हैं कि जब सब रिश्तत लेते हैं और हम अकेले ही ऐसे हैं, जो रिश्तत नहीं लेते। तब पत्नी कहती है, 'सब ने बंगले बनवा लिए हैं, आप में कोई बरकत नहीं है'। अब बेचारा रिश्तत लेने जाए तो भी रिश्तत ले नहीं पाता, क्योंकि वैसी प्रकृति बन चुकी है और मन में भाव करता रहता है कि, 'लेनी चाहिए, लेनी चाहिए', तो फिर अगले जन्म में चोर बनता है। ये जगत् ऐसा है सारा और पूरा समझे बिना बहुत मार खाता है।

### वहाँ टेन्डर कहाँ रहा?

**प्रश्नकर्ता :** पुण्य-पाप के ही अधीन होता है तो फिर टेन्डर भरने का कहाँ रहा?

**दादाश्री :** ये टेन्डर भरा जाता है वह पाप-पुण्य के उदय के हिसाब से ही भरा जाता है। इसलिए मैं कहता ज़रूर हूँ कि 'टेन्डर' भरो, लेकिन मैं जानता हूँ, किस आधार पर 'टेन्डर' भरा जाता है। इन दो नियमों से बाहर कुछ चल सके ऐसा नहीं है।

मैं कई लोगों को 'टेन्डर' भरकर मेरे पास लाने के लिए कहता हूँ लेकिन कोई भरकर नहीं लाया। कैसे भर पाएँगे? वह तो पाप-पुण्य के अधीन है। इसलिए जब पाप का उदय हो तब अत्यधिक प्रयत्न करने जाओगे तो बल्कि जो है वह भी चला जाएगा। अतः घर जाकर सो जाओ, थोड़ा-थोड़ा साधारण काम करना। यदि पुण्य का उदय होगा तो भटकने की ज़रूरत ही क्या है? घर बैठे, सामने से सहज ही काम करने से सब मिल जाएगा! इसलिए दोनों ही अवस्थाओं में अत्यधिक प्रयत्न करने के लिए मना करते हैं। बात को सिर्फ समझने की ज़रूरत है।

### पुण्य-पाप की 'लिंक' कैसी होती है?

कोई बाहर के लोग मुझसे व्यवहार के बारे में सलाह लेने आते हैं कि 'मैं चाहे कितना भी माथापच्ची कर लूँ, फिर भी कुछ नहीं होता है।' तब मैं कहता हूँ, 'अभी आपका पाप का उदय है, अभी आप

किसी से रुपये उधार लोगे तो रास्ते में आपकी जेब कट जाएगी! इसलिए अभी तो आप घर बैठकर आराम से जो भी शास्त्र पढ़ते हो, वे पढ़ो और भगवान का नाम लेते रहो।'

हम वर्ष 1968 में जयगढ़ की जेटी बना रहे थे। वहाँ एक कॉन्ट्रैक्टर मेरे पास आया। वह मुझसे पूछने लगा, 'मैं अपने गुरु महाराज के पास जाता हूँ। हर साल मेरे पैसे बढ़ते जा रहे हैं। मेरी इच्छा नहीं है फिर भी बढ़ रहे हैं, तो क्या यह गुरुकृपा है?' मैंने उन्हें कहा, 'वह गुरु की कृपा है, ऐसा मत मानना। यदि पैसे चले गए तो तुम्हें ऐसा लगेगा कि लाओ, गुरु को पत्थर मारूँ।' इसमें गुरु तो निमित्त हैं, उनके आशीष निमित्त है। यदि गुरु को भी चाहिए तो चार आने भी नहीं मिलते न! तब फिर उसने मुझसे पूछा, 'मुझे क्या करना चाहिए?' मैंने कहा, 'दादा का नाम लेना।' अभी तक आपकी लिंक ऐसी थी। लिंक मतलब अभी अंधेरे में भी पत्ते उठाए तो चौका आता है, फिर पंजा आता है बाद में फिर उठाए तो छक्का आता है। तब लोग कहते हैं, 'वाह सेठ वाह, मानना पड़ेगा', ऐसा कहते हैं। वह तुम्हारा 107 तक तो अच्छा रहा लेकिन अब बदलने वाला है इसलिए सचेत रहना। अब तुम पत्ता उठाओगे तो सत्तावन के बाद तिक्की आएगी और उसके बाद 111 आएगा। तब लोग तुम्हें बुद्धू कहेंगे। इसलिए इस दादा का नाम छोड़ना नहीं, वर्ना मारे जाओगे।

फिर हम मुंबई आ गए। दो-पाँच दिन के बाद वह यह बात भूल गया। बाद में उन्हें बहुत बड़ा नुकसान हुआ। तब पति-पत्नी दोनों ने खटमल मारने की दवाई पी ली। वह दादा का नाम लेना ही भूल गया। लेकिन पुण्यशाली इतना कि उसका भाई ही डॉक्टर था, वह आ गया और बच गया! बाद में वह मोटर लेकर तुरंत मेरे पास आया। मैंने उनसे कहा, 'दादा का नाम लेते रहना और फिर कभी ऐसा मत करना।' तब फिर उसने नाम लेना जारी रखा। उसके सारे पाप धुल गए और सब ठीक हो गया।

जिस समय 'दादा' बोलते हैं उस समय पाप पास ही नहीं आते।

चारों ओर घूमते रहते हैं लेकिन आप पर असर नहीं कर सकते। जब आप झपकी लेते हो उस समय आप पर असर करते हैं। रात को नींद में भी नहीं असर करते। यदि जागने तक बोलते रहें और सुबह उठते ही बोलें तो बीच का समय 'स्वरूप' कहलाता है।

### जब पाप-पुण्य का गलन हो तब ?

पाप का पूरण करते हैं, जब उसका गलन होगा तब पता चलेगा ! तब आपके होश उड़ जाएँगे। ऐसा लगेगा जैसे अंगारों पर बैठे हों। पुण्य का पूरण करोगे तब पता चलेगा कि कुछ और ही आनंद आता है ! अतः जिस-जिसका पूरण करना हो, वह सोच-समझकर करना कि जब गलन होगा तब कैसा परिणाम आएगा। पूरण करते समय निरंतर ख्याल रखना। पाप करते समय किसी को ठगकर पैसे इकट्ठे करते समय निरंतर ख्याल रखना कि उसका भी गलन होना है। वह पैसे बैंक में रखोगे तब भी वह चला तो जाना ही है। उसका भी गलन तो होगा ही और ऊपर से, वे पैसे इकट्ठे करते समय जो पाप किए, जो रौद्रध्यान किए, वे अपनी कलमों (नियमों) के साथ आएगा वह अतिरिक्त और जब उसका गलन होगा तब आपकी क्या दशा होगी ?

### पूरण का गलन, स्वभाव से ही

यह तो पूरण-गलन है। इसमें जब पूरण हो तब हँसने जैसा नहीं है और जब गलन हो तब रोने जैसा नहीं है। जब दुःख का पूरण होता है, तब क्यों रोते हो ? यदि पूरण में आपको हँसना हो तो हँसो। पूरण यानी सुख का पूरण हो तब भी हँसो और दुःख का पूरण हो तब भी हँसो लेकिन इनकी तो भाषा ही अलग है न ! पसंद और नापसंद, दोनों ही रखते हैं न ! सुबह जो नापसंद हो उसे फिर शाम को पसंद करते हैं ! सुबह कहेंगे, 'तुम यहाँ से चली जाओ' और शाम को उसे कहेंगे, 'तुम्हारे बगैर मुझे अच्छा नहीं लगेगा !' यानी कि भाषा ही अनाड़ी लगती है न !

जगत् का नियम ही ऐसा है कि जो पूरण होता है उसका गलन

हुए बिना नहीं रहता। यदि सभी लोग जैसे इकट्ठे कर रहे हैं, तो मुंबई में कोई भी व्यक्ति कह सकता है कि 'मैं सब से ज्यादा अमीर हूँ।' लेकिन कभी कोई व्यक्ति तृप्त होकर ऐसा नहीं बोला है क्योंकि ऐसा नियम ही नहीं है!

### भुगतना, रुपयों का या वेदनीय का?

कुदरत क्या कहती है? उसने कितने रुपये खर्च किए यह हमारे यहाँ नहीं देखा जाता। वह तो कौन सी वेदनीय भुगती? *शाता* (सुख-परिणाम) या *अशाता*, इतना ही हमारे यहाँ देखा जाता है। रुपये न हों तब भी *शाता* भुगतेगा और रुपये हों तब भी *अशाता* भुगतेगा, इसलिए जो *शाता* या *अशाता* वेदनीय भुगतता है, वह रुपयों पर आधारित नहीं है।

### ज़रूरत किसकी, अंदर की या बाहर की?

अभी हमारी आय कम हो, एकदम शांति हो, कोई झंझट न हो, तब हम कहते हैं कि 'चलो, भगवान के दर्शन कर आते हैं।' और ये जो कमाने में लगे रहते हैं वे यदि ग्यारह लाख कमाए उसमें हर्ज नहीं है लेकिन अभी पचास हजार का नुकसान होने को हो कि *अशाता* वेदनीय शुरू हो जाती है। अरे, 'ग्यारह लाख में से पचास हजार कम कर ले न! तब कहेगा, 'नहीं, फिर तो रकम कम हो जाएगी न?' 'तो भाई, तुम 'रकम' किसे कहते हो? कहाँ से आई यह रकम? वह तो जोखिमदारी वाली रकम थी इसलिए कम हो जाए तो चीखना मत। यह तो, रकम बढ़ने पर तुम खुश होते हो, और कम हो तब? अरे, पूंजी तो 'अंदर' ही पड़ी हुई है, हार्ट फेल करके क्यों वह सारी पूंजी खत्म करना चाहते हो? हार्ट फेल हो तो सारी पूंजी खत्म हो जाएगी या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** हो जाएगी।

**दादाश्री :** तो फिर यह सब किसलिए? तब वह कहती है कि 'मेरे लिए तो पैसों वाली पूंजी की कीमत है।' अरे, क्या तुम्हें अंदर वाली पूंजी की ज़रूरत नहीं है?

## पापानुबंधी पुण्य

पिता ने दस लाख रुपये बेटे को दिए हों और पिता कहे कि 'अब मैं आध्यात्मिक जीवन जीऊँगा।' तब हमेशा ही बेटा शराब में, माँसाहार में, शेरबजाज़ार इत्यादि में वे पैसे गँवा देता। क्योंकि जो पैसे गलत तरीके से इकट्ठे हुए हों वे अपने पास नहीं रहते। आज तो सच्चा धन, सच्ची मेहनत का धन ही नहीं टिकता, तो गलत धन कहाँ से रहेगा? इसलिए पुण्य वाला धन होना चाहिए। जिसमें बेईमानी न हो, नीयत साफ हो। यदि ऐसा धन होगा तभी वह सुख देगा। वर्ना, अभी तो दूषमकाल का धन, वह भी पुण्य का ही कहलाता है लेकिन पापानुबंधी पुण्य का, जो सिर्फ पाप ही बंधवाता है। उसके बजाय उस लक्ष्मी से कहना कि 'आप आना ही मत, इतने दूर ही रहना। उसमें हमारी शोभा अच्छी रहेगी और आपकी भी शोभा बढ़ेगी।' ये जो सब बंगले बन रहे हैं उनमें पूरा पापानुबंधी पुण्य स्पष्ट दिखाई देता है। इन हजारों में से एकाध ही कोई ऐसा होगा जिनका पुण्यानुबंधी पुण्य होगा। बाकी सब तो पापानुबंधी पुण्य है। कभी इतनी ज़्यादा लक्ष्मी होती होगी? सिर्फ, पाप ही बाँध रहे हैं। कुछ भी भोगते-करते नहीं हैं और सिर्फ पाप ही बाँध रहे हैं। ये तो तिर्यचगति का रिटर्न टिकट लेकर आए हैं।

यह संसार ऐसा है जहाँ एक मिनट भी रहा नहीं जा सकता!। ज़बरदस्त पुण्य होता है फिर भी अंदर का अंतरदाह बुझता नहीं है, निरंतर जलता ही रहता है! चारों ओर से, सारे फर्स्ट क्लास संयोग हों फिर भी अंतरदाह होता ही रहता है। अब वह कैसे मिटेगा? पुण्य भी बाद में खत्म हो जाता है। दुनिया का नियम है कि जब, पुण्य खत्म हो जाएगा तब क्या होगा? पाप का उदय होता है। यह तो अंतरदाह है। पाप के उदय के समय बाहर का दाह उत्पन्न होगा उस समय आपकी क्या दशा होगी? इसलिए, सावधान हो जाओ, भगवान ऐसा कहते हैं।

## लक्ष्मी तो 'चलती' भली

यह तो पूरण-गलन स्वभाव वाला है। जितना पूरण हुआ है,

उतना ही बाद में गलन भी होगा। यदि गलन नहीं होता न, तो भी परेशानी हो जाती। लेकिन गलन होता है इसलिए फिर से खा पाते हैं। यह श्वास लिया वह पूरण किया और उच्छ्वास किया वह गलन है। सब पूरण-गलन स्वभाव के हैं इसलिए हमने खोज की है कि 'तंगी भी नहीं और बहुतायत भी नहीं!' हमें हमेशा लक्ष्मी जी की तंगी भी नहीं रहती और बहुतायत भी नहीं रहती! तंगी वाले सूख जाते हैं और बहुतायत वालों को सूजन हो जाती है। बहुतायत यानी क्या कि लक्ष्मी जी दो-तीन साल तक जाती ही नहीं। लक्ष्मी जी तो चलती भली, वर्ना दुःखदायी हो जाएगी।

### तंगी नहीं, बहुतायत नहीं

हमारे गाँव में हमें सत्संग के लिए बुलाया था, तो वहाँ हम सत्संग कर रहे थे। तब एक भाई जो गाँव के ही थे, मेरे चचेरे भाई थे, वे टेढ़ा बोलते थे। वे ऐसा बोले कि, 'आप नीचे दबाकर बैठे हो, खूब बड़ी रकम दबाकर बैठे हो, इसलिए अब सत्संग तो आराम से होगा ही न!' मैं समझ गया कि ये चचेरे होने के नाते बोल रहे हैं। उन्हें सहन नहीं होता न! तब मैंने कहा, 'मैं क्या दबाकर बैठा हूँ वह आपको क्या पता चले? बैंक में क्या है, वह आपको कैसे पता चले?' तब कहने लगे, अरे! दबाए बगैर तो ऐसे आराम से सत्संग कैसे हो सकता है?' मैंने कहा, 'बैंक में जाकर जाँच कर आओ।'

मुझे कभी तंगी नहीं रही और न ही कुछ संग्रह हुआ। लाख आने से पहले ही कोई न कोई बम (व्यवहार) आ जाता और वह खर्च भी हो जाता। इसलिए कभी बहुतायत तो हुई ही नहीं और कभी तंगी भी नहीं रही। बाकी, कुछ दबाया हो ऐसा नहीं है क्योंकि हमारे पास गलत धन आता तो दबाते न? ऐसा धन ही नहीं आए तो दबाएँगे कैसे? और ऐसा हमें चाहिए भी नहीं। हमें तो तंगी भी न रहे और बहुतायत भी न हो तो बहुत हो गया! यदि बहुतायत हो जाए तो बहुत दुःख होता है। फिर बैंक में रखो, और ऐसी सारी परेशानी। फिर साला आता है कि 'आपके पास तो बहुत सारे रुपये हैं, तो दस-बीस हज़ार

दो!' फिर मामा का लड़का आता है, फिर दामाद आता है, कि 'मुझे लाख रुपये दो।' बहुतायत होगा तो कहेंगे न? लेकिन बहुतायत ही न हुआ हो तो? बहुतायत होने पर लोगों को क्लेश होता है।

### बहुतायत करवाए उपाधि

लोग मुझे आकर बताते हैं कि 'देखो न, हमारे दामाद आए हैं, वे लाख रुपये माँग रहे हैं और दामाद तो उसके लिए आ चुके हैं। यदि सभी को देता रहूँ तो मेरे पास क्या बचेगा?' उनकी बात भी तो सही है न? सभी को देता रहेगा तो उसके पास तो कुछ बचेगा ही नहीं न! यानी बहुतायत हुआ तो लेने आया है न! अब वहाँ, उनके साथ दामाद झगड़ा करता है, गालियाँ देता है! तब आखिरकार कहता है कि 'मेरे पास ज़्यादा रुपये नहीं हैं। ये बीस हज़ार ले जाओ और अब वापस मत आना।' अरे, जब देने ही थे तब क्लेश करके क्यों दिए, उसके बजाय समझाकर देने थे न! वर्ना, एक बार झूठ ही बोल देना चाहिए कि 'ये सब लोग कह रहे हैं कि मेरे पास दस लाख आए हैं, लेकिन मेरा मन ही जानता है कि कितने आए हैं।' ऐसा-वैसा करके, झूठ बोलकर भी दामाद को समझा देना चाहिए जिससे लड़ाई तो नहीं होगी न! झगड़ा नहीं होगा, लेकिन ऐसा आता नहीं है न! और वह दामाद तो लाख रुपयों के लिए अड़े रहता है, बीस हज़ार लेकर नहीं जाता। इसलिए ये ज़्यादा रुपये लाए तो भाई के साथ झगड़ा, साले के साथ झगड़ा, दामाद के साथ झगड़ा। ज़्यादा रुपये आएँ तो ज़्यादा झगड़े होते हैं। जब पैसे नहीं होते तब सब साथ बैठकर खाते-पीते और मजे करते हैं। ऐसा है इन पैसों का काम। यानी बहुतायत हो तो दुःख, और तंगी न रहे तो बहुत हो गया।

### यह देखो हूबहू, नोट गिनने वाले को

इस शरीर में भी जब तकलीफ होती है तो व्यक्ति पतला हो जाता है और बहुतायत हो तब सूजन आ जाती है। जब सूजन आए तब उसे लगता है कि, 'मैं अब मोटा हो गया हूँ!' अरे, यह तो सूजन



आई है। यानी बहुतायत न हो वह उत्तम और उसके जैसा पुण्यानुबंधी पुण्य कोई नहीं है। ज्यादा जमा हो जाए तो गिनने की झंझट रहेगी न? दस हजार रुपये हों, तब एक-एक रुपया करके गिनने जाएँगे तो कब पार आएगा? उसके बाद एक या दो की भूल हो जाए तो फिर से गिनना पड़ता है। ठीक से गिनती हो जाए फिर सो जाता है। तब एक भाई मुझसे पूछने लगे कि 'आप क्या करते हैं?' मैंने कहा, ये तो दस हजार गिनने की बात कर रहे हैं। लेकिन सौ की नोट के छुट्टे किसी दुकान से लेने हों तो दुकानदार कहे, 'साहब, गिन लो।' मैं कहता हूँ कि 'मुझे आप पर पूरा विश्वास है।' शायद निन्यानवे होंगे तब एक रुपया तो गिनने की मेहनत में जाएगा। वह गिनने में टाइम बर्बाद हो जाता है न! इसलिए भले ही रुपया कम हो, गिनने की झंझट तो नहीं है न! इसलिए मैं कभी रुपये गिनता ही नहीं। सौ की गड्डी में तो सौ रुपये होते हैं और गिनते-गिनते दस मिनट चले जाते हैं। ऊपर से ऐसे जीभ में अँगूठा लगाता रहता है। इसके बजाय दो रुपये कम होंगे तो चलेगा। उसमें फिर एक-दो कम हों न, तो सौ रुपये छुट्टे देने वाले के साथ झगड़ा करता है कि 'ये आपने सौ दिए लेकिन पूरे नहीं हैं, इसमें तो दो कम हैं।' तब वह कहता है कि 'आप फिर से गिनो, बेकार में किच-किच मत करो। ज्यादा माथापच्ची मत करो, वर्ना लाओ मेरे रुपये वापस।' तब वह वापस नहीं लौटाता और फिर से गिनने बैठ जाता है। अरे, लेते समय क्लेश, किसी को दें तब भी क्लेश ही क्लेश!! जन्म के समय 'ऊँवा-ऊँवा' करता है और मृत्यु के समय, 'डॉक्टर साहब, मुझे बचाओ, बचाओ!' करता है। कब तुम बिना क्लेश किए रहे हो! तेरा एक दिन भी आनंद में नहीं बीता। फिर भी खुद 'परमात्मा' है। वह क्लेश करे लेकिन हमें तो दर्शन करने पड़े न! ऐसा है यह जगत्। अतः तंगी न रहे और संग्रह भी न हो वही सब से अच्छा है।

### क्या स्वीकार होगा, अतिवृष्टि या अनावृष्टि?

एक बहन कह रही थीं कि 'इस साल इतनी अधिक बारिश हो

रही है तो अगले साल क्या होगा? आगे कम हो जाएगी।' लोग तंगी में भी आशा रखते हैं कि इस साल तो दो-तीन लाख रुपये आ जाएँ तो अच्छा। अरे, उसके बाद तो हर साल अकाल पड़ेगा! अतः आशा मत रखना। लक्ष्मी की बारिश तो एक साथ हो गई, अब तो पाँच साल तक अकाल पड़ेगा। इसके बजाय तो जैसे किशत में आता है वैसे आने दे, वही ठीक है। वर्ना पूरी पूंजी आएगी और पूरी खर्च हो जाएगी इसलिए ये किशत बाँधी हुई हैं वही ठीक है। हमें तो वही करना चाहिए जिससे सामने वाले को संतोष हो। 'व्यवस्थित' जितनी लक्ष्मी भेजे उतनी स्वीकार करनी चाहिए। कम आए और दिवाली पर दो सौ-तीन सौ कम पड़ गए तो अगली दिवाली पर ज़्यादा बारिश होगी। इसलिए उसका कोई अफसोस मत रखना।

## लक्ष्मी की कमी किस कारण से?

**प्रश्नकर्ता :** लक्ष्मी की कमी क्यों पड़ती है?

**दादाश्री :** चोरी से। जहाँ मन-वचन-काया से चोरी न हो, वहाँ लक्ष्मी जी कृपा बरसाती हैं। लक्ष्मी के अंतराय चोरी के कारण होते हैं। ट्रिक और लक्ष्मी, दोनों को बैर हैं। स्थूल चोरी बंद हो तभी तो उच्च जाति में जन्म होता है। लेकिन सूक्ष्म चोरी यानी कि ट्रिक्स करना, वह तो हार्ड रौद्रध्यान है। ट्रिक्स तो होनी ही नहीं चाहिए। ट्रिक करना किसे कहते हैं? 'एकदम शुद्ध माल है', कहकर मिलावट वाला माल देकर खुश होता है और यदि हम कहें कि 'क्या ऐसा करना चाहिए?' तो वह कहता है कि, 'वह तो ऐसे ही करना चाहिए'। लेकिन ईमानदारी की इच्छा रखने वाले को क्या कहना चाहिए कि 'मेरी इच्छा तो अच्छा माल ही देने की है पर माल ऐसा ही है, वह ले जाओ।' इतना कहें तो भी अपनी ज़िम्मेदारी नहीं रहेगी।

यानी ये सब, कब तक ईमानदार हैं? जब तक कि उन्हें कालाबाज़ारी का अधिकार प्राप्त नहीं हुआ है। यदि उन्हें कालाबाज़ारी का अधिकार प्राप्त हो जाए तब बेचने का माल पाँच-पच्चीस हज़ार

का पड़ा हो और उसका तीन गुना पैसा उपार्जित होता हो। अब उसे बेचने का अधिकार प्राप्त हो और लेने वाले ग्राहक घर बैठे आएँ, कोई मुश्किल न हो तब वे ले जाने वाले क्या कहेंगे? जिम्मेदारी हमारी, कहेंगे। उस समय यदि तू सीधा रहे तो मैं जानूँ।

मन-वचन-काया से ज़रा सी भी चोरी करने वाला बहुत मेहनत करे फिर भी लक्ष्मी मुश्किल से मिलती है। लक्ष्मी के लिए सब से बड़ा अंतराय है, चोरी। यह तो क्या होता है कि मनुष्यपन में जो-जो मनुष्यत्व की सिद्धि लेकर आया होता है, वह सिद्धि भुनाकर दिवालिया होता जाता है। आज ईमानदारी से बहुत मेहनत करके भी लक्ष्मी प्राप्त नहीं कर पाता। इसका अर्थ यह है कि पहले से ही मनुष्यपन की सिद्धि उल्टे तरीकों से भुनाकर आया है, उसी का यह परिणाम है। सब से बड़ी सिद्धि कौन सी? तब कहते हैं कि, मनुष्यपन और वह भी ऊँची जाति में जन्म लेना और वह भी हिन्दुस्तान में। इसे सब से बड़ी सिद्धि कहा गया है, क्योंकि इस मनुष्यपन से मोक्ष में जा सकते हैं।

## लक्ष्मी जी क्या कहती हैं?

**प्रश्नकर्ता :** यह जो लक्ष्मी जी की कमाई करते हैं, वह कितनी मात्रा में कमानी चाहिए?

**दादाश्री :** ऐसा कुछ नहीं है। रोज़ सुबह नहाना पड़ता है न? फिर भी क्या कोई सोचता है कि एक ही लोटा मिलेगा तब क्या करूँगा? इसी तरह लक्ष्मी का विचार नहीं आना चाहिए। डेढ़ बाल्टी मिलेगी वह तय ही है और दो लोटे, वह भी तय ही है। उसमें कोई कम-ज्यादा नहीं कर सकता। इसलिए मन-वचन-काया से लक्ष्मी के लिए आप प्रयत्न करना, इच्छा मत करना। लक्ष्मी जी तो बैंक बैलेन्स हैं। वह बैंक में जमा हुई होगी, तभी मिलेगी न? यदि कोई लक्ष्मी की इच्छा करे तो लक्ष्मी जी कहती हैं कि 'इस जुलाई में तेरे पैसे मिलने वाले थे वे अगली जुलाई में मिलेंगे' और यदि कहे कि 'मुझे पैसे नहीं चाहिए', वह भी बड़ा गुनाह है। लक्ष्मी जी का तिरस्कार भी

नहीं और इच्छा भी नहीं करनी चाहिए। उन्हें तो नमस्कार करना चाहिए। उनके लिए तो विनय रखना चाहिए क्योंकि वे तो हेड-ऑफिस में हैं। लक्ष्मी जी कहती हैं कि 'जिस गली में जिस समय में रहना हो, उसी समय पर रहना चाहिए और हम समय-समय पर भेज ही देते हैं।' तुम्हारे सारे ड्राफ्ट वगैरह सब समय पर आ ही जाएँगे, लेकिन साथ में मेरी इच्छा मत करना। क्योंकि नियमानुसार जितना होता है, उसे ब्याज के साथ भेज देते हैं। जो इच्छा नहीं करता है, उसको समय पर भेज देते हैं।' लक्ष्मी जी और क्या कहती हैं कि 'तुम्हें मोक्ष जाना हो तो हक्र की लक्ष्मी मिले वही लेना। किसी की लक्ष्मी छीनकर या धोखा देकर मत लेना।'

### कौन से नियमों से लक्ष्मी?

**प्रश्नकर्ता :** लक्ष्मी जी के नियम क्या हैं ?

**दादाश्री :** लक्ष्मी जी को गलत तरीकों से नहीं लेना चाहिए यही नियम है। यदि वह नियम तोड़े तो फिर लक्ष्मी जी कैसे खुश रहेगी? फिर चाहे तुम लक्ष्मी जी को पूजो न! सभी पूजते हैं। क्या वहाँ विलायत में लोग लक्ष्मी जी को पूजते हैं ?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं दादा, वहाँ कोई लक्ष्मी जी को नहीं पूजता।

**दादाश्री :** फिर भी उन फॉरेनर्स को लक्ष्मी जी मिलती हैं या नहीं? क्या ऐसे पूजने से लक्ष्मी जी आती होगी? हिन्दुस्तान में तो दही से भी पूजते हैं। लक्ष्मी जी को सभी (पानी और अन्य द्रव्यों से धोकर) पूजते हैं, कोई कच्चा नहीं है। मुझे भी लोग कहने आते हैं, 'आपने लक्ष्मी जी पूजी या नहीं?' मैंने पूछा, 'किसलिए?' जब हमें लक्ष्मी जी मिलती हैं, तब हम उनसे कह देते हैं कि, 'बड़ौदा में मामा की पोल और छठा घर, जब अनुकूल हो तब पधारिएगा और जब जाना हो तब चली जाइएगा। आपका ही घर है, पधारिएगा।' हम इतना ही कहते हैं। हम विनय नहीं चूकते हैं। हम वहाँ ऐसे नहीं कहते कि 'हमें उनकी ज़रूरत नहीं है।' आप भी रात को घर जाकर बोलना, 'हे

लक्ष्मी देवी जी, आपको जब अनुकूल हो तब मेरे घर आना और जब अनुकूल हो तब जाना लेकिन इस घर में आना।' आप ध्यान रखना ऐसा कह सकते हैं न?

**प्रश्नकर्ता :** आते-जाते रहना।

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा नहीं। 'यह घर आपका है। जब अनुकूल हो तब आना। हमारी इच्छा है कि आप आना।' इतना बोलकर शुद्धात्मा का ध्यान करते-करते सो जाना फिर उस बारे में संकल्प-विकल्प करें तो भयंकर दोष लगता है। फिर केस एक तरफ रख देना। अब कोई उलझन नहीं रही न?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, नहीं।

**दादाश्री :** फिर ठीक है।

**क्या लक्ष्मी जी को रोकना चाहिए?**

हमें तो लक्ष्मी जी कभी याद नहीं आतीं। याद किसे आती हैं, कि जिसने दर्शन न किए हों उसे लेकिन हमारे पास तो लक्ष्मी और नारायण, दोनों साथ ही हैं। हमारे यहाँ कहावत है न कि 'बेटा हो तब बहू आएगी न।' नारायण हैं तो लक्ष्मी जी आएँगी ही। हमें तो सिर्फ विनय से अपने घर का एड्रेस ही देना होता है। लोग तो लक्ष्मी जी को पहले गौने की बहू की तरह रोकते हैं। लक्ष्मी जी विनय चाहती हैं। जहाँ भगवान हैं वहाँ वैभव की क्या कमी? लक्ष्मी जी ऐसी नहीं हैं कि किसी के रोकने पर रुक जाए। लक्ष्मी जी तो भगवान की पत्नी हैं। उन्हें भी आप रोकते रहते हो? पहली बार गौने में आई हुई बहू को यदि रोक लो और 'मायके' न जाने दें तो बेचारी की क्या दशा होगी? ऐसा ही लोगों ने लक्ष्मी जी के लिए करना शुरू कर दिया है इसलिए लक्ष्मी जी भी अब उकता गई हैं।

**उनका तिरस्कार कैसे कर सकते हैं?**

दूसरी बात यह है कि लक्ष्मी जी का तिरस्कार नहीं करना चाहिए।

कुछ लोग कहते हैं कि 'हम को नहीं चाहिए, लक्ष्मी जी को हम टच भी नहीं करते।' वे लक्ष्मी जी को न छुँए उस पर आपत्ति नहीं है लेकिन वाणी द्वारा जो बोलते हैं और भाव में ऐसा बर्तते हैं, उसमें जोखिम है। फिर अन्य कितने ही जन्म लक्ष्मी के बगैर भटकते हैं। लक्ष्मी जी तो 'वीतराग' हैं, 'अचेतन' वस्तु हैं। हमें उनका तिरस्कार नहीं करना चाहिए। किसी का भी तिरस्कार किया फिर चाहे वह चेतन हो या अचेतन, वह नहीं मिलता। हम 'अपरिग्रही' हैं ऐसा बोलते हैं लेकिन 'लक्ष्मी जी को कभी नहीं छुँएँगे' ऐसा नहीं बोलते हैं। लक्ष्मी जी तो सारी दुनिया के व्यवहार की 'नाक' कहलाती हैं। सारे देवी-देवता 'व्यवस्थित' के नियम में हैं इसलिए कभी तिरस्कार नहीं करना चाहिए।

### उस तिरस्कार का परिणाम क्या?

लक्ष्मी जी का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। कई साधु, महाराज, त्यागी वगैरह लक्ष्मी जी को देखकर 'नहीं, नहीं, नहीं' करते हैं। उससे वे कितने ही जन्मों तक लक्ष्मी के बगैर भटकते रहेंगे। अरे मूर्ख लक्ष्मी जी के प्रति ऐसे तिरस्कार मत करना। वर्ना छूने भी नहीं मिलेगी। तिरस्कार नहीं करना चाहिए। कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है, जिसका तिरस्कार करना चाहिए। वर्ना अगले जन्म में लक्ष्मी जी के दर्शन भी करने को नहीं मिलेंगे। लक्ष्मी जी का तिरस्कार करते हैं वह तो व्यवहार को धक्का मारने जैसा है। यह तो व्यवहार है इसीलिए हम तो लक्ष्मी जी को आते समय भी 'जय सच्चिदानंद' और जाते समय भी 'जय सच्चिदानंद' कहते हैं। 'यह घर आपका है। जब अनुकूल हो तब पधारना', ऐसी प्रार्थना करनी होती है। हमें लक्ष्मी जी कहती हैं, 'ये सेठ हमारे पीछे पड़े हैं। उनके पाँव घिस गए हैं। वे पीछे दौड़ते हैं तब दो-चार बार गिर जाते हैं, तब फिर वे मन में ऐसे भाव करते हैं कि जाने दो, इसमें तो घुटने छिल जाते हैं। लेकिन तब हम फिर से इशारा करते हैं और फिर से वे सेठ उठकर दौड़ते हैं यानी हमें उन्हें मारते रहना है। उन्हें सब तरह से घायल कर लहूलुहान कर देना है। उन्हें सूजन आ गई है फिर भी समझ नहीं खुलती।' लक्ष्मी जी तो बहुत पक्की हैं!

## वहाँ तो लक्ष्मी जी भी उकता गई...

अब वे मुझे कहती हैं कि मैं तो इन सेठ लोगों के वहाँ बहुत ही उकता गई हूँ। अब मैं आपके महात्माओं के यहाँ जाऊँगी क्योंकि जब मैं आपके महात्माओं के वहाँ जाती हूँ तब वे फूलों की माला लेकर मेरा स्वागत करते हैं और जब लौटती हूँ तब भी फूलों की माला पहनाकर बिदाई देते हैं। जो-जो लोग मुझे रोकते हैं, अब मैं वहाँ नहीं जाऊँगी और जो भी मेरा तिरस्कार करते हैं वहाँ तो मैं अनंत जन्मों तक नहीं जाऊँगी। लक्ष्मी तो आती है न, फिर दस साल बाद वह नहीं रहती। वह तो बदलती रहती है, समसरण होता रहता है।

## क्या लक्ष्मी जी के लिए निःस्पृही हो जाएँ?

कुछ लोग लक्ष्मी के लिए निःस्पृही हो जाते हैं तो ऐसा निःस्पृह भाव कौन कर सकता है? जिसे आत्मा की स्पृहा हो वही निःस्पृह भाव कर सकता है। लेकिन आत्मा प्राप्त हुए बगैर आत्मा की स्पृहा कैसे हो सकती है? इसलिए सिर्फ निःस्पृह होता है और सिर्फ निःस्पृही हुआ तब तो वह भटक जाएगा। यानी सस्पृही-निःस्पृही हो जाएगा तब मोक्ष में जाएगा। हम लक्ष्मी के विरोधी नहीं हैं कि लक्ष्मी का त्याग करें। लक्ष्मी का त्याग नहीं करना है बल्कि अज्ञानता का त्याग करना है। कितने ही लोग लक्ष्मी का तिरस्कार करते हैं। यदि किसी भी चीज़ का तिरस्कार करें तो वह फिर कभी मिलेगी ही नहीं। सिर्फ निःस्पृह ही हो जाए, वह तो सब से बड़ा पागलपन है।

## वहाँ ज्ञानी को कैसा बर्तता है?

हम सस्पृह-निःस्पृह हैं। भगवान सस्पृह-निःस्पृह थे, और उनके शिष्य निःस्पृह हो गए हैं। जैसा ज़रूरत हो वैसा काम लेना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** सस्पृह-निःस्पृह, वह किस तरह से? वह समझ में नहीं आया।

**दादाश्री :** सांसारिक भावों में हम निःस्पृही और आत्मा के भावों

में सस्पृही। सस्पृही-निःस्पृही होगा तभी मोक्ष में जाएगा इसलिए हर एक प्रसंग को स्वीकार कर लेना। समय के अनुसार काम लेना, चाहे वह फायदेमंद हो या नुकसानदायक हो। भ्रांत बुद्धि 'सत्य' का अवलोकन नहीं करने देती। भगवान कहते हैं कि यदि आप ज़रा सा थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी में रहो तो उसमें हर्ज नहीं है लेकिन ज़रा अविरोधाभासी जीवन रखना। लक्ष्मी के नियमों का तो पालन करना। गलत रास्ते से लक्ष्मी नहीं लेना। लक्ष्मी के लिए सहज प्रयत्न होने चाहिए। रोज़ जाकर दुकान पर बैठना, लेकिन उसकी इच्छा नहीं होनी चाहिए। किसी से पैसे लिए हों तो लक्ष्मी जी क्या कहती हैं कि वापस लौटा देना। रोज़ भाव करने चाहिए कि लौटाने हैं, तो अवश्य वे लौटा पाओगे।

### दोनों फीवर नहीं तो और क्या?

भगवान ने क्या कहा था कि नर्मदा जी में पानी आए तो वह नर्मदा जी के तट के सामर्थ्य के अनुसार ही होता है। लेकिन यदि उसके सामर्थ्य से अधिक पानी आए तो? फिर किनारे वगैरह सब तोड़कर आसपास के गाँव बहा देती है। लक्ष्मी जी का भी ऐसा ही है। नॉर्मल आए, वहाँ तक ठीक है। लक्ष्मी जी बिलो नॉर्मल आए तो भी फीवर और अबोव नॉर्मल भी फीवर है। अबोव नॉर्मल तो अधिक फीवर है लेकिन दोनों ही तरह के स्टेजेस में लक्ष्मी फीवर स्वरूप हो जाती है।

### काले धन के परिणाम क्या?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन अभी लोगों को पैसे की ज़रूरत है न?

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन क्या इसके लिए इतना अधिक दुर्ध्यान करना चाहिए? नहाना भी रोज़ की ज़रूरत है तो फिर वहाँ नहाने के लिए क्यों ध्यान नहीं बिगाड़ते? अभी तो पानी की तंगी हो तो उसमें भी ध्यान बिगाड़ते हैं लेकिन हमें तो तय ही कर लेना चाहिए कि पानी मिलेगा तो नहाएँगे, वर्ना नहीं, लेकिन ध्यान नहीं बिगड़ना चाहिए। जैसे पानी का स्वभाव है कि आता रहता है, वैसे ही लक्ष्मी का स्वभाव



हैं आते रहना और टाइम होते ही चल पड़ती है। पूरे जगत् में किसी को शौच जाने की 'खुद की' स्वतंत्र सत्ता नहीं है। वह तो सिर्फ नैमित्तिक क्रिया ही करनी होती है। लेकिन वहाँ ध्यान बिगाड़कर छीन लेने की इच्छा रखे तब फिर कैसा फल मिलेगा ?

यह काला धन कैसा कहा जाएगा वह समझाता हूँ। यदि बाढ़ का पानी अपने घर में घुस जाए तो आपको खुशी होगी, घर बैठे पानी आया। बाढ़ के उतरते ही पानी तो चला जाएगा लेकिन जो कीचड़ रह जाएगा उसे धोकर निकालते-निकालते तो आपका दम निकल जाएगा। वह काला धन उस बाढ़ के पानी जैसा है। रोम-रोम को काटकर जाएगा इसीलिए मुझे सेठों को कहना पड़ा कि समझकर चलना।

### लक्ष्मी, मेन प्रोडक्शन या बाइ प्रोडक्शन ?

जब तक गलत धंधा शुरू नहीं होता है तब तक लक्ष्मी जी जाती नहीं है। गलत रास्ता, वह तो लक्ष्मी के जाने का निमित्त है।

यह काल कैसा है ? अभी तो इस काल के लोगों को, कहाँ से सामान ले आऊँ, किस तरह दूसरों का हड़प लूँ, किस तरह मिलावटी सामान बेचना, अणहक्क के विषयों को भोगने से फुरसत मिले तो दूसरा कुछ खोज सकेंगे न ? इससे सुख कहीं बढ़ नहीं गए। सुख तो कब कहलाता है ? जब मेन प्रोडक्शन करे तब। यह संसार तो बाइ प्रोडक्ट है, पिछले जन्म में कुछ किया होगा, जिससे यह देह मिली है। भौतिक चीजें मिली हैं, पत्नी मिली, बंगला मिला। यदि मेहनत से मिलता तब तो मजदूरों को भी मिलता, लेकिन ऐसा नहीं है। आज के लोगों में समझ बदल गई है इसलिए ये बाइ प्रोडक्शन के कारखाने खोल लिए हैं। बाइ प्रोडक्शन का कारखाना नहीं खोलना चाहिए। मेन प्रोडक्शन यानी मोक्ष का साधन, 'ज्ञानी पुरुष' से प्राप्त कर लेना चाहिए। फिर संसार का बाइ प्रोडक्शन तो अपने आप मुफ्त में आएगा ही। बाइ प्रोडक्शन के लिए तो दुर्ध्यान करके अनंत अवतार बिगाड़ लिए! एक बार मोक्ष पा ले तो तूफान खत्म होगा!

## ज्ञानी की कृपा क्या नहीं कर सकती?

यह तो, लोग दिन भर आर्तध्यान और रौद्रध्यान करते रहते हैं। फिर भी लक्ष्मी तो इतनी ही आने वाली है। भगवान ने कहा है कि लक्ष्मी धर्मध्यान से बढ़ती है जबकि आर्तध्यान और रौद्रध्यान से घटती है। ये तो लक्ष्मी बढ़ाने के लिए आर्तध्यान और रौद्रध्यान का उपयोग करते हैं। वह तो यदि पहले का पुण्य होगा तभी मिलेगी। इन 'दादा' की कृपा से तो सब मिलता है। इसका क्या कारण है? उनकी 'कृपा' से सभी अंतराय टूट जाते हैं। लक्ष्मी तो है ही लेकिन आपके अंतराय के कारण मिल नहीं रही थी। वे अंतराय 'हमारी' कृपा से टूट जाते हैं उसके बाद सब मिलता है। 'दादा' की कृपा तो मन के रोगों के और वाणी के रोगों के, देह के रोगों के, ऐसे सभी तरह के दुःखों के अंतरायों को तोड़ने वाली है। यहाँ जगत् के सारे दुःख चले जाते हैं।

## गिनने वाले चले गए और पैसे रह गए

इस भौतिक सुख के बजाय अलौकिक सुख होना चाहिए कि जिस सुख में हमें तृप्ति मिले। यह लौकिक सुख तो बल्कि *अजंपा* बढ़ाता है। जिस दिन पचास हजार का फायदा हो न, उस दिन गिन-गिनकर ही पूरा दिमाग खत्म हो जाता है। दिमाग तो इतना ज्यादा अशांत हो जाता है कि कुछ खाना-पीना भी अच्छा नहीं लगता क्योंकि मुझे भी मुनाफा मिलता था, वह सब मैंने भी देखा है कि दिमाग कैसा हो जाता था! यह तो, मेरे अनुभव के बाहर नहीं है न कुछ भी! मैं तो इस समुद्र में से तैरकर बाहर निकला हूँ इसलिए मैं सब जानता हूँ कि आपको क्या होता होगा? ज्यादा रुपये आएँ तो ज्यादा अशांति होती है, दिमाग डल हो जाता है और कुछ भी याद नहीं रहता। *अजंपा*, *अजंपा* और *अजंपा* ही रहा करता है। ये तो नोटें गिनते रहते हैं, लेकिन ये नोटें तो यहाँ धरी की धरी रह गईं और गिनने वाले चले गए। लक्ष्मी जी कहती हैं कि 'तुम्हें समझना हो तो समझ लेना, मैं रहूँगी और तुम चले जाओगे!' इसलिए हमें उनके साथ कोई बैर नहीं बाँधना है। पैसों से हमें कहना चाहिए कि 'आइए माँ', इसकी तो जरूरत है। सभी की

ज़रूरत तो है न? लेकिन उसके पीछे ही तन्मयाकर रहे और गिनने वाले तो चले गए और पैसे रह गए। फिर भी गिनने पड़ते हैं उससे छुटकारा ही नहीं है न? कुछ ही सेठ ऐसे होते हैं कि मुनीम जी से कहते हैं कि, 'भाई, मुझे खाना खाते समय तो परेशान मत करना। आप तो आराम से रुपये गिनकर तिजोरी में रखना और तिजोरी में से ले लेना।' ऐसे तो कुछ ही सेठ होंगे जो इसमें दखल न करें! हिन्दुस्तान में दो-पाँच सेठ ही ऐसे होंगे जो निर्लेप रह सकें! वे मेरे जैसे!! मैं कभी भी पैसे नहीं गिनता। यह कैसी दखल? इन लक्ष्मी जी को मैंने आज बीस-बीस साल से हाथ में नहीं लिया है तभी इतना आनंद रहता है न!

लक्ष्मी जी का व्यवहार है तब तक उसकी ज़रूरत पड़ती है, इसके लिए कोई ना नहीं है। उसमें तन्मयाकार नहीं होना चाहिए। तन्मयाकार नारायण में रहो। सिर्फ लक्ष्मी जी के पीछे पड़े रहो तो नारायण चिढ़ते रहते हैं। लक्ष्मी-नारायण का तो मंदिर है न? लक्ष्मी जी कोई ऐसी-वैसी चीज़ हैं?

क्या आपको यह बात पसंद आई?

रुपये कमाने में जैसा आनंद आता है, वैसा ही आनंद पैसे खर्च करते समय होना ही चाहिए। जबकि वे कहते हैं कि इतने खर्च हो गए!

पैसे खर्च हो जाएँगे ऐसी जागृति कभी रखनी ही नहीं चाहिए। जिस समय जो खर्च हो जाए वही सही इसलिए पैसे खर्च करने को कहा था, जिससे लोभ छूट जाए और बार-बार दिया जा सके।

भगवान ने कहा है कि हिसाब मत रखना। भविष्य का ज्ञान हो तभी हिसाब रखना। अरे, हिसाब ही रखना हो तो कल मर जाऊँगा ऐसा हिसाब रख न!

### उसकी भी एक्सपायरी डेट

रुपयों का नियम कैसा है कि कुछ दिन टिकते हैं और फिर अवश्य चले ही जाते हैं। वह रुपया बदलता ज़रूर है। फिर वह मुनाफा

लेकर आए, नुकसान लेकर आए या ब्याज लेकर आए, लेकिन बदलता ज़रूर है। वे स्थिर नहीं रहते हैं। वह स्वभाव से ही चंचल है इसलिए जो ऊपर चढ़ा था, वहाँ ऊपर उसे बंधन लगता है। उतरते समय उतर नहीं पाता और चढ़ते समय तो जोश में चढ़ जाता है। चढ़ते समय तो जोश में ऐसे पकड़-पकड़कर चढ़ता है, लेकिन उतरते समय जैसे बिल्ली मटकी में ज़ोर लगाकर मुँह डालती है, और फिर निकालते वक्त कैसा होता है? ऐसा ही इसमें होता है।

यह जो अनाज है, वह तीन-पाँच साल में निर्जीव हो जाता है, वह फिर से नहीं उगता।

ग्यारह साल में पैसे बदल जाते हैं। पच्चीस करोड़ का आसामी हो लेकिन ग्यारह साल तक उसके पास एक आना भी न आया हो तो वह खत्म हो जाता है। जैसे इन दवाइयों की 'एक्सपायरी डेट' लिखते हैं, वैसे ही लक्ष्मी की भी ग्यारह साल की 'एक्सपायरी डेट' होती है।

**प्रश्नकर्ता :** लोगों के पास पूरी ज़िंदगी लक्ष्मी रहती है न?

**दादाश्री :** जैसे आज वर्ष 1977 है तो हमारे पास आज 1966 से पहले की लक्ष्मी नहीं होगी।

**प्रश्नकर्ता :** क्या ग्यारह वर्ष का ही नियम है?

**दादाश्री :** जैसे इन दवाइयों में दो साल की 'एक्सपायरी डेट' होती है, छः महीनों की होती है, अनाज की तीन साल की होती है, वैसे ही लक्ष्मी जी की ग्यारह साल की होती है।

### दिवालियापन से कैसे बचें?

लक्ष्मी जी 'चल' संपत्ति कहलाती हैं। 200 साल पहले के वणिक् थे। उनके पास लाख रुपये हों तो वे पच्चीस हजार की चल संपत्ति ले लेते थे, पच्चीस हजार का सोना-जेवरात ले लेते थे, पच्चीस हजार किसी महाजन के वहाँ ब्याज पर रख देते थे और पच्चीस हजार व्यापार

में लगाते। व्यापार में ज़रूरत पड़े तो पाँच हजार उधारी (ब्याज पर) लेते। यह उनका 'सिस्टम' था। तब वे कैसे जल्दी कंगाल होते? अभी के वणिकों को तो ऐसा कुछ आता ही नहीं।

हिन्दुस्तान के जेवरों में कुछ भी दम नहीं होता। जड़ाऊ काम में पचहत्तर प्रतिशत ही सोना होता है।

### क्या उस वास्तविकता से विमुख हो सकते हैं?

पहले तो लक्ष्मी पाँच पीढ़ियों तक या तीन पीढ़ियों तक तो टिकती थी। अब तो लक्ष्मी एक पीढ़ी तक भी नहीं टिकती। यह लक्ष्मी कैसी है? एक पीढ़ी भी नहीं टिकती है। उसकी हाज़िरी में ही आती है और हाज़िरी में ही चली जाती है। ऐसी है यह लक्ष्मी। यह तो पापानुबंधी पुण्य की लक्ष्मी है। उसमें थोड़ी-बहुत जो पुण्यानुबंधी पुण्य की लक्ष्मी होती है, वह आपको यहाँ आने के लिए प्रेरणा देती है। यहाँ लेकर आती है और आपसे यहाँ पर खर्च करवाती है। लक्ष्मी सही मार्ग में खर्च होती है। वर्ना, यह सब धूल-मिट्टी में ही जाने वाली है। सब गटर में ही चली जाएगी। ये बच्चे अपनी ही लक्ष्मी को भोगते हैं न, हम बच्चों से कहें कि, 'तुमने हमारी लक्ष्मी को भोग लिया'। तब वे कहते हैं, 'आपकी कैसी? हम अपनी ही लक्ष्मी भोग रहे हैं' ऐसा बोलते हैं। यानी गटर में ही गया न सब!

दुनिया को यथार्थ, जैसी है वैसी जान लें तो जीवन जीने योग्य है। यथार्थ जान लें तो सांसारिक चिंताएँ-उपाधि नहीं होंगे। यानी फिर जीने योग्य लगेगा।



[ 2 ]

## लक्ष्मी के संग संकलित व्यवहार

### तो पिछली पीढ़ी का क्यों नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** घर में बहुत खर्चे हो जाते हैं।

**दादाश्री :** घर वाले कहाँ कहते हैं कि खर्च करो? आपको ज़रूरत होगी इसलिए करते हो न?

**प्रश्नकर्ता :** वह तो हिसाब से, ज़रूरत हो उतना ही करता हूँ।

**दादाश्री :** हाँ, तो फिर तब क्या करे? टिकें ऐसा करना है क्या?

**प्रश्नकर्ता :** जो खर्चे होने हैं वे तो होने ही हैं। अगली पीढ़ी के लिए कुछ रखना चाहिए न? उसके बारे में बात है।

**दादाश्री :** ओहोहो! और पिछली पीढ़ियों के लिए? जो चले गए उन लोगों के लिए कुछ भी नहीं? आपके दादा और अन्य सभी गए, उनके वहाँ तो नहीं भेजना पड़ता न?

**प्रश्नकर्ता :** वहाँ भेजने का कोई कारण नहीं है।

**दादाश्री :** पिछली पीढ़ी वाले ऐसा कहते हैं कि हमारे लिए तैयार करो! तभी तो आप अपनी खानदानियत बताते हो, नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** बेटे अच्छे हैं। सब काम करते हैं।

**दादाश्री :** तब पचासेक लाख रुपये देकर जाओ न! ज्यादा नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, पैसे देकर नहीं जाना है। ऐसा कि सब के मन में सुख-शांति रहे और कुछ नहीं चाहिए। पैसों के लिए क्या है?

**दादाश्री :** हाँ, वह ठीक है।

### कुछ साथ ले जाना है?

**दादाश्री :** यह किसका मकान है? आपका खुद का है? इतना बड़ा मकान? तो आप क्या करते हो? दूसरी, तीसरी मंजिल सब ऐसे ही हैं न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** कितने लोग हो?

**प्रश्नकर्ता :** चार।

**दादाश्री :** इस सूने घर में अन्य तीन ही लोग हैं! और शौचालय कितने हैं?

**प्रश्नकर्ता :** पाँच। शांति का स्थान वही है न?

**दादाश्री :** जो ज़रा वैराग्य आने का स्थान था, उसे इन लोगों ने वैराग्य उड़ जाए उसके लिए उपाय कर दिए। इस काल में वैराग्य आने का इतना ही स्थान था, तो उसे ऐसे ही उड़ा दिया। जहाँ वैराग्य आने की जगह थी वहीं लोग सिगरेट पीकर सोते हैं!

**प्रश्नकर्ता :** लोगों ने दो-दो लाख के आलीशान शौचालय बनवाए हैं।

**दादाश्री :** वह तो मैंने भी मुंबई में देखा है न! मुझे उन्हीं लोगों ने बताया था कि, 'दादा, यह ऐसा बनवाया है'। मैंने कहा, 'ठीक है, अब जो कर लिया वह कर लिया। अब छोड़ उसे। यह तो यहाँ के लिए किया। वहाँ ले जाने के लिए क्या किया? वह मुझे बता। यहाँ की सेफसाइड कर ली, लेकिन वहाँ ले जाने की?'

## भान, हिताहित का

भगवान ने ऐसा कहा है कि पूरा जगत् खुली आँखों से सोता है। क्यों ऐसे भारी शब्द दिए? तब कहते हैं, 'हैं तो आँखें खुली हुईं लेकिन अपने हिताहित का खुद को भान नहीं है। इस लोक का हित तो नहीं करता है लेकिन परलोक का भी हित नहीं करता। जो इस लोक का हित नहीं करता उसका परलोक का हित हो ही नहीं सकता। जो इस लोक का हित करता है उन्हीं का परलोक का हित हो सकता है। यानी, हिताहित के बिना, खुली आँखें हैं, फिर भी!

## पैसे कमाना किसलिए?

**प्रश्नकर्ता :** पैसे कमाने की ज़रूरत क्यों है?

**दादाश्री :** ऐसा है न, कि व्यवहार किससे चलता है? इसलिए। व्यवहार पैसों से चलता है। यानी, यदि हम खेतीबाड़ी करते हों, सब उगता हो, खाने लायक सब, फिर भी नमक लाना पड़ता है, कपड़े लाने पड़ते हैं, उसका क्या होगा? इसलिए थोड़ा बेचकर उसके बजाय कुछ और ले आते हैं यानी व्यवहार है न!

**प्रश्नकर्ता :** यानी व्यवहार जितना ही।

**दादाश्री :** हाँ, एक ऐसी चीज़ तय कर लो कि आपके पास ज़्यादा, सरप्लस हो तो यह ले लो। तो आपको जो चाहिए वह मिल जाएगा। पैसे कमाने की ज़रूरत तो है क्योंकि ऐसा पुण्य लेकर ही आए हैं। कोई कमा नहीं सकता। पुण्य लेकर आया है इसलिए संयोग अच्छे हो जाते हैं। संयोग जितने अच्छे होते हैं उतने पैसे मिल आते हैं।

## अहो! ब्रह्मांड के मालिक

यह जो सत्य है, वह सब सापेक्ष है, अपने-अपने अधीन है। आप तो पैसे ढूँढने वाले हैं, कमाने में लगाते हो जबकि मैं तो पैसे छूता ही नहीं। पैसा संपूर्ण सत्य नहीं है, वह सापेक्ष है। यदि मुझे सोना दोगे तो मेरे काम का ही नहीं न! हमें भीख नहीं है। जहाँ भीख हो



वहाँ भगवान होते ही नहीं। जहाँ लक्ष्मी की भीख हो, मान की भीख हो, वहाँ भगवान होते ही नहीं।

यहाँ जितनी जायदाद है उतनी ही उसकी जायदाद और वह भी पूरी जायदाद नहीं है न, यहाँ कुछ ही हिस्सा जायदाद का है और जब यहाँ कोई जायदाद नहीं होगी तब पूरे ब्रह्मांड की जायदाद उसकी खुद की। अतः मैं किसी जायदाद का मालिक नहीं हूँ। हीरा बा मालिक हूँ, मैं नहीं। मन के मालिक नहीं, वाणी के मालिक नहीं रहे।

पैसों का पूरा व्यवहार हमने अपने पार्टनर को सौंप दिया था। मेरे पास तो पैसे आएँ तो अगले दिन रहते ही नहीं थे। यदि एक लाख हो तो दो-तीन दिनों बाद दसेक हजार रहते थे! इसलिए पार्टनर समझ गए थे कि इनके हाथ में पैसे नहीं टिकते इसलिए उन्होंने पैसों के लेन-देन के व्यवहार से मुझे अलग कर दिया!

### पुण्य, लेकिन पापानुबंधी

**प्रश्नकर्ता :** पैसे कहाँ से आते होंगे?

**दादाश्री :** पैसे तो सब पुण्यशालियों के पास होते ही हैं न?

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा कुछ भी नहीं है कि पैसे पुण्यशालियों के पास होते हैं।

**दादाश्री :** तो फिर पापी के पास पैसे नहीं होंगे।

**प्रश्नकर्ता :** आजकल तो पापी के पास ही पैसे हैं।

**दादाश्री :** पापी के पास नहीं हैं, मैं आपको ठीक से समझाता हूँ। आप एक बार मेरी बात समझ लो कि बिना पुण्य के तो रुपये हमारे पास आते ही नहीं हैं। काले बाज़ार का भी नहीं और सफेद बाज़ार का भी नहीं। पुण्य के बिना तो चोरी का भी पैसा हमें नहीं मिलता लेकिन वह पापानुबंधी पुण्य है। आप जो कह रहे हो पाप, वह अंत में पाप में ही ले जाता है। वैसा पुण्य ही अधोगति में ले जाता है।

जब गलत पैसे आते हैं तब खराब विचार आते हैं कि किसका भोग लूँ, पूरे दिन मिलावट करने के विचार आते हैं। वह अधोगति में जाता है। पुण्य तो भोगता नहीं है बल्कि अधोगति में जाता है। उससे तो पुण्यानुबंधी पाप अच्छे हैं कि आज ज़रा सब्जी लाने में दिक्कत होती है लेकिन भगवान का तो नाम ले सकते हैं। और पुण्यानुबंधी पुण्य होता है तो वह पुण्य भी भोगता है और नए पुण्य भी जुड़ते हैं।

### लक्ष्मी पधारती हैं, नोबल के वहाँ

क्या किया हो तो अमीरी आती है? जब लोगों की बहुत ज्यादा हैल्प की हो, तब लक्ष्मी अपने यहाँ आती है! वर्ना लक्ष्मी नहीं आती। लक्ष्मी तो देने की इच्छा रखने वाले के वहाँ ही आती है। जो नुकसान उठाता है, ठगा जाता है, नोबिलिटी रखता है, वहाँ लक्ष्मी आती है। ऐसा लगता है कि चली गई है लेकिन लौटकर फिर वहीं आती है।

**प्रश्नकर्ता :** आपने लिखा है कि जो कमा रहे हैं, वे बड़े मन वाले ही कमा रहे हैं। लेन-देन में जो बड़ा मन रखते हैं वे ही कमाई करते हैं, वर्ना छोटे मन वाले तो कभी कमाते ही नहीं हैं!

**दादाश्री :** सभी आधी चप्पल वाले होकर घूमा करते हैं न! मैंने भूलेश्वर में बहुत देखे थे। परखा है सब को!

हर तरह से नोबल हो तो लक्ष्मी जी वहाँ जाती हैं। क्या कंजूस के पास लक्ष्मी जाती होंगी?

**प्रश्नकर्ता :** क्या पुण्य के कारण व्यक्ति धनवान बनता है?

**दादाश्री :** धनवान होने के लिए तो पुण्य चाहिए। पुण्य हो तो पैसे आते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** पैसों के लिए तो लिखा है न कि बुद्धि की ज़रूरत पड़ती है।

**दादाश्री :** नहीं, बुद्धि तो फायदा-नुकसान, दो ही बताती है।

जहाँ जाओ वहाँ वह फायदा-नुकसान दिखा देती है। वह कोई रुपये-पैसे नहीं देती है। यदि बुद्धि पैसे दे रही होती न, तो भूलेश्वर में कितने सारे बुद्धिशाली मुनीम जी हैं! जो सेठ को समझ में नहीं आता वह सब उन्हें समझ में आता है लेकिन चप्पल बेचारों की आधी ही होती हैं, पीछे से आधी घिस चुकी होती हैं जबकि सेठ तो साढ़े तीन सौ रुपयों के जूते पहनकर घूमते हैं, फिर भी बुद्ध होते हैं!

पैसे कमाने के लिए पुण्य की ज़रूरत है जबकि बुद्धि से तो पाप बंधते हैं। बुद्धि से पैसे कमाने जाओगे तो पाप बंधते हैं। मुझ में बुद्धि नहीं है इसलिए पाप नहीं बंधते। मुझ में एक सेन्ट परसेंट भी बुद्धि नहीं है!

### ज्यादा हो तब भी मुश्किल

**प्रश्नकर्ता :** लोगों का पुण्य होगा तभी उन्हें यह संपत्ति मिली है। यह पुण्य फिर ऐसा बढ़ा कि उन लोगों का उपयोग अब इस तरफ का रहने लगा है।

**दादाश्री :** वह सारा पुण्य, और ज़बरदस्त पुण्य है न! लेकिन संभालना मुश्किल हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** इसलिए यह ठीक है। परेशानी तो है ही न? बाद में वहीं से शुरुआत होती है।

**दादाश्री :** न हो उसके जैसा तो कुछ भी नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** क्या पैसे न हो, संपत्ति न हो, तो उसके जैसा कुछ भी नहीं है?

**दादाश्री :** हाँ, उसके जैसा कुछ भी नहीं है। संपत्ति तो परेशानी है। संपत्ति यदि इस ओर, धर्म में ही लग गई हो, तब कोई हर्ज नहीं है। वर्ना परेशानी बन जाती है। किसे देनी है? अब कहाँ रखनी है? ऐसी सारी परेशानी हो जाती है!

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, वैसी परेशानी है! जिनके पास बहुत जमा हो गया है उन्हें तो हमेशा परेशानी।

**दादाश्री :** बहुत मुश्किलें हैं! इसके बजाय तो कम कमाना ही अच्छा। बारह महीनों में दस हजार कमाएँ और एक हजार भगवान के वहाँ रख दे, तो उसे कोई परेशानी नहीं होती। वह लाखों दे और यह हजार दे, दोनों बराबर हैं लेकिन हजार ही दे पाएँ तब भी देना चाहिए। मेरा क्या कहना है कि खाली हाथ नहीं रहना। कम हो फिर भी उसमें से कुछ तो देना ही, ज्यादा हो और वह उस तरफ धर्म में लग गया, मतलब फिर अपनी जोखिमदारी नहीं है। वर्ना तो जोखिम है। बहुत दुःखदायी है वह तो। पैसे संभालना तो बहुत मुश्किल है! गायों-भैंसों को संभालना अच्छा है। खूँटे से बाँध दिया हो तो सुबह तक चली तो नहीं जातीं लेकिन पैसे संभालना तो बहुत मुश्किल है। मुश्किल, परेशानी है सारी।

वह तो तुम्हारे लिए अच्छा था कि तुम्हारे पैसे कहीं दिखते नहीं थे। वर्ना पैसे दबा लिए जाते। तुम्हारे तो बहुत सारे दबा लिए गए। मैं तो मुक्त हो चुका हूँ। आराम हो गया है। हमारा तो सुनना ही बंद हो गया न! मेरे जैसे को कोई देता भी नहीं न!

हमारा दयालु, प्रेम वाला स्वभाव! वसूली करने गए हों तो बल्कि और देकर आते थे! वैसे तो कभी वसूली करने जाते ही नहीं थे। यदि कभी वसूली करने जाते और उन्हें तंगी होती तो बल्कि देकर आते थे। मेरी जेब में अगले दिन खर्च करने के जो पैसे होते, वे भी दे आते थे! फिर हम अगले दिन खर्च के लिए उलझन में पड़ जाते थे! इस तरह मेरा जीवन बीता है।

### कैफ, लक्ष्मी का

**प्रश्नकर्ता :** क्या ऐसा है कि ज्यादा पैसा हो तो मोह हो जाता है? ज्यादा पैसे होना, वह शराब के समान ही है न?

**दादाश्री :** हर चीज़ का कैफ चढ़ता है। यदि कैफ न चढ़ता

हो तो जैसे ज़्यादा हों तो भी हर्ज नहीं है लेकिन कैफ चढ़ा तो शराबी हो गया। फिर लोग खुमारी में ही घूमते रहते हैं! लोगों का तिरस्कार करते हैं, 'यह गरीब है, ऐसा है।' यह बड़ा धनवान! और लोगों को गरीब कहने वाला! खुद धनवान! व्यक्ति कब गरीब हो जाए वह कहा नहीं जा सकता। आप जो कह रहे हो वैसा ही। बहुत कैफ चढ़ जाता है। आपको तो नहीं चढ़ा न!

**प्रश्नकर्ता :** चढ़ा हुआ था, अब उतर गया।

**दादाश्री :** अच्छा किया। इतनी समझदारी की। विचारशील हैं न!

### वह जाए तब, कौन सा पुरुषार्थ?

पूरी दुनिया के लोग सारी ज़िंदगी पैसों के पीछे पड़े हैं! मैंने ऐसा नहीं देखा है कि कोई पैसों से संतुष्ट हुआ हो। तो वह सब गया कहाँ?

इसलिए सभी का सबकुछ जैसे-तैसे करके चलता है। धर्म का तो एक अक्षर भी नहीं समझते और सब चलता रहता है इसलिए जब मुश्किलें आती हैं तब क्या करना चाहिए वह उन्हें नहीं आता। डॉलर आने लगें तब उछल-कूद करते हैं लेकिन फिर मुश्किलें आएँ तब उनका कैसे *निकाल* (निपटारा) करना चाहिए वह नहीं आता तब सिर्फ पाप ही बाँध लेते हैं। ऐसे समय में पाप न बंधे और समय व्यतीत कर ले, ऐसी समझ हो, उसे ही धर्म कहते हैं।

संसार का नियम ऐसा है कि हमेशा सूर्योदय और सूर्यास्त होगा ही। कर्म के उदय से अपने आप ही जैसे बढ़ते ही जाते हैं। हर तरह से, गाड़ियाँ-वाड़ियाँ, मकान सब बढ़ता रहता है लेकिन जब चेन्ज होता है तब बिखरता है। पहले जमा होता है, फिर बिखरता है। बिखरते समय शांति रखना, वही सब से बड़ा पुरुषार्थ है!

सगा भाई पचास हजार डॉलर नहीं लौटाए बल्कि गालियाँ दे। वहाँ जीवन कैसे जीना चाहिए, वह पुरुषार्थ है।

जब कोई नौकर ऑफिस से दस हज़ार का सामान चुरा ले जाए, वहाँ कैसे बरताव करें, वह पुरुषार्थ है। तब ऐसे समय में नासमझी से सब तहस-नहस कर देते हैं और पूरा जन्म बिगाड़ लेते हैं!

बहुत से वकील जब मुझसे मिलते हैं, वे जब कोर्ट के काम के लायक नहीं रहे न, तब उनकी स्थिति कैसी रहती है, वे जब उसका वर्णन करते हैं तब हमें आश्चर्य होता है!

अब इतना तो, खुद को आना चाहिए न कि, जीवन कैसे जीना चाहिए? यह व्यापार तो बाइ प्रोडक्ट है। व्यापार कोई मुख्य चीज़ नहीं है।

ये तो खुद पर से श्रद्धा खो दी है। तरह-तरह की श्रद्धा, क्या आपको समझ में आया? आपको खुद पर श्रद्धा है न? यहाँ तो लोगों की खुद पर से ही श्रद्धा खत्म हो जाती है।

### खरीद लो, अहंकार

**प्रश्नकर्ता :** आप्तवाणी में तो कहा ही गया है न कि यदि तुम किसी को हज़ार-दो हज़ार रुपये देते हो तो वह किसलिए देते हो, कि तुम अपने अहंकार, मान के कारण देते हो।

**दादाश्री :** उसने मान बेचा। अहंकार बेचा, तो हमें ले लेना चाहिए, खरीद लेना चाहिए। मैं तो पूरी ज़िंदगी खरीदता आया हूँ। अहंकार खरीदना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** इसका क्या मतलब है, दादा?

**दादाश्री :** जो आपके पास पाँच हज़ार लेने आया, उसकी आँख में क्या शर्म नहीं होगी?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** जब वह माँगता है शर्म निकालकर तब हमें 'अहंकार' बेचता है। तब यदि हमारे पास पूंजी हो तो हमें खरीद लेना चाहिए!

क्या पैसे माँगने जाना अच्छा लगता है? सगे चाचा से माँगना क्या अच्छा लगता है? क्यों अच्छा नहीं लगता? अरे, रिश्तेदारों से भी माँगना किसी को अच्छा नहीं लगता। पिता से भी लेना अच्छा नहीं लगता। हाथ फैलाना अच्छा नहीं लगता।

इसलिए खुद का अहंकार बेचने के लिए तैयार हुआ तो भी आपको पता नहीं चलता, फिर भी आप खरीदते नहीं हो तो आप किस चीज़ का व्यापार करोगे? खुद का अहंकार बेचने के लिए आया है तो आपको खरीदना चाहिए या नहीं? क्या खरीदना नहीं चाहिए? वह अहंकार बेचकर क्या कहता है? मुझे खाना दो। वह अहंकार नहीं खरीदोगे तो (आपके पास) माल क्या रहेगा? हर एक का अहंकार खरीद लो। क्या किसी के खरीदे हैं? नहीं खरीदे? कैसे हैं? खाता दिखाओ।

वह खुद का अहंकार बेचने आया है! पैसे लेने आया मतलब, क्या बेचने आया है? क्या वह सब्जी बेचने आया है? क्या वह पांच सौ डॉलर बेचने आया है? यदि बैंक में पड़े हों तो देकर ले लो, खरीद लो। जबकि खरीदने की चीज़ लोग खरीदते नहीं है। मैंने तो वह बार-बार खरीदा इसलिए यह माल इकट्ठा हुआ है!

**प्रश्नकर्ता** : उसका अहंकार खरीद लिया लेकिन हमें उसका अहंकार किस काम में आएगा?

**दादाश्री** : ओहोहो! उसका अहंकार खरीद लिया यानी जो शक्तियाँ उसमें हैं वे हम में प्रकट हो गई! वह बेचारा अहंकार बेचने आया!

### माँगने वाले के साथ...

**प्रश्नकर्ता** : हाथ-पाँव सलामत होने पर भी जो भीख माँगते हैं उन्हें दान देने से इनकार करना, क्या वह गुनाह है?

**दादाश्री** : दान न दें उसका हर्ज नहीं है लेकिन यदि उसे आप कहो कि हट्टे-कट्टे भैंस जैसे होकर क्यों ऐसा करते हो? हमें ऐसा नहीं कहना चाहिए। आप कहो कि 'भाई, मैं दे पाऊँ ऐसा नहीं है।'

सामने वाले को दुःख हो जाए, ऐसा तो बोलना ही नहीं चाहिए। वाणी ऐसी अच्छी रखनी चाहिए कि सामने वाले को सुख मिले। वाणी तो आपके पास सब से बड़ा धन है। वह धन तो टिके या न भी टिके लेकिन वाणी का धन तो हमेशा टिकता है। आप अच्छे शब्द बोलो तो सामने वाले को आनंद होगा। उन्हें आप पैसे न दो तो हर्ज नहीं है लेकिन अच्छे शब्द बोलो न! कोई आपके पास पैसे लेने आए और आपके पास बैंक में नहीं हों तो कहना चाहिए कि, 'भाई, मेरे पास बिल्कुल भी नहीं हैं। होते तो मैं आपको दे देता और अपने मन में ऐसा जाहिर करना चाहिए कि यदि होते तो जरूर देता' और इस तरह भावनापूर्वक इतने शब्द बोलना। लेकिन यदि ऐसा कहते हो कि 'हर कहीं माँगते रहते हो, कैसे इंसान हो', तो ऐसा नहीं बोलना चाहिए। हर किसी का माँगने का समय आता है। नहीं आता क्या? इसलिए विनयपूर्वक, उसे दुःख न हो उस तरह से कहना चाहिए।

लोग तो इतना ज्यादा बोल देते हैं। नहीं देना हो तो मत देना उसका सवाल नहीं है लेकिन उसे अच्छी तरह से कहो। ऐसे संयोगों में वह कैसे आ गया?

अतः अच्छे शब्दों से बोलना चाहिए। उसकी स्थिति खराब हो, किसी की अच्छी हो, क्या किसी की स्थिति हमेशा के लिए एक समान रहती है? क्या रामचंद्र जी की स्थिति खराब नहीं हुई थी? इतने महान व्यक्ति की वाइफ का अपहरण हुआ और उनको दुःख आया, तो क्या इन सब को दुःख नहीं आएगा? मनुष्य होकर जन्म लिया हो, उन सभी को दुःख तो होगा ही। हर एक देहधारी को होगा। भीतर में दीया प्रकट होने के बाद, 'मैं कौन हूँ', यह समझ में आ जाए फिर दुःख नहीं होगा। 'मैं कौन हूँ' उसका भान होना चाहिए।

### वह तो है, आत्मा का विटामिन

यहाँ बड़ा बंगला बनवाओगे तो आप जगत् के भिखारी बनोगे। छोटा घर, तो आप जगत् के राजा! क्योंकि वह पुद्गल (जो पूरण और



गलन होता है) है, यदि *पुद्गल* बढ़ेगा तो आत्मा (प्रतिष्ठित आत्मा) हल्का हो जाएगा और *पुद्गल* घटेगा तो आत्मा भारी हो जाएगा इसलिए ये जो दुनिया के दुःख हैं वे आत्मा के विटामिन हैं। ये जो दुःख हैं वे आत्मविटामिन हैं और सुख हैं, वे देह के विटामिन हैं। जो सुख हैं, वे किसके विटामिन हैं?

**प्रश्नकर्ता :** देह के।

**दादाश्री :** और दुःख हैं वे?

**प्रश्नकर्ता :** आत्मा के।

**दादाश्री :** फिर भी आप आत्मा के विटामिन दुःख को खाती नहीं हो और दुःख को आप भगाने के लिए... आत्मा का विटामिन नहीं लेती, है न? मैं तो आत्मा का बहुत सारा विटामिन ले-लेकर कैसा हो गया हूँ! अभी ही कोई पचास हजार की चपत लगा जाए न, तो आराम से विटामिन फाँक लूँगा! बहुत अच्छा हुआ! और क्लेश करने से पचास हजार वापस मिल जाएँगे, नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं मिलेंगे।

**दादाश्री :** क्लेश करने से गए हुए वापस नहीं मिलेंगे।

**प्रश्नकर्ता :** वह तो समझ में आ गया। वापस नहीं मिले!

**दादाश्री :** यह सब किस आधार पर हुआ है, उसका कारण जानती हो?

**प्रश्नकर्ता :** जब पचास हजार गए थे तब क्लेश किया था लेकिन वापस नहीं आए। इसलिए समझ में आ गया कि नहीं आ रहे।

**दादाश्री :** समझ में आ गया न! हाँ! पचास हजार वापस नहीं आए! तो अभी भी संयोजन तो होगा न! संयोजन नहीं रहा।

**प्रश्नकर्ता :** संयोजन तो है लेकिन देखते हैं, क्या होता है?

**दादाश्री** : संयोजन है, तब तक शायद थोड़ा-बहुत, कुछ आ भी जाए। हमें उसे डेड मनी नहीं कहना है।

**प्रश्नकर्ता** : नहीं कहती।

**दादाश्री** : डेड मनी तो मत कहना, 'दादा, अस्सी हजार रखे हैं, अब क्या होगा?' तब मैंने कहा, 'अब जो होना था वह तो हो गया! अब डेड मनी न हो इतना ध्यान रखना!'

ये तो आपके साठ हजार अभी तक डेड मनी नहीं हुए हैं लेकिन स्टीमर में आप जा रहे हों और साठ हजार के नोटों से भरा पेकेट हो, फिर बाहर डेक पर घूमने गए और यदि वह समुद्र में गिर जाए, तब वह डेड मनी कहलाएँगे। ये डेड मनी कहलाएँगे। ये तो वापस आ सकते हैं, रुपये की अपेक्षा में दो आने-चार आने आ सकते हैं।

### नियम, निवेशन का

**प्रश्नकर्ता** : पैसों का चार जगहों पर निवेश करना चाहिए, ऐसा आपने कहा है। तो वे चार जगह कौन सी हैं?

**दादाश्री** : एक तो बैंक में, हमें व्यवहार चलाने के लिए चाहिए न? नकद! फिर, मकान में, अचल संपत्ति में! फिर चल-अचल संपत्ति यानि सोना, जेवर इत्यादि में और अंत में व्यापार में।

**प्रश्नकर्ता** : यह ज़रा विस्तार से समझाइए न?

**दादाश्री** : हमेशा रुपये का स्वभाव कैसा है? चंचल। इसलिए दुरुपयोग न हो उस तरह से आपको सदुपयोग करना चाहिए। क्योंकि ऐसा नियम है कि उन्हें स्थिर मत रख देना। संपत्ति कितने प्रकार की कही गई है? तब कहे कि, एक, चल संपत्ति! चल संपत्ति यानी ये डॉलर और ऐसा सब और दूसरी, 'अचल संपत्ति' यानी मकान इत्यादि। पर उनमें से भी अधिक समय तक अचल संपत्ति ही रहती है। यह 'अचल-चल संपत्ति' टिकती है, और नकद डॉलर इत्यादि हों न, वह तो जाना ही है ऐसा समझना। मतलब, नकद का स्वभाव कितने समय

का है? दस साल के आगे ग्यारहवें साल में नहीं टिकते। फिर सोना इत्यादि का स्वभाव चालीस-पचास साल टिकने का और अचल संपत्ति का स्वभाव सौ साल टिकने का है। यानी सब की अवधि अलग-अलग होती है लेकिन अंत में तो सब चले ही जाना है इसलिए यह सब समझकर करना चाहिए। ये वणिक पहले क्या करते थे? नकद रकम पच्चीस प्रतिशत व्यापार में लगाते थे, पच्चीस प्रतिशत हाथ में रखते थे, पच्चीस प्रतिशत सोने में और पच्चीस प्रतिशत मकान में लगाते थे। इस प्रकार पूंजी निवेश करते थे। बड़े पक्के लोग! अभी तो बच्चों को ऐसा सिखाया भी नहीं जाता! क्योंकि अब तो उतनी पूंजी ही नहीं रही, तो क्या सिखाएँगे?

पैसों का काम ऐसा है कि हमेशा ग्यारहवें साल में पैसे खत्म हो जाते हैं। दस साल तक चलते हैं। यह बात सच्चे पैसे की है। खोटे पैसे की तो बात ही अलग है! सच्चे पैसे ग्यारहवें साल तक खत्म हो जाते हैं!

**प्रश्नकर्ता :** यानी चले जाते हैं क्या, दादा?

**दादाश्री :** वैसा स्वभाव ही है। चंचल स्वभाव। तब लोग क्या कहते हैं? नहीं, हम नहीं निकालते हैं! अभी सन् पचासी है तो बताओ, ग्यारह साल पहले कौन सा सन् था?

**प्रश्नकर्ता :** चौहत्तर।

**दादाश्री :** तब सन् चौहत्तर के पहले का कुछ भी धन अपने पास नहीं होगा! यह चौहत्तर के बाद जितना धन कमाया उतना यदि दस साल में आप नहीं कमाए होते तो खत्म!

दस साल बाद लक्ष्मी चली जाती है तब ये लोग कहते हैं, 'मेरे तो अठारह सालों से पैसे बैंक में जमा हैं। वह तो टिके ही हैं न?' तब हम कहते हैं, 'नहीं, अभी आपके पास कौन सी लक्ष्मी होगी? 1975 के बाद की ही। वह तो आप हिसाब निकालोगे तब पता चल जाएगा। सन् 1975 के पहले की तो कहीं भी खर्च हो ही गई होगी।

यह तो सन् 1975 के बाद के दस सालों में जो हो वह होगी। हिसाब निकालोगे तो पता चलेगा या नहीं? अब जब सन् 1986 आया तब सन् 1976 के बाद की लक्ष्मी होगी। यदि एक दशक ही व्यक्ति का खराब समय आ जाए तो खत्म हो जाता है! उड़ जाता है! अब ज़्यादा कल्पनाएँ करने की ज़रूरत नहीं है। सब 'व्यवस्थित' है। आराम से सो जाना चाहिए। यह सब झंझट तो चिंता करने वाले को है! उन्हें ये सारी झंझटें चाहिए! वर्ना सारी रात सोना कैसे रास आया? इसलिए थोड़ा-थोड़ा चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, धंधे में तो स्पेक्युलेशन (अंदाज) रखना ही पड़ता है न? धंधे में स्पेक्युलेशन करें तो पैसे आते-जाते, बढ़ते-घटते रहने वाले ही हैं। तो आप किस तरह समय बाँधते हो?

**दादाश्री :** मैं क्या कहता हूँ कि सन् 74 में धन आया हो तो वह अभी खत्म हो चुका होगा।

**प्रश्नकर्ता :** मतलब, नकद इन्वेस्ट (निवेश) किया हुआ। घर वगैरह नहीं?

**दादाश्री :** नियम ऐसा है कि नकद के लिए दस-ग्यारह साल हैं। फिर चल-अचल है, ये सोना इत्यादि। उसके लिए कुछ साल हैं। ऐसा है, यदि सोना बेचना हो तो उसके तुरंत पैसे मिल जाते हैं इसलिए उसे चल-अचल संपत्ति कहते हैं। क्या वह डॉलर जैसा है? तो कहते हैं कि, 'नहीं'। फिर पत्नी किच-किच करती है कि सोना भी नहीं पहनने देते। इसलिए ऐसे देर-सवेर हो जाता है और मकान? लोग क्या कहेंगे? फ्रेंड्स क्या कहेंगे? यानी वह भी देरी हो जाती है और डॉलर? तुरंत रख आते हैं! साठ हजार रख आते हैं न! डॉलर हाथ में थे, वे तो रख आते हैं न! इस तरह उसका बहुत हिसाब लगाता हूँ। ऐसा होता है या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** ईश्वर की इच्छा से, जितना आए उतना ले लेना चाहिए।

**दादाश्री** : हाँ, यह तो उत्तम है। ईश्वर की इच्छा यानी क्या? वह तो आपका प्रारब्ध ही है। अपना ही रिएक्शन आता है। ईश्वर इसमें हस्तक्षेप नहीं करते हैं। यह अपना ही प्रारब्ध है, बस ! इसलिए उस तरह से रहना।

## सोने में निवेश

**प्रश्नकर्ता** : क्या सोने में लगाना चाहिए?

**दादाश्री** : सोने में लगाना चाहिए न! वह पुराने ज़माने का हिसाब है। यदि अभी हमें ब्याज में नुकसान हो रहा हो तो सोना नहीं लेना चाहिए। लेकिन साथ ही साथ, चले जाएँगे, उसका भी ध्यान रखना। सोने को ज़रा देर लगती है। अभी तो तुरंत, वह है, ऐसा ही कहा जाएगा न! पहले तो क्या होता था? लोगों में खराब दिखेगा कि मेरा सोना बेचने का समय आ गया! जब ऐसे नियम बनाए थे न, वह समय ही अलग था! जब सोना बेचने का समय आ जाए तब लोग क्या कहते थे? आप सोना मत बेचना, हं। यह सोना रहने दो न और वे किसी तरह चला लेते थे। फिर ज़रूरत पड़ने पर तो ज़मीन, खेत अरे, घर बेचने का समय आ जाता है! और नकद हों तो तुरंत शेयरबाज़ार में जाकर शेयर का कर लेते हैं और फिर, 'नहीं हैं', ऐसा मानते हैं। यानी उसे शेयरबाज़ार में जाने से रोकते हैं। आपको समझ में आया न?

**प्रश्नकर्ता** : शेयरबाज़ार में सट्टेबाज़ी करना अच्छा या सोना खरीदना?

**दादाश्री** : शेयरबाज़ार में तो जाना ही नहीं चाहिए। शेयरबाज़ार में तो खिलाड़ियों का काम है। ये बीच वाले सीधे लोग फँस जाते हैं। इसमें खिलाड़ी लोग लाभ उठा लेते हैं। पाँच-सात खिलाड़ी मिलकर भाव तय कर देते हैं। उसमें ये सीधे लोग बीच में फँस जाते हैं! इसमें किसी को तो फायदा होता है न! इसमें बड़े खिलाड़ियों को लाभ होता है और जो छोटे लोग हैं, वे सिर्फ खर्चे निकालते हैं। जबकि खिलाड़ियों

को तो रात-दिन यही करना होता है! ये बीच वाले जो इधर से कमाकर उधर डालते हैं, वे मारे जाते हैं। इसलिए जब मेरे एक रिश्तेदार ने मुझसे पूछा तब मैंने उनसे कहा कि यह (शेयरबाज़ार) मत करना।

**प्रश्नकर्ता** : आपने कहा न कि ग्यारह साल में पैसे खत्म हो जाते हैं, तो दस साल बाद हम उन पैसों से सोना खरीद लें तो वह टिकेगा न?

**दादाश्री** : नौ साल बाद सोना खरीदेंगे तो फिर टिकेगा लेकिन तब ऐसी बुद्धि नहीं रहती। वह कहती है, लेकिन सोने का ब्याज नहीं मिलता है न! इसलिए रख दो न साठ हजार। बुद्धि ऐसा कहती है कि यदि रख देंगे तो बारह महीनों में छः हजार डॉलर आएँगे।

अतः इन पैसों को धीरे-धीरे सही उपयोग में खर्च करना चाहिए। या फिर मकान बना लेना गाँव में। यदि गाँव में एक मकान हो तो दूसरा मुंबई में बनवा लेना। कुछ, थोड़े-बहुत सोने में रखना लेकिन सब बैंक में नहीं रखना चाहिए वरना किसी दिन ऐसे गुरु से भेंट हो जाएगी जो कहेगा, 'अभी शेयरबाज़ार में भाव अच्छे हैं'। उस लालच में डाला नहीं कि वह तो फिसला! उसके तो साठ हजार गए न!

## विदेश की पॉलिसी

**प्रश्नकर्ता** : आपने यह जो व्यवहार बताया वह हिन्दुस्तान के लिए, उस समय के अनुसार था। अब यहाँ अमरीका में क्या हुआ? अभी दस साल पहले ही सोने की छूट मिली कि अमरीकी नागरिक मार्केट में जाकर सोना खरीद सकते हैं। इसके पहले तो वे सोना खरीद ही नहीं सकते थे।

**दादाश्री** : अच्छा!

**दादाश्री** : ये जो गहने बनवाते हैं, उसमें से तो सोना निकाल लेते हैं, हमारे पास तो कुछ बचता ही नहीं है। अभी कोई पूछे कि मुझे सोना संग्रह करना है, तो मैं कहूँगा कि सोने के ईंट के रूप में

संग्रह करना, लेकिन ईंट तो फिर वे बेच देते हैं न! इसलिए उन्हें अभी कैसे समझाना चाहिए यही समझ में नहीं आता। अतः 'व्यवस्थित' में क्या होता है वह देखो! क्या करें?

**प्रश्नकर्ता :** यहाँ तो फॉरेनर्स को एक सप्ताह वेतन देर से मिले तो वे तो भूखे ही मर जाएँगे।

**दादाश्री :** हाँ, वह तो है। ये बेचारे तो पैसे आते ही खर्च करने लगते हैं। उन्हें खर्च ही करना है, हं। डलनेस रहती है। ये इतने कम हो जाएँगे या ऐसा-वैसा कुछ नहीं। जैसे संयोग आते हैं वैसे खर्च करते रहते हैं। बाद में डॉलर खोजते हैं। बैंक में खत्म हो जाने पर खोजते रहते हैं। यह तो अच्छा है कि अब सारे साधन उपलब्ध हैं। वीजा और क्रेडिट कार्ड सब हैं।

**प्रश्नकर्ता :** पूरा देश उसी पर चलता है! यदि ये कार्ड बंद कर दें तो सब बंद!

### लक्ष्मी की लिमिट स्वदेश के लिए

**दादाश्री :** और ये जो मकान के लिए कर्ज़ मिलते हैं न, उस कारण ही मकान मिलते हैं। वर्ना तो किसी के पास मकान ही नहीं होते। बहुत समझदार ने यह सिस्टम ढूँढ निकाला है। वर्ना कोई भी अमरीकन मकान-मालिक बनता ही नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** दुनिया में यह एक ही ऐसा देश (अमरीका) है जहाँ अस्सी प्रतिशत लोग अपना घर आँन करते हैं (मालिक हैं)। दादा, अपने अमरीकन महात्मा पूछ रहे हैं कि हमने जो कुछ थोड़ा-बहुत कमाया है, क्या उसे लेकर इन्डिया चले जाएँ?

**दादाश्री :** ना-ना, ऐसी कोई ज़रूरत नहीं है। ऐसे घबराने की कोई ज़रूरत नहीं और जब डर लगे उस समय मुझे खत लिखना, तो मैं आपको लिख दूँगा कि आ जाओ। डर से नींद न आए तो मैं कहूँगा कि आ जाओ। अभी तो आराम से नींद आती है न?

**प्रश्नकर्ता** : आती है, दादा।

**दादाश्री** : हाँ, इसलिए डर रखना ही मत। हम आपको आशीर्वाद देंगे। डरने की क्या ज़रूरत है?

**प्रश्नकर्ता** : विशेष रूप से बच्चों के बारे में सोचते हैं कि अमरीका में अच्छे संस्कार नहीं मिलते।

**दादाश्री** : हाँ, यह सब तो ठीक है। यदि यहाँ पैसे कमा चुके हो तो अपने घर लौट जाना। बच्चों को अच्छी तरह पढ़ाना।

**प्रश्नकर्ता** : आपने कहा कि पैसे कमा लिए हों तो लौट जाना। लेकिन पैसे की तो कोई लिमिट नहीं होती इसलिए आप कोई लिमिट बताइए। आप कोई ऐसी लिमिट बताइए कि उतने पैसे लेकर हम इन्डिया लौट जाएँ।

**दादाश्री** : हाँ। आपको हिन्दुस्तान में कोई रोज़गार करना हो उसके लिए कुछ रकम चाहिए तो ऐसा करना कि ब्याज पर लेना न पड़े। थोड़ा-बहुत बैंक से लेना पड़े तो ठीक है, बाकी कोई उधार नहीं देता। वहाँ तो कोई उधार नहीं देता। यहाँ भी कोई उधार नहीं देता, सिर्फ बैंक ही देता है इसलिए उतना साथ में रखना चाहिए। बिज़नेस तो करना ही पड़ेगा न? वहाँ भी खर्च निकालना पड़ेगा न? लेकिन वहाँ (भारत में) बच्चे बहुत अच्छे हो जाएँगे। यहाँ पर डॉलर मिलते हैं लेकिन बच्चों के संस्कार की परेशानी है न!

### सुख किसमें?

मतलब, यह सुख तो माना हुआ सुख है। यदि पैसे होना ही सुख का कारण होता तो पैसे वाले तो बहुत सारे हैं बेचारे। इसलिए पैसे! उनमें भी बहुत लोग खुदकुशी करते हैं। यदि पति अच्छा हो तो सुख होता है लेकिन पति अच्छे होने पर भी बहुत सी पत्नियों को अपार दुःख रहता है। बच्चे अच्छे हों तो सुख है लेकिन ऐसा भी कुछ नहीं होता है।



सुख किसमें है? क्या इन स्टोर्स में हैं? ये जनरल स्टोर्स होते हैं न! वहाँ हम जो सारी चीजें देखते हैं क्या वे सब सुख देने वाली नहीं हैं? दो सौ डॉलर लेकर घुसे तो आनंद-आनंद हो जाता है। यह लिया और वह लिया और लाते समय फिर क्लेश। पति से कहती है, 'मैं अब किसमें रखूँ?' तब पति कहता है कि, 'तो फिर लिया किसलिए?' वहाँ भी फिर क्लेश। पति ऐसा कहता है 'बेकार में ही खरीदती हो और फिर अब चिल्ला रही हो'। उसमें सुख होता होगा? स्टोर वाले को भी सुख नहीं होता। वह किसलिए दिन भर वहाँ बैठा रहता है? अब पूछना हो तो पूछो। तुम्हारा समाधान कर दूँगा। तुम्हें जैसा सुख चाहिए वैसा सुख दूँगा।

### स्टोर भी नमस्कार करते हैं 'इन वीतरागी' को

हमें अमरीका में स्टोर में ले जाते हैं। कहते हैं, चलिए दादाजी। तब स्टोर बेचारा हमारे पैर छूता रहता है कि धन्य है! ज़रा भी नज़र नहीं बिगाड़ी हम पर! पूरे स्टोर में कहीं पर भी दृष्टि बिगाड़ी ही नहीं। हमारी दृष्टि उन पर बिगड़ती ही नहीं! हम देखते ज़रूर हैं, लेकिन दृष्टि नहीं बिगड़ती है। हमें क्या ज़रूरत है किसी चीज़ की? हमें कोई चीज़ काम नहीं आती न! आपकी दृष्टि बिगड़ जाती है न?

**प्रश्नकर्ता :** जो ज़रूरत हो वह चीज़ लेनी पड़ती है।

**दादाश्री :** हाँ, हमारी दृष्टि नहीं बिगड़ती है। स्टोर हमें इस तरह नमस्कार करता है कि ऐसे पुरुष नहीं देखे! और तिरस्कार भी नहीं, फर्स्ट क्लास! राग भी नहीं, द्वेष भी नहीं, वीतराग! आए वीतराग भगवान!

ये लोग तो ऐसे हैं कि यदि डॉलर हाथ में हों तो स्टोर खाली कर दें, हाथ में होने चाहिए फिर मुझे इस स्टोर में ले जाते हैं कि 'दादा, क्या लेना है?' मैंने कहा, 'मुझे कोई चीज़ बेकार नहीं लगती लेकिन मुझे ऐसा भी नहीं लगता कि यह चीज़ लेने जैसी है। उसे लेने से वज़न नहीं बढ़ना चाहिए। हाथ में न पकड़ना पड़े। वर्ना ये तो फिर हाथ में ऐसे लेते हैं! इतनी बड़ी बैटरी (टॉर्च) खरीदे तो उसे हाथ में लिए होते हैं!

एक भाई तो स्टोर में ले गए। वे मुझे कहने लगे कि, 'हमारी रोज छः सौ-सात सौ डॉलर की बिक्री होती थी। हमारा स्टोर पचास प्रतिशत प्रॉफिट वाला है। आज आप आए हैं तो हजार डॉलर की बिक्री हुई है। उसने बड़ी बैटरियों का इतना बड़ा बक्सा भरकर दिया, 'ले जाइए यह बक्सा।' मैंने कहा, 'अरे भाई, यह बैटरी हम किसे देंगे?' तब उसने कहा, 'किसी को दे देना।'

फिर मैंने उसे कहा, 'छः सौ डॉलर में तो व्यापार कैसे चलता है, भाई?' कैसे इंसान हो? तब कहने लगा कि, 'हमें फिफ्टी परसेन्ट (पचास प्रतिशत) फायदा है और किसी-किसी आइटम में सेवन्टी और किसी में दो सौ प्रतिशत फायदा होता है।' मैंने कहा, 'ओहोहो, तब तो आप सचमुच में अमरीका पर उपकार कर रहे हो। उपकारी लोग!'

**प्रश्नकर्ता :** इनकी कार्ड, गिफ्ट वगैरह सब बेचने की दुकान है।

**दादाश्री :** दुकान नहीं खोलते तो किसी के यहाँ जाँब (नौकरी) करनी पड़ती। अब जाँब नहीं करनी पड़ती न?

**प्रश्नकर्ता :** दुकान ही जाँब हो गई न?

**दादाश्री :** यानी, कुछ तो करना पड़ता है न! जाँब करने जाओ वहाँ फिर वह हर समय डाँटता रहता है। यहाँ आपको थोड़े ही निकालने वाले हैं! अरे भाई, शांति से बैठने दे न! उससे तो अच्छा है। ऐसा कुछ, दुकान खोल दी न! कम तो कम ही सही!

### वहाँ है, सिर्फ लोभ

इनमें कुछ जो जातियाँ होती हैं, जो डेवेलप जातियाँ हैं, वे बहुत लोभी होते हैं। दिन भर लोभ में ही रहते हैं। पाँच-पच्चीस लाख बैंक में पड़े हों न फिर भी सारे दिन लोभ में ही रहते हैं। यहाँ एक इटालियन महिला आती है, वह दर्शन-वर्शन सब करती है लेकिन पूरे दिन लोभ में ही रहती है। दादा को कुछ देना पड़ेगा, इससे तो दूर ही रहना अच्छा। जबकि हम कुछ माँगते नहीं हैं लेकिन उसके मन में डर रहता है।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन जब ज़िंदगी में और कुछ देखा ही न हो तो क्या हो सकता है, दादा?

**दादाश्री :** दूसरी कुछ जातियाँ हैं जो पूरे पैसे तुरंत ही खर्च कर देती हैं और ये तो, दिन भर पैसे में ही पड़े रहते हैं। बहुत लोभी होते हैं वे तो। क्या, सिर्फ चींटियाँ ही लोभी होती हैं? सब लोभी हैं, ज़्यादातर लोग होते हैं। मैं तो घर बैठे-बैठे देखता रहता हूँ। अरे वह कौआ, कहीं से रोटी लाकर हमारी खिड़की के वेन्टिलेटर के बीच में लकड़ी होती है न, वहाँ रखकर चला जाता है। फिर जब भूख लगे और किसी जगह कुछ न मिले तब फिर वह आकर खाता है। अरे, क्या तुम्हें इस हद तक का परिग्रह करना आ गया? जबकि और कोई परिग्रह नहीं करते हैं, चिड़ियाँ नहीं करती हैं। वे तो खाकर सो जाती हैं, दूसरी कोई झंझट नहीं। ये तो इतनी ज़्यादा अक्ल वाले।

### उसमें खुद का कितना नुकसान?

क्या तुम्हें ये सारी बातें जाननी हैं और ऐसा करना है कि हमेशा भीतर में शांति बनी रहे? भीतर शांति हो जाने के बाद ये आपके खर्चे बंद हो जाएँगे, कम हो जाएँगे, तो क्या करोगे? इन स्टोर वालों की बिक्री कम हो जाएगी। इन स्टोर वालों की बिक्री किस कारण से है? अशांति के कारण। यह लूँगा तो सुख मिलेगा, वह लूँगा तो सुख मिलेगा, इस कारण स्टोर वाले के यहाँ बिक्री है। ज्ञान के बाद हमारे महात्माओं के कारण स्टोर वाले के यहाँ बिक्री नहीं रहती क्योंकि वे तो आराम से घर जाते हैं। स्टोर में क्या करने जाएँगे? बाकी लोग तो भटकते रहते हैं।

ये बहन तो, उनके फादर ने किस प्रकार उनका खर्चा उठाया होगा? ऐसी खुले हाथ वाली थी। अब वह आदत छूट गई। वह बहुत अच्छा हो गया। एक तो वह खुद का नुकसान करती थीं, घर वालों का भी नुकसान करती थीं और डॉलर भी खर्च होते। अरे भाई, डॉलर का नुकसान भले ही होता लेकिन खुद का कितना नुकसान होता है?

## दूध से धोकर शेर में खोए

क्या स्टोर में जाती हो? क्या लेने जाती हो?

**प्रश्नकर्ता :** ग्रासरी (अनाज)।

**दादाश्री :** अन्य कुछ ज़्यादा तो नहीं ले आती है न? साड़ियाँ-वाड़ियाँ वगैरह? कान दिखा तो? हीरे-वीरे नहीं पहने? हीरे-वीरे कुछ भी नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** अभी हमारी ऐसी क्लास नहीं है।

**दादाश्री :** तब क्या लोअर क्लास में हो?

**प्रश्नकर्ता :** लोअर क्लास में तो नहीं लेकिन पैसों की जो गांठ है, लोभ की गांठ छूटती नहीं है।

**दादाश्री :** ओहोहो! एक आदमी की लोभ की गांठ छूट नहीं रही थी फिर उसने शेरबाज़ार में सौदे किए और मुझे कहता है कि, 'दादा, पिछले साल मेरे साठ हज़ार फँस गए'। तब मैंने कहा, 'अरे, वहाँ तो लोभ की गांठ छूटती नहीं और फिर यह क्या किया?' तब कहता है, 'लोभ के कारण ही! और साठ हज़ार खोने को हैं इसलिए विधि कर दीजिए। विधि कर देंगे तो शायद दस-पंद्रह हज़ार वापस मिल जाएँ।' तो भाई, इस तरह चले जाएँ उसके बजाय तो हम खुद ही समझदारी क्यों न रखें?

एक महात्मा ने पूछा कि 'शेरबाज़ार का काम मैं जारी रखूँ या बंद कर दूँ?' मैंने कहा, 'बंद कर देना।' आज तक जो किया उतना धन वापस खींच लो। अब बंद कर देना चाहिए। वर्ना अमरीका में आना, न आने के बराबर हो जाएगा! जैसे थे, वैसे। खाली हाथ घर लौटना पड़ेगा!' किसी को दिए होते न, तो वह बेचारा खत्म हो चुका हो फिर भी वह (लेने वाला) याद रखता है कि, 'नहीं, मैंने उनसे लिए थे', और यदि वह कमाए तो हमें बुलाता है कि मेरे यहाँ आइएगा। लेकिन वहाँ कौन बुलाएगा? ये तो दूध से धोकर खो दिए।

## पड़ गए, ब्याज के लालच में?

**प्रश्नकर्ता :** आपने ऐसा प्रश्न किया न कि पैसों का क्या किया? पैसों को कहाँ रखा?

**दादाश्री :** ऐसा है न, कल पैसे आए हों न, तो वे एक रात भी नहीं रखते। तुरंत ही एक प्रतिशत के दर से ब्याज पर दे देते हैं। उसका कब अंत आएगा? आपका गाँव तो वही का वही है न?

जब भी व्यक्ति ब्याज लेने की शुरुआत करता है तब उसकी गिनती मुसलमानों में भी नहीं हो सकती। सच्चा मुसलमान ब्याज नहीं लेता। क्योंकि ब्याज की कीमत नहीं है। ब्याज के धंधे में पड़ा हुआ मनुष्य मिटकर क्या बनेगा, वह तो भगवान ही जाने! आप बैंक में रखो तो उसमें हर्ज नहीं है, अन्य किसी को उधार दो तो उसमें हर्ज नहीं है, लेकिन लालच में पड़ा व्यक्ति, दो प्रतिशत, डेढ़ प्रतिशत, सवा प्रतिशत, ढाई प्रतिशत, वह लालच में पड़ा है। उस व्यक्ति का क्या होगा वह कह नहीं सकते। मुंबई में अभी सब को ऐसा हो गया है। अपने यहाँ तो इतना ज्यादा धन कहाँ से होगा? लेकिन ये लालच में पड़े हैं न! ब्याज के लालच में दो प्रतिशत और ढाई प्रतिशत, नियम से ब्याज हो तब तक चल सकता है। वर्ना व्यक्ति का तो खून ही सूख जाता है। उन्हें कभी भी मोक्ष में जाने का टिकट नहीं मिलेगा। क्योंकि उनके लिए तो पैसा ही सबकुछ है।

## ब्याज और दलाली का व्यापार

अन्य कुछ जाति में उनका अक्ल वाला पोइन्ट यह है कि ब्याज नहीं लेना चाहिए। ब्याज लेने वाला व्यक्ति क्रूअल (दुष्ट) होता जाता है। किसी स्त्री-बहन को भी ब्याज पर रुपये दिए हों तो भी क्रूअल्टी (दुष्टता) करता है। लेकिन अभी हमारे पास ऐसा नहीं है। इसलिए बैंक जितना लेते हैं उस हिसाब से लेना चाहिए। हो सके तो किसी को कर्ज नहीं देना चाहिए। यदि वह लौटा न सके तब दुःख भी उतना ही होता है। भयंकर दुःख होता है।

किसी को भी निजी तौर पर उधार नहीं देना चाहिए। अन्यथा व्यक्ति का मन कसाई बन जाता है। इसलिए हमने तो हमारे पार्टनर को पहले से ही कह दिया था कि हम ब्याज देकर लाएँगे लेकिन हमें ब्याज लेना नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** यहाँ तो ऐसा है कि किसी को धंधे के लिए हज़ार, दो हज़ार डॉलर देने के बाद फिर वापस माँगें तब वह कहता है कि, 'आपने कब दिए थे?' वैसे तो उन लोगों को कहा ही हुआ होता है कि, 'मैं ब्याज लूँगा, बैंक में जितना होता है उतना लूँगा'।

**दादाश्री :** ब्याज लेने में हर्ज नहीं है लेकिन ये तो ब्याज लेने का व्यापार करने लगे! व्यापार, ब्याज-दलाली खाने का। आपको क्या करना चाहिए? जिसे उधार दिया हो उसे कहना चाहिए कि, 'जितना बैंक का ब्याज होता है, उतना आपको मुझे देना पड़ेगा।' लेकिन फिर यदि किसी व्यक्ति के पास ब्याज भी नहीं है, मूल धन भी नहीं है तो वहाँ पर मौन रहना। उसे दुःख हो ऐसा व्यवहार मत करना। यानी हमारे पैसे डूब गए, ऐसा मानकर चला लेना। समुद्र में गिर जाएँ, तो क्या कर सकते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** और आप्तवाणी में भी कहा है कि देते वक्त पूछ लेना कि, 'कब लौटाओगे?' साल-डेढ़ साल में लौटा देना, लेकिन मन में मान लेना कि गए ही समझो।

**दादाश्री :** आप, गए ऐसा मानकर ही चलो। 'नो पॉज़िटिवनेस'। समुद्र में गिर गए हों तो क्या किसी से खोज करवाते हैं? नहीं खोजते हैं न?

अब यदि हीरे की अंगूठी पहनकर घूमते हों और कोई गुंडा आकर कहे, कि 'ऐ, दे दो!' तब सबकुछ दे देना पड़ता है या नहीं? वहाँ क्लेम है किसी प्रकार का? यानी यहाँ दोगे तो वह नहीं मिलेगा। वर्ना वह मिलेगा। धन का स्वभाव कैसा है खत्म हो जाने का। टाइम आने पर चला जाता है। इसलिए यही इसका उपाय है।

मन से यह भाव हटा दो और निश्चय करो कि यह ब्याज का व्यापार ही नहीं करना है।

**प्रश्नकर्ता :** व्यापार नहीं है। दस साल हो गए, नया कोई व्यापार नहीं है।

**दादाश्री :** वह तो ऐसा है, नया नहीं है। वह तो फँस जाते हैं इसलिए सब को वैराग्य आता है। अब फँसने का टाइम आ गया है। अभी यह टाइम फँसने का है। क्योंकि अब तक लेने का ही काम किया है। सीजन अच्छा आया लेकिन अब सीजन खत्म होने वाला है।

अब सत्संग की बातें करो। अनंत जन्मों तक बहुत भटके हो। बाल सफेद हुए तभी से सिग्नल गिर गया। प्लेटफॉर्म आ गया उतरने का! लेकिन फिर भी रुपये छोड़ते नहीं हैं इसलिए भगवान ने शास्त्र में कहा था कि ज्ञानी पुरुष की तन-मन-धन से सेवा करना।

### हिंसक व्यापार

**प्रश्नकर्ता :** ये जो पहले कीटनाशक दवाईयों का व्यापार करते थे, उस समय उन्हें दिमाग में यह बात नहीं बैठती थी। कर्मों के हिसाब से यह जो व्यापार आया है, उसमें हर्ज क्या है? किसी को माँस बेचना पड़ता है तो उसमें उसका क्या दोष है? उसके तो कर्मों के हिसाब में जो था वही आया न?

**दादाश्री :** ऐसा है न, यदि मन में शंका पैदा न हो तब तक चलता रहता लेकिन ये जो शंका हुई वह उनके पुण्य के कारण। ज़बरदस्त पुण्य कहा जाएगा। वर्ना तो जड़ता आ जाती, वहाँ कोई जीव मरे या कम नहीं हुए। आपके ही भीतर में जीव मर जाते हैं और जड़ता आती है। जागृति खत्म हो जाती है, डल हो जाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** मुझे अभी भी सब पुराने मित्र मिलते हैं, तो सब से यही कहता हूँ कि इसमें से निकल जाओ और उन्हें पचास उदाहरण बताए कि, 'देखो, इतना ऊँचा चढ़ा हुआ, नीचे गिर गया', लेकिन

किसी के दिमाग में नहीं बैठता था! फिर बाद में ठोकर खाकर सब निकल गए।

**दादाश्री :** यानी, कितना पाप होगा तब हिंसा वाला व्यापार हाथ में आता है।

ऐसा है न, इस हिंसक व्यापार में से छूट जाएँ तो उत्तम होगा। और भी कई व्यापार होते हैं। अब एक व्यक्ति ने मुझसे कहा कि सारे व्यापारों से तो यह मेरा किराने का व्यापार सब से ज्यादा लाभदायी है। मैंने उसे समझाया कि जब कीड़े हो जाते हैं तब क्या करते हो। ज्वार और बाजरा इत्यादि सभी में? तब उसने कहा, उसमें हम क्या करें? हम उसे छान लेते हैं। ऐसा सब करते हैं। उसकी देखभाल करते हैं। लेकिन फिर भी वे रह जाते हैं तो हम क्या करें? मैंने कहा, 'रह जाते हैं उसमें हमें हर्ज नहीं है लेकिन आप उन कीड़ों का मूल्य लेते हो? वजन में? हाँ, भले ही दो तोला! अरे, यह भी कोई लाइफ है? उन जीवों का तोल होगा एकाध तोला! उस तोल के पैसे लिए!

**प्रश्नकर्ता :** जब वकील दलील करते हैं, तब उन्हें कभी-कभी झूठ बोलना पड़ता है क्योंकि वह उनका व्यापार है न! तो क्या उससे बंधन होगा?

**दादाश्री :** इन सब लोगों की गति अच्छी नहीं होती। हम साफ-साफ नहीं कहते, संक्षिप्त में ही कहते हैं। क्योंकि साफ-साफ कहेंगे तो ऐसा है कि शर्मा जाएँगे। डॉक्टरों और वकीलों, सभी के बारे में साफ-साफ कहेंगे तो शर्मा जाएँगे।

### वकालत, बुद्धि की भी

**प्रश्नकर्ता :** मुझे बहुत समय से ऐसे प्रश्न होते हैं। तो मेरे कुटुंब में कोई वकील बनना चाहे तब क्या मैं कह दूँ कि मत बनना?

**दादाश्री :** वैसे तो 'वह' वकील बन ही चुका है। फिर दोबारा वकील क्यों बनना चाहता है? सत्युग में 'खुद' 'वकील' नहीं था।



अब, ज्ञान लेने से पहले क्या था? आप खुद ही जज और आप खुद ही आरोपी। अभी तक ये दोनों तो पहले से ही हैं! लेकिन जब तक ये दोनों हैं तब तक आरोपी को जवाब मिल जाता था। लेकिन अब आप खुद ही वकील, यानी एक वकील तो था ही, फिर से दूसरा वकील हुआ। आप लोग वकालत करते हो या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** करते हैं।

**दादाश्री :** वे वकील हमें क्या कहते हैं? सब करते हैं न! तो कल्याण (!) हो गया!

एक बड़े सेठ थे। उनका नौकर इस तरह से कपड़ा खींचता था। कपड़ा खींच-खींचकर दे रहा था। मैंने सेठ से पूछा, 'यह लड़का कसरत क्यों कर रहा है?' उन्होंने कहा, 'वह कसरत नहीं कर रहा है। वह तो हमारा जो चालीस मीटर का थान है न, उसमें आधा मीटर बढ़ जाता है।' मैंने कहा, 'आप भगवान महावीर के पास बैठे रहते थे, मुझे अभी भी याद है। अब आपको कहाँ जाना है वह मुझे बताओ! यदि दाम बताना हो तो अठारह के बजाय साढ़े अठारह बताना लेकिन नाप-तोल में कम नहीं देना चाहिए। नाप-तोल में कम दिया न तो सेठ, यहाँ से पशुगति में जाना पड़ेगा! दो पैर वाले नहीं, चार पैर वाले! पाशवता करना कहते हैं।' मैंने उन्हें समझाया तब उन्होंने कहा, 'दादाजी, सभी ऐसा करते हैं न!' देखा, भीतर वह वकील क्या सिखाता है? 'सभी ऐसा करते हैं न!' मैंने कहा, 'मुझे कोई हर्ज नहीं है, करना।' तब उन्होंने कहा, 'कल से ही बंद कर दूँ?' मैंने कहा, 'भाव ज्यादा बताना न।' उन्होंने कहा, 'भाव ज्यादा बताऊँगा तो खरीददार चले जाएँगे। सब लोग अठारह के भाव से दें और मैं साढ़े अठारह कहूँगा तो वे चले जाएँगे।' मैंने कहा, 'सब यदि कुएँ में गिरते हों तो आपको भी कुएँ में गिरने को कहा है? आपका हिसाब कोई भी कम नहीं कर सकता। एक रुपया भी कोई कम नहीं कर सकता। यह संसार इतना ज्यादा हिसाब वाला है। आपको तो काम किए जाना है। ऐसा नहीं कि प्रारब्ध के अधीन जो

होना है वह होगा! प्रारब्ध जैसी कोई चीज़ नहीं है ऐसा मानते हुए, आप काम करते जाना और इसी को भगवान कृष्ण ने कहा है न कि तुम निष्काम कर्म करते रहो। क्या होगा? ऐसा होगा या वैसा? उसके बजाय निष्काम कर्म करते रहो।'

मूल बात क्या थी? हम क्या कह रहे थे? और वे सेठ क्या कहने लगे?

**प्रश्नकर्ता** : वह कपड़ा खींचकर देता था। सभी ऐसा ही करते हैं न! भीतर से वकील ने वकालत की।

**दादाश्री** : सभी ऐसा करते हैं इसलिए मुझे तो वैसा ही भाव रखना पड़ेगा न? मैंने कहा, 'नहीं, आप इस तरह खींचकर मत देना और भाव ज्यादा बताना और ग्राहक आएँगे या नहीं इस बारे में निष्काम रहना। उसकी वरीज़ (चिंता) मुझ पर डाल देना। मेरी गारन्टी।' तब सेठ कहने लगा, 'आज से ही शुरू कर दूँगा।' लेकिन सेठ के मर जाने के बाद बेटों ने फिर से वही शुरू कर दिया।

भगवान महावीर के पास बैठे हुए मैंने देखा था लेकिन फिर भी वे सीधे नहीं हुए और कोई भी सुख भोगने के लिए पड़े नहीं रहे। चटनी के लिए, पूरी थाली के लिए नहीं! पूरी थाली नहीं भोगनी थी, सिर्फ चटनी के लिए ही पड़े रहे। तब छोड़ न भाई, अगर थाली नहीं भोगनी है तो छोड़ दे न यहीं से!

**प्रश्नकर्ता** : शराब पीना, क्या पाप नहीं है?

**दादाश्री** : पाप तो है लेकिन तिरस्कार करने जैसा नहीं।

**प्रश्नकर्ता** : मैंने अपने तौर पर पाप की ऐसी परिभाषा दी है कि दूसरों को मानसिक और शारीरिक रूप से हम दुःख दें तो उसे पाप कहते हैं।

**दादाश्री** : इसे सही कहा जाएगा। दूसरों को दुःख न देते हुए भी यदि आप मिलावट करके दो तो पाप होगा!

**प्रश्नकर्ता :** ये सारी इन्कम टैक्स की चोरियाँ करते हैं, सरकार की चोरियाँ करते हैं, उसे चोरी कहेंगे या नहीं ?

**दादाश्री :** ऐसा है न! अबव नॉर्मल करे तो चोरी कहलाएगी, नॉर्मल करता है तो हर्ज नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** तो उस नॉर्मलिटी का कैसे पता चलेगा ?

**दादाश्री :** सरकार को इतना तो देना ही पड़ेगा। सरकार ने जान-बूझकर अधिक टैक्स लिया है।

**प्रश्नकर्ता :** सरकार तो नब्बे प्रतिशत माँगती है। यहाँ हिन्दुस्तान की सरकार एक लाख रुपये की कमाई पर नब्बे हजार माँगे तो ?

**दादाश्री :** हाँ, यह सरकार तो, जहाँ इन्कम टैक्स होता है वह लोगों को सीधा करता है कि, 'भाई, किसलिए भोगते हो? यह जो चुटकी है, उसे भोग न!' किसलिए कमाते रहते हो? वर्ना चोरियाँ करनी पड़ेंगी। इसके बजाय तो जो है उसे भोगता रह, उसमें क्या गलत है ?

तब लोभी का लोभ खत्म करवाने के लिए ऐसा नियम है। लोभी लोग तभी पीछे हटेंगे। फिर भी पीछे नहीं हटते। यह भी आश्चर्य ही है न!

**प्रश्नकर्ता :** चोरी करता है और लोभ भी जारी रखता है।

**दादाश्री :** हाँ, चोरी करके फिर उससे क्या मिलेगा? मन खराब हो जाता है अपना।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, गवर्नमेन्ट नब्बे प्रतिशत टैक्स लगाती है, क्या इसे अबव नॉर्मल नहीं कहा जाएगा ?

**दादाश्री :** कहा जाएगा न! सरकार को ऐसा नहीं करना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** यदि सरकार अबव नॉर्मल टैक्स लगाए तब लोग, नॉर्मलिटी लाने के लिए चोरी करते हैं, तो क्या वह गलत है ?

**दादाश्री :** गलत है। लेकिन फिर वह खुद वे रुपये कहाँ रखे ? वह बहीखाते में लिखवा देता है न ! तब फिर हमें मंदिर में दे देना पड़ेगा।

आपके वहाँ दान देने पर पचास प्रतिशत लाभ मिलता है।

**प्रश्नकर्ता :** क्योंकि गवर्नमेन्ट वाले फिर अंदर ही अंदर चोरी करते हैं। हम गवर्नमेन्ट को टैक्स देते हैं तो गवर्नमेन्ट में लोग बहुत खा जाते हैं।

**दादाश्री :** लोभियों का लोभ कम करने के लिए टैक्स बहुत अच्छी चीज़ है।

लोभी व्यक्ति तो, मरते दम तक संतुष्ट नहीं होता, पाँच करोड़ कमा ले तब भी। ऐसे में इस तरह से दंड मिले न, बार-बार, तब वह पलटता है इसलिए यह तो अच्छी चीज़ है। इन्कम टैक्स तो किसे कहते हैं ? यदि पंद्रह हजार से ज़्यादा लेते हों तो। बेचारे पंद्रह हजार तक तो लोगों को छोड़ देते हैं, तब उन पंद्रह हजार में रौब से खाते-पीते हैं न। एक परिवार के लिए खाने-पीने में कोई दिक्कत नहीं होती न। छोटे परिवारों पर अधिक टैक्स नहीं है न ?

वहाँ एक व्यक्ति की जितनी कमाई होती है, वे सब साठ प्रतिशत के स्लैब में आ जाते हैं और उतना ही कमाने वाले यहाँ पर दस प्रतिशत के स्लैब में जाते हैं, ऐसा नियम है। लोग तरह-तरह के नियमों का लाभ उठाते हैं और पैसे आएँ तो सरकार को देने हैं न ! हमारे पास रुपये न आएँ तो सरकार हमें कुछ नहीं कहेगी न !

### जहाँ भक्ति वहाँ दुःख नहीं

**प्रश्नकर्ता :** भगवान की भक्ति करने वाले क्यों गरीब और दुःखी रहते हैं ?

**दादाश्री :** भक्ति करने वाले ? ऐसा है न, भक्ति करने वाले दुःखी होते हैं, ऐसा कुछ भी नहीं है। लेकिन कुछ लोग आपको दुःखी दिखाई देते हैं। बाकी, भक्ति करने के कारण तो इन लोगों के पास

बँगले हैं। अतः भगवान की भक्ति करते-करते दुःखी हों ऐसा नहीं होता है न लेकिन दुःख तो इनका पिछला हिसाब है और अभी जो भक्ति कर रहे हैं, वह नया हिसाब। वह जब आएगा तब... आज तो, पिछला जमा किया हुआ है, पिछला किया था, उसका फल आया है। यह जो अभी कर रहे हैं, जो अच्छा कर रहे हैं उसका फल बाद में मिलेगा। समझ में आया न? आपकी समझ में आए क्या ऐसी बात है यह? समझ में न आए तो बात को निकाल देते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** समझ में आ रही है।

**दादाश्री :** तो आज अच्छा करना, एडजस्ट करना। अभी जो फल मिला है, वह खुद के ही ब्लंडर्स और भूलों का परिणाम है। बाकी, भक्ति से तो दुःख आएगा ही नहीं न? क्या भक्ति करने से दुःख होता होगा? हाँ, यदि लक्ष्मी जी की भक्ति करो तो दुःख आ भी सकता है लेकिन भगवान की भक्ति करने पर दुःख कैसे आ सकता है?

**प्रश्नकर्ता :** यदि भगवान होंगे, तो साथ में लक्ष्मी जी आएँगी?

**दादाश्री :** उनके साथ तो लक्ष्मी जी और भी ज्यादा हाज़िर रहती हैं!

## आनंद प्राप्ति के उपाय

**प्रश्नकर्ता :** मानसिक शांति पाने के लिए व्यक्ति को, किसी गरीब की या किसी कमज़ोर की सेवा करनी चाहिए या भगवान की भजना करनी चाहिए? या किसी को दान देना चाहिए? क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** यदि मानसिक शांति चाहते हो तो अपनी चीज़ दूसरों को खिलानी चाहिए। कल आइस्क्रीम का डिब्बा भरकर लाना और इन सब को खिलाना। उस समय कितना आनंद होता है वह तू मुझे बताना। इन लोगों को आइस्क्रीम नहीं खानी है। तू तेरी शांति के लिए प्रयोग

करके देख लेना। ये लोग कोई बेकार नहीं बैठे हैं, सर्दी में आइस्क्रीम खाने के लिए। इस तरह, तू जहाँ हो वहाँ, कोई जानवर हो, बंदर हों, उन्हें चने डालेगा तो वे उछल-कूद मचाएँगे। वहाँ तेरे आनंद की कोई सीमा नहीं रहेगी। वे खाते जाएँगे और तेरे आनंद की कोई सीमा नहीं रहेगी। इन कबूतरों को तू दाने डाले उससे पहले तो वे उछल-कूद करने लगेंगे और तूने दाने डाले, तेरी अपनी चीज़ दूसरों को दी कि भीतर आनंद शुरू हो जाता है। अभी कोई व्यक्ति रास्ते में गिर गया हो, उसकी टाँग टूट गई हो और खून निकल रहा हो, वहाँ तू अपनी धोती फाड़कर पट्टी बाँधेगा, उस समय तुझे आनंद होगा। भले ही उस समय तू सौ रुपये की धोती फाड़कर बाँधे, लेकिन उस समय तुझे बहुत आनंद होगा।

### समकिति का लक्ष्मी व्यवहार

**प्रश्नकर्ता :** दादा के महात्माओं के पास लक्ष्मी हो तो उन्हें क्या करना चाहिए ?

**दादाश्री :** उसमें हर्ज नहीं है, आपको हर्ज नहीं है, आपको तो करना चाहिए। दादा आपके साथ हैं। यदि आपको मुश्किल आ पड़े तो हम से पूछना, बस इतना ही। यह सब तो मुझे करना है। मैं आपको कह रहा हूँ न कि यह सब मुझे करना है। आपको कुछ भी नहीं करना है। आपको मेरी आज्ञा में रहना है।

सब आएगा, आपको क्या होने वाला है कि रुपयों के साथ व्यवहार तो करना रहा। यह व्यवहार आपका नहीं है फिर भी करना पड़ता है, ऐसा रहना चाहिए। 'करने जैसा नहीं है फिर भी करना पड़ता है', ऐसा कहना। उसके शौक्रीन नहीं हो जाना इतना ध्यान रखना। खाओ, पीओ, सब खाना, ऐसा कहता हूँ।

आहारी आहार करता है, वह आपको जानना चाहिए। आपको तो ऐसा कहना है, क्योंकि यह आहारी ही आहार करता है। लेकिन आप जब यह जागृति भूल जाते हो, तब वह चिपक जाता है!

**प्रश्नकर्ता :** दैनिक जीवन में मिथ्या दृष्टि हटती नहीं है, सम्यक् दृष्टि चाहिए। तो इसका समन्वय कैसे करना चाहिए?

**दादाश्री :** सम्यक् दृष्टि है ही। आपको जो मिथ्या दृष्टि दिखती है वह आपकी नहीं है। उस दृष्टि पर आपको अब प्रेम नहीं है। प्रेम है? नहीं, आपको सम्यक् दृष्टि पर ही प्रेम है। जहाँ प्रेम वहाँ आपकी चीज़ है। अब आपको उस पर प्रेम नहीं है। अब वह है *निकाली* चीज़। भौतिक दृष्टि से मेरे हाथ में कोई रुपये रखे तो क्या मैं थोड़ी देर बाद फेंक दूँगा? मिथ्या है, इसलिए? नहीं, नहीं फेंक सकते। व्यवहार में लोग भी कहेंगे कि, 'पागल हैं, ज्ञानी नहीं हैं!' ज्ञानी धीरे से जेब में रख ले, तो क्या मिथ्या दृष्टि हो गई? यह तो व्यवहार है। दाढी करवाएँ, क्लीन शेव कराएँ, तो क्या मिथ्यात्व हो गया? आप इतनी मूछें रखो, तो क्या समकित हो गया? ऐसा कुछ नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा नहीं है दादा, यह लाइन ऑफ डिमार्केशन महत्त्व की है (भेदरेखा महत्त्व की है)।

**दादाश्री :** उस दृष्टि से तो आपको समकित ही है। सम्यक् दर्शन है इसलिए आपको मिथ्या दृष्टि का डर रहा करता है। पहले डर नहीं लगता था। पहले आपको डर लगता था कि मिथ्या दृष्टि हो जाएगी? यह तो आपको शंका है कि क्या यह मिथ्या दृष्टि है या क्या? वह तो सिर्फ शंका थी, ऐसा-वैसा है ही नहीं, क्योंकि अनादिकाल से आराधना की हुई है, इसलिए वह परिचय तो जाता नहीं है न?

बाकी, ये पैसे गिनते हैं, सब करते हैं, सब्जी लेते हैं और रुपये-पैसे उनके पास से वापस लेते हैं। उससे कुछ बिगड़ नहीं जाता।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन सब्जी वाली से किच-किच करें तो?

**दादाश्री :** वह किच-किच करे तो आप कहना 'बहन, क्यों ऐसा करती हो? और तुम्हें दो आने ज्यादा चाहिए तो ले लो। लेकिन किच-किच मत करो।' जैसे-तैसे करके काम निपटा देना। वह कहे

कि एक रुपया ज़्यादा देते जाओ। तो कहना कि, 'आठ आने में निपटा दो न।' न माने तो बारह आने में निपटा देना, वर्ना रुपया ले लेगी।

**प्रश्नकर्ता** : रुपया दे देना चाहिए।

**दादाश्री** : लेकिन किच-किच नहीं करना।

**प्रश्नकर्ता** : वह सम्यक् दृष्टि वाला?

**दादाश्री** : हाँ, वह निपटारा लाता है, निपटारा! और यदि एकदम से रुपया दे देंगे तो अगली बार दो रुपये की माँग करेंगी। इसलिए हमें तो उस भाई के जैसा रखना चाहिए। वह कहे कि, 'एक रुपया', तो वह कहता है, 'मेरे पचास पैसे!' लेकिन पचास पैसे कहते ही निपटारा हो जाता है। यानी जैसे लोग वैसे गाड़ी चलती है।

**प्रश्नकर्ता** : यदि पैसे वापस लेने हों तो रुपये के बजाय आठ आने ही लौटाए तो? क्या छोड़ देने चाहिए?

**दादाश्री** : नहीं, जो दे वह ले लेना और देने के बाद वह कहे कि आठ आने मुझे वापस दे दो, तो कहना, 'लो बहन।' वहाँ तीसरा व्यक्ति परख लेता है कि दोनों में से किसे ममता है, तीसरा व्यक्ति परख लेता है। क्या परख लेता है?

**प्रश्नकर्ता** : ममता!

**दादाश्री** : वहाँ पैसे दोनों ही रखते हैं। लेकिन ममता किसे है? थर्ड पुरुष परखता है। उसे ममता वाला कहते हैं? पैसे रखते हैं इसलिए ममता वाले नहीं कहलाते। पैसे रखना। सबकुछ करना। सैद्धांतिक बात है न?

**प्रश्नकर्ता** : हाँ, ठीक है।

**दादाश्री** : हमारी सारी बातें सैद्धांतिक होनी चाहिए। शास्त्रों में लिखने योग्य बातें होनी चाहिए।

### पुण्य क्या करता है?

साथ में ले जाना है? आपके गाँव में तो मोटल वाले तो ले



जाते हैं साथ में? नहीं ले जाते? उनको यह ले जाने की कोई कला आती होगी। आप जो मंदिर में देते हो न, उतना वह आगे के लिए जमा हो जाता है और अपने मोक्ष के लिए यह भक्ति करते हैं। वह आगे जमा हो गया और पुण्य तो बहुत अधिक बाँध लिए हैं। धर्म ध्यान वगैरह तो सिर्फ पुण्य ही है। वह पुण्य क्या करता है? अच्छी जगह जन्म होता है, फिर घर नहीं बनवाना पड़ता। झोंपड़ी में जन्म हो तो फिर, घर बनवाना पड़ता है न? पूरी मेहनत उसी में चली जाती है। यहाँ तो तैयार बंगला, गाड़ी-वाड़ी! ऐसा देखने में नहीं आता? जहाँ सब तैयार मिलता है लोग वहाँ जन्म लेते हैं लेकिन वे डेवेलप नहीं हो पाते हैं। क्या! मनुष्य जन्म में डेवेलप होना हो तो जहाँ थोड़ी कमी हो, वहाँ जन्म होगा, तभी होगा।

इन बेटे-बेटियों की शादी कैसे होती होगी? ऐसा है न, बेटियों के पीछे पैसे ज्यादा खर्च होते हैं। बेटियाँ अपना लेकर आती हैं। वे बैंक में जमा करवाती हैं। बेटियों के पैसे बैंक में जमा होते हैं और बाप खुश होता है कि, 'देखो मैंने सत्तर हजार खर्च करके शादी करवाई, उस जमाने में!' उस जमाने की बात कर रहा हूँ। अरे, तूने क्या किया? उसके पैसे बैंक में थे। तू तो वही के वही है। पावर ऑफ एटर्नी है। तेरा उसमें क्या है? लेकिन वह रौब जमाता है और यदि कोई बेटी तीन हजार लेकर आई हो, तो उस समय उसका व्यापार सब टंडा पड़ चुका होता है। तब तीन हजार में ही शादी होती है। क्योंकि वह जितना लाई है उतना ही खर्च होगा।

ये बेटे-बेटियों के, सभी के खुद के पैसे हैं। हम जो जमा करके रखते हैं न, उतनी व्यवस्था अपने हाथ में है, बस उतना ही है।

### भाव में तो निरंतर...

जिसे *निकाल* करना है उसे करना आ जाएगा। जिसे *निकाल* नहीं करना हो उसे नहीं आएगा। *निकाल* तो, करने वाले को और जिसका *निकाल* हो रहा हो, वे सब समझ जाते हैं कि *निकाल* कर रहा है। *निकाल* अर्थात् सभी के मन का समाधान होने का नियम।

पचास माँगता हो उसे पचास ही दें ऐसा कोई नियम नहीं है। *निकाल* होना चाहिए। आप कितने रुपये देकर *निकाल* करोगे उस दिन?

**प्रश्नकर्ता** : पचास रुपये।

**दादाश्री** : पूरे ही? नहीं होंगे तब क्या करोगे? हों तो पूरे देने चाहिए। न हों तो दस रुपये कम-ज्यादा करके केस निपटा देना। सामने वाला ऐसा नहीं कहता कि, उसके पूरे पैसे दो। सामने वाला इतना कहता है कि, 'भाई, इसमें फर्क नहीं है इसलिए आप निभा लेंगे?' तब कहे, 'हाँ-हाँ, निभा लूँगा', यानी हो गया! यह दुनिया इसी तरह चलती है न! अहंकार को संतोष होना चाहिए। उसके अहंकार को कोई ठेस नहीं लगनी चाहिए। जबकि लोग कहते हैं कि, 'मुझे दूध से धोकर देने हैं'। अरे, गलत अहंकार है। दूध से धोकर देने वाले! मुझे पैसे लौटा देने हैं ऐसा भाव रखना, तो लौटा सकोगे! लेते समय, वापस लौटाने हैं ऐसा तय करके जो लेता है, उसका व्यवहार मैंने बहुत सुंदर देखा है! पहले से डिसिज़न कुछ तय तो होना चाहिए न! बाद में विपरीत संयोग मिलें तो अलग बात है, लेकिन डिसिज़न तो होना चाहिए न! यह सब तो 'पज़ल' है न!

**प्रश्नकर्ता** : लेकिन इस पज़ल का अंत ही नहीं आता।

**दादाश्री** : अंत ही नहीं आता।

**प्रश्नकर्ता** : आत्मा की अनंत शक्ति और पज़ल भी अनंत हैं, ऐसा लगता है।

**दादाश्री** : उसी को 'पज़ल' कहते हैं। मैं अपनी पज़ल आपको बताऊँ न, मेरी पज़ल सुनें न ये लोग, तो...! जिंदगी भर बहुत बड़े-बड़े पज़ल थे!

**प्रश्नकर्ता** : लेकिन दादा, वह हमारे सुख पर आवरण लाते हैं न!

**दादाश्री** : नहीं।

**प्रश्नकर्ता** : ऐसा तो दादा, कई बार होता है। उसका अंत ही नहीं आता।

**दादाश्री :** आपको ऐसा होगा, आपको कुछ ही सालों से प्रेक्टिस हुई है और मुझे तो कितने ही काल से इसी की प्रेक्टिस है। कितने ही जन्मों से प्रेक्टिस होती आई है, समझ में आया न ?

हम समझते हैं कि ऐसा ही होता है, और मैं यह कहता भी हूँ कि इसी को नियम कहते हैं। वह उल्टा बोले कि, 'मैं तो अब आपको दूँगा ही नहीं।' तब मैं उसे ऐसा कुछ नहीं कहता कि मत देना। मैं समझ जाता हूँ कि यही नियम है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, ये तो चक्की के दो पाटों की तरह चिपकने वाले प्रश्न आते ही रहते हैं। उनका हल ही नहीं हो पाता।

**दादाश्री :** हाँ, क्या करें ? उलझनें खड़ी होती हैं ! अस्त-व्यस्त कर देती हैं। ऐसा ही होता है। संसार है न !

**प्रश्नकर्ता :** क्या इस रास्ते का कोई अंत नहीं आएगा ?

**दादाश्री :** अंत आ ही जाएगा न ! कुछ काल तक ही ऐसा होता है, फिर अंत आ ही जाएगा।

### जाते समय...

यह अक्रम विज्ञान हिन्दुस्तान के इतने सारे बुद्धिशालियों की नहीं सुनता। नहीं सुनता, क्योंकि बुद्धि लिमिटेड चीज़ है। जबकि ज्ञान तो अनलिमिटेड चीज़ है। ज्ञान वास्तविक है। बुद्धि भ्रान्ति है। बुद्धि दो ही देखती है, फायदा और नुकसान ! फायदा और नुकसान ! फायदा और नुकसान !

तब क्या, फायदा और नुकसान यहाँ से साथ में आने वाले हैं ? अंतिम स्टेशन पर यहाँ से लेटाकर ले जाते हैं, तब साथ आते होंगे ? नहीं आते ? सिर्फ बिना पानी वाले चार नारियल बाँधते हैं। उसमें भी बटे कहते हैं, 'अरे, पानी वाले नारियल मत देना, सस्ते से सस्ते देना'।

इट हैपन्स, सब हो रहा है। अपने आप ही हो रहा है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता ?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, हाँ।

**दादाश्री :** यदि खुद कर्ता होता न, यदि खुद कमा रहे होते तो कोई व्यक्ति मृत्यु की कमाई नहीं करते। लेकिन लोग मरने की कमाई करते हैं न? नहीं करते क्या?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** यदि खुद कमा रहे होते तो मरने की कमाई नहीं करते। कोई करता क्या? लेकिन देखो जाना पड़ता है न! रौब से जाते हैं न? सोते-सोते चार नारियल के साथ, रौब से जाते हैं न? और लोग नीचे से चार कंधे देकर जाते हैं न! रौब से! पहले तो जलाने की व्यवस्था करनी पड़ती थी, अब तो तुरंत इलेक्ट्रिसिटी में अस्थि-पंजर सब जला देते हैं।

### अगले जन्म की संभाल...

हम पूछें कि, 'क्यों साहब, दुःखी क्यों हो?' तब कहते हैं कि, 'क्या करें? ये तीन दुकानें, यह संभालना है, वहाँ संभालना है, और जब अर्थी निकलती है तब तो चार नारियल ही साथ ले जाने हैं। दुकानें तीन हों, दो हों या एक हो, फिर भी चार ही नारियल और वह भी बिना पानी के। कहता है, 'मुझे तीन दुकानें संभालनी हैं, एक फोर्ट में है, एक कपड़े की दुकान यहाँ है और एक भूलेश्वर में है।' फिर भी सेठ का चेहरा लटका हुआ होता है। भोजन करते समय दुकान, दुकान, दुकान! रात को सपने में भी थान नापता है!

मरते समय जीवन का हिसाब किताब आएगा। इसलिए संभलकर चलो।

किस तरह संभलकर?

तब कहे कि, यहाँ से काठियावाड़ (गुजरात का एक बड़ा क्षेत्र) तक का, दो फुट का ब्रिज बनाया हो, काठियावाड़ तक के समुद्र पर दो फुट का पुल बनाया हुआ हो, ब्रिज काठियावाड़ बंदरगाह के अंत

तक बनाया हो और उस पर से होकर काठियावाड़ जाना है और अन्य गाड़ियाँ-साधन बंद हो गई हैं और सिर्फ उस दो फुट चौड़े पुल पर से होकर ही जाना है। उस दो फुट के पुल पर कोई रेलिंग भी नहीं है। ऐसे के ऐसे ही है। प्लेटें लगाई हुई हैं। अंत तक ठोकर न लगे ऐसी बढ़िया, ऊपर से फिसल न जाएँ ऐसी चेकर्ड प्लेटें। वहाँ जाते-जाते क्या-क्या याद करोगे? कौन-कौन सी दुकान याद आएगी?

**प्रश्नकर्ता :** दूसरा कुछ याद नहीं आएगा।

**दादाश्री :** क्यों? बेटियाँ तो याद आएँगी न? डाल दो समुद्र में, हट-हट करेगा। अपनी सेफसाइड देखेगा। तो फिर यहाँ सीधा रह न! जो एक जन्म सीधा रहेगा तो उसके अनंत जन्म सुधर जाएँगे। सीधा रहा इसलिए।

यों इस तरह पुल पर से जाता है। वह संभलकर नहीं जाता? कोई पुलिस वाला रखना पड़ता है पीछे? पुलिस वाला नहीं रखना पड़ता? ऐसी यह पगडंडी है, लेकिन बेचारे को भान नहीं है, उसे भान नहीं है इसलिए बेचारा ऐसा करता है।

कुत्ते के योनि में भी दुःखी हुआ था न, यहाँ भी दुःखी हुआ! इस जन्म में आराम से, खाने को सब्जी है, मसालेदार चावल वगैरह सब हैं खाने को। मीठी रोटी व जलेबी हैं खाने के लिए फिर भी कुत्ते की तरह हाय-तौबा करते रहते हो! पर यहाँ तो शांति से आओ!! भगवान का नाम लो!

कबीर साहब कहते हैं, 'अरे क्या करना है?' 'खा, पी और खिला दे।' और ज्यादा हो तो, 'खा, पी, खिला दे, कर ले अपना काम, चलती वक्त हे नरों, संग न चले बदाम'।

क्या कहते हैं? क्या कबीर जी गलत कहते हैं?

यहाँ से दो फुट के ब्रिज पर से जाना पड़े, तो क्या पुलिस वाला रखना पड़ता है? आप ही बताओ न? अरे, खड़ा भी नहीं रहेगा, बैठे-बैठे, इस तरह, पकड़कर आगे खिसकेगा! अरे, कब पहुँचोगे?

तब कहता है, 'सब हो जाएगा! मेरे पास तो, ये रोटियाँ हैं, चने भी हैं।' एक हाथ से पकड़कर खाता जाता है। फिर भी वह पहुँच जाता है। जिसने निश्चय किया है, वह पहुँच जाता है। उस समय कुछ याद नहीं करता है न? तुझे इसका भान नहीं है। इसी तरह, ऐसे रास्ते पर, इसके ऊपर, पुल पर ही है। लेकिन भान नहीं है कि मैं क्या कर रहा हूँ! वह तो, मैं जब भान में लाता हूँ, तब पता चलता है कि ओहोहो! यह मुझे तो बहुत देर हो गई!

इस तरह जब भान में आता है तब पता चलता है। अन्यथा, बेभान! उस समय, वाइफ दवाखाने में हो वह याद नहीं करता है न? याद आ जाए तो भी उसे हटा देता है। जीव को सबकुछ आता है! कहाँ-कहाँ विचार नहीं करना है, वहाँ करता ही नहीं है।

जहाँ विचार करना है वहाँ विचार करता है। नहीं करना है वहाँ नहीं करता है। कहेगा, 'वह मैं जानता हूँ।' लेकिन फिर भी व्यापार के बारे में जब तक चिंता होती है तब तक सोचता है क्योंकि अच्छा लगता है। कुछ जगह पर बंद कर देता है, क्योंकि कड़वा लगता है इसलिए बंद कर देता है और यह स्वभाव से मीठा लगता है।

व्यापार के विचार कहाँ तक करने चाहिए? कि जब तक विचारों का चक्कर न चलने लगे, विचारों का बवंडर न हो जाए, तब तक करना चाहिए। बवंडर होने लगे तब बंद कर देना। वर्ना मारे गए समझ लेना। चार पैर और ऊपर से पूँछ मिलेगी! फिर रँभाएगा! चार पैर और पूँछ, समझे आप? फिर मनुष्य में से कहाँ जाता है?

**प्रश्नकर्ता :** जानवर में।

**दादाश्री :** वहाँ जाकर, ऐसे पूँछ ऊँची रखकर, ऐसे उछल-कूद करते-करते दौड़ता है, रँभाता है! बोलना नहीं आता।

कुछ लोग रँभाते हैं, कुछ भौंकते हैं, वह फिर अलग है और कुछ लोग भौंकते हैं। भौंकना यानी टु स्पीक, समझ में आया न? रँकता है!

## सिर पर आई मौत!

कबीर साहब कहते हैं कि, दिल्ली में एक टीले जैसा होगा न, पच्चीस-तीस फुट ऊँचा टीला था, उस पर चढ़ गए। टीले के ऊपर। सिर्फ लुंगी पहने थे और कुछ नहीं। फिर वहाँ से चिल्लाने लगे...

‘ऊँचा चढ़ पुकारिया, बुम्मत मारी बहोत,  
चेतन हारा चेतजो, शिर पे आई मौत।’

आते-जाते हुए लोगों को क्या कह रहे थे कि, ‘सावधान, सावधान, मैंने आपके सिर पर मौत को मंडराते हुए देखा है। सावधान, सावधान चेतनहारा, यानी चेतन वाले, जिनमें चेतन है वे सचेत हो जाएँ।’

इस बगीचे के खंभों को नहीं कहता, खंभों में चेतन नहीं है न! जो लोग जा रहे थे वे रुक गए। दो-चार पगड़ी पहने हुए लोग रुक गए। एक जोड़ा, जो सिनेमा देखने जा रहा था। उस भाई ने अपने बेटे को उठाया हुआ था। तो दोनों ऐसे पीछे मुड़कर देखने लगे कि, ‘पागल है, क्या बोल रहा है? कुछ समझ में ही नहीं आ रहा है!’ लो अब, एक तो ये सचेत कर रहे हैं और वह कह रहा है, ‘पागल है!’ ऐसी है यह दुनिया, इन बेचारे को *लागणी* (सुख-दुःख की अनुभूति, लगाव, भावुकता वाला प्रेम) होती है, जबकि वह कह रहा है कि, ‘पागल है!’ आपको किस दुनिया में रहना है? *लागणी* वालों की दुनिया में या पागलों की दुनिया में?

**प्रश्नकर्ता :** *लागणी* वालों की।

**दादाश्री :** ऐसा? पागलों की दुनिया में नहीं?

बाकी यह सब प्रवाह तो ऐसा ही है हं!



[ 3 ]

व्यवसाय, सम्यक् समझ से  
इंजन घूमे लेकिन पट्टा कहाँ?

दादाश्री : आप कौन सा व्यापार करते हो ?

प्रश्नकर्ता : रेडीमेड कपड़ों की दुकान है।

दादाश्री : व्यापार किसलिए करते हो ?

प्रश्नकर्ता : नफे के लिए ही करते हैं न ?

दादाश्री : नफा किसलिए करते हो ?

प्रश्नकर्ता : पेट के लिए।

दादाश्री : पेट का किसलिए करते हो ?

प्रश्नकर्ता : वह नहीं पता।

दादाश्री : यानी पेट में पेट्रोल डालने के लिए ये सारी कमाई करते हैं। यह किसके जैसा है ?

ये सब इंजन चल रहे होते हैं तब पेट्रोल डालते हैं और चलाते हैं। पेट्रोल डालते हैं और चलाते हैं। ऐसा सभी करते हैं। ऐसा आप भी करते हो ? लेकिन इंजन किसलिए चलाना चाहिए, वह बताओ तो



सही! उससे कुछ काम नहीं लेना है? सब लोगों ने तो इंजन चलाया हुआ है, लेकिन आपने किसलिए चलाया है? आपको सोचना तो चाहिए न कि भाई, इंजन में पेट्रोल डालकर, महँगे दाम का पेट्रोल डालकर, इंजन चालू रखना। तो क्या यह सब लोगों के देखने के लिए है?

**प्रश्नकर्ता :** यह सब खुद को ही देखने के लिए है।

**दादाश्री :** इंजन पर पट्टा लगाकर उससे कुछ काम लेना होता है। यानी उस इंजन से तो काम निकाल लेते हैं लेकिन यहाँ किसलिए इंजन चलाते हो? आप तो सिर्फ चलाते ही रहते हो बस! शौच जाना और खाना, शौच जाना और खाना, शौच जाना और खाना, बस!

**प्रश्नकर्ता :** शरीर को तो खाने-पीने का चाहिए न?

**दादाश्री :** ऐसा? वह करोगे तभी खाना-पीना मिलेगा, वर्ना नहीं मिलेगा, है न? और खाना-पीना किसलिए?

**प्रश्नकर्ता :** शरीर टिकाये रखने के लिए।

**दादाश्री :** शरीर किसलिए संभालना है?

**प्रश्नकर्ता :** कुदरत ने दिया है इसलिए चलाना है।

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन किसलिए टिकाये रखना है? कुछ हेतु तो होना चाहिए न? व्यापार करते हैं वह तो यह खाना खाने के लिए, मेन्टनन्स करने के लिए। मेन्टनन्स किसलिए कि शरीर टिकाने के लिए, तो शरीर टिकाने का हेतु क्या है?

**प्रश्नकर्ता :** पिछले कर्म पूरे करने के लिए है।

**दादाश्री :** उसके लिए? वह तो कुत्ते, गायें, भैंसें, सभी पूरा करते हैं। हिन्दुस्तान में मनुष्य जन्म मिला, यानी मोक्ष के हेतु के लिए है यह। हिन्दुस्तान में मनुष्य जन्म का हेतु मोक्ष है, और उसी के लिए अपना जीवन है। यह हेतु रखा हो तो फिर उसमें से जितना मिला

उतना सही लेकिन हेतु तो होना चाहिए न? यह खाना-पीना सब उसी के लिए है। आपको समझ में आया न? जीवन किसलिए जीना है? क्या सिर्फ कमाने के लिए? हर एक जीव सुख की तलाश में है। सर्व दुःखों से मुक्ति कैसे हो यह जानने के लिए ही जीवन जीना है। इसमें मोक्षमार्ग प्राप्त कर लेना है। यह सब मोक्षमार्ग के लिए ही है।

### जीवन, किस हेतु के लिए?

दो हेतु के लिए लोग जीते हैं। आत्मार्थ के लिए जीने वाला तो कोई ही व्यक्ति होता है। अन्य सभी लक्ष्मी के लिए जीते हैं। पूरा दिन लक्ष्मी, लक्ष्मी और लक्ष्मी! लक्ष्मी जी के पीछे तो पूरा संसार ही पागल हो चुका है न! फिर भी उसमें कभी भी सुख नहीं मिलता न! घर बंगले ऐसे ही खाली पड़े रहते हैं और दोपहर को वे कारखाने में होते हैं। पँखे घूमते रहते हैं, भोगने का तो... राम, तेरी माया! इसलिए आत्मज्ञान जानो! यों अंधे की तरह कब तक भटकते रहना है?

### वहाँ बसते हैं प्रभु?

**दादाश्री :** कितनी उम्र हो चुकी है, सेठ?

**प्रश्नकर्ता :** बावन वर्ष हो चुके हैं।

**दादाश्री :** यानी अभी तो अड़तालीस बचे हैं न? सौ का हिसाब तो हमारा पक्का है न?

**प्रश्नकर्ता :** वह तो, जब तक कामकाज हो सकता है तब तक करना है और फिर भगवान के वहाँ चले जाना है!

**दादाश्री :** कहाँ चले जाना है?

**प्रश्नकर्ता :** अंतिम स्टेशन पर।

**दादाश्री :** अंतिम स्टेशन पर जाना है लेकिन उससे पहले कुछ करना पड़ेगा न? अगले जन्म के लिए गठरी बाँधनी पड़ेगी न? या नहीं बाँधनी पड़ेगी? क्या आपने बाँधकर तैयार कर ली है?

**प्रश्नकर्ता :** मुझे ऐसे लगता है कि व्यक्ति ईमानदारी से जीए तथा जिसके भी संपर्क में आए वहाँ ईमानदारी से बर्ते तो गठरी अच्छी ही है।

**दादाश्री :** बस, बस! उस जैसा कुछ भी नहीं लेकिन सब जगह ईमानदारी होनी चाहिए। ऐसे कितने समय से ईमानदारी से जीवन गुजारा? कोई भी व्यक्ति ईमानदारी से जीवन जीता हो, नैतिक जीवन जीता हो, वहाँ चौबीस तीर्थकरों का निवास है इसलिए इतना ही शुरू कर दें तो बहुत हो गया।

### तीन वस्तुओं से धर्म

कोई पूछे कि मैं किस धर्म का पालन करूँ? तब हम कहते हैं कि, 'भाई, इन तीन चीजों का पालन करो न :'

(1) पहला 'नीतिमत्ता'! वह कभी कम-ज्यादा हो सकता है, लेकिन नीतिमत्ता का पालन करना, इतना तो करना, भाई।

(2) फिर दूसरा 'ओब्लाइजिंग नेचर' तो रखना! आपके पास पैसे न हों तो बाज़ार जाते समय पूछते जाना कि, 'आपको बाज़ार का कोई काम हो तो मुझे कहिए, मैं बाज़ार जा रहा हूँ'। इस तरह पूछते हुए जाना, वह है ओब्लाइजिंग नेचर।

(3) और तीसरा, उसके बदले में कुछ भी पाने की इच्छा न हो। जबकि पूरा संसार बदले की अपेक्षा रखता है। आप इच्छा करो तब भी बदला लेता है और इच्छा न करो तब भी बदला लेता है। इस तरह एक्शन-रिएक्शन आता है। इच्छाएँ आपकी भीख हैं, जो व्यर्थ जाती हैं।

### जहाँ भगवान, वहाँ आनंद

क्या आपने कभी इच्छाएँ की थीं?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, इच्छाएँ की थीं।

**दादाश्री :** किसके पास? भगवान के पास? उनके पास क्या

है? वे शेयरबाजार वाले नहीं हैं न! लोग तो भगवान से इच्छा रखते हैं। हाँ, भगवान का नाम लेने से आनंद होता है। आवरण टूटते हैं। प्रार्थना करते ही तुरंत भीतर में आनंद हो जाता है। फिर चाहे ज्ञान जानता हो या नहीं, लेकिन कभी यदि ऐसा भरोसा हो जाए कि भीतर में भगवान हैं, तब ज्यादा आनंद होता है। भीतर में भगवान हैं ऐसा यदि समझ में आ जाए तो संपूर्ण आनंद होता है।

### जहाँ ईमानदारी, वहीं प्रभु का मार्ग

**प्रश्नकर्ता :** आत्मा की प्रगति के लिए क्या करते रहना चाहिए?

**दादाश्री :** उसे ईमानदारी की निष्ठा पर चलना चाहिए। वह निष्ठा ऐसी है कि जब बहुत तंगी में आ जाता है तब आत्मशक्ति प्रकट होती है और तंगी न हो और ज़बरदस्त पैसे वगैरह हों, तब तक आत्मा प्रकट नहीं होता है। ईमानदारी ही एक रास्ता है। बाकी, भक्ति से हो ऐसा नहीं हो सकता। ईमानदारी न हो और भक्ति करे उसका कोई अर्थ नहीं है। साथ में ईमानदारी होनी ही चाहिए। ईमानदारी से व्यक्ति फिर से मनुष्य जन्म पा सकता है। मनुष्य फिर से मनुष्य योनि में आता है। और जो लोग मिलावट करते हैं, जो लोग *अणहक्क* (बिना हक का) का छीन लेते हैं, बिना हक का भोग लेते हैं, वे सभी यहाँ से दो पाँव से चार पाँव में जाते हैं और ऊपर से पूँछ मिलती है। उसमें कोई ज़रा सा भी बदलाव नहीं कर सकता है क्योंकि उसका स्वभाव ही ऐसा बंध चुका है, बिना हक का भोग लेने का। इसलिए वहाँ जाकर भोग लिया जाएगा। वहाँ तो कोई किसी की पत्नी ही नहीं है न! सभी स्त्रियाँ खुद की ही न! यहाँ मनुष्य में तो विवाहित लोग हैं इसलिए किसी की पत्नी पर दृष्टि मत बिगाड़ना लेकिन अब आदत पड़ चुकी होती है तो फिर वहाँ जाकर ठिकाने पर आता है। एक जन्म, दो जन्म भुगतकर आता है, तब सीधा होता है। उसे ये सारे जन्म सीधा करते हैं। सीधा होकर वापस यहाँ आता है और फिर से टेढ़ा हुआ तो फिर से सीधा करते हैं। इस प्रकार सीधा करते-करते फिर सीधा हो गया कि वह मोक्ष के लायक हो जाता है। टेढ़ापन हो, तब तक मोक्ष नहीं हो पाता।

## वहाँ नहीं है बंधन

**प्रश्नकर्ता :** नैतिकता का मूल्य बदल गया है या वही का वही रहा है? एक उदाहरण देता हूँ, गाड़ी में टिकट लेकर बैठना पड़ता है, यह नैतिक मूल्य हुआ लेकिन अब तो टिकट के अलावा रिश्त देनी पड़ती है, वह रिश्त पाप है या नहीं?

**दादाश्री :** पाप है न! सब पाप ही है लेकिन वे संयोग ऐसे होते हैं और जब हमें ग़रज़ हो, तो क्या कर सकते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** फिर क्या उसका बंधन होगा? संयोग हों और देने पड़ें, क्या उसका बंधन होगा?

**दादाश्री :** हाँ, देने वाले को भी बंधन और लेने वाले को भी बंधन। दोनों को बंधन है। देने वाला उन लोगों को एन्करेज़ करता है। गुनाह तो गुनाह ही होता है। लेकिन ज़माने के साथ नहीं चलेंगे तो मार खाएँगे।

**प्रश्नकर्ता :** तो यह बात 'ज्ञान' प्राप्त महात्माओं पर लागू होती है या नहीं?

**दादाश्री :** नहीं, महात्माओं का तो ऐसा है न, मेरा कहने का मतलब यह है कि ऐसे संयोग आएँ तो उसमें 'आप जुदा और चंदूभाई जुदा'। तब चंदूभाई संयोग के अनुसार जैसे चले, वह देखते रहना है।

**प्रश्नकर्ता :** वही कह रहा हूँ न! मतलब, उन पर लागू नहीं होता है न? उन्हें बंध नहीं पड़ता न?

**दादाश्री :** लेकिन उन्हें बंध कैसे पड़ेगा? आप तो शुद्धात्मा हो, जब आप चंदूभाई हो जाओगे तब बंध पड़ेगा।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन आज यदि जीना ही है तो और कोई रास्ता ही नहीं है।

**दादाश्री :** रास्ता ही नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** आज व्यापार करना हो तो भी कुछ करना पड़ता है।

**दादाश्री :** सब संयोग ही ऐसे निर्धारित हैं कि इंसान का उसमें कुछ नहीं चल सकता। अपना ज्ञान है तो बंधन नहीं है, वरना बंधन तो है ही न!

### अंत में तो कुदरत की ज़ब्ती

ऐसा है न, हिताहित के साधन के लिए खुद को क्या करना चाहिए, वह जीव ने कभी सुना ही नहीं है। खुद का हित किसमें है और अहित किसमें है इसका भान ही नहीं हुआ है। लोगों का देखकर खुद ही अपने हिताहित के साधन करता है। लोग पैसों के पीछे पड़ते हैं, 'पैसे लाऊँगा तो सुखी हो जाऊँगा।' लेकिन उसका कुछ हित नहीं होता। 'बाइ, बॉरो ऑर स्टील', (खरीदो, उधार लाओ या चोरी करो) इस तरीके से पैसे लाना नहीं चलेगा। किसी भी रास्ते से पैसे लाएँगे तो चलेगा क्या? कुछ नीतिमय तो होना चाहिए न? नीतिमय पैसे लाने में हर्ज नहीं है लेकिन अनीति के पैसे लाए तो समझो अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार दी और जब अर्थी उठेगी तब पैसे यहीं पड़े रहेंगे। वे कुदरत की ज़ब्ती में जाते हैं और उसने यहाँ पर जो गुत्थियाँ उलझाई, वे उसे फिर भुगतनी पड़ेंगी।

### ईमानदारी से धुले दुर्गुण

झूठ बोलने में हर्ज नहीं है लेकिन ओब्लाइजिंग (परोपकारी स्वभाव) होना चाहिए। झूठ तो क्यों बोलना पड़ा कि वैद्य ने कहा हो कि, 'मिर्च मत खाना।' लेकिन मिर्च खाए बगैर नहीं चले तो झूठ बोलना पड़ता है न? तो झूठ बोलना गुनाह नहीं है। ईमानदारी छोड़नी, वह गुनाह है। झूठ तो संयोगवश बोलना पड़ता है। मेरी मिर्च खाने की आदत हो और वह कहे कि मिर्च मत खाना, तब मुझे क्या कहना पड़ेगा? 'मैं तो मिर्च खाता ही नहीं हूँ!' यानी संयोगवश झूठ बोलना पड़ता है।

यह साइकल पर से एक व्यक्ति उतर जाए और पुलिस वाले ने

देख लिया फिर आपसे कहेगा कि, 'क्यों दो लोग बैठे थे?' तब कहेगा कि, 'नहीं साहब, मैं तो अकेला ही था।' ऐसा तो बोलना ही पड़ता है न! वर्ना पकड़ा जाएगा इसलिए झूठ बोलने में हर्ज नहीं है लेकिन ईमानदारी छोड़ दो, तो उसमें हर्ज है। जिसमें ईमानदारी, नैतिकता और ओब्लाइजिंग नेचर हो उसके सारे दुर्गुण खत्म हो जाते हैं।

### नीति की भजना ज़रूरी

भगवान को न भजे लेकिन नीति से चले तो भी बहुत हो गया। भगवान को भजते हो लेकिन नीति से नहीं चलते तो उसका कोई अर्थ नहीं है। वह मीनिंगलेस (अर्थहीन) है। फिर भी हमें ऐसा नहीं कहना चाहिए। वर्ना फिर वह भगवान को छोड़ देगा और ज़्यादा अनीति करने लगेगा। अतः नीति जैसा रखना, उसका फल अच्छा मिलेगा।

### वहाँ संसार में भी सुख मिले

जो संसारी आनंद मिलता है वह तो मूर्च्छा है, शादी में जाए उस दिन पूरी चिंताएँ चली जाती हैं। बाजे बजे, बारात आई कि सारा दुःख भूल जाता है और फिर मूर्च्छा में ही रहकर घूमता रहता है, लेकिन घर लौटने पर वैसे का वैसे ही हो जाता है, यानी संसार में कहीं भी सुख नहीं हो सकता।

फिर भी संसार में एक जगह पर सुख है। जहाँ पूर्णतः नीति हो, प्रत्येक व्यवहार में पूर्णतः नीति हो, वहाँ पर सुख है। दूसरा, जो समाज सेवक होते हैं जो खुद के लिए नहीं लेकिन औरों के लिए जीवन जीते हैं, तो उन्हें बहुत ही सुख रहता है। लेकिन वह सुख भौतिक सुख है, उसे मूर्च्छा का सुख नहीं कह सकते।

### उन्हें अनुमति प्रभु की

**प्रश्नकर्ता :** आजकल ईमानदारी से व्यापार करने जाते हैं तो अधिक परेशानियाँ आती हैं, ऐसा क्यों है?

**दादाश्री :** ईमानदारी से काम करने से एक ही मुश्किल आती

है, लेकिन बेईमानी से काम करने पर दो प्रकार की मुश्किलें आएँगी। ईमानदारी की मुश्किलों से तो छूटा जा सकता है लेकिन बेईमानी की मुश्किलों से छूटना कठिन है। ईमानदारी तो भगवान का दिया हुआ बड़ा 'लाइसेन्स' है। उसका तो कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। क्या, आपको वह 'लाइसेन्स' फाड़ देने का विचार आता है?

### व्यापार की तीन चाबियाँ

ये वाक्य लिखकर आपकी दुकान पर लगाना :

- (1) प्राप्त को भोगो-अप्राप्त की चिंता मत करना।
- (2) भुगते उसी की भूल।
- (3) डिस्ऑनेस्टी इज द बेस्ट फूलिशनेस।

ऑनेस्टी इज द बेस्ट पॉलिसी, वह कभी भी असत्य नहीं हो जाता लेकिन श्रद्धा डगमगा गई है और काल भी ऐसा है। रात को किसकी सत्ता होती है? चोरों का ही साम्राज्य हो तब अपनी दुकान खोलकर बैठें तब तो सबकुछ उठा ले जाएँगे। यह तो चोरों का काल है। उससे क्या हमें अपनी पद्धति बदल देनी है? सुबह तक दुकान बंद रखो, लेकिन अपनी पद्धति तो बदलनी ही नहीं है। ये राशन के नियम, उनमें कोई पोल मारकर चलता बने, तो वह उसे फायदा समझता है और दूसरे क्यों नहीं मानते हैं? घर में सभी असत्य बोलते हों तो किस पर विश्वास करना चाहिए? और यदि एक पर विश्वास करें तो फिर तो सभी पर विश्वास रखना चाहिए न! लेकिन यह तो घर में विश्वास, वह भी अंधा विश्वास रखते हैं। किसी की सत्ता नहीं है, कोई कुछ नहीं कर सकता है। यदि खुद की सत्ता होती तब तो कोई स्टीमर डूबता ही नहीं, लेकिन ये तो लट्टू हैं। प्रकृति जैसे नचाती है वैसे नाचते हैं। इसे परसत्ता क्यों कहा है? हमें पसंद हो वहाँ भी ले जाते हैं और नापसंद हो वहाँ भी ले जाते हैं। नापसंद हो वहाँ भी तो वह अनिच्छा से जाता ही है। इसलिए यह तो परसत्ता ही है न!



‘ऑनैस्टी इज़ द बेस्ट पॉलिसी’ ऐसा रखना, लेकिन यह वाक्य अब बेअसर हो चुका है। इसलिए अब से हमारा नया वाक्य रखना, ‘डिस्ऑनैस्टी इज़ द बेस्ट फूलिशनेस’, वह पॉज़िटिव सूत्र लिखने पर तो लोग चकरा गए हैं। ‘बिवेयर ऑफ थ्रीव्ज़’ का बोर्ड लिखते थे, फिर भी लोग लूटे गए तो फिर बोर्ड किस काम का? फिर भी लोग ‘ऑनैस्टी इज़ द बेस्ट पॉलिसी’ का बोर्ड लगाते हैं, फिर भी ऑनैस्टी नहीं होती तो फिर वह बोर्ड किस काम का है? अब तो नए शास्त्रों और सूत्रों की जरूरत है इसलिए हम कहते हैं कि ‘डिस्ऑनैस्टी इज़ द बेस्ट फूलिशनेस’ का बोर्ड लगाना।

### जहाँ सत्य-निष्ठा, वहाँ ऐश्वर्य

ऐसा नहीं है कि दुनिया में कुछ है ही नहीं। दुनिया में सभी चीज़ें हैं। लेकिन ‘सकल पदार्थ है जगमांही, भाग्यहीन नर पावत नाहीं’ ऐसा कहते हैं न? यानी जितनी भी चीज़ों की कल्पना की जा सकती हैं उतनी सभी चीज़ें संसार में हैं, लेकिन आपके अंतराय नहीं होने चाहिए, तब मिलेंगी।

सत्य-निष्ठा होनी चाहिए। ईश्वर मदद करने के लिए फुरसत में नहीं बैठे हैं। किसी की भी मदद करने के लिए वे खाली नहीं हैं। आपकी नीयत सच्ची होगी तभी आपको फल मिलेगा। नीयत खराब हो, और ईश्वर पर आरोप लगाएँ, तो क्या होगा? ईश्वर तो बेचारे उकताकर भाग जाएँगे!

इस संसार में सभी चीज़ें हैं लेकिन आपके हिस्से में क्या आया, वह देख लो। आपके हिस्से में माँसाहार आया तो उसे देखो और आपके हिस्से में शाकाहार आया तो उसे देखो। आपके हिस्से में क्या आएगा, वह आपके हाथ में नहीं है। उसके पीछे सभी संयोग, सांयोगिक प्रमाण हैं और यदि आप सच्चे हो तो आपको सब मिलेगा। यदि आप व्यवहार में सच्चे रहोगे तो आपको सभी चीज़ें मिलेंगी। लोग कहते हैं कि ‘सच्चे की ईश्वर सदा मदद करते हैं!’ लेकिन नहीं, ऐसा नहीं है।

ईश्वर सच्चे की मदद करते तो झूठे ने क्या गुनाह किया है? क्या ईश्वर पक्षपाती हैं? ईश्वर को तो हर जगह निष्पक्षपाती रहना चाहिए न? ईश्वर ऐसी कोई मदद नहीं करते। ईश्वर इसमें हाथ ही नहीं डालते। ईश्वर को याद करते ही आनंद होता है। इसका कारण यह है कि वह मूल वस्तु है और वह खुद का ही स्वरूप है। इसलिए याद करते ही आनंद होता है। आनंद का लाभ मिलता है। बाकी, ईश्वर कुछ भी नहीं करते। वे देना सीखे ही नहीं हैं और उनके पास कुछ है ही नहीं, तो देंगे क्या?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन वे आनंद देते हैं न?

**दादाश्री :** वह तो खुद का स्वाभाविक आनंद है। याद करने से आप में आनंद उत्पन्न होता है। जैसे आम को याद करने पर मुँह में पानी आ जाता है न? जैसे आम देखने पर मुँह में पानी आता है वैसे ही भगवान को याद करने पर आनंद होता है। सच्चे को ऐश्वर्य मिलता है। जहाँ-जहाँ सत्य, निष्ठा, आदि सारे गुण होते हैं न, वहाँ-वहाँ ऐश्वर्य उत्पन्न होता है। ऐश्वर्य यानी क्या कि हर चीज़ उसे घर बैठे मिल जाती है।

### सत्य भी काल के अधीन

**प्रश्नकर्ता :** सत्य चीज़ हमेशा बहुत कष्ट देती है। जीवन में सत्य एक नहीं होता। घर में एक सत्य होता है, व्यापार में दूसरा सत्य होता है। कई बार मेरा सत्य एक ही होता है, और उस भाई के दो प्रकार के सत्य होते हैं। उनके लिए जीवन में एक सत्य होता है, व्यापार में दूसरा सत्य होता है। जीवन का सत्य यानी घर में वह भाई झूठ नहीं बोल सकता और व्यापार में सच बोले तो चलेगा नहीं और मेरे लिए, पिता के रूप में एक ही सत्य है। जीवन में मेरा यह, एक ही सत्य है और उस भाई को दो सत्य एक ही रखना वाजिब नहीं लगता, उनके तो दोनों सत्य अलग-अलग हो ही सकते हैं। तो क्या, सत्य दो तरह के होते हैं या एक ही तरह का?

**दादाश्री :** हाँ, सभी जगह सत्य अलग-अलग होते हैं। व्यापार में एक तरह का हो तो दूसरी जगह अलग तरह का होता है। एक ही

मुश्किल खड़ी हो गई है। व्यापार में जो सत्य है वह काल के अधीन है। सत्युग में कलियुग जैसा सत्य नहीं था। आज का सत्य तो कलियुग का सत्य है। कलियुग का सत्य यानी कपट सहित सत्य और वह कपट रहित सत्य, यानी काल के अधीन, संयोगवश है। व्यापार में यह सब संयोगवश करना पड़ता है।

### सुधरे हुए लुटेरे के सामने...

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन हमारे जीवन में तो कई ऐसे मौके आते हैं कि जब झूठ बोलना ही पड़ता है। तब क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** वह तो मैं आपको बता देता हूँ। कहाँ झूठ बोलना चाहिए और कहाँ झूठ नहीं बोलना चाहिए, वह मैं आपको बता देता हूँ। कुछ जगह झूठ बोलना अच्छा है और कुछ जगह सच बोलना भी अच्छा है। भगवान तो, 'संयम' है या नहीं, बस उतना ही देखते हैं। संयम यानी किसी जीव को दुःख नहीं देता न? झूठ बोलकर भी दुःख नहीं देना चाहिए।

कुछ नियम हमेशा के लिए होते हैं और कुछ नियम टेम्पेरी होते हैं। टेम्पेरी को लोग नित्य मान लेते हैं, उससे भयंकर मुश्किलें खड़ी हो जाती हैं। टेम्पेरी एडजस्टेबल, इट एडजस्ट्स, इस तरह से निपटारा कर काम निकाल लेना है। क्या पूरी रात बैठे रहना है?

**प्रश्नकर्ता :** तो व्यवहार किस तरह से करें?

**दादाश्री :** विषमता पैदा नहीं होनी चाहिए। समभाव से *निकाल* करना है। हमें जहाँ से काम निकालना हो, वहाँ का मैनेजर कहे कि, 'दस हजार दोगे, तभी आपका पाँच लाख का चैक निकालूँगा'। अब हमारे साफ व्यापार में तो कितना नफा होता है? पाँच लाख रुपयों में, दो लाख हमारे घर के होते हैं और तीन लाख लोगों के होते हैं। अब ये लोग धक्के खाएँ तो क्या वह अच्छा कहा जाएगा? इसलिए उस मैनेजर से कहना कि, 'भाई, मुझे इसमें कोई नफा नहीं रहा।' ऐसे-वैसे समझाकर पाँच में *निकाल* करना वरना आखिर में दस हजार रुपये देकर

भी अपना चैक ले लेना चाहिए। अब वहाँ, 'मैं ऐसे रिश्तत कैसे दे सकता हूँ?', ऐसा करोगे तो इन लोगों को कौन जवाब देगा? वे माँगने वाले बड़ी-बड़ी गालियाँ देंगे! ज़रा समझ लो, जो समय आया है उसके अनुसार समझ लो।

रिश्तत देने में गुनाह नहीं है। जिस समय जो व्यवहार आए, वह व्यवहार यदि तुझे एडजस्ट करना नहीं आया, वह गुनाह है। अब यहाँ कुछ लोग पूँछ पकड़े रखते हैं! ऐसा है न, जब तक हम से एडजस्ट हुआ जा सके, जब तक लोग हमें गालियाँ न दें और अपने पास बैंक में हों, तब तक पकड़े रखना, लेकिन यदि बैंक में हो उससे ज़्यादा देना बाकी हो और लोग गालियाँ देते हों तब क्या करना चाहिए? आपको क्या लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, ठीक है।

**दादाश्री :** मैं तो अपने व्यापार में कह देता था कि, 'भाई, दे आओ रुपये। हम भले ही चोरी नहीं करते, और कुछ नहीं करते, लेकिन रुपये दे आना'। वर्ना लोगों को धक्के खिलाना, वह हम जैसे भले लोगों का काम नहीं है इसलिए रिश्तत दे देनी चाहिए, उसे मैं गुनाह नहीं कहता हूँ। गुनाह तो, किसी ने हमें माल दिया हो और हम उसे टाइम पर पैसे न लौटाएँ, उसे गुनाह कहता हूँ।

लुटेरे रास्ते में आपसे पैसे माँगे तो आप दे दोगे या नहीं? या फिर सत्य के खातिर नहीं दोगे?

**प्रश्नकर्ता :** दे देना पड़ेगा।

**दादाश्री :** वहाँ क्यों दे देते हो? और यहाँ क्यों नहीं देते हो? ये दूसरी तरह के लुटेरे हैं। आपको नहीं लगता कि ये दूसरी तरह के लुटेरे हैं!

**प्रश्नकर्ता :** वह पिस्तौल दिखाकर लेते हैं न?

**दादाश्री :** ये नई तरह के पिस्तौल दिखाते हैं। यह भी डराता

तो है न कि 'आपको एक महीने तक चैक नहीं दूँगा!' फिर भी गाली खाने तक हम पकड़कर रखें और फिर बाद में रिश्तत देने के लिए तैयार हों उसके बजाय 'गाली खाने से पहले ही, पत्थर के नीचे से हाथ निकाल लो' ऐसा कहा है। भगवान ने कहा है कि पत्थर के नीचे से संभालकर हाथ निकाल लेना, वर्ना पत्थर के बाप का कुछ नहीं जाने वाला। आपका ही हाथ टूट जाएगा। क्या लगता है आपको ?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, बिल्कुल सही है।

**दादाश्री :** अब ऐसी उल्टी-सीधी बातें कौन सिखाएगा? सब सत्य की पूँछ पकड़ते हैं। अरे, नहीं होता है सत्य। यह तो विनाशी सत्य है, सापेक्ष सत्य है। हाँ, यदि किसी की हिंसा हो रही हो, किसी को दुःख हो रहा हो, कोई मारा जाता हो, ऐसा नहीं होना चाहिए।

इस तरफ माँगने वाले की हद पूरी हो गई है और उधर वह मैनेजर गले पड़ गया कि 'आप दस हजार नहीं दोगे तो मैं आपका चैक नहीं दूँगा'। नहीं तो सेठ को बता दे न! लेकिन अब सेठ को बताने की उसकी हिम्मत नहीं है। वह कहता है कि, 'नहीं, सेठ को बताऊँगा तो मेरा व्यापार नहीं चलने देगा।' तब, यहाँ भी लालच है, तो दे दो न, छोड़ो झंझट यहाँ की!

इस तरह से न्याय करने में क्या कोई मुश्किल है? भगवान भी इसे गुनहगार नहीं मानते हैं। लुटेरे मिलें तब उन्हें पैसे दे देना, क्या गुनाह है? क्या वह सत्य है? मैं अपने रुपये दे दूँ, क्या वह सत्य है? तब क्यों दे देते हो?

**प्रश्नकर्ता :** डर के मारे।

**दादाश्री :** तो ये दूसरी तरह के लुटेरे हैं! ये सुधरे हुए और वे बिना सुधरे हुए लुटेरे हैं! ये सिविलाइज्ड लुटेरे हैं! वे अनसिविलाइज्ड लुटेरे हैं! क्या आपने सिविलाइज्ड लुटेरे नहीं देखे हैं? क्या सिविलाइज्ड लुटेरों के शिकंजे में नहीं आए हो? हमने कई सिविलाइज्ड लुटेरे देखे थे।

अतः मेरी यह बात समझने जैसी है, यदि समझो तो और ऐसा कोई सिखाएगा नहीं। मेरे जैसा और कोई नहीं सिखाएगा। अन्य लोग तो कहेंगे, नहीं देना चाहिए, बहुत हुआ तो वहाँ उपवास कर, कहेंगे कि सत्याग्रह कर। अरे साहब, मैं मर जाऊँगा। वह तो आप ही कर सकते हो।

अतः ये सब तो अनुभव की बातें हैं कि इसमें जितना गुनाह है उससे अधिक गुनाह तो उन माँगने वालों को धक्के खिलाते रहने में है। सरौते के बीच में सुपारी आ जाए तो हम क्या कर सकते हैं? कट ही जाएगी न? सरौते के बीच आई हुई सुपारी क्या बच सकती है?

इसलिए ऐसा कोई गणित मत लगाना। 'हमारे 'दादा' ने सिखाया है', ऐसा कह देना।

**प्रश्नकर्ता :** पूरी जोखिमदारी 'दादा' की।

**दादाश्री :** हाँ, जोखिमदारी मेरी लेकिन यदि मेरे कहे अनुसार करोगे तो! आपको वहाँ अधिक नुकसान होगा लेकिन इसमें कम नुकसान है, मैं आपको ऐसा कहना चाहता हूँ। नुकसान तो अवश्य है। आप रिश्तत देते हो, वह नुकसान तो है ही लेकिन उस नुकसान में यदि सौ रुपये जाते हों तो इसमें पंद्रह रुपयों में हो जाता है तो आपके पचासी (रुपये) तो बचे! वर्ना तो फिर, गधे की पूँछ पकड़ी सो पकड़ी, इतनी लाते खाई, अब तो छोड़।

**सभी भूमिकाओं में से गुज़रे...**

**प्रश्नकर्ता :** आपके पहले के जीवन में हमारे जैसी भूमिका तो आई ही होगी न?

**दादाश्री :** हर तरह की भूमिका आई थी। हर एक भूमिका, जो आप सभी को आती हैं वे भूमिकाएँ मुझे भी मिल चुकी हैं।

**प्रश्नकर्ता :** क्या सब में से पास हो चुके हैं?

**दादाश्री :** हाँ, पास हो चुके हैं। फिर भी आचार और भूमिका में फर्क है। आचार उस समय हो या न हो लेकिन भूमिकाएँ सारी आ चुकी हैं।

**प्रश्नकर्ता :** पर यों ऐसा दिखा था न?

**दादाश्री :** सभी कुछ दिख चुका है न! कुछ भी देखना बाकी नहीं रहा इसीलिए तो सॉल्यूशन देता हूँ न!

### व्यापार होते हुए भी ज्ञानी

**प्रश्नकर्ता :** आपश्री भगवान प्राप्ति के मार्ग पर मुड़ गए, साथ ही आप बड़े व्यापार के साथ जुड़े हुए हैं। तो दोनों किस तरह संभव है? यह समझाइए।

**दादाश्री :** अच्छा प्रश्न है कि 'हँसना और आटा फाँकना', दोनों साथ में किस तरह हो सकता है? पूछ रहे हैं कि एक ओर तो व्यापार करते हो और दूसरी ओर भगवान की राह पर हो, यह दोनों किस तरह संभव हो पाया? लेकिन हो सके, ऐसा है। बाहर का अलग चले और अंदर का अलग चले, ऐसा है। दोनों अलग ही हैं।

ये नरेन्द्र भाई हैं न, ये नरेन्द्र भाई अलग हैं और आत्मा अलग है। अंदर दोनों अलग हो सकें, ऐसा है। दोनों के गुणधर्म भी अलग हैं। जैसे यहाँ सोना और तांबा दोनों मिल गए हों, तो फिर से अलग करना हो तो हो पाएगा या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** हो पाएगा।

**दादाश्री :** उसी तरह ज्ञानी पुरुष इसे अलग कर सकते हैं। ज्ञानी पुरुष जो चाहें वह कर सकते हैं, आपको यदि अलग करवाना हो तो यहाँ आना और लाभ लेना हो तो आना।

व्यापार चलता रहता है लेकिन व्यापार में एक क्षण के लिए भी हमारा उपयोग नहीं रहता। वहाँ सिर्फ नाम होता है। लेकिन हमारा

उपयोग क्षण भर के लिए भी नहीं रहता। महीने में एकाध दिन शायद दो घंटों के लिए मुझे जाना पड़ता है और जाते भी हैं लेकिन व्यापार में हमारा उपयोग नहीं रहता। उपयोग में नहीं रहते, उससे आपको क्या समझ में आया? लोग दान लेने जाते हैं न, तब यदि किसी के पास दान लेने जाओ, और आप कहो कि, 'स्कूल के लिए दान दीजिए', तो वह अपना मन आपसे अलग रखता है। रखता है या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** रखता है।

**दादाश्री :** उसी तरह इसमें सब अलग रहता है। उसमें अलग रखने के सब रास्ते हैं। आत्मा भी अलग है और यह भी अलग है।

### व्यापार, ड्रामेटिक

हमें व्यापार पर ज्यादा प्रीति नहीं है, शुरू से ही नहीं है! मैं कोई पैसे कमाने या ऐसा कुछ करने के लिए नहीं बैठा हूँ। मैं तो यह खोज करने आया हूँ कि यह जगत् क्या है और किस तरह से चलता है? व्यापार मुझे नहीं पुसाता। मैंने अपनी खोज पूरी कर ली है।

व्यापार में चित्त नहीं रखा। पूरी जिंदगी व्यापार में चित्त नहीं रखा। व्यापार अवश्य किया है। मेहनत की होगी, काम किया होगा लेकिन चित्त नहीं रखा।

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर वह व्यापार कैसे चलता है?

**दादाश्री :** यह नाटक होता है। वे जो नाटक करते हैं, उस समय क्या पहली बार नाटक होता है कि पहले रिहर्सल कर चुके होते हैं? सारा रिहर्सल हो ही चुका है। सारा रिहर्सल जो हो चुका है वे फिर से करते हैं। एक बार हो चुका है। उस पर मुहर लगानी है। योजना बनी तभी से हमें नहीं समझ लेना चाहिए कि रूपक में आने वाला है? पिछले जन्म में योजना बनकर तैयार हो चुकी थी। वह रूपक में आई है। अब जो योजना बन रही है वह अगले जन्म के लिए। वह बाद में रूपक में आएगी।



## व्यापार में बीते कई जन्म...

जब वह टायर की दुकान लगाता है तब यही समझता है कि बस, टायर के बिना तो दुनिया में चल ही नहीं सकता। यानी हर जन्म में दुकानें लगाई हैं। व्यापार, व्यापार और बस, व्यापार। खुद के स्वरूप की ओर दृष्टि ही नहीं गई। खुद कौन है, उस ओर कभी दृष्टि ही नहीं की।

## वनवास, व्यापार में...

**प्रश्नकर्ता :** अभी तो वनवास चल रहा है।

**दादाश्री :** इतने बड़े शहर में रहते हो फिर वनवास कह रहे हो, इसका कुछ कारण तो होगा न? क्या सास बहुत परेशान करती है?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** हाँ, कई जगहों पर सास ऐसी होती हैं वह बहू को हम से मिलने ही नहीं देती, इसलिए फिर वनवास हो जाता है? आपकी सास तो अच्छी है न? फिर यह वनवास किसलिए? वह मुझे बताओ न!

**प्रश्नकर्ता :** कामकाज के बारे में।

**दादाश्री :** ओहोहो! कामकाज ठीक से नहीं चल रहा है, नहीं? भाव कम रखो तब भी नहीं मिलता?

## चिंता से व्यापार की मौत

**प्रश्नकर्ता :** व्यापार की चिंता होती है, बहुत बाधाएँ आती हैं।

**दादाश्री :** चिंता होने लगे तो समझना कि काम ज्यादा बिगड़ने वाला है। चिंता न हो तो समझना कि कार्य बिगड़ने वाला नहीं है। चिंता कार्य में रुकावट डालती है। चिंता से तो व्यापार की मौत आती है। जो चढ़ता-उतरता है, उसे ही व्यापार कहते हैं। वह पूरण-गलन

है। जिसका पूरण हुआ है, उसका गलन हुए बगैर रहता ही नहीं है। पूरण-गलन में अपनी कोई मिलकत नहीं है और जो हमारी मिलकत है, उसमें कोई पूरण-गलन होता नहीं है! ऐसा शुद्ध व्यवहार है! आपके घर में आपके बीवी-बच्चे सभी पार्टनर्स हैं न?

**प्रश्नकर्ता :** सुख-दुःख के असर में हैं सब।

**दादाश्री :** आप अपने बीवी-बच्चों के संरक्षक हो। सिर्फ संरक्षक को ही क्यों चिंता करनी? बल्कि घर वाले तो कहते हैं कि आप हमारी चिंता मत करना।

**प्रश्नकर्ता :** चिंता का स्वरूप क्या है? जब जन्म हुआ था तब तो नहीं थी, फिर वह आई कहाँ से?

**दादाश्री :** जैसे-जैसे बुद्धि बढ़ती है, वैसे-वैसे संताप बढ़ता है। जन्म के समय क्या बुद्धि होती है? व्यापार के लिए सोचने की ज़रूरत है। लेकिन उससे आगे गए तो बिगड़ जाता है। व्यापार के लिए दस-पंद्रह मिनट सोचना चाहिए। फिर उससे आगे बढ़े और विचारों के चक्कर चलने लगे तो वह नॉर्मेलिटी से बाहर गया कहलाएगा। तब उसे छोड़ देना। व्यापार के विचार तो आएँगे, लेकिन उन विचारों में तन्मयाकार होकर लगातार सोचते रहने से उसका ध्यान उत्पन्न होता है और उससे चिंता होती है। वह बहुत नुकसान करती है।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन व्यापार की ज़िम्मेदारियाँ होती हैं उनका क्या?

**दादाश्री :** व्यापार की ज़िम्मेदारी है तो क्या शौच नहीं जाते?

**प्रश्नकर्ता :** वह तो नित्यकर्म है। शारीरिक धर्म तो निभाने ही पड़ेंगे न!

**दादाश्री :** तो यह भी नित्यकर्म है। जैसे नींद लेना नित्यकर्म है वैसे ही ये सब भी नित्यकर्म हैं। इस नित्यकर्म को धक्का देकर भीतर अजंपा करता रहता है, और उससे सारे अगले जन्म बिगड़ जाते हैं।

## कौन किसको नहीं छोड़ता!

तो यह व्यापार करोगे तभी गाड़ी चलेगी, ऐसा है? वर्ना नहीं चलेगी ऐसा है?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, लेकिन...

**दादाश्री :** दो साल रुक जाए तो चलेगा! क्या, खाना-पीना बंद हो जाएगा?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं-नहीं। ऐसा तो नहीं है। ऐसी मुश्किल तो नहीं आएगी।

**दादाश्री :** तो फिर किसलिए यह सब करते हो? व्यापार आपको नहीं छोड़ता है या आप व्यापार को नहीं छोड़ते हो!

**प्रश्नकर्ता :** हम व्यापार को नहीं छोड़ते।

**दादाश्री :** तब ठीक है (!) यानी प्रेम चाहिए न? बिना प्रेम के सौदे बेकार। प्रेम के बिना सब सौदे बेकार हैं।

## कितने इकट्ठे हुए?

मन को तृप्ति हो जाए उतने पचासेक लाख इकट्ठे हो चुके हैं?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** पूरी ज़िंदगी क्या करते रहे? फिर भी पचास लाख इकट्ठे नहीं हुए?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** अरे, ऐसा कहते हो? शायद, दो-पाँच लाख कम होंगे, और क्या?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं जी नहीं।

## क्या उसे पुरुषार्थ कहेंगे?

**दादाश्री :** आप क्या पुरुषार्थ करते हो ?

**प्रश्नकर्ता :** व्यापार का।

**दादाश्री :** वह तो पुरुषार्थ नहीं कहलाएगा। यदि खुद ही पुरुषार्थ कर रहा होता तो हमेशा फायदा ही लाता, लेकिन इसमें तो नुकसान भी होता है न? वह पुरुषार्थ नहीं कहा जाएगा। वह तो, जो रस्सी लपेटी थी वह खुल रही है। उसे पुरुषार्थ कैसे कहा जाएगा? यदि आप पुरुषार्थ करते हो तो नुकसान क्यों होता है ?

**प्रश्नकर्ता :** वह तो ऐसा भी हो जाता है। कभी नुकसान भी हो जाता है।

**दादाश्री :** नहीं, पुरुषार्थ करने वाले को तो कभी नुकसान नहीं होता।

## फायदा-नुकसान कौन करता है?

हाँ, लेकिन क्या आपने कभी वास्तव में कमाया है? क्या आपने कभी खुद कमाया है ?

**प्रश्नकर्ता :** वैसे तो खुद ही कमाया है।

**दादाश्री :** ऐसा? तब तो लोग नुकसान भी खुद ही करते होंगे? नुकसान उठाते हैं, वह खुद ही करते होंगे।

**प्रश्नकर्ता :** खुद से ही होता है। नुकसान उठाते हैं वह खुद से ही होता है।

**दादाश्री :** लेकिन क्या नुकसान खुद करते होंगे?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ। जैसे खुद कमाते हैं वैसे ही नुकसान भी खुद ही करते हैं न!

**दादाश्री :** बहुत अच्छा! लेकिन नुकसान अच्छा नहीं लगता।

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** तब फिर, नुकसान खुद ही करते हैं, ऐसा कैसे कहा जा सकता है?

### **नुकसान दुकान का या आपका ?**

मन में तय करते हैं कि आर्तध्यान, रौद्रध्यान नहीं करना है, लेकिन दुकान घाटे में ही जाती है, इसलिए तो करना पड़े न, क्या करे?

अरे दुकान घाटे में जाती है, क्या तू घाटे में जाता है? घाटे में तो यह दुकान जाती है। दुकान का स्वभाव ही ऐसा है कि नुकसान में भी ले जाती है और फिर फायदे में भी लाती है। अर्थात् वह नुकसान और फायदा दिखाती है! बार-बार, ब्लैक एन्ड व्हाइट, ब्लैक एन्ड व्हाइट। व्हाइट गया कि ब्लैक आता है। ब्लैक गया कि व्हाइट आता है। उसका स्वभाव ही ऐसा है, उसे तू क्यों अपने सिर पर ले लेता है? और तेरा क्या ठिकाना है? कल सुबह निकलो तब क्षण भर में फ्रैक्चर हो सकता है, क्या ठिकाना है? ऐसी दुनिया में आप पहले क्यों दुकान के लिए विलाप करते हो? पहले अपने लिए विलाप करो न! यदि विलाप करना है तो पहले अपने लिए करो। दुकान के लिए क्यों करते हो?

दुकान तो बेचारी पगड़ी भी देगी और आपको तो कोई बाप भी पगड़ी बंधवाने वाला नहीं है।

### **व्यापार के कान में फूँक**

हम काम शुरू करने से पहले क्या करते थे? जब स्टीमर समुद्र में उतारते थे, वहाँ महाराज से सब पूजा-पाठ करवा देते थे, सत्यनारायण की कथा और अन्य सारी पूजा-विधियाँ करते थे और स्टीमर की भी पूजा करते थे, फिर हम स्टीमर के कान में कहते थे कि, 'तुझे डूबना हो तो डूबना, हमारी इच्छा नहीं है! हमारी इच्छा नहीं है!! हमारी इच्छा नहीं है!!!' ऐसे न कहें तो फिर निःस्पृह हो गए, ऐसा कहा

जाएगा तब तो फिर डूब जाएगा। हमारी इच्छा नहीं है, ऐसा कहा इसलिए इसके पीछे शक्ति काम करती है और यदि डूब गई तो हम समझ ही लेंगे न कि कान में कहा ही था न। हमने कहाँ नहीं कहा था? यानी एडजस्टमेंट करने से हल आए ऐसा है, इस संसार में।

मन का स्वभाव ऐसा है कि उसकी मनमानी न हो तो निराशा हो जाता है। इसलिए ये सब रास्ते करने हैं। फिर छः महीने के बाद डूबे या दो साल के बाद, लेकिन तब हम 'एडजस्टमेंट' ले लेते हैं कि छः महीने तो चला। व्यापार यानी इस पार या उस पार। आशा का महल निराशा लाए बगैर नहीं रहता। संसार में वीतराग रहना बहुत मुश्किल है। वह तो, हमारी (दादाजी की) ज्ञानकला और बुद्धिकला जबरदस्त है, इसलिए रह पाते हैं।

### ग्राहक के साथ...

**प्रश्नकर्ता :** दुकान में ग्राहक आए इसलिए मैं दुकान जल्दी खोलता हूँ और देर से बंद करता हूँ, वह ठीक है न?

**दादाश्री :** आप ग्राहक को आकर्षित करने वाले कौन हो? आपको तो दुकान, जब लोग खोलते हों उस टाइम पर ही खोलनी चाहिए। लोग सात बजे खोलते हों और हम साढ़े नौ बजे खोलें, तो वह गलत कहलाएगा। लोग जब बंद करें तब हमें भी दुकान बंद करके घर जाना है। व्यवहार क्या कहता है और लोग क्या करते हैं, वह देखो। लोग सो जाएँ तब आप भी सो जाओ। रात को दो बजे तक उधम मचाते रहो, वह किसके जैसी बात है! क्या खाने के बाद सोचते हो कि किस तरह पचेगा? उसका परिणाम सुबह मिल ही जाता है न? ऐसा ही सब व्यापार में है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, फिलहाल दुकान में बिल्कुल बिक्री नहीं है, तो क्या करूँ?

**दादाश्री :** 'इलेक्ट्रिसिटी' चली जाए तब आप, 'इलेक्ट्रिसिटी'

कब आएगी, कब आएगी, ऐसा करो तो जल्दी आएगी? वहाँ आप क्या करते हो?

**प्रश्नकर्ता :** एक-दो बार फोन करते हैं या खुद कहने जाते हैं।

**दादाश्री :** सौ बार फोन नहीं करते?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** जब लाइट गई तब हम तो आराम से गा रहे थे, फिर अपने आप आ गई न?

**प्रश्नकर्ता :** यानी हमें निःस्पृह होना है?

**दादाश्री :** निःस्पृह होना भी गुनाह है और सस्पृह होना भी गुनाह है। लाइट आए तो अच्छा, इतना ही हमें रखना चाहिए। फिर उछल-कूद नहीं करनी है। 'रेग्युलारिटी' एवं भाव नहीं बिगाड़ने हैं। यह तो, एक दिन ग्राहक न आए तो सेठ नौकर को डाँटता रहता है! यदि उसकी जगह हम होते तो क्या होता? वह बेचारा नौकरी करने आता है और आप उसे डाँटो, तो वह बैर बाँधकर सहन कर लेता है। नौकर को डाँटो मत, वह भी इंसान है। उस बेचारे को दुःख है और यहाँ आप सेठ होकर डाँटो, तो वह बेचारा कहाँ जाएगा! बेचारे पर थोड़ा दयाभाव रखो न!

ग्राहक आए तो उसे शांति से, प्रेम से सामान देना चाहिए। ग्राहक न हो तब भगवान का नाम लेना चाहिए। ये तो, ग्राहक न हों तो इधर-उधर देखता रहता है। भीतर व्याकुल रहता है कि 'आज तो खर्चा सिर पर आएगा, इतना नुकसान हो गया', ऐसा चक्कर चलाता रहता है। जो ग्राहक आना होता है वही आता है, इसमें भीतर चक्कर मत चला। दुकान में ग्राहक आएँ तो पैसों का लेन-देन करना, लेकिन कषाय मत करना, समझा-बुझाकर काम निकालना। यदि पत्थर के नीचे हाथ आ जाए तो क्या, हथौड़ा मारते हो? नहीं, वहाँ तो दब जाए तब समझदारी से निकाल लेना। उसमें कषाय करने से तो बैर बंध जाते हैं

और एक बैर में से अनंत खड़े हो जाते हैं। इस बैर से ही जगत् खड़ा है, वही मूल कारण है।

## बैर से छूटो

इन ग्राहक और व्यापार के बीच संबंध तो होता है न? और यह संबंध, जब व्यापारी दुकान बंद करता है तो संबंध छूट जाता है? नहीं होता। ग्राहक तो याद रखता है कि 'इस व्यापारी ने मेरे साथ ऐसा किया था, ऐसा खराब सामान दिया था। लोग तो बैर याद रखते हैं, और बाद में आपने इस जन्म में दुकान बंद कर दी हो लेकिन क्या वह अगले जन्म में आपको छोड़ेगा? नहीं छोड़ेगा, वह तो बैर वसूलकर ही रहेगा। इसीलिए भगवान ने कहा था कि 'किसी भी तरह बैर को छोड़ो।' हमारे एक परिचित रुपये उधार ले गए थे लेकिन फिर लौटाने ही नहीं आए। तब हम समझ गए कि यह बैर से बंधा होगा, तो भले ही वे ले गए और ऊपर से हमने उनसे कह दिया कि, 'अब आप हमें रुपये मत लौटाना। आपको छूट है।' इस तरह पैसे छोड़कर भी यदि बैर छूटता हो तो छोड़ दो। किसी भी तरह से बैर छोड़ो, वना एक व्यक्ति के साथ का बैर भी भटकायेगा।

## उसमें भी सत्य, हित, मित और प्रिय

हमें सत्य, हित, प्रिय तथा मित की तरह काम लेना है। कोई ग्राहक आए तो उन्हें प्रिय लगे उस तरह बात करनी है, उन्हें हितकारी हो ऐसी बातचीत करनी है। ऐसी चीज़ मत दो कि जो उसे घर ले जाने के बाद बेकार साबित हो। तो वहाँ हमें उनसे कहना चाहिए कि, 'भाई, यह चीज़ आपके काम की नहीं है'। तब कोई कहे कि, 'ऐसा सच बोल देंगे तो हम व्यापार किस तरह करेंगे?' अरे, आप किस आधार पर जी रहे हो? किस हिसाब से आप जी रहे हो? जिस हिसाब से आप जी रहे हो, उसी हिसाब से व्यापार चलेगा। किस हिसाब से लोग सुबह उठते होंगे? रात को सो गए और मर गए तो? यों बहुत से लोग सुबह उठ नहीं पाए! वह किस आधार पर? यानी घबराने की



ज़रूरत नहीं है। ईमानदारी से व्यापार करना। फिर जो हो वह सही, लेकिन हिसाब मत लगाना।

### उसमें हाय-तौबा क्यों?

मनुष्य को कमाने की जल्दी नहीं करनी चाहिए। कमाने में आलस करना चाहिए। जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए क्योंकि कमाने के लिए ज़्यादा जल्दी करोगे तो 1988 में हमें जो धन मिलना होगा वह अभी आ जाएगा, *उद्दीरणा* (भविष्य में फल देने वाले कर्मों को समय से पहले परिपक्व करके वर्तमान में खपाना) हो जाती है, फिर हम 1988 में क्या करेंगे? इसलिए बहुत ज़्यादा धन कमाने की खटपट नहीं करनी चाहिए। हमें व्यापार, निश्चित भाव से, शांत रूप से करना चाहिए। इस काल में नीतिमत्ता का जितना पालन हो सके भाव से उतना करते रहना चाहिए। हाय-तौबा तो कौन करता है? जिसे अनाज अथवा कुछ कम पड़ता हो वह हाय-तौबा करता है। ऐसे अनाज की कमी पड़े आपका ऐसा दिन तो नहीं आने वाला है न? कपड़ों की कमी पड़ जाए, ऐसे दिन आते हैं?

कमाई हो तब खेद करना चाहिए कि कहाँ खर्च करेंगे? और खर्चे आएँ तो मज़बूत हो जाना चाहिए कि ऋण चुकाने का संयोग मिला। कमाई, वह ज़िम्मेदारी है और खर्चा तो चुकाने का, ऋण से छूटने का साधन है। धन का बोझा रखने जैसा नहीं है। बैंक में जमा हो तब खुश होता है और जब जाता है तब दुःख होता है। इस जगत् में कुछ भी खुश होने जैसा नहीं है क्योंकि 'टेम्पेरी' है! लक्ष्मी सहज भाव से आती हो तो आने देना, लेकिन उसका आधार मत लेना। आधार लेकर 'खुश' हो जाते हो लेकिन वह आधार कब हट जाएगा, वह कहा नहीं जा सकता। इसलिए पहले से ही सचेत रहो ताकि *अशाता* वेदनीय में घबरा न जाएँ।

### इस समझ से चिंता गई...

व्यापार करने के लिए तो बड़ी हिम्मत चाहिए। हिम्मत न हो तो व्यापार ठप्प हो जाता है।

पहले हमें एक बार, हमारी कंपनी को घाटा हुआ था। ज्ञान होने से पहले तब हमें पूरी रात नींद नहीं आई। चिंता होती रही। तब भीतर से जवाब आया कि अभी कौन-कौन इस घाटे की चिंता करता होगा? मुझे ऐसा लगा कि मेरा पार्टनर तो शायद चिंता न भी करता हो। मैं अकेला ही कर रहा हूँ और बीवी-बच्चे सब पार्टनर हैं लेकिन वे तो कुछ जानते ही नहीं हैं। अब वे सब नहीं जानते, फिर भी उनका चल रहा है, तो मैं अकेला ही बेअक्ल हूँ, जो यह सब चिंता कर रहा हूँ! तब फिर मुझे अक्ल आ गई क्योंकि वे चिंता नहीं करते। सब पार्टनर हैं, फिर भी चिंता नहीं कर रहे तो मैं अकेले ही चिंता करता हूँ। तब मुझे अक्ल आ गई इसलिए चिंता नहीं करता। अरे, वे लोग चिंता नहीं करते तो मुझे चिंता करने की क्या जरूरत है? मुझे तो अपना कर्तव्य निभाना है, चिंता नहीं करनी है। यह फायदा-नुकसान ये तो सब कारखाने का होता है। अपने ऊपर नहीं है। हम तो कर्तव्य निभाने के अधिकारी हैं। ये सब तो कारखाने का होता है। कारखाना सिर पर लेकर घूमते हैं, तो रात को कितनी नींद आएगी?

**प्रश्नकर्ता :** नींद नहीं आएगी।

**दादाश्री :** नींद नहीं आएगी न? यह तो अच्छा है कि आपका वकील का पेशा है। यदि आपको कारखाने में बिठाया हो तो क्या होगा? खुद गहरे उतरे न, तो बेटा चिंता कर रहा होता है और यह पिता भी चिंता कर रहा होता है। बेटा अपने कारखाने में चिंता कर रहा होता है लेकिन पिता गहरे उतरे तब उन्हें पता चला कि इतना ज्यादा नुकसान होने लगा है। फिर सब के चिंता करने से क्या नुकसान बंद हो जाएगा, नहीं? चिंता से ही यह सारा नुकसान होता है। चिंता करने का अधिकार नहीं है। सोचने का अधिकार है कि, भाई यहाँ तक सोचना है और सोच जब चिंता में बदल जाए तब सोचना बंद कर देना चाहिए।

वह अबव नॉर्मल विचार माना जाता है, उसे चिंता कहा जाता है। अबव नॉर्मल विचार, वह चिंता कहलाती है। अतः हम सोचते तो

हैं, लेकिन जब अबव नॉर्मल हो जाए और चिंता बढ जाए, तब सोचना छोड़ देते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** सामान्य तौर पर जब तक भीतर में देखते रहे तब तक वह विचार कहलाता है और यदि चिंता होने लगी तो, उलझ गया, ऐसा कहा जाएगा ?

**दादाश्री :** चिंता हुई, मतलब उलझ ही गया न! चिंता हुई यानी वह मानता है कि मेरी वजह से ही चल रहा है, ऐसा मान बैठा है। चिंता यानी क्या कि यह सब मेरी वजह से ही चल रहा है। यानी इन सब झंझट में पड़ने जैसा नहीं है और यह ऐसा ही है। यह तो सभी मनुष्यों में ऐसा रोग हो गया है। अब जल्दी कैसे निकले? जल्दी से नहीं निकलता न! आदत पड़ चुकी है वह जाती नहीं है न! हेबिचूएटेड।

**प्रश्नकर्ता :** आपके पास आने से निकल जाती है न!

**दादाश्री :** हाँ! निकल जाती है लेकिन धीरे-धीरे निकलती है। लेकिन फिर एकदम से नहीं जाती न!

### नुकसान मानकर, ज़ोरदार व्यापार ज़ोर लगाकर करो

**दादाश्री :** कॉन्ट्रैक्ट के धंधे में फायदा ढूँढते हो या नुकसान ?

**प्रश्नकर्ता :** फायदा ही!

**दादाश्री :** एक ही पक्ष में पड़े हो? जिस कोने में सब लोग पड़े हैं क्या उसी कोने में आप भी पड़े हो? आपको लोगों की विरुद्ध जाना चाहिए। लोग हमेशा फायदा ढूँढते हैं और हमें कहना है, नुकसान हो और नुकसान चाहने वाले को कभी चिंता नहीं आती। फायदा ढूँढने वाला हमेशा चिंता में ही रहता है और नुकसान चाहने वाले को कभी चिंता ही नहीं आती उसकी हम गारन्टी देते हैं। हमारी बात समझ में आती है?

व्यापार शुरू किया तब से लोग क्या कहते हैं? इस काम में चौबीस हजार तो मिलें, ऐसा है! अब, जब ऐसा फोरकास्ट (पूर्वानुमान)

करते हैं तब, संयोग बदलेंगे, उनका ध्यान नहीं रखता। ऐसे ही, फोरकास्ट (आगाही) कर देता है। वह, ऑटोमैटिक तरीके से एस्टिमेट में परसेन्टेज (प्रति शत) निकालकर, सब निकालकर फोरकास्ट करता है, उस समय संयोगों को ध्यान में नहीं रखता और कहता है कि, 'चालीस हजार मिलने वाले हैं'।

फिर तीन महीने बाद संयोग बदले और साहब कड़क आ गए तो मटिरियल्स में जो दस प्रतिशत छूट रखते थे, वह बंद हो गई और जो पुराना काम हो चुका था, उसमें तोड़फोड़ करवाई, उसमें वह चालीस हजार का पूर्वानुमान था, उसमें से तीस हजार उसमें चले गए। दस हजार बचे। फिर बाद में बिल देते समय तूफान मचाया। उसमें भाव कम कर दिया। पैसे कट गए तो फिर क्या कहेगा? वैसे तो रियली स्पीकिंग, नो प्रॉफिट-नो लॉस है, लेकिन कहता क्या है कि, 'चालीस हजार का नुकसान हुआ।' क्योंकि उसने पहले से ही फायदा मान लिया था न!

हमने भी पूरी जिंदगी कॉन्ट्रैक्ट (ठेकेदारी) में गुजारी है और सभी तरह के कॉन्ट्रैक्ट ले चुके हैं और उसमें समुद्र में जेटीयाँ भी बनाई हैं। अब वहाँ, व्यापार की शुरुआत में क्या करते थे? जहाँ पाँच लाख मिल सकें, ऐसा हो, वहाँ पहले से ही तय कर लेते थे कि एक लाख रुपये मिलें तो बहुत है। अंत में तो बिना फायदा-नुकसान के हो जाए, इन्कम टैक्स का निकले और हमारा निर्वाह हो जाए तो बहुत हो गया। फिर तीन लाख मिले होते तो फिर मन में आनंद रहता क्योंकि जितना सोचा था उससे कहीं ज्यादा मिला। ये तो, चालीस हजार माने थे और बीस हजार मिले तो दुःखी हो जाते हैं!!

देखो, यह तरीका ही गलत है न। जीवन जीने का तरीका ही गलत है न? और यदि नुकसान ही सोचकर चले तो उस जैसा सुखी तो कोई भी नहीं है। फिर कभी जिंदगी में नुकसान आएगा ही नहीं! क्योंकि ऐसा कहता है कि, 'नुकसान का ही उपासक हूँ', तो पूरी जिंदगी नुकसान आएगा ही नहीं। नुकसान का उपासक हो गया फिर क्या...?!

## ये गिनती ऐसे होती है...

हर कोई फायदे की ही आशा रखते हैं। कोई भी व्यक्ति नुकसान की आशा रखता ही नहीं है। एक साल तो नुकसान की आशा रखकर देख! नुकसान हो तो समझना कि आशा फली। हम तो नुकसान की आशा रखते हैं। औरों के जैसा नहीं रखते।

घर में दस व्यक्ति हों और व्यापार में पचास हजार का फायदा हो, तो सब कहेंगे कि पचास हजार का फायदा हुआ। तो सब का इकट्ठा करें तो कितना फायदा हुआ कहलाएगा?

**प्रश्नकर्ता :** पाँच लाख हो जाएँगे।

**दादाश्री :** और, 'पच्चीस हजार का नुकसान हो गया', कहो न तो भीतर उतना ही दुःख होता है। फायदे का आनंद ज्यादा नहीं होता। नुकसान का दुःख ज्यादा होता है इसलिए नुकसान बाँट लेना चाहिए। हाँ, कि भाई उनके हिस्से में ढाई हजार और मेरे हिस्से में ढाई हजार।

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् फायदे को मल्टीप्लाई (गुणा) करना चाहिए और नुकसान को बाँट लेना चाहिए?

**दादाश्री :** नहीं, कुछ भी मल्टीप्लाई नहीं करना है। वास्तव में फायदे में कोई आनंद होता ही नहीं है।

घर में सब की तबियत ठीक हो तो समझना कि फायदा है। उस समय यदि बहीखाते में नुकसान हो फिर भी वहाँ फायदा ही है! दुकान की तबियत बिगड़े या न बिगड़े, घर वालों की नहीं बिगड़नी चाहिए।

## रात में भी नुकसान होता है न?

व्यापार के दो बेटे हैं, एक का नाम नुकसान और एक का नाम फायदा। नुकसान वाला बेटा किसी को भी पसंद नहीं है लेकिन दोनों ही होते हैं। वे दोनों तो जन्मे ही होते हैं। व्यापार में नुकसान हो रहा हो, तो वह रात को होता है या दिन में?

**प्रश्नकर्ता :** रात में भी और दिन में भी हो सकता है।

**दादाश्री :** लेकिन जो नुकसान होता है वह तो दिन में होना चाहिए न? यदि रात में नुकसान होता तो, रात को तो हम जागते नहीं हैं न, फिर रात को कैसे नुकसान होता है? यानी नुकसान या फायदे के कर्ता हम नहीं हैं, वरना रात में नुकसान कैसे होता? और रात में फायदा कैसे मिलेगा? अब ऐसा नहीं होता कि मेहनत करते हैं फिर भी नुकसान होता है?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, ऐसा होता है।

**दादाश्री :** तो मेहनत करने से फायदा होता है या मेहनत करने से नुकसान होता है इसका डिसिज़न (निर्णय) क्या है?

**प्रश्नकर्ता :** फायदा या नुकसान, वह उसके हाथ में नहीं है। वह तो 'व्यवस्थित' के हाथ में है।

**दादाश्री :** हाँ, सब 'व्यवस्थित' के ताबे में है। यानी, 'व्यवस्थित' भीतर से जैसे प्रेरणा दे, हमें उस तरह से करना चाहिए। उसमें अपनी बुद्धि ज़्यादा नहीं लगानी चाहिए। यदि बुद्धि से नापने जाएँ कि फायदा होगा या नुकसान, तो क्या वह नाप निकल पाएगा क्या?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं होगा।

**दादाश्री :** किसी व्यक्ति को कुछ बीमारी हो और बीमारी को बुद्धि से नापने जाए तो क्या होगा? उसे तो ऐसा ही लगेगा कि, 'बस, अब तो मर ही जाऊँगा।' और बीमारी नहीं हुई हो तो वह बुद्धि से नहीं नापता। फिर भी ऐसे ही उस बेचारे को दर्द उठता है और मर जाता है। ऐसा होता है या नहीं?

इसलिए वह सब फायदा या नुकसान, कुछ भी नहीं देखना है। देखना अब क्या है? वह फायदा या नुकसान तो सब लेकर ही आए हैं। उसमें तो अब आपको सिर्फ निमित्त के रूप में, भीतर से जैसे प्रेरणा मिले, उस तरह चलते रहना है। 'व्यवस्थित' को लाँघना नहीं

है। भीतर से जैसी प्रेरणा हुई, आपको वैसा करना है। नुकसान के लिए भी व्यवस्थित प्रेरणा देता है और फायदे के लिए भी प्रेरणा व्यवस्थित ही देता है। इसलिए आपको प्रेरणा के अनुसार ही चलना है। क्योंकि फायदा-नुकसान, यह सब व्यवस्थित के ताबे में है। तो फिर अब करना क्या है? फुरसत का टाइम उसमें मत बिगाड़ना, इस सत्संग में टाइम बिताना, क्योंकि आपके हाथ में उन सब की कोई सत्ता ही नहीं है। ये व्यापारी रात में कमाते होंगे या नहीं? रात में सो गए हों फिर भी कमाते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** कमाई और नुकसान तो चलता ही रहता है न?

**दादाश्री :** चलता ही रहता है? आप नवसारी से यहाँ आए हो फिर भी क्या वहाँ कमाई होती ही रहेगी? बड़े आश्चर्य की बात है न? दिन में खाना खाने बैठें तब भी कमाई होती रहती है न? और नुकसान वाले का नुकसान होता रहता है न? कितनी अजीब बात है! इन सब बहीखातों का निष्कर्ष निकालना आता है लेकिन इस जगत् का निष्कर्ष निकालना आ जाए तो क्या निकलेगा? हमें जगत् का निष्कर्ष निकालना आ गया था! यह ज्ञान होने से पहले हमने निष्कर्ष निकाल लिया था कि इस जगत् का सार क्या है? इसलिए हमें किसलिए यह माथापच्ची करनी? जिसके लिए मेहनत कर रहे हैं वह तो सारा तैयार माल ही है, वर्ना लाख मन (20 kg) मेहनत करने से भी काम की नहीं, बल्कि नुकसान ही होता है।

किसके हाथ में सत्ता है उसका हिसाब निकाल लो। क्या आपने हिसाब लगाया था?

**प्रश्नकर्ता :** इस ज्ञान के बाद पता चलता है।

**दादाश्री :** हाँ, पहले तो पता ही नहीं चलता न? सब उलझा हुआ है। सब बहीखाते ही उलझे हुए हैं। इसमें किसी व्यक्ति से सार निकला जा सके, ऐसा नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** यह जो आप सब बातें बता रहे हैं, वह पहले सुनी ही नहीं हैं।

**दादाश्री :** सुनी ही नहीं होंगी न! कहीं भी ऐसी बातें नहीं होतीं। ये सारी बातें अपूर्व हैं, पहले कभी सुनी न हों, पढ़ी न हों। यह बिल्कुल नई पद्धति है और तभी हल आएगा न, वर्ना कैसे हल होगा?

### पतन के वक्त...

हम मेहनत करें, हर तरफ से ध्यान रखें फिर भी हमें कुछ न मिले, तो हमें समझ लेना चाहिए कि हमारे संयोग अच्छे नहीं हैं। अब उस समय ज़्यादा जोर लगाने से नुकसान होता है, उसके बजाय हमें आत्मा संबंधी कुछ कर लेना चाहिए। पिछले जन्म में ऐसा नहीं किया था इसीलिए तो यह झंझट हुई। जिन्हें हमारा ज्ञान मिला हो, उनकी तो बात ही निराली है लेकिन यदि हमारा ज्ञान न मिला हो, तब भी वह तो भगवान के भरोसे छोड़ देता है न! उसे क्या करना पड़ता है? 'भगवान जो करें वही सही' कहते हैं न? और बुद्धि से नापने जाएँ तो कभी समाधान मिल सके, ऐसा नहीं है।

जब संयोग अच्छे नहीं हों, तब लोग कमाने निकलते हैं। तब तो भक्ति करनी चाहिए। संयोग अच्छे न हों, तब क्या करना चाहिए? पूरा दिन आत्मा का, खुद के आत्मा का, सत्संग आदि करना चाहिए। सब्जी न हो तो न लाएँ, खिचड़ी जितना तो होगा न! वह तो यदि योग होगा तो कमाता है, वर्ना फायदे वाले बाज़ार में भी नुकसान उठाता है और योग हो तो नुकसान वाले बाज़ार में भी नफा करता है। सब संयोग की बात है।

नुकसान या फायदा, कुछ भी अपने बस की बात नहीं है। इसलिए नैचुरल एडजस्टमेंट के आधार पर चलो। दस लाख कमाने के पश्चात् एकदम से पाँच लाख का नुकसान हो जाए तो? ये तो लाख का नुकसान भी सहन नहीं कर सकते हैं न! फिर पूरे दिन रोना-धोना,



चिंता, वरीज़ करते रहते हैं! अरे, पागल भी हो जाते हैं! मैंने अब तक ऐसे कई पागल हो चुके लोगों को देखा है! क्या रात को बारह, एक बजे या दो बजे भी पुरुषार्थ करना चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** तब तो व्यक्ति मेन्टल हो जाएगा।

**दादाश्री :** ये मेन्टल तो हो ही चुके हैं, भला फिर अब और क्या मेन्टल होने हैं? पूरी दुनिया ही मेन्टल हॉस्पिटल बन गई है न! इसलिए अब दोबारा मेन्टल नहीं होगा। क्योंकि क्या डबल मेन्टल हो सकते हैं? यानी फायदा-नुकसान अपने हाथ में नहीं है। हमें तो अपना काम करते रहना है और हमारे जो फर्ज़ हैं वे निभाने हैं।

### नॉर्मेलिटी, व्यापार के समय की

**प्रश्नकर्ता :** काम करने का कोई नॉर्मल टाइम होना चाहिए न?

**दादाश्री :** हाँ, होना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** काम करते रहना है। उसके लिए कुछ आठ या दस घंटे रखने हैं, फिर पंद्रह-बीस घंटे नहीं रखने चाहिए।

**दादाश्री :** उसका नियम होना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** नौकरी वाले का तो नियम होता है लेकिन व्यापारियों का तो जैसे कोई नियम ही नहीं होता।

**दादाश्री :** व्यापार वाला अनियम करे, तो रात को दो बजे भी दुकान खुली रखने के लिए उन्हें कौन मना करता है? क्या उसका कोई अंत आएगा? सिगरेट के दो पैकेट की बिक्री के लिए क्या पूरी रात बितानी चाहिए?

जहाँ सब आठ बजे दुकान खोलते हों, वहाँ हम साढ़े छः बजे दुकान खोलकर बैठें तो उसका कोई अर्थ नहीं है। पूरी मेहनत बेकार है। और आठ बजे के बाद खोलना, वह भी गुनाह है। सब दोपहर में बंद कर दें, उस टाइम पर बंद कर देनी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** सभी कारखाने वाले तीन-तीन शिफ्ट तो चलाते हैं, उन्हें देखकर अन्य लोग भी कहते हैं कि मैं भी किसी तरह तीन शिफ्ट चलाऊँ।

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन फिर तो तीन नहीं, पाँच करके देख लो न? ऐसा है, यह नेचर ने भी हमारे शरीर की हर चीज़, जिसकी ज़रूरत है, वह दी ही हैं। इन दो कानों में से एक अचानक बंद हो जाए तो क्या होगा? लेकिन गाड़ी चलती रहती है न? दो आँखों में से एक बंद हो जाए तो क्या होगा? ऐसी कई चीज़ें, दो-दो दी हैं न? उसी तरह इसमें भी ज़्यादा से ज़्यादा दो शिफ्ट चला सकते हैं। वर्ना तो इसका कोई अंत ही नहीं आएगा न!

**प्रश्नकर्ता :** इस जंजाल को जितना हो सके, उतना नॉर्मल रखना चाहिए।

**दादाश्री :** ऐसा है न, यदि खाते-पीते समय चित्त कारखाने पर नहीं जाता तो कारखाना ठीक है, लेकिन यदि खाते-पीते समय चित्त कारखाने में चले जाए तो इस कारखाने का क्या फायदा है? अपना हार्ट फेल करवा देगा वह कारखाना, वह हमारे काम का नहीं है। अर्थात् नॉर्मलिटी समझनी चाहिए। अब तीन शिफ्ट चलाता है, उसमें यह नई शादी करके आया है, उसे बहू से मिलने का समय भी न मिले तो क्या होगा? क्या तीन शिफ्ट ठीक है? नई बहू शादी करके लाया है तो बहू के मन का समाधान तो रखना चाहिए न? घर जाने पर बहू कहेगी कि, 'आप तो मुझसे मिलते ही नहीं हैं, बातचीत भी नहीं करते!' तो यह उचित नहीं कहा जाएगा न? दुनिया को योग्य लगे ऐसा होना चाहिए।

घर में फादर के साथ या दूसरों के साथ व्यापार के बारे में मतभेद न हो इसलिए आपको भी हाँ में हाँ मिलानी चाहिए कि 'चलती है तो चलने दे।' लेकिन आप सब को मिलकर तय करना चाहिए कि पंद्रह लाख इकट्ठा करने के बाद हमें और ज़्यादा नहीं चाहिए, घर के सभी मेम्बरों की पार्लियामेन्ट बुलाकर तय करना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** इससे कोई 'एग्री' नहीं होगा, दादा।

**दादाश्री :** फिर तो वह काम का नहीं है, सभी को तय करना चाहिए।

आप लोग चार शिफ्ट चलाओ। दो सौ साल के आयुष्य का ऐक्स्टेंशन लाएगा क्या वह ?

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा तो हो ही नहीं सकता न ?

**दादाश्री :** तो यह सब ध्यान में रहना चाहिए और कमाने के बाद फिर नुकसान नहीं होना हो तो कमाया हुआ काम का। यह तो फिर से नुकसान होना है, जोखिमदारी तो खड़ी ही रही फिर! नुकसान होता है या नहीं होता ?

**प्रश्नकर्ता :** होता है।

**दादाश्री :** उस समय, क्या सब को साथ मिलकर रोने बैठना चाहिए ? सारे दिन *कढ़ापा-अर्जपा* (कुढ़न, क्लेश - बेचैनी, अशांति, घबराहट, आक्रोश, अकुलाहट), पता नहीं कहाँ जाना है ! किसलिए करते हैं ? जैसे कि हजार, दो हजार साल आयुष्य का ऐक्स्टेंशन मिल गया हो ! वहाँ ऐक्स्टेंशन कर देते हैं न ?

**प्रश्नकर्ता :** कोई नहीं करता।

**दादाश्री :** तो फिर किसलिए ? किसके लिए ? हाँ, हम व्यापार करें, लेकिन नियमानुसार और सब व्यवहार जितना ही व्यवहार, यानी शांति से भोजन करके, आधा घंटा आराम करके फिर काम पर जाना। ऐसे ही भागदौड़, भागदौड़, भागदौड़ करने की क्या जरूरत है ? जैसे दो हजार साल का आयुष्य ज्यादा लिखवाकर न लाया हो ! आत्मा का भी तो करना चाहिए न ? आत्मा का तो पहले करना चाहिए। आपने पिछले जन्म में आत्मा का किया था इसलिए अभी यह सुख और शांति है, वर्ना तो मजदूरी कर-करके मर जाते हैं। पिछले जन्म में आत्मा

का किया था, यह उसका फल है और अब नए सिरे से फिर से करोगे उसका फल आएगा।

**प्रश्नकर्ता :** अब व्यापार कितना बढ़ाना चाहिए?

**दादाश्री :** व्यापार उतना ही करना चाहिए कि चैन से नींद आ जाए। जब हम बंद करना चाहें तब बंद कर सकें ऐसा होना चाहिए। जो आती न हो उस उपाधि को बुलाना नहीं है।

### क्या आपकी संपत्ति की जानकारी है?

इस दुनिया में सारे दुःख माने हुए हैं। रोंग बिलीफ हैं। यहाँ एक भाई आए थे 'दादाजी, मुझे बहुत दुःख है, मुझे हर तरफ से दुःख ही दुःख हैं, पैसों के मामले में एकदम गरीब जैसा हो गया हूँ।' मैंने कहा, 'ये दोनों आँखें दो लाख में देनी हैं?' उसने कहा, 'नहीं! नहीं दे सकता।' तब मैंने कहा, 'दो लाख तो इनकी कीमत गिनो! क्या ऐसा ही बोलते हो आप? लाचारी बताते हो?' कितने लाख की संपत्ति है आपके पास? इन कागज़ के नोटों को पैसा मानते हो? देखो तो सही? किसी अमीर की आँख चली जाएँ और बीस लाख रुपये दे, तो क्या उसकी आँखें आ जाएँगी? मतलब, आपके पास संपत्ति तो है ही। आपको बेचनी नहीं है।

व्यवसाय में थोड़ा सा भी नुकसान हो जाए तो व्यक्ति दुःखी-दुःखी हो जाता है। हमारी पार्टनरशिप के बारे में आपको बताऊँ तो आपको आश्चर्य होगा। लाख-लाख रुपये चले जाते, तब भी हम जाने देते, क्योंकि रुपये तो जाने हैं और हम रहेंगे। कुछ भी हो जाए लेकिन हम कषाय नहीं होने देते थे। लाख रुपये गए तो उसमें क्या कहना है? हम तो हैं और यह तो बरबादी।

### फायदा-नुकसान, खुद का या औरों का?

इन सभी बातों को अलग कर दें। व्यापार में नुकसान हो तो कहना कि, व्यापार को नुकसान हुआ, क्योंकि हम फायदा-नुकसान के

मालिक नहीं हैं, तो हम क्यों नुकसान को सिर पर लें? हमें फायदा-नुकसान स्पर्श नहीं करते और यदि नुकसान हो गया और इन्कम टैक्स वाला आए, तो व्यापार से कहें कि, 'हे व्यापार! तुम्हारे पास चुका सके ऐसा हो तो इन्हें चुका दो, तुम्हें ही चुकाना है।'

हम से कोई पूछे कि 'यह साल नुकसान में गया है?' तब हम कहते थे कि 'नहीं भाई, हमें नुकसान नहीं हुआ है, व्यापार को नुकसान हुआ है!'

और फायदा हो तब कहते थे कि, 'व्यापार को फायदा हुआ है।' हमें फायदा-नुकसान होता ही नहीं है।

### 'अनामत' रखो, व्यापार में

**प्रश्नकर्ता :** कुछ लक्ष्य दुःख वाले नहीं होते और कुछ चीजें बेचनी हो और हम मानते हैं कि पाँच रुपये का फायदा होगा और वहाँ नुकसान हो जाए तब फिर उसका दुःख रहा करता है।

**दादाश्री :** हमें तो उसी समय उस नुकसान को जमा कर लेना चाहिए कि नुकसान के खाते में जमा और बहीखाते में से जमा-उधार निकाल दिए तो बहीखाता साफ हो गया। ऐसा है कि पहले से ही सब अभिप्राय बना चुके हैं कि, 'ऐसे फायदा होगा, वैसे फायदा होगा', और वहीं पर नुकसान हुआ तब हमें कहना पड़ेगा कि 'व्यवस्थित' है। 'व्यवस्थित' में अभी और नुकसान होना बाकी होगा तो आएगा। यानी ये फायदा-नुकसान हमारे हाथ में नहीं है। हम न चाहें फिर भी फायदा मिलता रहेगा। हम कहें कि नहीं अब तो मैं फायदे से ऊब गया हूँ, तो भी नहीं चलेगा। यानी हम मना करें फिर भी फायदे का दबाव आएगा, फायदे के लिए भी दबाव और नुकसान के लिए भी दबाव! इसलिए फायदा-नुकसान का हिसाब ही मत निकालो।

कोई सेठ मुझसे आग्रह करे कि, 'नहीं, आपको तो प्लेन से ही कोलकाता आना होगा।' मैं बार-बार मना करता रहूँ, फिर भी आग्रह करते रहें। यानी कुछ छोड़ता ही नहीं है न! इसलिए उसका हिसाब

ही मत लगाना, बढ़ने-घटने का हिसाब ही मत लगाना। जब कभी नुकसान हो न, तो उस दिन आप पाँच रुपये 'अनामत' के नाम जमा कर देना। ताकि अपने पास अनामत बचत रहे क्योंकि यह खाता क्या हमेशा के लिए है? दो, चार या आठ साल के बाद फाड़ नहीं देते? यदि सही होते तो क्या कोई फाड़ता? यह सब तो मन को मनाने के साधन हैं। जब कभी हमें डेढ़ सौ का घाटा हो जाए न तो हमने पाँच सौ रुपये अनामत के खर्चे में जमा किए होंगे तो साढ़े तीन सौ की बचत हमारे पास रही यानी डेढ़ सौ के घाटे की जगह हमें साढ़े तीन सौ की बचत दिखाई देगी, ऐसा है। यह संसार गप्प गुणा गप्प एक सौ चवालीस है, 'बारह' गुणा 'बारह' एक सौ चवालीस नहीं है। 'बारह' गुणा 'बारह' एक सौ चवालीस होता तो वह एकज्जेक्ट सिद्धांत कहलाता है। संसार यानी गप्प गुणा गप्प एक सौ चवालीस और मोक्ष यानी बारह गुणा बारह बराबर एक सौ चवालीस।

आपका व्यापार तो अच्छा है जिसमें कम-ज्यादा होने का प्रश्न ही नहीं है न! नुकसान होगा तो पड़ोसी को होगा, दुकानदार को होगा या सेठ को होगा? हम तो पार्टनर नहीं हैं, तो भाग्यशाली भी नहीं होना है और अभाग्य भी नहीं होना है, नॉर्मल! और यदि यह ज्ञान न मिला होता तो मन में ऐसा होता कि इस जगत् में मुझे अभी भी सफलता नहीं मिली है, तब फिर सब के साथ रेसकोर्स में खड़े रहना पड़ता। ज़रा भी दौड़ न पाएँ और रेसकोर्स में खड़े रहना पड़े, तो हमारी कैसी दशा होगी? बल्कि सब दौड़ते हुए घोड़ों की चिंता हमें करनी पड़ेगी।

यानी आपको समझ में आया न कि यह जगत् एकज्जेक्ट नहीं है? यानी 'बारह' गुणा 'बारह' एक सौ चवालीस नहीं है, यह तो गप्प गुणा गप्प एक सौ चवालीस है। 'बारह' गुणा 'बारह' बराबर एक सौ चवालीस होता तब तो भगवान का सिद्धांत कहलाता लेकिन जगत् ऐसा नहीं है। हमारे व्यापार में नुकसान हो जाए तो मैं कह देता था कि, 'बीस हजार रुपये 'अनामत' के नाम पर जमा कर दो।' फिर अनामत

के नाम की बचत निकालनी। अब यह बचत कहाँ रखें, वह तो भगवान ही जाने! वास्तव में तो वह बचत है ही कहाँ? फिर भी ऐसी बचत हो और हमने संभालकर रखी हो और कोई ले जाए तो? यानी कब, कौन ले जाएगा उसका कोई ठिकाना नहीं है, किसके हाथ में क्या आएगा उसका भी कोई ठिकाना नहीं है। मेरी बात आपको समझ में आ रही है न?

### नियम, स्पर्श के...

यानी ये जगत् सब स्पर्श के नियमों के आधार पर चलता है। ये स्पंदन है न, वे स्पर्श के नियमों के आधार पर होते हैं। अभी यह ठंडी हवा आ रही है न, फिर भी अंदर से स्पर्श ऐसा लगता है जैसे यहाँ जलन हो रही हो। ऐसा लगता है। यह रुपयों का स्पर्श होता है, मीठे का स्पर्श होता है, कड़वे का स्पर्श होता है, क्या ऐसे स्पर्श नहीं होते? यानी जो स्पर्श होना है वह होगा। इन सिर के बालों के लिए तू चिंता नहीं करता कि नाई नहीं मिलेगा तो क्या करूँगा? नाई यदि हड़ताल कर देंगे तो क्या करेंगे?

### जिसका अभिप्राय, उसका विचार

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, लेकिन कुछ बातों की ओर तो लक्ष्य ही नहीं रहता।

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा है कि जिसमें आग्रह नहीं किया हो उनका कोई विचार नहीं आता और जिनका आग्रह किया है, जिनके अभिप्राय बाँधे हैं, उन्हीं के विचार आते हैं। ये बाल बढे तो भी आपको कुछ नहीं और कम हो जाएँ तो भी कुछ नहीं होता, इसलिए उसका विचार ही नहीं आता। कितनों को तो बालों के बहुत विचार आते हैं। इन स्त्रियों को नाई संबंधी विचार आते होंगे क्या? उन्हें बाल कटवाने की ज़रूरत ही नहीं है न? इसलिए उस तरफ के विचार ही नहीं आएँगे। नाई जीए या मरे, लेकिन उससे संबंधित विचार ही नहीं आते। जिनके बारे में ज़्यादा अभिप्राय बाँधे हैं वे ही चुभते रहते हैं।

## समभाव

समभाव किसे कहते हैं? समभाव फायदा और नुकसान दोनों को समान नहीं कहता। समभाव यानी फायदे की जगह नुकसान हो तो भी हर्ज नहीं, फायदा हो तो भी हर्ज नहीं। फायदा हो तो उत्साहित नहीं होता और उसमें (नुकसान में) डिप्रेशन नहीं आता। यानी कुछ नहीं होता है। द्वंद्वतीत हो चुका होता है।

## हमारे व्यापार की बातें

यानी, व्यापार में नुकसान हुआ होता तो लोगों को बता देता था और फायदा हुआ होता तब भी लोगों को बता देता था! लेकिन लोगों के पूछने पर ही, वर्ना अपने व्यापार की बात ही नहीं करता था! लोग पूछें कि, 'क्या यह बात सही है कि आपको अभी नुकसान हुआ है?' तब बता देता था कि, 'वह बात सही है।' कभी भी हमारे पार्टनर ने ऐसा नहीं कहा कि 'आप क्यों बता देते हैं?' क्योंकि ऐसे बता देना तो अच्छा है, ताकि लोग यदि उधार देने वाले हों तो बंद हो जाएगा और अपना कर्ज बढ़ने से रुक जाएगा। वर्ना लोग क्या कहते हैं? 'अरे, नहीं कहना चाहिए, वर्ना लोग उधार नहीं देंगे।' अरे, उससे तो हमारा कर्ज बढ़ जाएगा न, इसलिए साफ-साफ बता दो न, जो भी हुआ हो, वह। कि भाई नुकसान हुआ है।

नुकसान हुआ हो तब भी सामने वाले को स्पष्ट बता देना चाहिए ताकि सामने वाला भावना करे। उससे परमाणु उड़ जाएंगे और खुद हल्का हो जाएगा।

अकेला अंदर ही अंदर उलझता रहे तो ज्यादा बोझा लगता है!

जितनी भी परेशानियाँ आएँ, उनकी ऐसे फंकी बनाकर निगल जाना। हम जब व्यापार करते थे, तब बहुत परेशानियाँ आई थीं, ज्ञान से पहले। तभी ऐसा ज्ञान हुआ न। जब हमारे बच्चे गुजर गए थे तब पेड़े खिलाए थे!



हम तो क्या करते थे कि जब व्यवसाय में बहुत मुश्किलें आ जातीं, तब तो बात ही नहीं करते थे। जब हीरा बा को बाहर से पता चलता कि व्यवसाय में मुश्किलें हैं, हम से पूछतीं कि, 'नुकसान हुआ है क्या?' तब हम कहते कि, 'नहीं-नहीं। लीजिए रुपये, पैसे आए हैं, क्या आपको चाहिए?' तब हीरा बा कहतीं कि, 'ये लोग तो कह रहे हैं कि नुकसान हुआ है।' तब मैं कहता कि, 'नहीं-नहीं, ये तो, ज़्यादा कमाए हैं। लेकिन यह बात गुप्त रखना।'

हमारे व्यापार में नुकसान होने पर कुछ लोगों को दुःख होता था। वे मुझसे पूछने आते कि, 'कितना नुकसान हुआ है? क्या ज़्यादा नुकसान हुआ है?' तब मैं कहता कि, 'नुकसान हुआ था, लेकिन अभी अचानक ही एक लाख रुपये का फायदा हुआ है!' तब उसे ठंडक हो जाती।

### दूसरों को ऐसे आनंदित करके...

हमारी कंपनी में नुकसान हुआ था तो काम धीमा हो गया था। जब बड़ौदा जाते तो लोग पूछते कि, 'बहुत नुकसान हुआ है?' तब मैं कहता कि, 'आपको कितना लगता है?' तब वे कहते कि, 'एकाध लाख रुपयों का नुकसान हुआ लगता है।' तब मैंने कहा कि, 'तीन लाख का नुकसान हुआ है।' अब व्यापार में आधे या पौन लाख का नुकसान हुआ हो, लेकिन मैं उन्हें तीन लाख का बताता था क्योंकि वे कुछ जानने आए हैं! वे क्या जानने के लिए आए हैं, वह मैं जानता था, कि यदि मैं इन्हें लाख का बताऊँगा तो वे खुश हो जाएँगे और बेचारों को घर पर खाना अच्छा लगेगा। इसलिए मैं तीन लाख का नुकसान बताता था ताकि उस दिन वह आराम से खाना खाए और अन्य कोई, *लागणी* (सुख-दुःख की अनुभूति, लगाव, भावुकता वाला प्रेम) वाला आए और पूछे कि, 'क्या ज़्यादा नुकसान हुआ है?' तब मैं कहता कि, 'नहीं, पचासेक हजार का नुकसान हुआ है।' ताकि उन्हें भी घर जाकर शांति रहे। *लागणी* वाले और वह, दोनों ही तरह के लोग आएँगे, दोनों को खुश करके भेजना है। मैं कहूँ कि, 'तीन लाख

का नुकसान हुआ है', तब वह तो बहुत खुश होता है। उन्हें कहूँ कि, 'चाय पीकर जाओ न?' तब वह कहता कि, 'मुझे ज़रा काम है' क्योंकि उसे आनंद हुआ न। अतः उसमें सब आ गया! उसे उसकी खुराक मिल गई क्योंकि द्वेष है न! यह स्पर्धा ऐसी चीज़ है कि स्पर्धा के कारण कुछ भी कर ले इंसान। स्पर्धा यही कि, 'मुझसे आगे बढ़ गया है? अब नीचे गिराना ही चाहिए।' फिर वह नीचे गिराने का प्रयत्न करता रहता है। ऐसों को मैं स्पष्ट ही कह देता था कि, 'ज्यादा नुकसान हुआ है।' देखिए, वह शांति से खाना खा पाया न! हमें उसमें कोई हर्ज नहीं है लेकिन लोगों को तो जवाब देने पड़ते हैं न! यदि उन्हें कह दें कि, 'नहीं, कुछ नुकसान नहीं हुआ', तो वह और कहीं से फिर कुछ ढूँढ लाएगा कि ये तो नकार रहे हैं। इसलिए उसे कहना पड़ता है कि, 'नकार नहीं रहा हूँ, स्वीकार कर रहा हूँ। तीन गुना नुकसान हुआ है। जिसने तुम्हें बताया हो उनसे पूछ लेना। उन्हें पता नहीं होगा लेकिन मुझे बहुत ज्यादा नुकसान हुआ है।' कुछ दिनों बाद वह फिर से आकर पूछे कि, 'अब आपका व्यापार कैसा चल रहा है? बंद करना पड़ेगा?' तब मैंने कहा कि, 'यह तो, सात लाख की पूंजी थी उसमें से तीन लाख कम हुई है।' यानी उसे नई तरह से कहता। 'अरे, तुम मेरी बराबरी कहाँ तक कर पाओगे?' मैं ज्ञानी पुरुष हूँ, आपको दुःख नहीं दूँगा, लेकिन आप इस तरह से छानबीन मत करना। ये तो बेकार ही पीछे पड़ जाते हैं! ऐसे तो मैंने बहुत देखे हैं। जगत् है न, हर तरह के लोग होते हैं!

### ज्ञानी के अनुभवों का निष्कर्ष...

यह सब तो मैंने पिछले अनुभव से निष्कर्ष निकाला था, बाकी, मैं व्यापार करते समय भी पैसों के बारे में नहीं सोचता था। पैसों के बारे में सोचने वाले जैसा फूलिश और कोई है ही नहीं! यह सब तो भाग्य में लिखा हुआ है! घाटा भी भाग्य में लिखा हुआ है। बिना सोचे भी नुकसान होता है या नहीं होता है?

**प्रश्नकर्ता :** होता है।

**दादाश्री :** और फायदा ?

**प्रश्नकर्ता :** फायदा भी होता है।

**दादाश्री :** इसीलिए तो भाग्य में लिखा हुआ है! मैं तो बचपन से ही समझ गया था कि यह तो भाग्य में लिखा जा चुका है।

ये तो बेकार ही मेहनत करते हैं। ये सब तो लेकर आए हुए हैं। ये बाल उगते रहते हैं या नहीं? और चिंता न करें फिर भी उगते हैं न?

**प्रश्नकर्ता :** उगते हैं।

**दादाश्री :** इन आँखों में जो रौशनी रहती है और जो ऐसा कहा होता कि यदि आप प्रयत्न करोगे तभी रौशनी रहेगी तो तीन दिन में अंधे हो गए होते। यह तो कुदरत के अधीन है न! यह ज्ञानरस तो इतनी सारी बारीक नसों में से बहता है, जो यह रौशनी रखती हैं, वे बाल से भी अधिक पतली नसें होती हैं और डॉक्टर के हाथ में सौंप दें न तो तीन दिन में अँधा कर देगा। यह कुदरत इतनी सुंदर है। उस कुदरत का हमें उपकार मानना चाहिए।

यह, बेकार ही पैसों की हाय-हाय क्या करनी? अरे, नुकसान होता है, वह भी तो बिना सोचे ही होता है! तो क्या फायदा, सोचने पर आता होगा? बल्कि सोचने से तो कम हो जाता है!

आप अपना काम करते जाओ। सुबह सब आठ बजे दुकान खोलते हों तो हमें भी आठ बजे दुकान खोलनी है। सब नौ बजे खोलें तो हमें भी दुकान नौ बजे खोलनी है। सब नौ बजे खोलते हों तो हमें वहाँ पाँच बजे जाकर नहीं बैठ जाना है और रात को साढ़े दस बजे सब सो जाते हों तो हमें समझना कि सब सो गए हैं, तब ऐसा करके हमें भी सो जाना चाहिए। फिर सोचना, करना नहीं है? कल क्या होगा उसका विचार आज नहीं करना है। सब सो गए हैं तो क्या मैं अकेला ही मूर्ख हूँ जो जाग रहा हूँ? बाहर देखने से क्या ऐसा समझ में नहीं आता?

**प्रश्नकर्ता :** समझ में तो आता है लेकिन मन उछल-कूद करता है कि कल का काम भी आज ही निपटा दूँ न!

**दादाश्री :** हाँ, मन उछल-कूद करता है लेकिन मन से कहो कि, 'देखो, सब सो चुके हैं। तुम बेकार की उछल-कूद करोगे तो उसमें कुछ मज्जा नहीं आएगा, सब सो चुके हैं और तू अकेला बुद्धि वाला बेकार में ही क्यों जगा रहा है?' यह तो, रात भर जागते रहेंगे फिर भी सुबह कोई फायदा नहीं होगा बल्कि देर से उठेगा।

यह सब मैंने ऑन ट्रायल कर लिया है, हाँ! पूरी लाइफ पूरा ट्रायल किया है। मैं हर एक चीज़ का पूरा ट्रायल लेकर ही आगे बढ़ा हूँ। ऐसे ही नहीं बढ़ा हूँ और कितने ही जन्म ट्रायल से ही (अनुभव) लाया हूँ। तभी तो मैं आपको इन अनुभवों की पूरी बात कर सकता हूँ और तभी तो समाधान होता है न! यदि समाधान न हो तो व्यक्ति उलझन में रहता है।

### चोरियाँ भी होती थी... पुलिस भी बुलाते थे

हमारे काम पर ऐसा होता था कि जिसे रखते वही चोरी करवाता था। फिर एक के बदले दो व्यक्ति रखे। एक रात के लिए और एक दिन के लिए, ऐसे दो व्यक्ति रखे। तो वह भी चोरी करवाता था। हर दूसरे, तीसरे दिन चोरी होती रहती थी। मैं समझ गया कि यह सब उचित है, यह हिसाब सब चुकाने के लिए हुआ है। इस गाँव में चोरियों का हिसाब चुकाने के लिए आए हैं, तो सारा हिसाब चूक जाएगा तब हल आ जाएगा। चोर चोरियाँ करे और हमें सुबह मालूम पड़ता, फिर हर हफ्ते पुलिस को सूचना देते, उस नुकसान में और नुकसान! ऐसा करना चाहिए? नहीं, वह नाटक भी करना पड़ता है। नाटक नहीं करेंगे तो गलत साबित होगा। फिर पुलिस अफसर आते और पूछते कि, 'क्या-क्या गया है?' तब मैं कहता कि, 'ये सब गया है। कुछ सामान पूरा गया है, आप एक बार सब को डाँटो।' फिर वे सब को डाँट देते कि, 'ऐ, यह सब क्या है? ऐ, यह सब क्या है? मैं आया हूँ।' हम

जानते थे कि कल से फिर चोरी शुरू हो जाएगी। हमें यह बात पता ही होती थी। पुलिस अफसर डॉटिंगे, वे लोग चोरी करेंगे, हम ये सब करवाएँगे, ऐसा सब चलता रहता था! लेकिन 'व्यवस्थित' से बाहर कुछ भी होने वाला नहीं है। बारह महीनों तक चोरियाँ हुईं लेकिन हमारे यहाँ किसी को कोई असर नहीं हुआ। वैसे ही चोरियाँ होती रहतीं और हम जानते रहते थे कि, 'भाई, आज इतनी चोरी हुई।'

जो चोर चोरी करते हैं, वे बेचारे तो अच्छे हैं, जबकि ये जो साहूकार कहलाते हैं न, वे चोरी करते हैं, वे तो ज्यादा गुनहगार हैं। जबकि वे तो चोर ही हैं और वे कहते भी हैं न कि, हमारा व्यापार ही चोरी करना है।

### ऐसी चोरी शोभा नहीं देती

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन ऐसा न करें तो पेट कैसे भरे?

**दादाश्री :** हमें भी पहले यह डर रहा करता था। हम भी इसी कलियुग में जन्मे हैं न! यानी 1951 तक ऐसा डर रहता था लेकिन बाद में छोड़ दिया। क्योंकि सिमेन्ट निकालना तो व्यक्ति के शरीर से खून चूस लेने जैसा है और लोहा निकाल लेना तो ये पूरा स्केलेटन (हड्डियाँ) निकाल लेने जैसा है। स्केलेटन निकाल लिया, खून निकाल लिया, फिर मकान में क्या बचा?

हमें चोरी शोभा नहीं देती। हम साहूकार होकर चोरी करें उससे तो चोर अच्छे। ये चोरी करते हैं न, उनके बजाय, जो मिलावट करते हैं वे अधिक गुनहगार हैं। उन्हें तो पता ही नहीं है कि, 'मैं यह गुनाह कर रहा हूँ उसका क्या फल मिलेगा'। मूर्च्छित दशा में, समझ के बिना ही गुनाह कर रहे हैं।

### काले बाज़ार के शिकंजे में

यानी हमने भी बहुत मार खाई है। काला बाज़ार वगैरह सब किया था और बहुत परेशानियाँ थी।

**प्रश्नकर्ता :** तब काला बाज़ार नहीं था ?

**दादाश्री :** अरे, था! सन् 1942 में मेरा लोहे का कारखाना था। एग्रीकल्चर इन्स्ट्रुमेन्ट वगैरह बनाने का। 'बिटको इंजीनियरिंग कंपनी'। उसके लिए सरकार ग्यारह रुपये प्रति क्विंटल (100 किलो) के भाव से लोहा देती थी और बाज़ार में बत्तीस रुपये का भाव चलता था। इधर, हमारे पार्टनर कॉन्ट्रैक्ट के काम में सरकार को कुछ... एक आना प्रति फुट देते, जबकि बाहर एक रुपये का भाव था। इसलिए धंधे के लिए आई हुई पाइपें और लोहा बेचा करते थे। हाँ, कालाबाज़ारी करने की ज़रा भी इच्छा नहीं थी। ऐसी नीयत-खोरी ज़रा भी नहीं थी। लेकिन बुद्धि ने थोड़ी मार खिला दी। कैसे मार खिला दी? वह लोहा इकट्ठा होने लगा और हमारे पास पैसे, रकम ब्याज पर लाने लगे। फिर एक दलाल आया और कहने लगा, 'साहब, इतना सारा माल है, हमें दें दो तो क्या गलत होगा?' मैंने कहा, 'भाई, हम कालाबाज़ारी नहीं कर सकते'। तब उसने कहा, 'आप कालाबाज़ारी मत करना लेकिन हम जैसों की आजीविका निकल जाए ऐसा कर दीजिए। वहाँ पर मेरी भूल हो गई। यानी, काला बाज़ार का भाव भले ही बत्तीस रुपये है वह आप मत लेना, लेकिन मेरी आजीविका निकल जाए ऐसा कर दीजिए। तब मैंने कहा, 'लेकिन मुझे तो तुम्हें बेचना पड़ेगा न?' हाँ, कम दाम लेकर बेचो ताकि उसकी आजीविका निकल जाए। इसलिए फिर उसे पच्चीस रुपये के भाव से बेचा। लेकिन उसने बत्तीस के बदले पैंतीस रुपये लिए। तब हमें पता चला कि ये तो बल्कि डबल चोर बन गए, लोगों से अधिक लुटवाया। इसके बजाय तो हम ही सीधा दे दें। अब जैसा कहा, ऐसा करते-करते स्लिप होते गए और स्लिप होने के बाद उसके परिणाम देख लो! अच्छे घराने का बेटा चोरी कर आए तो उसे कितने दिन नींद आएगी? खटकता रहेगा न? रोम-रोम में काटने लगा। इसलिए मैंने अपने पार्टनर से कहा, 'ये तुम्हारे और मेरे पास का धन जल्द से जल्द चला जाए तो अच्छा और ऐसा धन फिर से इकट्ठा नहीं करेंगे। फिर वह लक्ष्मी चली गई, जाने लगी। पुण्यशाली लोग! पाँच-सात साल में चली गई।

वह तो ऐसा हुआ कि एलेप्पी में हमारी कंपनी थी। हमारी और हमारे पार्टनर की एक कंपनी थी। सौंठ और काली मिर्च का बड़ा बिज़नेस। काले बाज़ार का धन इकट्ठा हुआ न, वह फिर वहाँ ऑफिस में लगाया था। लेकिन वहाँ ये पैसा गया और हम बचे। शांति हो गई। तब फिर हमारे पार्टनर का खत आया कि, 'भले ही यह नुकसान हुआ, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि अब फिर से लाभ हो सकता है। इसलिए आखिरी बार, ज्यादा नहीं तो चौदह हजार तो मुझे भेजो'। तब मैंने 1945-46 में उन्हें चौदह हजार भेजे और साथ में पत्र में लिखा कि, 'ये चौदह हजार जाएँ तो चिंता किए बगैर वापस लौट आना। शायद ये भी चले जाएँ, जैसा सोचा है वैसा न भी हो, और जाए तो उसके लिए परेशान मत होना। लेकिन आप जल्द से जल्द वापस लौटना। हम हैं तो जल्दी ही कमा लेंगे। वर्ना, यदि हम पर अटैक हुआ तो क्या दशा होगी?' और फिर तो सन् 1946 से ही शुरू हो गए थे। ये अटैक बढ़े कब से? 1939 में जब हिटलर ने दुनिया में उथल-पाथल शुरू की तब से अटैक की शुरुआत हुई थी। बाद में मुझे मेरे पार्टनर का पत्र मिला कि, 'मैं जो सोच रहा था उससे उल्टा ही हुआ और चौदह हजार का नुकसान हो गया। इसलिए ये पैसे स्वतंत्र रूप से मेरे नाम पर उधारी में रखना क्योंकि आपने मना किया था फिर भी मैंने किया'। तब मैंने कहा, 'अब किसी और पार्टनर को ऐसा मत कहना। मुझे कहा लेकिन मुझे ऐसा कुछ नहीं करना है। आप यदि दूसरे लाख खोकर आओगे फिर भी मैं आपकी पार्टनरशिप से हटूँगा नहीं। आप जो करके आओगे उसमें मैं पार्टनर हूँ। क्योंकि यदि फायदा होता तो फिर मैं लेता न? नहीं लेता? मना करने पर भी यदि फायदा होता तो क्या मैं नहीं लेता?'

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, लेते।

**दादाश्री :** तो फिर, यह न्याय हमें तुरंत समझ में नहीं आए? मैंने कहा, 'आप जो करके आते हो उसका हमें कोई हर्ज ही नहीं है।' तब फिर उनको मन में बहुत दुःख हुआ। मैंने कहा, 'चौदह हजार

में क्या बिगड़ जाएगा? हम तो जिंदा हैं न! हम जिंदा रहेंगे तो फिर से दुनिया खड़ी कर लेंगे। जाने के बाद नई दुनिया होगी ऐसी?’ हम जिंदा हैं ऐसा कहा तब सब ठीक हो गया।

### बेड़मानी का धन ही खाते हैं

व्यापार में कोई टेढ़े लोग मिले वह हमारे पैसे खाने लगे, तब भीतर में समझना कि हमारे पैसे गलत हैं, इसलिए ऐसे लोग मिले हैं। वर्ना टेढ़े व्यक्ति मिलते ही क्यों? मेरे साथ भी ऐसा होता था। एक बार गलत पैसे आए थे। तब सभी टेढ़े लोग ही मिल गए थे। फिर मैंने तय किया कि ऐसा नहीं चाहिए।

### अच्छा व्यापार कौन सा?

व्यापार तो वही अच्छा है कि जिसमें हिंसा न समाई हो, किसी को हमारे व्यापार से दुःख न हो। अगर अनाज का व्यापार हो तो आधा किलो में से थोड़ा निकाल लेता है। आजकल तो मिलावट करना सीख गए हैं। उसमें भी खाने की चीजों में मिलावट करे तो जानवर में, चार पैर वाले गति में जाओगे। चार पैर होंगे तो फिर गिरेगा तो नहीं न? व्यापार में धर्म रखना वर्ना अधर्म घुस जाएगा।

अनाज का वजन करते समय साथ में कीड़े भी मर जाते हैं! किस तरह उसका मेल बैठेगा? मेल बैठेगा? कैसा व्यापार भाग्य में आया है? कितने व्यापार शुद्ध होते हैं? शुद्ध व्यापार नहीं होते? सोने का व्यापार कितना शुद्ध होता है! जिनको मिलावट न करनी हो तो चलेगा या नहीं चलेगा? ये तो सोने की इंटे, यहाँ से लाकर वहाँ दे आए। लेकिन इस किराने के व्यापार में, इसमें तो बचा ही नहीं जा सकता है। इसमें तो अपने आप ही कीड़े पड़ जाते हैं, आपकी इच्छा न हो फिर भी कीड़े पड़ जाते हैं।

### हिंसायुक्त व्यापार...

यानी पुण्यशाली को कौन सा व्यापार मिल आता है? जिसमें



कम से कम हिंसा हो ऐसा व्यापार पुण्यशाली को मिल आता है। अब ऐसा व्यापार कौन सा है? हीरे-मोती का, जिसमें कोई मिलावट नहीं, लेकिन अब उसमें भी तो चोरियाँ होने लगी हैं। लेकिन जिन्हें बिना मिलावट के करना हो तो कर सकते हैं। इसमें कीड़े नहीं मरते, कोई परेशानी नहीं होती और फिर दूसरे नंबर पर सोने-चाँदी का व्यापार और सब से ज्यादा हिंसायुक्त व्यापार कौन सा है? यह कसाई का और फिर कुम्हार का। वे भट्टी में पकाते हैं! इसलिए उसमें हिंसा ही है।

**प्रश्नकर्ता :** किसी भी तरह की हिंसा का फल तो मिलेगा ही न? हिंसा का फल तो भुगतना भी पड़ेगा न? फिर चाहे भावहिंसा हो या द्रव्यहिंसा हो?

**दादाश्री :** वह तो लोग भुगत ही रहे हैं न! दिन भर छटपटाहट ही छटपटाहट... यह सब भुगतते ही हैं न!

जितने हिंसक व्यापार वाले हैं न, ये व्यापार वाले सुखी नहीं दिखते। उनके चेहरे पर कभी तेज नहीं होता। जमीन मालिक हल न चलाता हो उसे ज्यादा असर नहीं होता, खेत जोतने वाले को असर होता है इसलिए वह सुख नहीं होता। ये सब तो पहले से नियम हैं यानी दिस इज बट नैचुरल है। ऐसा व्यापार मिलना, वह सब नैचुरल है। यदि आप बंद कर दो न, फिर भी वह बंद हो ऐसा नहीं है। क्योंकि इसमें कुछ चले ऐसा नहीं है। वर्ना इन सब लोगों के मन में विचार आए कि, 'बेटा फौज में जाए और वह मर जाए तो मेरी बहू विधवा हो जाएगी।' फिर तो पूरे देश में ऐसा कोई पैदा ही नहीं होगा। लेकिन नहीं, हर देश में ऐसे लोग होते ही हैं। कुदरत का नियम ऐसा ही है। यानी ये सब कुदरत ही करवाती है। इसमें कुछ नया नहीं होता। इसके पीछे कुदरत का हाथ है। इसलिए वह बहुत सोचना नहीं।

### व्यापार में सही-गलत

व्यापार में, मन बिगाड़े तो भी फायदा 66,616 होगा और मन नहीं बिगाड़े तो भी फायदा 66,616 रहेगा, तब कौन सा व्यापार करना चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** हम जो व्यापार करते हैं उसमें सही-गलत भी करना पड़ता है, तब क्या करें?

**दादाश्री :** आपको जितना समझ में आए, सही और गलत, उतना ही न? या आपको ऐसा समझ में आया कि सब गलत है?

**प्रश्नकर्ता :** सब गलत तो नहीं होता न!

**दादाश्री :** आपको जितना समझ में आए उतना करो। छोटा बच्चा उसके हिसाब से करता है और बड़ी उम्र वाले उनके हिसाब से करते हैं, हर कोई अपनी समझ के अनुसार सही-गलत समझता है। छोटे बच्चे को हीरा दें तो वह हीरा लेकर बाहर खेलने चला जाएगा और कोई बिस्किट देंगे तो वह हीरा दे देगा क्योंकि उसे इतनी समझ नहीं है न! आपको सही-गलत की समझ कहाँ से मिली?

**प्रश्नकर्ता :** दुनियादारी के हिसाब से जो कहते हैं न, और फिर खुद को ऐसा लगता हो कि यह गलत है। किसी को सामान बेचने को हम झूठ बोले, वह सब तो गलत कहलाएगा न?

**दादाश्री :** वह तो हमें दुःख हो उस समय अंदर खराब लगता है। खुद को समझ में आता है कि यह गलत हो रहा है और सुख हो तो खुद को समझ में आता है कि यह अच्छा ही हो रहा है। आप दान दे रहे हों तो आपको भीतर में सुख लगेगा। खुद के घर के रुपये दें तो भी सुख मिलता है क्योंकि अच्छा काम किया। अच्छा काम करने से सुख होता है और गलत काम करते समय दुःख होता है। उससे हमें समझ में आता है कि क्या सही है और क्या गलत।

**गलत करके कैसे जी सकते हैं?**

**प्रश्नकर्ता :** अब गलत काम बंद न हो तो, उसके लिए क्या करें?

**दादाश्री :** उस गलत काम को बंद करना आना चाहिए न? वह गलत काम करना सीखे कहाँ से? क्या किसी ने सिखाया?

**प्रश्नकर्ता :** दुनियादारी सिखाती है कि गलत बोलो, गलत करो।  
पैसे कमाने के लिए सिखाते हैं।

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन वह हमें सीखना हो तो सीखें, न सिखना  
हो तो नहीं सिखाएँगे।

**प्रश्नकर्ता :** बिज़नेस में गलत काम करते हों, तो उसमें से छूटने  
का रास्ता क्या है ?

**दादाश्री :** लेकिन गलत करते ही क्यों हो ? यह सीखे ही कहाँ  
से ? दूसरा कोई अच्छा सिखाए वहाँ से अच्छा सीख लो। यह गलत  
काम करना किसी से सीखे हो इसीलिए तो गलत करना आता है, वना  
गलत करना आता ही कैसे ? अब गलत सीखना बंद कर दो और गलत  
कामों के सारे कागज़ जला दो !

**प्रश्नकर्ता :** तब तो व्यापार नहीं चलेगा, व्यापार ऐसा होता है  
कि गलत काम तो करना ही पड़ता है।

**दादाश्री :** व्यापार न चले तो आपको क्या नुकसान ?

**प्रश्नकर्ता :** व्यापार न चले तो पैसे नहीं मिलेंगे और हमें दुनिया  
में रहना है।

**दादाश्री :** आपको यह कैसे पता है कि गलत काम नहीं करेंगे  
तो व्यापार नहीं चलेगा ? इसका फोरकास्ट है आपके पास ? फोरकास्ट  
के बिना आप कैसे कह सकते हो कि आपका नहीं चलेगा ? इसलिए  
कुछ दिन, यह जो गलत कर रहे हो, उससे उल्टा तो करो। करके तो  
देखो, तब पता चलेगा कि व्यापार पर क्या असर होता है ! कोई ग्राहक  
आए और पूछे कि 'इसकी क्या कीमत है ?' तब कहना कि, 'ढाई  
रुपये'। फिर वह पूछे कि, 'साहब, इसकी सही कीमत क्या है ?' तब  
आपको सच बताना चाहिए कि, 'बाज़ार में यह लेने जाऊँ तो इसकी  
सही कीमत पौने दो रुपये होगी।' ऐसा एक बार कहकर तो देखो !  
फिर क्या होता है वह देखो।

**प्रश्नकर्ता :** फिर तो हम से कोई सामान ही नहीं खरीदेगा।

**दादाश्री :** वह लेगा या नहीं लेगा इसका आपको कैसे पता चला? आपको फोरकास्ट हुआ हो, जैसे खुद को भविष्य का दिखता हो, ऐसा करते हैं न लोग? वह नहीं लेगा तो कोई दूसरा ले जाएगा, वरना कोई तीसरा तो लेने वाला मिलेगा न?

### प्रयत्न करो, परिणाम व्यवस्थित

व्यापार में प्रयत्न करना है, 'व्यवस्थित' अपने आप व्यवस्था करेगा। आपको सिर्फ करते रहना है, उसमें आलस नहीं करना है। भगवान ने कहा है कि सब 'व्यवस्थित' है। फायदा हजार या लाख का होना हो तो चालाकी करने से एक आना भी नहीं बढ़ेगा बल्कि चालाकी से तो अगले जन्म के लिए नए हिसाब बाँध लो, वह अलग!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन व्यवसाय में चालाकी किए बिना तो चलेगा नहीं न?

**दादाश्री :** भगवान ने क्या कहा है कि, यह सब तुझे, जितना 'व्यवस्थित' में है उतना ही मिलेगा और चालाकी से कर्म बंधेंगे और एक भी पैसा नहीं बढ़ेगा! कोई व्यक्ति चालाकी के साथ व्यापार करे तो, उसका फायदा तो उतना ही रहेगा और चालाकी करने के कर्म बंध गए वह अलग। इसलिए यह चालाकी मत करना। चालाकी से कोई फायदा नहीं है और नुकसान हद से ज्यादा होता है! चालाकी बेकार जाती है और अगले जन्म के लिए जोखिमदारी मोल लेता है। भगवान ने चालाकी करने से मना किया है, अभी तो कोई चालाकी नहीं करते हैं न?

**प्रश्नकर्ता :** सभी करते हैं, दादा।

**दादाश्री :** ऐसा? क्या बात कर रहे हो? लेकिन हमें जान-बूझकर चालाकी नहीं करनी है। चालाकी के बारे में आपको स्पष्ट हुआ न?

**प्रश्नकर्ता :** लोभ की गांठ हो तो उसके कारण चालाकी होती है ?

**दादाश्री :** लोभ की गांठ तो लोगों में होती ही हैं लेकिन चालाकी न भी हो। इस युग में चालाकी तो दूसरों को देखकर सीख गए हैं। चालाकी तो संक्रामक रोग है, दूसरों को चालाकी करते हुए देखकर खुद भी करता है। आपको चालाकी करनी पड़ती है क्या ?

**प्रश्नकर्ता :** मुझे उसकी जरूरत नहीं पड़ती। चालाकी करना और कपट, ये दोनों किस तरह अलग हैं ?

**दादाश्री :** कपट ऐसी चीज है जिसका सामने वाले को भी पता नहीं चलता और तुम्हें खुद को भी पता नहीं चलता कि भीतर कपट हो रहा है। जबकि चालाकी का तो पता चल जाता है, खुद को भी पता चल जाता है और दूसरों को भी पता चल जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** हमारे साथ कोई चालाकी कर रहा हो तो हमें भी सामने चालाकी करनी चाहिए न? अभी लोग ऐसा करते हैं।

**दादाश्री :** इसी तरह से चालाकी का रोग लग जाता है न और यदि 'व्यवस्थित' का ज्ञान हाज़िर हो तो उसे धीरज रहता है। कोई हम से चालाकी करने आए तो हमें पिछले दरवाजे से निकल जाना चाहिए, हमें सामने चालाकी नहीं करनी चाहिए।

### बिना सोचे मिल जाए

पैसे कमाने की भावना का मतलब ही, रौद्रध्यान है। पैसे कमाने की भावना यानी दूसरों के पास पैसे कम करने की भावना हुई न? इसीलिए भगवान ने कहा है कि कमाने की तुम भावना ही मत करना।

**दादाश्री :** तुम रोज़ नहाने के लिए ध्यान करते हो ?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, साहब।

**दादाश्री :** नहाने का ध्यान नहीं करते फिर भी नहाने के लिए बाल्टी भर पानी मिल जाता है या नहीं ?

**प्रश्नकर्ता :** मिलता है।

**दादाश्री :** जैसे नहाने के लिए बाल्टी भर पानी मिल जाता है उसी तरह ज़रूरत के मुताबिक़ पैसे हर एक को मिलते रहे ऐसा नियम ही है, यहाँ पर भी बेकार का ध्यान करते हैं।

क्या दिन भर गद्दे के लिए सोचते रहते हो कि रात को बिछाने के लिए गद्दे मिलेंगे या नहीं? ये तो, शाम हो या सुबह हुई तो लक्ष्मी, लक्ष्मी और लक्ष्मी! अरे, तुम्हें कौन से गुरु मिले हैं? कौन से ऐसे नासमझ गुरु मिल गए जिन्होंने तुम्हें सिर्फ़ लक्ष्मी के पीछे ही लगाया! घर के संस्कार लुट गए, स्वास्थ्य खत्म हो गया, ब्लडप्रेसर हो गया, हार्ट फेल की तैयारी हो गई! तुम्हें कौन से ऐसे गुरु मिल गए जिन्होंने, 'लक्ष्मी-पैसों के पीछे भागो', ऐसा सिखाया?

इन्हें कोई गुरु न मिले तो लोकसंज्ञा ही इनके गुरु कहलाते हैं। लोकसंज्ञा यानी लोगों ने पैसों में सुख मान लिया वह लोकसंज्ञा। लोकसंज्ञा से यह रोग लग गया है, अब कौन सी संज्ञा से यह रोग खत्म होगा? तब भगवान कहते हैं कि 'ज्ञानी' की संज्ञा से यह रोग खत्म होगा। लोकसंज्ञा से लगा हुआ रोग 'ज्ञानी' की संज्ञा से निकल जाता है।

अर्थात् ये कहना चाहते हैं कि जैसे नहाने के पानी के लिए या रात में सोने के लिए बिछौना या अन्य किसी चीज़ों के लिए आप ज़रा भी विचार नहीं करते हो, फिर भी क्या यह आपको नहीं मिलता? उसी प्रकार लक्ष्मी के लिए भी सहज रहना है।

हम ज्ञानी ये कैसा हिसाब लगाते होंगे? यह जगत् किस तरह चलता है इसका किसी को भान ही नहीं है। किसी लड़के के मित्र की दाढ़ी ही नहीं उग रही हो तो उस लड़के को भ्रम हो जाता है कि मेरी दाढ़ी ही नहीं उगेगी तो? इट इज़ ए डिफरन्ट मैटर लेकिन तुम्हारी तो उगेगी ही। हर एक आदमी की दाढ़ी तो उगेगी ही। किसी को न उगे, वह तो कुदरत का आश्चर्य है!

अरे, क्या आप पैसे कमाओगे? तब कहते हैं कि, 'अवश्य कमाएगा और खोएगा भी? इन दोनों की तुम्हारे पास कोई सत्ता नहीं है, बेकार ही क्यों ध्यान बिगाड़ता है? यह पैसा तो पूरण-गलन होता है। ये सब कुदरत की सत्ता है। इसलिए पूरण होता है। लाख रुपये कमाता है वह कुदरत की सत्ता है, वह सत्ता तुम्हारी नहीं है, वहाँ क्यों देखल करते हो? पैसे तो फ्री ऑफ कॉस्ट ही मिलते हैं। लेकिन लोग लोभ से भावना करते रहते हैं। उन्हें भ्रान्ति है न कि 'मैं' करूँगा तो मिलेगा, वर्ना नहीं मिलेगा, कहेगा।

**प्रश्नकर्ता :** हम कारखाने पर न जाएँ तो नुकसान होता है।

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन जो जाते हैं उन्हें भी नुकसान होता है न! इसलिए कहना क्या चाहते हैं? पैसे कमाने की भावना करने की ज़रूरत नहीं है। प्रयत्न भले ही चलते रहें। भावना से क्या होता है? मैं पैसे खींच लूँ तो सामने वाले के हिस्से में नहीं रहेंगे। इसलिए कुदरती जो क्वोटा निर्मित हो चुका है, उसे ही हम रहने दें न, फिर भावना करने की क्या ज़रूरत है? ऐसा कहना चाहता हूँ। इससे तो लोगों के कितने ही पाप होने रुक जाएँगे। मैं ऐसा कहना चाहता हूँ।

इस एक वाक्य में कितने ही सार आ गए हैं लेकिन यदि समझे तो। ऐसा नहीं है कि मुझसे ज्ञान लेना ज़रूरी है। ज्ञान न लिया हो न लेकिन इतना उसकी समझ में आ जाए कि यह हिसाब के अनुसार ही है, हिसाब के बाहर कुछ नहीं होता है, वर्ना मेहनत करने पर भी अगर नुकसान हो जाए, तब हम समझ जाते हैं! मेहनत यानी मेहनत, मिलना ही चाहिए, लेकिन नहीं, नुकसान भी आराम से होता है न!

ऐसा भाव करते हैं, उसमें हर्ज है और कुछ नहीं। अन्य क्रियाओं के लिए मेरा विरोध नहीं है। यानी लोग यह बात ऐसे पढ़ लेते हैं लेकिन समझ में नहीं आती। यानी पढ़ लेते हैं लेकिन बात बहुत गहरी होती है।

## भाव ऐसे सुधारें

जब तक गलत की परख नहीं होती, तब तक गलत घर कर जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** व्यवसाय में यह सही है हम ऐसा समझते हैं, फिर भी सही बात नहीं कह पाते हैं।

**दादाश्री :** अतः व्यवहार हमारे ताबे में नहीं है। निश्चय हमारे ताबे में है। बीज बोना हमारे ताबे में है, फल प्राप्त करना हमारे ताबे में नहीं है इसलिए हमें भाव करना चाहिए। खराब हो जाए फिर भी हमें भाव अच्छा करना चाहिए कि ऐसा नहीं होना चाहिए।

## व्यापार में स्पर्धा

**प्रश्नकर्ता :** मैं जब किसी और का व्यापार देखता हूँ, मेरी ही तरह का दूसरा कोई व्यापार हो और वह मुझसे सौ गुना बेच रहा हो, तब मुझे विचार आते हैं कि मैं भी ऐसे बढ़ाऊँ। ऐसा दो-तीन दिन चलता है। तो ये जो विचार आते हैं वह मेरा भरा हुआ माल है, इसलिए आते हैं या वैसा होने वाला है इसलिए आते हैं? यह कैसे पता चले?

**दादाश्री :** नहीं, वह तो होने वाला हो तब भी विचार आते हैं और भरा हुआ माल हो तब भी विचार आते हैं। ज्यादा समझ में आया न? भरा हुआ माल तो, यह माल खाली हुआ तो उसमें कोई परिणाम नहीं बदलता। उसमें तो परेशान होना है और बिकता तो उतना ही है। क्या करें?

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् बाहरी संयोगों में कोई बदलाव नहीं होता?

**दादाश्री :** बाहरी संयोगों में?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, बाहरी संयोग, जैसे हैं वैसे ही रहते हैं। क्या भरे हुए माल में कोई फर्क पड़ता है?



**दादाश्री :** माल में कोई परिवर्तन नहीं हुआ हो, और सोचा उतना ही, उसने माथापच्ची की, वह व्यर्थ गई।

**प्रश्नकर्ता :** चार दिन तक वैसे विचार आते हैं लेकिन फिर वैसा होता नहीं है। कोई वैसे संयोग या निमित्त कुछ भी मिलता ही नहीं है।

**दादाश्री :** विचार सब गलत होते हैं क्योंकि आपको यदि कोई दूसरे व्यापार वाले मिले तो विचार नहीं आते हैं। आपके खुद के व्यापार जैसा ही व्यापार हो न तभी ऐसा तूफान चलता है। हम चाहे कितने ही व्यापार देखें लेकिन वैसे विचार नहीं आते। खुद के व्यापार जैसा देखें तो बहुत विचार आते हैं। हमें भी, पहले जब कॉन्ट्रैक्ट का व्यापार करते थे तब किसी और के कॉन्ट्रैक्ट का दिखे तो तुरंत बहुत विचार आते थे क्योंकि अन्य व्यापार वालों के साथ स्पर्धा नहीं थी। इनके साथ हमारी स्पर्धा है इसलिए यह सब झंझट है।

### आगे बढ़ते हुए को पछाड़ते हैं

स्पर्धा में भी कैसी पद्धति होती है कि कुछ जातियाँ तो यदि खुद के बच्चे आगे बढ़ रहे हों तो बढ़ने देते हैं और रक्षण करते हैं। कुछ जातियाँ ऐसी होती हैं कि खुद के हैसियत से तीन बेटे बराबरी में करीब में चल रहे हों और एक बेटा पीछे रह गया हो तो उसे खुद उठाकर ले आते हैं, भाई, माँ-बाप उठाकर ले आते हैं और सबकुछ देकर ले आते हैं लेकिन यदि एक कदम भी आगे जाए तो बाप उसे मारकर पीछे कर देता है। उसका क्या कारण है? बाप से सहन नहीं होता। वह मुझसे आगे बढ़ गया! और पीछे रह जाए वह भी सहन नहीं होता। मैंने खास तौर पर कुछ कम्प्युनिटी में ऐसा देखा है। कोई बाप किसी बेटे को आगे बढ़ने ही नहीं देता। बेचारे को मार पीटकर पीछे कर देते हैं। फिर मैंने छानबीन की, मैंने कुटुंब में सब से कहा कि, आप सब आगे बढ़ो और पक्के होकर सब मुझसे स्पर्धा करो। मुझसे सब सीखकर। सब मुझसे सीखो, बढ़ो और फिर मुझसे स्पर्धा करो। ऐसे बन जाओ।

लेकिन पीछे मत रह जाना। अन्य लोग किसी को आगे नहीं बढ़ने देते। यह तो मैंने खास तौर पर देखा है। आप में से भी कुछ लोग आगे नहीं बढ़ने देते। कुछ प्रतिशत ठीक तरह से आगे बढ़ने देते हैं और लोग तो सामने वाले को एक लगाकर पीछे धकेल देते हैं! अरे, बाप से भी बेहतर निकला? आजकल संसार में ऐसी बहुत मुश्किलें हैं। अपना अहंकार क्या कुछ नहीं करता? सब को पीछे गिरा देता है। पीछे न हटे तो उसे उखाड़कर निकाल देते हैं। यदि आपका सगा भाई आप सब के साथ बहुत अहंकार करे न, तो सब मिलकर उसे सीधा कर देते हैं। हाँ, उसे दुःखी कर देते हैं कि ऐसा किए बिना वह सीधा नहीं होगा। सीधा करने के लिए उसे दुःखी कर देते हैं। किसलिए? बहुत अहंकार करने पर बाप भी सहन नहीं कर सकता। अहंकार इतना अशुभ गुण है कि बाप भी सहन नहीं कर सकता, भाई भी सहन नहीं कर सकता। भाई भी आशीर्वाद देता है कि जल्द से जल्द यह सीधा हो जाए। यह अहंकार तो बहुत बड़ी चीज़ है। यदि आपको सब भाइयों से आगे बढ़ना हो तो नम्रता रखनी चाहिए। तभी बढ़ने देंगे। वर्ना तो मार-मारकर हड्डी-पसली एक कर देंगे। संसार है यह तो! एक तरफ अहंकार उत्पन्न हो चुका है, अहंकार यानी विकल्प से। आत्मा का विकल्प यानी अहंकार। मैं और मैंने किया। बस चला फिर। फिर मार खाता है तब भी उसे अहंकार छोड़ता नहीं है क्योंकि थोड़ी ही देर बाद उसे ऐसा लगता है कि मेरे ये चार बैल, ये गायें वगैरह, इन सब से मैं बड़ा हूँ न? 'मैं बड़ा हूँ', ऐसा भान रहता है इसलिए इन लोगों को कोई दुःख ही नहीं है! चक्रवर्ती राज्य दें तब भी लेने जैसा नहीं है। फँसने के बाद उसमें दुःख तो अपार हैं। इसके बजाय तो हमारे खुद के देश (आत्मा में) चले जाओ न! उसके जैसा कोई सुख नहीं है। अपने देश (आत्मा) में जो सुख है उसके जैसा किसी देश में नहीं है।

### व्यापार बढ़ाना चाहिए या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** व्यापार के विचार आने पर उन्हें देखते ही रहना है या उनके लिए प्रयत्न करना है?

**दादाश्री :** प्रयत्न हो जाएँ तो देखना है हमें। प्रयत्न होता हो तो देखते रहो, नहीं हो रहा हो तो कोई बात नहीं, लेकिन हम कर कैसे सकते हैं? हमें तो, चंदूभाई क्या प्रयत्न कर रहे हैं, वही देखते रहना है।

**प्रश्नकर्ता :** यह बात ठीक है। लेकिन बार बार विचार आते हैं, महीने बाद किसी का कारखाना देख लें तो फिर कमाने के विचार शुरू हो जाते हैं।

**दादाश्री :** वे तो फिर आएँगे ही।

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर, उसे क्या समझें?

**दादाश्री :** उसमें कोई हर्ज नहीं है। विचार आएँ तो हमें उन्हें देखते रहना है। ओहोहो! यहाँ आने पर आते हैं और हमारे बंद करने पर भी बंद नहीं होते। वे तो आते ही हैं। यानी कि कारखाना देखा कि उस समय लोभ के ही विचार आते हैं और फिर दूसरी किसी मान की जगह जाएँ तो मान के विचार आते हैं। हमें ऐसा होता है कि किस तरह से ऐसा करके या वैसा करके। यानी जगह के अनुसार उसके विचार आते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** तब फिर व्यापार को बढ़ाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए।

**दादाश्री :** क्या होता है, क्या प्रयत्न करता है, वह देखते रहो। वह यदि प्रयत्न करे तो भी ठीक है और नहीं करे तो भी ठीक है। आप मुंबई में रहकर, चार मील ऐसे चक्कर लगाते रहो फिर भी कोई काम नहीं होता है और एक ही दिन यहाँ से ऐसे एक ही चक्कर लगाया कि तुरंत काम हो जाता है। तो फिर चक्कर लगाने से काम होता है या और किसी से होता है? यह नहीं जानने के कारण ही सब तूफान चल रहा है। वह लड़की बेचारी नहीं रो रही थी और कह रही थी कि, 'अब मेरी माँ का क्या होगा, मेरा क्या होगा', उसे समझ में नहीं आ रहा था। इसी तरह इस जगत् के लोगों को अन्य कुछ समझ में नहीं आता।

## बीच में 'एजेन्सियों' से काम लो

**प्रश्नकर्ता :** मेरे और मेरे भतीजे के बीच की प्रॉब्लम की बात बताता हूँ। उससे कहता हूँ कि तुम पूरा हिसाब दो, तब वह हिसाब देने का टालता रहता है। फिर, काम सब करता है लेकिन रिपोर्ट नहीं देता तो प्रॉब्लम बढ़ जाती है। अब उसे कुछ कहें तो फिर उसे बुरा लग जाता है।

**दादाश्री :** उसमें से प्रॉब्लम बढ़ जाती है? फिर क्या हो?

**प्रश्नकर्ता :** अब क्या करना चाहिए आप ही बताइए न!

**दादाश्री :** ऐसा है, हमारे साथ क्या हुआ था वह बताता हूँ। हमारा परिचित हमारे यहाँ नौकरी करता था। हिसाब लिखना होता था तो वह सब गलत लिखता था। उसे खर्च के लिए दस रुपये चाहिए तो खर्च चार आने दिखाता था। फिर मैंने उसे कह दिया कि, 'भाई, जितना खर्च होता हो, जो तुमने कियो हो वह लिखना। सिगरेट लाए हो, ब्रांडी पी हो तो लिखना, चाय पी हो या लोगों को चाय पिलाई हो, वह भी लिखना। तुम्हें छूट देते हैं।' तब फिर उसने लिखना शुरू किया, तब सब बात पता चली। वर्ना डर के मारे लोग लिखें कैसे? सही हिसाब नहीं लिखते, उसका क्या कारण है? अगर वह सही हिसाब लिख दे तो साहब डाँटते हैं कि, 'अरे, ये तुमने क्या किया, इतने सारे पैसे कहाँ खर्च किए?' यह तो, चार आने की अक्ल तो है नहीं और सेठ बन बैठे हैं!! इन्हें एन्करेज करना तो आता नहीं है, तब फिर नौकर डिस्करेज हो जाते हैं।

खरा सेठ तो किसी को डाँटता ही नहीं। सेठ उसे कहते हैं जो किसी को डाँट नहीं। डाँट, उसे सेठ कैसे कह सकते हैं? सब लोग पीठ पीछे बात करते हैं कि, 'ये सेठ तो ऐसे हैं।' उनके लिए कोई नाम रखा ही होता है। सभी नौकरों ने कुछ न कुछ नाम रखा ही होता है। ये तो मन में मान बैठे हैं कि, 'मुझे समझ में आता है।' उसके बजाय, 'मुझे कुछ समझ में नहीं आता।' तो कुछ नहीं बिगड़ेगा। खरा

सेठ तो किसी को डाँटता ही नहीं। सेठ तो कितने शांत दिखने चाहिए! उन्हें देखकर ही लोग खुश हो जाएँ। सेठ के आने पर पूरा वातावरण ही शांत हो जाए!

हमारा लोहे का कारखाना था और जब मैं कारखाने जाता था न, तब करीब सौ लोग, 'बाप जी आए, बाप जी आए', का शोर मचा देते थे। वे दो सौ फुट दूर से देखते तब भी 'बाप जी आए, बाप जी आए', करके खुश हो जाते थे। और मैं किसी को कभी भी एक अक्षर नहीं बोलता था। हजार रुपयों का नुकसान किया हुआ देखता तब भी कुछ नहीं कहता था। कभी किसी ने कोई काम बिगाड़ दिया हो तो भी डाँटता नहीं था। किसी भी बात पर चिल्लाता नहीं था!

सेठ तो कभी किसी को डाँटते नहीं। कभी ज़रूरत पड़े तो बीच में एजेन्सी रखते हैं। वह डाँटने वाली एजेन्सी डाँटती है, लेकिन सेठ तो नहीं डाँटते। बीच में एजेन्सी रखते हैं या फिर डाँटने वाला ऐसा कोई व्यक्ति बीच में रखते हैं जो डाँटता है लेकिन सेठ खुद नहीं डाँटते। फिर सेठ दोनों का समाधान कर देते हैं। सेठ दोनों को बुलाते हैं, 'भाई, तुम डाँटते हो वह बात भी ठीक है लेकिन इनकी बात भी सही है। इस तरह सुलझा देते हैं। बाकी, सेठ क्या कभी डाँटते होंगे?

ये सब व्यवहार की बातें हैं। आपको इसमें से क्या काम आएगा?

**प्रश्नकर्ता :** अरे, आपने तो हमें सोच में डाल दिया कि जब हम डाँटते हैं उस समय हम सेठ नहीं हैं।

**दादाश्री :** सेठ तो किसे कहते हैं? जो एक अक्षर भी बोले न, तो उसे सेठ कह ही कैसे सकते हैं? वे डाँटने लगे तो समझना कि वे खुद ही असिस्टेन्ट हैं! सेठ का चेहरा कभी बिगड़ा हुआ नज़र ही नहीं आता। सेठ यानी सेठ ही दिखते हैं। यदि वे चिढ़ कर बात करें तो सब के सामने उनकी कीमत क्या रहेगी? फिर तो नौकर भी पीठ पीछे कहेंगे कि ये सेठ तो बहुत क्रोध करते हैं! चिढ़ कर बात करते हैं। अरे, ऐसा सेठ होने से तो गुलाम होना अच्छा। हाँ, आपको यदि

जरूरत हो, खटपट करनी हो तो बीच में एजेन्सी रखना। लेकिन ऐसे डाँटने का काम खुद सेठ को नहीं करना चाहिए! नौकर भी खुद लड़ते हैं, किसान भी खुद लड़ते हैं, आप भी खुद लड़ते हो तो फिर कौन खुद नहीं लड़ता? व्यापारी खुद लड़े, किसान खुद लड़े तो व्यापारी जैसा क्या रहा? सेठ तो ऐसा नहीं करते।

आपका भतीजा ऐसा समझता है कि चाचा का स्वभाव ही ऐसा टेढ़ा है और आप ऐसा समझते हो कि भतीजा आपकी बात नहीं समझता। इस तरह फिर केस बिगड़ता जाता है। अब जब कभी उसे ऐसा न लगे कि, 'चाचा का स्वभाव ऐसा है', तब आपकी बात पर ध्यान देगा। लेकिन वह तो ध्यान ही नहीं देता, इसका अर्थ ही यह हुआ कि आपका स्वभाव ऐसा ही है। ऐसा मान लिया है। क्योंकि रोज़-रोज़ ऐसा ही स्वभाव देखता है। इसलिए फिर, 'ये तो इनका स्वभाव ही ऐसा है' करके बात बिगड़ती रहती है। अतः उपाय करो। बीच में एजेन्सी रखना और जब वह भतीजे को डाँटेंगे तब भतीजा आपके पास शिकायत लेकर आएगा कि, 'ये मुझे बहुत डाँटते हैं', तब आप उनसे कहना कि, 'भाई, काम तो सब बताना ही चाहिए न! हिसाब तो पूरा देना ही चाहिए न!' ऐसा कहोगे तब भतीजा आपकी बात मानेगा। बाकी, डाँटना बंद कर दो तभी धीरे-धीरे उनके साथ सब ठीक हो जाएगा।

### ऐसे न्याय होता है

1930 तक मंदी थी। 1930 में सब से ज्यादा मंदी थी। उस मंदी में सेठों ने इन बेचारे मज़दूरों का बहुत खून चूसा था, इसलिए अब इस तेज़ी के समय में मज़दूर सेठों का खून चूस रहे हैं। दुनिया में ऐसे आमने-सामने शोषण करने का रिवाज़ है। मंदी में सेठ चूसते हैं और तेज़ी में मज़दूर चूसते हैं। दोनों की एक के बाद एक बारी आती है। इसलिए ये सेठ जब शिकायत करते हैं, तब मैं कहता हूँ कि आपने 1930 में मज़दूरों को नहीं छोड़ा था इसलिए अब ये मज़दूर आपको नहीं छोड़ेंगे।

घर में भी तेज़ी-मंदी आती है तो मंदी में पत्नी पर रौब जमाया होता है। फिर जब तेज़ी आती है तब वह आप पर रौब जमाती है। इसलिए तेज़ी-मंदी में एक समान रहो, समान रूप से रहोगे तो आपका सब अच्छी तरह से चलेगा।

मज़दूरों का खून चूसने का नियम रखो ही मत, तो आपको कोई परेशान नहीं करेगा। अरे, भयानक कलियुग में भी आपको परेशान नहीं करेगा।

यह संसार क्षण भर के लिए भी न्याय के बगैर नहीं रहता है। हर क्षण न्याय ही हो रहा है। संसार एक क्षण के लिए भी अन्याय सहन नहीं कर सकता। जो अन्याय किया है, वह भी न्याय ही हो रहा है!

### लक्ष्मी, पुण्य से?

मैंने इस दुनिया के तमाशे देखने में ही समय बिताया है। इसके अलावा और कहाँ समय बिताना है? कमाना है, तो हाय पैसा, हाय पैसा! वह तो जब तक पुण्य होगा तब तक सब ठीक रहेगा। वर्ना मेहनत कर करके मर भी जाएँ न, ये मज़दूर मेहनत करते ही हैं न। फिर भी कुछ नहीं मिलता।

ये मज़दूर तो दिन भर मेहनत करते हैं फिर सेठ क्या कहते हैं कि, 'आज छुट्टे पैसे नहीं हैं। तुम्हारे पास सौ के छुट्टे हों तो ले आओ।' अब उस बेचारे को सौ के छुट्टे कौन देगा? तब सेठ उसे पैसे नहीं देते। अब वह बेचारा बिना पैसों के घी-तेल कहाँ से लाएगा? अरे, घी तो खाता नहीं लेकिन तेल और चुटकी भर मसाला लेकर जाना हो तो बिना पैसों के वह कैसे लेकर जाएगा? वह बेचारा खाली हाथ लौट जाता है! मज़दूर गाली तो नहीं दे पाता और सेठ पैसे नहीं देता। और फिर भी डाँटता है। अरे, पूरा दिन नौकरी की, मेहनत की, तब भी पैसे नहीं मिलते हैं। यह कैसा हिसाब है? और आप तो नौकरी से छुट्टी लो फिर भी तनख्वाह मिलती रहती है न! मतलब लक्ष्मी तो पुण्य का फल है।

लक्ष्मी का स्वभाव ही वियोगी है। वह कहेगा कि, 'अब मेरी समृद्धि आठ पीढ़ी तक रहे तो अच्छा है', लेकिन इनका स्वभाव ही वियोगी है इसलिए हमें कहना चाहिए कि, 'हमारी ऐसी इच्छा नहीं है कि आप जाओ। आप यहीं रहो। फिर भी आपको यदि जाना हो तो हम मना नहीं करेंगे।' इस तरह कहने से उन्हें ऐसा नहीं लगेगा कि, 'इन्हें हमारी परवाह ही नहीं है।' 'हमें आपकी दस बार परवाह है। लेकिन यदि आप रह ही न पाए तो आपकी मर्जी की बात।' नहीं रहना हो तो उन्हें क्या माँ-बाप कहेंगे? जो माँ-बाप हैं, उन्हें माँ-बाप कहेंगे।

### व्यापार का नुकसान व्यापार ही भरता है

**प्रश्नकर्ता :** व्यापार में भारी घाटा हुआ है तो क्या करूँ? व्यापार बंद कर दूँ या दूसरा व्यापार करूँ? बहुत कर्जा हो गया है।

**दादाश्री :** रूई बाज़ार का घाटा कहीं किराने की दुकान खोलने से पूरा नहीं होता। व्यापार में हुआ घाटा व्यापार से ही पूरा होता है, नौकरी से भी नहीं होगा। 'कॉन्ट्रैक्ट' के काम में हुआ घाटा कहीं पान की दुकान से पूरा होगा? जिस बाज़ार में घाव लगा है, उसी बाज़ार में वह घाव भरेगा, वहीं उसकी दवाई होती है।

हमें एक ही भाव रखना है कि हम से किसी जीव को किंचित्मात्र भी दुःख न हो। हमें एक शुद्ध भाव रखना है कि पूरा कर्जा चुकता हो जाए। लक्ष्मी तो ग्यारहवाँ प्राण है। इसलिए किसी की लक्ष्मी हमारे पास नहीं रहनी चाहिए। हमारी लक्ष्मी किसी के पास रह जाए, उसमें हर्ज नहीं है। लेकिन निरंतर यही ध्येय रहना चाहिए कि, 'मुझे पाई-पाई चुका देनी है'। ध्येय लक्ष्य में रखकर आप खेल खेलो। लेकिन खिलाड़ी मत बन जाना। खिलाड़ी बने कि आप खत्म!

### खराब नीयत, दुःखी हालत

**प्रश्नकर्ता :** व्यक्ति की नीयत खराब क्यों हो जाती है?



**दादाश्री :** अच्छी नीयत होती तब तो संसार होता ही नहीं न? सभी की अच्छी नीयत होती तो संसार होता ही नहीं। स्वर्ग ही कहलाता न! फिर तो पालकी उठाने वाले भी नहीं होते और पालकी में बैठने वाले भी नहीं होते। बुरी नीयत वाला पालकी उठाता है। आपको क्या लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन प्रश्न तो यह है कि नीयत खराब क्यों हो जाती है?

**दादाश्री :** ठीक है। पहले यह सामान्य भाव से ही बात करनी चाहिए न? बाद में पर्सनल बात।

जिसे हमने पाँच हजार रुपये दिए, अब उसकी नीयत खराब हो जाए। तब हमें क्या करना चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** फिर तो नियम ही संभालेगा। नियम में जैसा होता है वैसा करना पड़ेगा।

**दादाश्री :** हाँ, नियम से जितना हो सके उतना किया, फिर भी हाथ में कुछ न आए तो क्या करना चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** छोड़ देना पड़ेगा?

**दादाश्री :** हमें इतना समझ लेना चाहिए कि इस व्यक्ति की नीयत बदल गई है। यानी यह व्यक्ति भविष्य में बहुत दुःखी होने वाला है। तब उसके लिए हमें भगवान से कहना चाहिए कि हे भगवान, उसे सदबुद्धि दीजिए। वह व्यक्ति बहुत दुःखी होने वाला है और जिसकी नीयत नहीं बदलती वह सुखी होने वाला है। आपको कौन सा पसंद है? जिसकी नीयत नहीं बदलती वह सुखी होने वाला है इसलिए हमें समझ जाना चाहिए कि इसकी नीयत बदली तो यह दुःखी होने वाला है। अब यदि सभी की नीयत न बदले तो फिर कौन सुखी होगा? यानी यहाँ गड़ढा होगा तभी वहाँ टीला कहलाएगा। यदि गड़ढा ही न हो तो लेन्ड लेवल रहेगी।

**प्रश्नकर्ता :** अब लोगों की नीयत किस कारण से खराब होती है ?

**दादाश्री :** उसका खराब होने वाला हो, तब उसे फोर्स आता है कि तू ऐसा कर दे न, जो होगा देख लेंगे। उसका खराब होने वाला है इसलिए। 'कमिंग इवेन्ट्स कास्ट देयर शेडोज़ बिफोर (जो होने वाला है उसकी परछाई पहले पड़ जाती है)।'

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन क्या वह रोक सकता है ?

**दादाश्री :** हाँ, उसे रोक सकता है। यदि उसे ज्ञान प्राप्त हुआ हो कि तुझे बुरे विचार आएँ तो फिर उसका पश्चाताप कर। तब ऐसा कहता है कि, 'ऐसा नहीं होना चाहिए, ऐसा नहीं होना चाहिए।' इस तरह रोक सकते हैं। बुरे विचार आते हैं, वे मूल गत ज्ञान के आधार पर है। लेकिन आज का ज्ञान उसे ऐसा कहता है कि यह करने जैसा नहीं है। तो फिर वह उसे बदल सकता है। समझ में आया न? कुछ खुलासा हो रहा है ?

**प्रश्नकर्ता :** क्या इच्छाओं के कारण नीयत नहीं बिगड़ती ?

**दादाश्री :** कैसी इच्छाएँ ?

**प्रश्नकर्ता :** उसे इच्छा हो कि यह भोग लेना है, इसलिए बिना हक के पैसे ले लेता है।

**दादाश्री :** नीयत बिगड़ना यानी ऐसा नहीं है कि पाँच लाख रुपयों के लिए बिगाड़ना, ऐसा नहीं है। वह तो पच्चीस रुपयों के लिए भी नीयत बिगाड़ता हैं! अर्थात् इसमें भोगने की इच्छा से कोई लेना-देना नहीं है। उसे इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त हुआ है कि 'क्या देना है? देने के बजाय खुद यहीं खर्च करो। जो होगा देखा जाएगा।' उसे ऐसा उल्टा ज्ञान मिला है।

## भाव, कर्ज़ा चुकाने का ही

इसलिए अभी हम किसी भी व्यक्ति को ऐसा कह सकते हैं

कि, भाई चाहे कितने भी व्यापार करो, घाटा हो तो भी हर्ज नहीं है, लेकिन मन में एक भाव तय कर लेना कि मुझे सभी के चुका देने हैं। क्योंकि पैसा किसे प्यारा नहीं होता? यह बताओ। किसे प्यारा नहीं होता? हर किसी को, अपने बेटे को एक रुपये का नमकीन दिलाते समय या किसी को पाँच हजार उधार देता है। यानी पैसा सभी को प्यारा होता है। इसलिए, किसी का पैसा डूब जाए, ऐसा भाव तो आपके मन में आना ही नहीं चाहिए। चाहे कुछ भी करके मुझे लौटाने ही हैं। शुरू से ही ऐसा डिसिज़न रखना चाहिए। यह बहुत बड़ी चीज़ है। किसी और चीज़ में दिवाला निकाला होगा तो चलेगा लेकिन पैसे का दिवाला नहीं होना चाहिए। क्योंकि पैसा तो दुःखदायी है, पैसे को तो, ग्यारहवाँ प्राण कहा गया है। इसलिए किसी के भी पैसे नहीं डुबोने चाहिए। वह सब से बड़ी चीज़ है।

मान लो कि, किसी साहब ने मुंबई जाकर कोई सौदा किया। साहब रिटायर हुए और बड़ा सौदा किया। कमाने का लालच तो होता है न? उसमें उन्हें कुछ दो-तीन लाख रुपयों का नुकसान हुआ, तो क्या हाथ खड़े कर देने हैं? फिर छोटे से मकान में रहते हुए भी कहे कि, 'हमें रुपये लौटाने ही हैं', ऐसा तय करे न, तो साल-दो साल में सब ठीक हो जाता है, आत्मा की शक्तियाँ अनंत हैं।

आजकल तो दस-बीस लाख रुपये दबाकर फिर दिवाला निकाल लेते हैं। बहुत गलत कहा जाएगा। अनंत जन्म बिगाड़ लिए हैं, किसी के भी पैसे दबाने नहीं चाहिए।

आपने ऑफिस में पैसे 'नहीं लिए' उसका फायदा हुआ न? तभी तो ये दादा मिले हैं। वरना ये दादा कैसे मिलते? अब तक तो मुँह काला हो गया होता, क्या हो चुका होता?

**प्रश्नकर्ता :** मुँह काला हो गया होता।

**दादाश्री :** हाँ, सारा तेज चला गया होता या नहीं गया होता?

## कर्ज के साथ मर जाए तो?

**प्रश्नकर्ता :** व्यक्ति कर्ज छोड़कर मर जाए तो क्या होगा?

**दादाश्री :** कर्ज अदा किए बिना मर जाए तो? कर्ज के साथ मर जाएँ लेकिन उसके मन में अंतिम समय तक, मरते दम तक, एक चीज तय होनी चाहिए कि मुझे ये पैसे लौटा देने ही चाहिए। क्या? इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में भी मुझे अवश्य लौटाने ही हैं। जिसका ऐसा भाव है, उसे कोई अड़चन नहीं आती और कितने लोग कहते हैं, 'क्या लेना-देना है? कौन पूछने वाला है?' तब वहाँ पर वैसा होता है।

अपने यहाँ तो सेठ लोग दस-बीस लाख दबाकर ही बैठ जाते हैं। क्या आपको ऐसा पता नहीं है कि कोई इस तरह दबाता है?

**प्रश्नकर्ता :** मालूम है न दादा।

**दादाश्री :** हाँ, इससे तो नौकरी करने वाले को अच्छा है कि कोई दबाता ही नहीं! कोई झंझट ही नहीं।

## ...तो कर्जा चुक सकता है

और नियम ऐसा है कि पैसे लेते समय ही तय कर लिया हो कि इसके पैसे मुझे लौटाने हैं। ऐसा तय करके लेना चाहिए। उसके बाद हर चौथे दिन उसे याद करके ऐसी भावना करे कि 'ये पैसे जल्दी से जल्दी लौटा देने हैं।' ऐसी भावना होने पर रुपये लौटा सकेगा, वर्ना राम तेरी माया। रुपये नहीं लौटा सकेगा। ये जो कर्जा लेते हैं न, वह तो, जो वसूली करने वाला आया वह ले गया। तब वह दूसरे से माँग लाता है। यह एक से दस हजार लेता है, दूसरे को पाँच हजार दे देता है। फिर किसी और से लेता है और दूसरे को दे देता है। इस तरह चक्कर पे चक्कर चलाता है। अंत में रोता है।

## भविष्य में तो है अंधकार

और अभी तो लक्ष्मी टिकनी नहीं है। दो-पाँच सालों में तो

बड़े-बड़े सेठ लोग शोर मचाएँगे कि, 'मैं कँगाल हो गया हूँ।' अरे, इसलिए पहले से ही सीधे रहना था न? सीधा रहा होता तो बहुत अच्छा होता! पैसा अच्छे काम में नहीं गया, वह तो सारा गटर में गया। आराम से, बांद्रा की खाड़ी में। लोग तो इस पाइप में डालते ही जा रहे हैं इसलिए 'हमने' तो महात्माओं से कहा है, 'निर्भय रहना!' निर्भय रहना चाहिए या नहीं? वर्ना तो भयस्थान ही है न! भयस्थान ही है न सब! अभी किसलिए बचे हुए हैं? कुछ नियम तो हैं हमारे पास। नीति है, धर्म के लिए भाव है, यानी किसी नियम से रहते हैं तो पार उतर जाएगा। यह 'दादा भगवान' का विज्ञान है। यह आपको कभी भी बरबाद नहीं होने देगा।

बाकी, बाहर तो अगर आप देखोगे न, तो कुदरत लोगों को बरबाद कर देगी। उसमें बड़े-बड़े बरगद के पेड़ तो गिरेंगे ही, कबीर वड (भरूच में एक विशाल वट वृक्ष) जैसे भी उखड़ जाएँगे। लेकिन साथ में कई जीव भी खत्म हो जाएँगे, बहुत सारे।

कोई कहेगा, मैंने बीस हजार दिए थे, मेरे गए। कोई कहेगा, मैंने अस्सी हजार दिए थे, मेरे गए। वह कहेगा, एक लाख दिए थे वह गए। यह तो, जब बड़े वृक्ष गिरते हैं तब जाते हैं। दो प्रतिशत ब्याज पाने के लिए दिए थे न, क्या यों ही थोड़े ही देकर आए थे?

यह तो अपना ज्ञान है न इसलिए बहुत अच्छा हो गया है। गलत हो जाए तब भी खटकता ही रहता है। दोनों में डिफरेन्स इतना ही है कि वह गलत करता है और ऊपर से खुश होता है कि मैंने लोगों को कैसा मूर्ख बनाया, और इन्हें खटकता रहता है। हमारे महात्माओं को गलत होने के बाद खटकता रहता है, या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** खटकता है।

**दादाश्री :** उसे महात्मा कहते हैं। गलती करने पर मन में खटकता रहता है। गलती करते हैं और खुश हो वे कोई और हैं!

## हिसाब का पता चलता है भाव पर से

**प्रश्नकर्ता :** भाव शुद्ध होना चाहिए न? भाव ही बिगड़ जाए तो वापस कैसे लौटा पाएँगे?

**दादाश्री :** भाव शुद्ध नहीं है उसी पर से हम यह हिसाब लगा सकते हैं कि ये लौटा नहीं पाएँगे और भाव शुद्ध हो तो समझना कि यह वापस दे पाएँगे। आप अपने आप ही तोल लेना।

हमें अड़चन हो तब हमें इतना तो देख लेना चाहिए कि अपना भाव शुद्ध रहता है या नहीं? तब जरूर लौटा सकेंगे, चिंता करने जैसा नहीं है।

हमने किसी से रुपये लिए हों और हमारा भाव शुद्ध रहे तब समझना कि ये पैसे हम लौटा पाएँगे। फिर उसके लिए चिंता नहीं करनी है। भाव शुद्ध रहता है या नहीं, उतना ही देखना है, यह उसका लेवल है। सामने वाला भाव शुद्ध रखता है या नहीं, उस पर से हम समझ सकते हैं। उसका भाव शुद्ध न रहे तभी से हमें समझ लेना चाहिए कि ये पैसे जाने को हैं।

भाव शुद्ध होना ही चाहिए। भाव यानी, खुद के अधिकार से आप क्या करते? तब कहें कि, 'यदि उतने रुपये होते तो पूरे आज ही लौटा देता!' इसे शुद्ध भाव कहते हैं। भाव में तो ऐसा ही रहता है कि जल्द से जल्द कैसे लौटा दूँ।

**प्रश्नकर्ता :** ये दिवाला निकालते हैं और फिर पैसे नहीं लौटाते तो फिर क्या अगले जन्म में चुकाने पड़ेंगे?

**दादाश्री :** उसे फिर पैसे देखने को भी नहीं मिलेंगे। रुपया उसके हाथ में ही नहीं आएगा। हमारा कानून क्या कहता है कि रुपये लौटाने के बारे में आपका भाव नहीं बिगड़ना चाहिए, तो एक दिन आपके पास रुपये आएँगे और कर्जा चुका पाओगे। चाहे कितने भी रुपये हों लेकिन आखिर में रुपया साथ में नहीं आता, इसलिए काम

निकाल लो। अब फिर से मोक्षमार्ग नहीं मिलेगा। इक्यासी हजार साल तक मोक्षमार्ग हाथ नहीं लगने वाला। यह सब से आखिरी 'स्टैन्ड' है, अब आगे 'स्टैन्ड' नहीं है।

पैसों का या फिर ऐसा-वैसा सांसारिक कर्जा नहीं होता, राग-द्वेष का कर्जा होता है। पैसों का कर्जा होता तो हम नहीं कहते कि, 'भाई, पाँच सौ पूरे माँग रहा है तो पाँच सौ पूरे लौटा दे, वर्ना आप छूट नहीं पाओगे!' हम क्या कहते हैं कि, उसका *निकाल* (निपटारा) करना, पचास देकर भी आप *निकाल* (निपटारा) कर देना और उसे पूछ लेना कि, 'आप खुश हो न?' तब वह कहे कि, 'हाँ मैं खुश हूँ', तो फिर *निकाल* (निपटारा) हो गया।

जहाँ-जहाँ आपने राग-द्वेष किए होंगे, वे राग-द्वेष आपको वापस मिलेंगे।

किसी भी तरह से पूरा हिसाब चुका देना है। यह पूरा जन्म हिसाब चुकाने के लिए है। जन्म से लेकर मृत्यु तक सबकुछ अनिवार्य है।

### यह तो है एकस्ट्रा आइटम

एक लेनदार एक व्यक्ति को सता रहा था, वह व्यक्ति मुझसे कहने लगा कि, 'यह लेनदार मुझे बहुत गालियाँ दे रहा था।' मैंने कहा, 'जब वह आए तब मुझे बुला लेना।' फिर लेनदार आया, तब उसका बेटा मुझे बुलाने आया। मैं उसके घर पहुँचा। मैं बाहर बैठ गया, भीतर वह लेनदार उसे कह रहा था, 'आप ऐसी नालायकी करते हैं? यह तो बदमाशी कहलाएगी।' ऐसी-वैसी बहुत गालियाँ देने लगा, तब फिर मैंने अंदर जाकर कहा, 'आप लेनदार हो न?' तब कहा कि, 'हाँ, मैं लेनदार हूँ।' मैंने उसे कहा, "और ये देनदार हैं। आप दोनों का एग्रीमेन्ट है। इसने देने का एग्रीमेन्ट किया है और आपने लेने का एग्रीमेन्ट किया है। और आप ये जो गालियाँ दे रहे हो, वह 'एकस्ट्रा आइटम' (अतिरिक्त वस्तु) है, उसका पेमेन्ट करना पड़ेगा। गालियाँ देने की शर्त करार में नहीं रखी है। एक गाली के चालीस रुपये कट जाएँगे। विनय के बाहर

बोले तो वह एक्स्ट्रा आइटम कहलाएगा। क्योंकि आप करार से बाहर चले हो। ऐसा कहने पर वह जरूर सीधा हो जाएगा और दोबारा ऐसी गालियाँ नहीं देगा और हम तो ऐसा-ऐसा कह देते हैं कि वह सामने वाला बोल ही न सके और सीधा हो जाए।

हमने तो यह शरीर है न, वह सट्टे में रख दिया है। जिसने सट्टे में रखा हो उसे कोई डर रहेगा? हम ऐसा-ऐसा कह देते हैं लेकिन वह उसके हित में होता है। हमारा खुद का हित तो हो चुका है, पूरा हित हो चुका है। यह आपके हित के लिए कहना पड़ता है। फिर लेनदार सीधा चलता है न? उसे समझ नहीं है कि ये गालियाँ क्या हैं? इन 'एक्स्ट्रा आइटम' के पैसे देने पड़ते हैं! क्योंकि तुम एक्स्ट्रा क्यों बोले?

### देखे भूल खुद की ही

एक ब्राह्मण एक बनिये से चार सौ रुपये माँगता था, वह ज़बती करने गया तो बनिया तो चिढ़ गया। 'साला, नालायक' ऐसे बोलता जाता और फिर वापस कहता, 'मेरे जैसा नालायक कोई है ही नहीं न!' अरे, तुम खुद को गाली दे रहे हो? उसको तो इतनी सारी गालियाँ दी और फिर क्या कहता है? 'मेरे जैसा नालायक कोई नहीं है।' रुपये नहीं दिए तब ऐसी दशा हुई न! ऐसा कहता और फिर ब्राह्मण को नालायक कहता! अरे, ऐसे कैसे आदमी हो? ये तो तरह-तरह के दिमाग हैं। वह उसे नालायक कहता है और फिर खुद के लिए ऐसा बोलता है, तब हमें तो हँसी ही आएगी न?

यानी इस जगत् का पार कैसे पाएँ? इसलिए हमने तो क्या कहा कि, 'भुगते उसकी भूल।' अपनी भूल है ऐसा कब पता चलेगा कि जब हमें भुगतना पड़ेगा तब। यह आसान रास्ता है न?

एक व्यक्ति ने आपको ढाई सौ रुपये नहीं लौटाए और आपके ढाई सौ रुपये गए, उसमें भूल किसकी है? आप की ही न? भुगते उसकी भूल। इस ज्ञान से धर्म होगा, इसलिए सामने वाले पर आरोप



लगाना, कषाय करना, सब छूट जाएगा। अर्थात् 'भुगते उसकी भूल' यह तो मोक्ष ले जाए ऐसा है। यह तो एक्झेक्ट निकला है न कि 'भुगते उसी की भूल।'

## ज्ञान से पहले की भूमिका

**प्रश्नकर्ता :** यह ज्ञान प्रकट हुआ उससे पहले आपकी काफी कुछ भूमिका तैयार हो चुकी होगी न?

**दादाश्री :** भूमिका में, कुछ भी नहीं आता था। देखो, आता नहीं था इसलिए मैट्रिक में नापास होकर पड़े रहे। मेरी भूमिका में चारित्रबल सब से ऊँचा था, इतना मैंने देखा था, फिर भी चोरियाँ की थीं। इन खेतों में बेर आदि होते तब लड़कों के साथ जाते थे। अब पेड़ किसी का और आम हम लें, क्या वह चोरी नहीं कही जाएगी? बचपन में सब लड़के आम खाने जाते, तब हम भी साथ में जाते थे। मैं खाता ज़रूर था लेकिन घर लेकर नहीं जाता था। चारित्र अच्छा है उतना जानता हूँ।

और दूसरा, जब से व्यापार कर रहा हूँ, तब से मुझे याद नहीं है कि मैंने अपने खुद के लिए व्यापार के संबंध में सोचा हो। हमारा व्यापार जैसे चले वैसे चलता रहता था लेकिन यदि आप वहाँ आओ तो सब से पहले मैं पूछता कि 'आपका कैसे चल रहा है? आपको क्या तकलीफ है?' यानी कि आपका समाधान करता, बाद में जब वे भाई आएँ तब उनसे पूछता कि उनका कैसे चल रहा है? अर्थात् लोगों की अड़चने ही हल करता था। पूरी ज़िंदगी मैंने यही काम किया था। और कोई काम कभी किया ही नहीं।

व्यापार करना बहुत आता था। यदि कोई चार महीने से उलझा हुआ हो तो उसे मैं एक दिन में सुलझा देता।

क्योंकि किसी का भी दुःख मुझसे सहन नहीं होता था। अरे नौकरी नहीं मिल रही है? तो अंत में चिट्ठी लिख देता था। ऐसा कर

देता, वैसा कर देता और हल निकाल देता। वैसे आम दिनों में नहीं बोलता था पर चिट्ठी लिखते समय, भाई साहब, भाई साहब, लिखता था।

**प्रश्नकर्ता :** वह अच्छा किया।

**दादाश्री :** लेकिन ऐसा किया। बस, इसलिए ज़िंदगी में और कुछ नहीं किया।

अपने व्यापार की बात मैंने किसी से नहीं की। व्यापार के बारे में ध्यान भी नहीं दिया था। मैं तो, लोगों को किस तरह सुख प्राप्त हो, कैसे उनकी अड़चनें दूर हों, सर्विस न हो उसे चिट्ठी लिख देता था।

और यदि उसे नौकरी न मिल रही हो न, तो उसे हमारे वहाँ, मुंबई भेज देता। सब को मुंबई भेजता रहा था। उसकी तनख्वाह देनी पड़ती फिर भी। हमारा पार्टनर कहता कि, 'हाँ भाई, भेज दो।'

**प्रश्नकर्ता :** किसी को पाँच देकर छूट जाना। वह व्यवहारिक दृष्टि सही है लेकिन भगवान की दृष्टि से सही नहीं है।

**दादाश्री :** नहीं, भगवान तो मुझे पर बहुत खुश क्योंकि जो भी आया, उनके दुःख दूर किए थे, इसलिए भगवान तो बहुत खुश।

मेरे घर कोई आता था न, उस बारे में, वह भी रस से पड़ा रहता था और मैं भी रस से पड़ा रहता था। मुझे भी अहंकार का रस था और उसे भी। वह भी, सिर्फ अहंकार का रस चूसने के लिए। बाकी, वह सब हम लोगों को नौकरी देने के लिए नहीं करते थे!

### मान खाकर सलाह देता

और मैं लोगों को गलत सलाह देता था। उनको गलत रास्ता बता कर बचा देता था! गुनहगारों को बचने का रास्ता दिखाना होता, इन्कम टैक्स में फँसा होता बेचारा तो मेरे सलाह देने से वह छूट जाता। लेकिन वह गलत रास्ता बता कर बचाने के बराबर था जो मुझे बाद

में समझ में आया कि यह गलत रास्ता बता कर बचा दिया! मैंने अपनी बुद्धि का दुरुपयोग करके उस व्यक्ति को गलत रास्ता बता कर बाहर निकाला और फिर, इन्कम टैक्स से कैसे बचना, वह भी बताया था। गलत रास्ता बता कर बचा दिया। सही रास्ते से नहीं, गलत रास्ते से! मुझे इससे क्या लाभ हुआ? मुझे मान देते थे। मैं मान का भूखा था। मान का भूखा नहीं बल्कि भिखारी था! जैसे भिखारी भीख माँगता है न, उसी तरह से मान के लिए! यह ज्ञान होने से पहले की बात कर रहा हूँ। तब मेरा 'दिमाग' ज़रा अच्छा चलता था और लोगों को सलाह देने का सिस्टम था! इसलिए सलाह देने बैठ जाते थे बहुत और वे लोग मान भी बहुत देते थे, और हम स्वीकार भी करते थे!! वे मुझसे कहते थे, 'मेरा तो ऐसा हो गया और वैसा हो गया है'। तब हम उसे कहते, 'इस तरह से निकल जाओ न, आगे जो होगा देखा जाएगा।' इस तरह गलत रास्ता दिखाता, बेक-डोर! हाँ, ऐसे कितने ही गुनाह हुए होंगे। हमारी कुछ वकालत थी? वकील पैसों के लिए करते हैं, हम मान के लिए करते थे। दोनों एक समान ही हुआ न? सब वकालत ही है न? एक व्यक्ति दूसरे को पीट रहा हो, ऐसे में यदि मारने वाले व्यक्ति को समझाकर रोका जाए तो उसे दूसरे पर बचाने का उपकार करना कहते हैं। यानी इसे भी नुकसान नहीं हो और उसे भी नहीं हो न, इस तरह छूट जाएँ। फिर यदि इसकी फीस लें और उसकी न लें तो क्या उसे बचाना कहा जाएगा?

और जो मदद माँगने आया न, चोर भी मदद माँगने आया था तो चोर की भी मदद की थी। फिर इतना बोले कि, 'हाँ दादा, आपने तो मेरा काम कर दिया।' बस, इतना ही चाहिए।

**प्रश्नकर्ता : मान!**

**दादाश्री :** इतना अहम् को पोषण दे तो उसका सब काम हो जाता था। सारी जोखिमदारी हम ले लेते थे। वह तो समझते कि भगवान जैसे ही हैं। और मेरा दुःख मिटाने के लिए सबकुछ किया, ऐसा समझते थे। खुद अपने लिए कुछ नहीं करते थे।

इतना अहंकार तो होना ही चाहिए। वर्ना अच्छा काम तो कोई करेगा ही नहीं। और मुझे भी वह अहंकार था इसलिए करता था। बहुत भारी अहंकार।

एक दिन अंबालाल भाई कहे और अगले दिन अंबालाल कहे तो पूरी रात नींद नहीं आती थी। मुझे इतना ज्यादा अहंकार था। पागल अहंकार। वह भी बिना पूंजी का। पूंजी कभी कम नहीं हुई थी।

**प्रश्नकर्ता :** खुद के कैरेक्टर का अहंकार होना चाहिए।

**दादाश्री :** हाँ, वह होना चाहिए। लक्ष्मी का अहंकार गलत है। लक्ष्मी तो आती है और चली जाती है, उसका तो कोई ठिकाना नहीं है।

### ‘दादा’ की उपस्थिति, वही अमीरी

यानी मैंने अपने खुद के लिए कभी भी व्यापार नहीं किया था।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन जब आप कॉन्ट्रैक्ट का काम करते थे, तब तो आपके लिए ही किया न?

**दादाश्री :** मेरे खुद के लिए मैंने कुछ भी नहीं किया। वह व्यापार तो अपने आप चलता था। हमारे पार्टनर इतना कहते थे कि, ‘आप जो ये कर रहे हैं वही करते रहिए, आत्मा का, और दो-तीन महीने में एकाध बार आकर काम बता दीजिएगा कि ऐसा करना है।’ बस, इतना ही काम लेते थे मुझसे।

**प्रश्नकर्ता :** फिर भी, पार्टनर की कोई अपेक्षा तो होती होगी न? कुछ पाने की? पार्टनर तो तभी बनाते हैं न, जब खुद को कोई लाभ होता हो?

**दादाश्री :** हाँ।

**प्रश्नकर्ता :** तो उन्हें उस समय क्या लाभ हुआ?

**दादाश्री :** उन्हें तो सांसारिक, पैसों के बारे में सब लाभ होता

था न! वे तो बेटों को कहकर गए कि 'इन दादा की उपस्थिति, वही अमीरी है। मुझे कभी पैसों की कमी नहीं रही।'

**प्रश्नकर्ता :** सूरत में ज्ञान हुआ, उससे पहले की बात है यह ?

**दादाश्री :** हाँ, पहले की बात है।

**प्रश्नकर्ता :** यह समझ में नहीं आए, ऐसा है।

**दादाश्री :** वह तो, कोई कहते हैं न कि आपके तो चरण ऐसे हैं। किसी के बारे में नहीं कहते ?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, हाँ।

**दादाश्री :** हम ऐसा लेकर आए हैं।

### पार्टनर के साथ कभी मतभेद नहीं

हमने चालीस साल तक पार्टनर के साथ व्यापार किया लेकिन एक भी मतभेद नहीं हुआ। एक सेकन्ड भी मुझे मतभेद नहीं हुआ।

**प्रश्नकर्ता :** इसे तो आश्चर्य कहा जाए। वर्ना, भागीदार हो तो कुछ न कुछ, कभी तो...

**दादाश्री :** नहीं, एक सेकन्ड भी मतभेद नहीं हुआ।

### ऐसा हो, फिर मतभेद कैसा ?

मैं व्यवसाय करता था उसमें मैंने पार्टनर के साथ एक नियम तय किया था। मैं नौकरी करता तो वहाँ मुझे जितने पैसे मिलते, उतने पैसे घर भेजना। उससे ज्यादा नहीं भेजना। यानी वे पैसे बिल्कुल सही होंगे। बाकी पैसे वहीं व्यवसाय में ही रखना, कंपनी में। तब उन्होंने मुझसे पूछा, 'फिर उसका क्या करेंगे?' मैंने कहा, 'इन्कम टैक्स वाले कहें कि, 'डेढ़ लाख भर दो। आपको वह दादा के नाम से भर देने हैं। तब मुझे खत मत लिखना।' यदि कंपनी को बड़ा नुकसान हो जाए तब भी आपको मुझे खत नहीं लिखना। यानी कोई परेशानी ही नहीं

न और वे पैसे अच्छे लगते थे, हिसाब वाले। जबकि अभी तो पूरे ही पैसे खोटे हैं। पूरे ही, खरा या खोटा, मूलतः 1939 के बाद के पैसे सही रास्ते वाले नहीं हैं। यानी जैसा चाहिए वैसा संतोष नहीं देते। इसके बजाय अच्छे काम में खर्च हो जाएँ तो शांति! वर्ना गटर में जाएगा।

### जन्म से ही लोभ नहीं

**प्रश्नकर्ता :** यह ज़रा आश्चर्य की बात है। वर्ना लोगों को ऐसा नहीं होता। जब हम कमा रहे होते हैं तब अपने घर के लिए ही सब करते हैं कि किस प्रकार ज़्यादा से ज़्यादा घर पर ले जाएँ, ज़्यादातर ऐसा ही होता है।

**दादाश्री :** मुझे बचपन से ही लोभ नहीं था।

**प्रश्नकर्ता :** तो क्या पूर्वजन्म का कोई फल मानना चाहिए?

**दादाश्री :** हाँ, वह पूर्वजन्म का। लेकिन शुरू से ही लोभ नहीं था। अहंकार बहुत भारी था। लोभ नहीं था, जबकि अहंकार बहुत भारी था।

### रोने की जगह नहीं चाहिए?

हमने वहाँ सोनगढ़ में बिज़नेस (व्यापार) शुरू किया था। हम लकड़ी खरीदते थे और (लकड़ी की) सॉ-मिल भी लगाई थी। वैसे तो कॉन्ट्रैक्टर का व्यापार तो बहुत अच्छा चलता था, बहुत पैसे मिलते थे लेकिन लोभ कि 'यहाँ से लूट लूँ, वहाँ से लूट लूँ' मुझ में वैसा लोभी स्वभाव मूल से ही नहीं था। हमारे पार्टनर को ऐसा (लोभ) बहुत था। और मुझे तो ऐसे, बाहर घूमना अच्छा लगता था इसलिए कभी वहाँ सॉ-मिल पर चक्कर लगा लेते थे। यानी वहाँ का हमारे 'ध्यान में' रहता और गाड़ी चलती रहती। व्यापार की कोई परवाह नहीं थी क्योंकि हमारे पार्टनर ने ही कह दिया था कि, 'पूरा कामकाज मैं ही कर लूँगा। आपको तो दो-तीन महीनों में एकाध बार आना है और सलाह देकर चले जाना है।' मेरी सलाह से दो-तीन महीनों तक

चलता रहता था! तो आप सब (शास्त्र) पढ़ लेना और खोज निकालना। आप आत्मा खोज निकालना।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा कहा था ?

**दादाश्री :** हाँ, यह सब तो हमेशा के लिए और दूसरा मित्र था वह आता था। वह कहता था, 'आप दोनों पार्टनरों को अभी कोई खास कमाई नहीं है। पहले थी, लेकिन अभी तो कोई कमाई नहीं दिखाई देती। लेकिन मेरा व्यापार अच्छा चल रहा है। आप अपना यह व्यापार भी चलने दो और मेरे साथ पार्टनरशिप कर लो।' वह मेरा मित्र था। उसके मन में ऐसा था कि, 'दादा, गाड़ी न लाएँ तो हमारी क्या इज़्जत रहेगी? हमारी कंपनी के व्यक्ति!' समझ में आया न? और जब घर आता तब कहता कि, 'आप मकान बदल लो। आप अब बंगले में आ जाओ। हमें इस गली में आपसे मिलने आने में भी शर्म आती है।' तब फिर मैंने कहा, 'यह बदल लूँगा न तो आपके रोने की जगह कहाँ से लाओगे? आप किसके वहाँ रोने जाओगे? यह तो, रोने की जगह है सारी। छिप जाने की जगह।' अड़चनें आएँ तो छिप जाने के लिए जगह चाहिए या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** चाहिए।

**दादाश्री :** वह मेरा मित्र था न, सन् 1943 में रो पड़ा था। वहाँ आकर वह रोया था। फिर 1953 में रोया था। दस साल अच्छे जाते और फिर दस साल खराब जाते। तब रोने की जगह कहाँ से लाएगा?

तब मेरा वह मित्र मुझे क्या कहता है? 'मेरा व्यापार है इसलिए आप पार्टनरशिप में (हिस्सेदारी में) रहिए। क्योंकि संचालन मेरा बहुत सुंदर। ऑर्गेनाइज़र (संचालक) के रूप में पाँच अरब का व्यापार हो तो कर सकते हैं। अन्य कुछ नहीं आता था। ऑर्गेनाइज़र कर सकते थे। दर्शन सब टॉप पर। इसलिए पार्टनर को ऑर्गेनाइज़र करके देते थे और उस हिसाब से वह चलता रहता था। हमें मेहनत नहीं करनी पड़ती थी।

तब फिर मेरे मित्र ने मुझसे कहा, 'बारह महीने में आपको मैं एक लाख रुपये दूँगा।' हमारे काम में उस समय कमाई कम थी। हम दोनों को मुश्किल से साल भर में हिस्से में पंद्रह हजार आते थे! वह लाख रुपये देता। 'पार्टनरशिप में बारह महीनों में लाख रुपये तो पक्के और आपको सिर्फ बैठे ही रहना है। गाड़ी भी दूँगा और अगर नुकसान हो तो मेरे हिस्से में। लेकिन अगर फायदा ज्यादा हो तो आपका हिस्सा और नुकसान हो तब भी आपको लाख रुपये ले ही लेने हैं।' मैंने कहा, 'लेकिन आपके साथ रहकर मेरी क्या दशा होगी? आपको तो हर साल रोने का चाहिए। आप तो फिर रोते हुए आओगे। आप तो रोने की आदत वाले हैं। मैं भी फिर रोने की आदत वाला हो जाऊँगा। भाई, मैं तो कभी रोया नहीं हूँ। मेरे लिए तो मेरे पार्टनर ही अच्छे हैं। हम दोनों आराम से रोटी-सब्जी खाएँ, ऐसे हैं। मुझे कोई लाख रुपये नहीं चाहिए। हमारा खर्चा चल रहा है। हम दिन भर भक्ति करते हैं। मैं ऐसे पार्टनर को छोड़कर क्यों तेरे साथ झंझट करने आऊँ? तेरा कुसंग मुझे लग जाए तो मैं पागल बन जाऊँ। रुपये तो देगा लेकिन ऐसा कुसंग लग जाएगा! कोई मुफ्त में हींग दे तो क्या कान में उसका फोहा डालें? मुफ्त में दे तो कान में फोहा नहीं डालना चाहिए? मुफ्त में मिले तो क्या ऐसा होता होगा?

### हम पर भी फौजदारी केस

हम पर किसी ने एक क्रिमिनल केस किया था। एलिफेन्टा में एक जेटी बनानी थी जिसका टेन्डर एलिफेन्टा गाँव में रहने वाले मूल निवासी को नहीं मिला, बाद में वह हम से मिला। अब उस व्यक्ति ने पूरा सामान तैयार करके रखा था। हमें ऐसी कोई जानकारी नहीं थी। उस व्यक्ति ने तो सारा सामान तैयार करके साइट पर रखा हुआ था। फिर वह आकर हमें और हमारे पार्टनर से क्या कहने लगा कि, 'यह पूरा सामान आपको लेना पड़ेगा।' तो हमने कहा, 'ले लेंगे।' जो बाजार भाव है और मुंबई से यहाँ लाने में जो खर्च हो, उससे दो रुपये ज्यादा देकर भी तुम्हारे पास से लेंगे।' अब ऐसा था, बहत्तर रुपये



खर्च हो सकता था, तो हमने पचहत्तर रुपये देने का विचार किया। तब उसने कहा, 'नहीं, सौ रुपये का भाव देना पड़ेगा।' यानी, 'देना पड़ेगा' इस शब्द ने हमें सोच में डाल दिया कि 'देना पड़ेगा' इस शब्द का क्या मतलब? यदि भगवान ऐसा कहते तो हम भगवान का भी विरोध करते। और जो ऐसा कहे वह भगवान नहीं है, वह हम जानते थे। खुद महावीर आए हों और यदि ऐसा कहें, तो हम समझ जाएँगे कि यह महावीर नहीं हो सकते। यानी, 'देना पड़ेगा' कहा, तब फिर हमने पूछा कि, 'भाई, तुम्हें क्या समस्या है?' उसने कहा कि, 'आपको यहाँ व्यापार करना है तो देना पड़ेगा।' तब हमने उसे कह दिया कि, 'हम तुम्हारा माल नहीं लेंगे। तब उस व्यक्ति ने क्या किया कि जहाँ से हम पत्थर निकालते थे वहीं से वह भी पत्थर निकालता था। क्योंकि ज्यादातर मालिकी उसकी थी और वास्तव में तो उसने गवर्नमेन्ट की मालिकी हड़प ली थी, और हड़प ली थी इसलिए गवर्नमेन्ट तो कोई छोड़ती नहीं लेकिन गवर्नमेन्ट को धोखा देकर काम करता था और पूरा लाभ उठाता था।

फिर उसने हम पर क्रिमिनल केस किया कि 'यह सब मेरी मालिकी में आता है, इसलिए इनकी सारी मशीनरी ज़ब्त कर लेनी चाहिए।' तब पूरी की पूरी मशीनरी सारी जप्त हो गई। फिर उसने कहा कि, 'मेरी मालिकी के बड़े-बड़े पत्थर थे, उसकी इन लोगों ने चोरी की है।' 'कितने रुपयों के?' तब कहा कि, 'पच्चीस रुपयों के'। हम, पार्टनर और दूसरे दो नौकर थे, इन चार लोगों को आरोपी बनाया, यानी उसने हम पर क्रिमिनल केस किया कि 'ये पच्चीस रुपये के पत्थर चुरा ले गए और ये मेरी मालिकी का है उसमें ये मशीन रखते हैं।' वे ज़ब्त में ले लीं। हमारे पार्टनर ऊपर गवर्नमेन्ट तक पहुँच कर वहाँ से अनुमति ले आए, इसलिए मशीनें तो छूट गईं।

और वह जो केस हुआ था, उसमें उसने फिर क्या किया? कि क्रिमिनल केस बनाकर हम आरोपियों पर वारन्ट निकलवाया और वह अनूबेलेबल। उसने हमें कमज़ोर करने के लिए ऐसा सब किया। अब

यह सब जो उसने किया उस के पीछे ताकत थी, समर्थन था। उस समर्थन में क्या था कि वह शराब का व्यापार करता था और वहाँ के सब ऑफिसर शराब पीते, माँसाहार करते थे। इसलिए वे सब उससे मिल गए थे। जिससे हमारा कुछ भी चल नहीं पाया। फिर हम समझ गए कि ये सब उसके तरफ ही हैं। हम कुछ करना चाहें फिर भी कुछ होगा नहीं। अब कोई बड़ा ऑफिसर सुने, लेकिन फिर भी, इन बड़े ऑफिसर को (रिपोर्ट) तो छोटे ऑफिसर को भेजना ही पड़ता था इसलिए वहाँ हमारा कुछ नहीं चल पाया।

इस केस में जब अनूबेलेबल वारन्ट निकला उस समय हम यहाँ मामा की पोल (बड़ौदा) में थे और हमारे पार्टनर वहाँ मुंबई में थे और एक-दो लड़के रत्नागिरी में थे। वे सब जगह वारन्ट लेकर गए, लेकिन पहले हमारा वारन्ट आया इसलिए पुलिस वाले यहाँ आए थे। तब अपने महात्मा और अन्य एक-दो लोग बैठे थे और सत्संग की बातें हो रही थीं। साल 1958-59 में। फौजदार और उसके सहायक ने तय किया था कि हमें कॉन्ट्रैक्टर के वहाँ जाना है इसलिए किसी से पूछा कि 'भाई, ये कॉन्ट्रैक्टर कहाँ रहते हैं?' लोगों ने बताया, 'इस मुहल्ले में रहते हैं और अच्छे आदमी हैं, इसलिए उनके वहाँ आप पुलिस की वर्दी में मत जाना। काम जो भी हो लेकिन आप पुलिस की वर्दी में मत जाना।' इसलिए वे लोग सादी ड्रेस में आए और मैं समझा कि ये सत्संगी आए हैं, इसलिए मैंने कहा, 'आइए, पधारिए', और मैंने सत्संग जारी रखा। तब उन लोगों को ऐसा लगा कि यह तो हम से भूल हो गई। यदि वर्दी पहनकर आते तो यह परेशानी नहीं होती। थोड़ी देर बाद फौजदार का धीरज छूट गया और मुझसे कहा कि 'आप पर वारन्ट है।' मुझे कागज़ दिया। मैंने कहा कि, 'यह करेक्ट बात है, बात सही है। आप थोड़ी देर बैठिए, आपको जल्दी तो नहीं है न? मैं चलता हूँ आपके साथ, लेकिन थोड़ी चाय लीजिए।' मैंने चाय-पानी के लिए कहा तो वे कहने लगे कि, 'नहीं, चाय नहीं पीएँगे।' तब मैंने कहा, 'नहीं, पहले चाय पीजिए, फिर हम चलते हैं।' उन लोगों ने चाय पी। फिर भी मैं तो सत्संग के ही मूड में था। उन

लोगों ने मेरे मूड में कोई चेन्ज नहीं देखा। इसलिए उनके मन में ऐसा हुआ कि इन्हें चेन्ज नहीं हो रहा इसलिए ज्यादा धमकी दो। ताकि ये डर जाएँ। फिर उन्होंने मूड बदलने के लिए मुझसे कहा कि, 'यह वारन्ट है लेकिन अनबेलेबल है।' तब मैंने कहा, 'मैं तो बड़ा भाग्यशाली कहलाऊँगा, मुझे बाँधकर ले जाइए ताकि मेरे पड़ोसियों को आनंद हो। उन्हें कभी आनंद नहीं होता। रोज़ तप करते हैं कि ये ज्ञानी बन बैठे हैं, बड़े ज्ञानी बनकर बैठे हैं।' तब मैंने फौज़दार से कहा कि, 'आप मुझे यहाँ से बाँधिए।' तब कहने लगे कि, 'नहीं बाँध सकते। आप हमारे साथ चलिए।' तब मैंने कहा कि, 'नहीं! बाँधिए। तब इन लोगों को आनंद होगा कि ओ हो हो, रोज़ बड़ी-बड़ी बातें करते थे, अब कैसे सीधे हो गए।'

फिर पुलिस रावपुरा गेट में ले गई। वहाँ बड़े फौज़दार थे वे मुझे पहचानते थे, दूसरी तरह से नहीं, इसलिए उन्होंने उस फौज़दार से कहा कि, 'इन्हें क्यों लेकर आए हो?' तब कहा कि, 'ये ही वे स्वामी हैं।' तब वह कहने लगा कि, 'ऐसा नहीं हो सकता।' तब कहा कि, 'नहीं, ये ही हैं।' तब बड़े फौज़दार ने कहा कि, 'ठीक है, भले ही अनबेलेबल वारन्ट हो, फिर भी मेरा ऑर्डर है, दो सौ रुपयों की ज़मानत पर छोड़ दो।' अब मेरे भानजे क्या कहने लगे कि, 'मगनभाई शंकरभाई को कहलवा दूँ, वर्ना सारी फज़ीहत कल अखबारों में छप जाएगी।' तब मैंने कहा, 'मत कहलवाना। हमें अखबार में छपवाने के रुपये देने पड़ते हैं। जबकि यहाँ तो बिना पैसों के मेरा नाम छपेगा, मैं तो धन्य मानूँगा। भले ही फज़ीहत छपे लेकिन सोचने वाले तो सोचेंगे या नहीं? जितने लोग पहचानते हैं वे तो सोचेंगे न? नहीं पहचानते उन्हें कुछ देर फज़ीहत होगी।' इसलिए मैंने कहा, 'जाने दो, कोई हर्ज नहीं है, मत कहलवाना।' इसलिए उन्होंने वैसे ही, अनिश्चित ही रखा और हम चार लोगों में से एक ने दो सौ रुपयों की ज़मानत दे दी। इसलिए यह काम निपट गया।

फिर मुझसे कहने लगे कि, 'आपको लाल किले में आना पड़ेगा।

दोपहर में आना। तब मैंने पूछा, 'वह कहाँ है?' तब हमारे साथ में एक भाई थे वे कहने लगे कि, 'मैं साथ में आऊँगा और मैं आपको लेने आऊँगा और दोनों साथ में जाएँगे। वहाँ, लाल किले में जो हो वह प्रक्रिया हम कर लेंगे।' फौजदार के कहे अनुसार हम दोपहर तीन बजे वहाँ पहुँचे। जहाँ एक प्रक्रिया करनी थी, वहाँ के व्यक्ति ने कहा कि, 'आरोपी को लाओ।' मैं गया तब मुझसे कहने लगे कि, 'आरोपी को लेकर आइए, आप यहाँ क्यों आए हैं?' मैंने कहा, 'वह आरोपी मैं ही हूँ।' तो उसने कहा, 'ऐसा हो ही नहीं सकता।' मैंने कहा, 'हुआ है न! हकीकत है न?' उन्हें भी बहुत विचित्र लगा यह सब, इसलिए फिर उन्होंने कहा, 'ठीक है, लेकिन मुझे तो शर्म आ रही है। आपका अँगूठा लगवाने में मुझे शर्म आ रही है।' मैंने कहा, 'नहीं, आप ऐसा बिल्कुल भी मत सोचना कि मैं जरा भी दुःखी हूँ। मुझे तो ऐसा लगा कि जैसे कोलिया की कौम में बाबरिया पहला नंबर लाया था वैसे हमारी पाटीदारों की कौम में मेरा पहला नंबर लगा है।' फिर हम घर लौट आए।

बाद में वह केस चला, तो करीब छः-सात महीनों तक चला। हम चारों वहाँ जाते क्योंकि फौजदारी केस था इसलिए और कोई बहाना चल ही नहीं सकता था। छुट्टी नहीं ले सकते थे। पहले दिन अटेन्ड किया। तब वकील रखा था, उस वकील को लिए बिना हम अंदर गए। मैजिस्ट्रेट साहब ने हमें अंदर बुलाया कहने लगे कि 'आप पर पच्चीस रुपयों की चोरी का आरोप है। यह कोई बड़ा आरोप नहीं है इसलिए इसे कबूल कर लो तो मैं आपको पच्चीस रुपयों का जुर्माना करके आपको मुक्त कर दूँ। मुझे तो यह सरल लगा। मैंने कहा कि यदि इससे हल आता हो तो ठीक है, यह भागदौड़ तो खत्म होगी। लेकिन बाहर वकील ने कहा कि, 'ऐसा नहीं चलेगा। आपकी कंपनी को ब्लैक लिस्ट में डाल देंगे।' तब मुझे लगा कि, 'अरेरेरे, ऐसा है यह सब? तो आपको क्या लगता है?' तब उसने कहा, 'नहीं, हमें तो केस लड़ना होगा। वह क्या कहता है? कंपनी ब्लैक लिस्ट में जाए, तो ऐसा तो हम नहीं कर सकते न! हमें ब्लैक लिस्ट पर कोई आपत्ति

नहीं थी, लेकिन फिर भी लोग तो कुदरती तौर पर कहते न कि, 'ऐसा क्यों किया, ऐसा नहीं होना चाहिए।' इसलिए हमने कहा, 'चलने दो' फिर मैजिस्ट्रेट साहब को हमने मना कर दिया। फिर तो वह केस चला। हमें जहाँ बैठना होता था न, आरोपियों के लिए बैठने की जगह होती थी न। वह आपने तो देखा भी नहीं होगा जबकि हमने तो अनुभव किया है। वहाँ हम, चारों लोग पूरे कपड़े पहने बैठे होते थे, बाकी सब तो इतनी सी धोती ही या पाँव में जूते नहीं, ऐसे आरोपियों के बीच हम चार, जैसे कोई बड़े प्रमुख न हों, वैसे! कितना ज्यादा रौब! वे सब दूर खिसक जाते! हम आते तब दूसरे आरोपी खिसक जाते।

तब फिर वह केस चला। धीरे-धीरे केस उसके विरुद्ध गया तब साहब ने उसे खास खबर दी और उसे सचेत कर दिया कि समाधान कर ले। तब वह कहता है कि, 'मेरे साथ तो ये कभी भी समाधान नहीं करेंगे। इसलिए साहब, आप करवा दो'। तब साहब ने हमें बुलाया। मैं नम्र स्वभाव वाला, इसलिए पहले मुझे बुलाया। हमारे पार्टनर तो बहुत कठोर। तो मुझे बुलाया, मुझे कहा कि, 'आप अच्छे इंसान हो, सज्जन होकर यह सब क्या? इस केस को निपटा दो न!' तब हमारे पार्टनर ने बाहर से कहलवाया। मैं अंदर गया तब उन्होंने क्या कहलवाया कि, 'इस केस में तो इन दादा की आबरू बिगाड़ी है। इनका तीन लाख का दावा और मेरा दो लाख का दावा तथा इन लड़कों का एक-एक लाख का दावा है। आबरू लेने के बदले में इतने दावे करने हैं। तब उस व्यक्ति को घबराहट हो गई। क्योंकि उसे कहा गया था कि केस उसके विरुद्ध जा रहा है। फिर तो तीन लाख के ये पचास हजार तो करेंगे ही या नहीं करेंगे? इस तरह हमारे पार्टनर ने उसे जुलाब दिया।

तब फिर मुझसे कहने लगा कि, 'आप ही इसका समाधान कीजिए। और कहें तो मैं इस केस को खत्म कर दूँ।' लेकिन हमारे पार्टनर ने मना किया तो मैंने अपने पार्टनर को समझाया कि, 'भाई, खत्म कर दो न!' तब कहने लगे कि 'नहीं, नहीं, अब तो उसका यही करना है'। मैंने कहा कि, 'ऐसी झंझट क्यों कर रहे हो?' उन्होंने कहा,

‘नहीं, इसे तो अब सबक सिखाएँगे ही।’ मैंने कहा, ‘हम कब तक सिखाते रहेंगे? कितने लोगों को हम सिखाते रहेंगे? इसके बजाय तो खुद ही सीख लो न?’ लेकिन वे नहीं माने। वे तो कहने लगे कि, ‘सीखाना ही है’। वे बहुत सख्त थे। फिर साहब ने उसे बहुत डाँटा तब फिर वह माफी माँगने आया। वह माफी माँगने आया तब मैंने पार्टनर से कहा कि, अब खत्म कर दो न, हमें रुपये नहीं चाहिए। देखो माफी माँग रहा है। हमारा पिछले जन्म का हिसाब था तो ऐसा हुआ। वर्ना क्या कभी ऐसी कोई चीज़ हो सकती है? पिछले जन्म का हिसाब था तभी ऐसा हुआ, वर्ना नए हिसाब से ऐसा नहीं हो सकता। अतः अपना हिसाब पूरा हुआ।’

### लेते समय भी उतना ही विवेक

**प्रश्नकर्ता :** किसी व्यक्ति को हमें रुपये लौटाने हों, हमने उसे दिए हों, वह हमें उससे वापस लेने हों, और वह नहीं दे तो उस समय हमें वापस लेने का प्रयत्न करना चाहिए या फिर हमारा कर्ज अदा हो गया, ऐसा मानकर, संतुष्ट होकर बैठ जाना है?

**दादाश्री :** ऐसा नहीं, यदि व्यक्ति अच्छा हो तो प्रयत्न करना, यदि कमज़ोर हो तो छोड़ देना।

**प्रश्नकर्ता :** प्रयत्न करना या फिर ऐसा कि वह हमें देने वाला होगा तो घर बैठे दे जाएगा और यदि नहीं दिया तो समझ लेना कि हमारा कर्ज चुक गया?

**दादाश्री :** नहीं, नहीं। इतना सब मत मानना। आपको स्वाभाविक रूप से प्रयत्न करने चाहिए। आपको उसे कहना चाहिए कि ‘हमें ज़रा पैसों की तंगी है, यदि आपके पास हों तो हमें लौटा देना।’ इस तरह से विनयपूर्वक, विवेक से कहना चाहिए और नहीं आएँ, तो फिर आप समझ लेना कि आपका कोई हिसाब होगा, जो चुक गया लेकिन यदि हम प्रयत्न ही नहीं करेंगे तो वह हमें मूर्ख समझेगा और वह उल्टे रास्ते पर जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् क्या उसके लिए सामान्य प्रयत्न करने चाहिए ?

**दादाश्री :** सामान्य यानी, उसे कहना है कि, 'भाई, हमें ज़रा पैसों की तंगी है, आपके पास हों तो ज़रा जल्दी लौटा दो तो अच्छा होगा।' लेने वाले में जितना विवेक होता है न, उतना ही विवेक हमें रखना चाहिए। हम से जैसे लेते समय वह जितना विवेक रखता है उतना ही विवेक हमें उसके पास से जैसे वापस लेते हुए रखना है। आपको अन्य कुछ याद रहता है, वह बहुत नुकसान करता है।

यह संसार तो पूरा पज़ल है। इसमें इंसान मार खा-खाकर मर जाता है। अनंत जन्मों से मार खाता रहा है और जब छूटने का समय आए, तब खुद छुटकारा नहीं कर लेता। फिर से छूटने का ऐसा अवसर नहीं आएगा न! और जो छूट चुका है, वही हमें छुड़वा सकता है, बंधा हुआ हमें क्या छुड़ाएगा? जो छूट चुके हैं, उनका महत्व है। आपको एक बार भी यदि ऐसा विचार आए कि 'वह जैसे नहीं लौटाएगा तो क्या होगा', तो फिर आपका मन निर्बल होता जाएगा। इसलिए आपको देने के बाद तय कर लेना है कि काली चिंदी में बाँधकर समुद्र में डाल दिए हैं, क्या फिर आशा रखनी चाहिए? यानी देने से पहले ही आशा रखे बिना देना, वर्ना देना ही मत।

### ऋण चुका के छूटे

ऐसा है न कि, हमने किसी से लिए-दिए हों, लेना-देना तो संसार में करना ही पड़ता है न! यानी कुछ लोगों को रुपये दिए हों और किसी से वापस न आएँ तो उसके लिए मन में क्लेश होता रहता है कि, 'वह कब देगा? कब देगा?' तो इसका कब अंत आएगा?

हमारे साथ भी ऐसा हुआ था न! हम पहले से ही ऐसी चिंता नहीं करते थे कि जैसे वापस नहीं आएँगे। लेकिन साधारण रूप से कहते थे, उनसे कहते ज़रूर थे। हमने एक व्यक्ति को पाँच सौ रुपये दिए थे। जो देते थे, उसे बहीखाते में लिखते नहीं थे, इसलिए कागज में दस्तखत नहीं होंगे न। फिर उस बात को साल, डेढ़ साल हुए होंगे।

मुझे भी कभी याद नहीं आया। एक दिन वे भाई मिल गए, मुझे याद आया। फिर मैंने कहा कि, 'वे पाँच सौ रुपये लौटा देना।' तब वह कहने लगा कि, 'कौन से पाँच सौ?' मैंने कहा कि, 'पहले मुझसे ले गए थे न, वे।' तब उसने कहा कि, 'आपने मुझे कब दिए थे? मैंने आपको रुपये, उधार दिए थे, क्या आप भूल गए?' तब मैं तुरंत समझ गया। फिर मैंने कहा कि, 'हाँ मुझे याद तो आ रहा है, इसलिए कल आकर ले जाना।' फिर अगले दिन रुपये दे दिए। वह व्यक्ति गला पकड़े कि, 'आप मेरे रुपये नहीं दे रहे हो', तो क्या करोगे? यह सही घटना है।

यानी ऐसे संसार का क्या कर सकते हैं? आपने किसी को दिए हों न, तो वे रुपये, काली चिंदी में बाँधकर समुद्र में डाल देने के बाद उसकी आशा रखना, उसके जैसी मूर्खता है। अगर आ जाएँ तो जमा कर लेना और उस दिन उसे चाय-पानी पिलाकर कहना कि, 'भाई, आपका उपकार मानता हूँ कि आप रुपये लौटाने आए, वरना इस काल में तो रुपये वापस नहीं आते। आपने लौटा दिए उसे आश्चर्य ही कहा जाएगा।' वह कहेगा कि, 'ब्याज नहीं मिलेगा।' तब कहना कि, 'मूल ले आए यही बहुत है न!' समझ में आ रहा है? ऐसी दुनिया है। जो लाया है, उसे वापस लौटाने का दुःख है, जिसने उधार दिए हैं, उसे वापस लेने का दुःख है। अब इसमें कौन सुखी है? और है 'व्यवस्थित!' नहीं लौटाता हो वह भी 'व्यवस्थित' है, और डबल लौटाए वह भी 'व्यवस्थित' है।

**प्रश्नकर्ता :** आपने वापस उसे और पाँच सौ क्यों दिए?

**दादाश्री :** फिर किसी जन्म में उस भाई के साथ हमारी मुलाकात न हो, इतनी जागृति रहेगी न कि यह तो भूल हो गई। वह कहे कि, 'मैं नहीं दे सकूँगा, तो छोड़ देना।' तब उससे निपट सकते हैं और अगले जन्म में मिले तो कोई हर्ज नहीं! लेकिन ऐसे व्यक्ति के तो किसी भी जन्म में दर्शन नहीं होने चाहिए। वह हमारी ज्ञाति को न छूए तो अच्छा है। हमारी ज्ञाति को कब तक छू सकता है कि वह



कहे कि, 'मेरे पास व्यवस्था नहीं है तो आप उधार माफ कर दो।' तभी तक हमारी ज्ञाति को छू सकता है, लेकिन यदि ऐसा बोले तब तो वह हम जैसों के नज़दीक भी नहीं आ सकता न! काम ही नहीं चलेगा न! हमारी जाति के साथ कोई लेना-देना ही नहीं है न! फिर से मिले ही नहीं तो अच्छा, फिर से उसके दर्शन ही न हों। वह समझता है कि, 'मैं जीत गया (लाभ मिल गया)।' हम कहते कि, 'तू फायदे में रहा और हमारी इच्छा थी, मेरा बड़ा हिसाब चुक गया न! तू फायदे में रह!' ऐसी क्वालिटी की बराबरी कैसे कर सकते हैं? अब इसे तो न्याय कहें या अन्याय? कोई कहेगा कि, 'आप न्याय करवाकर रुपये वापस ले लो।' मैंने कहा कि, 'नहीं, यह तो अब समझ में आया कि ऐसी भी क्वालिटी होती है। इसलिए ऐसी जाति से तो दूर, बहुत दूर ही रहो और ऐसों के साथ सही-गलत का न्याय करने जाने से तो तलवारे चलेंगी, ऐसा हो जाएगा।'

### समाधान किए, छूटने के लिए

लोगों को पता चला कि मेरे पास पैसे आए हैं, तो लोग मुझसे पैसे माँगने आए। तब फिर 1942 से 1944 तक मैं सब को देता ही रहा। फिर 1945 में मैंने तय किया कि अब हमें तो मोक्ष की ओर जाना है। अब हमारा इन लोगों के साथ कहाँ तक मेल बैठेगा? इसलिए मैंने ऐसा तय किया कि यदि पैसे की वसूली करेंगे तो ये फिर से रुपये उधार लेने आएँगे और फिर व्यवहार चलता रहेगा। वसूली करेंगे तो पाँच हजार लौटाकर फिर दस हजार लेने आएँगे। उसके बजाय ये पाँच हजार उनके पास रहेंगे तो उनके मन में रहेगा कि 'अब ये न मिलें तो अच्छा।' और फिर कभी रास्ते में मुझे देखते न, तो वे दूसरी ओर से चले जाते, तब मैं भी समझ जाता। यानी मैं छूट गया, मुझे इन सब को छोड़ना था और इन सब ने मुझे छोड़ दिया!

अब मैं उस टोले में क्यों शामिल हुआ था? मान खाने के लिए। भीतर में मान खाने का मोह भरा हुआ था इसलिए मान खाने के लिए गए, लेकिन अब निकलें कैसे? लेकिन मुझे यह रास्ता मिल गया।

जब-जब मेरे मन में हो कि इसमें से बाहर कैसे निकलें, उस घड़ी मुझे सूझ पड़ जाती थी। इसलिए मैंने तय किया कि ये पैसे माँगने नहीं हैं, कोई रास्ता निकल आएगा। ऐसा सुंदर अंत आ गया कि किसी का भी आना ही बंद हो गया। उनमें से दो-चार लोग आकर दे गए होंगे, फिर तो मैंने उन्हें रुबरु ही कह दिया कि, 'भाई, मैंने तो अब यह व्यवहार हीरा बा को सौंप दिया है। मैंने अपने पास कुछ नहीं रखा।' ऐसा कह दिया था। तब फिर झंझट ही मिट गई न! 'अब मेरे हाथ में कुछ नहीं, घर में मेरी सत्ता ही नहीं है', ऐसा कह दिया था।

### देना लेकिन गए, ऐसा समझकर

किसी को रुपये दिए हों, दो प्रतिशत ब्याज या डेढ़ प्रतिशत ब्याज या तीन प्रतिशत ब्याज की दर से, तो वह फिर लौटकर नहीं आएँगे, ऐसा समझकर देना। फिर जब वापस आएँ तो फायदा मान लेना। एक बार रुपये दे दिए फिर उसके लिए चिंता उपाधि नहीं करने हैं क्योंकि आपके हाथ में सत्ता ही नहीं है। इन लोगों के हाथ में एक पल की भी जीने की सत्ता नहीं है। किस सेकन्ड मर जाएँगे, इसका ठिकाना ही नहीं है और रुपयों की चिंता करते रहते हैं। अरे, क्या रुपयों की चिंता करनी चाहिए?

### जगत् व्यवहार, मात्र हिसाब

कितने लोग कहते हैं कि, 'हमने किसी को रुपये उधार दिए हैं, वे सब डूब जाएँगे।' नहीं, यह जगत् बिल्कुल ऐसा नहीं है। कितने कहेंगे, 'पैसे दिए तो डूबेंगे ही नहीं।' जगत् ऐसा भी नहीं है। जगत् खुद के हिसाब से ही है। आपका शुद्ध है तो कोई आपको परेशान नहीं करेगा, ऐसा है यह जगत्।

मन में ऐसा हो कि, 'कोई चोर पकड़ लेगा तो क्या होगा?' ऐसा कुछ हो जाएगा, ऐसा नहीं है और यदि पकड़े जाने वाले हैं उन्हें कोई छोड़ने वाला भी नहीं है। तो फिर किसलिए डरना? जो हिसाब होगा वह चुक जाएगा और उसका हिसाब नहीं होगा तो कोई कुछ

परेशान करने वाला नहीं है। अब इसमें निडर भी नहीं हो जाना है कि कौन परेशान कर सकता है? ऐसा तो बोलना ही नहीं चाहिए। वह तो किसी को चुनौती देना कहा जाएगा। बाकी, मन में डरना नहीं, डरने जैसा यह जगत् नहीं है।

अपनी तीन हजार की घड़ी हो और फोर्ट एरिया में गिर जाए, फोर्ट एरिया यानी महासागर कहा जाएगा। उस महासागर में गिरा हुआ वापस मिलने वाला नहीं है। हम आशा भी नहीं रखेंगे। लेकिन तीन दिन बाद अखबार में विज्ञापन आए कि यह घड़ी जिसकी हो, वह इसका सबूत और खबर छपाने का खर्च देकर ले जाए। यानी ऐसा है यह जगत्, एकदम न्यायस्वरूप! आपको रुपये नहीं लौटाए, वह भी न्याय है और लौटा दे वह भी न्याय है। यह पूरा हिसाब मैंने बहुत सालों पहले ही निकाल लिया था, इसलिए यदि रुपये नहीं लौटाए तो इसमें किसी का दोष नहीं है। इसी तरह लौटाने आए तो उसका उपकार कैसा? इस जगत् का संचालन तो अलग तरह से है!

### वह है कुदरत का न्याय

न्याय ढूँढने मत जाना। न्याय ढूँढने जाओगे तो कोर्ट में जाना पड़ेगा, वकील रखना पड़ेगा। हुआ वही 'करेक्ट', मानकर अब फिर वकील मत रखना।

वह तो हमारे न्याय से है। यह सच या झूठ नैचुरल न्याय से होना चाहिए। नैचुरल न्याय क्या कहता है? जो हुआ वह करेक्ट, जो हुआ वही न्याय। यदि आपको मोक्ष जाना है तो जो हुआ उसे न्याय समझना और यदि तुम्हें भटकना हो तो कोर्ट के न्याय से निपटारा लाना। कुदरत क्या कहती है? हुआ वही न्याय है, ऐसा आप समझो, तो आप निर्विकल्प होते जाओगे और कोर्ट के न्याय से यदि ऐसा करोगे तो विकल्पी होते जाओगे।

### वसूली की अनोखी रीत

संक्षिप्त बात। जो हुआ सो न्याय है। दूसरा न्याय मत ढूँढना।

जगत् का स्वभाव कैसा है? न्याय ढूँढता है, 'मैंने उसे सौ रुपये दिए थे और ज़रूरत पड़ने पर मैंने पाँच रुपये माँगे तो भी नहीं देता'। अरे, नहीं देता वही न्याय है। हम उसे अन्याय कैसे कह सकते हैं?

बुद्धि तो घमासान मचा देती है। बुद्धि ही सब बिगाड़ती है न। बुद्धि यानी क्या? जो न्याय ढूँढे वह कहलाती है बुद्धि। कहेगी, 'किस कारण पैसे नहीं देगा? सामान ले गया है न?' यह 'किस कारण' पूछा वह बुद्धि। अन्याय किया, वही न्याय है। हमें तो वसूली करते रहना है। कहना कि, 'हमें पैसों की बहुत ज़रूरत है और मुश्किलें भी हैं।' फिर लौट आना। लेकिन वह 'किस कारण नहीं देगा' कहा तो फिर वकील ढूँढने जाना पड़ेगा। सत्संग चूक कर वहाँ बैठेंगे फिर!

जो हुआ सो 'व्यवस्थित' कहना! जो हुआ सो न्याय कहना तो बुद्धि चली जाएगी। जो होता है वह 'न्याय' है, फिर भी व्यवहार में तो हमें पैसों की वसूली के लिए जाना ही पड़ेगा। तो उस श्रद्धा के कारण हमारा दिमाग़ खराब नहीं होगा। उस पर चिढ़ेगा नहीं और हमें बेचैनी भी नहीं होगी। जैसे नाटक कर रहे हों न, वैसे वहाँ बैठना, कहना कि, 'मैं तो चार बार आया लेकिन आप नहीं मिले। इस बार शायद आपका पुण्य है या मेरा पुण्य, जिससे कि हम मिल गएँ।' ऐसे मज़ाक करते-करते वसूली करना। 'आप तो आनंद में हो न, मैं तो बहुत मुश्किलों में फँसा हूँ।' वह पूछे कि, 'आपको कौन सी मुश्किल है?' तब कहना कि, 'मेरी मुश्किलें तो मैं ही जानता हूँ। न हो तो मुझे किसी से दिलवाओ।' ऐसे इधर-उधर की बातें करके काम निकालना। लोग तो अहंकारी हैं इसलिए अपना काम हो जाएगा। अहंकारी न होते तो कुछ नहीं हो पाता। अहंकारी को उसका अहंकार ज़रा ऊपर चढ़ाएँ न, तो सारा काम कर देता है। 'पाँच-दस हजार दिलवा दो' कहेंगे तो भी, 'हाँ, दिलवाता हूँ।' यानी झगड़ा नहीं होना चाहिए। राग-द्वेष नहीं होना चाहिए। सौ धक्के खाएँ और न दे, तो कुछ नहीं। 'हुआ सो न्याय' कह देना। निरंतर न्याय ही! क्या आपकी अकेले की वसूली है?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं-नहीं! सभी व्यापार वालों की है।

**दादाश्री :** पूरा जगत् महारानी से नहीं फँसा है। उगाही से फँसा है। कोई मुझे कहता है कि, 'मेरी उगाही दस लाख की है, वह नहीं आ रही है। पहले उगाही आती थी।' फायदे में थे तब कोई मुझे कहने नहीं आता था, अब कहने आते हैं।

उगाही शब्द आपने सुना है क्या? वह किसकी रानी है।

**प्रश्नकर्ता :** कोई हमें बुरे शब्द सुना जाता है वह 'वसूली' ही है न!

**दादाश्री :** हाँ, वसूली ही है न! वह सुनाता है तो अच्छी तरह सुनाता है। डिक्शनरी में न हों, वैसा शब्द भी बोलता है। फिर हम डिक्शनरी में खोजें कि यह शब्द कहाँ से आया? उसमें वह शब्द नहीं होता। ऐसे सिर फिरे होते हैं। लेकिन वह खुद की जोखिमदारी पर बोलते हैं। उसमें हमारी जोखिमदारी नहीं है न, उतना अच्छा है!

न्याय खोजते खोजते तो दम निकल गया है। इंसान के मन में ऐसा होता है कि मैंने क्या बिगाड़ा है जो यह मेरा बिगाड़ रहा है।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा लगता है कि, हम किसी का बुरा नहीं करते फिर भी लोग हमें क्यों डंडे मारते हैं?

**दादाश्री :** तभी तो इन कोर्टों का, वकीलों का, सब का चलता है! ऐसा न हो तो कोर्टों व वकीलों का काम कैसे चलेगा? वकीलों का कोई ग्राहक ही नहीं बनेगा न! लेकिन वकील भी कैसे पुण्यशाली हैं जो मुक्किल भी सुबह उठकर जल्दी आ जाते हैं, जबकि वकील साहब हजामत बना रहे होते हैं! वह बैठा रहता है थोड़ी देर। साहब को घर बैठे रुपये देने आते हैं। साहब पुण्यशाली हैं न! नोटिस लिखवा जाते हैं और पचास रुपये देते हैं।

**करनी थी वसूली और हो गया दान**

मैं तो किसी पर दावा नहीं करता था। लेकिन मैंने मेरी भाभी

से कह दिया था कि, दावे वाली जो रकम थी न, उसे आप ही वसूली कर लेना, मुझे यह रकम नहीं चाहिए। तब मुझे कहा कि, 'आप वसूली करने तो जाना।' मैंने कहा कि, 'मैं वसूली करने जाऊँगा तब उस बेचारे पर ज़ब्ती लगी थी उसकी पत्नी ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, 'यह ज़ब्ती लगी हुई है, दस-पंद्रह रुपये भी नहीं हैं तो दीजिए न, वह मैं देकर आया। यानी ऐसा ही चलता रहता था।

### धर्म करते हुए डाका

तब मेरी उम्र 45 वर्ष थी, तब ज्ञान नहीं हुआ था। उस समय एक तीस साल का फौज़दार था, जो मुसलमान था।

हुआ ऐसा कि, 'हमारा लोहे का कारखाना था, 'बिटको इंजीनियरिंग कंपनी'। उस कारखाने में हमारे गाँव का एक व्यक्ति था उसने मुझसे कहा, 'मुझे कारखाने में लोहे की चादरें रखनी हैं। मेरे पास अभी ले जाने के लिए साधन नहीं है।' मैंने कहा, 'यह कहाँ से लाए हो?' तो उसने कहा, 'कंट्रोल से लाया हूँ।' तब मैंने अपने पार्टनर को चिट्ठी लिखकर दी कि इस बेचारे को लोहे की चादरें रखने देना। छः बक्से चादरें थी, एक-एक बक्से में छः-छः नग होते थे। सात-आठ नग के भी होते थे। फिर छः महीने-बारह महीने हो गए लेकिन वह लेने नहीं आया। फिर उसका पत्र आया, बाद में खुद आया और कहने लगा कि, 'आज मैं गाड़ी लेकर लेने आया हूँ।' पर उससे पहले हमारे यहाँ सरकारी अफसर आ गए थे। उन्होंने पूछा कि, 'आपके यहाँ ये लोहे की चादरें, कहाँ से लाए हो? मैंने कहा, 'दूसरे की हैं, हमारे यहाँ तो सिर्फ रखा है।' तब अफसर कहने लगा कि, 'ये कंट्रोल की हैं, कहाँ से लाए? इन्हें हम ज़ब्त करते हैं।' मैंने कहा, 'कर लो ज़ब्त, मुझे क्या?' अब वे लोग आए, कहा, 'हम उनको परमिट दिखाकर आए हैं, अब हमें माल लेने दो।' मैंने कहा, 'यह झगड़ा हुआ था, वे लोग परमिट माँग रहे थे।' तब उसने कहा, 'वह तो हम दिखा आए हैं, अब हमें माल लेने दो।' मैंने कहा, 'हाँ, ले लो' और हमारे पार्टनर ने माल लेने दिया।

बाद में वे सरकारी अफसर आए, वे हम से कहने लगे कि 'आपने माल बेच दिया?' अरे भाई, हम तो बेचते ही नहीं हैं, हम जानते ही नहीं हैं। यह तो, वह व्यक्ति ले गया। तब उन्होंने कहा, 'लेकिन हमने तो आपको मना किया था न? वह तो ज़ब्त किया हुआ है न? वह सरकारी माल है। वह कैसे बेच सकते हो? आप कैसे दे सकते हो?' मैंने कहा, 'भाई, वे तो परमिट दिखाकर ले गए!' तब उन्होंने कहा, 'उसने झूठ कहा है, उसने तो आपको फँसा दिया।' तब मैंने कहा, भादरण में इस नाम का है, उन्हें जानकारी दी। उन लोगों ने वहाँ तलाश की। तहसीलदार ने उन लोगों को बहुत डाँटा। तब वे कहने लगे कि, 'हम लाए ही नहीं हैं न!' तब तहसीलदार ने यहाँ कहलवाया इसलिए फिर वे सरकारी लोग कहने लगे कि, 'इन लोगों ने वह माल बेच दिया!'

इसलिए फिर हमारे नाम पर वारंट निकाला। प्रमुख पार्टनर होने के कारण अंबालाल मूलजी भाई पटेल के यहाँ पुलिस वाले आए। मैं अंदर बैठा था। पुलिस वाले कहने लगे कि, 'क्या अंबालाल मूलजी भाई पटेल हैं?' मैंने कहा, 'हाँ, मैं हूँ।' शाम के साढ़े पाँच बजे थे। मैं तो उनके साथ गया, तब वहाँ थानेदार बैठे थे, कम उम्र के, तीस साल के थे। मैंने पूछा, 'क्या नाम है आपका?' तब उन्होंने कहा, 'अहमद मियाँ।' वे मुझसे कहने लगे कि, 'आप कैसे फँस गए?' मैंने उनसे कहा, 'आपको कैसे पता चला कि मैं फँस गया हूँ?' तब वे कहने लगे कि, 'क्या हम आपको नहीं पहचानेंगे? बिल्ली को चूहे की गंध आती है कि नहीं?' 'आती है।' 'वैसे ही हमें चोर की गंध आती है।' उन्होंने ऐसा कहा। 'आपने चोरी नहीं की है। आपने चोरी की होती तो हमें गंध आ जाती कि इस आदमी ने चोरी की है!' मैंने कहा, 'लेकिन साहब, हम तो फँस गए हैं, अब क्या हो सकता है?' तब उसने कहा कि, 'आप थोड़ी देर बैठिए, मैं नमाज़ पढ़कर आता हूँ।' वे फिर नमाज़ पढ़कर आए। उन्होंने चाय मंगवाई। मैं चाय के पैसे देने लगा तो वे कहने लगे कि, 'आपको नहीं देना है।' मैंने कहा, 'साहब, काम मेरा है और बल्कि मुझे चाय पिला रहे हैं?' फिर वे

मुझसे कहने लगे, 'आप फँस गए हैं, ऐसा मुझे लगा, इसलिए अब कोई रास्ता ढूँढता हूँ।' आप रास्ता निकाल रहे हैं? तब वे कहने लगे कि 'आप सिटी तहसीलदार को खबर दो कि वह थानेदार के पास से यह लावारिस सामान मँगवा ले। तो फिर सारा केस उनके पास जाएगा और आपका यह फौजदारी गुनाह खत्म हो जाएगा।' मियाँ भाई से मैंने पूछा कि, 'आपको यह कैसे पता चला कि मैं चोर नहीं हूँ?' किसी ने मेरी जेब में अँगूठी डाल दी होती तो आप क्या करते?' तब वे कहने लगे कि, 'हम तुरंत समझ जाते हैं कि आपने चोरी नहीं की है। यह किसी ने डाल दी है। चूहे-बिल्ली जैसा, गंध आ जाती है। डाकू की आँखें नहीं पहचानते लोग? इसकी आँखें डाकू जैसी हैं, इसकी आँखें चारित्र्य में फेल हैं, क्या ऐसा नहीं पहचानते?' हमारी आँखों में वीतरागता दिखती है। सब देखते हैं न कि किसी पर राग भी नहीं होता और द्वेष भी नहीं होता।

**प्रश्नकर्ता :** फिर आगे क्या हुआ?

**दादाश्री :** फिर मैं घर आ गया। वहाँ एक भाई, अंबु भाई पाठक आए हुए थे। उन्होंने डिप्लोमा किया था और मेरे पास कॉन्ट्रैक्ट की लाइन का अनुभव सीखते थे। इसलिए वह रोज आता था। वह आकर बैठा था। मैंने उनसे कहा कि, 'कैसे हो पाठक? कब से आए हो?' उसने मुझसे पूछा कि, 'आप कहाँ गए थे?' मैंने बताया कि, 'ऐसे फँस गया था, तो वहाँ गया था। अब यहाँ सिटी तहसीलदार के यहाँ जाना पड़ेगा।' तब पाठक ने मुझसे कहा कि, 'मेरे चाचा परसों ही नवसारी से यहाँ सिटी तहसीलदार बनकर आए हैं। आपको क्या काम है?' मैंने बताया कि 'ऐसा काम है।' तब वह कहने लगा कि, 'आपका यह काम तो कर दूँगा!' मैंने कहा, 'यह तो बहुत घोटाले का काम है, मुझे खुद आने दो।' तब उसने कहा, 'चाहे जैसा घोटाले वाला काम हो, तो भी मैं चाचा से कह दूँगा।' और उसने तो चाचा से कह दिया कि, 'कोई रास्ता निकालिए! जितने भी, हज़ार-बारह सौ भरने होंगे, भर दूँगा।' तब उसके चाचा ने कहा, 'चार आने भी नहीं!' और उन्होंने केस ही निकाल दिया! उन्हें सब आता था।



यह तो हमारा गुनाह था ही नहीं और ऐसा अहंकार किया कि, 'लो, हमारे कारखाने में लोहे की चादरें रख दो। कोई हर्ज नहीं है।' इसके कारण ये धक्के खाने पड़े। कोई नीयत खराब नहीं थी।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, कोई हमारे पास ऐसी हेल्प माँगने आए कि, 'भाई, हमें हेल्प करो और ये चादरें रखने दो', तो उसे रखने दें या नहीं?

**दादाश्री :** अरे, रखने दोगे तो बम रखकर जाएँगे, आजकल तो! मुझे भी लोग कहते हैं कि, 'बम रख जाएँगे', लेकिन मैंने कहा, 'भाई, अब रख जाँ, तो उसका क्या हो सकता है? जो होगा वही सही!' अंत में तो यदि कर्म का उदय होगा तभी रख पाएगा न! यह दुनिया न्याय में है या अन्याय में?

**प्रश्नकर्ता :** न्याय में।

**दादाश्री :** इसलिए घबराना नहीं है और रखने देना है, ऐसा भी निश्चय मत करना और नहीं रखने देना है ऐसा भी निश्चय मत करना। वैसा निश्चय करोगे तो इस तरफ नुकसान होगा और यह निश्चय करोगे तो उस तरफ नुकसान होगा! बीच में मोक्षमार्ग है!

### वसूली, सहज प्रयत्न से

सारा व्यापार आप ही चलाते हो?

**प्रश्नकर्ता :** जी, हाँ।

**दादाश्री :** हाँ, आपको कोई मुश्किल नहीं आती?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, ऐसा कुछ नहीं आता।

**दादाश्री :** बहुत मजा आता है न? यह भी पुण्य ही है न, कोई मुश्किल नहीं!

तभी तो हम कहते हैं कि अपने पुण्य का खाओ। पुण्य किसे

कहते हैं? घर पर सुबह साढ़े पाँच बजे आकर कोई उठाए कि, 'भाई, अभी बंगला बनाना है और उसका कॉन्ट्रैक्ट आपको देना है!' ऐसा 'व्यवस्थित' है! देखो मालिक भागदौड़ न करे फिर भी 'व्यवस्थित' मालिक को उठाने आता है और मालिक बंगला बनाने के लिए भागदौड़ करे, तो 'व्यवस्थित' क्या कहेगा, 'बाद में होगा!'

इस 'व्यवस्थित' के बाहर कुछ भी नहीं हो सकता। फिर भी हमें 'व्यवस्थित' का अर्थ ऐसा नहीं करना चाहिए कि हम सोते रहें, सब हो जाएगा। यदि 'व्यवस्थित' कहना हो तो आपका प्रयत्न होना चाहिए। फिर भी प्रयत्न तो जितना 'व्यवस्थित' करवाए उतना ही करना होता है। लेकिन आपकी इच्छा क्या होनी चाहिए? प्रयत्न करने की। फिर 'व्यवस्थित' जितना करवाए उतना प्रयत्न। प्रयत्न में फिर दस बजे से वसूली के लिए निकल पड़ें। वे भाई नहीं मिले तो फिर बारह बजे गए, तब भी न मिले तो घर लौटकर फिर डेढ़ बजे वापस जाएँ, ऐसा नहीं करना। प्रयत्न यानी एक बार चले जाना, फिर बाद में विचार नहीं करना है। ये तो प्रयत्न करते हुए कितने धक्के खाते रहते हैं। प्रयत्न तो सहज होना चाहिए। सहज प्रयत्न किसे कहेंगे कि जिसे हम खोजते हों वही सामने मिले। यों उसके घर जाएँ तो नहीं मिलता, लेकिन वापस लौटते समय हमें वह मिल जाए। हमारा सब सहज प्रयत्न से होता है। सहज रूप से पूरा हिसाब तैयार ही होता है क्योंकि हमारी किसी तरह की दखल ही नहीं है न!

### तो घर बैठे वसूली मिले

वास्तव में तो ऐसा है कि आपका सोचा हुआ बेकार नहीं जाता। आपका बोला हुआ बेकार नहीं जाता। आपका वर्तन बेकार नहीं जाता। अभी तो लोगों का कैसा होता है? कुछ फलता ही नहीं। वाणी, विचार या वर्तन, कुछ भी फलीभूत नहीं होता। तीन-तीन बार चक्कर लगाते हैं, फिर भी वसूली वाला नहीं मिलता और कभी मिल जाए तो वह चिढ़कर बोलता है। वैसे तो क्या है कि यह मार्ग ऐसा है कि घर बैठे पैसे लौटाने आते हैं। पाँच-सात बार वसूली करने गए हों तो अंत में

वह कहेगा कि 'महीने बाद आना', उस समय यदि आपके भाव न बदलें तो घर बैठे पैसे आएँगे। लेकिन आपके भाव बदल जाते हैं न? 'ये तो बेअक्ल हैं। नालायक व्यक्ति हैं, चक्कर लगाना बेकार गया।' यों भाव बिगड़ जाते हैं। फिर से आप जाओगे तो वह गालियाँ देगा। आपके भाव बदल जाते हैं, इसलिए सामने वाला न बिगड़ता हो तो भी बिगड़ जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** इसका अर्थ यह हुआ कि हम ही सामने वाले को बिगाड़ते हैं ?

**दादाश्री :** हमने ही अपना सब बिगाड़ा है। हमें जितनी भी रुकावटें हैं, वह सब हमने ही बिगाड़ा है। उसे सुधारने का रास्ता क्या है? सामने वाला कितना भी दुःख दे लेकिन उसके लिए ज़रा सा भी उल्टा विचार न आए। यही उसे सुधारने का रास्ता है। इससे हमारा भी सुधरेगा और उसका भी सुधरेगा। संसार के लोगों को उल्टे विचार आए बिना नहीं रहते। तभी तो हमने समभाव से *निकाल* करने को कहा है, फिर वह करता है। समभाव से *निकाल* यानी क्या कि उसके लिए कुछ सोचना ही नहीं है।

### और वह भूत लिपट जाता है

और वसूली में कोई व्यक्ति न लौटा रहा हो, उसके पास न हो और नहीं लौटाता, तब फिर अंत तक उसके पीछे नहीं पड़ना है। वह बैर बाँधेगा! और यदि वह भूत योनि में जाएगा तो हमें परेशान कर देगा। उसके पास नहीं हैं इसलिए नहीं दे रहा। उसमें उस बेचारे की क्या गलती है? लोग तो होने पर भी नहीं लौटाते हैं न?

**प्रश्नकर्ता :** हों फिर भी न लौटाते हो तब क्या करें?

**दादाश्री :** हों फिर भी न लौटाए, तो उसका भी हम क्या कर सकते हैं? ज़्यादा से ज़्यादा हम दावा कर सकते हैं! और क्या? उसे मारेंगे तो पुलिस वाले हमें पकड़कर ले जाएँगे न?

वर्ना छोड़ दो कि भाई! होंगे तो आएँगे, नहीं आए तो गए। तब इस वकील के भूत को तो घर में नहीं लाना पड़ेगा न!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन हम से छूट नहीं पाता। सामने वाला इस तरह बदल जाता है कि हमें छोड़ देने का मन ही नहीं होता।

**दादाश्री :** मन न होता तब फिर वकील का भूत घर में लाता है, और वकील कहेगा कि, 'हं, साढ़े नौ कहा था, तो पंद्रह मिनट देर हुई? बेअक्ल हो, गधे हो! कुत्ते हो'। अरे मूरख, हमें फीस देनी और ऊपर से वह गालियाँ दे!

यानी आपको घबराना नहीं है और उस समय आपको वकील से क्या कहना चाहिए कि, 'साहब, हमारी और आपकी कन्डिशन फीस की है। मैं आपको फीस दूँगा और आप दावा लड़ो। दूसरी कोई गालियों की कन्डिशन नहीं है। यह जो एक्स्ट्रा आइटम कर रहे हो उसके लिए मैं दावा दायर करूँगा', ऐसा कहना, एक्स्ट्रा आइटम कहलाता है।

**प्रश्नकर्ता :** नहीं जाएँ, वही ज़्यादा अच्छा है।

**दादाश्री :** कोर्ट में नहीं जाएँ, वही उत्तम है। जो समझदार व्यक्ति होगा, वह कोर्ट नहीं जाएगा। मेरा होगा तो आएगा, नहीं आया तो गया। लेकिन ऐसे भूत को फिर नहीं बुलाएगा। बिना बात के भूत परेशान करता रहता है। जब जीतना होगा तब जीतेंगे लेकिन उससे पहले तो, 'बेअक्ल हो, गधे!' कहेगा। वह अक्ल का बोरा! और यह व्यक्ति! गधा नहीं है! सभी जगह ऐसा बोलना चाहिए? अपने वहाँ वे भक्त हैं न, वकील, वे कहते हैं, 'हम भी ऐसा बोलते हैं'। अरे, वे किस तरह के लुच्चे लोग हैं? यह तो अच्छा है कि बेचारे लोग सीधे हैं इसलिए सुन लेते हैं, वर्ना आपको जूता मारे तो क्या करोगे?

हमारे पार्टनर एक वकील के वहाँ गए थे। वे पैसे दे आए थे लेकिन उनका केस जल्दी चल नहीं रहा था। उन्होंने कहा, 'साहब, मेरे पैसे वापस मत देना लेकिन मेरा केस वापस दे दीजिए। तब उसने क्या कहा कि, 'यदि फिर से आए तो कुत्ते से कटवाऊँगा।' तब क्या

किया जाए? उसके बाद बड़ी मुश्किल से केस वापस ले आए। उनसे पैसे वापस नहीं लिए। बड़ी मुश्किल से समझा-बुझाकर केस वापस ले आए। फिर दूसरे वकील को केस दिया। वे जैन थे और बड़े प्रखर थे, उन्हें केस दे आए। वहाँ नौ के बजाय सवा नौ हुए तब वकील बोले, 'तुम कुत्ते जैसे हो, गधे जैसे हो, मेरा टाइम बिगाड़ा।' तब इन भाई ने कहा कि, 'आप जैन होकर ऐसा बोलते हो तो अन्य लोग क्या बोलेंगे? दूसरी जाति के लोग क्या बोलेंगे? क्या ऐसी शर्त है?' वकील बोले कि, 'आपने मुझे जगा दिया, आपने मुझे जगा दिया। जैन होकर मुझे ऐसा नहीं बोलना चाहिए, लेकिन मुझसे ऐसा बोल दिया जाता है।' हमारे पार्टनर ने कहा कि, 'जैन होकर आप ये क्या बोलते हो? जैन के ऐसे लक्षण होते हैं? जैन तो कितनी समझदारी वाली वाणी बोलते हैं? ऐसे लक्षण होते हैं? वैष्णवों के ऐसे लक्षण होते हैं? ऐसे काटने दौड़ते हैं?' यह तो, पत्नी के साथ झगड़ा हो गया उसका गुस्सा मुझ पर क्यों निकाल रहे हो? लड़ाई पत्नी से और गुस्सा हम पर निकालते हैं!

**प्रश्नकर्ता :** 'इस तरह व्यवहार करने पर मुक्किल हमें सही हकीकत नहीं बताते और हम कोर्ट में मर जाते हैं', कभी ऐसा कहते हैं।

**दादाश्री :** वे बहाने बनाते हैं!

### फिर वसूल करवाती है कुदरत

आपसे कोई रुपये ले गया और तीन-चार साल बीत जाएँ, तब आपकी रकम शायद कोर्ट के कानून से बाहर हो जाए, लेकिन नेचर का कानून तो कोई नहीं तोड़ सकता न! नेचर के कानून में रकम ब्याज सहित वापस आती है। यहाँ के कानून से कुछ नहीं मिलेगा, यह तो सामाजिक कानून है। लेकिन उस कुदरत के कानून में तो ब्याज सहित मिलता है। इसलिए यदि कभी कोई हमारे तीन सौ रुपये न लौटा रहा हो तो हमें उनसे लेने जाना चाहिए। वापस लेने का कारण

क्या है? वह भाई रकम ही नहीं लौटाता तब कुदरत का ब्याज तो कितना अधिक होता है। सौ-दो सौ साल में तो कितनी रकम हो जाएगी? इसलिए हमें वसूली करके उनसे वापस ले लेने चाहिए। जिससे बेचारे को उतना भारी जोखिम न उठाना पड़े। लेकिन यदि वह न लौटाए और जोखिम मोल ले तो उसके जिम्मेदार हम नहीं हैं।

**प्रश्नकर्ता :** कुदरत की ब्याज दर क्या है?

**दादाश्री :** नैचुरल इन्टरेस्ट इज़ वन परसेन्ट, हर बारह महीने पर। अर्थात् सौ रुपये पर एक रुपया! अगर वह तीन सौ रुपये न लौटाए तो हर्ज नहीं है। आप कहना, हम दोनों दोस्त! हमें साथ में ताश खेलनी चाहिए क्योंकि आपकी रकम कहीं नहीं जानी है न! यह नेचर इतना ज्यादा करेक्ट है कि यदि आपका एक बाल भी चुराया होगा, फिर भी वह कहीं जाएगा नहीं। नेचर बिल्कुल करेक्ट है। परमाणु तक का करेक्ट है। अतः इस संसार में वकील करने जैसा है ही नहीं। मुझे चोर मिलेगा, लुटेरा मिलेगा ऐसा भय भी रखने जैसा नहीं है। यह तो पेपर में छपता है कि आज फलाँ को गाड़ी से उतारकर गहने लूट लिए, फलाँ को गाड़ी में मारा और पैसे ले लिए। 'तो अब सोना पहनना चाहिए या नहीं?' डोन्ट वरी! करोड़ रुपयों के रत्न पहनकर घूमोगे, फिर भी आपको कोई छू नहीं सकता। ऐसा है यह जगत्। और वह बिल्कुल करेक्ट है। यदि आपकी जोखिमदारी होगी तभी आपको छू सकेगा इसलिए हम कहते हैं कि आपका ऊपरी कोई बाप भी नहीं है इसलिए 'डोन्ट वरी!' (चिंता मत करना) निर्भय हो जाओ।

**और ऐसे हिसाब चुकाते हैं**

**प्रश्नकर्ता :** हमने किसी व्यक्ति को पाँच सौ रुपये दिए हों और वह रुपये वापस न कर पाया हो और दूसरी ओर हमने पाँच सौ रुपयों का दान दिया हो, तो इन दोनों में क्या फर्क है?

**दादाश्री :** दान करना एक अलग बात है। उसमें दान लेता है वह देनदार नहीं बनता। आपके दान का बदला आपको दूसरी तरह से

मिलता है। दान लेने वाला व्यक्ति बदला नहीं चुकाता। जबकि उस केस में तो आप जिससे रुपये माँगते हो उससे ही आपको वापस लेना पड़ता है। फिर अंत में दहेज के रूप में भी वह रुपये देगा। हम नहीं कहते कि लड़का है तो गरीब परिवार का लेकिन परिवार खानदानी है इसलिए पचास हजार उसे दहेज में दो! ये दहेज किसलिए देते हैं? यहाँ तो जो माँगने वाला है उसे ही दे रहे हैं। यानी ऐसा हिसाब है सारा। एक तो लड़की देता है और रुपये भी देता है। यानी ऐसे सब हिसाब चुक जाता है।

### उसमें मिलावट का भयंकर गुनाह

आपको व्यापार करना हो तो अब निर्भयता से करते रहना, कोई भय मत रखना और व्यापार न्यायपूर्वक करना। जितना हो सके उतना, पॉसिबल हो उतना न्याय करना। नीति की मर्यादा में रहकर पॉसिबल हो उतना करना, जो इम्पॉसिबल हो वह मत करना।

**प्रश्नकर्ता :** नीति की मर्यादा किसे कहेंगे?

**दादाश्री :** नीति की मर्यादा का मतलब आपको समझाता हूँ। यहाँ, मुंबई के एक व्यापारी थे। जब गेहूँ के भाव बहुत बढ़ जाते थे न तब वे व्यापारी इंदौर से एक वैगन गेहूँ मँगवाते और एक वैगन रेत मँगवाते। फिर दोनों को मिलाकर फिर से बोरियाँ भरवाते थे। बोलो, क्या इसे नीति कहा जाएगा?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन नीति-अनीति के भेद तो बहुत सूक्ष्म होते हैं, वे पता नहीं चलते।

**दादाश्री :** हमें अन्य सब में अनीति देखने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मनुष्यों के खाने की चीज़ें हैं, मनुष्यों के शरीर में जो चीज़ें जाती हैं, भोजन या दवाई, उनके लिए तो हमें बहुत नियम रखने चाहिए। ऐसा है न कि आप धोखा देकर चालीस के बदले साढ़े तीस रतल दो लेकिन शुद्ध दो, तो आप गुनहगार नहीं हो या कम गुनहगार

हो, लेकिन जो व्यक्ति मिलावट करके चालीस रतल पूरा देता है, वह बहुत बड़ा गुनहगार है। मिलावट मत करो। मिलावट करके दिया, वहाँ गुनाह है। मानव जाति के लिए मिलावट नहीं होनी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** मैं तो व्यक्तिगत तौर पर मानता हूँ कि जिससे हमारे आत्मा को दुःख हो, वह कार्य नहीं करना चाहिए।

**दादाश्री :** जिससे आपके आत्मा को दुःख होता हो वैसा कार्य मत करना। बाकी, जिससे मनुष्य के शरीर को दुःख पहुँचे, मिलावट करते हैं; दूध में कुछ और मिलावट, तेल में कुछ और मिलावट, घी में कुछ और मिलावट, तो आजकल कैसी-कैसी मिलावटें करने लगे हैं। वह सब नहीं होना चाहिए।

### धर्म की नींव

व्यापार में बिना हक़ का नहीं होना चाहिए और जिस दिन बिना हक़ का ले लिया जाए, उस दिन से व्यापार में बरकत नहीं रहेगी। भगवान कुछ करते ही नहीं हैं। व्यापार में तो आपकी कुशलता और आपकी नैतिकता, दोनों ही काम आएँगी। अनैतिकता से साल-दो साल ठीक चलेगा, लेकिन बाद में नुकसान होगा। यदि गलत हो जाए तो अंत में पछतावा करोगे तो भी छूट जाओगे। व्यवहार का सार यदि कुछ है, तो वह नीति ही है, नीति होगी और यदि पैसे कम होंगे तो भी आपको शांति रहेगी और यदि नीति नहीं होगी और पैसे ज्यादा होंगे, फिर भी अशांति रहेगी। नैतिकता के बिना धर्म ही नहीं है। धर्म का आधार ही नैतिकता है।

### अनीति लेकिन नियम से...

**प्रश्नकर्ता :** आप्तसूत्र में से 1936 नंबर का सूत्र है। “व्यवहार मार्ग वाले को हम कहते हैं कि संपूर्ण नीति का पालन कर, वैसा नहीं हो तो नियमानुसार नीति का पालन कर। वैसा न हो सके तो अनीति कर लेकिन नियम में रहकर कर। नियम ही तुझे आगे ले जाएगा।” यह ज़रा आपसे समझना है।



**दादाश्री :** इस किताब में, “आप्तसूत्र” में जो वाक्य लिखे हैं न, वे तीनों काल के लिए सत्य हैं। इस वाक्य में मैं क्या कहता हूँ कि, ‘संपूर्ण नीति से चलना।’ फिर दूसरा वाक्य क्या कहा है कि, “वैसा न हो सके तो थोड़ी-बहुत नीति पालन करना और यदि नीति का पालन न कर सको तो अनीति का पालन मत करना। अनीति का पालन करो तो नियम से अनीति करना।” यानी पूरी छूट दी है न? वर्ल्ड में सिर्फ मैंने ही अनीति का पालन करने की छूट दी है! इसलिए अनीति का पालन करना हो तो नियमानुसार पालन करना। आपको समझ में आया या नहीं?

इसमें ऐसा कहते हैं कि संपूर्ण नीति का पालन कर सके तो करना और पालन न हो सके तो तय करना कि मुझे दिन भर में तीन नीति का पालन तो करना ही है। वर्ना फिर नियम में रहकर अनीति करेगा तो वह भी नीति है। जो व्यक्ति नियम में रहकर अनीति करता है उसे मैं नीति कहता हूँ। भगवान के प्रतिनिधि के तौर पर, वीतरागों के प्रतिनिधि के तौर पर मैं कहता हूँ कि, “अनीति भी नियम में रहकर कर”, वह नियम ही तुझे मोक्ष में ले जाएगा। अनीति करे या नीति करे, उसका मेरे लिए महत्व नहीं है लेकिन नियम में रहकर कर। पूरी दुनिया ने जहाँ पर दम निकाल दिया है, वहाँ हमने कहा है कि, ‘इसमें हर्ज नहीं है, तू अपने नियम में रहकर कर।’

अभी कलियुग है, वह कहेगा कि, साहब, मुझसे यह नहीं हो पाता है, नीति का पालन नहीं हो पाता है। तब मैं कहता हूँ कि, ‘तुम नियम से पालन करना, दिन भर में दो-तीन नीति पालन करना है, जाओ, तुम्हारे मोक्ष की गारन्टी हम लिखकर देते हैं।’

हाँ, नीति का पालन न कर सकें तो क्या अनीति का ही पालन करते रहना है? नहीं, वह तो पूरा उल्टा चला। इसलिए कहा है कि, यदि अनीति का आप नियम से पालन करोगे तो मोक्ष में जाओगे। अब क्या कोई ऐसी विचित्र बात करेगा?

## वह तरीका है अधोगति का

**प्रश्नकर्ता :** दादा, नियम में रहकर अनीति कैसे पालें? इसका उदाहारण देकर समझाइए न!

**दादाश्री :** हाँ, वह आपको समझाता हूँ। एक सेठ की कपड़े की दुकान थी। वे कपड़े ऐसे खींच-खींचकर देते थे। तब मैंने कहा, 'ऐसा क्यों करते हो?' तब वे कहने लगे कि, 'चालीस मीटर में इतना बढ़ जाता है।' तब मैंने कहा, 'बाद में इसका क्या दंड मिलेगा, क्या वह जानते हो? अधोगति में जाना पड़ेगा! चालीस मीटर के पैसे लिए हैं तो आपको चालीस मीटर दे देना है, उसमें खींचने की जरूरत नहीं है।' तब कहते हैं कि, 'फिर तो हमें ठीक से फायदा नहीं मिलता।' तब मैंने कहा कि, 'थोड़ा सा भाव ज्यादा रखो।' उन्होंने कहा, 'फिर ग्राहक दूसरी जगह चले जाते हैं, यानी ज्यादा भाव लेना हो तो भी ले नहीं सकते न!'

हम इसे अनीति कहते हैं। अब कालाबाजारी करनी हो लेकिन जितना कम पड़ता हो उतना ही दिन भर में दस-पंद्रह रुपये ज्यादा ले ले, फिर पच्चीस रुपये ज्यादा मिल रहे हों तब भी नहीं ले। यह अनीति की, लेकिन नियम से की कहलाएगी, इसलिए कहता हूँ न कि, अनीति करनी पड़े तब भी नियम से करना।

## इस तरह नियम रखो

**प्रश्नकर्ता :** यानी कि, आप पैसे ज्यादा लो लेकिन माल कम मत दो, क्या ऐसा अर्थ हुआ?

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा नहीं कह रहे हैं, हमने तो ऐसा कहा है कि अनीति कर लेकिन नियम से करना। एक नियम रखो कि मुझे इतनी ही अनीति करनी है, इससे ज्यादा नहीं। दिन में रोज़ दस रुपये ज्यादा लेने हैं, उससे ज्यादा अगर पाँच सौ रुपये आएँ, फिर भी मुझे नहीं लेने हैं।

ऐसा समझो न कि, कोई इन्कम टैक्स ऑफिसर हो, उसकी पत्नी रोज़ झगड़े करती हो कि, 'इन सब ने रिश्तत ले लेकर बंगले बना लिए और आप रिश्तत नहीं लेते। आप तो ऐसे के ऐसे ही रहे।' इसलिए कई बार तो बच्चे के स्कूल की फीस के लिए भी उधार लेना पड़ता है। उसे मन में इच्छा हो कि दो-तीन सौ रुपये कम पड़ रहे हैं, उतने मिल जाएँ तो मुझे शांति रहे लेकिन रिश्तत नहीं ले पाता। अतः क्या कर सकते हैं? और वह भी मन में चुभता है न? तो हम उसे कहते हैं कि, 'रिश्तत लेनी हो तो तुम तय करो कि मुझे महीने में पाँच सौ रुपयों से ज़्यादा नहीं लेनी है। फिर दस हजार रुपये आएँ फिर भी मुझे नहीं चाहिए।' आपको महीने में जितने कम पड़ते हों, उतने लेने का आप तय करो। अब आप यह अनीति कर रहे हो लेकिन नियम से कर रहे हो। नियम में रहकर अनीति का पालन कर सकते हैं और अनीति नियम में रहकर करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। यह नियम ही तुम्हें मोक्ष में ले जाएगा और इसकी जोखिमदारी तुम्हारी नहीं है। लेकिन नियम से किया जाए तो बहुत हो गया। अनीति कभी नहीं टिकती। क्योंकि अनीति करने गए कि वह बढ़ती ही जाती है और वह नियम से अनीति करे तो उसका कल्याण हो जाएगा।

यह हमारा गूढ़ वाक्य है। यदि यह वाक्य समझ में आ जाए तो काम हो जाएगा। भगवान भी खुश हो जाएँगे कि पराये चारागाह में खाना है, फिर भी प्रमाण से खाता है! वर्ना यदि पराये चारागाह में खाना हो, तो वहाँ तो फिर प्रमाण होता ही नहीं है न!

आपकी समझ में आ रहा है न? कि 'अनीति का भी नियम रख।' मैं क्या कहता हूँ कि, 'आपको रिश्तत नहीं लेनी है, जबकि आपको पाँच सौ की कमी है, तो आप कब तक क्लेश करोगे?' लोगों से, मित्रों से रुपये उधार लेता है, उससे और ज़्यादा जोखिम उठाता है। अतः मैं उसे समझाता हूँ कि 'भाई तू अनीति कर, लेकिन नियम से कर।' अब नियम से अनीति करने वाला नीतिमान से भी श्रेष्ठ है। क्योंकि नीतिमान के मन में ऐसा रोग घुस जाता है कि 'मैं कुछ हूँ'। जबकि इसके मन में ऐसा कोई रोग ही नहीं घुसता न?

ऐसा कोई सिखाएगा ही नहीं न? नियम से अनीति करना तो बहुत बड़ा कार्य है।

### फिर जोखिमदारी 'हमारी'

अनीति भी यदि नियम से करता है तो उसका मोक्ष होगा, लेकिन जो अनीति नहीं करता, जो रिश्त नही लेता, उसका मोक्ष कैसे होगा? क्योंकि जो रिश्त नही लेता उसे, 'मैं रिश्त नही लेता' ऐसा नशा रहता है। भगवान भी उसे निकाल बाहर करेगे कि, 'चल जा, तेरा चेहरा खराब दिख रहा है।' इसका अर्थ यह नही है कि हम रिश्त लेने को कह रहे हैं, लेकिन यदि आपको अनीति ही करनी हो तो नियम से करना। नियम बनाओ कि भाई मुझे रिश्त में पाँच सौ रुपये ही लेना है। पाँच सौ से ज्यादा कोई कुछ भी दे, अरे पाँच हजार रुपये दे, तो भी वापस करना। हमें घर खर्च में कम पड़ते हों उतने ही, पाँच सौ रुपये ही रिश्त के लेने हैं। बाकी, ऐसा जोखिम तो हम ही लेते हैं। क्योंकि ऐसे काल में लोग रिश्त न लें तो बेचारे क्या करें? तेल-घी के दाम कितने बढ़ गए हैं, शक्कर के दाम कितने ज्यादा हैं? तब क्या बच्चों की फीस के पैसे दिए बिना चलेगा? देखो न, तेल के भाव सत्रह रुपये बताते हैं न!

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** जो व्यापारी काला बाजार करते हैं उनका चलता है जबकि नौकरों का रक्षण करने वाला कोई रहा ही नहीं? इसलिए हम कहते हैं कि रिश्त भी नियम से लेना। तो वह नियम आपको मोक्ष में ले जाएगा। रिश्त बाधक नहीं है, अनियम बाधक है।

### वहाँ नीति-अनीति नहीं है

**प्रश्नकर्ता :** अनीति करना तो गलत ही कहलाएगा न?

**दादाश्री :** वैसे तो उसे गलत ही कहते हैं न! लेकिन भगवान के घर तो अलग ही तरह की परिभाषा है। भगवान के वहाँ तो नीति-

अनीति को लेकर झगड़ा ही नहीं है। वहाँ पर तो अहंकार पर आपत्ति है। नीति पालन करने वालों में अहंकार बहुत होता है। उसे तो बिना शराब पीये नशा चढ़ा हुआ होता है।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन हमेशा तो ऐसा नहीं होता न?

**दादाश्री :** नहीं, क्योंकि उसके बिना तो नीति पालन कर ही नहीं सकते न! नशे में ही नीति पालन करता है और उसका नशा निरंतर बढ़ता ही जाता है! फिर भी वह कैफ में रहकर नीति पालन करता है इसलिए अच्छा पुण्य बंधेगा और शुभ गति प्राप्त होगी। उसे अच्छे व्यक्ति, संत वगैरह मिल आएँगे। आगे चलकर ज्ञानी भी मिल आएँगे। इसलिए वह गलत नहीं है। वह गलत है ऐसा मुझे कहना भी नहीं है। लेकिन भगवान के वहाँ तो अहंकार बाधक है।

अब वे लोग जो नियम से अनीति पालन करते हैं उन्हें अहंकार नहीं होता और पाँच हजार आएँ फिर भी वह नहीं लेता, तब उसे ईमानदार कहा जाएगा? नहीं, जबकि वह नियम से रिश्वत लेता है तब उसे ऐसी-वैसी ईमानदारी नहीं कहेंगे! क्योंकि यही तीन निवाले खाने हैं, चौथा निवाला नहीं खाना है तो इंसान से ऐसा कंट्रोल रह ही नहीं सकता। खाना शुरू करने के बाद वह रोक ही नहीं सकता, अपने आप जब पूरा होगा तभी रुकेगा! यह बात समझ में आ रही है न?

### वहाँ निरुअहंकारी की कीमत

यानी नियम से अनीति करने वाले का मोक्ष, नीति करने वालों से पहले होगा। क्योंकि नीति करने वाले को नीति करने का नशा होता है कि, 'मैंने पूरी ज़िंदगी नीति का पालन किया है' और वह तो भगवान की भी परवाह नहीं करता। ऐसा होता है, जबकि अनीति की इसलिए उसका नशा तो उतर चुका होता है न! उसे नशा ही नहीं चढ़ता क्योंकि उसने अनीति की है न वही उसके भीतर चुभता रहता है और जो पाँच सौ रुपये लिए उसका भी उसे नशा नहीं चढ़ता। नशा तो नीति वाले को जोरदार चढ़ता है और उसे तो ज़रा सा छेड़ा न, तो तुरंत पता चल

जाता है, फन फैलाकर खड़ा रहता है, क्योंकि उसके मन में ऐसा है कि, 'मैंने कुछ किया है, पूरी जिंदगी मैंने नीति का पालन किया है।'

**प्रश्नकर्ता :** अब पाँच सौ रुपये रिश्तत लेने की छूट दी तो फिर जैसे-जैसे जरूरत बढ़ती जाए तब फिर वह रकम भी बढ़ा ले तो ?

**दादाश्री :** नहीं। वह तो एक ही नियम। पाँच सौ यानी पाँच सौ ही। फिर उसी नियम में रहना पड़ेगा।

एक व्यक्ति शराब नहीं पीने का अहंकार करता है और एक व्यक्ति शराब पीने का अहंकार करता है, तो मोक्ष किसे मिलेगा? तब भगवान दोनों को ही बाहर निकाल देंगे! वे क्या कहते हैं कि, 'हमारे यहाँ तो निर्अहंकारी की जरूरत है।' भगवान तो क्या कहते हैं कि, 'नीति का पालन तो इसलिए करना है कि संसार में तुम्हें सुख मिले। बाकी, हमें नीति-अनीति, किसी की भी झंझट नहीं है। आपको दुःख सहन होता हो तो अनीति करना।' अनीति से तो दुःख ही मिलेगा न? किसी को दुःख देने के बाद हमें भी दुःख मिलेगा। यह तो, आपको सुख मिले इसलिए नीति का पालन करना है।

### आज्ञा में रहकर करोगे तभी...

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन अनीति करने से तो उसे आदत पड़ जाएगी न ?

**दादाश्री :** आदत पड़ जाएगी, ऐसा? नहीं! इसलिए कहा है कि अनीति करो लेकिन नियम से करो। कोई भी चीज नियमानुसार की जाए और वह भी ज्ञानी पुरुष की आज्ञापूर्वक हो, तब तो उसका काम हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** उसे अनीति की आदत पड़ गई, फिर तो उसके लिए नियम नहीं रहे न ?

**दादाश्री :** फिर तो उसका कोई अर्थ ही नहीं रहा न? और हमारी जोखिमदारी भी नहीं रही न! यह तो क्या कहा है कि तुम्हें पाँच सौ रुपयों की कमी है तो तुम्हें रिश्तत में पाँच सौ रुपये लेने हैं।

उसके बाद कोई पाँच हज़ार रुपये दे तो पाँच सौ रुपये से ज़्यादा रकम आपको नहीं लेनी है। ऐसे नियम में ही रहने से उसकी मुक्ति होगी, उसका निपटारा होगा।

### नियम ही मोक्ष में ले जाएगा

**प्रश्नकर्ता :** जो नियम से रिश्तत लेगा उसे लोभ ही नहीं होगा न फिर ?

**दादाश्री :** अरे! यह नियम तो मोक्ष तक ले जाता है और लोभ तो एकदम खत्म हो गया और ऐसा हो सके, ऐसी स्थिति है। ऐसा कर सकते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** और कोई रिश्तत लेता ही नहीं उसका क्या होता है !

**दादाश्री :** वह तो भटक जाता है। रिश्तत मिलती हो और वह न ले तब उसका अहंकार बढ़ता जाता है। जबकि वह रिश्तत लेता है लेकिन नियम से यानी घरखर्च में कमी हो उतना ही, पाँच सौ रुपये लेता है। अब उसके बाद कोई उसे पाँच हज़ार रुपये देने आए तब भी वह नहीं लेता, पाँच सौ से ज़्यादा एक पैसा भी नहीं, यानी ऐसा नियम का पालन करें तो वह मोक्ष में जाएगा।

### काल के अनुरूप, बीच का मार्ग

आजकल लोग किस तरह इन सब मुश्किलों में दिन गुज़ारते हैं? और फिर उसकी रुपयों की कमी पूरी न हो तो क्या होगा? उलझन पैदा होगी कि, 'रुपये कम पड़ रहे हैं, वे कहाँ से लाएँ?' यह तो उसे जितनी कमी थी उतनी मिल गई। फिर उसकी भी पज़ल सॉल्व हो गई न? वर्ना इसमें से व्यक्ति उल्टा रास्ता चुन लेगा और उल्टे रास्ते पर चलने लगेगा, फिर पूरी तरह से रिश्तत लेने लगता है, उसके बजाय बीच का रास्ता निकाला है। उसने अनीति की फिर भी नीति कहा जाएगा और उसे सरलता भी हो गई न। नीति कहा जाएगा और उसका घर भी चलेगा।

## झूठ बोलो, लेकिन नियम से

हमने तो क्या कहा है कि, आप झूठ बोलना ही मत और यदि आपको झूठ बोलना ही हो तो नियम बनाओ कि आज मुझे पाँच ही झूठ बोलने हैं। छठवीं बार नहीं, तो मोक्ष जाओगे। फिर पाँचों झूठ का उपयोग हो चुका हो, उसके बाद उसकी बहन ने कुछ चारित्र से संबंधित दोष किया हो, तब कोई पूछे कि, 'भाई, यह तुम्हारी बहन की बात सच है क्या?' अब उसके पाँचों झूठ तो हो चुके, छठा झूठ बोल नहीं सकता इसलिए उसे कहना पड़ेगा कि, 'हाँ, सच है।' यदि पाँचों खत्म न हुए होते तो इस बार पाँचवाँ झूठ इस्तेमाल करता लेकिन पाँचों झूठ पूरे हो गए हैं! इसे नियम से अनीति कहा है।

## चोरी करो लेकिन नियम से

कोई चोर चोरी करता हो लेकिन नियम से चोरी करे तो वह नियम उसे मोक्ष में ले जाएगा। नियम से चोरी करे यानी क्या? मान लो उसने महीने में दो चोरियाँ करने को कहा हो। अब पहली बार चोरी करने पर दस रुपये हाथ आए। दूसरी बार चोरी करने पर चालीस रुपये मिले, यानी चालीस और दस, ऐसे महीने में कुल पचास रुपये मिले। अब यदि उसने पहली चोरी नहीं की होती तो उसे दूसरे तीन सौ रुपये मिल जाते, ऐसा था। लेकिन दो बार चोरी कर ली इसलिए अब और नहीं ले सकता। उसने किसी की जेब में हाथ डालकर देख लिया कि तीन सौ रुपये हैं लेकिन तुरंत उसे लगा कि, 'यह गलत किया, मैंने दो बार चोरी कर ली है' इसलिए उसने छोड़ दिया। इसे नियम से अनीति कहा जाएगा।

## बात को समझो, ज्ञानी की भाषा में

मूलतः वस्तुस्थिति में मैं क्या कहना चाहता हूँ, वह यदि समझ ले न तो कल्याण हो जाएगा। प्रत्येक वाक्य में मैं क्या कहना चाहता हूँ, वह पूरी बात यदि समझ में आ जाए तो कल्याण हो जाएगा। लेकिन यदि वह उस बात को खुद की भाषा में ले जाए तो क्या होगा?



हर एक की अपनी स्वतंत्र भाषा होती ही है, वह उसे खुद की भाषा में ले जाकर फिट कर देता है। लेकिन यह उसकी समझ में नहीं आता कि 'नियम से अनीति कर।'

**प्रश्नकर्ता :** दादा, मैंने भी जब पहली बार इसे पढ़ा तो मैं भी एकदम सोचने लगा कि, 'यह क्या! दादा क्या कहना चाहते हैं! फिर मुझे लगा कि यह तो बहुत ग़ज़ब का वाक्य है!

**दादाश्री :** हाँ, अक्रम विज्ञान यानी क्या कि नेगेटिव पॉलिसी ही नहीं कि 'आप चोरियाँ क्यों करते हो और आप झूठ क्यों बोलते हो? क्यों खराब व्यवहार करते हो? इस तरह की नेगेटिव पॉलिसी ही नहीं।

### अग्नि में भी घी गाढ़ा

**प्रश्नकर्ता :** आप्तसूत्र में जब आपका यह सूत्र पढ़ने में आया तो इससे कई लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ फिर आपने इसका रहस्य समझाया।

**दादाश्री :** यदि अनीति करनी हो तो नियम से करना। यह इस दुनिया के स्वभाव के विरुद्ध है इसलिए लोगों को दुनिया के स्वभाव के विरुद्ध इस वाक्य पर प्रश्न हुआ! इसलिए मैंने खुलासा किया। पाँच सौ रुपयों की ज़रूरत हो तो वहाँ तक के एक नियम का पालन करना और बाकी जोखिमदारी मेरी और सिफारिश करके आपको, संपूर्ण नीति का पालन करते हैं, उस ग्रेड में ले जाऊँगा। लेकिन नियम का पालन करना। फिर बीस हजार आएँ तब भी कहना कि, 'नहीं भाई, पाँच सौ से ज़्यादा नहीं लूँगा।'

**प्रश्नकर्ता :** दादा, क्या ऐसा हो सकता है कि आप यह बात लोगों के सामने रखो?

**दादाश्री :** हो सकता है। जिसे समझना हो, उसके लिए।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन यह तो ऐसा हुआ कि घी अग्नि के पास रखने पर भी न पिघले।

**दादाश्री :** हाँ, नहीं पिघलेगा। लेकिन यह तो इस काल के ही लोग इस तरह पालन कर सकते हैं। आज से सौ साल पहले के लोग नहीं कर सकते थे। इस काल के जीव यह सब कर सकते हैं, ऐसे हैं। वे समझते हैं कि, 'ओहोहो! मुझ पर कोई जोखिमदारी नहीं आएगी और इस तरह हो सकता है?' तब वही कहेगा कि, 'नहीं, इसका पालन करूँगा।'

यह तो बहुत आसान और सरल रास्ता है और पाँच सौ रुपयों से जीवन व्यवहार चला सकते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** आप तो कहते हैं कि आपको कुछ नहीं करना है, मेरी आज्ञा का पालन कर। बात खत्म!

**दादाश्री :** हाँ! बस, आज्ञा पालन। बात खत्म!

**प्रश्नकर्ता :** यानी परिश्रम ही खत्म हो गया न?

**दादाश्री :** यानी आप मेरी आज्ञा का पालन करो। फिर आपकी जोखिमदारी नहीं है यानी उसे वह जो उधार लेना पड़ता था और घर की मुश्किलें थी। वे खत्म हो गईं, फिर तो वह बहुत आनंद में रहेगा!

लाओ न, मैं ही वह वाक्य बोलता हूँ।

'हम व्यवहार मार्ग वालों से कहते हैं।' व्यवहारमार्ग यानी संसार को व्यवहारमार्ग कहते हैं।

'कि संपूर्ण नीति का पालन कर।

ऐसा न हो सके तो नियम से नीति का पालन कर।'

कि भाई, मुझे इतनी नीति का पालन करना है।

'ऐसा न हो सके तो, अनीति कर लेकिन नियम में रहकर कर! नियम ही आपको आगे ले जाएगा!!!'

यह हमारी गारन्टी है! क्योंकि कलियुग में छुड़ाने वाला चाहिए।

## नियम तोड़े, उसकी गारन्टी नहीं

**प्रश्नकर्ता :** इसके संदर्भ में पूछता हूँ कि अनीति भी नियम से करना। खर्च में पाँच सौ रुपये कम पड़ें, तो उसे आपने मंजूरी दी कि पाँच सौ रुपयों तक आप रिश्तत लेना। अब मेरा सवाल यह है कि घर के खर्च में पाँच सौ की कमी की जगह दो सौ रुपये और कम पड़ गए, तो अब वह सात सौ रुपये ले तो उसकी आप सिफारिश करेंगे या नहीं ?

**दादाश्री :** नहीं, एक बार सेंक्शन होने के बाद आप उसे बदल नहीं सकते। आप पहले से ही पाँच सौ के बदले सात सौ तय करो। मैं सेंक्शन कर दूँगा। लेकिन आप बाद में इस सेंक्शन हुए प्लान में फेरबदल मत करना। उसके बाद हमारी ज़िम्मेदारी का वहाँ एन्ड होता है, क्योंकि हम समझ जाते हैं कि यह, नॉर्मलिटी हट गई। फिर एबॉर्मल होने लगता है। बिलो नॉर्मल से नॉर्मल पर लाए। वह अब एबॉर्मल होने लगा इसलिए हमारी ज़िम्मेदारी का एन्ड होता है। हम पहले से ही कहते हैं कि अपनी रक्षा के लिए आपको जितने दरवाज़े रखने हों, उतने दरवाज़े रखो। मुझे कोई हर्ज नहीं है। उसके बाद मुझसे सेंक्शन कराने के बाद, दरवाज़ा नहीं रख सकते, एक इतनी सी जाली भी नहीं रख सकते और पानी जा सके ऐसा होल भी नहीं कर सकते, क्योंकि उसका नियम है, नियम यानी क्या कि नियम से रहने वाले की ज़िम्मेदारी मैं लेता हूँ। मैं ज्ञानी पुरुष हूँ। सारे पापों को भस्मभूत करने का मेरे पास पावर ऑफ अटर्नी है! इसलिए आप मेरे कहे अनुसार चलो न! और मैं आपको गारन्टी देता हूँ।

ऐसा किसी ने नहीं कहा है कि, 'भाई, आप अनीति का पालन करो।' क्योंकि यदि इन्हें छुड़ाने के लिए ऐसा न कहें तो ये लोग छूटेंगे कैसे? ऐसा न कहें तो छूटेंगे नहीं और कुछ बदलाव होगा नहीं।

## अक्रम विज्ञान में दोनों ही निकाली

अक्रम विज्ञान तो नीति-अनीति दोनों को अलग रख देता है। आप उन्हें *निकाली* चीज़ मानते हो न? क्या मानते हो?

**प्रश्नकर्ता :** डिस्चार्ज।

**दादाश्री :** नीति का कोई ईनाम नहीं मिलता और अनीति की कोई मार नहीं पड़ती। ऐसा है हमारा विज्ञान। अनीति उसे मार खिलाकर ही जाती है। नीति उसे सुख देकर जाती है लेकिन वह सुख के मार्ग पर है। वह वास्तव में पद्धति पूर्वक नहीं है। वह तो कल्पित है, समझ में आया न? अनीति वाले को सर्दी में ठंडा पानी मिलेगा और नीति वाले को गरम पानी मिलेगा। लेकिन इसी जन्म में उसका *निकाल* हो जाएगा। खुद शुद्धात्मा हुआ हो, और हमारी आज्ञा में रहे तो सब फटाफट खत्म हो जाएगा। जितना भी कर्ज होगा, उतना सब साफ। एक जन्म जितना बाकी बचेगा, आज्ञा का पालन किया इसलिए। ये सब क्या नीति वाले होंगे? यह कलियुग है न?

**प्रश्नकर्ता :** आप इसलिए कह रहे थे कि, लाइए, एक भी नीति वाला बताइए मुझे।

**दादाश्री :** नहीं, लेकिन कलियुग में बेचारा कैसे रह पाएगा? नीति का पालन किस तरह कर सकेगा? फिसले बिना रह नहीं पाएगा। इतनी चिकनी मिट्टी और खुद के पास शक्ति नहीं हो। शक्ति हो तो अँगूठा दबाकर भी वह चिपके लेकिन यह तो जब अँगूठा दबाता है तो अँगूठा भी दुःखने लगता है। फिसल जाता है। फिसल-फिसलकर, हड्डियाँ खोखली हो गई हैं। तभी तो अक्रम विज्ञान लेने आते हैं, वर्ना कोई अक्रम विज्ञान लेने आता होगा? कहेगा, जल्दी से *निकाल* कर दीजिए। अक्रम विज्ञान यानी जो नीति, अनीति को एक तरफ रख देता है और दोनों बीज सेक देता है। तब उगने लायक ही नहीं रहते।

### भाव-अभाव से परे

**प्रश्नकर्ता :** अपने महात्माओं को ऐसे भाव रहने चाहिए न कि इस व्यापार में से छूट जाएँ?

**दादाश्री :** ऐसे भाव नहीं रहते हों, तब भी यह अक्रम विज्ञान

ही उनके भाव छुड़वाएगा। यदि ऐसे भाव रहते हों तो उत्तम ही है। ऐसे भाव रहते हों तो हमें अक्रम की राह नहीं देखनी चाहिए और न रहते हों तो हमें उसकी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। अक्रम उन्हें धक्का देकर छुड़वा देगा। वह बुखार चढ़ा कि चारों ओर से उसे छुड़वाने की तैयारी करवाता है।

### खुद को देखा करो

**प्रश्नकर्ता :** व्यापार में कोई गड़बड़ हो और चंदूभाई व्याकुल हो जाए, तो क्या हमें वह दिखाई देगा ?

**दादाश्री :** हाँ, चंदूभाई व्याकुल होंगे वह सब पता चलेगा और फिर जोखिमदारी नहीं। चंदूभाई व्याकुल हों तो आपकी कोई जोखिमदारी नहीं है। वे व्याकुल हो जाएँगे और फिर शांत हो जाएँगे। वापस बीज नहीं पड़ेंगे न! यह सिका हुआ बीज है इसलिए उगेगा नहीं।

### व्यापार में भी पूर्ण वीतराग

हम भी व्यापारी आदमी हैं। हमें भी संसार में व्यापार-रोज़गार, इन्कम टैक्स सब हैं। हम कॉन्ट्रैक्ट का नंगा व्यापार करते हैं। फिर भी हम उसमें संपूर्ण 'वीतराग' रहते हैं। ऐसे 'वीतराग' कैसे कहलाते हैं ? 'ज्ञान से'। अज्ञान से लोग दुःखी हो रहे हैं।

### वह प्रतिक्रमण से मिटे

**प्रश्नकर्ता :** यह जो व्यापार करते हैं, उसमें किसी से कहें कि, 'आप मेरे सामान का उपयोग करो, उसमें से एक-दो प्रतिशत आपको देंगे', तो यह तो गलत काम ही है न ?

**दादाश्री :** जो गलत काम हो रहा है वह आपको अच्छा लगता है या नहीं ?

**प्रश्नकर्ता :** अच्छा लगना तो अलग बात है लेकिन नापसंद हो फिर भी, व्यवहार के लिए करना पड़ता है।

**दादाश्री :** हाँ, इसलिए करना पड़ता है। यानी अनिवार्य है। तो इसमें आपकी इच्छा क्या है? ऐसा करना है या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा करने की इच्छा नहीं है, फिर भी करना पड़ता है।

**दादाश्री :** जो अनिवार्य रूप से करना पड़े, उसके लिए पछतावा होना चाहिए। आधा घंटा बैठकर पछतावा करना चाहिए 'यह नहीं करना है फिर भी करना पड़ता है।' अपना पछतावा जाहिर किया तो आप गुनाह में से छूटे। यह तो, हमारी इच्छा नहीं होने पर भी, अनिवार्य रूप से करना पड़ता है, उसका प्रतिक्रमण करना पड़ता है। 'ऐसा ही करना चाहिए' कहा, तो उन्हें उल्टा होगा। ऐसा करके खुश होते हैं, ऐसे भी लोग हैं न? यह तो आप हल्के कर्म वाले हो इसलिए आपको ऐसा पछतावा होता है। वर्ना लोगों को पछतावा भी नहीं होता।

ऐसा है न, द्रव्य किसी के वश में नहीं है। सिर्फ यह भाव ही खुद के वश में है। द्रव्य सारा अनिवार्य है और भाव जो है, उतना ही आपके वश में है। इसलिए गलत हो जाए तो पछतावा कर लेना! हमारा द्रव्य अच्छा होता है और भाव भी अच्छे होते हैं, दोनों ही अच्छे होते हैं। आप सब का स्वच्छंदपूर्वक होता है इसलिए आपको पछतावा होता है कि ऐसा क्यों होता है। आज के ज्ञान के साथ एडजस्ट नहीं होता इसलिए ऐसा ही लगता है कि सब गलत हो रहा है। इसलिए ये जो द्रव्य हैं, द्रव्य परिणाम हैं, जो अनिवार्य लगते हैं। हमें नहीं करना हो फिर भी करना पड़ता है, वह सब 'डिस्चार्ज' है और अंदर जो भाव हैं, वे 'चार्ज' हैं। तो हमें शाम को आधा घंटा बैठकर पश्चाताप-प्रतिक्रमण करना चाहिए कि, 'ऐसा नहीं करना है, फिर भी यह सब होता है। वह मेरा काम नहीं है। उसमें मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है, अब भविष्य में नहीं करूँगा, अब भविष्य में इस तरह के भाव नहीं करूँगा', बस ऐसा पश्चाताप करना।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन फिर रोज़ वैसा गलत तो करेंगे ही।

**दादाश्री :** नहीं, गलत करने का प्रश्न नहीं है। यह जो पश्चाताप करते हो, वही आपका भाव है। जो हो गया वह हो गया, वह तो आज 'डिस्चार्ज' (निकाली) है और 'डिस्चार्ज' में किसी का नहीं चलता। 'डिस्चार्ज' यानी अपने आप, स्वाभाविक रूप से परिणाम आना और 'चार्ज' यानी क्या? कि खुद के भाव सहित होना चाहिए। कुछ लोग उल्टा करते हैं लेकिन भाव में ऐसा ही कहते हैं कि, 'यह ठीक ही हो रहा है।' तो समझ लेना कि वह मारा गया। लेकिन जिन्हें पश्चाताप होता है उनका यह गलत मिट जाएगा।

### भगवान की दृष्टि से

बाकी, इस दुनिया में जो भी चीजें गलत हुई हैं, ऐसा दिखाई देता है, उनका अस्तित्व ही नहीं है। गलत चीजों का अस्तित्व ही नहीं है। इन गलत चीजों का अस्तित्व आपकी कल्पना से खड़ा हुआ है। भगवान को इस जगत् में कभी कोई चीज गलत लगी ही नहीं। हर कोई जो कर रहा है वह खुद की जोखिमदारी पर ही कर रहा है। इसमें गलत चीज है ही नहीं। चोरी करके लाया उसने लोन लिया, वह आगे फिर लौटाएगा। दान देता है उसने लोन दिया, फिर आगे वापस लेगा। इसमें गलत क्या है? भगवान को कभी गलत लगा ही नहीं। गलत चीज है ही नहीं न!

यानी, हमें जो गलत लगता है वह अब भी हमारी भूल है। जो होता है, जो हो रहा है, उसी को 'करेक्ट' (सही) कहा जाए तो निर्विकल्प हो जाएगा। वर्ना जो हो रहा है उसे 'करेक्ट' न कहे तो विकल्पी होता जाएगा। उपाय सहित ये सारी बातें बता दी। कुछ भी सही-गलत है ही नहीं। बाकी सब 'करेक्ट' ही है। फिर हर किसी की ड्रॉइंग अलग ही होती है। वह सारी ड्रॉइंग कल्पित है, सच नहीं है। जब इस कल्पित में से निर्विकल्प की ओर आएगा न, निर्विकल्प की हेल्प ले लेगा न, तब निर्विकल्पन प्रकट होता है। वह एक सेकंड के लिए भी हुआ तो हमेशा के लिए हो गया! आपको समझ में आई यह बात?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** हाँ, एक बार समझ लेने की ज़रूरत है कि यह ड्रॉईंग कैसी है! यह सब ड्रॉईंग समझ लेंगे न, तो फिर हमारी उस पर से प्रीति खत्म हो जाएगी।

### परिग्रह की बाउन्ड्री

व्यापार हो तो कोई हर्ज नहीं है। मुझे उसमें कोई हर्ज नहीं है। यह तो एक साधारण बात कर रहा हूँ। आप करो या न करो, किस कारण से करते हो, वह भी मैं जानता हूँ। किस कारण से नहीं करते, वह भी मैं जानता हूँ इसलिए आपको गुनहगार मानता ही नहीं।

आप व्यापार कर रहे हो इसलिए यह बढ़ गया है। कोई भी व्यापार करने का अपने उदय में हो, लेकिन उदयपूर्वक व्यापार बढ़े-घटे, जैसा हो, वैसा हमें कर लेना है। पर आप तो बढ़ाने के लिए, कितना सब करते हो। ऐसा निश्चित नहीं है कि, 'भाई, मुझे पाँच लाख ही कमाने हैं।' ऐसा कुछ निश्चित किया हो तो भगवान चला लेंगे, लेकिन बाउन्ड्री नहीं रखी है।

**प्रश्नकर्ता :** यानी परिग्रह की बाउन्ड्री रखनी है ?

**दादाश्री :** हमारा प्रारब्ध है न, वह पूरा हिसाब लेकर आया होता है इसकी हम सच्चे दिल से जाँच करें न तो हमें पता चलेगा कि दो लाख तो हमारे लिए पर्याप्त हैं। तो हमें दो लाख की भावना रखनी चाहिए। वह जब लाख हो जाएँ तब बंद कर देना। वर्ना इस लोभ का तो अंत आए, ऐसा नहीं है।

### देखना, बरकत बढ़े वो

धन कमाने पर जोर देने जैसा नहीं है। धन की बरकत किस तरह आती हैं वह सोचने जैसा है। ज्ञानी पुरुष वह बताते हैं कि इस तरह बरकत आएगी। वर्ना बरकत नहीं आएगी।



एक मुसलमान सेठ थे। वे कहते थे कि, 'मेरे पास आज बैंक में पचहत्तर लाख रुपये जमा हैं और आय ज़बरदस्त है। लेकिन साहब बरकत नहीं आती। वह कैसे आएगी?' बरकत नहीं है यानी क्या? सिर्फ उपाधि, धंधे में उपाधि, हाय-हाय, हाय-हाय, जलन, चिंता! अरे, इतने लाख रुपये होने पर भी चिंता? बरकत नहीं आती! इसलिए ज्ञानी पुरुष को पूछते हैं कि साहब, बरकत कैसे आएगी? बरकत नहीं चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** एकदम चाहिए, पैसे कम होंगे तो चलेगा, लेकिन शांति चाहिए।

**दादाश्री :** हाँ, बरकत! धन टिके। बरकत हो न तो धन टिकता है और हमें शांति देता है, और बरकत न हो न, तब तो बल्कि उपाधि आती है! आया हुआ धन दुःख देकर जाता है। वापस चला जाता है। आप दो-तीन साल बाद देखना न, बड़ी-बड़ी पार्टियाँ खत्म हो रही हैं। अब इसमें क्या होता है? कि छोटी पार्टियों वाले मारे जाते हैं। उनके यहाँ रखकर आया हो, ब्याज खाने के लिए! दो प्रतिशत या ढ़ाई प्रतिशत, वे पार्टियाँ खत्म हो जाती हैं। उनका तो क्या गया? उसने चालीस लाख रुपये हीरे के धंधे में गँवाए! वह दिवाला घोषित नहीं करता, वह तो लोगों से कह देता है कि, 'भाई, अभी जो है वह ले लो!' ये कोई दिवाले का ऐसा रिवाज़ भी नहीं है और झंझट भी नहीं है। पहले तो दिवालिया घोषित कर लेते थे। अभी भी कुछ लोग दिवाला निकालते हैं। बाकी, ज़्यादातर तो अंदर ही अंदर निपटा देते हैं! इसमें क्या मज़ा है? इसमें क्या लेना है? है ही नहीं तो क्या लेना है? और क्लेश करने से क्या फायदा? खोटे पैसे थे, वे गए!

### बरकत बगैर का धन

अब इस काल में कोई व्यक्ति ऐसा दावा नहीं कर सकता। अरे, मैं भी ऐसा दावा नहीं कर सकता कि मेरा धन सच्चा है। पैसा तो स्वभाव से ही खोटा है। हाँ, वर्ना पहले पाँच रुपये लेकर निकलते थे तो बारह मित्र पीछे घूमते थे! अभी तो एक हजार लेकर घूमो तो कोई मित्र...

**प्रश्नकर्ता :** आते नहीं हैं।

**दादाश्री :** यानी ये बरकत नहीं है। इसलिए इसमें इन रूप्यों से खुश होने जैसा नहीं है और हो तो लोगों को खिला-पिलाकर केस खत्म कर देना। ब्राह्मणों को भोजन करवाने की जगह दादा के महात्माओं को भोजन करवाना अति उत्तम है! ऐसे ब्राह्मण नहीं मिलेंगे। जिन्हें भोजन करने की इच्छा ही नहीं है, जिन्हें आपसे किसी प्रकार की इच्छा नहीं है, भावना नहीं है।

### धन डालो सीमंधर स्वामी के मंदिर में

ज्यादा धन हो तो भगवान या सीमंधर स्वामी के मंदिर में देने के समान अन्य कोई भी स्थान नहीं है और कम धन हो तो महात्माओं को भोजन कराने जैसा अन्य कुछ भी नहीं है और उससे भी कम धन हो तो किसी दुःखी को देना। लेकिन नकद नहीं, खाने-पीने का सब सामान पहुँचाकर। कम पैसों में भी दान करना हो तो कर सकते हैं या नहीं?!

### कृपा से खुदाई बरकत

बरकत आनी चाहिए, खुदाई बरकत! अब धन कम नहीं होगा, यदि आप खुदाई बरकत में आ गए, तो। क्योंकि ज्ञान मिला तभी से खुदाई बरकत आने लगती है और बाद में यदि व्यवहार धीरे-धीरे शुद्ध होने लगेगा तो धन कम नहीं होगा। आप फावड़े से खोदकर दोगे न, फिर भी कम नहीं होगा।

ये 'दादा भगवान प्रकट हुए हैं न, यदि उनकी कृपा हो तो क्या नहीं मिल सकता? उनकी कृपा होगी तो बरकत रहेगी! वह खुदाई बरकत है!

### संसार का हिसाब मिल गया?

इस संसार का हिसाब (सार) समझ में नहीं आता न? व्यापार

में तो समझ में आता है कि यह खाता नुकसान वाला है और यह खाता फायदे वाला है। यानी इस बहीखाते का हिसाब देखना तो आता है लेकिन सब को नहीं आता न! सी.ए. वगैरह पढ़े हो, वे सब कर (हिसाब) देते हैं। लेकिन इसका हिसाब कौन निकालकर देगा?

**प्रश्नकर्ता :** इसमें तो आप हैं न, सी.ए., इसका हिसाब निकालने वाले।

**दादाश्री :** हाँ, इसलिए कभी कोई ज्ञानी पुरुष मिल जाएँ तो हमारा हिसाब (सार) निकाल देते हैं। और कौन निकाल सकता है? घर के लोग तो बल्कि उलझने बढ़ाते हैं। अरे, हमारा हिसाब देख लो। अरे, छोड़ो न, मुझे तो यह सब हिसाब देखना है। उसमें आप क्यों माथापच्ची करते हो? कहेगा, 'मेरे खाते में कितने जमा हैं, वह बताइए।'

**प्रश्नकर्ता :** उधारी की बात कोई नहीं करता है, जमा की बात करते हैं।

**दादाश्री :** हाँ, यानी उधार की बात कोई नहीं करता। यह बात नहीं करते। मैंने जो कहा, वे सारी बातें अच्छी लगती हैं क्या?

**प्रश्नकर्ता :** सही हैं।

**दादाश्री :** अंत में तो जानना ही पड़ेगा न? क्या हिसाब (सार) समझे बिना चलेगा? ये सब महात्मा हिसाब (सार) समझकर बैठे हैं। इसलिए आराम से बैठे हैं न? अब है कोई झंझट? हिसाब (सार) समझ गए इसलिए फिर शांति हो गई!



[ 4 ]

## ममता रहित

### मरने के बाद भी चलेगा...

घर में सुख होता तो कोई भी व्यक्ति मोक्ष ढूँढता ही नहीं न! यह तो संसार है इसलिए ऐसा ही होता है लेकिन दोनों टाइम खाना तो मिलता है न! पहनने को कमीज़ मिलती है न!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन पैसों का सुख नहीं है।

**दादाश्री :** हमें खाना तो मिलता है न। मुंबई में तो सब पैसों के लिए दौड़ते हैं। सब को धन की इच्छा है न! हमें संतोष रखना है। हमारा हिसाब होगा तो मिलेगा। जो हिसाब लेकर आया है, तो हिसाब से ज्यादा तो तुरंत मिल नहीं सकता न? कितना धन इकट्ठा करना है?

**प्रश्नकर्ता :** जिंदगी भर इकट्ठा करना है।

**दादाश्री :** लेकिन साथ में कुछ भी लेकर नहीं जाना है, फिर भी ऐसे दौड़-भाग कौन करेगा?

**प्रश्नकर्ता :** जब आए थे, क्या तब साथ में लेकर आए थे?

**दादाश्री :** बस, साथ लेकर आना नहीं है और साथ लेकर जाना

नहीं है, नियम अच्छा है, वर्ना ये रात को भी न सोएँ, रात को भी दुकानें खुली होतीं और रात भर बिजली खर्च होती।

ये दो बातें समझ लें न, तो कोई चिंता नहीं रहे!

‘जन्म से पहले चलता था और मरने के बाद भी चलेगा;

रुका नहीं किसी दिन व्यवहार रे,... सापेक्ष संसार रे...’

‘जन्म से पहले झूला और मरने के बाद लकड़ी;

सगे-संबंधी रखेंगे तैयार रे,... बीच में भारी जंजाल रे...’

सभी बुद्धिजीवियों को यह एक्सेप्ट करना पड़ेगा, ऐसी बात है न!

### कोल्हू का बैल

खुद के कर्म में कोई हिस्सेदारी नहीं करता, इस में कोई हस्तक्षेप नहीं करता, वह तो जो कम अक्ल वाला होगा, वह करता ही रहेगा।

हम बेटे से पूछें कि भाई, चोरियाँ कर-करके धन कमा रहे हो। तब वह कहता है, ‘आपको कमाना हो तो कमाइए, हमें ऐसा नहीं चाहिए।’ ऊपर से पत्नी कहती है, ‘सारी जिंदगी गलत किया है, अब छोड़ दीजिए न!’ फिर भी वह नहीं छोड़ता।

**प्रश्नकर्ता :** कलियुग में अब तक ऐसी कोई पत्नी नहीं मिली। वह तो दूसरे का अच्छा देखे, तो मुझे क्यों नहीं लाकर दिया? खुद कहेगी ही कि ऐसा मुझे भी लाकर दो। पति की इच्छा हो या न हो, फिर भी करना पड़ता है।

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। वह तो सब प्राकृतिक स्वभाव होता है।

यह तो, सिर्फ मनुष्य को अंत तक काम करते रहना पड़ता है। वर्ना बैल को तो पिंजरापोल में छोड़ आते हैं। क्योंकि बेचारा अब किसी काम का नहीं रहा, इसलिए उसे पिंजरापोल में रख दो!

## सहज मिला... वहाँ सिद्धियाँ

अनंत, अपार शक्तियाँ हैं। ज्ञान न हो तब भी अपार शक्तियाँ हैं। अज्ञान दशा में भी अहंकार तो है ही न? लेकिन अहंकार शुद्ध कर दे, खुद कुछ भी इस्तेमाल न करे, खुद के हिस्से में आया हुआ भी दूसरों को दे दे, खुद पर कम से कम खर्च करे, तब बहुत सिद्धियाँ उत्पन्न होती हैं।

**प्रश्नकर्ता :** आजकल तो ऐसा है कि खुद की रोटी हो, मेहनत से कमाकर खाते हों, तब दूसरा आकर छीन लेता है। अब खुद उसका सामने बचाव न करे तो भूखा मर जाएगा ऐसा टाइम है, ऐसे में आप ऐसा कहते हैं!

**दादाश्री :** हाँ, आजकल तो बल्कि खींच लेते हैं, अरे इधर लाओ! और पहले क्या कहते थे कि...

‘सहज मिला सो दूध बराबर।’ जो कुछ भी मिले, पानी भी सहज मिले तो भी दूध बराबर। फिर, ‘माँग लिया सो पानी।’ दूध भी माँगकर लिया तो पानी है और ‘खींच लिया सो रक्त बराबर’, इस नियम का कौन पालन करता है?

**प्रश्नकर्ता :** इस नियम का पालन करेंगे तो बीवी-बच्चे भूखे मरेंगे!

**दादाश्री :** लेकिन तब उसे अन्य सिद्धियाँ उत्पन्न होंगी न!

**प्रश्नकर्ता :** किन्तु वे सिद्धियाँ उत्पन्न होने तक बीच के समय में क्या करें? यहाँ तो अपनी मेहनत, अपने हक़ का दूसरे लोग छीनकर बैठे हैं! यदि खुद का न बचाएँ तो लोग हमारा ही छीन लेंगे।

**दादाश्री :** नहीं-नहीं! कोई नहीं छीन सकता। ऐसा है, यह जो अपना ज्ञान है न, ज्ञान इतना अधिक सैद्धांतिक है कि रात को सोना बाहर रखकर सो जाएँ और सुबह उठकर देखें तो उतना का उतना ही होगा और ऐसा कुछ भी नहीं होगा।

## देना नहीं सीखा

देना सीखा तभी से सद्बुद्धि उत्पन्न होती है। अनंत जन्मों से देना सीखा ही नहीं। मनुष्य का स्वभाव ऐसा है कि जूठन देना भी उसे पसंद नहीं है! उसे ग्रहण करने की ही आदत हैं! जब पशुयोनि में था तब भी ग्रहण करने की ही आदत, देने का नहीं! वह जब से देना सीखता है, तभी से मोक्ष की ओर मुड़ता है। तुम्हें किसी को कुछ देना अच्छा लगता है ?

**प्रश्नकर्ता :** मैं तो बहुत दे देता हूँ!

**दादाश्री :** तब तो ठीक है! वर्ना तो अनंत जन्मों से ग्रहण करना ही सीखा है! ये सारी चींटियाँ भी, स्वार्थ में सतर्क हैं! उसमें से यदि मकोड़ा कुछ ले जा रहा हो न, तो चींटियों को अच्छा नहीं लगता! हाँ, उनकी क्वालिटी की सब चींटियाँ हों तो वे समझती हैं कि अपने स्टोर में ही ले जा रही हैं। इसलिए फिर झगड़ती नहीं हैं जबकि यदि मकोड़े ले जा रहे हों तो झगड़ने लगती हैं!

## संयोग, पाप-पुण्य के आधार पर

कभी संयोग आते हैं क्या ?

**प्रश्नकर्ता :** अच्छे भी आते हैं।

**दादाश्री :** ये बुरे या अच्छे संयोग कौन भेजता होगा? हमारे ही पुण्य और पाप के आधार पर संयोग इकट्ठे होते हैं।

## लक्ष्मी, किसके अधीन ?

मैंने लोगों से कहा कि, पैसों के पीछे क्यों पड़े हो? पैसों का ध्येय क्यों रखते हो? पैसे तो पुण्य के अधीन है। तब कहते हैं कि 'क्या अक्ल के अधीन नहीं है?' मैंने कहा, 'तुम भूलेश्वर में जाओ, अक्ल वाले तो घिसी हुई चप्पल के साथ बहुत लोग घूमते हैं। तुम्हें हर तरह की सलाह भी देंगे, अक्ल वाले तो सब सलाह भी देते हैं!'

अक्ल का तो उपयोग कर लेते हैं' परंतु बिना अक्कल से ही पैसे मिलते हैं, पुण्य से ही पैसे मिलते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** रुपये से ही बिस्तर और जलेबी दोनों मिलते हैं।

**दादाश्री :** हाँ, भगवान से वह सब नहीं मिलता इसलिए लोगों की भगवान पर से प्रीति उठ गई है। उन्हें भगवान पर विश्वास भी नहीं है! इसलिए वे भगवान को पहचानते भी नहीं हैं और जो दिखता है उस पर प्रीति हो जाती है। रुपयों पर सारे जगत् को प्रीति है न?

### लक्ष्मी के लिए चार्जिंग

**प्रश्नकर्ता :** सब लोग लक्ष्मी के पीछे बहुत भागते हैं। इससे उनका 'चार्ज' ज़्यादा होता है न, तो उन्हें अगले जन्म में लक्ष्मी ज़्यादा मिलनी चाहिए न?

**दादाश्री :** 'हमें लक्ष्मी धर्म के काम में खर्च करनी है', ऐसा चार्ज किया हो, तो ज़्यादा मिलेगी।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन ऐसे मन से भाव किया करे कि, 'मुझे लक्ष्मी मिले', ऐसे भाव किए, वैसा 'चार्ज' किया, तो उसे अगले जन्म में कुदरत लक्ष्मी नहीं देगी?

**दादाश्री :** नहीं-नहीं! उससे लक्ष्मी नहीं मिलेगी। ये लक्ष्मी प्राप्त करने के जो भाव करते हैं न, उससे तो लक्ष्मी मिलनी होगी तो भी नहीं मिलेगी। बल्कि अंतराय पड़ेंगे। लक्ष्मी याद करने से नहीं मिलती, वह तो पुण्य करने से मिलती है।

'चार्ज' यानी पुण्य का चार्ज करे, तो लक्ष्मी मिलेगी। उससे भी सिर्फ लक्ष्मी नहीं मिलेगी। पुण्य के 'चार्ज' से जिसकी इच्छा हो कि मुझे लक्ष्मी की बहुत ज़रूरत है, तो उसे लक्ष्मी मिलेगी, कोई कहेगा, 'मुझे तो सिर्फ धर्म ही चाहिए, तो सिर्फ धर्म मिल जाएगा और पैसे न भी हों। यानी वह पुण्य का फिर हमने टेन्डर भरा होता है कि, 'मुझे ऐसा चाहिए।' वह प्राप्त होने में पुण्य खर्च होता है।



कोई कहेगा कि, 'मुझे बंगला चाहिए, मोटर चाहिए, यह चाहिए, वह चाहिए', तो उसमें पुण्य खर्च हो जाता है तो फिर धर्म के लिए कुछ नहीं रहता और कोई कहे कि मुझे धर्म ही चाहिए, मोटर नहीं चाहिए। मुझे तो इतने से दो रूम होंगे तब भी चलेगा लेकिन धर्म ही अधिक चाहिए, तो उसे धर्म अधिक मिलेगा और अन्य चीज़ें कम होंगी यानी वह अपने हिसाब से पुण्य का टेन्डर भरता है।

### वीतरागों की आज्ञा का पालन

लक्ष्मी तो मिलती रहेगी क्योंकि वीतराग के नियमों में कुछ तो होगा न इसलिए लक्ष्मी मिलती रहेगी लेकिन लक्ष्मी भी आती-जाती रहती है। पूरण-गलन है। कभी बैंक में दस लाख जमा भी हो जाएँ और कभी पूरा खाली भी हो जाए, ऐसी चीज़ है। बहुत विश्वास करने जैसा नहीं है। पूरण-गलन स्वभाव वाला है लेकिन वीतराग के पंथ के कारण लक्ष्मी तो आती रहती है। वीतराग धर्म पालन करते हैं, कुछ-कुछ अहिंसा धर्म, ऐसा, कुछ वीतरागों ने जो सेवन किया हो, वैसी कुछ क्रियाएँ करते हैं तो उससे लक्ष्मी तो आती रहती है क्योंकि वीतरागों के मुख से निकली वाणी और उनकी आज्ञा का पालन होता है। इसके कारण यह सब चलता है। बाकी, वीतरागों का मत तो, संसार में रहते हुए कोई दुःख न आए, ऐसा वीतरागों का मत है।

### इसमें मेहनत कैसी?

चेक आए तभी से समझ जाते हो न कि इसे भुनाऊँगा तो पैसे आएँगे! यह तो, चेक लेकर आए थे और वह आपने आज भुनाया! भुनाने में आपने क्या मेहनत की? तब लोग कहते हैं, मैं इतना कमाया, मैंने मेहनत की! अरे! एक चेक भुनाकर आया उसे क्या मेहनत करना कहेंगे? वह भी फिर, जितने का चेक होगा, उतना ही प्राप्त होगा। ज्यादा नहीं मिलता न? क्या यह आपको समझ में आया?

## वैसे उपाधि भी बढ़ेंगी

**प्रश्नकर्ता** : सभी महात्माओं पर एक बार कृपा बरसाइए न, ताकि लक्ष्मी की भरमार हो जाए।

**दादाश्री** : ऐसा है, ज्यादा लक्ष्मी माँगोगे न, तो फिर रखने की झंझट। खर्च हो जाए तब भी झंझट, ऐसा लगता रहता है कि ज्यादा खर्च हो गया। लक्ष्मी का स्वभाव ऐसा है कि वह महादुःख से आती है। महामेहनत से, महाकपट करके जंजाल करें, तब तो वह मिलती है। उसके बाद, उसे कहाँ रखें, उसका भय रहता है। एकाध लाख रुपये बैंक में हों तो फिर साला माँगने आता है कि मुझे दस एक हजार दीजिए न! साले को तो दिए लेकिन फिर मामा का बेटा आएगा। वह भी उपाधि। उसके बजाय तो ठीक-ठाक बैलेन्स हो न, तो कोई माँगने नहीं आएगा!

## कुदरत का गणित

मेरा कहना है कि गंभीरता रखो, शांति रखो। क्योंकि लोग जिस पूरण-गलन के लिए भागदौड़ कर रहे हैं और गुणाकार-भागाकार कर रहे हैं, वे खुद के जन्म बिगाड़ रहे हैं और बैंक-बैलेन्स में कोई बदलाव हो सके, ऐसा है नहीं। वह नैचुरल है। नैचुरल में क्या कर सकते हैं? इसलिए आपका भय निकाल रहे हैं। हम 'जैसा है वैसा' खुला कर रहे हैं कि जोड़-बाकी करना किसी के हाथ में नहीं है, वह नेचर के हाथों में है। बैंक में जमा होना भी नेचर के हाथ में है और बैंक में कम होना वह भी नेचर के हाथ में है। वर्ना बैंक वाले एक ही खाता रखते। सिर्फ क्रेडिट ही रखते, डेबिट रखते ही नहीं। लेकिन वे जानते हैं कि डेबिट हुए बिना रहेगा नहीं। कुछ लोग तय करते हैं कि 'अब, इस बार मुझे बैंक में एक लाख रुपये रख देने हैं। फिर वे निकालने ही नहीं हैं। निकालेंगे, तब झमेला होगा न!' अरे, लेकिन लोगों ने डेबिट का खाता किसलिए रखा है? बैंक वाले जानते हैं कि ये लोग जब-तब रुपये निकाले बगैर रहेंगे नहीं। अंत में मर तो जाना ही है।

यानी यह सब नैचुरल होता रहता है, क्यों इसमें चिंता करते हो? 'डोन्ट वरी!' और गुणा-भाग करना बंद कर दो न! फिर भी आप लोग चुपचाप ओढ़कर गुणा-भाग करते हो न कि अब यह मिल तो बनकर तैयार होने वाली है। अब दूसरा कारखाना लगाएँगे। अरे रहने दे न, ये बेटे कहते हैं कि, 'पिताजी, सो जाइए।' सब कहते हैं कि, 'ग्यारह बज गए हैं। आपकी तबियत ठीक नहीं है। प्रेशर बढ़ गया है, तो अब आराम से सो जाइए न', लेकिन नहीं, ओढ़कर फिर योजना बनाते हैं। ओढ़कर क्यों, ताकि उसकी चंचलता कोई देख न ले। यानी जोड़-बाकी तो नैचुरल हो रहा है लेकिन गुणा-भाग वह ओढ़कर करता रहता है!

यदि इतना ही समझ ले तो फिर बैंक वाले के साथ कोई झंझट रहेगी? उससे पूछें कि, 'लाख रुपये आपने रखे हैं वह कब निकालोगे?' वह पता नहीं है। लेकिन तू निकालेगा वह तय है! तब कहेगा कि, 'मेरी इच्छा नहीं है'। अब रुपये निकालने की इच्छा नहीं हो न, फिर भी कब निकाल लेगा यह कहा नहीं जा सकता। अरे, तेरा खुद का तय किया हुआ भी अनिश्चित है! लेकिन क्या कहता है कि इच्छा नहीं है। तय किया हो कि नहीं ही निकालने हैं, अब तो इतने बचाने ही हैं। अरे, तू ही नहीं बचने वाला तो फिर ये कैसे बचेंगे! अरे, यह किस तरह की पॉलिसी लेकर बैठे हो! इसके बजाय खा-पीकर खर्च करो न, ताज़ी सब्जियाँ आती हैं वह खाओ न आराम से! फ्रूट लाकर शांति से खाओ और पत्नी के लिए दो-चार अच्छे गहने बनवाकर दो। अरे, वह बेचारी रोज़ किच-किच करती है, फिर भी लाकर नहीं देता!

यह सब क्या है? *पूरण-गलन* है। हमने यह हमारे ज्ञान से देखकर कहा है! अब क्या किसी प्रकार का भय रहा है? एक तरफ कहते हैं कि 'व्यवस्थित' है और दूसरा कहते हैं, बैंक में जोड़-बाकी या फिर बहीखाते के अकाउन्ट में जोड़-बाकी, या फिर इन्कम टैक्स वाला ले लेगा, वह सब 'नैचुरल' है। उसके हाथ में कोई सत्ता नहीं है। वह तो बेचारा निमित्त है। लेकिन गुणा-भाग आपके हाथ में है। यह 'ज्ञान' लिया है इसलिए अब ये गुणा-भाग आप 'खुद' नहीं करते

क्योंकि 'आप' तो 'आत्मस्वरूप' हो गए हो। ये गुणा-भाग तो कब तक करते थे? कब तक योजनाएँ बनाते थे? अज्ञान था, तब तक। अब यदि वैसे ओढ़कर योजनाएँ बनाएँ तो वह 'इफेक्ट' है। वह योजना अगले जन्म के लिए नहीं है, वह तो *निकाली* योजनाएँ हैं। दो प्रकार की योजनाएँ, एक ग्रहणीय योजना और दूसरी *निकाली* योजना। ग्रहणीय योजना में भीतर अशांति रहती है। *निकाली* योजना शांत भाव से होती रहती है। योजना जो की जा चुकी है, उसका *निकाल* तो करना पड़ेगा न? और आपको दिन भर *निकाल* का भाव रहता है न?

आज वह कहता है कि पैसे हैं और दो साल बाद कुछ भी नहीं रहता। यानी लक्ष्मी का स्वभाव कैसा है? चंचल स्वभाव है, उस पर कोई भरोसा मत करना। उसका बहुत ज़्यादा आधार मत मानना। आधार सिर्फ 'आत्मा' का मानना, बाकी सब चीज़ें चंचल हैं।

### दुखिया की व्याख्या?

इसलिए ऐसा माँगना कि और कुछ माँगना ही न पड़े।

**प्रश्नकर्ता** : वही माँगा है।

**दादाश्री** : वह तो माँगना ही पड़ेगा न!

आपको और किस चीज़ की परेशानी है? तेरा वह सब निकाल दूँ। आज सारी परेशानियाँ बता देना।

**प्रश्नकर्ता** : व्यापार से संबंधित परेशानी है।

**दादाश्री** : व्यापार में क्या चाहिए? परेशानी कब नहीं थी?

**प्रश्नकर्ता** : अभी बढ़ गई है।

**दादाश्री** : लेकिन परेशानी कब नहीं थी? यह मुझे बताओ न! किस साल परेशानी चिंता नहीं थी?

**प्रश्नकर्ता** : पहले तो सब ठीक-ठाक चल रहा था, जब तक लेबर ट्रबल नहीं थी, तब तक। मेरी एक फैक्टरी है।

**दादाश्री :** पाँच लाख की फैक्टरी होती है और खुद को, महा दुःखी है, ऐसा मानकर सो जाता है रात भर! दो लाख का फ्लैट हो, बीस लाख की पत्नी हो फिर भी चिंता होती है! देखो मान बैठे हैं! पूरी गलत मान्यताएँ, रोंग बिलीफें! खुद के पास साधन न हों तो भी दुखिया और साधन हों तो भी दुखिया! तुम कब दुखिया नहीं थे वह मुझे बताओ! क्या कभी आराम से खाना खाते हो? आराम से? इसलिए सिर से भार उतारकर कहो कि 'हे दुःख! तुम बैठे रहो!' ऐसा बोलोगे तो दुःख बैठा रहेगा! मुझे तो ऐसा करना आता था। मैं तो दुःख को कह देता था, 'अरे, बैठ जा थोड़ी देर, मुझे खाना खा लेने दे, फिर आना।' हमने ही खड़ा किया है, हम उसे बिठाएँगे तो बैठ जाएगा। खड़ा तो हमने ही किया है न!

तुम्हारे ये सारे दुःख हम निकाल देंगे। निकाल देने में हर्ज नहीं है। घबराना मत। यह तो, सब दुखिया होते हैं। मैं भी दुखिया था! ऐसा मन में मत रखना कि, 'मैं दुखिया कैसे हो गया!' आप दुखिया नहीं हो। आप ऐसा मान बैठे हो। मेरे पास तो बहुत लोग आए, उनमें से किसी ने ऐसा नहीं कहा कि 'साहब, मैं बहुत सुखिया हूँ।' ज्ञान लेने के बाद सुखिया हो गए! लेकिन पहले तो ऐसा कोई नहीं कहता कि 'साहब, मैं सुखिया हूँ।' हम पूछें कि, 'कैसा चल रहा है?' तो कहता है, 'ठीक है!'

### यह तो कैसी नादारी?

एक मिल मालिक सेठ से पूछा कि 'आपका कारोबार कैसा चल रहा है?' तब उन्होंने कहा कि 'सब डिरेलमेन्ट हो गया है।' मैंने कहा, 'बहुत अच्छा हो गया, 'भलुं थयुं भांगी जंजाल, सुखे भजशुं श्रीगोपाल!' (भला हुआ, हुई खत्म जंजाल, सुख से भजेंगे श्री गोपाल!)" रेलवे में डिरेलमेन्ट हो जाए तो दो-चार दिन मास्टर लोग चाय-पानी करेंगे, आराम से खाएँगे-पीएँगे! मैंने उनसे पूछा, 'ऐसा कैसे हो गया?' तब बोले, 'थोड़े बहुत रुपये मिल से कमाए थे, जिसे बैंक में रखे थे, वह बैंक वालों ने वापस दिए ही नहीं! और अब दे भी नहीं रहे हैं! पहले

बैंक से लोन लिया था, अब बैंक वाले देते ही नहीं हैं। इसलिए मेरा ठंडा पड़ गया है। अब आप मुझे कोई विधि कर दीजिए। मैंने कहा, 'कर दूँगा! कर दूँगा!' मुझे लगा कि यह बेचारा बहुत दुःखी है। ये आदमी को बैंक देता नहीं है। भले ही उनकी मिल है लेकिन मिल का क्या करेंगे? मिल को ओढ़ेंगे या बिछाएँगे?

फिर उन्होंने अपने घर मुझे और अन्य लोगों को बुलाया। कहने लगे कि, 'पधरावनी कीजिए न मेरे घर, आपके चरण पड़ेंगे तो मेरा कुछ काम बन जाएगा।' तो मैंने कहा, 'आएँगे'। फिर हम उनके घर गए, वहाँ चाय-पानी-नाश्ता किया। फिर एक पैकेट में रुपये देने लगे। तब मैंने कहा, 'आपसे पैसे नहीं ले सकते। आपकी ऐसी परिस्थिति है, हमें पैसे का क्या करना है?' एक हजार रुपये ही थे, ज्यादा नहीं थे। तब उन्होंने कहा, 'नहीं दादाजी, ये तो लेने ही पड़ेंगे। दादाजी, ऐसा नहीं है, आप जैसा समझते हैं वैसा नहीं है। यह जो दूसरा कारखाना है न, उसमें से साल भर में पाँच लाख रुपये मिल जाते हैं।' मैंने कहा, 'अरे, यह मैं आपके साथ कहाँ आ गया? 'मैं अपने मन में समझा था कि यह पूरी तरह से कंगाल हो गया है जबकि तू तो कह रहा है कि यहाँ अन्य (कमाई) है!!! कहता है, दूसरे पाँच लाख मिलते हैं।' अब इन्हें कहाँ कैसे समझें! फिर उनका समाधान करवा दिया और ज्ञान दिया।

अब सुखिया हुआ है! वे कहते हैं कि, 'दादाजी, आपने मुझे अच्छा सिखाया। भाइयों के साथ मेरा बैर था, वह मेरा बैर आपने खत्म करवा दिया। दादाजी, आपने अच्छा सिखाया। वे यहाँ घर पर आते रहते हैं!' मैंने कहा, 'आप मिल मालिक हैं, आपको ऐसी जगह आते शर्म नहीं आती?' तब वे बोले, 'किस बात की? आपके पास आने में शर्म कैसी?' अन्य जगह जाने में शर्म आती है। 'भुगते उसकी भूल' यह मुझे अच्छी तरह से समझ में आ गया है। मैंने अब तक भुगता। मेरे मन में ऐसा था कि ये सब भाई ही भुगतवा रहे हैं लेकिन भूल तो मेरी ही है। अब समझ में आ गया है। मैं तो भाइयों से बैर के

कारण मन में ऐसे ही भाव रखता था कि, 'उनको ऐसा कर दूँ, वैसा कर दूँ!' तब मैंने कहा, 'अब चुप चाप सब छोड़ दो। सयाने बन जाओ!' बाद में उनसे हजार रुपये लिए दान में, जब दूसरी कमाई के पाँच लाख बताए, तब हजार लिए दान में!

### कैसी उल्टी दृष्टि!

एक भाई की एक करोड़ रुपये की उधारी फँस गई थी। वे यहाँ दर्शन करने आए थे। उन्होंने विधि करवाई। छः महीने बाद दोबारा आए। तब उन्होंने कहा, 'अभी भी पच्चीस लाख बाकी हैं, उसके लिए विधि कर दीजिए न! पचहत्तर लाख मिल गए हैं लेकिन पच्चीस बाकी हैं।' एक करोड़ में चार आने भी आ पाते, ऐसा नहीं था, वे मुझसे ऐसा कह रहे थे। उसमें से पचहत्तर लाख मिल गए फिर भी कहते हैं, 'अब पच्चीस लाख बाकी हैं उसकी विधि कर दीजिए!' लोग ऐसे हैं। 'अरे, पचहत्तर मिल गए, वह तो देख न अब!'

### ...फिर भी दुःखी?

हम एक बार कहीं गए थे। वहाँ एक भाई आए। उन्हें पता चला कि, 'दादाजी एक बड़े ज्ञानी पुरुष हैं और वे हमारा सब ठीक कर देते हैं। उनके आशीर्वाद से सब ठीक हो जाता है', इसलिए वे आए। उन्होंने मुझसे कहा, 'मेरा सबकुछ चला गया है, कुछ भी नहीं रहा।' मैंने पूछा, 'आप कहाँ रहते हैं?' उन्होंने कहा, 'यहीं, पास में ही रहता हूँ।' मैंने पूछा, 'आपके पास क्या फ्लैट नहीं है?' तब वे कहते हैं, 'फ्लैट तो है लेकिन मैं उस फ्लैट का क्या करूँ? हमारे पार्टनर ने खाली हाथ हमें निकाल दिया!' मैंने कहा, 'थोड़ी-बहुत रकम तो लौटाएँगे न!' तब कहने लगे, 'नहीं! अभी तो ऐसा नहीं दिखाई देता कि अब कुछ देंगे। अब तो फिर झगड़ा करके कोर्ट में जाएँगे तभी कुछ होगा!' मैंने सोचा, ये तो बहुत दुःखी हो गए हैं, इसलिए मेरे मन में हुआ कि इनके लिए जल्दी से 'विधि' करो।

फिर मैंने थोड़ी देर धीरज रखा फिर पूछा, 'तब तो अब आपको

सर्विस करने जाना पड़ेगा! मेन्टनन्स करने के लिए क्या कर सकते हैं? सर्विस करने जाना पड़ेगा?’ तब उन्होंने कहा, ‘नहीं, वैसे तो मेरे पास पचास लाख रुपयों की व्यवस्था है।’ तब मुझे लगा कि इन लोगों का विश्वास नहीं कर सकते। हमें इन लोगों की बातों में नहीं आना चाहिए। ‘वैसे तो पचास लाख की पूंजी है लेकिन ऐसा कह रहे हैं कि, ‘सबकुछ लुट गया है!’ यानी इतने पैसे होने के बाद भी ये लोग इतने दुःखी हैं तो जब सचमुच में दुःख आएगा तब इनका क्या होगा? सब लोग कहते हैं कि, यह भाई सचमुच ही दुःखी है, अभी तो लोग कहते हैं वह दुःखी है। इन्हें लोग क्या कहेंगे? सुखी है। मैंने तो अपने आपको भी सुखिया कहा था। आसपास के लोग कहते थे कि, ‘अंबालाल भाई बहुत सुखी हैं’ जबकि मैं मान बैठा था कि मैं दुःखी हूँ। ‘कैसे इंसान हो?’, इस तरह मैं खुद को पूछता और डाँटता! आसपास वालों से पूछने पर सब कहते थे, ‘वे सुखी इंसान हैं।’ फिर चाहे छुपाकर ही सुखी दिखते हों या कुछ भी। छुपाकर भी सुखी दिख सकते हैं या नहीं? पता नहीं चलने देते न?

**प्रश्नकर्ता** : नहीं।

**नहीं, कौए सभी जगह काले**

**दादाश्री** : आपका सब ठीक हो जाएगा भाई, क्या! व्यापार ठीक नहीं लग रहा?

**प्रश्नकर्ता** : ठीक तो है लेकिन लेबर ट्रबल खड़ी हो गई है इसलिए मन में ज़रा अशांति रहती है।

**दादाश्री** : तो लेबर की ट्रबल न हो, वैसे धंधा ढूँढ निकालो न! यह किसी ट्रबल वाले को सौंप दो, पैसे लेकर। हमें यहाँ ट्रबल आए तो यहाँ से वहाँ खिसक जाना चाहिए। लेने वाले भी हैं और देने वाले भी हैं। बेचने वाले को बेचें तो वह लेगा या नहीं? यह कोई शादी की हुई चीज़ थोड़ी है, जिसे हमेशा के लिए नहीं छोड़ सकते?



**प्रश्नकर्ता :** वह तो, यहाँ, महाराष्ट्र में ट्रबल बहुत है इसलिए हमें अब गुजरात में शिफ्ट हो जाना है।

**दादाश्री :** आप वहाँ जाएँगे तो वह ट्रबल वहाँ आकर खड़ी हो जाएगी। ये दुःख तो क्या कभी छोड़ने वाले हैं? कितने पार्टनर हैं?

**प्रश्नकर्ता :** पार्टनर कोई नहीं है, खुद ही प्रोप्राइटर हूँ।

**दादाश्री :** इन्कम टैक्स कितना भरना पड़ता है? सौ पर दो प्रतिशत। क्या लोग ईमानदारी से इन्कम टैक्स भरते होंगे? जबकि सर्विस वालों का तो सीधे ही इन्कम टैक्स काट लेते हैं तो उनको अलग से देना ही कहाँ है? एक व्यक्ति सर्विस में थे, रिसर्च में। उन्होंने मुझे बताया, “तिरपन सौ रुपये वेतन मिलता है। अब कंपनी कहती है कि ‘हम आपका वेतन बढ़ाएँगे। तब मैंने कहा, ‘नहीं, मेरा वेतन मत बढ़ाना। मैं परेशान हो गया हूँ। मुझे सिर्फ आपकी एक गाड़ी दे दीजिए। गाड़ी होने से मुझे आने-जाने में सुविधा रहेगी। वेतन बढ़ाएँगे तो फिर वे लोग ले जाएँगे।” ‘कौन ले जाएँगे?’ ‘सरकार’। ऐसी कोई युक्ति होगी ही न? उसमें भी युक्ति तो है न? वह भी आती है न? वे ऐसा करें तो आप कोई युक्ति लगाकर सॉल्यूशन ले आओ। आपके ये सब दुःख चले जाएँगे। दुःख तो दूर करने हैं न? आपकी ये लेबर की ट्रबल निकालनी है या अपनी ट्रबल निकालनी है?

**प्रश्नकर्ता :** अपनी।

**दादाश्री :** जिसकी अपनी ट्रबल निकल गई उसकी पूरी निकल गई। जिसकी खुद की ट्रबल निकल गई उसकी सारी निकल गई।

**प्रश्नकर्ता :** फिर बड़ौदा शिफ्ट होने की ज़रूरत नहीं है न?

**दादाश्री :** बड़ौदा जाने की क्या ज़रूरत है? जहाँ देखो वहाँ ट्रबल आगे ही आगे आएगी। हम सेफसाइड ढूँढते हैं, लेकिन जहाँ देखो वहाँ यह माया आगे आए बिना नहीं रहेगी। एक नहीं तो दूसरी, लेकिन ट्रबल तो निरंतर रहनी ही है। यदि अपनी ट्रबल निकल जाए

तो कोई ट्रबल नहीं रहेगी। आपकी वाइफ आपको सही कहती है कि, 'जहाँ जाओगे वहाँ ट्रबल आएगी'। जहाँ देखो वहाँ कौए काले ही हैं। मैं सब जगह जाकर आया हूँ। कहीं-कहीं खास तौर पर अधिक काले हैं और कुछ तो यहाँ पर ज़रा कॉलर वाले हैं। मैं सब जगह देखकर आया हूँ लेकिन इसके अलावा और कोई जाति है ही नहीं। जहाँ देखो वहाँ कौए काले।

### वहाँ केस सुलझा दो

**प्रश्नकर्ता :** मुझे एक समस्या खड़ी हुई है। मैंने एक रिक्शा वाले को पेपर का एक पार्सल दूसरे गाँव पहुँचाने के लिए दिया था। उसने वह ट्रक से भेज दिया और ऊपर से पूरे पैसे माँग रहा है। पार्सल देर से पहुँचा। मैंने जाँच करवाई तब सब पता चल गया। अब वह रिक्शा वाला रोज़ ऑफिस में आकर परेशान करता है और मैं कहता हूँ कि तुम्हें एक पैसा भी नहीं मिलेगा। तब क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** सुलझा लो। हर एक केस सुलझा लो और लड़ना हो, ऐसा तांता रखना हो तो किसी धनवान के साथ रखना। छुरी बिना का हो वहाँ तांता रखना। ये गरीब बेचारे, खाने का भी ठिकाना नहीं होता, दारू पीकर घूमता हो। उसके साथ हल ला देना।

### झगड़ा करने में भी विवेक

आजकल तो सब उलझ गया है। इसलिए छेड़ना मत। ये सामान उठाने वाले ज़्यादा पैसे माँगे न, तब कोई व्यक्ति अड़ जाता है कि, 'इतने पैसे तो देने ही पड़ेंगे।' तो हम उसे कहें कि 'भाई, ज़रा भगवान से तो डरो।' फिर भी वह कहे कि 'भगवान से क्या डरें? दो रुपये भी नहीं लेंगे तो खाएँगे क्या?'

तब फिर हम कहते थे कि, 'ले भाई, ये दो रुपये और ऊपर से ये दस पैसे।' हम जानते थे कि आठ आने का काम था लेकिन उसने दो रुपये लिए तो हमें समझना है कि ऐसे तो कभी कभार मिलते

हैं, रोज़ ऐसे नहीं मिलते। अगले दिन खोजने जाएँ तो भी वैसा नहीं मिलेगा। मज़दूर ही कहेंगे कि, 'चाचा, दो रुपये तो थोड़े ही ले सकते हैं।' यानी कभी दो रुपये वाले मिल जाते हैं, कभी डेढ़ रुपये वाले मिल जाते हैं, कभी आठ आने वाले भी मिल जाते हैं। हमें क्यों ऐसे मिले? यह अपना ईनाम है, इसलिए उसे दे दो।

किसी को ज़रा भी छेड़ना मत क्योंकि सब सुलगा हुआ है। वैसे ऊपर से ऐसा लगता है कि कुछ सुलगा नहीं है। धक्का नहीं रहा है लेकिन भीतर में झुलस रहे हैं। ज़रा सा छेड़ा की लपटें उठेंगी। इसलिए इस काल में किसी प्रकार की किच-किच किसी के साथ मत करना। बहुत जोखिमदारी वाला काल है। वह बिगड़ने लगे न, तब कहना कि 'भाई, हमें भी धंधा करना है न, वर्ना हम क्या खाएँगे?' ऐसा-वैसा करके अटा-पटाकर काम लेने जैसा समय है। सिर्फ वह लोहा गर्म हो गया हो, तब उसे हथौड़ा मार सकते हैं, बाकी, अन्य कहीं तो मार नहीं सकते हैं। यदि उस गर्म हुए लोहे को न मारें तो भी परेशानी, उसको गढ़ा नहीं जा सकता। जबकि इन जीवित को तो, ज़रा सा छेड़ा कि परेशानी। फिर भी प्रकृति देख लेनी चाहिए। अपना हमेशा का नौकर हो तो उसकी प्रकृति समझ लेनी है। उसमें ज्यादा हर्ज नहीं है। हम जानें कि यह सयाना है, उसके साथ सयानी बातें करें तो हर्ज नहीं है। लेकिन ये बाहर की पब्लिक के साथ सचेत रहना है। क्योंकि कब, कौन सा व्यक्ति कैसे गुस्सा हो जाए वह कैसे पता चले? फिर वह आपसे ही कैसे मिल गया? इसलिए समझाकर उससे छूट जाना। यह विचित्र काल है इसलिए उस बेचारे को बहुत व्याकुलता होती है। भीतर से बहुत दुःखी होता है। इसलिए ज़रा सा भी छेड़ो कि चाकू मारता है। सामने वाले को बहुत दुःख कब देता है? जब खुद का दुःख सहन न हो तभी न?

**प्रश्नकर्ता :** उसे खुद का दुःख तो होगा ही, लेकिन अभी तो, यों रास्ते में जाते हुए बात-बात में, बिना कोई लेना-देना, ज़रा सा सुलगा कि, ज़रा सा उसे हाथ छू गया कि सीधा मारपीट पर आ जाता है।

**दादाश्री :** अरे, मारपीट तो क्या? वह कुछ नई तरह का ही कर देता है। मारपीट से नहीं हटे तो चाकू मार देता है। इसलिए उनसे तो ऐसा कहना पड़ेगा कि 'मेरे कारण तुम्हें कुछ लग गया होगा।' ऐसा-वैसा कहकर छूट जाना चाहिए। ये तो ऐसा है कि जंगली भैंसे लड़ रहे हों, वहाँ बड़ा राजा हो तब भी क्या वह जा सकता है? वे भैंसे राजा का लिहाज़ रखेंगे क्या? अभी तो ऐसा जंगली भैंसों जैसा हो गया है!

यानी किसी के साथ किच-किच मत करना और ऐसे लोग तो कभी कभार ही मिल जाते हैं न! अब उनके साथ झगड़ा करके क्या मिलेगा? पहले एक बार कहना कि 'भगवान से तो डर।' तब कहे, 'भगवान वगैरह क्या?' ऐसे शब्द निकलें न, तो समझ लेना कि यह दंगा फसाद वाला है!

### प्याला फूटे तब...

एक सेठ आए थे। मैंने उनसे कहा, 'हम पच्चीस लोग आपके यहाँ चाय पीने आएँ तब यदि नौकर के हाथ से पच्चीस कप-प्लेट गिर पड़ें तो आपको क्या होगा?' तब वे कहने लगे कि 'मैं नौकर से इतना पूछूँगा कि 'भाई, जला तो नहीं न?' तब मैंने कहा, 'बहुत अच्छा कहा जाएगा।' देखो, हिन्दुस्तान में कैसी अद्भुत चीज़ें हैं!

वर्ना पच्चीस कप-प्लेट फूटते ही सब से पहले तो तुरंत मन में सोचने लगता है कि इस नौकर ने सवा सौ रुपयों का नुकसान किया। गुणाकार हो जाते होंगे या नहीं? पेपर पर तो थोड़ी देर लगती है लेकिन मन में तो देर नहीं लगती!

फिर मैंने पूछा, 'जेब कट जाए तो!' तब वे कहने लगे कि 'उसे ज़रूरत होगी तो ले जाएगा, वर्ना नहीं ले जाएगा।' तब मुझे लगा कि यदि ऐसे गुण होते तो मैं कब का ही भगवान हो गया होता।

आप बात तो अच्छी करते हैं लेकिन एक भी व्यक्ति आपसे सुधरा नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** सब से कठिन तो नौकर को सुधारना होता है। वह नौकर सुधर गया।

**दादाश्री :** नौकर सुधर जाता है। नौकर तो ऐसा समझता है कि यह सेठानी अच्छी है। ऐसा समझता है, लेकिन यह तो घर का मेम्बर, 'मेम्बर ऑफ द होम।' 'होम मेम्बर' नहीं मानते। नौकर तो सुधर जाता है। अरे, आपकी और मेरी जान-पहचान होती तो मैं सुधर जाता। बातें अच्छी करते हो। सामने वाले को समझ में आ जाए ऐसी बात है लेकिन 'होम मेम्बर' नहीं मानते।

बड़े सेठ के यहाँ भी घर में प्याले फूट जाएँ तो *अजंपा* होता है, तो भाई, तू कौन से गुरु बनाने गया था? प्याले फूट जाएँ फिर भी तेरा *अजंपा* नहीं जाता है, ऐसा तो क्या समझा तूने? यह तो अज्ञान बढ़ा लिया! अज्ञानी की संगत में पड़े इसलिए अज्ञान बढ़ गया इसलिए कप फूटा कि तुरंत उसे पता चल जाता है कि यह तो बहुत नुकसान हो गया! पंद्रह-बीस रुपयों का नुकसान हुआ! फिर रोना-धोना शुरू! इन आदिवासियों के प्याले फूट जाएँ न, तो उनका अज्ञान पतला है इसलिए कुछ भी नहीं जबकि इनका अज्ञान तो मोटा!

### जूतों के लिए भी विलाप

नौकर प्याले लेकर आए और फूट जाएँ तो भीतर कुछ होता है या नहीं होता? देखो न, प्यालों के लिए विलाप करता है। बच्चों के लिए भी विलाप करता है और प्यालों के लिए भी विलाप करता है। संसारियों को तो सभी के लिए विलाप करना चाहिए न? अरे, जूते खो गए हों न, तो ये बड़े सेठ लोग भी विलाप करते हैं। दिन भर जो भी आए उन्हें कहते रहते हैं कि मेरे नए जूते चले गए। अरे, विलाप किस के लिए करते हो? किसी के लिए भी विलाप नहीं करना चाहिए। जूते गए तो हमें समझना चाहिए कि किसी पुण्यशाली के हाथ लगा है। उसका पुण्य होगा तभी तो ऐसे महँगे जूते उसे मिले न? वर्ना सेठ के जूते कब मिलते? लेकिन हमें समझ लेना चाहिए कि हमारा हिसाब चुक गया!

एक बार ऐसा हुआ था। एक मिल वाले सेठ थे, उनके डेढ़ सौ रुपये के बूट थे तो जब सब लोग खाना खाने रूम में गए तब कोई वे बूट पहनकर ले गया। फिर जब सेठ को बाहर जाने का हुआ, तब बूट नहीं मिले। फिर तो मन में थोड़ी देर तक विलाप हुआ! अब विलाप कब करना चाहिए? जब दामाद मर गया हो तब विलाप करना चाहिए। लेकिन सेठ ने तो जूतों के लिए विलाप किया! फिर दोपहर को उनके घर कोई परिचित आए। तब सेठ उनसे कहने लगे कि 'कितना खराब समय आ गया है? मेरे डेढ़ सौ रुपये के जूते कोई ले गया।' अरे, फिर वापस विलाप करने लगे?! अरे, कितनी बार ऐसा विलाप किया है। शाम को फिर चार लोगों से कहा। ऐसे विलाप करते रहते हैं। अरे, इसके लिए कभी विलाप करना चाहिए?

### लाचारी महापाप

लाचारी जैसा अन्य कोई पाप नहीं है, लाचारी होती होगी? नौकरी नहीं मिल रही हो तब भी लाचारी, घाटा हुआ तब भी लाचारी, इन्कम टैक्स ऑफिसर डाँटे तब भी लाचारी। अरे! लाचारी क्यों करते हो! बहुत हुआ तो वे पैसे ले लेंगे, घर ले लेंगे और क्या ले लेंगे? लाचारी क्यों करनी है? लाचारी तो भगवान का भयंकर अपमान है। आपने लाचारी की तो भीतर भगवान का भयंकर अपमान होता है। लेकिन भगवान क्या करें?

**प्रश्नकर्ता :** भगवान खुद फँस चुके हैं।

**दादाश्री :** धंधे में घाटा होगा, ऐसा होगा। अरे! छोड़ न, कहना, 'दिवाला निकले। हम तो सोने चले।' इससे बड़ा पद और कौन सा आएगा? जगत् से पार निकलकर बैठे हैं। डूबने वाले डूबेंगे। जिसे मोक्ष में जाना है उसके लिए कोई नियम बाधक नहीं है। मार कर भी दे दो और निकल जाए तो भी कोई हर्ज नहीं है। यह तो ज्ञानी पुरुष का दिया हुआ शुद्धात्मा है।

भय दिखाएँ कि अगले साल ढाई गुना नुकसान होगा तो कहना

कि, होने दो दिवालिया। हम तो सो जाते हैं। इकलौता बेटा मर जाए, तो कहना कि, 'सर्वस्व चला जाए', लेकिन लाचारी नहीं होनी चाहिए।

### यहाँ घाटा होता है, वहीं से फायदा

व्यवहारिक नियम कैसा है! शेयर बाज़ार में नुकसान हुआ हो तो किराना बाज़ार से उसकी भरपाई मत करना। शेयरबाज़ार से ही भरपाई करना। मूल वह सामर्थ्य नहीं था फिर भी काम करने गए इसलिए नुकसान होता है तब फिर किराने की दुकान खोलकर उसकी भरपाई करने जाते हैं, ऐसे हैं ये लोग। पहले तो तराजू में तोल-तोलकर देते हैं और फिर मिलावट करके देते हैं लेकिन कहते हैं, 'नुकसान की भरपाई करो।' अरे, ऐसा मत करना। निरी पाप और हिंसा हो रही है। ऐसे में वापस लौट जा और शेयरबाज़ार से दोस्ती करके फिर से लगा। अरे, जिस गाँव में नुकसान हुआ हो, उसी गाँव से भरपाई करना चाहिए।

मैंने ऐसा हिसाब बचपन में ही निकाल लिया था कि जिस बाज़ार में घाटा हुआ हो उसकी अन्य बाज़ार से भरपाई करने जाएँगे तो क्या होगा? उस घाटे की भरपाई नहीं होगी। कितने इतनी छोटी सोच वाले होते हैं। घाटा, कॉन्ट्रैक्ट के धंधे में हुआ होता है और पान की दुकान से भरपाई करने जाते हैं। अरे, घाटे की भरपाई ऐसे नहीं होती। कॉन्ट्रैक्ट के धंधे का घाटा, कॉन्ट्रैक्ट से ही भरपाई होगा। लेकिन वे पान की दुकान लगाते हैं, उससे कुछ जमा नहीं होता बल्कि लोग आपका गल्ला भी ले जाएँगे और आपका तेल निकाल देंगे। इसके बजाय पैसे न हों फिर भी वहाँ जाकर खड़े रहना। उस दिन ज़रा अच्छा पैन्ट पहनकर जाना, किसी से दोस्ती हो जाए तो फिर से काम शुरू हो जाएगा और उसे दोस्त वगैरह सब मिल जाएँगे।

हमें निश्चित करना चाहिए कि कुछ गलत नहीं करना है, कभी भी गलत नहीं करना है और रुपये, आने, पैसे सब चुका देना है, देर-सवेर पर लौटा देना है। ऐसा निश्चित करना चाहिए कि इसी जन्म में अवश्य लौटा देने हैं।

अतः नियम कैसा है कि जहाँ जिस बाज़ार में घाव लगा हो न, उसी बाज़ार में घाव भरता है। ऐसा है कि जहाँ घाव लगा हो न, उस एरिया में ही उसके (घाव) भरने की दवाई होती है। हम जो गलती करके आए हैं उसी जगह गलती का हिसाब पूरा नहीं करते, तो किसी और जगह पर जाने की गलती नहीं करनी चाहिए लेकिन बुद्धि ही फँसाती है।

मोक्ष में जाना हो तो भगवान ने द्रव्य को महत्व नहीं दिया है। इसलिए हमें तो एक ही भाव रखना है कि किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी दुःख न हो और दूसरा यह कि किसी की भी लक्ष्मी आपके पास न रहे, क्योंकि लक्ष्मी तो ग्यारहवाँ प्राण है। मनुष्य के दस प्राण हैं। फिर लक्ष्मी को ग्यारहवाँ प्राण कहा है। इसलिए किसी की भी लक्ष्मी आपके पास न रहे। 'हमारी लक्ष्मी किसी के पास रहे, उसमें हर्ज नहीं है', निरंतर ऐसा ध्येय रहना चाहिए। फिर आप खेल खेलो, उसमें हर्ज नहीं है। ऐसा ध्येय लक्ष्य में रखकर आप खेल खेलो लेकिन खिलाड़ी मत बन जाना। खिलाड़ी बने कि आप खत्म! यानी इस जगत् के कुछ 'लों' तो होंगे ही न! हर एक व्यापार उदय और अस्त वाला है न! सब उदय और अस्त वाला ही होता है।

बहुत सारे मच्छर हों तब भी पूरी रात सोने नहीं देंगे और दो मच्छर होंगे तब भी पूरी रात सोने नहीं देंगे। तब हमें कहना चाहिए कि 'हे मच्छरमय दुनिया! दो ही सोने नहीं देते तो सब आओ न!' ये फायदा और नुकसान, ये मच्छर ही कहलाते हैं। मच्छर तो आते ही रहेंगे। हमें उन्हें उड़ाते रहना है और हमें सो जाना है।

भीतर अनंत शक्ति हैं। वे शक्ति वाले क्या कहते हैं कि 'हे चंदूभाई! आपका क्या इरादा है?' तब भीतर, बुद्धि बोलती है कि, 'इस धंधे में इतना घाटा हुआ है। अब क्या होगा? अब नौकरी करके घाटे की भरपाई करो न।' भीतर अनंत शक्ति वाले क्या कहते हैं, 'हम से पूछो न, बुद्धि की सलाह क्यों लेते हो? हम से पूछो न, हमारे पास अनंत शक्ति है। जो शक्ति घाटा करवाती है, उसी शक्ति के पास



नफा ढूँढो न! घाटा करवाती है दूसरी शक्ति और फायदा खोजते हैं कहीं और। इससे कैसे भागाकार होगा?’ भीतर अनंत शक्ति हैं। यदि आपके ‘भाव’ नहीं बदलें तो दुनिया में ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो आपकी इच्छानुसार न चले। ऐसी अनंत शक्ति हमारे भीतर हैं। लेकिन किसी को दुःख न हो, किसी की हिंसा न हो, ऐसा अपना लॉ होना चाहिए। अपने भाव का लॉ इतना दृढ़ होना चाहिए कि देह जाए लेकिन अपना भाव न टूटे। देह जाएगी तो एक बार जाएगी ही, उसमें कुछ डरने की ज़रूरत नहीं है। इसी तरह डरते रहे तब तो इन लोगों की हालत ही खराब हो जाएगी न, कोई सौदा ही नहीं करेंगे न!

हमने तो ऐसे बड़े-बड़े लोग देखें हैं... वे फिर दलाल होते हैं, वे चालीस लाख रुपये की वसूली की बातें करते हैं और फिर कहते क्या हैं कि, ‘दादाजी, ज़्यादातर सब लोग टेढ़ा ही बोलते हैं, तो क्या होगा?’ तब मैंने कहा कि, ‘ज़रा धीरज रखनी पड़ेगी, नींव मज़बूत रखनी पड़ेगी। ये गाड़ियाँ इतनी ज़्यादा तेज़ चलती हैं, इसमें सलामत रहते हैं तो क्या धंधे में सेफ नहीं निकल पाएँगे? बाहर तो थोड़ी देर में डर जाते हैं। ऐसा लगता है कि ज़रा सी बात में टकरा जाएँगे लेकिन कोई टकराता हुआ दिखता नहीं हैं। क्या सब टकरा जाते हैं? वे लोग निकल जाते हैं, तो ये लोग नहीं निकल पाएँगे? रास्ते पर तो यदि डर घुस जाए तो फिर आप सांताक्रुज़ से यहाँ दादर तक कैसे आ पाएँगे? और यदि आते हो तो आप मूर्च्छित होंगे तभी डर नहीं लगता, इसलिए भीतर से ज़रा स्ट्रॉंग रहो न! यानी जिस जगह पर घाव लगा न, उसी जगह वह भरेगा इसलिए जगह मत बदलना। वैसे कायदे की दृष्टि से हम जानते हैं कि ऐसा होना चाहिए।

फिर भी दुनिया चलती है न! कभी भी रुकी नहीं है। एक सेकन्ड के लिए भी नहीं रुकी। मियाँभाई का भी चलता है, वे क्या कहते हैं कि, ‘कल की बात कल हो जाएगी’ और हिन्दू लोग कहते हैं कि, ‘कल क्या करेंगे?’ यदि मियाँभाई का चल रहा है तो क्या आपका रुक जाएगा? क्या यह दुनिया बंद हो जानी है? लेकिन ऐसा

है न कि जहाँ तक हो सके समुद्र में मत उतरना और उतरना ही पड़े तो डरना मत। नियम यही रखना कि समुद्र में उतरना ही नहीं है क्योंकि समुद्र कोई भूमि नहीं है। इसलिए जहाँ तक हो सके हमारा ऐसा नियम होना चाहिए कि उतरना ही नहीं है। फिर भी यदि समुद्र में जाना पड़े तो डरना मत। क्योंकि आ गए, तो आ गए, तो अब डरना मत, निडर रहना। जब तक निडर रहा, अल्लाह आपके साथ है और डर गए कि अल्लाह कहेंगे, 'हमारे पास नहीं, जाओ औलिया के पास चले जाओ।' फिर वहाँ औलिया मिल जाते हैं। वह औलिया से कहता है कि मेरा कुछ कर दो न! तब औलिया कुछ माला वगैरह दे देता है और उससे पैसे ले लेता है। ये अल्लाह क्या बहरे हैं? सब सुनते हैं, हमें नुकसान हुआ हो तो क्या वे नहीं जानते होंगे? यानी थोड़ा-बहुत तो व्यक्ति को स्ट्रॉंग होना चाहिए न। वैसे हम भी धंधे में आपके जैसे ही थे। हम यह सब बोलते जरूर हैं, ये सारी टेक्नॉलोजी मेरे ध्यान में थी लेकिन मन इतना कच्चा नहीं था इसलिए हम समुद्र में जाते ही नहीं थे। फिर भी यदि गए तो हिम्मत नहीं छोड़ते थे। इसलिए जहाँ से घाटा हो वहाँ से भरपाई करना। भगवान के वहाँ रेसकोर्स या कपड़े की दुकान और व्यापार में कोई फर्क नहीं है। लेकिन मोक्ष में जाना हो तो इस खतरे में मत पड़ना, समुद्र में मत जाना और जाने के बाद कुदरती तौर पर निकल सको उस तरह निकल जाना, धक्का मत मारना।

मैं स्टीमर से कहता था कि तुम्हें ठीक लगे तब डूबना, लेकिन हमारी इच्छा नहीं है। हमारी इच्छा नहीं है ऐसा बोलना पड़ता है, वना स्टीमर कहेगा कि इनको हम से प्रेम नहीं है। इसलिए हम स्टीमर से कहते थे कि हमें शादी मंजूर है। हमारी इच्छा नहीं है फिर भी तुम्हें डिवाँर्स लेना हो तब ले लेना। ऐसी फूँक मारने के बाद पता चले कि अपना स्टीमर तो डूब गया है, तब हम समझ जाते कि हमने तो पहले से ही कहा था न, फिर डूबा तो डर घबराहट नहीं! कभी न कभी तो स्टीमर समुद्र में डूबेगा ही न। स्टीमर क्या जमीन पर डूबेगा? समुद्र में ही डूबेगा न?

इसलिए धंधा करना है या नहीं करना है, दोनों में से कुछ भी मत कहना क्योंकि वह व्यवस्थित के ताबे में है। वर्ना आपको कह नहीं देते कि छोड़ दो ये सब? लेकिन वह व्यवस्थित के ताबे में है। आप भी व्यवस्थित के ताबे में हो और मैं भी व्यवस्थित के ताबे में हूँ।

## दे कर पाओ

**प्रश्नकर्ता :** पैसे किस तरह प्राप्त करें? गलत काम करके भी पैसे प्राप्त कर सकते हैं?

**दादाश्री :** उसके परिणाम सहन करने हो तो लेना। परिणाम सहन करने की शक्ति हो तो लेना। आपके साथ कोई गलत करके पैसे ले जाए तो आपको सुख लगेगा क्या?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** किसी के साथ गलत करके पैसा नहीं लेना चाहिए। सामने वाले को दुःख हो, वह खुद को दुःख होने के बराबर है। एक भी गलत पैसा नहीं लेना चाहिए। अपने पुण्य का मिल आए वही सही है।

आपके साथ कोई गलत करके पैसे ले जाए, तो आपको क्या अच्छा लगेगा? सामने वाले को दुःख होगा न? किसी को दुःख हो वैसा काम ही नहीं करना है।

इस दुनिया में सुख देंगे तो सुख मिलेगा, लेकिन दुःख ही देंगे तो दुःख मिलेगा। क्या देते हो? मिक्स्चर देते हो?

**प्रश्नकर्ता :** सुख देने का प्रयत्न करता हूँ।

**दादाश्री :** फिर भी दुःख क्यों दे देते हो! प्रयत्न क्यों सफल नहीं होता?

**प्रश्नकर्ता :** मैं अभी तो लाइफ इन्श्योरेन्स का काम करता हूँ। यहाँ लाइफ इन्श्योरेन्स सच्चाई से नहीं मिलता। इसलिए एप्लिकेशन

करने के लिए गलत करना ही पड़ता है। यदि सच्चाई के मार्ग पर जाना चाहें तो बाधाएँ आती हैं। इसलिए मुझे ऐसा होता है कि गलत तरीके से पैसा कमाना चाहिए? या फिर पैसा कमाना ही नहीं चाहिए? या सच के रास्ते चलना चाहिए?

**दादाश्री :** सच के रास्ते पर चलना। उससे भीतर में शांति रहेगी। भले ही बाहर पैसे न हों लेकिन भीतर शांति और आनंद रहेगा। गलत रास्ते का पैसा टिकता भी नहीं और दुःखी-दुःखी कर देता है। भीतर दुःखी करता है इसलिए ऐसा तय करना कि गलत रास्ते पर जाना ही नहीं है। सब को सुख दोगे तो सुख मिलेगा। दुःख दोगे तो दुःख मिलने की शुरुआत होगी। क्या आपको दुःख अच्छा लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** तो फिर दूसरों को भी कैसे अच्छा लगेगा? आपके पास जो भी शक्ति हो उससे ओब्लाइज करना। अन्य तरह से करना लेकिन सामने वाले सब को सुख देना। सुबह में तय करना चाहिए कि मुझे जो भी मिले, उसे कुछ न कुछ सुख देना है। पैसे न दे सकें तो अन्य कई रास्ते हैं। समझा सकते हैं, कोई उलझन में हो तो धैर्य बंधा सकते हैं और पैसे भी पाँच-पचास डॉलर तो दे सकते हैं न!

### करो औरों का और होगा खुद का

जितनी जिम्मेदारी से औरों का करता है, उतना खुद का ही करता है।

**प्रश्नकर्ता :** जो औरों के लिए करता है, वह खुद के लिए ही करता है। वह किस तरह?

**दादाश्री :** सभी आत्माएँ एक ही स्वभाव के हैं। इसलिए जो आत्मा के लिए करता है वह खुद की आत्मा को पहुँचता है। औरों के आत्मा के लिए करते हैं तो वह खुद की आत्मा को पहुँचता है और जो औरों के देह के लिए करते हैं, वह भी पहुँचता है। हाँ, सिर्फ

आत्मा के लिए करते हैं, वह दूसरी तरह से पहुँचता है। मोक्ष में जाने का रास्ता खुल जाता है और यदि सिर्फ देह के लिए करते हैं तो यहाँ सुख भोगता रहता है। यानी सिर्फ इतना फर्क है। औरों के लिए करते हैं तो औरों के लिए होता है। जो औरों के लिए करते हैं, वह खुद के लिए ही करते हैं। जो सिर्फ खुद के लिए करते हैं, वे खुद के लिए नहीं करते हैं। उससे खुद का काम पूरा नहीं होता है। यानी औरों के लिए करना वह पुण्य कहलाता है और खुद के लिए करना वह पाप कहलाता है। आपने अगले जन्म के लिए तैयारी नहीं की है न? पुण्य तो नहीं बाँधा है न?

**प्रश्नकर्ता :** वास्तव में ऐसा भेद किसी ने समझाया नहीं था।

**दादाश्री :** ये बच्चे पालते हैं वह भी खुद के फायदे के लिए करते हैं। बच्चे पालना भी औरों के लिए करने के बराबर है। भले ही मोह से पालते हैं लेकिन औरों का करते हैं। इसलिए जो बच्चे पालते हैं, उन्हें भी खाने का तो मिलता है। ऐसे हों जो किसी के लिए कुछ न करते हों, लेकिन बच्चे पालते हों तो उनको भी खाना तो मिलता है।

औरों के लिए करना, वही धर्म है। खुद के लिए किए बिना तो चारा ही नहीं है। वह अनिवार्य है। तो ऐच्छिक क्या है? औरों का करना, वह।

**प्रश्नकर्ता :** हम औरों का करने जाते हैं तो लोग आकर उल्टा कहते हैं कि, 'खुद का संभालो न!' खुद का तो ठिकाना नहीं है!

**दादाश्री :** लोग तो इतने ज़्यादा सयाने हैं कि गलत रास्ते पर ले जाएँ। ऐसे हैं। खुद भी उल्टे रास्ते पर जाते हैं और औरों को भी ले जाते हैं। फिर बाहर न हो तो कोई हर्ज नहीं है।

### परिणाम, छल-कपट का

क्या व्यापार में छल-कपट करते हो?

**प्रश्नकर्ता :** बिज़नेस है इसलिए थोड़ा-बहुत तो करना पड़ता है न?

**दादाश्री :** यानी तुम छल-कपट करते हो?

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा तो लोग भी करते होंगे न?

**दादाश्री :** लेकिन मेरा कहना ऐसा है कि हम यदि बंद कर दें तो सामने वाला भी बंद कर देगा, तीसरा भी बंद कर देगा, इस तरह सब लोग छल-कपट करना बंद कर देंगे तो कितना अच्छा लगेगा? सब ऐसा करते हैं, क्या इसलिए आप करते हो?

**प्रश्नकर्ता :** यह तो बिज़नेस है इसलिए ऐसा बोलना पड़ता है न?

**दादाश्री :** वर्ना क्या होगा?

**प्रश्नकर्ता :** झूठ न बोलें तो ऑर्डर नहीं मिलते, काम नहीं मिलता, बिज़नेस नहीं मिलता न!

**दादाश्री :** लोगों में कितनी गलत श्रद्धा बैठ चुकी है? पूरे दिन झूठ बोलने से कितना लाभ होगा?

**प्रश्नकर्ता :** कुछ नहीं।

**दादाश्री :** क्यों! ज़्यादा झूठ बोलेंगे तो क्या ज़्यादा लाभ नहीं होगा?

**प्रश्नकर्ता :** वह तो, लिमिट में बोलेंगे तो लाभ होगा।

**दादाश्री :** यह तो एक डर बैठ चुका है कि झूठ बोलेंगे तभी लाभ होगा!

दो में से एक आईटम पर आओ। भगवान क्या कहते हैं? या तो सच बोलो या झूठ बोलो, तो दोनों पर मैं राज़ी हूँ लेकिन आप मिक्स्चर मत करना। मैं भगवान से पूछता हूँ कि भगवान, आप किस

पर राज़ी हो? जो बुरा करते हैं उस पर राज़ी हो या अच्छा करते हैं उस पर? तब भगवान कहते हैं, 'नहीं, एकदम अच्छा करने वाले पर मैं राज़ी हूँ या फिर एकदम बुरा करने वाले पर भी मैं राज़ी हूँ, लेकिन तू मिक्स्चर मत करना। यदि तुम मिक्स्चर करोगे तो तुम्हें समझ में ही नहीं आएगा कि यह सुख कहाँ से आता है।' यह तो ऐसा ही समझ में आता है कि झूठ बोलते हैं इसलिए सुख मिलता है। फिर लोगों को वैसी श्रद्धा हो जाती है।

### मंदी के नए धंधे

ज़रा सी मंदी आए तो क्या होता है, जानते हो?

ये पूरे धंधे मंद हो जाते हैं। मिलें 'सिक' हो जाएँ तब सब नौकर निकाल दिए जाते हैं। बेरोजगार होने पर चोरी का धंधा करेंगे। तब सोसाइटी में पता चलता है। बेरोजगार हुए, फिर क्या करते हैं लोग? तनख्वाह तो खर्च हो गई होती है। इसलिए फिर चोरी करते हैं।

### रिश्वत का कारण

**प्रश्नकर्ता :** रिश्वतखोरी का कारण तो आर्थिक असमानता है न?

**दादाश्री :** नहीं, आर्थिक असमानता के कारण नहीं। ये तो व्यक्तियों की वृत्तियाँ दिन-ब-दिन हीन होती जा रही हैं। लोग बुरे नहीं हैं लेकिन संयोग ऐसे आ गए हैं, जिससे ऐसी स्थिति खड़ी हो गई है। बाकी, जब से यह जगत् है तब से रिश्वतखोरी तो है ही। लेकिन पहले अलग तरह की थी। पहले चापलूसी करते थे, ऐसी रिश्वतखोरी थी। अभी तो सभी जगह रुपया ही रुपया हो गया है।

**प्रश्नकर्ता :** कालाबाज़ारी करने वाले को मुँह पर कालाबाज़ारी नहीं बोल सकते हैं।

**दादाश्री :** मैं तो कह सकता हूँ। मैं तो कालाबाज़ारी कह सकता हूँ। नालायक कह सकता हूँ, गुंडा है ऐसा कह सकता हूँ, मैं तो सब

बोल सकता हूँ, क्योंकि मुझे किसी से कुछ नहीं चाहिए। जिसे कुछ भी चाहिए, उसे ज़रा अच्छा बोलना पड़ता है। मीठा-मीठा बोलना पड़ता है। मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।

व्यापार कर रहे हों, तब निकम्मे लोग न घुस जाएँ इसलिए 'ऐसा है, वैसा है, नंग है' इस तरह बोलना। ताकि निकम्मे लोग हों, तो सब भाग जाएँ। कोई बुरा व्यक्ति लाभ न ले जाए। इसलिए नाटक तो करना पड़ेगा न! 'नंग आ गए हैं', ऐसा सब बोलेंगे तब जो नंग होंगे वे तुरंत समझ जाएँगे कि ये तो हमें कह रहे हैं!

### उतरा हुआ चेहरा!

ये सभी व्यापारी क्या चेहरे पर अरंडी का तेल लगाकर घूमते हैं? नहीं, फिर भी उनका चेहरा ऐसा हो जाता है जैसे अरंडी का तेल पीया हो, किसलिए?

दिन भर सोचते रहते हैं कि, 'यह दुकान बड़ी कर लूँ!' अब, इस दुनिया में पैसे कमाने के विचार किसे नहीं आते? ऐसे विचार किसे नहीं आते होंगे? अब यदि सब कमाने के लिए घूमते रहें तो फिर कुदरत कैसे पूरा कर सकती है? वह सब को कैसे दे पाएगी? उसके बजाय, कुछ लोग तो ऐसे रहो न भाई कि, 'मुझे पैसे नहीं चाहिए। जो मिलेगा वह मेरे लिए करेक्ट है'। जितना अपने आप आए उतना सही और न आए ऐसा भी नहीं है। यह लक्ष्मी किसके अधीन है, इसका लोगों को पता ही नहीं है।

### अक्रम विज्ञान की अनोखी समझ

**प्रश्नकर्ता :** यह जो भोजन है, वह किस कमाई से लेना चाहिए?

**दादाश्री :** वह तो ऐसा है न, जिसे ज्ञान न हो, उनकी कमाई तो नीति वाली होनी चाहिए, वही अच्छा है और ज्ञान हो उसे तो जिस तरह से कमाई होती है उससे खाना चाहिए। ज्ञान लेने से पहले आप जिस तरह से कमाई करते थे, वही कमाई आपको जारी रखनी चाहिए।



यदि गलत लगती हो तो मन में खेद रखना चाहिए कि, 'यह गलत हो रहा है।' बाकी, खाओ-पीओ और मौज करो। आराम से रस-रोटी खाना।

क्योंकि जैसा हिसाब बाँधा है, वैसा हिसाब आए बगैर रहेगा नहीं और जैसे भाव से बाँधा है वैसे भाव से छूटेगा। उसमें मेरा भी चलने वाला नहीं है और आपका भी नहीं चलने वाला। यानी अक्रम विज्ञान ऐसा है कि इसमें किसी में हस्तक्षेप ही नहीं किया है। आप अपने भाव में आ जाओ। और बाकी सब जाने दो।

### मतलब, मूँग पकाने से

**प्रश्नकर्ता :** ईमानदार रहें लेकिन पैसे खिलाए बगैर कोई काम नहीं होता।

**दादाश्री :** उसमें तो अब ज़्यादा दखल मत करना। मुझसे पूछते थे कि, 'क्या करें, हम सीमेन्ट कम नहीं डालते, लोहे की चोरी नहीं करते, लेकिन ये तो साठ हज़ार का बिल नहीं देते हैं।' तब मैंने कहा कि 'पाँच सौ रुपये देकर ले आओ।' लाना ही पड़ेगा न, वर्ना हमारे यहाँ माँगने वाले आएँगे तो फिर उन्हें क्या देंगे? इसलिए ऐसा है न, दो सौ-पाँच सौ देकर भी अपना चेक निकलवाना पड़ता है।

**प्रश्नकर्ता :** वहाँ व्यवहारिक होना पड़ेगा।

**दादाश्री :** हाँ, ज़माने के हिसाब से व्यवहारिक होना पड़ेगा।

हमें लेना नहीं है, उसे रिश्तत लेना नहीं कहा जाएगा। देना तो, हमें ग़रज़ हो तो क्या कर सकते हैं? आपके दो लाख रुपये किसी जगह पर फंसे पड़े हों और वह पाँच हज़ार रुपये माँग रहा हो तो उसे दे देना।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन देने वाला ज़्यादा गुनहगार हुआ न! लेने वाले से?

**दादाश्री :** वह तो जब पकड़ा जाएगा तब न!

**प्रश्नकर्ता :** रिश्तत लेना-देना, क्या यह कुदरत के हिसाब में गुनाह नहीं है ?

**दादाश्री :** ऐसे गुनाह गिनने जाएँगे तो कब पूरा होगा ? ऐसा है न कि खुद को कुछ भी गलत नहीं करना है, ऐसा निश्चित रखना है।

लेकिन क्या करें, गरज हो तो कहाँ जाएँगे ? घर में डिलिवरी आनी हो और वहाँ कोई जगह नहीं मिल रही हो तो कुछ भी करके, उसे पैसे देकर भी काम निकालेंगे या नहीं ? क्या घर पर डिलिवरी करवा सकते हैं ?

यानी मूँग पका लो। अंत में, ये मूँग को किसी भी पानी से पका लो। या तो 'आजवा' का पानी हो या फिर गटर का पानी हो, जो भी पानी से मूँग पके वह पानी से मूँग पका लो, ऐसा हम कहना चाहते हैं। वर्ना इसका अंत नहीं आएगा। ये तो अभी फिसलने वाला काल (समय) है। अभी तो ऐसा देखते हैं। लेकिन अभी तो कलियुग और भी नए-नए तरह का दिखने वाला है। जिसका अंत नहीं आने वाला है इसलिए सचेत हो जाओ। थोड़े में ही समझ जाओ।

### इसमें भूल किसकी ?

मेरे मामा ने मुझे जिस धंधे में फँसा दिया है, वह जब भी याद आता है तब मुझे मामा को लेकर बहुत उद्वेग होता है कि, 'उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा ? मुझे क्या करना चाहिए ?' कोई समाधान नहीं मिलता।

**दादाश्री :** ऐसा है कि भूल आपकी है इसलिए आपके मामा ने आपको फँसाया है। जब आपकी भूल खत्म हो जाएगी तब आपको कोई फँसाने वाला नहीं मिलेगा। जब तक आपको फँसाने वाले मिलते हैं न, तब तक आपकी ही भूलें हैं। मुझे क्यों कोई फँसाने वाला नहीं मिलता है ? मुझे फँसना है, फिर भी कोई मुझे फँसाता नहीं है। जबकि आपको कोई फँसाने आते हैं तब आप छटक भी जाओगे ! लेकिन मुझे

तो छटकना भी नहीं आता। अर्थात् कोई आपको कब तक फँसाएगा? कि जब तक आपके बहीखाते में कुछ हिसाब बाकी है। लेन-देन का हिसाब बाकी है, तब तक ही आपको फँसाएँगे। मेरे बहीखाते के सारे हिसाब पूरे हो गए हैं। एक समय तो मैं यहाँ तक कहता था कि, 'भाई, जिसे भी पैसे की तंगी हो, वह मेरे पास आकर ले जाना। लेकिन मुझे एक तमाचा मारकर पाँच सौ ले जाना।'

तब वे लोग कहते थे कि, 'नहीं भाई साहब, इस तंगी में तो मैं कुछ भी कर लूँगा, लेकिन यदि मैं आपको तमाचा मारूँगा तो मेरी दशा क्या होगी?' अब यह बात हर किसी से नहीं कर सकते, कुछ डेवेलपड लोगों से बात कर सकते हैं।

अर्थात् वर्ल्ड में कोई तुम्हें फँसाने वाला नहीं है। वर्ल्ड के आप मालिक ही हो, आपका कोई ऊपरी है ही नहीं। सिर्फ खुदा ही आपके ऊपरी हैं। यदि आप, अपने आपको पहचान लोगे न, फिर कोई आपका ऊपरी ही नहीं रहेगा। फिर वर्ल्ड में कौन फँसाने वाला है! हमें कुछ कह सके, ऐसा कोई नहीं है। लेकिन ये तो देखो न, कितने ज्यादा फँसाव हो गए हैं! अभी तो सिर्फ मामा ने ही फँसाया है लेकिन बीवी आएगी तब बीवी भी फँसाएगी! अभी तो आप बीवी लाए नहीं हो। बीवी लाओगे फिर बीवी भी फँसाएगी। जहाँ देखो वहाँ फँसाव ही है न! ऐसा फँसाव वाला यह जगत् है लेकिन यह जगत् कब तक फँसाएगा? कि हमने बहीखाते में कोई दखल की होगी तभी फँसाएँगे। वरना हमारे बहीखाते में कोई दखल नहीं हो तो कोई हमें नहीं फँसा सकता, कोई नाम नहीं लेगा।

क्या आपको मालूम है? कई बार पेपर में ऐसा विज्ञापन छपा होता है कि, 'भाई, फोर्ट (मुंबई का एक इलाका) से हमें एक घड़ी मिली है और एक सोने की चैन मिली है। जिसके हों वह हमें इस विज्ञापन का खर्च और सबूत देकर ले जाएँ! सबूत दोगे तभी दूँगा।' ऐसे विज्ञापन छपते हैं। क्या आपने ऐसे विज्ञापन कभी देखे हैं?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, देखे हैं न!

**दादाश्री :** इससे क्या पता चलता है कि, यह जगत् ऐसा है कि उसे खोया हुआ भी वापस मिल सकता है! खोया हुआ वापस मिलता है या नहीं? वह किस सत्ता के आधार पर मिलता होगा? यानी तुम्हारी चीज़ होगी तो किसी की ताकत नहीं है कि वह ले सके। और यदि तुम्हारी नहीं है तो तुम्हारी ताकत नहीं है कि तुम रख सको। यानी आपको मामा ने नहीं फँसाया है। तुमने मामा को फँसाया था इसलिए मामा ने तुम्हें फँसाया। 'भुगत उसकी भूल'। अभी कौन भुगत रहा है? मामा भुगत रहे हैं या तुम भुगत रहे हो? तुम ही भुगत रहे हो इसलिए तुम्हारी भूल है! मामा तो जब कुदरत उन्हें पकड़ेगी तब मामा की भूल कही जाएगी। जगत् तो तुम्हारे मामा की भूल निकालेगा और तुम्हें सीधा कहेंगे लेकिन उससे क्या फायदा? हकीकत में क्या है कि, 'कौन भुगत रहा है?' तो तुम्हारी भूल है इसलिए किसी की भूल मत निकालना। जो भुगत रहा है उसकी ही भूल है।

घर में चार लोग हों, दो-चार नौकर हों और सब को पता चला हो कि आज घर पर बम गिरने वाला है, ऐसा लगता है। और घर में आठ लोग हैं। सभी ने सुना है कि बम गिरने वाला है लेकिन जो सो गया है उसकी भूल नहीं है और जो जाग रहा है और चिंता कर रहा है, उसकी भूल है! भुगत उसकी भूल। सब जगह बम नहीं गिरते। बम कोई सस्ते नहीं हैं कि घर-घर में गिरें! हमें अभी पता चले कि कल गिरने वाला है, उससे पहले तो मुंबई काफी हद तक खाली हो जाएगी! पक्षी उड़ जाते हैं उस तरह से सब लोग भाग जाएँगे! पक्षी भी थोड़ी देर तो घोंसले में रहते हैं! लेकिन लोग तो भाग जाते हैं! जबकि ज्ञानी पुरुष पर ज़रा सा भी असर नहीं होता! वे क्या ले जाएँगे? विनाशी को ले जा सकते हैं। मुझे नहीं ले जा सकते! विनाशी है उसे ले जा सकते हैं, विनाशी तो जाना ही है न! तब वह तो सट्टे में ही लगाया हुआ है न! हम सट्टा खेलने जाते हैं तब क्या साथ में ऐसी कोई शर्त होती है कि मेरी रकम नहीं जानी चाहिए? रकम जाने वाली है, ऐसा मानकर सट्टा खेलते हैं न? तो यह भी सट्टा ही है, मनुष्य देह तो एकदम सट्टे में ही रखा हुआ है, फिर सट्टे में आशा क्यों रखे?

इसलिए मन से ऐसा निकाल देना कि 'मामा ने मुझे फँसाया है' और व्यवहार में कोई पूछे तब ऐसा मत कहना कि 'मैंने उन्हें फँसाया था इसलिए उन्होंने मुझे फँसाया है!' क्योंकि लोगों को इस विज्ञान के बारे में जानकारी नहीं है, इसलिए उनकी भाषा में बात करनी चाहिए कि 'मामा ने ऐसा किया।' लेकिन भीतर समझना कि 'इसमें मेरी ही भूल थी।' ये 'दादा' कहते थे वही राइट है और यह बात भी सही है न क्योंकि आज मामा नहीं भुगत रहे हैं, वे तो गाड़ी लाकर अभी मौज कर रहे हैं। जब कुदरत उन्हें पकड़ेगी तब उनका गुनाह साबित होगा जबकि आज तो कुदरत ने तुम्हें पकड़ा है न!

### फायदा-नुकसान एक ही नियम से

यानी आपको उस समय ऐसी जागृति रखनी पड़ेगी कि यह हमारा हिसाब है।

बिना हिसाब के कोई घर नहीं आता, बिना हिसाब के इस दुनिया में कुछ भी नहीं होता। बिना हिसाब के तो साँप भी नहीं काटते, बिच्छू नहीं काटते, कोई नाम नहीं ले सकता! बिना हिसाब के इस दुनिया में कुछ भी नहीं हो सकता। ये सब हिसाब ही चुकाए जा रहे हैं। नए हिसाब बंध रहे हैं और पुराने हिसाब चुकाए जा रहे हैं। फिर भी लोगों को ऐसा सब अच्छा लगता है! बाकी, यह काल दिनोंदिन अच्छा नहीं आने वाला। इस काल को क्या कहा जाता है? अवसर्पिणी काल, यानी पतन होता हुआ काल! इसलिए अठारह हज़ार साल बाद दुनिया में एक मंदिर भी नहीं होगा, किताब भी नहीं होंगे, शास्त्र भी नहीं होंगे और कोई भक्त भी नहीं होंगे, तब ऐसे में सचेत रहना पड़ेगा या नहीं? यह सब बहुत अच्छे अच्छे काल बीत चुके हैं, कितनी ही चौबिसियाँ बिता चुके हैं। तब तक हम गए नहीं, और फिर चटनी खाने के लिए रुके हुए हैं! किसलिए रुके हुए हैं? पूरी थाल खाने के लिए नहीं, सिर्फ चटनी के लिए ही!

घर तो कोई भोगता ही नहीं, दिन भर बाहर ही घूमता रहता

है। घर में तो दिन भर सब पंखे चलते रहते हैं, पलंग सारे खाली पड़े रहते हैं और वह तो कहीं धूप में भटकता रहता है क्योंकि उसे कुछ चाहिए। ऐसी कुछ चटनी चाहिए। उसके आधार पर भटकता रहता है। उसे सब नहीं चाहिए। ये सारे वैभव भोगे नहीं, कभी वैभव भोगा भी नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** पैसों के लिए भटकते हैं न?

**दादाश्री :** पैसों के लिए तो भटकने जैसा है ही नहीं। नुकसान घर बैठे आता है तो फायदा भी घर बैठे ही आएगा, ऐसी चीज़ है। जिस सिस्टम से नुकसान होता है, उसी सिस्टम से फायदा होता है। यदि मेहनत करने पर नुकसान आता है, तो मेहनत करने से फायदा आता है! लेकिन ऐसा नहीं है।

### संसारी स्वार्थ

इन्कम टैक्स का कर्मचारी आ रहा हो, तब उसे देखकर भीतर में क्या बहुत आनंद होता है? रिफण्ड हो तब ज्यादा आनंद होता है न! और दंड हो तो दंड का दुःख होता है। क्यों? रिफण्ड में आनंद आता है इसलिए दंड में दुःख ही होता है, स्वाभाविक रूप से ही दुःख होगा। अरे, इन्कम टैक्स के पैसे भरने होते हैं न, तब भी दुःख लगता है और यहाँ तक कह देता है कि इन्कम टैक्स वाले न हों तो अच्छा। इसे *अजंपा* और *उपाधि* कहते हैं! और इसमें पैसे भरने का आया तो वह फर्ज निभाना चाहिए न! फर्ज निभाने में तो हमें इन्कम टैक्स के नियमानुसार चलना पड़ेगा न? ये तो फर्ज नहीं निभाते, उसे स्वार्थ कहा जाता है। यह संसारी स्वार्थ कहलाता है।

### ईमानदारी, वह भगवान की आज्ञा

यह तो गलत करने की बुरी आदत पड़ चुकी है। इससे लक्ष्मी बढ़ती नहीं, घटती है। शुरुआत में पाँच-दस साल तो अच्छा लगता है लेकिन बाद में तो सिर्फ नुकसान ही होता है और जिनकी प्रकृति

ईमानदारी वाली है, उसका कुछ नहीं बदलेगा। लेकिन वह भी, जब कुदरत बदले न, तब तो उसका भी टूट जाएगा इसलिए यह सब सही भी नहीं है। लेकिन ईमानदारी हो तो उसे डर थोड़ा कम लगता है, उसे भय नहीं रहता!

**प्रश्नकर्ता :** अब बिज़नेस में ईमानदारी से धंधा करता हूँ, किसी को ठगता नहीं हूँ।

**दादाश्री :** वह ठीक है, ये तो आपने भगवान की एक आज्ञा का पालन किया कि किसी को ठगना मत। ईमानदारी से, निष्ठापूर्वक काम करना। भगवान की उस एक आज्ञा का पालन किया।

### सत्य उजागर होता है देर से

कुछ लोग गुप्तदान करते हैं, उसमें कोई ऐसा नहीं कहता कि, 'यह मेरा दान है', यानी ऐसा सब चलता रहता है और वह अच्छी चीज़ है वह उजागर हुए बगैर नहीं रहती है। यदि झूठ उजागर होता है। असत्य जल्दी उजागर होता है और कलियुग में सत्य को उजागर होने में बहुत समय लगता है। जबकि सत्युग में सत्य तुरंत उजागर हो जाता है और असत्य उजागर होने में बहुत देर लगती है। इसलिए इसे उजागर होने में बहुत टाइम लगेगा। अभी यदि मुंबई शहर में शुद्ध घी लेकर कोई बेचने निकले, 'लो भाई, शुद्ध घी', तो कितने लेंगे? वह बताओ मुझे, डॉक्टर साहब? बल्कि मज़ाक करेंगे। ऐसा ही यह शुद्ध माल है, शुद्ध तो है वह लेकिन एक दिन वह अपना काम करके रहेगा।

### नीति : व्यवहार का सार

व्यवहार का सार तो नीति है। यदि नीति होगी तब आपके पास पैसे कम होंगे फिर भी अंदर शांति रहेगी और यदि नीति नहीं होगी और पैसे बहुत होंगे फिर भी अशांति रहेगी, वह देखना है। करोड़ों रुपये हों लेकिन भीतर तो जलती हुई भट्टी जैसा ही समझ लो न! व्याकुलता-व्याकुलता! अपार व्याकुलता! क्या आपने कभी व्याकुलता देखी है?

**प्रश्नकर्ता :** बहुत देखी है।

**दादाश्री :** बहुत देखी है? भारी! तो अब समाधि भी उतनी रहती है न!

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, लेकिन व्यवहार में नीति रखना क्या वह खुद के हाथ में है?

**दादाश्री :** वह खुद के हाथ में नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** वह तो 'व्यवस्थित' के अधीन है न?

**दादाश्री :** 'व्यवस्थित' के अधीन तो है लेकिन यह तो, ज्ञान होना चाहिए न, कि यह सही ज्ञान है या वह? तब कहते हैं, व्यवहार में नीति रखनी चाहिए वह सही ज्ञान है। फिर आपको देखना है, जाँच करना कि आप में कितनी नीति रहती है। ऐसा, कुछ कहने से ही नहीं हो जाता। क्या कभी ऐसा होता है? लेकिन जब से ऐसा सुना, तब से आपको तय करना चाहिए कि यह नीति वाला ज्ञान सही है। अनीति का ज्ञान हमने सच माना था, उस पर श्रद्धा बैठ चुकी थी, उसका यह फल आया है। लेकिन अब नीति पर श्रद्धा बैठेगी तब उसका फल बाद में मिलेगा।

यह ज्ञान लिया इसलिए अब तो हमें श्रद्धा चाहिए ही नहीं न? अब तो हमें इसका हल ला देना है! अब इस संसार का हमेशा के लिए हल ला देना है। यह संसार तो कभी सुखी होने ही नहीं देगा।

### आत्मस्वरूप वाले का व्यवहार निकाली

**प्रश्नकर्ता :** इस काल में ज्ञान लेने के बाद व्यवहार, व्यापार प्रमाणिकता से किस तरह करें?

**दादाश्री :** मैं ऐसा प्रमाणिकता से करने का नहीं कहता। ऐसा है न, यदि ज्ञान हो तो आप चंदूभाई नहीं हो, आप शुद्धात्मा हो। यदि आप चंदूभाई होते तब आपको प्रमाणिक होने की ज़रूरत थी। अब



तो आप शुद्धात्मा हो इसलिए जो भरा हुआ माल है, संयोग हैं, उनका यहाँ हल ला दो! यह चोरी है और यह चोरी नहीं है, ऐसा भगवान के वहाँ द्वंद्व है ही नहीं। भगवान के घर अच्छा-खराब है ही नहीं। यह सब सामाजिक है और मनुष्य की बुद्धि के आशय है, वर्ना भगवान के घर ऐसा कुछ नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** फिर नीति-नियम, सही-गलत, इन सारे नियमों का पालन क्यों करना चाहिए? फिर उनकी क्या ज़रूरत है?

**दादाश्री :** नहीं, यदि आपको पालन करना हो तो फिर चंदूभाई बन जाओ। मैं फिर से चंदूभाई बना देता हूँ।

**प्रश्नकर्ता :** शुद्धात्मा को फिर इन गुणों की ज़रूरत ही नहीं है!

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा है न, आप ये जो सब कर्म बाँधकर लाए हो न, वे मुझसे पूछे बगैर बाँधकर लाए हो। पिछले जन्म में मुझसे पूछने नहीं आए थे। मार्केट मटीरियल में जो मिला उसे खरीदते रहे और जितनी बैंकों ने ओवरड्राफ्ट दिए, उसे लेते रहे। इसलिए मैंने कहा कि यह ओवरड्राफ्ट लेकर कंगाल जैसी स्थिति हो गई है। इसलिए अब आप शुद्धात्मा हो जाओ और बाकी सब जो है उसका निकाल कर दो। यह दुकान धीरे-धीरे खाली कर देनी है। शक्कर हो तो शक्कर बेच दो और गुड़ हो तो गुड़ बेच दो। काली मिर्च हो तो काली मिर्च बेच दो और किसी से झगड़ा मत करना। कोई पैसे नहीं दे फिर भी उससे झगड़ना नहीं और कोई पैसे माँगता हो, तो जल्द से जल्द लौटा देना और यदि आपके पास सुविधा न हो तो, 'बापजी, जय बापजी', करके उसे दुःख न हो इस तरह, समभाव से निकाल करके छूट जाओ।

### सही समझ से

जब लक्ष्मी का नूर खत्म हो जाता है न, तब सारा नूर चला जाता है। आत्मा का नूर हो तो वह रहता है लेकिन इन लोगों के पास आत्मा का नूर कहाँ से होगा? वह तो ज्ञानी पुरुष में या ज्ञानी पुरुष के फॉलोअर्स में आत्मा का नूर होता है!

**प्रश्नकर्ता :** ये जो अपार कर्ज हैं वे धर्म संबंध के हैं या लक्ष्मी संबंध के हैं ?

**दादाश्री :** लक्ष्मी संबंध के नहीं हैं, विराधना के हैं। हर समय खुद की समझ से, सिर्फ स्वच्छंदता से सब करते रहते हैं। लक्ष्मी संबंध के कारण नहीं है और वह तो, कोई उधार देने वाला मिले, तब कर्ज होता है। जो उधार देने वाले मिले वहाँ आगे बढ़ा और विराधना में तो, कोई सुनने वाला मिलना चाहिए कि बस, शुरू। सही-गलत तो राम जाने। लेकिन कोई सुनने वाला मिलना चाहिए।

यानी ऐसा, कलियुग में तो सब पागलपन साथ लेकर आए होते हैं। घर जाएँ तो घर में झंझट होती है, ऑफिस में जाएँ तो वहाँ भी झंझट होती है। फिर क्या करें? इसलिए फिर रास्ते में किसी को ढूँढते हैं कि कोई मेरी बात सुनता है? और कोई मिल जाए तो फिर ताबड़ तोड़ अपनी बात करता है। ये तो जिनमें बरकत नहीं है कोई ठिकाना नहीं है, ऐसे लोग हैं! वर्ना समझदार हो उनके घर झंझट ही नहीं होती। बाहर जाए, ऑफिस में जाए, फिर भी झंझट नहीं होती। कहीं भी झंझट हो कैसे सकती है ?

**प्रश्नकर्ता :** वह बात करने आए तो सुननी चाहिए या नहीं ?

**दादाश्री :** वह तो, अपने 'ज्ञान' के कारण आप समझ जाते हो। वर्ना कैसे समझी जा सकती है? 'ज्ञान' नहीं हो तो लोग क्या करे? बल्कि उल्टा चलते हैं। प्रतिभाव वाला मन हो जाता है। किसी ने नालायक कहा कि नालायक कहने वाले पर इतना ज्यादा प्रकृति भाव कर देते हैं कि जिसका कोई हिसाब ही नहीं और भीतर में तो भाव की कमी है ही नहीं!

**प्रश्नकर्ता :** दादा, लेकिन यदि हम तय करें कि सुनना ही नहीं है। एक दिन नहीं सुनें, दूसरे दिन नहीं सुनें, फिर वह आएगा ही नहीं सुनाने।

**दादाश्री :** नहीं, फिर नहीं आएगा। आप जानते हो कि यह तो

उसे बक-बक करने की आदत पड़ चुकी है! शुरू में दो दिन हम सुन लेंगे पर फिर वह आना बंद कर देगा। फिर वह अन्य कोई व्यक्ति ढूँढ लेगा।

यह तो, जहाँ देखो वहाँ दुःख, दुःख और दुःख।

‘घर का जला, जंगल में जाता है, जंगल में लगी आग।’

मतलब, महा मुश्किलों में फँसे हैं। ऊपर से अहंकार भी मैड है। अहंकार यदि अच्छा होता, वाइज़ होता तो बात अलग है। लेकिन अहंकार भी मैड!

### लाए ओवरड्राफ्ट, बेहिसाब

पुनिया श्रावक की सामायिक, जिसकी कीमत है, श्रेणिक राजा का पूरा राज्य तीन प्रतिशत दलाली में चला जाए। इतनी अधिक कीमत। तो इतना लाभ होता हो तो बहुत अच्छा है न? ये लोग तो बैंक में से इतना ज्यादा ओवरड्राफ्ट लाए हैं, इतनी सब भरपाई करते हैं फिर भी बढ़ता नहीं है। सब ओवरड्राफ्ट! दूषमकाल की शुरुआत यानी ओवरड्राफ्ट लिए बगैर नहीं रहता और बैंक भी दिए बगैर नहीं रहता। बैंक भी देते हैं। चलो, गाड़ी खरीदो, चालीस हजार रुपये की हर एक टैक्सी पर लिखा होता है, बैंक ऑफ इन्डिया...

‘ये तो बैंक के रुपये हैं’, जिसे ऐसा भान रहता हो, वे उपयोग रखेंगे। यह तो बैंक के रुपये आए कि कहते हैं, ‘ले आओ आम’, और डेढ़ सौ रुपये के आम और तीन सौ रुपये का घी ले आते हैं।

### दुकान बंद करने की रीत

दुकान खाली करने का तय करता है, तब से खुद जानता है कि अब क्या खरीदना है। अब क्या करना है वह भी जानता है। क्या नहीं जानता है कि भाई, अब वसूली पूरी कर लो। जितनी हो सके उतनी कर लो, पूरी ना हो सके ऐसी हो, तो हमें झगड़ा वगैरह नहीं करना है। लोगों की कोई जमा पूंजी अपने पास हो तो उसे लौटा दो। जमा

पूंजी यानी हमारे बहीखाते में लोगों की कोई रकम जमा हो, वह सब को लौटा देनी है और नहीं लौटाई तो रात को दो बजे वे लोग फरियाद करेंगे। जबकि वसूली तो वह हमें दे या न भी दे। वह तो उसके हाथ की बात है। जब कोई न लौटाए तो कोर्ट में जाओ, वकील करो, ऐसे सब झमेले में कहाँ पड़े ?

हमें दुकान खाली कर देनी है, तो अब सब खरीदारी बंद कर देनी पड़ेगी न? फिर, बेचते ही रहना होगा। फिर भी यदि माल न बिके तो जांच करनी पड़ेगी कि भाई, अभी ग्राहक क्यों नहीं आ रहे हैं? तो फिर पता चले कि शक्कर नहीं है, गुड़ नहीं है इसलिए लोग नहीं आते। गुड़ और शक्कर भी होने चाहिए न? यदि वे न हों तो हमें खरीदना पड़ेगा। क्योंकि गुड़ न हो, शक्कर न हो, तो लोग कहेंगे, वहाँ शक्कर वगैरह कुछ नहीं मिलता, अब दूसरी दुकान पर चलो। लोग दूसरा सब सामान भी जहाँ शक्कर मिलती हो वहाँ से लेंगे, इसलिए हमें उतनी शक्कर की बोरियाँ मँगवानी पड़ेंगी। लेकिन दुकान खाली करनी है। वह उसके लक्ष (जागृति) में ही होता है या रात को भूल जाता है? जब से तय किया है तब से दुकान खाली करना शुरू कर देता है! रास्ते में कोई माल बेचने वाला मिल जाए कि, 'अरे, आपको पंद्रह प्रतिशत कमीशन दूँगा। यह माल खरीद लो।' तब कहेगा, 'नहीं भाई, मुझे माल नहीं चाहिए।' अब दुकान खाली करने का तय किया है, ऐसा तय करने के बाद फिर से दुकान नहीं भरेगा न? ऐसा हमें दुकान खाली कर देनी है। अब सभी हिसाब का हल ला देना है। समझा-बुझाकर भी हल ला देना है।

फिर उधारी वाले आते हैं। पूंजी जमा कराने वाले भी आते हैं। तब आप कहना कि, 'और भी कोई हों, जिनका बाकी हो वे सब जल्दी ले जाओ। हमें अब दे देना है।' इससे आपके वहाँ भीड़ तो जमा होगी। भीड़ होगी, घुटन भी होगी। लेकिन आपने दे दिए तो फिर छूट जाएँगे। घुटन तो होगी, भले ही हो लेकिन एक बार दे दिए तो फिर हल आ गया न! ऐसे धीरे-धीरे मारने से सिर में छेद होगा, उसके

बजाय मार एक हथौड़ा तो हल निकल आए। एक ही हथौड़े से हल निकल आएगा न? और धीरे-धीरे मारने से सिर का घाव भी नहीं भरेगा और जलन होती रहेगी, उसके बजाय एक हथौड़ा मार दो तो हल निकल आएगा। जबकि सोना तो उतना ही रहेगा न? या सोना कम होता है? सिर्फ गढ़ाई बेकार जाती है। इसलिए अब घुटन हो तो परेशान मत होना। आए तो अच्छा है, हल आ जाएगा। दो-पाँच आएँ तो कहना अभी और कोई हों तो आ जाओ। अब सब को पेमेन्ट कर देंगे। क्योंकि अब शुद्धात्मा प्राप्त हुआ इसलिए सारा पेमेन्ट हो सकता है। कोई गालियाँ देकर जाए फिर भी अब हम जमा कर सकते हैं। पहले तो जमा नहीं कर पाते थे। जमा करनी पड़ेगी और सामने उधारी भी करनी पड़ेगी। जमा तो मजबूरी में करनी ही पड़ेगी न, वह देकर गया है इसलिए जमा तो करनी ही पड़ेगी न! लेकिन फिर सामने पाँच-सात उधार कर देता है और आपको तो जमा कर लेना है, और बाद में उधारी नहीं करनी है, क्योंकि व्यापार बंद करना है। दो गालियाँ दे जाए तो चंदूभाई को देगा न! 'आपको' कहाँ पहचानता है? क्या वह 'आपको' पहचानता है?

**प्रश्नकर्ता :** आपने जैसा कहा, वैसा ही होता है। अब, मुझे सामने जो भी जवाब देते हैं, वह मैं शांति से सुन लेता हूँ। अब वापस जवाब नहीं देता। प्रतिकार नहीं करता। अभी ऐसा होता है।

**दादाश्री :** यानी इसका अर्थ यह हुआ कि वह देता है और आप जमा कर लेते हो। अब फिर से नहीं देते। यदि फिर से चाहिए तो फिर से उधार देना, जमा करना और फिर नहीं चाहिये, पसंद न हो, तो धंधा ही बंद कर दो। 'चंदूभाई' के साथ पड़ोसी जितना संबंध रखना। पड़ोसी को कोई बहुत परेशान करता हो, तो हमें पड़ोसी को दर्पण में देखकर कहना कि, 'हे चंदू, मैं हूँ न साथ में!'

### फिर भी हाथ में चिपचिपाहट नहीं

**दादाश्री :** रुपये हाथ में लेना जरूर लेकिन हाथ चिपचिपा मत होने देना। हाथ चिपचिपा नहीं होना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता** : दादा, यानी क्या, ज़रा समझाइए न।

**दादाश्री** : लोगों को पैसों के प्रति अभाव तो रहता नहीं लेकिन अब पैसों के प्रति भाव नहीं हो जाना चाहिए। अभाव तो नहीं रहता न! ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है! हमें उस पर भाव-अभाव, दोनों ही नहीं होते और आपको भाव हो जाते हैं। पैसों पर भाव हो जाते हैं क्योंकि अभाव नहीं है इसलिए उस तरफ बैठ जाते हैं। वे भी अब आपके डिस्चार्ज में है, चार्ज में नहीं है।

कुछ लोग कहते हैं कि आप, अपने हाथों से ही मेरे पैसे दान स्वरूप स्वीकार करेंगे तो मुझे आनंद होगा, तब मैं ले लेता हूँ, 'लाओ, भाई लाओ।' मैं उसे चिपकने दूँ तब न! चिपकेगा तो झंझट है न!

### संग्रह की समझ

**प्रश्नकर्ता** : दादा ने धन के बारे में यह कहा, वैसा ही काम-धंधे के बारे में है न?

**दादाश्री** : धंधे के बारे में भी ऐसा ही रखना है धंधे में सिन्सियर रहना है लेकिन चिपकना नहीं। हो जाएगा, अब तो 'व्यवस्थित' है। देर होगी तो कोई हर्ज नहीं है, ऐसा नहीं होना चाहिए। 'व्यवस्थित है, देर होगी, क्या हर्ज है?' ऐसा शब्द नहीं होना चाहिए। वहाँ भी सिन्सियरिटी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता** : धन संग्रह करना, चिपकना माना जाएगा या नहीं?

**दादाश्री** : नहीं, संग्रह करने में कोई हर्ज नहीं है। संग्रह तो करना चाहिए। फेंक देना, वह चिपकना कहा जाएगा। अच्छे उपयोग के बिना फेंक देने से वह बिगड़ता है। संग्रह किया हुआ नहीं बिगड़ता, वह तो काम आएगा। आपको हेल्प करेगा। लेकिन उस पर चिपकना नहीं चाहिए और संग्रह किया हुआ याद नहीं रहना चाहिए। चाहे बीस लाख हों। बस चिपकने मत देना। मुझे तो, घी लग जाए तो भी चिकनाहट नहीं। जो भी डालो, उसकी चिकनाहट नहीं। कई लोगों की

जीभ ऐसी होती है कि उस पर घी रखो फिर भी जीभ चिपचिपी नहीं होती और कई लोग तो दूध पीएँ तो भी जीभ चिपचिपी हो जाती है। जीभ की ऐसी कपैसिटी होती है कि किसी भी तरह की चिपचिपाहट को मिटा देती है। उसी तरह इसमें भी कपैसिटी होती है और वह अब आप में उत्पन्न होगी!

### धंधे में एक्सपर्ट फिर भी...

काम-धंधे पर तो शुरू से ध्यान ही नहीं दिया। जगत् क्या है? किस तरह चलता है, बस यही विचार! हर समय उसी के विचार में जीवन बीता! वैसे तो धंधे में मैं ज़रा एक्सपर्ट था। मेरे पार्टनर क्या कहते थे कि तीन महीनों में... कभी कोई उलझन आ जाए तो मुझे वह उलझन सुलझा देना तो बहुत हो गया। इसलिए जब उलझन होती तब वे मुझे बताते, तब मैं कहता कि, 'ऐसा करना', तो वह उलझन सारी सुलझ जाती तब वे कहते कि आप अब धर्म का किया करो।

### जंक्शन की देखभाल

**दादाश्री :** आपको काम पर जाने में देर हो जाएगी। इन बातों का तो अंत नहीं आएगा। पहले काम करना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** मैंने शुरू से ही कड़ी मेहनत वाला काम सिर पर लिया है उसका निकाल तो करना पड़ेगा न!

**दादाश्री :** व्यापार पर ध्यान रखना वह आपका उद्देश्य होना चाहिए और जंक्शन पर आपकी गाड़ी की वजह से दूसरी गाड़ियाँ लेट न हो उसका ध्यान रखना। जंक्शन की सभी की ज़िम्मेदारी है!

**प्रश्नकर्ता :** दूसरों को दिक्कत न हो वह देखना पड़ता है।

**दादाश्री :** नहीं, सिर्फ जंक्शन की ही ज़िम्मेदारी है। आपने कहा हो कि भाई, आप वहाँ आना और मैं भी वहाँ साढ़े आठ बजे आऊँगा। वहाँ सब गाड़ियाँ आने वाली हो वहाँ आप लेट हो जाओ या नहीं जाओ तो वह ज़िम्मेदारी आप पर आएगी। बाकी और कुछ नहीं,

जंक्शन न हो, तो दूसरे स्टेशन पर आप देर से जाओ तो उसका हर्ज नहीं है। सिर्फ जंक्शन को ही संभाल लेना। मैं तो शुरू से ही जंक्शन संभाल लेता था। मैं आलसी स्वभाव का तो जरूर था लेकिन जंक्शन हो वहाँ नहीं। मेरे कारण दूसरी गाड़ियाँ लेट हो? फिर तो सब बदनाम करे! हर गाड़ी वाला कहेगा कि यह गाड़ी बड़ौदा से नहीं आई, इसलिए सब का बिगड़ गया! हम अपने खुद के लिए बदनाम होंगे तो उसमें हर्ज नहीं है लेकिन जंक्शन का नहीं संभालना पड़ेगा?

और वह संभालते समय दादा का दिया हुआ आत्मा चला नहीं जाता। हर एक में आत्मा हाज़िर ही है। इसलिए आपके लिए परेशानी नहीं है, आपको व्यापार के लिए जाना चाहिए।

अरे! आपको देर हो जाएगी, दादा के साथ बैठने में ऐसा लालच हो जाता है कि उठने का मन ही नहीं होता है। और दूसरी गाड़ियाँ चली जाती है। तय करके आया होता है। चार कॉम्प्रेसर लेने वाला व्यक्ति हो, उसे कहा हो कि इतने बजे ऑफिस में आना, मैं वहाँ आऊँगा और आप देर से जाओगे तो वह बेचारा उठकर चला गया होगा। इसलिए आप आपने धंधे पर जाओ। ये सब तो बातें हैं।

**प्रश्नकर्ता :** हमें तो ये बातें करने से लाभ होता है।

**दादाश्री :** यानी आपको वहाँ धंधे पर जाना चाहिए। मैं हर कार्य करता हूँ। अरे! सुबह साढ़े छः बजे शुरू करता हूँ, मैं आलस नहीं करता। क्योंकि यदि मैं कहूँ कि मेरी तबियत थोड़ी खराब है तो कितनी सारी गाड़ियों को लौटना पड़ेगा? सब गाड़ियाँ जाते-जाते क्या कहेगी? दादा अब बूढ़े हो गए हैं इसलिए अब हम यहाँ ज़्यादा नहीं आएँगे तो चलेगा! ऐसा कहेंगे और खुद का अहित करेंगे।

### कीमत, ज्ञानी के दर्शन की

दुकान पर नहीं जाओगे तो दुकान खुश नहीं होगी। दुकान खुश होगी तो कमाई होगी। उसी प्रकार यहाँ सत्संग में, यदि पाँच मिनट



से ज़्यादा समय न हो तो पाँच-दस मिनट भी आकर दर्शन करके जाना। यदि हम यहाँ पर हों तो! हाज़िरी तो देनी ही होगी न!

### दादाई ब्लैंक चेक

ये 'दादा' एक ऐसे निमित्त हैं, जैसे ही दादा का नाम लो, तो बिस्तर से उठ-बैठ न पा रहे हों फिर भी खड़े हो जाते हैं। इसलिए काम निकाल लो। यानी निमित्त ऐसा है। आपको जो काम करना हो वह हो जाए ऐसा है, लेकिन उसमें नीयत खराब नहीं रखना। किसी के वहाँ शादी में जाने के लिए शरीर स्वस्थ हो जाए, ऐसा मत करना। यहाँ सत्संग में आने के लिए शरीर स्वस्थ रहे, ऐसा माँगना। यानी, दादा का उपयोग अच्छे कामों के लिए करना। उसमें फिर दुरुपयोग नहीं होना चाहिए क्योंकि दुरुपयोग नहीं होगा तभी दादा मुश्किलों के टाइम में काम आएँगे, इसलिए हमें उनका व्यर्थ में ही उपयोग नहीं करना है।

एक वणिक सेठ थे, मित्र समान। वैसे थे तो धनवान व्यक्ति, लेकिन मेरे साथ उठते-बैठते थे, एक बार इन्कम टैक्स की चिट्ठी आई थी। एक बार मैंने उनसे कहा था कि कोई परेशानी आए तो घबराना नहीं, हमें बताना। अब उस समय तो ज्ञान हुआ नहीं था! इसलिए संसार की उलझनों का हम हल ला देते थे। इन्कम टैक्स की चिट्ठी आई, तो मैंने उन सेठ से कहा हुआ था कि ऐसा कुछ कहना हो तो कहना। तब उन्होंने कहा कि आपने जो कोरा चेक दिया है, वह पूरे सौ होंगे तब भुनाऊँगा। अंतिम साँस होगी न, तब भुनाऊँगा। ऐसे ही आपका चेक नहीं भुना सकते। उसे तो मैंने रख छोड़ा है!

यानी, दादा का तो यह ब्लैंक चेक, कोरा चेक कहलाता है। इसे बार-बार भुनाने जैसा नहीं है। कोई बड़ी परेशानी आए, तभी जंजीर खींचना। सिगरेट का पैकेट गिर जाए और हम गाड़ी की जंजीर खींचें तो जुर्माना लगेगा या नहीं? अतः ऐसा दुरुपयोग मत करना।

### बिना दादा के पल कैसे?

जितना साथ ले जाना है उतना ही हमारा, बाकी सब पराया।

**प्रश्नकर्ता :** खरी कमाई यही है 'दादा', अन्य कोई कमाई सही नहीं दिखती।

**दादाश्री :** होती होगी, और कोई कमाई!

**प्रश्नकर्ता :** दादा के बगैर चैन ही नहीं पड़ता।

**दादाश्री :** दादा के बगैर एक क्षण भी कैसे रहा जा सकता है? यह तो अच्छा है कि अपने यहाँ 'ज्ञानी पुरुष' निश्चय से अपने पास ही हैं। व्यवहार में तो निरंतर ऐसा उदय हो नहीं सकता न! बाकी, पुराने ज़माने में ज्ञानी के पास पड़े रहते थे। अभी तो पड़े रह पाएँ, ऐसा है ही कहाँ? अभी तो कितनी सारी फाइलें हैं!

### ममता रहित पुरुष

रुपयों से ममता हो चुकी है। वर्ना तो कहते ही खाली कर दें। जितने आनंद से रुपये लिए थे, उतने ही आनंद से रुपये खाली कर दें, तब जानना कि इन्हें रुपयों की ममता नहीं चिपकती।

यानी कि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव से इन चारों प्रकार की जिन्हें ममता न हो, ऐसे ज्ञानी पुरुष मोक्ष में ले जाते हैं। वर्ना सब लोग तो द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से, भाव से बंधे हुए हैं, वे हमारा क्या भला करेंगे? कोई अच्छी जगह हो तो कहेंगे, 'कुछ दिन रहने दो न!' कहते हैं या नहीं? हमें ऐसा बंधन नहीं है।

### ममता-रहितता

आपको समझ में आया कि क्या कहना चाहता हूँ?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, दादा।

**दादाश्री :** जिसकी ममता खत्म हो गई हो, क्या ऐसा कोई इंसान हो सकता है?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं हो सकता, कहाँ से होगा?

**दादाश्री :** यदि होता तो वह भगवान कहलाता। इंसान की ममता कैसे जा सकती है? सगे-संबंधी होते हैं न! ये तो पत्नी, माँ-बाप की ममता भी छोड़ देने को तैयार हैं। ममता समझ में आती है आपको? क्या आप में थोड़ी-बहुत ममता है?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, मेरे पास कौन सी ममता है, बताइए? परिवार-कबीला सभी, कोई संबंध है ही नहीं।

**दादाश्री :** यह सब क्या बोल रहा है? 'मुझ में ममता नहीं है', यह क्या कहा?

ममता गई कब कह सकते हैं? जब माँ-बाप व भाइयों और सभी के प्रति वीतरागता हो। ममता जाती नहीं है न इंसान की! यदि घर में रहने वाला व्यक्ति, वह तो वहाँ (मंदिर में) पड़ा रहता हो, उसकी ममता चली जाती है। वर्ना क्या ममता छूटती होगी?

**प्रश्नकर्ता :** दादा, मुझे कुछ समझ में नहीं आया।

**दादाश्री :** अरे, ममता गई ऐसा नहीं कह सकता कोई। कोई ऐसा बन जाए तो वह भगवान हो गया कहा जाएगा। एक अक्षर भी नहीं बोल सकते कि 'मेरी ममता चली गई' ज्ञानी पुरुष के अलावा और कोई नहीं कह सकता।

**प्रश्नकर्ता :** 'ममता चली गई', वह ज़रा समझाइए। ममता कैसे चली गई? हम ममता किसे कह सकते हैं?

**दादाश्री :** सर्वस्व अर्पण करना, उसे कहते हैं, ममता का जाना। ये भाई हैं, वे हजार गिन्नियाँ यहाँ दे दें लेकिन एक रहने दें कि 'कभी काम आएगी।' उसे ममता कहते हैं। इन्हें ऐसी ममता नहीं है, ये ब्राह्मण कहलाते हैं। हम क्षत्रियों में ममता नहीं होती इसीलिए तो तीर्थंकर बन सकते हैं। ये सब क्षत्रिय कहलाते हैं। ये तो, वणिक एक गिन्नी रहने देते हैं। बोलो, मेरी बात सही है या गलत!

**प्रश्नकर्ता :** सही है।

**दादाश्री :** उनकी हिम्मत नहीं होती, वह ममता है। यह ममता छूट जानी चाहिए। उन नागर दादा (एक संत पुरुष) ने कोसमाड़ा में कहा था कि मैंने ऐसे ममता रहित पुरुष देखे ही नहीं। मुझे बचपन से ही ममता नहीं थी, अहंकार था। बचपन से ही किसी चीज़ की ममता नहीं थी। ममता का अर्थ समझे आप? ममता क्या है, वह भी पता नहीं चलता। फिर तो लोग ही कहेंगे कि इस भाई को कोई ममता नहीं रही। जगत् तो ऐसे का ऐसा ही है। जैसा चेहरा होगा, दर्पण वैसा ही दिखाएगा। इसमें क्या दर्पण का कोई दोष है? क्या कहते हो? जगत् की तुलना में आपकी काफी कुछ ममता खत्म हो चुकी है। इन साधुओं से भी अधिक ममता जा चुकी है। कुछ रहा ही नहीं लेकिन मूल ममता, वह गिन्नी रह गई है न, रखी हुई है न? जब तक ममता का बीज खत्म नहीं हो जाता, तब तक फिर से उग जाएगा। कब फिर से उग निकले, वह कहा नहीं जा सकता।

**प्रश्नकर्ता :** खुद का जीवन व्यवहार टिकाए रखने के लिए कुछ तो करना पड़ेगा न?

**दादाश्री :** हाँ, वही ममता है, वही ममता है। जहाँ खुद का है, वहीं ममता है! हम में वैसी (ममता) है ही नहीं न!

### टकोर, ज्ञानी की

अभी ममता रहित होना संभव नहीं है! अब हमें करके क्या करना है? हमें मोक्ष में जाना है न? अगले जन्म में वैसा हो जाएगा, ममता रहित होगा। अभी तो ममता नहीं जाएगी। मुहर लगी हुई है। आपको वैसा बनकर क्या करना है?

अगले जन्म में ममता चली जाएगी। ममता जाती नहीं है। आसान चीज़ नहीं है। अभी तो हमने बताया है इसलिए थोड़ी-बहुत गई होगी तो वह भी हमारे ज्ञान से गई है। वर्ना नहीं जाती। जब ममता जाती है, पैसों की ममता जाती है तो उनमें अहंकार की ममता बढ़ जाती है लेकिन सब एक ही है न? सब धूल में मिल जाता है वहाँ।

ज़रा भी ममता कम ही नहीं हुई है कभी भी। अभी तक भी कम नहीं हुई। यह तो, ज्ञान देने के बाद कम हुई है। यह ज्ञान दिया तभी तो ममता कुछ कम हुई है।

हमारी ममता तो पिछले जन्म से ही नहीं है, कितने ही जन्मों से नहीं है। यह तो सब अपने आप चलता रहता है। उदय के अधीन। मुझे कुछ करना नहीं पड़ता। इसमें हमें कुछ नहीं करना पड़ता। कभी इच्छा भी नहीं। विचार तक भी नहीं और वह भी नहीं, *पोतापणां* (मैं और मेरा, मेरापना) नहीं। वर्ल्ड में *पोतापणां* नहीं जाता है। ऐसे लोग ही नहीं हैं, जिनका *पोतापणां* चला गया हो, वे भगवान कहलाते हैं। यह तो, लोगों को विराधना होगी इसलिए नहीं बताते। मना किया है कि, 'भगवान हैं', ऐसा मत कहना। भीतर में हैं उन्हें भगवान कहो वर्ना लोग विराधना करेंगे और बेकार ही पाप बाँधेंगे। हमें भगवान बनने में कोई आनंद नहीं आता। हम जहाँ पर हैं, वहाँ बहुत आनंद है।

एक गिन्नी तो रहने दूँ न?

मैंने शुद्ध करने का प्रयत्न तो किया ही था न? लेकिन वह कहे अनुसार नहीं हुआ। थोड़ा-बहुत हुआ है मेरे भाई। लेकिन फिर तला तो वैसा ही रहा न!

### ज्ञान समझाएँ इशारों में

आपको क्या चाहिए? जिसके पास कुछ नहीं होता न, दुनिया उनकी ज़िम्मेदारी ले लेती है। कहने नहीं जाना पड़ता। (दुनिया) अपने आप ही ज़िम्मेदारी ले लेती है। दुनिया का स्वभाव बहुत अलग तरह का है।

मुझसे चला नहीं जाता, कितने सालों से?

**प्रश्नकर्ता :** आठ सालों से।

**दादाश्री :** फिर भी मैं आपसे ज़्यादा घूमता होऊँगा?

**प्रश्नकर्ता :** बहुत।

**दादाश्री :** किस आधार पर ? सारे संयोग मिल आते हैं। जिनका *पोतापणां* गया, वह जो भी माँगे या माँगने का विचार भी न करे लेकिन उसे मिल जाता है। यह तो उसे भय लगता है कि, 'मैं क्या करूँगा ?' उस भय को निकालने के लिए हम (यह सेटिंग) करने जाते हैं ! इतना बेटी को, इतना उसको और अपने हिस्से में कुछ नहीं ! या फिर संघ से कहें कि, 'यह आप सब को दे दिया। अब मेरे पास कुछ नहीं है। जब मुझे ज़रूरत होगी तब संघ से लूँगा' या फिर ऐसा कुछ कि, 'जितने आएँगे उतने वहाँ सौंप दूँगा।'

हमारा उदयाधीन होता है और आप इस तरह करोगे तब भी उदयाधीन के नज़दीक पहुँचोगे। इसे देशनापूर्वक करना कहेंगे। जबकि आपका वह, सहज रूप से है ! लेकिन बहुत फर्क पड़ जाता है।

लाख-दो लाख बचें तो संघ से कह देना कि, 'ये आपको सौंप दिए हैं। फिर ये झंझट तो नहीं करनी पड़ेंगी न ! कि, 'लाओ भाई, हम बैंक में रख दें, डबल कर लें', ऐसे सब विचार ही नहीं आएँगे न !

**प्रश्नकर्ता :** फिर ज़िम्मेदारी दादा की, मुझे क्या ?

**दादाश्री :** पूरी ज़िम्मेदारी दादा की ! लिखकर भी दे दूँ !

### सर्वस्व समर्पण, सुचरणों में

आपकी भक्ति अच्छी ही है। शुद्ध, प्योर ! लेकिन वह गिन्नियाँ रखने की आदत है। गिन्नी रख लेते हो। वे तो सारी गिन्नियाँ दे देते हैं। तो कल आप सब समझ गए।

हमने बातचीत की उस तरह से आप पूरी सेटिंग कर लोगे तो सबकुछ निकल जाएगा। दादा के आधार पर किया तो सारे आधार टूट गए। सारे आधार टूट गए, तो वे आत्मा ही थे, और उसे इस संसार के भय छूट गए। वर्ना एक गिन्नी रख लेते थे। कहते थे कि काम आएगा ! अरे, इतना डरता क्यों है ? इतने सारे के लिए नहीं डरता और थोड़े के लिए डरता है ?

सर्वस्व अर्पणता ही होनी चाहिए, सर्वस्व!

**प्रश्नकर्ता :** यह सर्वस्व अर्पणता ही है न! दादा, क्या बाकी रहा? दादा के अलावा मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।

**दादाश्री :** आपका जो बाकी है वह अब हो जाएगा। और सभी कुछ है लेकिन यह जो है न, 'यह तुम्हारा और यह मेरा', इस भेद को खत्म करने के लिए, घर पर मैंने आपसे नहीं कहा था कि, 'इतने हैं वे बहन को दे देना! आपके सिर पर कुछ भी न रहे, ऐसा कर दो'। टैक्स भी नहीं भरना पड़े! मेरी तरह रहो। मुझे जब पैसे की ज़रूरत होती है तब मैं कहता हूँ, 'नीरू बहन, दीजिए मुझे!' और आपको ज़रूरत भी किसलिए है? देने वाले लोग तो साथ में होते ही हैं।

तब फिर आत्मा में रहते सकते हैं। आत्मा यदि आत्मा में आ जाए न, तो मुक्त! आपको समझ में आया न? नहीं तो कहेगा, मेरा यह है, और वह है, वह आधार! क्या समझे आप? किसका आधार रखते हो? जो भी दो-पाँच लाख रुपये हों उनका!

**प्रश्नकर्ता :** बीमारी आने पर खर्च हो गया। था तो खर्च किया, वर्ना कौन देखता?

**दादाश्री :** नहीं-नहीं, हम जिसके लिए ऐसा मानते हैं न, देखने वाला है, वह देखेगा, वह भी अंत में गलत साबित होता है। दगा निकलता है। इसलिए यह सब से श्रेष्ठ बात है कि सब भगवान के घर! फिर ज़िम्मेदारी दादा की! अपने पास चार आने भी नहीं रखने हैं। सब यहाँ (मंदिर में) रख देने हैं, सारा ही और भविष्य में जो आएगा, वह भी वहीं। माँ की ज़मीन के आने वाले हैं, वे भी वहीं रखूँगा। मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे किसलिए चाहिए? अमरीका वाले मुझे गाड़ी देना चाहते हैं। मैं किसलिए लूँ?

**मैं, आत्मा और बैठक**

लेकिन यह ज़रा बैठक की जगह रखी तो मैं, आत्मा और बैठक,

तीन हुए। यह 'मैं' समर्पित हो गया इसलिए 'मैं' और आत्मा एक हो गए। आप समझे?

इस दुनिया में सिर्फ ज्ञानी को ही किसी चीज़ का आधार नहीं रहता, ज्ञानी को आत्मा का ही आधार रहता है! जो कि निरालंब होता है!

**प्रश्नकर्ता :** आत्मा का आधार किसे? 'मैं' को और बैठक को रहता है?

**दादाश्री :** मैं ही आत्मा हूँ और आत्मा ही मैं हूँ। सिर्फ आत्मा का ही आधार है यानी (अन्य कोई) अवलंबन नहीं है। कोई अवलंबन नहीं रहता। निरालंब हो जाते हैं, निरालंब! वे समझे हैं निरालंब को। वे जानते हैं कि 'दादा' निरालंब हैं।

**प्रश्नकर्ता :** यानी मैं और आत्मा एक ही हो जाते हैं?

**दादाश्री :** एक हो जाते हैं। बस।

**प्रश्नकर्ता :** या फिर क्या ऐसा हो सकता है कि बैठक होने के बावजूद भी मैं और आत्मा, दोनों एक हो जाएँ?

**दादाश्री :** नहीं-नहीं। बैठक के लिए तो गुरखा रखना पड़ता है। वहाँ ऐसा विचार आता है कि यह क्या करेगा? बैठक भी अगर सही निकली तो निकली, नहीं तो दगा निकलती है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, दगा ही निकलता है।

**दादाश्री :** इसके बजाय अपना क्या बुरा है?

**प्रश्नकर्ता :** बैठक में सिर्फ ज्ञानी को ही रखना है, और कुछ भी नहीं।

**दादाश्री :** सब ज्ञानी पर छोड़ देना है, आप जो भी करो, वह।



आपका जो करें वही हमारा कीजिए। यानी ज्ञानी ही खुद का आत्मा है इसलिए उन्हें तो अलग मान ही नहीं सकते। फिर भय नहीं रखना है कि अगर ज्ञानी बीमार हो जाएँगे और अगर वे नहीं रहेंगे तो हम क्या करेंगे? ऐसा कोई भय नहीं रखना है। ज्ञानी मरते ही नहीं हैं। वह तो सिर्फ शरीर मरता है। यह हमारा अवलंबन है ही नहीं न! हम निरालंब हैं! ज़रा सा भी अवलंबन नहीं रहता, इस देह का या पैसों का या किसी भी तरह का।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, हमें तो ज्ञानी का और ज्ञानी की देह का एक समान ही अवलंबन लगता है।

**दादाश्री :** देह का अवलंबन तो, देह तो कल चली जाएगी। क्या देह का अवलंबन रखना चाहिए?

### इस ज्ञान को समझो

आपने सोचा है क्या सब? नक्शा कोई बनाया है इसका? ज़बरदस्त नक्शा बनाओ कि दादा ऐसा कहते हैं, दादा वैसा कहते हैं। नक्शा बनाओ फिर किस गाँव जाना है, कहाँ मुकाम करना है, सब नक्शे में ढूँढ लेना।

और हमारा कहना, ज्ञान की समझ होती है। 'ऐसा ही करो', हमारा ऐसे आदेश नहीं होता। ज्ञान यदि आपके काम आए, ऐसा हो तो लेना। काम में न आए तो वहीं का वहीं। हम तो ज्ञान की बात करते हैं।

भगवान ने ज्ञान ही लिखा है पुस्तकों में, तुम्हारा क्या हो रहा है वह ज्ञान के आधार पर नाप लो। ऐसा ज्ञान है, तभी तो लोग ज्ञान की आराधना करते हैं।

हमारी सर्व बातें हितकारी होती हैं। इसमें हमारा ऐसा आग्रह नहीं होता कि आपको यह करना है या नहीं करना। लोगों को ऐसा लगता है कि, 'दादा ने कहा है और मुझे अब... ऐसा करने की ज़रूरत

ही नहीं है।' आपको अनुकूल हो तो करना। यह तो साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है, उस एविडेन्स के आधार पर जो होना है, वही होता है।

यह तो हम कह देते हैं। ऐसा तो किसी को ही कहते हैं, आपको यह ज्ञान लेना हो तो लेना। और नहीं लिया तो कोई बात नहीं, कहना तो चाहिए ही, हमारा फर्ज है। और तो कुछ हमारे हाथ में नहीं है। व्यवस्थित के ताबे में है। जहाँ ले जाना होता है, व्यवस्थित वहाँ ले जाता है। इसलिए इसमें कोई बोदरेशन नहीं रखना है।

क्या होता है वह देखो। दादा का तो ज्ञान है। ज्ञान के मुताबिक होता है या नहीं, वह देखो।

### बिज्ञनेस में प्रतिक्रमण

**प्रश्नकर्ता :** एक प्रश्न है, दादा!

**दादाश्री :** क्या थोड़ा-बहुत समाधान हो रहा है? वह मुझे बताओ।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, हो रहा है।

**दादाश्री :** तो फिर अब आगे चलने दो, जो भी बातें आपके पास हों, वह सब बताओ।

**प्रश्नकर्ता :** किसी को मानसिक दुःख पहुँचाएँ तो अन्याय किया कहलाएगा। हम व्यापार करते हो और व्यापार में माल तो वही का वही है। लेकिन कीमत बढ़ाएँ तो कमाई तो होगी, जब हम कीमत बढ़ाते हैं तब दूसरों का मन दुखता है, तो क्या इससे हमें नुकसान होगा?

**दादाश्री :** 'आप' कीमत बढ़ाओगे तो दुःख होगा, कीमत नहीं बढ़ाओगे तो कोई हर्ज नहीं है। आप कर्ता बन जाओगे तो दुःख होगा और यदि व्यवस्थित को कर्ता समझोगे तो आपकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। 'व्यवस्थित कर्ता है', यह स्वीकार करो, समझो। सच में तो आपकी

जिम्मेदारी नहीं है। मैंने आपको ऐसी स्टेज पर ला दिया है कि आपकी जिम्मेदारी खत्म हो जाती है, जिम्मेदारी का एन्ड आता है। यानी कर्म करते हुए भी आपको अकर्म की स्थिति में रख दिया है।

फिर भी उनकी इच्छा ऐसी है कि 'ऐसे अकर्म स्थिति पर बैठा दिया है?! हम कर सकते हैं, ऐसे हैं।' यदि आप कर्ता हो तो बंधन होगा! यह तो जिन्हें ज्ञान देता हूँ उन्हीं के लिए, हाँ! बाकी सब तो कर्ता हैं ही। मेरे ज्ञान को समझकर और पाँच आज्ञा समझेंगे तो निबेड़ा आएगा।

**प्रश्नकर्ता :** हम कर्ता नहीं हैं लेकिन हम उस कर्म में हिस्सा लेते हैं तो अपने कर्म से दूसरों को दुःख पहुँचता है।

**दादाश्री :** लेकिन हम यानी कौन? हु (who)? चंदूभाई या शुद्धात्मा?

**प्रश्नकर्ता :** चंदूभाई।

**दादाश्री :** आप तो शुद्धात्मा हो न ?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** तो चंदूभाई कर्ता हैं, उससे आपको क्या लेना-देना है? आप अलग और चंदूभाई अलग।

**प्रश्नकर्ता :** चंदूभाई तो कर्ता बनकर तन्मयाकार हो जाते हैं। तब पता चलता है कि सामने वाली पार्टी का मन दुःखा।

**दादाश्री :** तब फिर चंदूभाई से कहना कि, 'भाई, माफी माँग लो, क्यों यह दुःख दिया?' लेकिन आपको माफी नहीं माँगनी है। जो अतिक्रमण करता है, उसे प्रतिक्रमण करना है। चंदूभाई अतिक्रमण करे तो उनसे प्रतिक्रमण करवाना।

**प्रश्नकर्ता :** यदि मैं साड़ी बेचने का काम करता हूँ और आसपास के दुकानदारों ने पाँच रुपये बढ़ा दिए हों, फिर मैंने भी पाँच रुपये

बढ़ा दिए, तो क्या ऐसा कहा जाएगा कि मैंने गलत काम किया? मुझे पर इसका असर होगा या नहीं होगा?

**दादाश्री :** लेकिन वहाँ पर कर्ता कौन है?

**प्रश्नकर्ता :** चंदूभाई, साड़ी बेचने वाले।

**दादाश्री :** आप शुद्धात्मा हो और फिर चंदूभाई करे तो यू आर नॉट रिस्पॉन्सिबल।

और यदि ऐसा लगे कि किसी तरह से सामने वाले को प्रत्यक्ष दुःख हुआ है, तो आपको चंदूभाई से कहना चाहिए कि, 'भाई, 'आपने' अतिक्रमण किया है इसलिए प्रतिक्रमण करो।' बाकी, मैंने आप पर बिल्कुल भी जोखिमदारी नहीं रखी है। आपकी जोखिमदारी खत्म कर दी है।

**प्रश्नकर्ता :** आप इस तरह चंदूभाई को खुला छोड़ दोगे तो वह तो कुछ भी करेगा।

**दादाश्री :** नहीं, इसीलिए उसे मैंने व्यवस्थित कहा है कि एक बाल जितना भी बदलाव करने का अधिकार नहीं है, एक ज़िंदगी के लिए। 'वन लाइफ' के लिए हं! जिस लाइफ में मैं व्यवस्थित देता हूँ, उस व्यवस्थित में बदलाव हो सके ऐसा नहीं है। तभी तो मैं आपको खुला छोड़ देता हूँ। यानी मैं देखकर कहता हूँ और इसलिए मुझे डाँटना भी नहीं पड़ता है कि पत्नी के साथ क्यों घूम रहे थे? और क्यों आप ऐसे...? मुझे ज़रा भी डाँटना नहीं पड़ता। दूसरी लाइफ के लिए नहीं लेकिन इस एक लाइफ के लिए यू आर नॉट रिस्पॉन्सिबल एट ऑल! फिर इतना सब कहा है।

### यह है अक्रम विज्ञान

यह तो विज्ञान है, तुरंत मुक्ति देने वाला है और यदि इस विज्ञान समझ जाएँ तो हल मिल ही जाता है। जहाँ से हल चाहोगे वहाँ से हल मिल ही जाता है और किसी चीज़ का हल न मिलता हो तो वह

विज्ञान ही नहीं कहलाएगा। हल ढूँढना हो तो हल मिल जाना चाहिए। विरोधाभास कभी भी नहीं होना चाहिए। सौ साल हो जाए फिर भी कोई विरोधाभास न हो, उसका नाम सिद्धांत कहलाता है। यह अक्रम सिद्धांत बुद्धि से पकड़ में नहीं आता। कई प्रतिष्ठित बुद्धिशाली लोग मुंबई में आए लेकिन किसी के पकड़ में नहीं आया क्योंकि यह चीज़ बुद्धि से परे है! बुद्धि तो लिमिटेड होती है। इसकी लिमिट नहीं होती है।

### ब्लैक मार्केटिंग का क्या?

**प्रश्नकर्ता :** कुछ जगहों पर लोग भूखे मरते हैं और दूसरी तरफ ब्लैक में पैसे बनाता हूँ। इसका समभाव से निकाल कैसे होगा?

**दादाश्री :** वह जो करता है न, वही ठीक है। प्रकृति जो भी करती है, वह कॉज़ का इफेक्ट ही है। फिर हमें पता चले, हमें समझ में आए कि यह न्यायपूर्वक नहीं हुआ है, तब हमें चंदूलाल से कहना चाहिए कि ऐसा मत करो। माफी माँग लेना कि फिर से ऐसा नहीं करूँगा, वह कहेगा भी लेकिन फिर से वैसा ही करेगा क्योंकि प्रकृति में ऐसा ही गुँथा हुआ है न! फिर बाद में 'हमें' धोते रहना है।

### ब्याज ले सकते हैं या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** ब्याज ले सकते हैं या नहीं?

**दादाश्री :** चंदूलाल को ब्याज लेना हो तो ले लेकिन उसे कहना कि बाद में प्रतिक्रमण करना।

**प्रश्नकर्ता :** प्रतिक्रमण किसलिए करना है? क्या ब्याज लेना अतिक्रमण है?

**दादाश्री :** अतिक्रमण किया, इसलिए। ब्याज को अतिक्रमण कब कहते हैं? जब सामने वाले व्यक्ति के मन में दुःख हो ऐसा ब्याज हो, उसे अतिक्रमण कहते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** शास्त्रों में लिखा है कि ब्याज लेना मना है, इसका क्या गणित हैं ?

**दादाश्री :** ब्याज के लिए मना तो इसलिए लिखा गया है कि जो व्यक्ति ब्याज लेता है वह कसाई जैसा हो जाता है इसलिए मना किया गया है। वह अहितकारी है, इसलिए!

### दुःख हो जाए, वहाँ प्रतिक्रमण

आदर्श व्यवहार से हम से किसी को भी दुःख न हो, इतना ही देखना है। फिर भी आपसे किसी को दुःख हो जाए तो तुरंत प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। हम उसके जैसे नहीं हो सकते। यह जो व्यवहार में पैसों की लेन-देन इत्यादि का व्यवहार है, वह तो सामान्य रिवाज है, उसे हम व्यवहार नहीं कहते। किसी को भी दुःख नहीं होना चाहिए वह देखना और दुःख हुआ हो तो प्रतिक्रमण कर लेना, उसे आदर्श व्यवहार कहते हैं।

### करो उगाही वालों के प्रतिक्रमण

इस प्रतिक्रमण से सामने वाले पर असर पड़ता है और वह पैसे लौटाता है। सामने वाले में ऐसी सद्बुद्धि उत्पन्न होती है। प्रतिक्रमण से इस तरह सीधे असर पड़ता है। जबकि लोग घर जाकर उगाही वालों को गालियाँ देते हैं तो उसका उल्टा असर होगा या नहीं? बल्कि लोग और ज्यादा उलझ जाते हैं। पूरा जगत् असर वाला है।

**प्रश्नकर्ता :** हम किसी लेनदार का प्रतिक्रमण करें फिर भी वह माँगता रहेगा न?

**दादाश्री :** माँगने या न माँगने का सवाल नहीं है। राग-द्वेष नहीं होने चाहिए। ऋण तो रह भी सकता है।

### काले बाज़ार का भी प्रतिक्रमण

**प्रश्नकर्ता :** आजकल टैक्स इतने बढ़ गए हैं कि चोरी किए

बिना बड़े-बड़े व्यापार में भी संतुलन नहीं रह पाता। सभी रिश्तत माँगते हैं तो उसके लिए चोरी तो करनी ही पड़ेगी न?

**दादाश्री :** चोरी करो लेकिन आपको पछतावा होता है या नहीं? पछतावा होने पर वह हल्का हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर ऐसे संयोगों में क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** जब हमें पता चले कि यह गलत हो रहा है, वहाँ हमें हार्दिली पछतावा करना चाहिए। संताप होनी चाहिए तभी छूटा जा सकेगा। आज कुछ काले बाज़ार का माल लाए तो फिर उसे काले बाज़ार में ही बेचना होगा। तब चंदूलाल से कहना कि प्रतिक्रमण करो। हाँ, पहले प्रतिक्रमण नहीं करते थे इसलिए कर्म के सारे तालाब भरे। अब प्रतिक्रमण करके शुद्ध कर देना चाहिए। लोभ किस निमित्त से होता है? यदि लोहा काले बाज़ार में बेचा तो आप चंदूलाल से कहना, 'चंदूलाल, बेचो इसमें हर्ज नहीं है, वह 'व्यवस्थित' के अधीन है। लेकिन अब उसका प्रतिक्रमण कर लो।' और कहना कि फिर से ऐसा न हो।

### चोरियों के भी प्रतिक्रमण

क्या तुम्हें लोगों पर चिढ़ मचती है?

**प्रश्नकर्ता :** घर में किसी के दोष दिखते हैं न, तो चिढ़ मचती है।

**दादाश्री :** क्या चंदूलाल को चिढ़ मचती है?

**प्रश्नकर्ता :** चंदूलाल को ही न!

**दादाश्री :** और 'आपको'? क्या 'आपको' चिढ़ नहीं मचती है?

**प्रश्नकर्ता :** चिढ़ भी उसे मचती है और भुगतना भी उसी को पड़ता है!

**दादाश्री :** जिसे चिढ़ मचती है, उसे भुगतना ही पड़ेगा। फिर आपको कितना नुकसान हुआ?

**प्रश्नकर्ता** : बहुत ज़्यादा नुकसान हुआ।

**दादाश्री** : अच्छा? लोगों को मारने के भाव तो नहीं होते न? लोगों से छीन लेने का भाव नहीं होते न? पैसे छीन लें, ऐसे, वैसे?

**प्रश्नकर्ता** : ऐसा नहीं होता है।

**दादाश्री** : क्या लोगों से चोरियाँ करने के भाव आते हैं?

**प्रश्नकर्ता** : लोगों से चोरी! वह किस तरह?

**दादाश्री** : माल बेचते समय वजन ज़्यादा लिख देना।

**प्रश्नकर्ता** : वह थोड़ा-बहुत होता रहता है।

**दादाश्री** : अभी भी होता है? फिर तुम प्रतिक्रमण करते हो?

**प्रश्नकर्ता** : कभी हो जाता है, कभी नहीं होता है।

**दादाश्री** : सभी जगह ध्यान तो रखना पड़ेगा न? सौ किलो की बजाय एक सौ एक किलो लिख दो तो एक किलो की चोरी की न?

**प्रश्नकर्ता** : उसका प्रतिक्रमण करने से क्या होता है?

**दादाश्री** : हम उस अभिप्राय में नहीं हैं। वैसे अभिप्राय आज नहीं है। आज तो पूर्व के फोर्स से हो रहा है। क्या आज आपका चोरी करने का अभिप्राय है?

**प्रश्नकर्ता** : बिल्कुल नहीं।

**दादाश्री** : इसलिए प्रतिक्रमण किया तो समझ लेना कि आज उसका अभिप्राय नहीं है। पिछले फोर्स से हो रहा है।

**प्रश्नकर्ता** : क्या अगले जन्म में उसके कर्मफल बदल जाएँगे?

**दादाश्री** : नहीं। इसी जन्म में खत्म हो गया कहा जाएगा न?



जगत् के लोगों को चोरी करने का अभिप्राय होता है, वे तो अभिप्राय मजबूत करते हैं कि यह करना ही चाहिए जबकि आपको क्या होता है ?

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा नहीं होना चाहिए।

**दादाश्री :** यानी तुम उत्तर में जा रहे हो और लोग दक्षिण में जा रहे हैं। यह तो चंदूलाल का पिछला स्वरूप दिख रहा है। उस हिसाब से कितना भयानक था! पिछला स्वरूप कैसा था ?

**प्रश्नकर्ता :** बहुत भयानक। प्रतिक्रमण करने के बाद भी फिर से दोष कन्टिन्युअस दिखते रहें तो क्या करना चाहिए ?

**दादाश्री :** उनके बार-बार प्रतिक्रमण करना। वर्ना सभी दोषों का एक साथ प्रतिक्रमण कर लेना। पंद्रह मिनट तक दोष दिखते रहें, उसके बाद सब दोषों के एक साथ प्रतिक्रमण कर लेने चाहिए।

### खुद ही जज और खुद ही आरोपी

लोग कहते हैं कि 'हम मिलावट करेंगे और भगवान से माफी माँग लेंगे।' अब माफी देने वाला कोई है नहीं। आपको ही माफी माँगनी है और आपको ही माफी देनी है।

### डिस्ऑनेस्टी यानी बेस्ट फूलिश्नेस

एक व्यक्ति ने कहा कि 'मुझे धर्म नहीं चाहिए। भौतिक सुख चाहिए।' उससे मैंने कहा, 'ईमानदार रहना, नीति का पालन करना।' मंदिर जाने को नहीं कहूँगा। दूसरों को तुम देते हो, वह देवधर्म है लेकिन दूसरों का, बिना हक्र का नहीं लेते, वह मानवधर्म है। अर्थात् ईमानदारी, वह सब से बड़ा धर्म है। 'डिस्ऑनेस्टी इज़ द बेस्ट फूलिश्नेस!' यदि ऑनेस्ट नहीं रह पाता तो क्या मैं समुद्र में कूद जाऊँ? मेरे दादा सिखाते हैं कि डिस्ऑनेस्ट बन जाऊँ तो उसका प्रतिक्रमण करना है। अगला जन्म आपका सफल हो जाएगा। डिस्ऑनेस्टी को डिस्ऑनेस्टी समझो और उसका पश्चाताप करो। पश्चाताप करने वाला व्यक्ति ऑनेस्ट है, यह निश्चित है।

## अनीति के अत्याधिक प्रतिक्रमण

अनीति से पैसे कमाते हैं, उन सब के उपाय बताए गए हैं कि यदि अनीति से पैसे कमाए तो रात को 'चंदूलाल' से क्या कहना है? कि बार-बार प्रतिक्रमण करो, अनीति से क्यों कमाए? इसलिए प्रतिक्रमण करो। रोजाना चार सौ-पाँच सौ प्रतिक्रमण करवाते हैं। खुद शुद्धात्मा को नहीं करना है। 'चंदूलाल' से करवाने हैं। जिसने अतिक्रमण किया उनसे प्रतिक्रमण करवाते हैं।

यदि पार्टनर के साथ मतभेद हो जाए तो तुरंत आपको पता चल जाएगा कि यह ज़रूरत से ज्यादा बोल दिया तो तुरंत उनके नाम का प्रतिक्रमण कर लेना। हमारा प्रतिक्रमण कैश पेमेन्ट होना चाहिए। यह बैंक भी कैश कहलाता है और पेमेन्ट भी कैश कहलाता है।

## अंतराय किस तरह रुकेंगे?

ऑफिस में परमिट लेने गए लेकिन साहब नहीं दिया तो मन में ऐसा होता है कि 'साहब नालायक है, ऐसा है, वैसा है।' अब इसका फल क्या आएगा, वह नहीं जानता है। इसलिए वह भाव बदल देना और प्रतिक्रमण कर लेना। इसे हम जागृति कहते हैं।

इस संसार में अंतराय कैसे पड़ते हैं, वह मैं आपको समझाता हूँ। आप जिस ऑफिस में नौकरी करते हैं, वहाँ असिस्टेन्ट को बेअक्ल कहा, उससे आपकी अक्ल पर अंतराय पड़ गए। बोलो, अब सारा संसार इस अंतराय में फँस-फँसकर मनुष्य जन्म बेकार कर देता है, गँवा देता है! सामने वाले को बेअक्ल कहने का आपको 'राइट' ही नहीं है। यदि आप ऐसा उल्टा बोलोगे तो सामने वाला भी बोलोगा, इससे उसे भी अंतराय पड़ेगा। बोलो, ऐसे अंतराय (डालने) में यह संसार कैसे रुकेगा? किसी को आपने नालायक कहा तो आपकी काबिलीयत पर अंतराय पड़ जाता है। यदि आप तुरंत ही इसका प्रतिक्रमण कर लो तो अंतराय पड़ने से पहले धुल जाता है।

## अंडरहैन्ड को डाँटा, उसके लिए प्रतिक्रमण

**प्रश्नकर्ता :** नौकरी के फर्ज अदा करते समय, मैंने बहुत कठोरता से लोगों का अपमान किया था, तिरस्कार किया था।

**दादाश्री :** उन सभी का प्रतिक्रमण करना है। उसमें आपका इरादा बुरा नहीं था, खुद के लिए नहीं बल्कि सरकार के लिए किया था इसलिए वह सिन्सियरिटी कहलाएगी।

**प्रश्नकर्ता :** उस हिसाब से तो मैं बहुत बुरा आदमी था, बहुत लोगों को दुःख हुआ होगा न?

**दादाश्री :** उन सब का एक साथ प्रतिक्रमण करना कि मेरे इस सख्त स्वभाव के कारण जो भी दोष हुए हैं, उनके लिए क्षमा माँगता हूँ। वह अलग-अलग करने की ज़रूरत नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** एक साथ प्रतिक्रमण करने हैं।

**दादाश्री :** हाँ, आपको ऐसा करना है कि मेरे स्वभाव के कारण सरकार का काम करने में, जो भी दोष हुए हैं, लोगों को दुःख हो, ऐसा किया है उसके लिए क्षमा माँगता हूँ। ऐसा रोज़ बोलना है।

## देने वाले को चुकाए

ज्ञान होने के बाद मैंने एक बार ईनाम निकाला था कि यदि कोई मुझे एक धौल मारे तो उसे मैं पाँच सौ रुपये ईनाम में दूँगा। उसके बाद मैंने लोगों को समझाया कि 'अरे, जिसे तंगी हो, वह सौ रुपये उधार लेने के लिए किसी को ढूँढने जाने के बजाय, यहाँ आकर पाँच सौ रुपये ले जाना!' 'यह क्या बोल दिया? आपको धौल मारकर हमारी क्या दशा होगी?' यानी कोई मुफ्त में धौल नहीं मारने वाला। और यदि मुफ्त में देने वाला हो तो हमें उपकार मानना चाहिए कि ओहोहो! आज जो पैसे देने से भी नहीं मिलता वह मिल गया। उनके कितने एहसान होंगे, नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** बहुत।

**दादाश्री :** नहीं मानना चाहिए क्या? पैसे देने से भी नहीं मिलते। कोई गलत नहीं करता। गलत करने का अहंकार करेगा? 'नहीं भाई, मैं किसलिए करूँ? मैं क्यों बंधन में आऊँ? ये तो उसने जो गलत किया है, उसी का लोग फल देते हैं, सामने वाले ने जो किया है, उसका फल देते हैं।

क्या पुलिस वाले को चोर को मारना अच्छा लगता होगा? लेकिन उसके निमित्त से उसे फल मिलता है। पुलिस वाला भी भीतर खुश होता है और ऐसा-वैसा सुनाता है क्योंकि उसके पीछे इगोइज़म है!



[ 5 ]

## लोभ से खड़ा संसार

### परिग्रह से हो अशांति...

**प्रश्नकर्ता** : सांसारिक लोगों को शांति मिल सके ऐसा कुछ आध्यात्मिक ज्ञान, समझ दीजिए।

**दादाश्री** : सांसारिक लोगों को शांति ही होती है न? उन्हें कब अशांति होती है? जो शादीशुदा नहीं है उसे अशांति होती है। शादीशुदा व्यक्ति को तो शांति ही होती है न?

**प्रश्नकर्ता** : क्या संसार में रहते हुए आध्यात्मिक शांति मिल सकती है?

**दादाश्री** : आध्यात्मिक शांति क्या अलग प्रकार की होती है? शांति तो एक ही प्रकार की होती है।

**प्रश्नकर्ता** : लेकिन शांति प्राप्त करने के कुछ रास्ते...?

**दादाश्री** : शांति तो... हम शाम को सोने के लिए नौ गद्दे बिछाते हों, तो हमें नौ गद्दे बिछाने पड़ते हैं ओर फिर नौ गद्दे उठाने पड़ते हैं। जबकि एक बिछाएँ तो?

**प्रश्नकर्ता** : तो एक उठाना पड़ेगा।

**दादाश्री :** इसलिए, शांति कैसे ढूँढे इसका उपाय तो हमें आना चाहिए न? कम परिग्रह, कम झंझट! भीतर में शांति ही होती है फिर, क्या? परिग्रह, सोफासेट वगैरह कुछ रखा नहीं है न?

**प्रश्नकर्ता :** आजकल तो रखने ही पड़ते हैं न!

**दादाश्री :** और पलंग-वलंग, सोफा-वोफा और फिर बच्चे ने सोफासेट पर चीरा लगाया तो फिर क्लेश! हम जो भी परिग्रह रखें, वह परिग्रह खो जाए, जल जाए, चोरी हो जाए, फिर भी उस पर अशांति न हो, दुःख न हो, उतना ही परिग्रह रखना। यदि सोफासेट जाए तो हम जानते हैं कि सोफा फटने वाला ही है, ऐसा मानकर ही बच्चों को कह देना कि, 'देखो, तुम लोग इसे मत फाड़ना।' आपको इतना कह देना है। बाद में फिर फाड़ें तो चिल्लाना मत। हम जानते ही थे कि वे तो फाड़ने वाले हैं। ये तो फिर क्लेश करता है और जीवन ही खो दिया है। जीवन तो जीने जैसा है!

### श्मशान में भी बिछाया बिस्तर?

लोग पैसों के पीछे ही पड़े हैं कि कहाँ से पैसे पाएँ? अरे, ये श्मशान में कौन से पैसे ढूँढते हो? यह तो श्मशान बन गया है, प्रेम जैसा तो कुछ दिखता ही नहीं है। खाने-पीने में चित्त का कोई ध्यान नहीं है, कपड़े पहनने का कुछ भान नहीं है, गहने पहनने का ठिकाना नहीं है, किसी में बरकत नहीं रही। यह किस प्रकार का है, ऐसा कब तक चलेगा? यह किस तरह के जीव पैदा हुए हैं वही समझ में नहीं आता! दिन भर पैसे, पैसे और बस, पैसे के पीछे ही! जबकि पैसा कुदरती तौर पर ही मिलना है। उसका रास्ता कुदरती तरीके से है। साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स है। हमें उसके पीछे पड़ने की क्या ज़रूरत है? वही हमें मुक्त करे तो बहुत अच्छा है न?

### आनंद के अभाव में अँधेरा

**दादाश्री :** अब पैसे इकट्ठे करने की इच्छा नहीं होती है न?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** ये पैसे इकट्ठे करने की इच्छा व्यक्ति को किसलिए होती है? बिल्कुल भी चैन न हो तो, किसी भी ओर झुक जाते हैं। पैसों में लीन रहते हैं, विषयों की ओर झुक जाते हैं। यदि ऐसे ज्ञान का आनंद रहे न तो तृप्ति ही रहेगी उसे। फिर उसे क्रोध-मान-माया-लोभ रहते ही नहीं। यह तो, आनंद नहीं होने की वजह से ही बेचारे लक्ष्मी की ओर झुक गए हैं। स्वरूप का 'ज्ञान' होने के बाद ही लोभ जाता है।

### लोभी प्रकृति

जो चीज़ प्रिय हो गई हो, उसी की तान में रहना, उसे लोभ कहते हैं। वह मिल जाए फिर भी संतोष नहीं होता! लोभी तो सुबह जगने से लेकर रात को सोने तक लोभ में ही रहता है, उसे लोभी कहते हैं। वह सुबह उठे तब से ही गांठ जैसा दिखाए वैसे भटकता रहता है। लोभी हँसने में भी समय नहीं बिगाड़ता। दिन भर लोभ में ही रहता है। मार्केट में जाए तभी से लोभ। बहुत लोभ, लोभ, लोभ, लोभ! अकारण ही यों दिन भर घूमता रहता है। लोभी सब्जी बाज़ार में जाए न, तो उसे पता होता है कि इस तरफ सब महँगी सब्जियाँ मिलती हैं और उस तरफ सस्ती ढेरियाँ बिकती हैं। तब फिर वह सस्ती ढेरियाँ खोज निकालता है और हर रोज़ उसी तरफ सब्जी लेने जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** वह सस्ती सब्जी लेने जाए, उसमें फँसता ही है न?

**दादाश्री :** नहीं, वह तो, जो लोभी नहीं होता न, वह फँसता है। लोभी तो उसके पास से ज़्यादा लेकर लौट आता है। जो लोभी नहीं होते न, वे सस्ती सब्जी लेने जाएँ तब फँस जाते हैं। लोभी फँसते ही नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन कभी तो फँसेंगे न?

**दादाश्री :** वह तो, लोभी ठगा भी जाता है लेकिन जब उसे धूर्त लोग मिल जाएँ तब। उन्हें कभी धूर्त लोग मिल जाते हैं।

## जहाँ जाए वहाँ खोजे सस्ता

लोभी मार्केट में जाए तब लोभ की गांठ उसे दिखाती है कि इस तरफ सेठ लोगों के लिए महँगी सब्जियाँ हैं और उस तरफ गली में सस्ती ढेरियाँ मिलती हैं तो वहाँ उसे ले जाती है! लोभ की गांठ उसे घुमाती रहती है। सस्ता कहाँ मिलता है, वह ढूँढ निकालता है। उसका तो काम ही वह है! जहाँ जाए वहाँ, दुकान पर जाए तो पान कहाँ सस्ता मिलता है, वह ढूँढ निकालता है। उसे पान खाने की आदत हो न, तो रास्ते में सस्ता कहाँ मिलता है, सब से सस्ती चाय कहाँ पीने को मिलती है और फिर अच्छी भी, अच्छी और सस्ती! उसकी सब खोज रहती है। सब्जियाँ भी अच्छी और सस्ती ढूँढ निकालते हैं। कहाँ सब से सस्ते दातुन मिलते हैं? वहाँ से ले आए उसे लोभी कहते हैं।

बाकी, लोभी को तो बस, लोभ की ही वृत्ति। जन्म हुआ तभी से। स्कूल में जाए, वहाँ भी लोभ, संडास के लिए जाए, वहाँ भी लोभ! जहाँ भी जाए, वहाँ उसे लोभ ही रहता है।

**प्रश्नकर्ता :** शौचालय में किस तरह लोभ करते हैं?

**दादाश्री :** वहाँ पानी का बहुत कम उपयोग करते हैं।

व्यापार में उसे लोभ रहता है। वह उसकी लोभग्रंथि!

जन्म से ही उसे लोभ रहता है। यदि आप साबुन से नहाने गए हों न, तो नहाकर बाहर आने के बाद वह देखेगा कि कितना साबुन घिस डाला।

हर एक बातों में उसकी जागृति लोभ में होती है। उसे ये दो दियासलाइयाँ सुलगानी नहीं पड़तीं इसलिए यों हाथ घिसता रहता है और एक दियासलाई से ही काम चला लेता है! यानी, हर एक बात में जागृति!

जन्म से ही उसकी वृत्ति लोभ में रहती है। उसी में चित्त रहता है। वह श्मशान में जाए, तब उसके लोभ का गणित पूरा होता है!



वह पूरी लिंक होती है। हम जब भी उसे जगाएँ न, तब वह लोभ में ही होता है। जागा, कि लोभ में!

### लोभी का लेखा-जोखा

ये चींटियाँ होती हैं न, उनको लोभ बहुत ज़बरदस्त होता है। एक भाई से मैंने पूछा, 'क्या आपने चींटियाँ नहीं देखी है?' तब उन्होंने कहा, 'देखी हैं न।' रात-दिन चींटियाँ ही देखते हैं न!' मैंने कहा, 'सुबह चार बजे चाय पीते समय मैं देखता हूँ कि यदि शक्कर का दाना बाहर गिर गया हो तो वहाँ सुबह चार बजे भी कहीं से आकर चींटियाँ शक्कर के दाने को लेकर चलती बनती हैं!' अरे, तुम किसलिए जल्दी उठती हो? तुम्हारी बेटियाँ नहीं हैं, तुम्हें शादी नहीं करनी है, तुम्हें इतनी झंझट किसलिए है? क्या चाहती हो? क्या तुम भूखी हो? नहीं, यह शक्कर फिर खुद नहीं खाएँगी। वह तो वहाँ जाकर स्टोर में रख आएँगी। स्टोर में सब होता है। बाजरा होता है, चावल होता है, शक्कर होती है, सबकुछ इकट्ठा होता है तो इतना सब स्टॉक होता है! वहाँ रखकर आ जाती हैं। सब इकट्ठा करती रहती हैं। यदि कीड़े के पंख हों फिर भी सब चींटियाँ इकट्ठी होकर खिंचकर ले जाती हैं। लोभी का सार क्या है? इकट्ठा करना। चींटियाँ तो पंद्रह साल तक चले, उतना इकट्ठा करती हैं। उन्हें इकट्ठा करने की, एक ही तन्मयता। उसमें कोई बीच में आए तो काटकर मर मिटती हैं।

### चींटियों को कौन दौड़ाता है?

**दादाश्री :** इन चींटियों को इतनी जल्दी कौन उठाता होगा?

**प्रश्नकर्ता :** उनका स्वभाव ही ऐसा है।

**दादाश्री :** इन सभी जानवरों में, एकेन्द्रिय, दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय तक सभी में सब से अधिक लोभी है तो चींटी। उसे लोभ जगाता है। कुछ देर सो जाती हैं लेकिन उनका लोभ उसे

जगाता है। तो यह शक्कर लेकर फिर ऐसे ही नहीं रख देतीं। रख देने के बजाय एक डंक मारकर रखती हैं। भविष्य में काम आएगा उस हिसाब से! लोभी भविष्य के लिए सबकुछ जमा करता है। फिर जब बहुत जमा हो जाता है, तब दो बड़े-बड़े चूहे घुस जाते हैं और सब साफ कर जाते हैं! देखो, वह पच्चीस लाख का चूहा घुस गया न! इसलिए हम लोगों को सिखाते हैं, चूहे घुस जाएँगे। अतः तू सचेत रह न! हम ऐसा नहीं कहते कि तू इस पुस्तक के लिए ही दे लेकिन चाहे कहीं भी दे। कुछ अपने साथ ले जाने का कर। वर्ना चूहे खा जाएँगे या नहीं! वे क्या कोई शर्म रखते हैं कि इन बेचारों को दिक्कत होगी? जहाँ लोभी होते हैं, वहाँ धूर्त होते ही हैं। अपने आप, होते ही हैं। भगवान को ठीक करने नहीं आना पड़ता। सबकुछ क्रमबद्ध ही होता है। चींटियों का चूहे खा जाते हैं और चूहों को बिल्ली खा जाती है।

### वह संग्रहित करने से संग्रहित नहीं रह पाएगी

लक्ष्मी जमा रखने की इच्छा किए बिना जमा करना। लक्ष्मी आए तो रोकना मत और न आए तो गलत उपायों से उसे खींचना मत।

लक्ष्मी जी तो अपने आप आने के लिए बाध्य हैं और हमारे संग्रह करने से संग्रहित नहीं होतीं कि आज संग्रह कर लें तो पच्चीस साल बाद बेटी की शादी हो तब तक रखे रहेंगे। उस बात में कोई दम नहीं है और यदि कोई ऐसा कुछ मान ले तो वे सब बातें गलत हैं। वह तो, उस दिन जो मिले वही ठीक। फ्रेश होना चाहिए।

अतः जो वस्तुएँ मिलें उनका उपयोग करना, फेंक मत देना। सन्मार्ग पर लगाना और बहुत जमा करने की इच्छा मत रखना। जमा करने का एक नियम होना चाहिए कि भाई, हमारी पूंजी इतनी तो होनी चाहिए। जितनी पूंजी चाहिए, फिर उतनी पूंजी रखकर, बाकी को योग्य जगह पर खर्च करना। लक्ष्मी को फेंक नहीं सकते।

लेकिन यदि लोभी संग्रह करने लगे न, तो उनके वहाँ एक-दो

बच्चे ऐसे शराबी निकलेंगे कि उनका नाम खत्म हो जाए, और साथ ही उनका पूरा घर-बार सब खत्म हो जाएगा।

ऐसा है यह जगत्। इसलिए संग्रह करोगे तो कोई लुटाने वाला मिल जाएगा। उसका एकदम फ्रेश उपयोग करना। जैसे सब्जी-भाजी का संग्रह करके रखें तो क्या होता है? वैसे ही, लक्ष्मी जी का एकदम फ्रेश उपयोग करो और लक्ष्मी जी का दुरुपयोग करना तो बहुत बड़ा गुनाह है।

### नुकसान हो तो?

**दादाश्री :** अभी कोई सेठ हो न, उनसे कोई दो हीरे ले जाए और 'दस दिन में पैसे दे दूँगा' ऐसा कहा, फिर छः महीने, बारह महीने तक पैसे न दे तो क्या होगा? सेठ पर कुछ असर होगा क्या?

**प्रश्नकर्ता :** मेरे पैसे गए, ऐसा होगा।

**दादाश्री :** मेरा कहना यह है कि एक तो हीरे गए, वह तो नुकसान हुआ ही, और फिर आर्तध्यान करना? और हीरे दिए वह तो खुद की खुशी से दिए थे, तो फिर उसका कोई दुःख तो नहीं होना चाहिए न?

**प्रश्नकर्ता :** लोभ था, इसलिए दिए न?

**दादाश्री :** और फिर वही लोभ आर्तध्यान करवाता है। यानी यह सब अज्ञानता के कारण होता है जबकि ज्ञान में कोई प्रकृति बाधा नहीं डालती। आत्मा को स्वभाव दशा में कोई प्रकृति बाधा नहीं पहुँचाती। इसलिए जो हीरे दिए थे, वे गए सो गए, लेकिन फिर रात को सोने भी नहीं देते। दस दिन हो जाएँ और वह व्यक्ति ठीक से जवाब भी न दे तब से नींद ही चली जाती है। क्योंकि पचास हज़ार के हीरे हैं, लेकिन सेठ की जायदाद कितनी? पच्चीस लाख की होगी। अब उसमें पचास हज़ार के हीरे कम करके साढ़े चौबीस लाख की जायदाद क्या तय नहीं करनी चाहिए? हम तो ऐसा ही करते थे। मैंने जिंदगी भर बस ऐसा ही किया है!

## ज्ञानी की अद्भुत बोधकला

सेठ के हीरों के पैसे नहीं आए हों फिर भी क्या सेठानी कोई चिंता करती है? तो क्या, वह पार्टनर नहीं है? बराबरी की पार्टनरशिप में है। अब सेठ कहता है कि, 'उसे हीरे दिए लेकिन उनके पैसे नहीं देता।' तब सेठानी क्या कहती है कि, 'हमारा कर्म होगा तो, नहीं आना होगा तो नहीं आएगा।' फिर भी सेठ के मन में होता है कि, 'यह नासमझ क्या कह रही है!' खुद अक्ल का बोरा! उसने पचास हजार के हीरों के रुपये नहीं दिए तो खुद पच्चीस लाख की जायदाद में से पचास हजार कम करके साढ़े चौबीस लाख की जायदाद तय करनी चाहिए और तीन लाख की जायदाद हो तो पचास हजार कम करके ढाई लाख की जायदाद तय कर लेनी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** यह समाधान पाने का कैसा अनोखा तरीका है। एकदम तुरंत समाधान हो जाएगा।

**दादाश्री :** यह तो तय कर लेना है, आसान रास्ता बनाकर! कठिन रास्ता ढूँढने की क्या ज़रूरत है?

घाटे का व्यापार करने वाले को वणिक कैसे कहा जाएगा? घर पर अपने पार्टनर से पूछ लो, पत्नी को कि, 'यह पचास हजार का गया तो आपको क्या कोई दुःख हो रहा है?' तब वह कहेगी, 'गए, यानी वे अपने नहीं हैं।' तब हमें नहीं समझना चाहिए कि, 'यह पत्नी कितनी समझदार है, मैं अकेला ही बेअक्ल हूँ', और हमें तुरंत पत्नी का ज्ञान स्वीकार कर लेना चाहिए न? एक घाटा हुआ तो उसे जाने दें लेकिन दूसरा घाटा मोल नहीं लेते। लेकिन ये तो घाटा हुआ, उसी दुःख का रोना रोते रहते हैं! अरे, गई उसका दुःख क्यों रोते हो? फिर से ऐसा न हो, उसकी चिंता कर। हमने तो साफ ऐसा ही रखा था कि जितना गया उतने कम करके रख दो!

देखो न, पचास हजार के हीरे, उन्हें ले जाने वाला आराम से पहनता है और यहाँ सेठ चिंता करते रहते हैं! सेठ से पूछें कि, 'क्यों

ऐसे उदास दिख रहे हो?’ तब वे कहते हैं, ‘कुछ नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं। यह तो ज़रा तबीयत ठीक नहीं रहती।’ वहाँ गड़बड़ करता है। अरे, सच बोल न कि, ‘भाई, ये पचास हजार के हीरे दिए हैं, उसके पैसे नहीं आए। मुझे उसकी चिंता होती रहती है।’ ऐसे सच कहने से उसका उपाय मिलेगा! वे तो सच नहीं बोलते हैं और उलझन में रहकर गड़बड़ किया करते हैं!

### प्याले फूटें, वहाँ

हम किसी के वहाँ गए हों और नौकर बीस कप चाय लेकर आ रहा हो और उसके हाथ से गिर जाएँ, तब उनका, जिनके वहाँ गए हैं उनका, भीतर में आत्मा फूट जाता है! किसलिए फूट जाता है?

**प्रश्नकर्ता :** उनकी चाय गई, उनके पैसे गए, उनका टाइम बेकार गया, जिन्हें पिलानी थी वे चले जाते हैं!

**दादाश्री :** नहीं, वह जागृत है न! बीस कप यानी बीस तिया साठ रुपये गए। चाय तो ठीक लेकिन इसने साठ रुपयों का नुकसान किया!

**प्रश्नकर्ता :** चाय पिलाकर स्वागत न कर सका।

**दादाश्री :** नहीं, वह फिर से पिलाता है। वह छोड़ता नहीं! यानी, ये लोग आबरू जाने नहीं देते! सब लोग आबरू जाने नहीं देते। फिर जो होना हो वह होगा।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन साठ रुपये गए उसका क्या?

**दादाश्री :** उसकी उपाधि भीतर ही भीतर करता रहता हैं। और मन में क्या सोचता है कि ये सब जाएँ तब नौकर को खूब फटकारूँ। फिर ऐसा ध्यान करते हैं, कैसा ध्यान? कहेगा, नौकर को खूब फटकारूँगा। सेठानी भी मन में सोचती है, ये सब जाएँ तो डाटेंगे। नौकर भी डरता रहता है! अब साठ रुपये गए इसलिए यह सब हुआ लेकिन एक पुराना मटका टूट गया होता तो सेठ क्या कहते? कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। क्योंकि उसकी वैल्यू ज़्यादा नहीं है न!

समझ में आया न? ऐसे ही इसकी क्या वैल्यू, मटके जितनी! जब 'मूल वस्तु' देखे तब इसकी वैल्यू, इसकी कीमत मटके जितनी लगेगी। पूरा जगत् मान बैठा है न, कीमत बहुत मान बैठा है, नहीं? इस मटके की कीमत बहुत मानी हुई है, नहीं?

बहुत जागृत हो तो प्याले टूट जाने पर भी भीतर क्लेश होता है। ज़रा मोटी चमड़ी वाले को कम क्लेश होगा या पतली चमड़ी वाले को होगा? जब प्याला टूटे तब जागृत को ज़्यादा क्लेश होगा न?

**प्रश्नकर्ता :** जागृत को अधिक क्लेश होगा।

**दादाश्री :** वह तो हमने कहा है न कि बुद्धि बढ़ी है इसलिए जलन बढ़ेगी, काउन्टर वेट में और बुद्धि के बैल को क्या झंझट?

**प्रश्नकर्ता :** कुछ भी नहीं।

**दादाश्री :** कोई दो गालियाँ दे गया तो फिर थोड़ी देर बाद सोचता है कि, 'अब क्या करूँ?' आज अभी तो खाकर थोड़ा आराम कर लेता हूँ, सो जाता हूँ। अरे भाई, क्या तुम्हें नींद आएगी? 'वह बात...? ऐसा तो चलता ही रहता है दुनिया में।' वह ध्यान नहीं देता, ऐसे लोग जबकि अक्ल वाले सिर पर ले लेते हैं। 'लोड' सिर पर लेते हैं!

लोभ को एक प्रकार की जागृति कहा गया है न? हाँ, लापरवाही नहीं है वह, लेकिन एक ही ओर गई हुई जागृति है, इसलिए सुख नहीं देती।

### संतोष कब रहता है?

लोभ का प्रतिपक्षी शब्द है संतोष। पूर्व जन्म में थोड़ा-बहुत ज्ञान समझा हो, आत्मज्ञान नहीं लेकिन संसारी ज्ञान समझा हो, उनमें संतोष उत्पन्न हुआ होता है और जब तक उसे नहीं समझ जाते, तब तक लोभ रहा करता है।

अनंत जन्मों तक खुद भोग चुका होता है, तब उसे संतोष रहता है कि अब कुछ नहीं चाहिए। और जिन्होंने नहीं भोगा हो उन्हें कई तरह के लोभ रहते हैं। फिर यह भोग लूँ, वह भोग लूँ और फलाना भोग लूँ, ऐसा रहा करता है।

संतोष क्या है? खुद पहले भोग चुका है, इसलिए उसे संतोष रहता है।

### मूल माल, भीतर ही

**प्रश्नकर्ता :** कुछ लोगों को तो लोकसंज्ञा से सब चाहिए। किसी की गाड़ी देखे तो खुद को भी चाहिए?

**दादाश्री :** वह लोकसंज्ञा कब उत्पन्न होती है? जब खुद को भीतर संतोष न हो तब। मुझे अभी तक, कोई सुख दे सके, ऐसा मिला ही नहीं है! बचपन से ही मुझे रेडियो तक लाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। ये सब जीते-जागते रेडियो ही घूम रहे हैं न! जब भीतर में लोभ हो तब लोकसंज्ञा मिल जाती है। संतोष का सही अर्थ ही है, समतृष्णा!

### तृष्णा, संतोष और तृप्ति

संसार का खाएँ, पीएँ और भोगें, उससे संतोष होता है लेकिन तृप्ति नहीं होती। संतोष से नए बीज डलते हैं लेकिन तृप्ति हो तो तृष्णा उत्पन्न नहीं होती, तृष्णा खत्म हो जाती है। तृप्ति और संतोष में बहुत फर्क है। संतोष तो सब को होता है लेकिन तृप्ति कुछ लोगों को ही होती है। संतोष में फिर से विचार आते हैं। खीर खाने के बाद उससे संतोष होता है, लेकिन फिर से उसकी इच्छा होती है। इसे संतोष कहते हैं। जबकि तृप्ति के बाद तो फिर से इच्छा ही नहीं होती, उसका विचार तक नहीं आता। तृप्ति वाले को तो विषय का एक भी विचार नहीं आता। ये तो चाहे कितने भी समझदार हों लेकिन तृप्ति नहीं होने से विषयों में फँस गए हैं! वीतराग भगवान का विज्ञान, वह तो तृप्ति लाने वाला ही है।

लोग कहते हैं, 'मैं खाता हूँ'। अरे, भूख लगी है उसे बुझा रहे हो न? यह पानी की प्यास अच्छी है, लक्ष्मी की प्यास भयंकर कहलाती है! उसकी तृप्ति चाहे कैसे भी पानी से नहीं होती। वह इच्छा कभी पूर्ण होती ही नहीं। संतोष होता है लेकिन तृप्ति नहीं होती।

साधनों में तृप्ति मानना, वह मनोविज्ञान है और साध्य में तृप्ति मानना, वह आत्मविज्ञान है।

### लोभी और कंजूस

**प्रश्नकर्ता :** लोभी थोड़ा कंजूस भी होता है न?

**दादाश्री :** नहीं, कंजूस तो फिर अलग है। कंजूस तो, उसके पास पैसे नहीं होते इसलिए कंजूसी करता है। जबकि लोभी तो, घर में पच्चीस हजार रुपये पड़े हों फिर भी गेहूँ-चावल कैसे सस्ते मिलें, घी कैसे सस्ता मिले, इस तरह जहाँ-तहाँ लोभ में ही चित्त रहता है। मार्केट में जाए तब भी किस जगह सस्ती ढेरियाँ मिलती हैं, वही ढूँढता रहता है!

लोभी किसे कहते हैं कि जो हर बात में जागृत हो!

इसमें दो तरह के होते हैं। खुद के पास चीज़ की कमी है इसलिए किसी के घर से ले आता था, तब उसे लोभ नहीं कहेंगे। खुद के पास सभी चीज़ें हैं, साधन हैं, बैंक में थोड़े रुपये हैं, फिर भी ऐसा करता है, उसे लोभ कहते हैं! चीज़ कम हो और ले आए, वह तो स्वाभाविक बात है, उसमें हर्ज नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** लोभी और कंजूस में क्या फर्क है?

**दादाश्री :** कंजूस सिर्फ लक्ष्मी के लिए ही होता है, लोभी तो हर तरफ से लोभ में रहता है। मान का भी लोभ करता है और लक्ष्मी का भी करता है। लोभी को हर दिशा में लोभ होता है, वह सबकुछ खींच ले जाता है।



## अर्थशास्त्र की समझ, ज्ञानी द्वारा

**प्रश्नकर्ता :** लोभी बनना चाहिए या किफायती ?

**दादाश्री :** लोभी बनना गुनाह है, किफायती बनना गुनाह नहीं है।

‘इकॉनोमी’ किसे कहते हैं ? ज्यादा हो तब ज्यादा और ठंडा हो तब ठंडा। कभी भी कर्ज लेकर कार्य मत करना। कर्ज लेकर व्यापार कर सकते हैं लेकिन मौज-मस्ती नहीं कर सकते। कर्ज लेकर कब खाना चाहिए? जब मरने का वक्त आए, तब। वर्ना कर्ज लेकर घी नहीं पी सकते।

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी, कंजूसी और किफायत में अंतर है क्या ?

**दादाश्री :** हाँ, बहुत अंतर है। हजार रुपये महीना कमाते हों तो आठ सौ रुपये खर्च करना और पाँच सौ आते हों तो चार सौ खर्च करना, इसे किफायत कहते हैं। जबकि कंजूस तो सिर्फ चार सौ ही खर्च करता है, फिर भले ही हजार आएँ या दो हजार आएँ। वह टैक्सी में नहीं जाता है। किफायत तो, इकॉनोमिक्स-अर्थशास्त्र है। वह तो भविष्य की मुश्किलों को ध्यान में रखता है। कंजूस को देखकर दूसरों को चिढ़ होती है कि कंजूस है। किफायती को देखकर चिढ़ नहीं होती। वैसे, किफायती या कंजूस, ये रिलेटिव हैं। उड़ाऊ व्यक्ति को किफायती भी अच्छा नहीं लगता। संसार में यह सारी दखल भ्रांति की भाषा से है कि उड़ाऊ नहीं होना चाहिए। लेकिन किफायती व्यक्ति को चाहे जितना भी कहें फिर भी नहीं छोड़ता और उड़ाऊ व्यक्ति किफायत करने जाए तो भी उड़ाऊ ही रहता है। उड़ाऊपन या कंजूसपन, वह सब सहज स्वभाव से है। चाहे कुछ भी कर लें फिर भी बदलते नहीं। प्राकृत गुण सारे सहज भाव से हैं। अंत में तो सभी में नॉर्मैलिटी चाहिए।

हमारी जेब में पैसे रखे तो टैक्सी या गाड़ी में ही खर्च होते हैं। खर्च नहीं करना है, ऐसा भी नहीं है और खर्च करना है, ऐसा भी

नहीं है। ऐसा कुछ भी तय नहीं होता। पैसे व्यर्थ खर्च नहीं करने चाहिए, जैसे संयोग आएँ वैसे खर्च करने चाहिए।

ये दादा कंजूस भी हैं, किफायती भी हैं और उड़ाऊ भी हैं। पक्के उड़ाऊ हैं, फिर भी कम्लिटली एडजस्टेबल हैं। औरों के लिए उड़ाऊ, खुद के लिए किफायती और उपदेश देने में सूक्ष्मता वाले; इससे सामने वाले को हमारा सूक्ष्म व्यवहार दिखता है। हमारी इकॉनोमी एडजस्टेबल होती है। टॉपमोस्ट होती है। हम तो पानी का उपयोग भी किफायत से करते हैं, एडजस्टमेन्ट लेकर उपयोग करते हैं। हमारे प्राकृत गुण सहज भाव में होते हैं।

### किफायत में रसोईघर अपवाद

घर में किफायत कैसी होनी चाहिए? बाहर खराब न दिखे, वैसी किफायत होनी चाहिए। किफायत रसोईघर में नहीं पहुँचनी चाहिए। उदार किफायत होनी चाहिए। यदि रसोईघर में किफायत घुसी तो मन बिगड़ जाएगा, कोई मेहमान आए तो भी मन बिगड़ जाएगा कि चावल खत्म हो जाएँगे! कोई बहुत उड़ाऊ हो तो उसे हम कहते हैं कि 'नोबल' किफायत करो।

### वह भावना मतलब रौद्रध्यान

**प्रश्नकर्ता :** आप्तसूत्र में एक वाक्य है वह ज़रा विस्तार से समझाइए कि, पैसे कमाने की भावना यानी रौद्रध्यान।

**दादाश्री :** जो चीज़ ऐसे ही मिलनी है तो उसे पाने की भावना करने का क्या फायदा?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन फिर क्या कमाने की भावना किए बिना ऐसे ही मिल जाएँगे?

**दादाश्री :** कमाई ऐसे ही मिल जाती है। वह फ्री ऑफ कॉस्ट मिलती रहती है लेकिन लोग तो लोभ से भावना किया करते हैं। उसे

भ्रांति है न, इसलिए कहता है कि, 'मैं करूँगा तो मिलेगा, वना नहीं मिलेगा।'

**प्रश्नकर्ता :** हम कारखाने न जाएँ तो नुकसान होता है।

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन जो जाते हैं उन्हें भी नुकसान होता है न?

यानी इसमें क्या कहना चाहते हैं? पैसे कमाने की भावना करने की ज़रूरत नहीं है। प्रयत्न भले ही जारी रहें। भावना से क्या होता है? 'पैसे मैं खींच लूँ' तो फिर सामने वाले के हिस्से में नहीं रहेंगे। इसका मतलब इतना है कि मैं क्वोटा छीन लूँ तो उसके हिस्से में नहीं रहेगा। इसलिए जो कुदरती क्वोटा निर्मित हुआ है, उसे हम वैसी ही रहने दें न! लोभ का मतलब क्या है? दूसरों का हड़प लेना। अरे कमाने की भावना करने की ज़रूरत ही क्या है? जिसे मरना है उसे मारने की भावना करने की क्या ज़रूरत है? मैं ऐसा कहना चाहता हूँ। इससे तो लोगों के कई पाप होने से रुक जाएँगे, ऐसा कहना चाहता हूँ मैं, इस एक वाक्य में!

### वह सारा रौद्रध्यान

खुद को पैसे मिलते हों, अच्छी तरह से मिलते हों, फिर भी रात-दिन पैसों के पीछे ही ध्यान करना यह रौद्रध्यान है। कि 'भाई, आपको इतना सब मिल रहा है फिर भी लोगों का क्वोटा भी हड़प लेना है? लोगों का क्वोटा होता है उसमें से आपको ले लेना है? इसलिए लोभ को रौद्रध्यान कहा है। क्या कहा भगवान ने? करोड़ों आते हों तो आने दो लेकिन उसी में ध्यान मत रखो। इधर से लूँ या उधर से लूँ। ऐसे होते हैं क्या इस दुनिया में?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, बहुत।

**दादाश्री :** क्या आपने नहीं देखे हैं?

**प्रश्नकर्ता :** होते हैं।

**दादाश्री :** क्या आपने देखे हैं?

**प्रश्नकर्ता :** देखे हैं न!

**दादाश्री :** वही और कुछ नहीं, इसके अलावा पत्नी भी कुछ याद नहीं आती, ऐसे पुण्यशाली लोग हैं। (!) वह रौद्रध्यान कहलाता है और वह नर्कगति का कारण है। फिर हमें बुलाए और मूड बदल जाए और गुस्सा आ जाए, वह नर्कगति का कारण। समझ में आया न? वह रौद्रध्यान कहलाता है। फिर किसी जीव की हिंसा करनी, किसी को दुःख देना, तकलीफ देना, वह सब रौद्रध्यान।

### लोभाचार, अधोगति का कारण

**प्रश्नकर्ता :** पैसों का बहुत लोभ हो तो क्या तिर्चच गति में जाते हैं?

**दादाश्री :** और क्या होगा फिर? लोभ के कारण जो आचरण होता है न, वह आचरण ही उसे जानवर योनि में ले जाता है। लोभ दो प्रकार के होते हैं। जिस लोभ से आचरण न बिगड़े और लोभ हो, तो वह लोभ देवगति में ले जाता है। वह ऊँचे प्रकार का लोभ कहलाता है। बाकी इस लोभ से तो सारे आचरण बिगड़ गए हैं, जो फिर अधोगति में ले जाते हैं!

### आठ आने के लिए आठ घंटे

हिन्दुस्तान में तो ऐसे भी लोग हैं, जिनके आठ आने खो गए हों न तो उसे आठ घंटे तक ढूँढते हैं, तलाश करते हैं। 'अरे भाई, क्या कर रहे हो?' तब कहता है कि, 'मेरे आठ आने खो गए हैं'। वे खो गए हैं इसलिए ढूँढने तो पड़ेंगे न? ढूँढते हैं या नहीं? यानी हर कोई अपनी समझ के अनुसार उपयोग करता है। यह मनुष्य देह बड़ी मुश्किल से मिली है, बहुत कीमती देह है लेकिन जैसी समझ हो वैसा उपयोग करता है। समझ के अनुसार ही उपयोग करेगा न?

### मरने के बाद साँप बनते हैं

लक्ष्मी मेन्टनन्स (आवश्यकता) से अधिक हो तो उन्हें खर्च

करना नहीं आता इसलिए जमा करते रहते हैं। पहले तो इतनी लक्ष्मी जमा करते थे कि चरु (हंडा, चौड़े मुँह का बर्तन में सोनामुहर भरते) दबाते थे और फिर खुद ही साँप बनकर घूमते थे क्योंकि रक्षण करने की आदत पड़ गई थी। खुद, अपने आप ही साँप हुआ है।

हमने बहुत लोभी देखे थे। सारी जिंदगी छोटी सी धोती पहनकर घूमते रहते हैं और पाँच हजार रुपये गाड़कर रखे होते हैं।

धन का रक्षण तो जब जिन्दा थे तब किया था इसलिए मरने के बाद भी धन का रक्षण करना पड़ता है। वह फिर, या तो बिच्छू बनेगा या फिर बड़ा सा भँवरा बनेगा। सब का संयुक्त धन होगा तो सब लोग भँवरे बनेंगे। सब भँवरें बनकर घड़े (हंडा) में बैठे रहेंगे और कोई हाथ डालने जाए तो उसे भँवरे काट खाते हैं!

यानी ऐसा है यह हिन्दुस्तान!

## क्या अच्छा ?

**प्रश्नकर्ता :** इस जगत् में धनवान होना अच्छा या सुदामा होना अच्छा ?

**दादाश्री :** इस जगत् में अधिक धनवान होना भी जोखिम है और सुदामा होना भी जोखिम है। लक्ष्मी तो आए और जाए, वही अच्छा।

लोभ में भी किसी और को नुकसान न करे ऐसा लोभ होना चाहिए। और इस जगत् में लोभी तो, किस प्रकार से लोगों का धन खुद को मिले, वह देवों की मानता रखते हैं कि किसी भी प्रकार से इसका धन मुझे ला दीजिए। ऐसा लोभ नहीं होना चाहिए।

किसलिए लोभी होकर घूमते रहते हो? यदि है तो चुपचाप, खा-पीकर मौज कर न? भगवान का नाम लिया कर! ये तो कहता है कि, 'जो चालीस हजार बैंक में हैं, वे कभी निकालने नहीं हैं।' वह ऐसा सोचता है कि वह क्रेडिट ही रहेगा। नहीं, डेबिट खाता भी होता ही है। वह जाने के लिए ही आता है। नदी में भी यदि ज्यादा पानी आ जाए तो वह सब को छूट देती है कि ले जाओ, उपयोग करो।

जबकि इनके पास आए तो वे संग्रह करते हैं। नदी को यदि चेतना होती न तो वह भी संग्रह करके रखती! यहाँ तो, जितना आए उतना खर्च कर देना, इसका संग्रह क्यों करना है? खा-पीकर, खिला देना है।

अरे, बैंक में क्यों जमा करते हो? खा-पी, सब महात्माओं को बुलाकर खर्च कर दे। तभी तो कबीर साहब ने कहा है कि, 'चलती वखते हे नरों, संग न रहे बादाम।' और पिछले जन्म में जिसका चेहरा भी नहीं देखते थे, उसी को जायदाद देकर जाएगा। 'क्या! मैं चेहरा नहीं देखता था?' तब कहते हैं कि, पिछले जन्म में आप जिसका चेहरा भी नहीं देखना चाहते थे, वही आपके पास है। जिसे आप छाती से लगाए रखते हो! आप कैसे पहचान पाओगे? अरे, बिना बात के मार खा रहा है! जैसे माया मार खिलाती है!

'खा-पीकर खर्च कर दे!' कहते हैं।

### पत्नी को भी ठगता है

ऐसा है न लोग तो पैसों के लिए बड़े-बड़े साहब को ठगते हैं और ये अहमदाबाद के सेठ लोग तो बाई साहब (सेठानी) को भी ठगते हैं और खूब ठगते हैं। सेठानी यात्रा में जाने के लिए बीस हजार माँगती थी और सेठ चार साल से कह रहे थे कि मेरे पास बैंक में बीस हजार आए ही नहीं हैं। अब बैंक में देखें तो पाँच-पाँच लाख रुपये पड़े रहते थे। सेठानी तो बेचारी विश्वास रखे, ऐसी। पुराने ज़माने की। तो सेठ जो भी कहते उसे सच मान लेती। वह तो सेठानी को धोखा देते थे! जिसके साथ रात-दिन रहते हैं, संसार साथ में सौदा साथ का, वहाँ भी धोखा देना? अब उनको कैसे पहुँच सकते हैं?

यदि सेठानी कहे कि, 'मुझे यात्रा में जाने के लिए बीस हजार दो। अब यदि हमारे पास न हों तो उसका मन दुःखता है। वह तो, हमारे पास नहीं है इसलिए मन दुःखता है। लेकिन जितना हो उतना तो आप दे दो! जितना हो उतना देना चाहिए या नहीं? हो सके उतना, एज़ फार एज़ पॉसिबल', आप क्या करोगे?

यह तो बिल्कुल बेभानपना है! लोग सिर्फ पैसों के पीछे ही पड़े हैं! पैसा, पैसा, पैसा!

### वह है हिंसक भाव

पैसे जमा नहीं करने चाहिए। परिग्रह करते हैं। पैसे जमा करना वह हिंसा ही है इसलिए दूसरों को दुःख देता है।

लोभ में भी हिंसक भाव रहा हुआ है। लोभ में हिंसक भाव ऐसे होता है कि आपके पास जो पैसे आते हैं वे दूसरों के पास से कम होकर आते हैं न? क्रोध-मान-माया-लोभ, ये सब हिंसक हैं। कपट करना, वह हिंसक भाव नहीं? लेकिन ऐसा सब उस बेचारे से छीन लेने के लिए करते हो? वे सब हिंसक भाव हैं।

लोभ से यह जगत् खड़ा है। आपको जलेबी भाती हो और आपको तीन दें और उसे चार दें तो आपको मन में दखल होगा! वह लोभ ही है! तीन साड़ियाँ हों और चौथी लेने जाती है!

### लोभ से खड़ा हुआ संसार

जब तक एक भी संयोग का लोभ है तब तक संसार में आना पड़ता है, तब तक संसार में भटकना जारी रहता है और संयोगों का स्वभाव दुःखदायी है। लेकिन जब तक संयोगों का लोभ है तब तक संसार में भटकना पड़ता है।

अंततः, लोगों को किसी चीज़ का लोभ न हो तो मान का लोभ होता है। लोगों को लोभ के मान से अधिक मान का लोभ होता है क्योंकि लोभ का मान नहीं होता। यानी मान का लोभ ज़्यादा होता है! अंत में ऐसा लोभ भी होता है। और लोभ से संयोग खड़े रहते हैं इसलिए संसार चलता रहता है!

### मान का रक्षक क्रोध

जो क्रोध-मान-माया-लोभ हैं, इनमें से क्रोध और माया, ये तो

मान और लोभ के रक्षक हैं। वास्तव में लोभ का रक्षक माया है और मान का रक्षक क्रोध है। फिर भी मान के लिए माया का थोड़ा-बहुत भी उपयोग होता है। कपट करके भी मान प्राप्त कर लेते हैं। लोभी क्रोधी नहीं होते लेकिन यदि वे क्रोध करें तो समझ लेना कि उसे लोभ में कुछ रुकावट आ रही है, जिससे वह क्रोध कर रहा है। बाकी, लोभी को तो गालियाँ दे न, तो भी क्या कहेगा कि, 'हमें तो रुपये मिल गए न, भले ही क्यों न शोरगुल मचाते हों।' लोभी ऐसा होता है। क्योंकि कपट पूरा रक्षण करता ही है।

**प्रश्नकर्ता :** क्रोध किसलिए करता है ?

**दादाश्री :** क्रोध तो, खुद के मान में रुकावट आए तब क्रोध करता है। खुद के मान को ठेस लगे, तब क्रोध से मान का रक्षण करता है।

**प्रश्नकर्ता :** आपने ऐसा कहा कि माया यानी कपट, अर्थात् कपट में ही विषय हैं ?

**दादाश्री :** नहीं! कपट में विषय हैं, ऐसा नहीं है। विषय भोगने के लिए कपट के हथियार का उपयोग करता है! विषय को अधिक भोगने का लालच, वही लोभ है और वह लोभ करते समय कोई अडचन आने पर वहाँ कपट कर लेता है। लोभ का रक्षक है कपट, और मान का रक्षक है क्रोध। अतः क्रोध चौकीदार है मान का और वह कपट चौकीदार है, वह लोभ का चौकीदार है। मुख्य तो दो ही हैं लेकिन अन्य दोनों उनके चौकीदार हैं! मान और लोभ, यदि इन दोनों के रक्षक ही नहीं होंगे, तो रक्षक कौन रहेगा? रक्षकों के साथ सबकुछ चला जाता है।

**लोभ-मान का पता कैसे चले ?**

**प्रश्नकर्ता :** लोभ हुआ यह देखना और जानना, इसमें डीटेल्स में किस तरह से जाएँ ?



**दादाश्री :** इसमें तो, कैसा लोभ हुआ है, वह कैसे पता चल सकता है? और लोभ है या क्रोध, वह कैसे पता चल सकता है? आपको लोभ है वह कैसे पता चल सकता है?

**प्रश्नकर्ता :** जैसे कि हम कोई चीज़ लें और पैसे बचाने का प्रयत्न करें, इस तरह से।

**दादाश्री :** नहीं, वह लोभ नहीं कहलाता।

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर लोभ किसे कहते हैं?

**दादाश्री :** लोभी तो खाते नहीं, पीते नहीं, कपड़े (ठीक से) नहीं पहनते और पैसे जमा करते रहते हैं। उसे कहते हैं लोभ। आप तो खाते -पीते हो न? कपड़े-वपड़े पहनते हो न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** फिर क्या दिक्कत है?

**प्रश्नकर्ता :** मान हुआ वह किस तरह पता चलेगा?

**दादाश्री :** हम ऐसे 'नमस्कार' करें तो तुरंत उनके चेहरे पर से पता चल जाता है। शरीर-वरीर टाइट हुआ कि तुरंत पता चल जाता है। और उसने 'नमस्कार' नहीं किया तब भी उस पर असर होता है। डिप्रेशन हो जाता है, उससे मान का तुरंत पता चल जाता है। हमें ऐसा सब नहीं होता है।

### जहाँ मान है वहाँ लोभ नहीं

लोभी एकांगी होता है। उसे मान की बहुत झंझट नहीं होती जबकि मानी का तो ज़रा सा अपमान करें तब भी फिर हालत खराब हो जाती है! लोभी तो कहेगा कि, 'आज तो दो सौ मिले, भले ही गालियाँ दे'। आप में लोभ है क्या?

**प्रश्नकर्ता :** मान और लोभ, दोनों!

**दादाश्री :** मान और लोभ हैं, वह अच्छा है। जब तक मान और लोभ दोनों हों, तब तक लोभी नहीं कहलाते। मान को एक तरफ रख दिया जाए, तब वह लोभ कहलाता है। लोभी तो कहता है, 'उसे जो कहना हो वह कहे, हमें तो दस मिल गए न!' और झूठ भी बोलता है, बिल्कुल झूठ! क्योंकि लोभ उससे यह सब करवाता है, उसके भीतर की लोभ की ग्रंथियाँ यह सब करवाती हैं।

इसलिए लोभी को जगत् के लोग क्या कहते हैं? ढीठ कहते हैं। तब वह क्या कहता है कि, 'आप मुझे ढीठ कहते हो लेकिन मुझे तो दस मिले हैं। मैं अपनी तरह घर जाकर सो जाऊँगा, तेरे तो दस गए न!

लोभी हँसता है। लोभी हमेशा हँसता है और क्रोधित कौन होता है? जो सच्चा होता है वह क्रोधित होता है। लोभी तो बल्कि हँसता है!

### लोभी प्रतीत होते हैं ज्ञानी समान

कोई लोभी सेठ हो, उनकी दुकान पर हम बच्चे को भेजें कि जा, यह ले आ। वह रो रहा हो और हम से खुद न जाया जा सके ऐसा हो, तब हम उसे कहते हैं कि, ले यह रुपया, जा। वह लेकर आ। अब हम जानते हैं कि वह आठ आने में देता है, अब बच्चा लेकर आया, वह चार आने वापस लाया। 'अरे, बारह आने किसने ले लिए?' तब वह कहता है, 'उस सेठ ने लिए।' तब वह भाई क्या कहते हैं? 'वह सेठ क्या समझता है?' यह तो पटेल भाई, कुछ भी बोलता है, जिसके बोलने पर कोई बंधन नहीं है। फिर वह घर से दुकान जाने निकलता है 'अरे, इस छोटे बच्चे को ठग लिया तूने? यह आठ आने का है, उसके तूने बारह आने लिए?' तब सेठ कहता है कि, 'अब वापस नहीं ले सकता। वह तो गया, सो गया।' तब पटेल ज़्यादा चिढ़ गए तो लोग इकट्ठे हो गए। तब वह सेठ हँसने लगा। जैसे-जैसे पटेल गालियाँ देता, वैसे-वैसे वह हँसता 'तुम झूठे हो, लुच्चे हो, लोगों के पैसे ले लेते हो।' तब वह सेठ हँसता है। तब लोग क्या

समझते हैं, 'यह सेठ हँस रहा है और ये बेकार ही कलह कर रहा है।' इस तरह लोगों की दृष्टि में वह आरोपी बन गया। लोभी तो हँसता है कि मुझे तो मेरे चार आने मिल गए। वह भले ही कलह करता रहे। वह कलह कर रहा है, लेकिन थक जाएगा तो अपने आप चला जाएगा। वह तो बल्कि हँसता है! मैंने मुंबई के बाजार में ऐसे हँसने वाले देखे भी हैं। अब वहाँ कलह करना बेकार है।

अगर कोई मानी व्यक्ति हो न और हम उससे कहें तो वह कहेगा, 'ले, तेरे बारह आने वापस ले जा। यहाँ बकवास मत कर। ले तेरे पैसे और ला वह खिलौना वापस।' अर्थात् मानी हो तो तुरंत निकाल आ जाता है। जबकि यह तो दोबारा हाथ में नहीं आता। उसे कहते हैं लोभी।

लोभी तो बल्कि हँसता है। हँसे तो हमें लगता है कि यह व्यक्ति तो ज्ञानी की तरह हँस रहा है!

**प्रश्नकर्ता :** शांति से बात करता है।

**दादाश्री :** उसमें शांति ही होती है। लोभ सिर्फ पैसों पर ही, अन्य कहीं नहीं।

### दोनों प्रकृतियों में भिन्नता

अब, सेठानी कहे कि, 'शाम को साड़ी खरीदनी है।' तब वह सेठ कहता है कि, 'अपने पास है वैसी ही ले आओ, इससे अपना बाहर खराब नहीं दिखना चाहिए। जैसी लोग पहनते हैं, वैसी ही हमारी साड़ी होनी चाहिए।' तब सेठानी कहती है, 'वह तो गरीबों के लायक है।' तब सेठ कहता है कि, 'वह गरीबों जैसी साड़ी ही हमें शोभा देगी, वर्ना हमारा खराब लगेगा।' जबकि हम क्षत्रिय लोग तो, ज्यादा पैसे आएँ कि नई तरह की साड़ी। तीन हजार की ले आते हैं! साड़ियाँ तो तीन हजार की, पाँच हजार की, सात हजार की भी देखी हैं मैंने! पत्नी की कीमत या साड़ी की कीमत! क्योंकि जो कीमती व्यक्ति होंगे,

वे तो सात हजार की नहीं पहनेंगे, कम कीमत वाले लोग ही महँगी साड़ियाँ पहनते हैं। उन्हें बहुत खूबसूरत दिखना है न? लोग तो सात हजार की भी साड़ियाँ बनाते हैं। मुझे एक कारखाने में दिखाने के लिए ले गए थे।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, वह तो हम बहुत साल पहले विवाह की साड़ियाँ देखने गए थे। अब तो उसकी कीमत पंद्रह हजार होगी!

**दादाश्री :** यह श्रीमंतों के ही चोंचले हैं न? इसके बजाय तो धन्य भाग्य, कि रुपये देते हैं वे खर्च हो जाएँ और दिक्कत न आए। उसके जैसा धनवान कोई नहीं। ज़रूरत के हिसाब से रुपये आते हैं और ज़रूरत लायक खर्च होते हैं, फिर दिक्कत नहीं आनी चाहिए। उसे कहते हैं धनवान।

### मानी और लोभी

लोभी को मान-तान की कुछ पड़ी नहीं होती। कोई अपमान करे और सौ रुपये दे जाए तो कहेगा कि, 'हमें तो सौ रुपयों के फायदे से मतलब है न, भले ही अपमान करे!' एक बार अपमान कर गया लेकिन हमारे घर में तो सौ रुपये आए नफे में! वह लोभ के कारण! और मान का कारण हो न, तो चाहे उसके पाँच सौ रुपये खर्च हो जाएँ लेकिन, 'मान मिले तो बहुत हो गया', कहता है।

तो मान और लोभ को लेकर यह जगत् खड़ा है कि जहाँ मान नहीं, वहाँ लोभ है, जहाँ लोभ नहीं, वहाँ मान है। दीये जैसा स्पष्ट है न?

कृपालुदेव ने लिखा है न, इस जगत् में यदि मान नहीं होता तो यहीं मोक्ष हो जाता!

### मान तो भोला है

जब तक मान है तब तक लोभ नहीं कहलाता, लोभ तो मान को एक ओर रख देता है। लोभ तो सब को पी जाता है। मान का भी लोभ होता है।

लोभी तो क्या करता है? अपमान हो तो सहन कर लेता है लेकिन लोभ में नुकसान नहीं होने देता। अपमान सहन कर लेता है। मुझे बचपन में, जब मैं पच्चीस साल का था, तब कोई अपमान करता तो मैं लोभ का सारा नुकसान छोड़ने को तैयार रहता था। कोई मेरा नाम लेता तो कह देता था, 'तेरी बात तू जाने, तुझे जो चाहिए, वह ले जा', यानी यह मान के लिए और उसका लोभ के लिए, बस। एक कोने में बैठ जाता है लेकिन मान वाला छूट जाता है। मान वाले का ऐसा है न, कि मान वाले को हर कोई कहता है, इतना क्यों सीना तानकर घूम रहे हो? मान भोला है, मान का स्वभाव भोला है और लोगों को पता चल जाता है, 'ओहोहो, क्या देखकर सीना तानकर घूम रहे हो?' बल्कि ऐसे टोकने वाले लोग मिल जाते हैं और लोभी का तो किसी को पता ही नहीं चलता। और खुद को भी पता नहीं चलता कि यह किस तरह की दुकान चल रही है। खुद की जागृति ही नहीं होती।

**प्रश्नकर्ता :** लोभी को ज़रा सा टर्न कर दें तो बहुत प्रगति कर सकता है न?

**दादाश्री :** ऐसा होना बहुत मुश्किल है। मानी पलट सकता है, लोभी का पलटना मुश्किल है। लोभ तो सब से बड़ा अंधापन है। खुद को, लोभ का तो खुद को, उसके मालिक को भी पता नहीं चलता जबकि मान का तो मालिक को पता चल जाता है। यानी कि, मान भोला है लेकिन लोभ भोला नहीं है।

### मानी की योजनाएँ

जो मानी होता है न, वह दिन भर मान की ही योजनाएँ बनाता रहता है! जब भी जगाओ तब मान की ही योजनाएँ, अपना अपमान कैसे न हो, कैसे अपमान न हो, उसी भय में, उसी में ही ध्यान रहता है। वह बेकार ही सिरदर्द लेकर घूमता रहता है!

### मान खाने के लिए ठगा जाता है

हमारे घर तो चार-चार गाड़ियाँ खड़ी रहती थीं क्योंकि ऐसा

कौन परोपकारी व्यक्ति मिलता ? 'आइए अंबालाल भाई' कहा कि बस, हो गया! ऐसे भोले व्यक्ति कहाँ मिलते ? और कुछ चाय-नाश्ता नहीं कराओगे तो भी चलेगा। लेकिन 'आइए, पधारिए' कहा कि बस, बहुत हो गया! खाना नहीं खिलाएँगे तो भी चलेगा। दो दिन भूखा रहूँगा पर तेरी गाड़ी में मुझे अगली सीट पर बिठाना, पीछे नहीं। तब वे लोग अपनी सीट रोककर रखते। अब ऐसा करने वाला कौन मिलेगा ?

मानी बेचारे भोले होते हैं। एक मान के लिए बेचारे हर प्रकार से धोखा खाते हैं। रात को बारह बजे कोई आकर पूछे कि, 'अंबालाल भाई साहब, हैं क्या?' 'भाई साहब' कहा कि बहुत हो गया। यानी अन्य लोग मानी से इस तरह लाभ उठाते हैं! लेकिन मानी का क्या फायदा कर देते हैं कि मानी को इतना ऊपर चढ़ाकर फिर उसे गिराते हैं कि फिर वह सारा मान भूल जाता है। ऊपर उठने के बाद नीचे गिरे न ? हमें रोज़ 'अंबालाल भाई' कहते हों, और कभी यदि 'अंबालाल' कह दें तो कड़वा ज़हर जैसा लगता था!

मान के कारण ही सारी उलझनें हैं लेकिन मान अच्छा है। मानी बनना अच्छा क्योंकि मानी को अन्य रोग नहीं होता है। उसे तो सिर्फ मान दें कि खुश जबकि लोभी को तो खुद को भी पता नहीं चलता कि मुझ में लोभ है। मान और क्रोध, दोनों ही भोले स्वभाव के हैं। वह शादी में जाए और 'आइए, पधारिए' कहे कि तुरंत ही पता चल जाता है। उसे कोई कहेगा भी सही कि, 'किसलिए सीना तानकर घूम रहे हो?' जबकि लोभी को तो कोई कुछ कहने वाला भी नहीं मिलता!

### वहाँ पर असर, तो लोभ

लोभी की निशानी क्या है ? यदि हम पूछें कि ये दो हीरे किसी को देने के बाद वापस न आएँ तो क्या आपको कोई असर होगा ? तब कहेगा, 'वह तो होगा ही न!' असर होना ही लोभ की निशानी है। दो हीरे दिए उससे न तो हाथ में लगी, न ही अपमान किया। अपमान किया होता तब तो मान को आहत करना कहा जाता। यह

तो, कुछ भी लिए-दिए बिना हीरे दिए हैं। कोई कहे कि, 'वह गालियाँ देकर अपमान करे तो वह कैसे सहन होगा?' तो हम समझ सकते हैं कि संसारी है इसलिए सहन नहीं होता। लेकिन हीरे दिए उसमें न तो देह को लगी, न ही खून निकला। तो यह क्या सताता है? यह लोभ नाम का गुण ही उसे काटता है, सताता है।

### ऐसे खाए धोखे, मान से ही

मैं तो मूल रूप से मानी स्वभाव वाला व्यक्ति था इसलिए दुकान में घुसते ही वह समझ जाते कि, 'अंबालाल भाई आए हैं।' कॉन्ट्रैक्टर थे न, इसलिए रौबदार माने जाते थे। अरे, तकिये भी रख देते थे! फलाना रख देते थे, कहते, 'कहिए, क्या पसंद करेंगे?' तब मैं कहता कि, 'एक जोड़ी धोती का और दो-तीन कमीजों का कपड़ा लेने का विचार आया इसलिए आया हूँ', तो निकाल देते और तुरंत बिल फाड़ देते, 'साहब, यदि पैसे न हों तो घर आकर ले जाएंगा।' मैंने कहा, 'नहीं, हैं अभी मेरे पास।' इस तरह हम पैसे दे देते और नहीं होते तो कह देते कि घर से ले जाना।

लेकिन मैं जानता था कि उसने जोड़ी पर तीन रुपये अधिक लिए हैं। जोड़ी के पंद्रह रुपये लेकिन मुझसे तीन रुपये अधिक लिए क्योंकि यों ही थोड़े ही तकिये वगैरह देते होंगे? मैं समझ जाता था कि इस बेचारे का स्वभाव ही ऐसा है तो मैं उससे कहाँ किच-किच करूँ कि 'इतने ज्यादा, अठारह रुपये होते होंगे? ऐसा है, वैसा है?' अब वहाँ किच-किच करने वाला हो तो वह उसे पंद्रह रुपये देता। मैं किच-किच नहीं करता इसलिए अठारह रुपये लिए।

इन लोगों के नियम कितने अच्छे (!) हैं! वे लोग तो बहुत अच्छे हैं! फॉरेन में ऐसे लोग नहीं होते। यह तो अपनी इन्डियन पजल कहलाती है। यह पजल ऐसी है कि कोई सॉल्व नहीं कर सकता। इसे कहते हैं इंडियन पजल! 'अरे, क्या अच्छे व्यक्ति से अधिक लेने चाहिए?' तो कहते हैं, 'हाँ'। बाकी साधारण व्यक्ति तो ज्यादा देगा

ही नहीं न! अब यदि अच्छे व्यक्ति को नहीं लूटेंगे तो किसे लूटेंगे? और लूटकर भी क्या ले जाने वाले हैं? तीन रुपये! इतने के लिए तो, 'बैठिए साहब, बैठिए साहब, चाय मँगवाता हूँ', करता है। फिर मैंने कहा, 'अब चाय पीना छोड़ दिया है।' पीता था फिर भी कहता कि छोड़ दिया है।

लेकिन ठगा गया हूँ मैं पूरी जिंदगी। ठगा ही जाता रहा। किसी ने दो सौ रुपये से ठगा, किसी ने पांच सौ रुपये से ठगा। जो मुझे जिंदगी भर लूटता रहे ऐसा कोई मुझे नहीं मिला। लूटने की भी कोई हद होती है। बाउन्ड्री होती है। इसलिए धोखा खाने का हमें नियम ही ले लेना चाहिए।

### जो जान-बूझकर धोखा खाए, वह मोक्ष में जाता है

आप अच्छे इंसान हो और फिर भी आप नहीं ठगे जाओगे तो और कौन ठगा जाएगा? नालायक लोग तो ठगे नहीं जाते। उनका तो, साँप के घर साँप जाए और जीभ चाटकर वापस आए, वैसा। (जान-बूझकर) ठगे जाने पर ही हमारी खानदानियत कही जाएगी न! हमें कोई 'आईए, पधारिए' कहे तो उसका प्रिपेमेन्ट होता है।

इसलिए 'लोभी से ठगे जाते हैं' ऐसा लिखा है। क्योंकि ठगे जाकर मुझे मोक्ष में जाना है। मैं यहाँ पैसे जमा करने नहीं आया हूँ। और मैं यह भी जानता हूँ कि वे नियम के अधीन ठगते हैं या अनियम से। मैं वह जानने वाला हूँ, इसलिए हर्ज नहीं है।

मैं पहचान लेता हूँ कि यह मानी है इसलिए उसे मान देकर हमें अपना काम निकाल लेना है।

यदि लोभी हो तो वहाँ ठगा जाना चाहिए कुछ बार। वह हमें ठगता है तब वह समझता है कि उसका काम बन गया लेकिन हमें तो इतना ही देखना है कि 'मुझे यह धर्म करने दे रहा है या नहीं'। वर्ना यदि लोभी से ठगे नहीं जाएँगे तो लोभी धर्म नहीं करने देगा।



लोभी से जो ठगा जाए उसे सब से अच्छा इंसान कहते हैं जबकि लोग क्या कहते हैं, 'वह मुझे ठग नहीं सका। उसकी क्या औकात है?' अरे, उसका तो ठगने का ही व्यापार है। उसे उसका व्यापार करने दे न! व्यापार चलने दे न! आपका कहाँ ठगने का व्यापार है? उसके बिजनेस में कुछ हेल्प तो करनी ही चाहिए न? उसका बिजनेस चल रहा हो, उसमें हेल्प करनी चाहिए या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, हेल्प होने दो।

**दादाश्री :** उसे वह बिजनेस करने दे, हाँ। वर्ना हमें कोसता रहेगा।

मैं भोलेपन के कारण नहीं ठगा गया। मुझे मालूम है कि ये सभी मुझे ठग रहे हैं। मैं जान-बूझकर ठगा जाता हूँ। भोलेपन से ठगे जाने वाले पागल कहलाते हैं। हम क्या भोले हैं? जो जान-बूझकर ठगे जाएँ, क्या वे भोले होंगे?

### इस तरह बने भगवान

**प्रश्नकर्ता :** कबीर जी कहते हैं,

‘कबीर आप ठगाइए और ठगे न कोई,  
आप ठगे सुख उपजे, और ठगे दुःख होई।’

वह सिद्धांत वास्तविक रूप से किसी भी संसारी को पसंद नहीं है, तो यथार्थ क्या है?

**दादाश्री :** यह वाणी सत्य है। पूरी ज़िंदगी हमने यही व्यापार किया था। ठगे जाकर भगवान बने हैं। देखो न, हम ठगे जाकर भगवान बने हैं। इन लोगों द्वारा ठगे जाते रहे और बल्कि ठगने वाले का उपकार मानते कि, 'बहुत अच्छा हुआ भई! वर्ना पाँच हजार रुपये देने पर भी कोई न ठगे। मैं आपको पाँच हजार रुपये दूँ फिर भी आप मुझे नहीं ठगोगे। कहोगे, 'मैं वह जोखिमदारी क्यों लूँ?', और ये मूर्ख, ऐसे ही जोखिमदारी लेते हैं, कौन लेते हैं? फूलिश लोग।

## ‘हम’ भोले?

हमारे पार्टनर ने एक बार मुझसे कहा कि, ‘लोग आपके भोलेपन का लाभ उठा लेते हैं’। तब मैंने कहा कि, ‘आप मुझे भोला समझते हो इसलिए आप खुद ही भोले हैं। मैं समझ-बूझकर ठगा जाता हूँ।’ तब उन्होंने कहा कि, ‘मैं फिर से ऐसा नहीं कहूँगा।’

मैं जानता हूँ कि इस बेचारे की मति ऐसी है। उसकी नीयत ऐसी है। इसलिए उसे जाने दो। ‘लेट गो’ करो न! हम कषायों से मुक्त होने आए हैं। कषाय न हों, हम इसलिए ठगे जाते हैं इसलिए फिर से ठगे जाते हैं। जान-बूझकर ठगे जाने में मज़ा है या नहीं? जान-बूझकर ठगे जाने वाले कम होंगे न?

**प्रश्नकर्ता :** होते ही नहीं हैं।

**दादाश्री :** बचपन से ही मेरा प्रिन्सिपल ऐसा था कि जान-बूझकर ठगे जाओ। बाकी, मुझे कोई मूर्ख बना जाए और ठग सके, उस बात में दम नहीं है।

ऐसे जान-बूझकर ठगे जाने से क्या हुआ? ब्रेन टॉप पर गया। बड़े-बड़े जजों का ब्रेन भी काम न कर पाए, ऐसा काम करने लगा। जो जज होते हैं वे भी यों तो जान-बूझकर ठगे गए हैं। और जान-बूझकर ठगे जाने से ब्रेन टॉप पर पहुँच जाता है।

इसलिए जान-बूझकर ठगे जाना है, लेकिन किससे? जिसके साथ रोज़ाना व्यवहार हो, उससे। और बाहर किसी से ठगे जाना, लेकिन जान-बूझकर। वह समझेगा कि उसे मैंने ठग लिया है जबकि हम जानते हैं कि वह मूर्ख बना है।

## तब प्रकटा यह अक्रम विज्ञान

इसलिए कविराज ने क्या लिखा है कि,

‘मानी ने मान आपी, लोभिया थी छेतराय,  
सर्व नो अहम् पोषी, वीतराग चाली जाय।’

अहम् को पोषण देकर वीतराग चले जाएँ। उस बेचारे के अहम् को पोषण होता है और हमारा तो छुटकारा हो गया न! वैसे भी, क्या रुपये अंत तक साथ आने वाले हैं? इसके बजाय तो यहाँ ऐसे ही धोखा खाकर लोगों को ले जाने दो न! वर्ना बाद में लोग वारिस बनेंगे, इसलिए धोखा खा लो न! और जब वह ठगने आया ही है तो क्या उसे हम मना कर सकते हैं? ठगने आया है तो उसका मुँह क्यों दबाएँ?

हम तो खटमल को भी खून पीने देते थे कि यहाँ आया है तो अब खाना खाकर जा। क्योंकि मेरी होटल ऐसी है कि इस होटल में किसी को भी दुःख नहीं देना है। वह हमारा व्यापार! यानी कि खटमल को भी खाना खिलाया है। अब न खिलाएँ तो क्या सरकार हमें कोई दंड देगी? नहीं। हमें तो आत्मा प्राप्त करना था। हमेशा चौविहार (सूर्यास्त से पहले भोजन करना), हमेशा कंदमूल का त्याग, हमेशा गरम पानी, वह सब करने में कोई कमी नहीं रखी थी! और तब देखो यह प्रकट हुआ, पूरा 'अक्रम विज्ञान' प्रकट हुआ! जो पूरी दुनिया को स्वच्छ बना दे ऐसा यह 'अक्रम विज्ञान' प्रकट हुआ है!

### उसका रहस्य ज्ञान

**प्रश्नकर्ता :** आपने तो जान-बूझकर धोखा खाया, लेकिन वह जो धोती के अधिक पैसे ले गया उसमें उसकी क्या दशा होगी? उसे लाभ होगा या नुकसान?

**दादाश्री :** उसका जो होना होगा वह होगा। उसने मेरे सिखाने पर ऐसा नहीं किया था। हमने तो उसकी वृत्ति को पोषण दिया। हक़ का खाने आए तो भी ठीक है और अणहक्क का खाने आए तब भी हमने उसे तमाचा नहीं मारा, खा लो भई! उसका उसे तो नुकसान ही होगा न! उसने तो अणहक्क का लिया इसलिए उसे तो नुकसान होगा। लेकिन हमारा तो मोक्ष का काम हो गया न! सब के अहम् को पोषण देकर, वीतराग चले जाते हैं।' यदि अहम् को नहीं पोषेंगे तो लोग हमें आगे नहीं जाने देंगे! 'हमारा यह बाकी रहा, 'हमारा यह बाकी रहा',

ऐसा कहकर रोकेंगे। क्या कोई आगे जाने देंगे? अरे, फादर, मदर भी नहीं जाने देते न! वे तो कहते हैं कि, 'तूने मेरा कुछ भी नहीं किया'। अरे, ऐसा बदला चाहते हो? बदला तो सहजता से मिले तो अच्छी बात है। वर्ना माँ-बाप को क्या बदले में माँगना चाहिए? बदले में कुछ चाहें वे माँ-बाप ही नहीं कहलाएँगे, वे तो फिर मकान मालिक कहे जाएँगे! जान-बूझकर ठगे जाने वाले कम होते हैं न?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं होते।

**दादाश्री :** फिर तो उन्हें मोक्ष का मार्ग भी मिल जाता है न!

**प्रश्नकर्ता :** सामने वाले को ठगने का चान्स देते हैं, क्या वह गलत नहीं है?

**दादाश्री :** यह तो खुद के एडवान्समेन्ट के लिए हैं न! धोखा देने का चान्स उनके एडवान्समेन्ट के लिए है और हमारे पास खुद के एडवान्समेन्ट के लिए ठगे जाने का चान्स है। वह खुद की पौद्गलिक प्रगति करे और हम अपने आत्मा की प्रगति करें, इसमें गलत क्या है? उन्हें रोकें, तब गलत कहा जाएगा।

हमें धोखा दे गया, लेकिन बाद में उसे कोई सिरफिरा मिलेगा तो मार-मारकर उसकी हड्डी-पँसली एक कर देगा कि, 'अरे, तू मुझे धोखा दे रहा है?' ऐसा कहकर उसे मारेगा।

मैं तो शुरू से ही जान-बूझकर ठगा जाता था, इसलिए लोग मुझसे क्या कहते थे कि 'धोखेबाज को आदत पड़ जाएगी, उसकी जोखिमदारी किस पर आएगी? आप इन लोगों को नज़र अंदाज़ कर देते हो इसलिए लुटेरे बन गए हैं।' तो फिर मुझे उन्हें खुलासा करना ही पड़ेगा न! और खुलासा पद्धतिसर होना चाहिए। क्या ऐसे कोई ज़बरदस्ती खुलासा देना चाहिए? फिर मैंने कहा कि, 'आपकी बात सही है मेरे कारण कुछ लोग लुटेरे जैसे हो गए हैं, वह भी सब लोग नहीं, दो-पाँच लोग। क्योंकि उनको एन्करेज़मेन्ट मिला न!' फिर मैंने उनसे कहा, 'मेरी बात ज़रा स्थिरता से सुनिए। जिसने मुझे ठग लिया,

यदि हम उसे एक तमाचा मारें, तो हम तो ठहरे दयालु इंसान! उसे तमाचा कैसा मारेंगे? मैंने जवाब माँगने वाले से पूछा क्या यह बात आपकी समझ में आती है?’ तब उसने पूछा, ‘कैसा मारते?’ तब मैंने कहा, ‘हल्के से मारते। उससे बल्कि ज्यादा एन्करेजमेन्ट मिलेगा कि, ‘ओहोहो, ज्यादा से ज्यादा, इतना ही तमाचा लगाएँगे न? तो अब, यही करें।’ इसलिए दयालु व्यक्ति छोड़ दे, वही ठीक है। उधर वह, औरों को ठगते-ठगते जब दूसरा या तीसरा स्टेशन आएगा तब उसे ऐसा कोई मिल जाएगा जो मार मार कर उसके परखच्चे उड़ा देगा, जिससे वह जिंदगी भर के लिए आदत भूल जाएगा। उसे जो ठगने की आदत पड़ गई है और वह उसकी यह आदत छुड़वा देगा। अच्छी तरह सिर फोड़ देगा। आपको समझ में आया न? खुलासा ठीक है न? लेकिन इस ज्ञान के बाद तो हमारा वह सारा संग ही छूट गया है न। वैसे भी 1946 के बाद वैराग्य आ गया था और 1958 में यह ज्ञान प्रकट हुआ!

जान-बूझकर ठगे जाना तो सब से बड़ा पुण्य है। अनजाने में तो सभी ठगे जाते हैं लेकिन हमने तो पूरी जिंदगी यही व्यापार किया कि जान-बूझकर ठगा जाना। अच्छा बिज़नेस है न? ठगने वाला मिले तो समझना, ‘हम बहुत पुण्यशाली हैं।’ वर्ना धोखेबाज़ मिलते ही नहीं हैं न! क्या हिन्दुस्तान में सब लोग पापी ही हैं? आप मुझे कहो कि, ‘आप मुझे ठग लीजिए’, तो यह जोखिमदारी मैं अपने सिर पर क्यों लूँ? और जान-बूझकर ठगे जाने जैसी अन्य कोई कला नहीं है! लोगों को तो पसंद नहीं आती है न, ऐसी बात? लोगों का नियम इसे अमान्य करता है न? इसीलिए तो ठगने की आदत डालते हैं न? ‘टिट फॉर टेट’ ऐसा सिखाते हैं न? लेकिन क्या हम तमाचा मार सकते हैं? और यदि मैं तमाचा मारूँ तो हल्के से मारूँगा। एक जगह मैं वसूली के लिए गया था, तब उसके वहाँ कहीं और से जब्ती लगी हुई थी। मैं तो थोड़ी देर बैठा रहा। उसे जब्ती में कोई बीस रुपये भरने के होंगे लेकिन उतने रुपये भी उसके पास नहीं थे। बेचारा यों आँखों से पानी निकालने लगा, तब मैंने कहा, ‘ले, ये बीस रुपये मैं देता हूँ।’ तो बीस

रुपये देकर आया! इस तरह वसूली के लिए गया हुआ कोई बीस रुपये देकर आता होगा?

### उसका फल तो समझो

जान-बूझकर ठगे जाने जैसा कोई परमार्थ नहीं है और मैं जिंदगी भर जान-बूझकर ठगा गया हूँ। लोग कहते हैं, 'इसका फल क्या है?' तब मैंने कहा, 'जान-बूझकर ठगे जाने वाले को कौन सा पद प्राप्त होता है? कि दिल्ली में जो कोर्ट होती है न, सुप्रीम कोर्ट? तो उस कोर्ट के जज को भी टरका दे, ऐसी बुद्धि उत्पन्न होती है।' यानी क्या कि जज की भी भूल निकाले ऐसा हाई क्लास, पावरफुल दिमाग हो जाता है! कायदे में ले ले, ऐसी बुद्धि उत्पन्न होती है। जो जान-बूझकर ठगा जाता है, जो किसी को नहीं ठगता, उसका दिमाग ऐसे हाई लेवल पर जाता है! लेकिन इस तरह जान-बूझकर कौन ठगा जाएगा? ऐसा कौन पुण्यशाली होगा? और यह समझ किस तरह अडॉप्ट हो? ऐसी समझ कौन देगा? ठगने की समझ देते हैं लेकिन यह जान-बूझकर ठगे जाने की समझ कौन देता है?

### तय करने योग्य ध्येय

यहाँ तो ठगे जाने जैसी कोई चीज़ ही नहीं है, लेकिन ठगे जाँएँ तो बहुत उत्तम! लेकिन उसे, इसकी कीमत क्या मिलेगी, इसकी समझ ही नहीं है न! ठगे जाने की कीमत इतनी ज़्यादा होती है, क्या लोग ऐसा जानते होंगे?

**प्रश्नकर्ता :** लोग जानते ही नहीं हैं न!

**दादाश्री :** लेकिन हमने तो बचपन से ही ठगे जाने का सिस्टम रखा था। हमारी माँजी (झवेर बा) ने सिखाया था। वे खुद भी जान-बूझकर ठगी जाती थीं और सब को संतुष्ट करती थीं। मुझे तो वह बहुत पसंद आया था कि ये तो सब को बहुत अच्छी तरह से संतुष्ट करती है! और ठगे जाने पर, ऐसी कौन सी पूंजी है जो चली जाने वाली है? पूंजी में क्या कमी हो जाने वाली है?

**प्रश्नकर्ता :** अभी भी जान-बूझकर ठगे जाने की हिम्मत नहीं होती।

**दादाश्री :** ठगे जाने की हिम्मत? अरे, मुझे तो ज़रा भी देर नहीं लगती। और मुझे ठगने आए तो मैं समझ जाता हूँ कि यह ठगने आया है, इसलिए ठगे जाओ, फिर से ऐसा ग्राहक नहीं मिलेगा। फिर से ऐसा ग्राहक कहाँ से मिलेगा? और देख! तेरी हिम्मत ही नहीं होती न!

**प्रश्नकर्ता :** व्यापार में क्या होता है न कि हम जानते हैं कि इस माल की मार्केट प्राइस यह है, और वह आदमी एक टन पर हजार रुपये ज़्यादा चार्ज कर रहा है। यह जानते हुए भी एक हजार रुपये ज़्यादा देने की हिम्मत नहीं होती इसलिए फिर उसे कह देते हैं कि, 'नहीं, यह प्राइस तो होनी ही चाहिए।' उसे पहले थोड़ा-बहुत तो कहना पड़ता है।

**दादाश्री :** समझकर देना तो ऐसा है न, कि हम जान-बूझकर ठगे जाते हैं, यह तो एक अपवाद है और अपवाद तो कभी ही होता है। बाकी जो लोग जान-बूझकर ठगे जाते हैं, वे तो शर्म के कारण या किसी निजी कारण से ठगे जाते हैं। बाकी, जान-बूझकर ठगे जाने का उनका ध्येय नहीं होता, जबकि हमारा तो ध्येय ही था, जान-बूझकर ठगे जाना।

### अन्य विचारदशा में ही खत्म हो गई

क्या तुझे यह संसार अच्छा लगता है? कैसे अच्छा लगेगा? मैं तो यह सब देखकर ही ऊब गया था! अरे, इन लोगों ने किस जगह पर सुख मान लिया है! और कैसे सुख मान लिया है इसे? सोचा ही नहीं न! जहाँ कुछ भी होता है, उस पर कुछ सोचा ही नहीं! इससे संबंधित किसी प्रकार का कोई विचार ही नहीं! जबकि विचार तो दिन भर, सिर्फ पैसों में और पैसों में ही कि किस तरह पैसे मिलें, वर्ना पत्नी यदि पीहर गई हुई हो तो ऐसे विचार आते हैं कि, 'आज एक पत्र लिख देता हूँ कि जल्दी लौट आए!' बस, ये दो ही विचार और कोई विचार ही नहीं! यानी कि पाशवता के विचार कि, 'किसका ले

लूँ, कहाँ से इकट्ठा कर लूँ?’ अरे, यह तो फ्री ऑफ कॉस्ट है, उसके लिए क्यों माथापच्ची करते हो? तेरा यह हिसाब तो तय हो चुका है कि तेरे पास इतने पैसे आएँगे। यह पेशन्ट इतने पैसे देगा और यह पेशन्ट एक आना भी नहीं देगा!

### विश्वासघात, फिर भी रहे विश्वासपात्र

अतः हमें तो ठगे जाकर आगे बढ़ना है। जान-बूझकर ठगे जाने जैसी प्रगति दुनिया में और कोई नहीं है। मनुष्य जाति पर विश्वास, यह तो बहुत ऊँची चीज़ है। दस लोगों ने विश्वासघात किया तो क्या, सब को छोड़ दें? नहीं छोड़ सकते। लोग तो क्या करते हैं? दो-पाँच मित्रों ने दगा दिया हो तो ‘ये सब दगाबाज़ हैं, सब दगाबाज़ हैं’, कहेंगे। अरे, नहीं बोलना चाहिए। यह तो अपने हिन्दुस्तान की प्रजा, यों टेढ़े दिखते हैं लेकिन परमात्मा जैसे हैं! भले ही संयोगों की वजह से ऐसी दशा हो गई है, लेकिन मेरा ज्ञान दूँ तो एक घंटे में तो कैसे बन जाते हैं! यानी परमात्मा जैसे हैं लेकिन उन्हें संयोग नहीं मिला है।

### वह काम का नहीं

जान-बूझकर ठगा जाना प्रगति करवाता है और नासमझी से ठगे जाने में कोई लाभ नहीं है, इसमें ठगने वाला मार खाता है। इन आदिवासियों को सेठ क्या करते हैं? सेठ व्यापारी होते हैं और वे आदिवासियों के साथ बुद्धि का दुरुपयोग करते हैं या नहीं? अपनी तेज़ बुद्धि से कम बुद्धि वाले को ठगते हैं! उसमें आदिवासी का तो जो हिसाब होना था वह हो गया, लेकिन बाद में वह व्यापारी तो फिर से आदिवासी बनेगा नहीं लेकिन जानवरपन आएगा। यानी लोग खुद अपने आपको ठग रहे हैं न! अन्य किसी को नहीं ठग सकते हैं न!

### उसमें उपयोग नहीं बिगाड़ा

**प्रश्नकर्ता :** आपने आप्तवाणी में लिखा है कि बैंक में गए और



रुपये निकाले तो भला गिनने में उपयोग बिगाड़ने की ज़रूरत ही क्या? जो भी दिया जाए, उसे जेब में डाल देना।

**दादाश्री :** ऐसा है न, मैं व्यवहार में व्यापार करता था न, तब एक-एक रुपये के नोटों के बंडल देते थे या फिर पाँच-पाँच के नोटों के बंडल देते थे। उन्हें गिनने बैठूँ तो मेरा कितना ज़्यादा टाइम वेस्ट होता? मेरी मशीन तो बहुत तेज़, मिनट में तीन हजार रेवॉल्यूशन घूमे, ऐसी मशीन! अब पाँच सौ रेवॉल्यूशन किस तरह घूमे? तोड़ डालेगा वह तो। यानी कि दो-पाँच नोट कम होंगे, पच्चीस रुपये कम होंगे। वैसे तो कम होते ही नहीं हैं, वह हम जानते हैं और बहुत हुआ तो पच्चीस रुपये कम होंगे। अधिक तो आएँगे ही नहीं। लेकिन बेकार ही लोग दो रुपयों के लिए तीन-तीन बार गिनते हैं। सौ रुपये में दो रुपये की भूल हो जाए न, तो तीन-तीन बार गिनते हैं। अरे, समय तो देखो! यदि चिल्लर हो और आठ आने कम हों तो सौ रुपये फिर से गिनते हैं। मैं ऐसा सब नहीं गिनता था। मैं तो कम-ज़्यादा हो तो ले लेता था।

### सिखाया इस तरह से व्यवहार

**प्रश्नकर्ता :** तो दादाजी, इस भाई ने पैसे दिए, फिर यहाँ पैसे गिनने को क्यों कह रहे हैं?

**दादाश्री :** इन्हें गिनने के लिए कहा इसका कारण क्या है कि आपकी आदत अलग है और मेरी आदत अलग है। मैं किसी के लिए कुछ सोचूँ, ऐसा नहीं हूँ। मान लो कि आपने इस भाई को एक हजार रुपये दिए। वह भाई किसी और से कहे कि, 'पकड़, मैं आता हूँ', उस भाई ने सौ रुपये निकाल लिए बीच में। अब इस भाई ने तो गिने नहीं थे। वह भाई मुझे दे, ताकि हजार मैं इन साहब को दूँ कि, 'ये हजार लीजिए'। तब ये साहब कहेंगे, 'सौ रुपये कम हैं। किसने लिए होंगे?' अब यह कितने लोगों के लिए दुःखदायी हो जाएगा? और शंका किस पर करेंगे? और कुछ नहीं लेकिन शंका हो जाती है इसलिए इन सब से कह देता हूँ। अपने पास से दूँ तब भी कहता हूँ कि गिनकर

लेना। बाद में मुझ पर शंका नहीं होनी चाहिए कि दादा ने कम दिए। नियम अच्छा है या गलत?

**प्रश्नकर्ता** : अच्छा है।

**दादाश्री** : और मैं बिना गिने लेता हूँ, उसमें मेरी स्थिरता होती है। मुझे किसी पर शंका होती ही नहीं है। मुझ में जबरदस्त स्थिरता है। इस बारे में शंका रखता ही नहीं। सोचता ही नहीं। यह बात 'गॉन', किसी भी तरीके से, दूसरे तरीके से गया था। यह नहीं है, देने वाले ने नहीं लिया।

अतः इन सब को कहा है कि, 'गिनो।' वर्ना आप तो सोचोगे कि यह क्या हुआ?

**प्रश्नकर्ता** : यह प्रश्न तो इसलिए पूछा कि दादाजी एक वाक्य इस तरह बोलते हैं और दूसरा वाक्य ऐसा क्यों कह रहे थे!

**दादाश्री** : ऐसा है न, मेरी हर बात में स्थिरता होती है और आपकी स्थिरता अभी तक उत्पन्न नहीं हुई है। तब तक सचेत रहना।

यह सिखाता हूँ कि स्थिरता कैसे की जाती है और छोड़ ही देना है, झंझट ही नहीं करनी है। गुणाकार करने से कुछ नहीं होता और आरोप लगाना बेकार जाता है। सती पर शंका हुई तो फिर बचा ही क्या? अच्छे व्यक्ति हों और शंका हो जाए तो क्या रहा अपना? और उसी व्यक्ति के लिए, यदि उसे होटल में ले जाना हो तो दो सौ रुपये खर्च कर लेते हैं और सौ रुपये के लिए शंका करें। कितनी बड़ी भूल कहलाएगी यह? मैं नहीं करूँगा ऐसी भूल। मैंने नहीं की है जिंदगी में ऐसी भूल।

**प्रश्नकर्ता** : लेकिन व्यवहार में तो ऐसा बहुत कुछ होता रहता है।

**दादाश्री** : वही तो यह मैं नया व्यवहार सिखा रहा हूँ न। यह सब मैं व्यवहार ही सिखा रहा हूँ।

## नुकसान उठाकर व्यवहार रोशन किया

मैं तो सोलह साल का था न, तब भी लोग क्या कहते थे? मैं जब भी बड़ौदा आता तो कोई कहता कि, 'मेरे लिए ये बनियान ले आना', कोई कहता, 'मेरे लिए ऐसी टोपी ले आना, इस नंबर की।' लेकिन मैं जो लेकर आता था न, यदि बारह आने का बनियान लाता था न, तो दो आने कम लेता था। हम सोचते कि, 'अगर हम छले गए और हम पर आरोप लगे कि दूसरी जगह पर दस आने में मिल रहा था। अब, दो आने की ठगी हुई हो फिर भी लोग कहेंगे, दो आने खा गया। इसके बजाय खुद ही दो आने कम ले लो।' पहले से ही इस तरह सचेत होकर चलते थे क्योंकि वह आरोप लगाए वह पसंद नहीं था। उसके मन में शंका हो वह भी पसंद नहीं था। शंका होने पर प्रेम खत्म हो गया न! प्रेम खत्म हो जाएगा। मैं उन दिनों भी दो आने कम लेता था। मेरे साथ वाले लोग बाद में कहते थे कि, 'कैसे आदमी हो, ऐसा होता होगा? हम सच्चे हैं, बारह आने का बारह आने लेने में क्या हर्ज था?' तब हम कहते कि, 'नहीं भाई, क्योंकि हम दूसरी जगह पर ठगे गए हों। हम तो भले आदमी।' वह बताए तो ले लेते हैं। खटपट वाला हो तो कोई बात नहीं। हमें तो खटपट करना आता नहीं।

## सामने वाले को खुश होने दिया

मैं तो धोती की जोड़ लेने जाता था न, तो हर एक दुकानदार ने दो-दो रुपये ज्यादा लिए होंगे। 'अंबालाल भाई आए, अंबालाल भाई आए', ऐसा कहते, और देता भी था। जब नीयत ही दो रुपये अधिक लेने की है और उसी से खुश हो जाता है तो क्या हर्ज है? उसका मन भिखारी है। मेरा मन तो भिखारी नहीं हुआ न, दो रुपयों के लिए? ऐसा स्वभाव तो जाता नहीं है। स्वभाव हो गया है, मुझे तो ऐसा अच्छा नहीं लगता। मैं तो पहले से ही सोच-समझकर चलने वाला इंसान इसलिए मुझे यह रास नहीं आता था।

## दूसरों की मुश्किलें दूर करने का व्यापार

मैंने पूरी जिंदगी व्यापार किया लेकिन मैंने कभी व्यापार के बारे में सोचा नहीं! जो कोई भी घर पर आए न, तो उसी की बात, कि 'भाई, आपका कैसा चल रहा है, आपका कैसा चल रहा है?' वह कहता कि, 'मेरी नौकरी चली गई।' तो मैं कहता था कि सुबह चिट्ठी लिख दूँगा। सब ठीक कर देता। अपने व्यापार के बारे में कोई बात नहीं की।

**प्रश्नकर्ता :** व्यापार के बारे में कोई बात नहीं की फिर भी व्यापार तो चलता रहा।

**दादाश्री :** वह चलता रहा। आपको क्या मुश्किल है, वही जानने की आदत थी। कई तरह के लोग देखे।

## ऊपर के पैसे

**प्रश्नकर्ता :** व्यापार में लोग ऊपर का पैसा क्यों निकाल लेते हैं ?

**दादाश्री :** अरे, मैं ही लेता था न, मेरे पास ऐसे दो-तीन लाख रुपये थे। 1942 में मेरे पास थे। दो लाख आए थे। यहाँ मेरी 'बिटको इंजीनियरिंग कंपनी थी। एग्रीकल्चर डिपार्टमेन्ट में चिमटे वगैरह देने का कॉन्ट्रैक्ट था। उस समय लोहा बेचने पर 'ऑन' (ऊपर) के पैसे आए थे।

**प्रश्नकर्ता :** वे जो ऊपर के पैसे ले तो वह गुनाह नहीं कहलाएगा ?

**दादाश्री :** कैसा गुनाह ? 'ये सारे गुनाह हैं' वह तो ऐसे ही डराते रहते हैं लोग लेकिन उसमें गुनाह कैसा ? ये तो सरकार ने नियम बनाया इसलिए हमें ऊपर के पैसे लेने पड़े। वह नियम ही गलत है। ऐसा नियम ही नहीं होना चाहिए कि लोगों को ऊपर के लेने की आवश्यकता पड़े। सारे व्यापारियों को अनिवार्य रूप से ऊपर के निकालने पड़ते हैं। एक भी व्यापारी इसमें अपवाद नहीं है।

इन्कम टैक्स में ऐसा वे रखते हैं कि लोगों को ऐसा करना ही पड़ता है। वर्ना उस बेचारे के हाथ में क्या रहेगा? इसलिए वह कोई गुनाह नहीं है। किसी से चोरी करना या फिर सरकार से कर चोरी करना, ऐसा कुछ हो तो वह गलत कहलाएगा।

### बात समझाई, ज्ञान दृष्टि से

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादाजी, आज एक तरफ ये सब नियम बनाए और दूसरी ओर ऐसा चलता है, यह सब कैसे सेट होता है?

**दादाश्री :** सब सेट करते हैं। जैसा भी सेट हो जाए वही सही है। लेकिन नियम! उसकी सेटिंग करने जाएँ न, तो इस तरफ का काम रह जाएगा और हमें तो ज्ञान लेने के बाद यह गुनाह ही नहीं माना जाता। अपने यहाँ तो गुनहगार को देखते रहो, अपराधी को!

**प्रश्नकर्ता :** वैसे तो जो भी नियम बने, वे सारे नियम 'व्यवस्थित' के अधीन ही बने न? वे 'व्यवस्थित' के अधीन तो हैं ही न?

**दादाश्री :** 'व्यवस्थित' के अधीन ही बनते हैं और ये लोग जो करते हैं, वह भी 'व्यवस्थित' के अधीन ही है।

**प्रश्नकर्ता :** नियम बनाए वे व्यवस्थित के अधीन, वह पकड़ा जाता है वह भी व्यवस्थित के अधीन, गलत करता है वह भी 'व्यवस्थित' के अधीन।

**दादाश्री :** 'व्यवस्थित' से बाहर कुछ होता ही नहीं है। चोर चोरी करता है, वह 'व्यवस्थित' है। क्योंकि चोरी न करे तो उसके पैसे कौन ले जाएगा? क्या भगवान खुद लेने आएँगे? और चोर कौन बनता है? क्या सब को चोर बनाते हैं? नहीं, जिसे चोरी करने की इच्छा है उसी के लिए यह सेटिंग कर देते हैं।

### दो नंबर का धन नियमानुसार

युगान्डा में तो सरकार ने ऐसा नियम बनाया है कि भाई, एक

नंबर के धन का व्यवहार अलग और दो नंबर के धन का व्यवहार अलग। एक नंबर के पैसे बैंक में अलग से जमा करने होते हैं। दो नंबर के पैसे भी बैंक में अलग से जमा करने होते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** यह तो नया ही सुनने को मिला।

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन ऐसा ही होता है। नियमानुसार ऐसा ही होना चाहिए। युगान्डा की यह खोज बहुत अच्छी है। दो नंबर की कीमत, भाव कम होता है। उसका ब्याज भी कम होता है लेकिन बहीखाते में काम नहीं आता न!

और इन्कम टैक्स के सारे ऑफिसर जानते हैं कि ये दो नंबर के हैं और ये एक नंबर के हैं। उसे करना क्या है? उसका उपाय क्या है? उसका ही बेटा व्यापार करता हो तो उसके पास भी एक नंबर और दो नंबर होते हैं। सभी जगह यही है न! उसका और क्या उपाय है?

लेकिन यह युगान्डा वाली खोज अच्छी है। मुझे पसंद आई। दो नंबर का धन हमारा और यह एक नंबर का धन भी एक ही बैंक में जमा करवाना होता है। दोनों की विंडो अलग। एक नंबर के पैसे की विंडो और दो नंबर के पैसे की विंडो अलग।

**प्रश्नकर्ता :** गवर्नमेन्ट ने लीगलाईज़ किया होगा न?

**दादाश्री :** लीगलाईज़ तो करना ही चाहिए इस तरह से। वना तो ये बेकार की झंझट होती है। सरकार दुविधा में रहती है और लोगों को रुपये दबाने पड़ते हैं। और यहाँ तो उन रुपयों पर ब्याज का प्रतिशत, ऊपर के *ऑन* के रुपयों पर और उन एक नंबर के रुपयों पर ब्याज का प्रतिशत होता है, पौने दो या दो प्रतिशत!

### ऐसी हो आत्मा की जागृति

जिस तरह, यदि कोई लोभी हो न, तो लोभी की जागृति लोभ में कितनी होती है? ऐसा देखा है क्या आपने?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, दादाजी!

**दादाश्री :** कितनी होती है ?

**प्रश्नकर्ता :** बहुत होती है और जिस चीज़ का लोभ होता है, उसके अलावा उसे और कुछ दिखाई नहीं देता है।

**दादाश्री :** लोभी यानी क्या, वह मैं आपको समझाता हूँ कि बचपन से लेकर मृत्यु तक उसकी चेतना लोभ में ही रहती है। वह चाहे कहीं भी जाए, वहाँ कहाँ पर सस्ता मिलेगा, क्या करने से किस तरह कैसे फायदा होगा? वही ढूँढता रहता है। फायदा ही ढूँढता है, जहाँ जाए वहाँ हर बात में, खाने के बारे में, भले ही हल्का भोजन ले लेकिन उसको फायदा होना चाहिए। वह लोभी! जैसे-तैसे करके पेट भर लूँगा लेकिन हमें फायदा होना चाहिए।

अब, उस लोभी जैसी जागृति आत्मा में रहनी चाहिए कि जागृति हर कहीं से आत्मा में ही जाए। तो संसार किसी प्रकार से असर नहीं डालेगा। जिस तरह से लोभी को और कोई चीज़ बाधा नहीं डालती। लोभी को कोई गालियाँ दे तो वह क्या करता है? अरे, बल्कि हँसता है। किसलिए? वह जानता है कि पाँच रुपये मिले हैं न, भले ही उल्टा-सीधा बोले!

अतः लोभी बहुत पक्के होते हैं। इसी तरह आत्मा में पक्के रहने की ज़रूरत है। गालियाँ दे तो दे, हमें तो आत्मा के काम से मतलब है न। हमें कहाँ इसकी झंझट बढ़ानी है?

### लोभी की जागृति

लोभी की जागृति लोभ में रहती है, मानी व्यक्ति की जागृति मान में ही रहती है। कहाँ अपमान होगा, उसी का डर लगा रहता है। कहाँ मान मिले? वह मान के लिए आगे-आगे पैतरे रचता है। दिन भर वही!

ये सब मानी तो हैं लेकिन पूरे मानी नहीं। मानी तो दिन भर उसी में रहता है, व्यापार में भी नहीं रहता।

लोभी लोभ में ही रहता है। रेल में बैठने के लिए, यदि वजन के अनुसार पैसे लेते न, तो लोभी दुबला होने की इच्छा रखता। वजन के अनुसार टिकट के पैसे लेते तो, वहाँ तक का लोभ। लोभ क्या नहीं कर सकता? हालांकि कहीं पर ऐसा रिवाज नहीं है।

लेकिन कहीं-कहीं पर ऐसा रिवाज है। जूनागढ़ में (गिरनार पर्वत पर) चढ़ना हो न, तो इतने किलो के वजन वाले के लिए इतने रुपये और उतने किलो वाले के लिए इतने। वहाँ पर लोभी को मन में खटकता रहता है कि, 'अरे, दुबले होते तो अच्छा था।' खटके बगैर जाता नहीं है वह। पैसे देने पड़े तो उसे खटकता है, ये हैं लोभ के लक्षण!

कोई विषयी तो दिन भर विषय में ही रहता है। कपटी हो, वह सारा दिन निरंतर कपट में ही लीन रहता है।

उतनी ही जागृति इसमें, आत्मा में रखनी है।

### लोभ भी मान के हेतु वाला

तुझ में कौन-कौन सी ग्रंथि हैं, लोभ की और दूसरी?

**प्रश्नकर्ता :** मान।

**दादाश्री :** लोभ कितना है तुझे?

मान हो, मान को संभाले रखना हो, तो लोभ कम कर देना पड़ेगा। और लोभ को संभाले रखना हो तो मान कम कर देना पड़ेगा। तू तो दोनों करना चाहता है। कैसे मेल बैठेगा?

**प्रश्नकर्ता :** एक भी नहीं चाहिए।

**दादाश्री :** यह क्या है, वह मैं समझ गया हूँ। इसका लोभ भी ज़बरदस्त है और मान भी ज़बरदस्त है। मान ठीक है लेकिन इसका जो लोभ है न, उसका आखिरकार मान के हेतु के लिए उपयोग होता है। हेतु मान का है। इसलिए सिर्फ एक मान पर ही जाता है सब।



लोभ किसलिए कि जो भी पैसे हों न, उनमें से यदि खुद को मान मिल रहा हो न, तो उसमें खर्च कर देता है अर्थात् मान का लोभ है। क्या आपको ऐसा कुछ नहीं है ?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं दादाजी। ऐसा तो नहीं कह सकता। डिस्चार्ज में जो निकलते रहते हैं, वे दिखते जरूर हैं।

**दादाश्री :** जो हैं, उन्हें निकलने दो न।

**प्रश्नकर्ता :** निकलते हैं, वे दिखते हैं।

**दादाश्री :** निकलते हैं, वे दिखते हैं न? तब अच्छा है।

लोभ के लिए लोभ हो तो वह भटका देता है। लेकिन मान के लिए लोभ हो न, वह अच्छा है!

### मान का लोभ

**प्रश्नकर्ता :** आपने कहा कि लोभ और मान साथ में नहीं हो सकते और यदि विरोधाभासी हैं, तो साथ में किस तरह रहते हैं ?

**दादाश्री :** हाँ, यह तो मान के हेतु से लोभ है इसलिए साथ में रहते हैं। मान के लिए मान हो और लोभ के लिए लोभ हो न, मान के लिए लोभ न हो तो ये दोनों साथ-साथ नहीं रह सकते। सारा लोभ, जितने भी पैसे हो न, उतना उसे मान मिलता हो न, तो उसका साथ देगा। यानी इसके मूल रूप से इसके पीछे लोभ नहीं है। लोभ के पीछे मान रहा हुआ है। यानी बहुत भारी अहंकार है यह। वह यही समझता है कि, 'मेरे जैसा अक्लमंद कोई नहीं है!'

**प्रश्नकर्ता :** इसका अर्थ यही हुआ न, कि मान का लोभ कहा जाएगा।

**दादाश्री :** हाँ, मान का लोभ। मान प्राप्त करने का लोभ लेकिन अंततः मान में आता है। लोभ के लिए नहीं, मान के लिए लोभ!

**प्रश्नकर्ता :** क्या लोभ के लिए मान हो सकता है ?

**दादाश्री :** हाँ, होता है न।

**प्रश्नकर्ता :** वह किस तरह से?

**दादाश्री :** इतना कमाऊँगा तभी मेरा *निकाल* होगा, यह एक प्रकार का मान है। लेकिन वह अहंकार कहलाता है, मान नहीं कहलाता।

### वहाँ उपाय है देखना व जानना

**प्रश्नकर्ता :** यानी इस ज्ञान के बाद हमें देखते ही रहना है, चाहे लोभ का माल हो या मान का माल हो।

**दादाश्री :** और तो कोई उपाय ही नहीं है उसका। यह ज्ञान लेने के बाद और कोई उपाय नहीं है। और यदि ज्ञान न लिया हो तब तो पूरा, जहाँ हो वहाँ हमेशा उलझा ही रहता है। हमेशा ही सफोकेशन में रहता है। उलझा ही रहता है। ये ज्ञान के बाद तो सारी उलझनें खत्म हो जाती हैं। ऐसे-ऐसे करके झाड़ दिया तो झड़ जाता है!

### लोभ लाए रोग

**प्रश्नकर्ता :** अभी लोभ के कारण यह अधर्म घुस गया है न?

**दादाश्री :** हाँ, इस लोभ के कारण ही यह सारा नुकसान हो रहा है और लोभ ही उसे फँसाता है। 'ऐसा करो न, तो इतने हज़ार बच जाएँगे' इसलिए तो लोभ को दुश्मन कहा गया है न! लोभ उल्टा सिखाकर इंसान को अँधा बना देता है। 'दस हज़ार बच जाएँगे इसलिए लिख दो न, उल्टा!'

**प्रश्नकर्ता :** और लोभ को बढ़ावा देने वाली अपनी सरकार ही है न?

**दादाश्री :** सरकार यानी आखिरकार हम ही हैं। वह अपना ही स्वरूप है। यानी वह अपने ही सिर पर आता है इसलिए किसे गाली दें? सरकार तो अपना ही प्रतीक है। इसलिए किसे कहें हम? अतः

भूल खुद की ही है। हर बात में यदि खुद की ही भूल देखोगे तो भूल खत्म होगी वना भूल खत्म नहीं होगी।

### यह उपाय करके तो देखो

**प्रश्नकर्ता :** यह सारी संसार की जंजाल गलत है, फिर भी उठानी पड़ती है!

**दादाश्री :** गलत क्यों है? कभी रास्ते में पाँच रुपये फेंक दिए क्या?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं फेंके।

**दादाश्री :** यदि यह जंजाल गलत होती तो क्या कोई बिना फेंके रहता? क्योंकि बेकार का बोझ कौन रखे? इस जेब में जो भी चिल्लर भरी है उसे बाहर फेंक दो न! क्या यह बोझा नहीं है? फिर भी फेंका नहीं है न? कोई भी नहीं फेंकता न?

**प्रश्नकर्ता :** फेंकने की शक्ति आनी चाहिए।

**दादाश्री :** एक बार फेंक तो दो, ताकि अगली बार शक्ति आ जाए लेकिन आप तो एक बार भी नहीं फेंकते न?

एक भाई मुझसे कहते थे कि 'मुझे पैसे खर्च करने हैं फिर भी खर्च नहीं होते। मेरे हाथ बंधे हुए हैं तो मुझे क्या करना चाहिए?' मैंने उनसे कहा, 'रिक्शा किराए पर लेकर स्टेशन तक घूमकर वापस आओ और रास्ते में पंद्रह-बीस रुपये की चिल्लर डालते जाना! तब मन उछल-कूद करेगा लेकिन आप तो डालते ही जाना। फिर स्टेशन से वापस आते समय रास्ते में डालते आना। तब मन फिर से शोर मचाएगा। फिर अगले दिन जब फिर से रुपये डालने जाओगे, तब आप यदि कल दस डाले थे तो आज नौ डालना तो मन कहेगा, 'आज' तो अच्छा है।' ऐसा किसलिए?

**प्रश्नकर्ता :** एक कम डाला इसलिए।

**दादाश्री :** हाँ, फिर तीसरे दिन आठ, चौथे दिन सात, इस तरह आठ-नौ दिन तक मन, 'अच्छा है, अच्छा है' करता रहेगा तब तक डालते रहना। फिर वापस एक दिन रास्ते में सौ रुपये की चिल्लर डाल देना। तब फिर वापस जब निन्यानवे डालोगे तो मन फिर से, अच्छा ही है, ऐसा कहेगा।

ऐसा मन का स्वभाव है। मन को किस प्रकार वश में करना, वह तो ज्ञानी ही समझते हैं। एक बार रुपये डालने से लोभी स्वभाव छूट जाएगा! लेकिन फेंकते ही नहीं हैं न? बल्कि किसी ने डाले हों या किसी के गिर गए हों तो ले आता है।

### ऐसी भावना से भी पिघलें ग्रंथियाँ

**प्रश्नकर्ता :** मुझ में लोभ की ग्रंथि है तो क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** आपको कहना चाहिए कि, 'व्यवस्थित' में जो हो वह ठीक है और न हो तो भी ठीक।

**प्रश्नकर्ता :** लोभ की प्रकृति किस तरह दूर करें?

**दादाश्री :** लोभ की प्रकृति हो न तो जो सारी जायदाद हों उसे सेबोटेज कर देना। बाहर रूपक में नहीं लेकिन इस तरह कल्पना से कि, बैंक से निकालकर सब को दे देना और कहना कि खर्च कर लो। वह सब रूपक में नहीं देना है, लेकिन ऐसी भावना से वे सारी ग्रंथियाँ पिघल जाएँगी।

बाहर तो कोई अधिकार नहीं है। बैंक से लेकर आप दे दो, ऐसा अधिकार किसी को है ही नहीं।

ये कोई ऐसे नहीं हैं कि अपने बेटे को दें। यदि ले जा पाते तो सब साथ में लेकर जाते और बल्कि कर्ज करके ले जाते ऐसे हैं। लेकिन साथ में नहीं ले जा पाते, तो क्या हो सकता है फिर?

सचमुच में इंसान के बस में दे सकें, ऐसा है ही नहीं। यदि

दिया जा सकता, ऐसी एक भी शक्ति होती तो सभी शक्तियाँ होतीं। कैसे दे पाते हैं और कैसे ले पाते, वह सब हम जानते हैं, इसलिए हम सिर्फ कल्पना से कुछ कर सकते हैं, भावना से कुछ कर सकते हैं।

### मानना पड़ेगा इस लोभी स्वभाव को

लोभी जब मार्केट में जाता है तो उसकी दृष्टि सस्ती सब्जियों की ओर जाती है। भीतर लोभ क्या कहता है कि, 'ये लोभी भाई तो मुझे पोषण दे रहे हैं, इसलिए यहीं मुकाम करो।' तब लोभी को क्या करना चाहिए कि जहाँ महँगी सब्जी हो वहाँ जाना चाहिए और भाव पूछे बगैर सब्जी ले लेनी चाहिए। फिर चाहे डबल पैसे देने पड़ें। लोभ समझेगा कि मुझे पोषण नहीं मिल रहा है। फिर वह भागने लगेगा! हमारे यहाँ एक भाई आते थे। वे बड़े साहब थे। अच्छी तनख्वाह थी। पति-पत्नी, दो ही लोग थे घर में। उनके कोई बाल-बच्चे नहीं थे। एक दिन उन्होंने मुझसे कहा, 'दादा, मेरा स्वभाव बहुत कंजूस है। मेरे हाथ से पैसे नहीं छूटते। मैं किसी के यहाँ शादी में भोजन परोसूँ तब भी मुझसे ज़रा-ज़रा सा ही, चटनी जितना ही परोसा जाता है। सब लोग, मैं सुन पाऊँ उस तरह बोलते भी हैं, कि बहुत कंजूस हैं। ऐसी तो मेरी पत्नी भी शिकायत करती है लेकिन क्या करूँ? यह लोभी स्वभाव नहीं जाता। आप कोई रास्ता बताइए। यह तो, किसी और का खर्च करना हो, वहाँ भी लोभ मेरा खराब दिखाता है।' तब मैंने उनसे कहा था कि आप सत्संग में रोज़ चलकर आते हो तो अब से चलकर मत आना, रिक्शा में आना और साथ ही दस रुपयों की चिल्लर रास्ते में बिखेरते हुए आना। उन भाई ने वैसा किया और उनका काम हो गया। इससे क्या होता है कि लोभ की खुराक बंद हो जाती है। और मन भी बड़ा होता है! रिक्शा में बैठकर पैसे बिखेरता जा। तेरा लोभ का स्वभाव छूट जाएगा।

### धन से सेवा, लेकिन किसलिए?

पैसों का विचार मन में लाना ही मत। आपसे हो सके तो आधार देना लेकिन वह भी लोभ छोड़ने के लिए कहा गया है। जब तक

अपना लोभ नहीं छूटता तब तक लोभ की ग्रंथि नहीं जाती और तब तक मोक्ष नहीं होता!

श्रीमद् राजचंद्र ने पुस्तक में लिखा है कि ज्ञानी पुरुष की तन-मन और धन से सेवा करना। तब किसी ने पूछा, 'भाई, ज्ञानी पुरुष को धन का क्या करना है? वे तो किसी चीज़ के इच्छुक ही नहीं होते।' तब कहा, नहीं, तन-मन से आप सेवा करते हो लेकिन आपसे ऐसा कह सकते हैं कि इस अच्छी जगह पर धन डाल दो तो आपकी लोभ की ग्रंथि टूट जाएगी। वर्ना आपका चित्त लक्ष्मी में ही रहा करेगा। 'अभी तीस हजार डॉलर हुए हैं अभी और दस-बीस हजार करूँगा।' ऐसा करते-करते अंत समय आ जाता है और चले जाते हैं। मैंने देखे हैं वैसे, बहुत देखे हैं!

### नुकसान होने पर लोभ जाता है

एक भाई मुझसे कहने लगे कि, 'मेरा लोभ निकाल दीजिए, मेरी लोभ की ग्रंथि इतनी बड़ी है! उसे निकाल दीजिए।' मैंने कहा, 'ऐसे निकालने से नहीं निकलेगी। वह तो, जब कुदरती रूप से पचास लाख का घाटा होगा न, तो वह लोभ की ग्रंथि अपने आप खत्म हो जाएगी।' कहोगे कि, 'अब पैसे चाहिए ही नहीं!'

अर्थात् यह लोभ की ग्रंथि तो नुकसान होने पर खत्म हो जाती है। बड़ा नुकसान हो जाए तो ग्रंथि तेज़ी से टूट जाती है! वर्ना सिर्फ लोभ की ग्रंथि ही विलीन नहीं होती, अन्य सभी ग्रंथियाँ विलीन हो जाती हैं। लोभी के दो गुरु हैं, एक ठग और दूसरा है नुकसान। जब नुकसान होता है न, तो लोभ की ग्रंथि को तेज़ी से तोड़ देता है! और दूसरा, लोभी को उनका गुरु मिल जाता है, सिर्फ ठग! हथेली में चाँद दिखा दें, ऐसे ठग होते हैं। तब वह लोभी खुश हो जाता है! फिर वे उसकी पूरी पूंजी ही उड़ा ले जाते हैं!

पैसों का मोह कम करने से कम नहीं होता। नुकसान होने पर लोभ जाता है।

## तब बरतती है समाधि

मुझसे लोग पूछते हैं कि, 'समाधि सुख कब बर्तेगा' तब मैंने कहा, 'जिसे कुछ भी नहीं चाहिए, लोभ की सारी ग्रंथियाँ छूट जाएँगी, तब।' लोभ की ग्रंथि छूटने पर सुख बरतता रहता है। बाकी, ग्रंथि वाले को तो कोई सुख मिलता ही नहीं है न! इसलिए लुटा दो, जितना लुटा दोगे, उतना आपका!

## देशी-परदेशी में से श्रेष्ठ कौन?

यदि दो व्यक्ति वृद्धाश्रम में हों, एक फॉरेन से आया हो और एक अपने यहाँ का इन्डियन हो, दोनों से हम कहें कि अब आप हिमालय में कहीं भी जाकर बैठ जाओ। लो, ये एक-एक लाख रुपये, आपके खर्च के लिए। तब फिर दोनों की स्थिति क्या होगी? दोनों कैसे खर्च करेंगे? खाने-पीने का तो सब चाहिए। वे खर्च करेंगे या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** खर्च करेंगे।

**दादाश्री :** और फिर पंद्रह-बीस साल बाद दोनों की मृत्यु हो जाए तो किसके पास अधिक धन निकलेगा?

**प्रश्नकर्ता :** भारतीय के पास।

**दादाश्री :** क्यों? उसने लाख रुपये लिए तब से उसे डर कि 'खर्च हो जाएँगे तो क्या करूँगा? खर्च हो जाएँगे तो क्या करूँगा?' खत्म हो जाएँगे तो क्या होगा?

**प्रश्नकर्ता :** तब तक तो वही खत्म हो जाता है।

**दादाश्री :** हाँ, तब तक तो वह खत्म हो जाता है। लेकिन वह खर्च भी करता है, धर्म में देता है, दान-पुण्य करता है लेकिन उसे भीतर ऐसी जागृति रहती है कि खत्म हो जाएँगे तो क्या होगा? जबकि उस फॉरेन वाले को ऐसा कुछ भी नहीं होता। वह तो मौज-मजे में

भी खर्च कर देता है। किसी पर उपकार भी करता है। वह ओब्लाइज करता है। नहीं करेगा, ऐसा नहीं है। अतः फॉरेन वाले की मृत्यु हो जाए तो उसके पास शायद दो हजार रुपये होंगे, शायद न भी हों और ऐसा सब नहीं रहता। वह साहजिक होता है। थैली भी खाली होती जाती है और वह भी खत्म होता जाता है। जबकि इन्डियन की तो थैली पड़ी रहती है और वह खत्म हो जाता है। यानी, हम लोगों की प्रकृति ऐसी है! अधिक जीऊँगा तो क्या होगा? जरूरत पड़ेगी तो क्या होगा? तो जब से रुपये हाथ में आए, तभी से ऐसा रहता है या नहीं?

### वहाँ कषाय विकसित नहीं हुए हैं

**प्रश्नकर्ता :** फॉरेन वालों का जीवन ही ऐसा होता है कि कषाय उत्पन्न नहीं होते। रहन-सहन, हवा, वातावरण, सारी व्यवस्था ऐसी होती है कि कषाय उत्पन्न ही नहीं होते।

**दादाश्री :** वह सब सेटिंग उनके हिसाब से ही है। कषाय ही नहीं न! लोभ कषाय नहीं, मान कषाय नहीं, अन्य कोई इंज़ट ही नहीं। जो पार्लियामेन्ट में होते हैं सिर्फ उन्हीं को थोड़े-बहुत विचार आते हैं। वर्ना विचार ही नहीं आते न!

**प्रश्नकर्ता :** वहाँ यदि पाँच सौ रुपयों का माल खराब निकले और वापस करें तो तुरंत ले लेते हैं।

**दादाश्री :** हाँ, तुरंत ले लेते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** और यहाँ तो बेचा हुआ माल वापस नहीं लिया जाता।

**दादाश्री :** अरे, लिखा हो, फिर भी वापस नहीं लेते।

### वर्ना मोक्ष नहीं सूझे

फॉरेन के लोगों के क्रोध-मान-माया-लोभ इतने-इतने से ही हैं! एक इंच के! और यहाँ के लोगों के क्रोध-मान-माया-लोभ तो पेड़ जितने हो गए हैं! इससे चिंताएँ भी बहुत हैं जबकि उन्हें चिंता-विंता



नहीं होती। अपने यहाँ लोगों को चिंता भी बहुत। फिर मन में ऊब जाता है कि, 'अरे, इसमें सुख नहीं है।' तब खोज करता है कि सुख किसमें है? तब कहता है, सुख तो मोक्ष में है! फिर मुक्ति के विचार आते हैं। यदि यहाँ चिंता न हो न, तो कोई मोक्ष में नहीं जाता, एक भी व्यक्ति नहीं जाता।

### लोभ कितनी पीढ़ी तक का?

ये कुत्ते क्या शादी की झंझट में पड़ते हैं? क्या गाय वगैरह शादी करने की झंझट में पड़ती हैं? शादी कर लेते हैं! गाय भी अपने बच्चे को छः महीने तक संभालती है। कितने अच्छे तरीके से संभालती है! जब तक बछड़ा बड़ा नहीं हो जाता तब तक अपने फर्ज कितने अच्छे ढंग से निभाती है? बाद में नहीं। जबकि अपने यहाँ तो लोग सात पीढ़ियों तक, मेरे बच्चों के बच्चे और उनके बच्चों को भी नहीं छोड़ते! जबकि फॉरेन वाले तो, विलियम और मेरी अठारह साल के हुए कि अलग हो जाते हैं! अपने यहाँ तो अविभक्त कुटुंब। यह तो अब ठीक हुआ है, वर्ना पहले तो सात पीढ़ी तक का लोभ। मेरे बच्चों के बच्चे और उनके बच्चे सुखी रहें, इसलिए ज़मीन इत्यादि बहुत रखते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** कोई सात पीढ़ी तक के लिए धन इकट्ठा करे तो इस सृष्टि में बहुत से लोगों के साथ अन्याय होता है। वह किस तरह चलाया जा सकता है?

**दादाश्री :** वह तो अन्याय है इसीलिए तो एक-दूसरे को लूट लेते हैं न? लोगों को सात पीढ़ियों का लोभ है! लोभी व्यक्ति किसी भी तरह से धोखाधड़ी करता है। कपट करके भी लोभ पूरा करते ही हैं। यानी अपना यह लोभ है सात पीढ़ियों का! बहुत मुश्किल है! और फॉरेन वालों का ऐसा नहीं है। बेटा अठारह साल का हुआ कि अलग!

### भगवान को भी धोखा देने वाले हैं

फॉरेन के लोग साहजिक प्रजा हैं। उनमें क्रोध-मान-माया-लोभ

इतने अधिक नहीं होते। वह तो, जब विलियम अठारह साल का हो जाए न, तो विलियम अलग और हम अलग। ऐसे हर एक कपल अलग और अपने यहाँ तो सात पीढ़ियों का लोभ होता है! मेरे बच्चों के बच्चे और उनके बच्चे खाएँगे। एक वणिक ने तो भगवान से माँगा था कि मेरा बच्चा और उसका बच्चा, और उसके बच्चे इस तरह सातवीं पीढ़ी के बच्चों का, यानी कि मेरी सातवीं पीढ़ी के बच्चे की बहू महल की सातवीं मंजिल पर सोने की मटकी में छाछ बिलोए, उसे मैं यहीं से देख पाऊँ! जबकि खुद अँधा था! कितना सारा माँग लिया? इतना अधिक लोभी! और उस लोभ के कारण संताप पैदा होता है। संताप पैदा हो तब रास्ता ढूँढते हैं कि यहाँ से कब किस तरह से मोक्ष में भाग जाएँ। सब से अधिक संताप जैनों को है। वे जल्दी मोक्ष ढूँढते हैं। इसलिए वे अपने बच्चों को दीक्षा भी लेने देते हैं। मोह कम होता है। अभी तो सब में मिलावट हो गई है।

### दोनों प्रकार के सुख का बेलेन्स होना चाहिए

**प्रश्नकर्ता :** ये लोग हिप्पी जैसे थे। हिप्पी बन जाते हैं वे लोग। उन्हें संताप होता है इसलिए बन जाते हैं। वह कैसा है? उस संताप में और इस संताप में क्या फर्क है?

**दादाश्री :** उस संताप में और इस संताप में बहुत अंतर है। वह संताप तो कैसा है? मूर्खता वाला संताप है। उनका सुख बहुत अधिक बढ़ा हुआ होता है और अबोव नॉर्मल सुख हो जाए तब व्यक्ति को कड़वा पोइज़न जैसा लगता है, ज़हर जैसा लगता है। लोगों को शादी में एक महीने तक रखें तो भाग जाएँगे, बिना बताए ही भाग जाएँगे। रोज़ वैसा ही भोजन करना हो तो भाग जाएँगे या नहीं? वे लोग इतने ज्यादा बेचैन हो गए हैं कि इन सुखों में उन्हें अच्छा ही नहीं लगता, चैन नहीं है। आतंरिक सुख खत्म हो गया न!

वास्तव में तो कुदरती नियम क्या है? आतंरिक सुख इस तरह लेवल में रहना चाहिए। आतंरिक सुख और बाह्य सुख लेवल में रहने

चाहिए। शायद कभी, बाह्य सुख बढ़ा तो आंतरिक सुख कम हो जाता है और बाह्य सुख बढ़ा हो तो, इतना बढ़ा हो तो चलेगा। लेकिन यह तो ऐसा हो गया है (एकदम अप एन्ड डाउन)।

**प्रश्नकर्ता :** वह बहुत अधिक डिफरन्स है।

**दादाश्री :** यानी आंतरिक सुख रहा ही नहीं बिल्कुल भी। इंसान मेड (पागल) हो जाता है और अत्यधिक दुःख होता है। आरोपित भाव है न, इसलिए बहुत ज्यादा संताप होता है।

इन अंग्रेजों और अमरिकनों का पतन इसी प्रकार से है। भौतिक सुख में बहुत एबनोर्मल हैं। उसी के कारण यह सारा पतन है। बैठे रहें तो दिमाग का ठिकाना नहीं, ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है, उनकी मुश्किलें वे ही जानें!

**प्रश्नकर्ता ;** क्या उनमें लोभ का अतिरेक नहीं है ?

**दादाश्री :** लोभ तो है! लोभ के कारण ही तो यह सब हुआ, लेकिन लोभ का परिणाम आया! लोभ के अतिरेक से ही तो यह परिणाम आया है।

### धन बहे गटर में

जितने पैसे आएँ उतने खर्च कर दे, वह सुखी। अच्छे रास्ते पर खर्च हों, तो वह सुखी। उतने आपके खाते में जमा होंगे। वर्ना गटर में तो चले ही जाएँगे। कहाँ चले जाएँगे? गटर में जाते हैं क्या? मुंबई के सारे रुपये कहाँ जाते होंगे? वे सिर्फ गटर में चले जाते हैं! जितना अच्छे काम में खर्च हुआ उतना रुपया अपने साथ आएगा। अन्य कुछ भी साथ नहीं आएगा।

**प्रश्नकर्ता :** गटर वाले के रुपये साथ नहीं जाएँगे ?

**दादाश्री :** जितना गटर में गया, वह समुद्र में गया!

**प्रश्नकर्ता :** क्या उसका कोई परिणाम नहीं आएगा ?

**दादाश्री :** कोई परिणाम नहीं। किसी को खिलाया हो तो परिणाम आएगा। किसी को खिलाने की भावना होती है? भावना हो तब हाथ में रुपये नहीं होते, और हाथ में रुपये हों तो भावना नहीं होती। मेल बैठना चाहिए न!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन वह रुपया जो गटर में गया उसका कुछ तो कर्म बंधेगा न?

**दादाश्री :** वह तो, गटर में जाए या अच्छे रास्ते जाए दोनों बंधन करवा कर ही जाते हैं। अच्छे रास्ते जाए तब भी बंधन करवाता है। अच्छे रास्ते जाए तो सोने की बेड़ी का बंधन ही करवाता है। गटर में जाए तो लोहे की बेड़ी वाला बंधन करवाता है। दोनों बंधन ही करवाता है। मोक्ष कब होता है? जब कर्तापन खत्म हो जाए तब। जब कर्तापन खत्म हो जाए, खुद को ज्ञाता-द्रष्टापन रहे, तब मोक्ष होता है।

### वहाँ लक्ष्मी नहीं बसती

जहाँ तिरस्कार और निंदा है, वहाँ लक्ष्मी नहीं रहती।

‘लक्ष्मी कब नहीं मिलती? लोगों की निंदा-चुगली में पड़ें, तब।’  
(आप्तसूत्र-1336)

तब लक्ष्मी का आना बंद हो जाता है।

‘मन की स्वच्छता, देह की स्वच्छता और वाणी की स्वच्छता हो, तब लक्ष्मी मिलेगी।’ (आप्तसूत्र-1337)

हाँ, यह वाणी तो सरस्वती देवी है। यदि दुरुपयोग करें न, तो लक्ष्मी जी रूठ जाती हैं। वाणी तो सरस्वती देवी है। निंदा नहीं करनी चाहिए। यहाँ तो कोई निंदा नहीं करता न? इस गाँव में? तो अच्छा है।

### तब प्रगति करेगा इन्डिया

हमारा यह देश कब अमीर बनेगा? कब लक्ष्मीवान और सुखी

होगा? जब निंदा और तिरस्कार, दोनों बंद हो जाएँगे तब। ये दोनों बंद हुए कि देश में निरे पैसे और अपार लक्ष्मी हो जाएगी!

**प्रश्नकर्ता :** निंदा और तिरस्कार कब बंद होंगे?

**दादाश्री :** लोभ बढ़ता है तब निंदा और तिरस्कार, दोनों बंद हो जाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** लोभ बढ़ेगा तो कपट भी बढ़ेगा न?

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन लोगों का तिरस्कार और निंदा करना तो बंद हो जाएगा न! लोभी व्यक्ति को फुरसत ही नहीं मिलती न! लोभी तो अपनी ही तान में होता है। इसलिए उसे फिर लक्ष्मी के अंतराय नहीं पड़ते। लक्ष्मी के अंतराय किसे पड़ते हैं? जिन्हें ऐसा सब होता है कि, 'हिम्मतलाल ऐसे हैं, फलाना भाई वैसे हैं', जहाँ ऐसी निंदा है, वहाँ लक्ष्मी नहीं होती। लोभी को, 'यह नीची जाति का है, वह ऊँची जाति का है, यह ऐसा है, यह वैसा है, ऐसी कोई झंझट ही नहीं होती। यदि कोई नीची जाति का हो लेकिन उसका ग्राहक हो तो कहेगा, 'आइए भाई, बैठिए सेठ जी। यहाँ गद्दी पर बैठिए न!'

**प्रश्नकर्ता :** मतलब, लोभी को ऐसा कोई अंतराय नहीं पड़ता?

**दादाश्री :** लोभी यानी सिर्फ पैसों का ही लोभ नहीं, सुख का भी लोभ होता है।

**प्रश्नकर्ता :** मान का भी लोभ होता है क्या?

**दादाश्री :** मान का लोभ नहीं माना जाता, सुख का लोभ माना जाता है। मान के लोभ में तो फिर निंदा घुस जाती है।

**प्रश्नकर्ता :** तो ये मुंबई के लोग मान के लोभ में नहीं हैं?

**दादाश्री :** नहीं, वास्तव में तो यह मान का लोभ नहीं माना जाएगा। सुख का लोभ होता है। कभी भी मान का लोभ कब कहा जाएगा? कि जब दूसरों की निंदा करने की उसे फुरसत मिले। मुंबई

शहर में लोगों से पूछकर देख लो कि, 'आपको दूसरों की निंदा करने की फुरसत है?' तब कहेंगे, 'नहीं।' यानी इन लोगों को पलभर की भी फुरसत नहीं होती, और वहाँ, वड़वाण (गुजरात का एक छोटा शहर) जाएँ तो ?

**प्रश्नकर्ता :** वहाँ तो सब वही है।

**दादाश्री :** फिर भी हमने कहा है कि हिन्दुस्तान में निंदा और तिरस्कार कम होने लगे हैं और लोभ बढ़ा है। सुख का लोभ बढ़ा है इसलिए हिन्दुस्तान का अच्छा होने वाला है। इस लक्षण पर से मैं समझ जाता हूँ। भले ही ज़रा मोह बढ़ेगा, लेकिन निंदा-तिरस्कार वगैरह तो कम होंगे न!

### वहाँ झूठा भी सच्चा माना जाएगा

लोभी के वहाँ हमारे पैसे फँस जाएँ, और हम उसे गालियाँ दें तब वह हँसता है! 'अरे, मैं गालियाँ दे रहा हूँ और तू हँस रहा है?' तब फिर अड़ोसी-पड़ोसी और रास्ते चलते लोग हमें क्या कहेंगे कि, 'यह चिढ़ रहा है इसलिए यही नालायक आदमी है। देखो न, यह बेचारा हँस रहा है। तो बल्कि वह धूर्त फँसा देता है! रुपये जाते हैं अपने और हम उस लोभी के सामने झूठे नज़र आते हैं। समझ में आया न, कि लोभी कैसा होता है ?

**प्रश्नकर्ता :** लोभी खुद के सुख में ही रहता है ?

**दादाश्री :** वह समझता है कि अभी यह थककर चला जाएगा लेकिन मुझे तो रुपये मिल गए न!

### मोह मिटाए निंदा

लोग ऐसी बात समझ जाएँगे तो सुखी हो जाएँगे न!

यह बात तो तय है कि कुदरत हमारी 'हेल्प' में है। इसलिए मैंने कह रखा है कि, 'सन् 2005 में हिन्दुस्तान वर्ल्ड का केन्द्र बन

जाएगा, अतः यह बात बहुत समझने जैसी है। लोग किस कारण से दुःखी थे, वह मैंने ढूँढ निकाला और अभी गाँव वाले किस कारण से दुःखी हैं? अभी भी निंदा के ही धंधे में पड़े हुए हैं। आजकल के ये लोग तो, और कुछ न हो तो रेडियो और टी.वी. की मस्ती में ही रहते हैं! ये लोग किसी की निंदा करने में नहीं पड़ते। वे तो टी.वी. इत्यादि देखते हैं और वह भी आँखें बिगाड़कर। क्या लोगों की आँखें कम बिगाड़ती हैं? खुद की ही ज़िम्मेदारी है न! हमारा सारा देश निंदा से, भयंकर निंदा से खत्म हो गया था, शास्त्रकारों ने नियम बताया था कि टीका अवश्य करना। यदि टीका नहीं करोगे तो लोग वापस नहीं पलटेंगे। इस टीका का 'एक्जेजरेशन' हो गया और 'निंदा' आ गई! जो विटामिन था उसी का नाश कर दिया!

### ज्ञानी मोड़े पॉज़िटिव पथ पर

मैं तो पोज़िटिव करना चाहता हूँ। नेगेटिव सेन्स ही नहीं लाना चाहता। यदि वह अच्छा हो न, तो उसे अच्छे में पुष्टि देता हूँ। जिससे अच्छा इतना अधिक प्रकाशित हो जाए, इतनी अधिक जगह रोकता जाए कि नेगेटिव उड़ ही जाए। इस जगत् को अभी तक नेगेटिव ही पटकता रहा है! लक्ष्मी आने के बाद भी सुख नहीं रहता, भीतर संताप होता रहे, तो वह सारी पापानुबंधी पुण्य की लक्ष्मी है। वर्ना सात्विक लक्ष्मी क्लेश नहीं होने देती! यानी लक्ष्मी के तो ऐसे सुंदर गुण हैं!

### 2005 में वर्ल्ड का केन्द्र

**प्रश्नकर्ता :** लोग कहते हैं कि कुछ ही साल में सत्युग शुरू हो जाएगा, वह क्या है?

**दादाश्री :** युग बदलने की शुरुआत हो चुकी है कितने ही समय से, लेकिन वास्तव में तो युगबदलाव कुछ सालों बाद आएगा। 2005 में आएगा। वास्तव में युगबदलाव होगा! लोग यह जो कह रहे हैं वह एकदम गलत भी नहीं है।

## बीच में कठिन काल

**प्रश्नकर्ता :** इतने साल तो बहुत कठिन बीतेंगे।

**दादाश्री :** कठिन समय तो अभी आने वाला है। कठिन दिन तो अभी दस-पंद्रह साल तक रहेंगे। वास्तव में, बहुत कठिन! जिन्होंने सलाह देने के पैसे लिए न, उन सब को तो दंड मिलने वाला है, तभी तो लोग पलटेंगे न! सिर पर डंडे पड़ेंगे न, तब कहेंगे, 'अब नहीं लूँगा साहब'। सिर पर मार पड़ेगी फिर तो नहीं लेंगे न? उसका कुदरत दंड देगी तब। ये ऐसे नहीं हैं कि सरकार के दंड की परवाह करें।

सलाह के भी पैसे लिए। अरे, बुद्धि से लोगों को मारा। कम बुद्धि वाले को अधिक बुद्धि वाले ने लूट लिया। अधिक बुद्धि वाला कम बुद्धि वाले को धोखा देता है या नहीं? अधिक बुद्धि यानी उजाला। हमारे पास बुद्धि, वह तो एक लाइट कहलाती है और कम बुद्धि वाले के पास लाइट नहीं होती इसलिए अंधेरे में टकराते हैं। तब हमें उसे लाइट दिखानी चाहिए। ऐसे दीया करना चाहिए। इसके बजाय उसके पास से पैसे झाड़ लिए। बोलो, अब क्या होगा उसका?

## कुदरत हमेशा न्यायी

दस-पंद्रह साल तो ऐसे सख्त आने वाले हैं कि लोग भी जिंदगी में ऐसा करना भूल जाएँगे, ऐसा सब आएगा। अभी आगे आने वाला है। उसके बाद सत्युग आएगा। फिर मन अच्छे हो जाएँगे। लोभ छूट जाएगा न!

लोभ कब छूटेगा? ऐसी कोई मार पड़े या फिर नुकसान हो। भारी नुकसान हो तो लोभ छूट जाता है या फिर मार पड़े तो छूट जाता है। यानी यह कुदरत ठिकाने लाती है। दस-पंद्रह साल तक ऐसा मारेगी! और फिर न्याय से ही मारेगी! क्योंकि अन्याय से मारने का कुदरत का नियम ही नहीं है। एकदम न्याय! कुदरत एक मिनट भी न्याय से बाहर नहीं चलती।



## कुदरत का न्याय न्यारा

लोग पूछते हैं कि, 'ये अकाल क्यों पड़ता है? कुदरत अन्यायी ही है न?' अरे, कुदरत अन्यायी नहीं होती। वह न्यायी ही होती है। यदि हमेशा ही सुकाल रहे न, तो कुछ जातियाँ तो ऐसी हैं कि जिनकी बुद्धि बहुत विकसित नहीं हुई है, वे फिर शहरों में आकर बंदूकें चलाएँगे। उन लोगों को यदि हमेशा पूरा खाना खाने को मिले तो वे दूसरों को मारे बिना रहेंगे नहीं। इसलिए उन्हें कुदरत ठिकाने पर रखती है, उसे फुरसत में ही नहीं रहने देती। किसी को मारने का विचार करने की फुरसत ही नहीं रहने देती! एक-दो साल अनाज की पैदावार अच्छी होती है और तीसरे साल अकाल! इसलिए वह जो लाया हो, उधार चढ़ा हो तो फिर वापस जब दो साल बाद पैदावार हो तो चुक जाता है। तब फिर से कर्ज चढ़ जाता है, अतः यह कुदरत सब ठिकाने पर रखती है। वर्ना तो कुछ जाति के लोगों का मिजाज़ भी घूम जाता है। ऐसी गालियाँ देते हैं वे तो। भैंसे की तरह मारते हैं। क्योंकि डेवेलपमेन्ट ज़रा कम है। बहुत विचारक नहीं हैं न! इसलिए, यह सब जो है वह कुदरती तौर पर ठीक ही है। कुदरत के वहाँ कोई कमी नहीं है, लेकिन यह सब तो सब को ठिकाने रखने के लिए करना पड़ता है।



[ 6 ]

## लोभ की समझ, सूक्ष्मता से

### भटकाने वाला प्राकृत दोष

**प्रश्नकर्ता :** किस प्रकार के दोष भारी होते हैं जो कि कई जन्मों तक चलते हैं? कई जन्म लेने पड़ें, ऐसे कौन से दोष हैं?

**दादाश्री :** लोभ! लोभ कई जन्मों तक साथ रहता है। जो लोभी होता है न, वह हर एक जन्म में लोभी रहता है। यानी उसे यह बहुत अच्छा लगता है।

**प्रश्नकर्ता :** करोड़ों रुपये होने के बावजूद भी धर्म में पैसे नहीं दे सकते, इसका क्या कारण है?

**दादाश्री :** ये बाँधे हुए बंध कैसे छूटेंगे भला? यानी कि कोई छूटते नहीं हैं और बंधा हुआ ही रहता है। खुद भी नहीं खाता है। किसके लिए जमा करता है? पहले तो साँप बनकर घूमते थे और रक्षण करते थे। मेरा धन, मेरा धन करते थे!

### पुण्य, भोगते हैं दुःख में

**प्रश्नकर्ता :** पैसे बहुत हैं लेकिन अच्छे रास्ते पर खर्च नहीं कर पाते। क्या इसका मतलब यह है कि यह पापानुबंधी पुण्य है?

**दादाश्री :** पापानुबंधी पुण्य किसे कहते हैं? बंगला हों, गाड़ियाँ

हों, बेटियाँ अच्छी हों, बेटा हो फिर भी कभी समय नहीं मिलता। हमेशा धुन में ही, धुन में ही, भोगता भी नहीं है। वह है पापानुबंधी पुण्य। पुण्य है फिर भी भोगता नहीं है और बदले में पाप ही बाँधता रहता है। किसलिए पैसे ढूँढने निकला है? तब कहेगा, 'मुझे चाहिए न, एक लाख?' तब कुदरत ने आपत्ति उठाई कि क्या लोगों का कोटा (हिस्सा) खा जाना है तुम्हें? 'चाहे जो हो पर, हमें तो कोई हर्ज नहीं है।' यानी कि लोगों का कोटा खा जाना, उसे लोभ कहते हैं। दूसरों का कोटा हड़प लेना। पैसे तो अपने आप, पुण्य का खेल है इसलिए आते ही रहेंगे। आपको उसे मना नहीं करना है। उसके लिए शिकायत नहीं करनी है। लालच नहीं रखना है। वह तो आता ही रहेगा, वह तो पुण्य का खेल है। पाप किए हो तो भूलेश्वर में पैसों के लिए चप्पलें घिस गई होती हैं! सेठ को जोरदार सलाह देता है, और सेठ को समझ भी नहीं होती है फिर भी फर्स्ट क्लास डेढ़ सौ रुपयों के जूते पहने होते हैं! जबकि सलाह देने वाले के चप्पल घिसे हुए होते हैं! यानी, यह सब पापानुबंधी पुण्य है!

पापानुबंधी पुण्य यानी क्या? खुद का तो पुण्य है ही और नए पाप खड़े करता है। हाय पैसा! हाय पैसा! बड़ी हो गई हों फिर भी बेटियों की शादी नहीं करवाता। पत्नी कहती है, 'इन बेटियों पर ध्यान देना।' 'देंगे' ऐसा कहता है। हाय, हाय, हाय! उसे नींद भी नहीं आती और दूसरा कोई हो तो वह सो तो सकता है! भगवान को भी करुणा आती है इन लोगों पर! अरे, समझ में नहीं आता तो शोर क्यों मचा रहा है! जीना भी नहीं आया!

### पुण्य खर्च करते हुए भी पुण्य

'जीना आ गया' ऐसा तो किसे कहेंगे? खुद के पास जितना आए, उसे लुटा दे, उसे जीना आया कहेंगे। पागलपन नहीं, समझकर लुटा दे। पागलपन में शराब वगैरह पीए तो उससे कुछ भला नहीं होगा। कभी कोई व्यसन न हो और लुटा दे। देखो न, ये लुटाते हैं न! यह पुण्यानुबंधी पुण्य कहलाता है।

पुण्यानुबंधी पुण्य कौन सा? किसी भी क्रिया में बदले की इच्छा न करे, वह पुण्यानुबंधी पुण्य! सामने वाले को सुख देते समय किसी भी तरह के बदले की इच्छा न रखे, उसे पुण्यानुबंधी पुण्य कहते हैं!

### ज्ञानी सिखाते हैं...

हम भी लुटा देते थे। वह हीरा बा को खटकता था, 'आप तो सब लुटा देते हैं।' तब हम कहते, 'अब नहीं लुटाऊँगा'।

**प्रश्नकर्ता :** 'लुटाना', शब्द मैंने नहीं सुना है, ज़रा समझाइए न!

**दादाश्री :** हम ज़मींदार हैं न? थोड़ी-बहुत ज़मीन है और किसान भी हैं। कोई पूछे कि 'अब सब्जियाँ क्यों नहीं लाते'? तब कहते कि 'अभी लुट गया'! लुट गया, मतलब क्या? खेत में गायें, भैंसों घूमते हैं, वे सब खा जाते हैं तब हम आपत्ति नहीं उठा सकते। इसे कहते हैं, खेत लुट गया। यह गुजराती भाषा का शब्द है! जो आए वह ले जाए। आपको ऐसे नहीं लुटाना है लेकिन यदि नियम से, सीमा में रहकर ऐसा किया जाए तो!

कोई व्यक्ति हमारे घर आए, हमारे पास पैसे हों और मनुष्यों के लिए खर्च कर दें, ऐसा दुनिया में हो ही नहीं सकता। अपने यहाँ आने के लिए कोई फालतू नहीं है। यह तो, लोगों को लाभ लेना नहीं आता। मनुष्य जो लेता है वह तो, मनुष्य जो देता है उससे भी अधिक कीमती है, क्योंकि देने वाला हो फिर भी कोई लेता नहीं। आते ही यदि हमने लुटा नहीं दिया तो हम लुट जाएँगे! इसलिए लुटा देना चाहिए!

अब, यह लुटाने के लिए क्या करना चाहिए? आपकी बुद्धि वहाँ काम नहीं आएगी इसलिए आपको हम जैसों से मित्रता करनी चाहिए। क्षत्रियों के साथ, और काम निकाल लेना चाहिए। और आपसे (वणिक से) मित्रता करें तो हमारी सेफसाइड रहेगी। वर्ना हमारी सेफसाइड नहीं रहेगी।

लुटाना शब्द नहीं सुना है न? कुछ शब्द खो गए हैं। क्या आपने लुटाना शब्द सुना है?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ दादा।

**दादाश्री :** क्या समझे थे आप?

जिसका कोई मालिक नहीं रहता वह (सामान) लुट गया कहलाता है। कोई आपत्ति नहीं उठाएगा कि, 'यह हमारा है और उठा ले गए'। जिसका कोई मालिक नहीं होता, वह (सामान/चीजें/संपत्ति) लुट जाता है।

कबीर जी ने भी कहा है न, कि तेरे पास जो भी जायदाद हो, उसमें से पहले तू खा-पी, पी मतलब ब्रांडी-ब्रांडी नहीं, दूध है, चाय है। पी, खा और खिला दे लोगों को, 'कर ले अपना काम। चलते समय हे नरों, संग न चले बादाम'। अतः खिला देना! समझ में आया न!

वर्ना, अगर इसमें नहीं गया तो किसी और रास्ते चला ही जाएगा! धन का स्वभाव चंचल है।

### पानी पिलाया गटर को

**प्रश्नकर्ता :** खुद के लिए खर्च किया, कब कहा जाएगा?

**दादाश्री :** वह जो खा-पी लेने के बाद साथ में नहीं आने वाला है। आप किसी जगह किश्तें भरो, तो वह तो वापस आना ही है न! बैंक में डिपोजिट करते रहो और भी कुछ करते रहो लेकिन वापस तो आएगा न! और चाय-पानी इत्यादि मँगवाते रहो तो उसके पैसे सारे गए गटर में। फिर, पचास गेलन पेट्रोल जलाते हों तो वह भी गटर में गया।

### तरीका, साथ ले जाने का

**प्रश्नकर्ता :** पैसा किस तरह साथ ले जा सकते हैं?

**दादाश्री :** रास्ता तो एक यही है कि ऐसे कोई जो अपने रिश्तेदार

न हों, ऐसे किसी के दिल को ठंडक पहुँचाई हो, तो साथ आएगा। रिश्तेदारों को ठंडक पहुँचाई हो तो वह साथ नहीं आएगा लेकिन हिसाब साफ हो जाते हैं। उनके साथ जो हिसाब थे, वे साफ हो जाते हैं। रिश्तेदारों को ठंडक पहुँचाई हो तो! और अन्य जो रिश्तेदार न हों और यदि उनके दिल को ठंडक पहुँचाई हो तो वह अपने साथ आता है।

**प्रश्नकर्ता :** वह पुण्यानुबंधी पुण्य कहलाता है ?

**दादाश्री :** उसे जो भी कहो वह लेकिन दिल को ठंडक पहुँचनी चाहिए। अगर तो हम (ज्ञानी पुरुष) जैसे से पूछो तो लोगों के लिए हितकारी हो, ऐसा ज्ञानदान बताएँगे। यानी अच्छी पुस्तकें छपवानी, जिन्हें पढ़कर कई लोग सही रास्ते पर आए। हम से पूछा जाए तो हम बताएँगे। हमें कोई लेना-देना नहीं होता।

### क्रोध-मान-माया-लोभ

**प्रश्नकर्ता :** क्रोध-मान-माया-लोभ, हम इस तरह सीक्वेन्स (अनुक्रम) में क्यों बोलते हैं ?

**दादाश्री :** उनके जाने का जो रास्ता है उसमें, पहले क्रोध कम होता जाता है, फिर मान कम होता जाता है, फिर कपट कम होता जाता है, फिर लोभ तो सब से अंत में जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** ये जो क्रोध-मान-माया-लोभ हैं, उनमें से पहले क्रोध जाता है, फिर मान जाता है, फिर माया जाती है और फिर लोभ जाता है। लोभ सब से अंत में जाता है। ऐसा स्टेपिंग क्यों है? लोभ अंत में क्यों?

**दादाश्री :** ऐसा है न, पहले लोभ घुसा था। सब से पहले लोभ घुसा था और उसी अनुसार, जैसे घुसा था वैसा ही निकलता है।

**प्रश्नकर्ता :** वह कैसे घुस गया ?

**दादाश्री :** जाँच करना न अब! वह तुझे देखना है। कोई भी

चीज जो तू देखता है, उसे लेने का मन होता है न? लेने का भाव हुआ, वही लोभ है। और फिर किसी को दिखाने का भाव हो कि, 'मैं यह लेकर आया हूँ', वह मान है! फिर यदि कोई लेने लगे तो क्रोध करता है। पहले लोभ होता है।

**प्रश्नकर्ता :** और माया ?

**दादाश्री :** माल लेते समय वह एक के बजाय दूसरा बदल लेता है। दूसरा अच्छा हो और यदि उसका मालिक ज़रा सा दूसरी तरफ देखने लगे न, तो बदल लेता है ऐसे कपट करता है, वही माया है। लोभ होने पर कपट होता है। कुछ भी लेने का भाव हुआ, वह लोभ। फिर वहाँ छलकपट होता है। जिसे कोई भी इच्छा नहीं, उसे दुनिया में कुछ भी बाधक नहीं है। एक मिनट भी इच्छा नहीं, खाए, पीए, फिर भी!

### वह मान्यता लाई आफत...

**प्रश्नकर्ता :** दादा, इस बार (जन्म में) लोभ की गांठ किस कारण से मिली होगी? कौन से भाव किए थे?

**दादाश्री :** दूसरों का देखकर करता है कि इनके पास देखो न, धन जमा किया है इसीलिए अभी मिलें वगैरह चल रही हैं न? इसलिए फिर खुद भी धन जमा करता है। जमा करने से लोभ की गांठ उत्पन्न होती है। दूसरों का देखकर लोभ की गांठ उत्पन्न होती है।

उसने ऐसा माना है कि पैसे जमा करूँगा तो मुझे सुख मिलेगा। और फिर कभी भी दुःख नहीं आएगा लेकिन ऐसे जमा करते-करते लोभी ही बन जाता है। खुद लोभी बन जाता है। किफायत करनी है, ईकोनॉमी करनी है, लेकिन लोभ नहीं करना है।

### लोकसंज्ञा से फैसे

**प्रश्नकर्ता :** पैसों से ही सुख मिलता है, हम सब ऐसा क्यों मानते हैं ?

**दादाश्री** : यह तो पूरे जगत् ने माना है। लौकिक भाव से है वह। लोगों के हिसाब से है। लौकिक तौर पर है। यदि पैसों से सुख मिलता तो सभी पैसों वाले सुखी होते, लेकिन कोई सुखी नहीं है।

‘इससे सुख मिलेगा’, यह है तो सुख है, वर्ना सुख नहीं है। वह उसका माना हुआ लौकिक सुख, लौकिक मान्यता यानी लोभ की गांठ बनने लगती है। जमा किया हुआ काम आएगा न। बार-बार उधार लेने जाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। ऐसा सब मानते हैं इसलिए लोभ की गांठ बढ़ती है।

लोभ ज्यादा हो तो संग्रह करता रहता है!

**प्रश्नकर्ता** : यदि कर्म करने से मिलता है तो जमा करना चाहिए, दादा। कर्म किए बिना तो नहीं होगा न!

**दादाश्री** : हाँ, लेकिन उससे लोभ बढ़ता जाता है न! जमा हो उसमें हर्ज नहीं है, यदि लोभ न बढ़े तो हर्ज नहीं है।

वणिक हो न, तो लोभ की गांठ तो होती ही है क्योंकि उसका व्यापार ही वह है। जमा करना, सेफसाइड, सेफसाइड, सेफसाइड!

**प्रश्नकर्ता** : प्रकृति ही वैसी हो चुकी होती है।

**दादाश्री** : प्रकृति वैसी ही हो चुकी होती है। बाप-दादा के संस्कारों से आई होती है। वही के वही संस्कार देखने को मिले होते हैं न, फिर वे ही संस्कार आगे चलते रहते हैं।

अब वह सेफसाइड करे, उसमें भी हर्ज नहीं है लेकिन सेफसाइड होने के बाद उड़ा देने चाहिए।

**प्रश्नकर्ता** : बाद में नहीं उड़ेगा। फिर तो वह निन्यानवे का धक्का लग जाता है।

**दादाश्री** : हाँ, फिर निन्यानवे का धक्का लग जाता है!

लोभ कहाँ से घुसता है? उसकी शुरुआत कहाँ से होती है?



जब पैसे नहीं होते उस समय लोभ नहीं होता लेकिन यदि निन्यानवे हो जाएँ, तब मन में ऐसा होता है कि आज घर में खर्च नहीं करेंगे बल्कि एक रुपया बचाकर सौ पूरे करने हैं। यह निन्यानवे का धक्का लगा! ऐसा धक्का लगा तो वह लोभ पाँच करोड़ होने पर भी नहीं छूटता। ज्ञानी पुरुष धक्का लगाएँ, तब वह छूटता है!

### निन्यानवे का धक्का...

‘निन्यानवे का धक्का लगा’ क्या यह कहावत आपने सुनी है? ‘इसे निन्यानवे का धक्का नहीं लगा है, उसे लगा है’, ऐसा कहते हैं न? ऐसा कहते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, इस धक्के की बात समझाइए।

**दादाश्री :** एक वणिक सेठ थे। उनके पड़ोस में सुलेमान नामक एक तेली रहता था! उस तेली का व्यापार तेल बेचने का था लेकिन उसने वह बंद कर दिया। वह काम नहीं चला तो फिर सब्जियाँ बेचकर गुजारा करता था। क्या करता? मार्केट से सब्जियाँ ले आता और फिर बेचता। सब्जियों का व्यापार अच्छा चलने लगा। मोहल्ला अच्छा था न! रोज़ पाँच-सात रुपयों की कमाई हो जाती थी। अब, उस ज़माने में जब कम से कम वेतन पचास रुपये था, वहाँ वह इतने कमाए तब फिर वह राजा ही कहलाएगा न? तब फिर क्या करता? बीवी अच्छा-अच्छा खाना बनाती। और जब बीवी पीछे बाड़ी में जाती तब वहाँ उस तरफ सेठानी कपड़े सुखा रही होती थी। सेठानी पूछती, ‘क्या बनाया आज खाने में?’ तब बीवी उसका जो वर्णन करती थी! ‘आज बिरियानी बनाई, यह बनाया, वह बनाया’! ‘बिरियानी में क्या डालते हो?’ तब बीवी कहती है, ‘घी में ही बनाते हैं। तेल-वेल में नहीं।’ इससे सेठानी के मन में होता था कि मैं ज़रा सा अच्छा बनाती हूँ तब यह सेठ चिल्लाते हैं। और कहते हैं, ‘सब्जी भी नहीं लानी है, चने और तुअर के उबले हुए दाने रखो!’ हर रोज़ सब्जी नहीं होनी चाहिए, सप्ताह में दो दिन ही होनी चाहिए। सेठ थे तो लखपति, लेकिन पहले

ऐसा रिवाज़ था। इसमें उनका दोष नहीं था, सभी सेठों के यहाँ ऐसा ही रिवाज़ था। इसलिए फिर सेठ समझ गए कि घर में तो ऐसी सड़न शुरू हो गई है! सेठ ने पूछा, 'क्यों आप खाने के लिए ऐसे बार-बार पूछती रहती हो? पहले तो नहीं पूछती थीं।' तब सेठानी ने कहा, 'पड़ोस में ये गरीब हैं लेकिन कितना अच्छा-अच्छा खाना खाते हैं?' सेठ को लगा, 'भाई, यह टी.बी. कहाँ से घुस गई! ये तो टी.बी. के जंतु हैं! अब, ये सेठ लोग तो बहुत चालाक होते हैं। सड़े वहाँ पर दाग देते हैं! नुकसान किसी को बताते नहीं, होता भी नहीं। जानते हैं कि कहाँ दागना है! दाग देते हैं! बहुत पक्के! मैं उस पूरी बिरादरी के साथ घूमा हूँ। मुझे पूरी बिरादरी पहचानती हैं। फिर सेठ ने कला की। सेठ ने सोचा यह रोग यदि घुस गया तो सेठानी के साथ मेरा रोज़ झगड़ा होता रहेगा। तब फिर सेठ ने और कोई उल्टा रास्ता न अपनाकर सीधा रास्ता पकड़ा। उल्टा करना यानी उसे घर खाली कराने का उपाय करना, वे सब उल्टे रास्ते कहलाते हैं। वैसे तो वे वणिक् थे न! संस्कार तो थे न! वैसा करने पर उन्हें बेकार में ही दोष लगता न! लेकिन उसे रास्ते पर लाना था इसलिए सेठ ने पतले कपड़े की एक थैली ली। उसमें निन्यानवे रुपये भरे और उसका मुँह बाँध दिया। फिर जेब में डालकर गए, 'अरे सुलेमान, यह चौलाई की भाजी क्या भाव दी? और यह मेथी की भाजी?' फिर मेथी की भाजी के ढेर के नीचे वह थैली छुपा दी और थोड़ी चौलाई की भाजी खरीदकर ले गए।

फिर मियांभाई उस शाम काम खत्म होने के बाद मेथी उठाने लगे, थोड़ी-बहुत बची थी न, वह घर ले जाने लगे! वहीं वे चौंके। अल्लाह ने कुछ दिया! यों रुपये जैसा लगा और अंदर गोल-गोल लगा! हर तरह से जाँच करके देखा, ऐसे-ऐसे दबाकर देखा। उसे लगा पैसे ही हैं। कोई कुछ ऐसे ही थोड़े दे जाएगा? अल्लाह के अलावा अभी कोई फुरसत में नहीं होगा! और दे जाए तो भी ऐसे? बोलकर देते कि 'जा, सुलेमान, उधार दे रहा हूँ, इतना ब्याज देना'। अब इस सेठ को कैसे पहुँच सकते हैं? किस तरह पहुँच सकते हैं? यों ही पहेली सुलझा दी!

फिर सुलेमान उसे घर ले गया। बीवी से कहने लगा कि, 'तू यहाँ आ, यहाँ आ।' बीवी कहने लगी 'अरे, मुझे खाना बनाने दो! आप क्या हंगामा कर रहे हो?' तब सुलेमान ने कहा, 'दरवाजे बंद कर दे और लाइट जला दे।' बीवी ने कहा, 'क्या है?' 'यह है' सुलेमान ने कहा। देखते ही बीवी की आँखें चार हो गईं! 'यह क्या, पैसे कहाँ से आए? किसी के ले तो नहीं आए न?' 'अरे, नहीं-नहीं, खुदा ने दिए हैं! सब्ज़ी में से निकले। खुदा ने दिया है आज तो।' फिर उसने धीरे से गिने खनके या आवाज़ न हो, उस तरह से। तो निन्यानवे थे।

फिर उसने सोचा कि कल जो भी कमाई होगी उसमें से दो खाने के लिए रखकर बाकी के सारे इसमें डाल देंगे, जैसे बैंक में रखते हैं, वैसे। यह निन्यानवे का धक्का लगा उसे! वह लोभी नहीं था। रौब से खाता था। उसे वणिक ने लोभी बना दिया! फिर वह रोज़ पाँच-छः उसमें जमा करता!

फिर सेठ ने, सेठानी से पूछा, 'क्यों, अब तुम उस बीवी जी की बात नहीं करती? क्या तुम्हारी लड़ाई हो गई है? यदि लड़ाई हुई हो तो मैं उसे कह आऊँगा कि हमारे साथ लड़ना नहीं।' तब सेठानी ने कहा, 'नहीं, अब तो वह कहती है कि आज तो रोटी और कढ़ी बनाई है और अब ऐसा ही सब करती है।' सेठ समझ गए कि गोली ठीक निशाने पर लगी है। इस वणिक को कैसे पहुँच सकते हैं? वह सुलेमान लोभी नहीं था, उसे लोभी बना दिया। अपने भी कई लोग लोभी नहीं थे। उन्होंने यहाँ अमरीका में धन देखा न, तो निन्यानवे का धक्का लग गया। लग जाता है या नहीं लगता?

**प्रश्नकर्ता :** मुझे तो अभी तक धक्का नहीं लगा है, दादा।

**दादाश्री :** तेरे पास आया ही नहीं होगा।

**प्रश्नकर्ता :** ये भाई वणिक हैं, उनसे कहिए कि, 'वह थैली रख जाएँ'।

**दादाश्री :** वह तो कोई रख जाए, तब न ?

लेकिन यह जो कहावत कही गई है न, वह बहुत अच्छी कहावत है। अक्ल वाली कहावत है। हं। मैंने जाँच की थी कि निन्यानवे का धक्का क्या है? ये जो बात करते हैं, वह अपने बुजुर्गों के अनुभव की बातें होती हैं। अनुभव सिद्ध, प्रमाणों के साथ। देखो न, वह मुसलमान बदल गया न! बीवी रोटी-कढ़ी बनाने और खाने लगी न! क्या डाँटने जाना पड़ा? लकड़ी की तलवार! ऐसे ही पीट दे! डॉक्टर, सुनी न यह कला सारी? वणिक की कला!

कैसा धक्का लगाया! सब्जी के नीचे छिपा दी तो मियाँ समझा कि अल्लाह ने दिया। निन्यानवे का धक्का। बहुत अच्छी कहावत है! यों समझ सारी होती है।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा होने का कारण क्या है ?

**दादाश्री :** लोभ, प्रकृति ही वणिक। वणिक यानी निरंतर सोच-सोचकर ही काम करते हैं। कदम उठाते हैं। सोचने वाले हमेशा लोभी होते हैं। हर चीज़ में ढूँढ निकालते हैं कि किसमें फायदा है और किसमें नुकसान! निष्कर्ष निकालते हैं इसलिए फिर लोभ किस तरह से छूटे? भगवान याद नहीं आते। उसे तो इसी में आनंद आता है। इसी में इन्टरेस्ट आता है।

इसमें, इन लोगों के तो बढ़ाने से बढ़ते नहीं तो फिर लोभ किस बात का होगा ?

**सेठ ढूँढता है सड़ी हुई सब्जियाँ**

हमें पता चल जाता है कि इस व्यक्ति में लोभ नहीं है। जबकि लोभी व्यक्ति के लोभ का तुरंत पता चल जाता है कि इसने यह लोभ किया। यहाँ सब्जी मंडी में खड़े रहें न, तो दिखाऊँ कि कितने लोग उस तरफ जाते हैं जहाँ अच्छी सब्जी मिलती हो और बड़े-बड़े सेठ लोग जहाँ ढेरी लगी होती हैं उस तरफ जाते हैं। पहले तो ढेरी वाले

कहते थे कि ये सेठ लोग आते हैं, इन ढेरियों के लिए। बड़े-बड़े सेठ लोग भी उस तरफ जाते हैं और ढेरियाँ खरीद लेते हैं। इस टमाटर का क्या भाव है? तब वह कहे, 'चार आने, छः आने', फिर ले आता है। अब उतनी ही सब्जी अगर उस तरफ लेने जाए तो सवा रुपया होगा। अब इन ढेरियों में क्या होता है? सब्जियाँ अच्छी नहीं होतीं। तो ऐसा कहते हैं कि एक तरफ से काटकर सब्जी बनाते हैं। ऐसे कीड़े वाली सब्जियों को अमरीका वाले तो छूते तक नहीं हैं। ऊपर कुछ भी न हुआ हो फिर भी नहीं लेते। कागज़ लपेटा हुआ हो तभी बिकती हैं। ऊपर पेपर नहीं लपेटा, तो निकाल दो। जबकि अपने यहाँ तो, दाग लगा हो, अंदर कीड़े लग गए हों तो उन्हें भी निकाल कर, सब्जी खा जाते हैं!

अरे, बैंगन में से कीड़े निकाल कर बैंगन रहने देते हैं न! अंदर से कीड़े निकालकर बैंगन रहने देते हैं। लोभ की गांठ क्या नहीं करती?

### वह... अत्र, तत्र, सर्वत्र

लोभी सवेरे उठे तभी से लोभ करता रहता है। पूरा दिन उसी में बीतता है। कहता है, भिंडी महँगी है। बाल कटवाने में भी लोभ! आज बाईस दिन हुए हैं, पूरा महीना होने दो, कोई परेशानी नहीं होगी। समझ में आया न? ऐसा स्वभाव है इसलिए यह गांठ उसे बार-बार दिखाती रहती है और कषाय होते रहते हैं। इन कपट और लोभ, दोनों का बहुत जटिल है।

### शादी के समय भी चित्त लोभ में

लोभ छुड़वाने के लिए भगवान ने अनेक रास्ते बताए हैं। जब तक व्यक्ति का लोभ नहीं छूटता तब तक वह कहीं भी बैठा हो, शादी करने बैठा हो तब भी उसका चित्त लोभ में होता है। 'अरे, थोड़ी देर तो इस लेडी में रख।' तब कहता है, 'इस लेडी से तो शादी करूँगा ही न? एक से तो शादी करनी ही है न!' लेकिन, उस चित्त में लोभ! लोभ ऐसी चीज़ है कि चित्त उसी में ही रहता है। इसलिए भगवान

ने कहा है कि लोभ छुड़वाने के लिए रास्ता निकालना। वर्ना, लोभ छूटेगा नहीं और जब तक आपकी लोभ की गांठ नहीं छूटेगी तब तक मोक्ष नहीं जा पाओगे।

### पूरा दिन बितता है रक्षण में

एक व्यक्ति तो इतना ज्यादा लोभी था कि उसने हमारे यहाँ आना ही छोड़ दिया। और दूसरे लोग जब मंदिर के लिए पैसे देने लगे तब वह कहने लगा कि, 'दादा तो पैसे लेते नहीं हैं फिर आप क्यों उन्हें उल्टे रास्ते ले जा रहे हो?' मैं समझ गया कि यह व्यक्ति बहुत लोभी है। चार आने भी नहीं छूटते और उसके घर आपको चाय पीने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। 'पिला दे तो ठीक', ऐसा रखना। उस व्यक्ति का दोष नहीं है। उस पर द्वेष करने जैसा नहीं है। उस बेचारे को एक गांठ परेशान कर रही है। उस व्यक्ति का दोष नहीं है। लोभी यानी चारों तरफ से उसका रक्षण ही करता रहता है। दिन भर विचारों से रक्षण करता ही रहता है, उसे लोभी कहते हैं। किसका रक्षण करता रहता है? अपने आत्मा का नहीं, लोभ का ही रक्षण करता रहता है, जन्म से ही। जन्म से लेकर मृत्यु तक। अंतिम स्टेशन तक। मृत्यु के समय भी लोभ करता है, लोभ की बात करता है।

### वहाँ भी उल्टा करना पड़ेगा

पाँच-पचास रुपये हाथ में हों, फिर भी खर्च नहीं करता, फिर भी रिक्शा में खर्च नहीं करता। शरीर से चला नहीं जाता, फिर भी! तब मैंने उन्हें कहा कि 'ऐसा मत करो। कुछ रुपये, दस-दस रुपये रिक्शे में खर्च करना शुरू करो।' तब उन्होंने कहा कि, ऐसे तो खर्च ही नहीं कर पाता। अगर (पैसा) देना हुआ तो खाना नहीं भाता। 'अब वहाँ हिसाब से तो मुझे भी पता चलता है कि गलत है। लेकिन क्या हो सकता है? प्रकृति मना करती है'। तो एक बार मैंने उन्हें कहा कि थोड़ी चिल्लर लेकर रास्ते में बिखेरते हुए आओ! तब एक बार थोड़े बिखेरे, फिर नहीं बिखेरे।

ऐसे दो-चार बार बिखेर दें न, तो अपना मन क्या कहेगा, 'ये (चंदूभाई) हमारे काबू में नहीं हैं, हमारी सुनते नहीं हैं।' तो ऐसा करने से हमारा मन-वन सब बदल जाता है! हमें उल्टा करना पड़ेगा। वैसा नाटक करना पड़ेगा, नाटक किए बगैर नहीं चलेगा। जैसे यदि घर के लोग काबू में नहीं आ रहे हों तो नाटक करना पड़ता है, उसी तरह मन को काबू में लेने के लिए नाटक करना पड़ेगा।

### लक्ष निरंतर लक्ष्मी में

लोभ की ग्रंथि क्या है? कहाँ कितने हैं? वहाँ कितने हैं? यही लक्ष में रहता है। बैंक में इतने हैं, उसके वहाँ इतने हैं, उस जगह पर इतने हैं, वही लक्ष में रहा करता है। 'मैं आत्मा हूँ' वह उसे लक्ष में नहीं रहता। वह लक्ष टूट जाना चाहिए, लोभ का। 'मैं आत्मा हूँ', वही लक्ष रहना चाहिए।

### देने से टूटता है

**प्रश्नकर्ता :** पहले स्थिति बहुत खराब थी, जिससे लोभ बहुत रहता था।

**दादाश्री :** हाँ, उसी से लोभ रहता है। तब तक मन में से भी नहीं जाता। एक बार देना शुरू करे न, तो उसके बाद मन बड़ा होता जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** पता ही नहीं चलता कि यह लोभ है या ईकोनॉमी।

**दादाश्री :** वह लोभ ही है। लेकिन वह अच्छी जगह इस्तेमाल हुआ और उनके हाथ से छूटने लगा, यानी वह लोभ टूट गया। वना तो वह लोभ का ही, उसी का ही चित्रण करता रहता है। उसी का ही चित्रण करता है। आत्मा में नहीं रहता। पूंजी कम हो जाएगी! 'अरे, लेकिन क्या साथ में ले जानी है? तब कहता है कि 'साथ में तो नहीं ले जानी है लेकिन तब तक जरूरत पड़ेगी न, जीएँ तब तक तो चाहिए न?' अरे भाई, बाद में रह जाएगी उसका क्या करेगा? लेकिन वह भय, एक तरह का भय रहता है।

## लोभ और किफायत

**प्रश्नकर्ता :** दादा के पास आने से पहले मुझे ऐसा लगता था कि मैं जो किफायत करता हूँ, वह अच्छी बात है। अब समझ में आया कि वह लोभ है।

**दादाश्री :** नहीं, किफायत करने की ज़रूरत थी। गलत रास्ते धन संसार में चला जाए उसका कोई अर्थ नहीं है। पैसों की किफायत सिर्फ एक जगह, आत्मा के लिए नहीं करनी चाहिए। बाकी सभी जगह किफायत करनी चाहिए। क्या फेंक देने चाहिए?

हमें ज़रूरत हो और स्टेशन पर दूध मँगवाया। फिर चाय बनाने जितना इस्तेमाल करने के बाद आखिर दूध बच गया तो क्या, फेंक देंगे? वह तो, कोई कुत्ता-बिल्ली हो या कोई भी आ-जा रहा हो, उनसे कहेंगे कि 'ले भाई, यह दूध पी ले'। किसी को पिला देंगे लेकिन फेंक नहीं देते।

**प्रश्नकर्ता :** किफायत और लोभ के बीच डिमार्केशन कैसे करें?

**दादाश्री :** लोभ यानी क्या? अपना चित्त वहीं का वहीं रहा करता है। अपनी पूंजी में ही चित्त रहे। 'कम न हो जाएँ, कम न हो जाएँ', ऐसा रहा करे, उसे लोभ कहते हैं और किफायत यानी क्या? अधिक खर्च न हो जाएँ। मार्केट में जाए तो पाँच मिनट ज़्यादा लग जाएँ तो हर्ज नहीं है लेकिन अधिक पैसे खर्च न हों उस तरह से लेकिन अच्छी सब्ज़ियाँ लेता है, उसे किफायत कहते हैं। अच्छी सब्ज़ियाँ लेना और अधिक खर्च न करे, उसे कहते हैं किफायत। सड़ी हुई सब्ज़ियाँ ले तो उसे किफायत नहीं कहेंगे। उसे लोभ कहा जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, मुझे ऐसा लगता है कि घर खर्च में थोड़े पैसे बचाकर रख लूँ। वह लोभ कहलाएगा न?

**दादाश्री :** नहीं, वह लोभ नहीं है। ज़रूरत पड़ने पर काम में लेने के लिए रख दिए हैं, उसे लोभ नहीं कहेंगे। वह अच्छे काम में



खर्च न हो तो लोभ कहा जाएगा। जबकि अच्छे रास्ते पर खर्च करने से, औरों के लिए खर्च करने से लोभ छूटेगा।

अब, पैसे इकट्ठे किए हैं लेकिन खर्च कहाँ हुए? अच्छे काम में खर्च हुए तो लोभ छूट गया। मौज-मजे न करो और पैसे इकट्ठे करो तो वह लोभ कहा जाएगा। मौजीला नहीं बनना है। शौकीन नहीं बनना है लेकिन मौज-शौक, साधारण व्यवहार से खाना-पीना और रहना चाहिए। लेकिन यदि ऐसा न करें तो वह लोभ कहा जाएगा। लेकिन यदि लोभ वाले पैसे सही जगह इस्तेमाल किए तो वह लोभ नहीं कहा जाएगा। वर्ना सब लोभ ही कहलाता है। किफायत करने में हर्ज नहीं है।

किफायत तो करनी ही चाहिए। ईकोनॉमी तो बड़ा आधार है, एक प्रकार का। वह गलत नहीं है लेकिन शरीर को दुःखी करके नहीं।

बाकी, किफायती और लोभी, दोनों में बहुत अंतर है। किफायत तो होनी ही चाहिए! लोभ नहीं होना चाहिए। ईकोनॉमी न हो तो वह मनुष्य नहीं कहलाएगा क्योंकि उसका मेल नहीं बैठेगा, सारे तार टूट जाएँगे। इतने खाता को सप्लाय करना है, इतने खाता को ऐसा करना है, वह सब टूट जाएगा। ईकोनॉमी में लोभ नहीं होना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** जब मैं पैसे हों फिर भी मंदिर में न डाले, डालने का मन न हो तो वह क्या है?

**दादाश्री :** वह गरीबी के कारण। कुछ परिस्थितियों में, अपनी स्थिति ठीक न हो तब ऐसा होता है। उस समय, 'जब पैसे होंगे तब करेंगे', ऐसा कहना, उसे लोभ की गांठ नहीं कहा जाएगा।

### लोभी और कंजूस

**प्रश्नकर्ता :** क्या लोभी और कंजूस, दोनों नजदीकी कहे जाएँगे?

**दादाश्री :** नहीं, कंजूस अलग तरह का होता है। पहले से ही आदत पड़ चुकी होती है, जब नहीं थे तब कंजूसी करने की आदत

पड़ गई थी। तो बाद में जब धन आएँ तब भी कंजूसी करता है। वह आदत छूट जाती है। वह आदत पड़ी हुई है। जबकि लोभ तो एक प्रकार की गांठ है, ज़बरदस्त गांठ। किसी भी रंग में नहीं रंगा जाता! जबकि कंजूसी करने वाला यदि अमीर बन जाए फिर भी हल्के प्रकार की चाय लाता है। पहले लाता था, वैसी! ऐसा नहीं कि अच्छी ले आए! मैं तो चाय पर से समझ जाता था कि पार्टी अच्छी है फिर भी! अब क्या वह कोई कहने की बात है? मन में समझ लेना है कि 'हर एक प्रकृति है न, उसका क्या दोष है! आत्मा का दोष नहीं है, वह प्रकृति का दोष है!'

लोभी पर रंग नहीं चढ़ता। उस पर रंग ही नहीं चढ़ता, वह मुझे आश्चर्य लगा।

**प्रश्नकर्ता :** पैसे हों लेकिन खर्च न करे, वह लोभी कहलाता है या कंजूस?

**दादाश्री :** वह तो कंजूस कहलाता है। वह तो आदत पड़ी हुई है। जब स्थिति नरम रही होगी, पंद्रह रुपये का वेतन मिल रहा था, उस समय कंजूसी करके ही दिन गुजारे। फिर पचास रुपये आने पर भी उसका स्वभाव नहीं जाता! उसे कहते हैं कंजूसी! लोभी तो, लाखों रुपये हों फिर भी वैसे का वैसे ही, रंग नहीं चढ़ता।

### न रंगे किसी में भी

लोभी तो स्वभाव से ही ऐसा होता है कि किसी का भी रंग ही नहीं चढ़ता। उस पर कोई रंग नहीं चढ़ता! लोभी हो न, तो आपको इतना देख लेना है कि उस पर कोई रंग नहीं चढ़ता! लाल रंग में डुबोएँ, फिर भी पीला का पीला! हरे रंग में डुबोएँ, फिर भी पीला का पीला! यानी लोभी पर रंग नहीं चढ़ता! आपको तो जैसे रंगा जाए वैसे रंग जाते हो! यानी जो रंग जाए, तो उसके लिए समझना कि वह लोभी नहीं है। हर एक व्यक्ति को ऐसा होता है कि, 'मुझ में भी कुछ लोभ होगा?' तो देख लेना कि, 'मैं रंग जाऊँ, ऐसा हूँ या नहीं?'

हमारी यह जो बात है न, उसमें आप रंग जाते हो, देर ही नहीं लगती जबकि लोभी तो रंगा नहीं जाएगा। हाँ-हाँ करता है। आगे बढ़कर बातें करता है, सब करता है लेकिन रंगता नहीं है। उसके रंग का शेड, जो था वही रहता है। फिर से धो देता है, तो जैसा था वैसे का वैसे ही!

सभी लोभ रहित लोग रंग जाते हैं। ऊपर से फिर हँसता है तो हमें लगता है कि रंग चढ़ गया। मैं जो बातें करता हूँ न, वे सारी सुनता है। 'बहुत अच्छी बातें हैं, बहुत आनंद की बात है', ऐसा-वैसा लेकिन भीतर तन्मयाकार नहीं होता। अर्थात् दूसरे लोग घर-बार भूल जाते हैं लेकिन लोभी नहीं भूलता। वह लोभ-वोभ कुछ भी नहीं भूलता। अभी जाऊँगा, वे आएँगे तो उनके साथ गाड़ी में जाऊँगा। 'मेरे तो पाँच (रुपये) बच जाएँगे', वह भूलता नहीं है। यह तो पाँच बचाना भूल भी जाता है। 'बाद में जाऊँगा', ऐसा कहेगा। लोभी कुछ नहीं भूलता। उसे रंगा हुआ नहीं कह सकते। रंगा हुआ कब कि जब पूरा तन्मयाकार हो जाए, घर-बार सब भूल जाए। आपको समझ में नहीं आया? लोग नहीं कहते कि दादा का रंग लगा? उसे दादा का रंग नहीं लगता, आप चाहे कितनी ही बार उसे रंग में डूबोते रहो, फिर भी।

### दादा की मौलिक बातें

**दादाश्री :** लोभी की यह नई बात निकली अभी!

**प्रश्नकर्ता :** हमें भी यह बात मौलिक लगी।

**दादाश्री :** नहीं, लेकिन ऊँची बात निकली! मैं समझ जाता हूँ, सब को रंग लगता है, वह। लेकिन आज, लोभ की बात है न, उसे पहचानने के लिए बहुत ऊँचा साधन निकला अभी। मुझे खुद को भी पता नहीं था कि इतना सुंदर साधन है! यानी, लोभ को कैसे पहचानें?

रिकॉर्ड से क्या निकलेगा, वह कहा नहीं जा सकता। ऐसा सारा आश्चर्यजनक माल भरा हुआ है। यह तो बहुत ऊँची बात निकली है। लोभी रंगा नहीं जा सकता।

**प्रश्नकर्ता :** यह लोभ की गांठ नापने का थर्मामीटर है।

**दादाश्री :** लोभी अपनी पत्नी से, बच्चों से, दोस्तों के रंग में भी नहीं रंगता। बहुत ऊँची बात निकली! कभी-कभी ऐसी अच्छी बात निकल जाती है!

आपके गाँव में क्या ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो किसी में भी नहीं रंगा जाए?

यह क्या साथ ले जाएगा? अब खुद को दिखाई नहीं देता तो इसका क्या करेंगे? साथ में कैसे ले जाएगा? चलो, जाते-जाते ले जाएँगे पत्नी को, बच्चों को, सब को लेकिन वैसा भी नहीं है।

### मान तो भोला है?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, लोभ की गांठ का पता नहीं चलता, इसलिए टिकी हुई है।

**दादाश्री :** यदि उसका पता चल जाए तो इंसान का कल्याण ही हो जाएगा न! वणिक में लोभ की गांठ होती है और क्षत्रियों में मान की गांठ होती है। दोनों ही गांठें नुकसानदायक हैं।

मानी का लोग अपमान करते हैं। मान यानी भोला। इसलिए उसे सभी पहचान जाते हैं और 'क्या सोचकर सीना तानकर चल रहे हो', ऐसा कहेंगे। मान तो भोला है। मानी के लिए तो रास्ते पर चलने वाले भी कह देते हैं कि 'ओहोहो भाई, किसलिए इतने टाइट हो?'

**प्रश्नकर्ता :** लोभी को मान देकर लोभ की ग्रंथि तोड़नी चाहिए, लेकिन इस मान की ग्रंथि को कैसे तोड़ सकते हैं?

**दादाश्री :** मान की ग्रंथि तो ये लोग अपने आप ही तोड़ देंगे। वह अपमान से टूटती है न! वना मान तो हर कोई दिखाता रहता है। भोला है, इसलिए छोटे बच्चे भी समझ जाते हैं कि, 'मान है'।

और फिर होता क्या है? बहुत लोभी हो न, तो वह अपमान

सहन करके भी यदि सौ रुपये मिल रहे हों तो हँसता है और मन में ऐसा समझ लेता है कि, 'जाने दो न, हमें तो मिल रहा हैं न', वह लोभ की गांठ है। जबकि मानी तो बेचारा कोई मान दे तो उसके पास जो भी हो वह खर्च कर देता है। उसे अपमान का बहुत भय रहता है। कोई मेरा अपमान कर लेगा तो? अपमान कर लेगा तो? उसे उसका बहुत भय रहता है।

मानी तो, यदि आप जाओ न, तो आपको देखकर कहेगा, 'आइए, पधारिए।' खुद को जैसा चाहिए वैसा ही सामने वाले को देता है।

अब मान की ग्रंथियाँ तो टूट जाने वाली हैं क्योंकि तन-मन अर्पण कर देने हैं इसलिए मान की ग्रंथि टूट जाने वाली हैं लेकिन लोभ की टूटनी चाहिए। लोभ की ग्रंथियाँ नहीं छूटतीं। ये लोभ की ग्रंथियाँ कौन तुड़वाएगा? दिन भर आर्तध्यान और रौद्रध्यान करता रहता है!

### कषायों पर प्रकाश

दृष्टि भौतिकता की ओर है इसलिए वैसी दृष्टि भौतिक में से नहीं छूटती। तब हम समझ जाते हैं कि इसमें कौन सी गांठ है! उस गांठ को छुड़वाने का प्रयत्न करते हैं।

गांठें चार प्रकार की होती हैं, जिनके आधार पर ये सारे जीव वह दृष्टि नहीं छोड़ते। हम छुड़वाने का प्रयत्न करते हैं। वह खुद भी कहता है कि, 'मुझे वह दृष्टि पसंद नहीं है', फिर भी वह गांठ पकड़े रखती है। वे चार प्रकार की गांठें हैं, क्रोध, मान, माया और लोभ।

अब जिसमें मान की गांठ हो वह तो सुबह से ही तय करता है कि 'क्या करूँ कि आज मुझे मान मिले, मान कहाँ मिलेगा'। दिन भर यही हिसाब लगाता है और मान मिलने वाला हो न, उस दिन आसपास वालों को साथ ले जाने की कोशिश करता है! आना मेरी बाड़ी में! चाय भी पिलाता है अपनी तरफ से। खुद का मान दिखाने

के लिए करता है या नहीं? उस मान की गांठ वाले को हम पहचान जाते हैं कि यह मान की गांठ है।

दूसरी है, लोभ की गांठ। सब से बड़ी गांठ हो तो वह लोभ की। यदि लोभ नहीं छूटे तो दृष्टि नहीं बदलती। इसलिए हम क्या करते हैं? बड़े लोगों के लोभ की गांठ को ऐसे तोड़ते हैं, हथौड़े मारकर। यदि टूटी तो ठीक वर्ना हम कहाँ उसके पीछे पड़ें! टूट गई तो काम हो जाएगा। वर्ना दिन भर (उसकी) जान उसी में रहती है। उसी में जान अटकी रहती है। गांठ टूट गई तो सब ठीक हो जाएगा। यानी इंसान की ये चार ग्रंथियाँ नहीं टूटती। जब तक ग्रंथि भेदन न हो जाए तब तक निर्ग्रंथ नहीं हो जाएगा। इसलिए हम सरल व्यक्ति से बात नहीं करते लेकिन यदि पता चले कि यह गांठ वाला है तो ज़रा मारते हैं ऊपर से हथौड़ी। फिर भी यदि न टूटे तो हँसकर बात करते हैं ज़रा। वर्ना फिर क्या करें? हमें तो अपना फर्ज़ निभाना है। हम कोई झगड़ा करने नहीं आए हैं।

**प्रश्नकर्ता :** आपने मान और लोभ, दोनों की बात की। क्रोध और माया बाकी रहे।

**दादाश्री :** अब, जो कपट है वह लोभ की ग्रंथि को मज़बूत करने के लिए है, गुरखा (पहरेदार) है। लोभ की ग्रंथि को कोई तोड़ न जाए, इसलिए रखे हैं। वे हमारा क्या कर लेंगे? 'हमारी तो इच्छा है, कुछ समय बाद करेंगे', ऐसा करके मौका चुकवा देता है और मौका चूके तो फिर वह (ग्रंथि) सौ साल तक जीवित रहती है। तब हम समझ जाते हैं कि यह कपट करना शुरू किया। अतः हम हट जाते हैं। हमें तो कपट नहीं करना होता। तू कर, यदि करना है तो...। यदि देना हो तो दे, और अगर नहीं तो हमें कुछ नहीं! लेकिन वह उससे मौका चुकवा देते हैं और वह चुकवा दे, तभी से हम समझ जाते हैं कि वह मौका चूकने लगा है। मुझे कहाँ घर के लिए लेना है। वह तो तेरे हित के लिए है। मुझे तो लेना भी नहीं है और देना भी नहीं। और ऐसा भी नहीं है कि तेरे बगैर रुक गया है। देने वाले

तो और भी मिलेंगे। सिर्फ तेरे हित के लिए ही यह हथौड़ी मार रहा हूँ। किसी को ही मारता हूँ, सौ में से एकाध व्यक्ति को ही मारता हूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि यहाँ लोभ की गांठ है इसलिए हथौड़ी मार देता हूँ! तो हो गया! क्या बात समझ में आई?

### उसका दिखना मुश्किल

आप में मान और लोभ, दोनों ही हैं। मान है इसलिए हम कुछ नहीं करते। मैं जानता हूँ कि लोभ को यह मान ही मारेगा। क्षत्रियपन है न, इसलिए बहुत मानी ज़बरदस्त! अतः वह लोभ की गांठ का छेदन कर ही देगा। पिता जी की मृत्यु हो जाए तो पाँच-दस हज़ार खर्च कर देगा। और लोग भी भोजन करवाना सिखाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन ये सब कैसा सेट किया गया है?

**दादाश्री :** सेटिंग में से हम निष्कर्ष निकाल लेते हैं। कुछ महात्माओं के बारे में मैं कुछ नहीं कहता। लोभ की गांठ, बस उसी पर ध्यान रखता हूँ कि लोभ की गांठ काम कर रही है। उसका कल्याण नहीं होगा बल्कि नुकसान हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** मुझ में लोभ की गांठ है, ऐसा ध्यान में आना भी बहुत डिफिकल्ट है।

**दादाश्री :** यदि ध्यान में न आए तो वह टूटेगी कैसे? मान की गांठ टूट सकती है। कोई अपमान करने वाला मिल जाएगा और कोई मुँह पर कह भी देगा कि क्यों इतना अहंकार कर रहे हो? लेकिन लोभ का तो खुद मालिक को भी पता नहीं चलता। भान ही नहीं रहता।

### वहाँ चढ़े बुखार

मन में पैसे देने का भाव हो कि, 'देना है', फिर भी न दे पाएँ, वह लोभ की ग्रंथि।

**प्रश्नकर्ता :** संयोग ऐसे होते हैं कि देने का भाव होने पर भी दे नहीं पाते।

**दादाश्री :** वह अलग है। वह तो हमें ऐसा पता चलता है कि ये संयोग ऐसे हैं लेकिन ऐसा होता नहीं है। देने का निश्चय करें तो दे पाएँगे, ऐसा है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, लेकिन हों फिर भी नहीं दे पाता।

**दादाश्री :** हों फिर भी नहीं दे पाता, दे ही नहीं पाता न। वह बंध नहीं टूटता। वह बंध टूट जाए तब तो मोक्ष हो जाएगा न! वह आसान चीज़ नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** यों तो सभी की लिमिट में, देने की कुछ शक्ति तो होती ही है न?

**दादाश्री :** नहीं, वह लोभ के कारण नहीं होती। लोभी के पास लाख रुपये हों फिर भी चार आने देना मुश्किल हो जाता है। बुखार आ जाता है। अरे, पुस्तक में पढ़े कि ज्ञानी पुरुष की तन-मन-धन से सेवा करनी चाहिए। ऐसा पढ़े तो उसी समय बुखार चढ़ जाता है कि ऐसा क्यों लिखा है!

### न हो, वहीं तक

**मूलतः** तो वणिक ग्रंथि है न। पैसों पर निर्भरता हो तो फिर लोभ छूटेगा कैसे?

**प्रश्नकर्ता :** लोभ की गांठ सभी में होती ही है।

**दादाश्री :** होती ही है। आप क्षत्रियों में नहीं होती। आप लोगों में गरीब हों न, तब तक रहती है। फिर जब अमीरी आए तब टूट ही जाती है क्योंकि क्षत्रियपन होता है। पटेलों में, जब तक गरीबी होती है तब तक लोभ की गांठ होती है, फिर गरीबी टूटे तब तो राजेश्री (दिलदार) हो जाते हैं। मन स्वभाव से ही राजेश्री होता है। फिर लोभ



की गांठ टूट जाती है। न हो, तभी तक लोभ करता है फिर आते ही उड़ाने लगता है। लेकिन फिर भी धर्म में दान देने में परेशानी होती है। जहाँ वाह-वाही हो वहाँ खर्च करता है!

मैं खुद भी जहाँ वाह-वाही हो, वहाँ करता था।

### वाह-वाही के लिए बर्बादी

मुझसे धर्म में पैसे खर्च नहीं होते थे। और जहाँ वाह-वाही होती वहाँ पाँच लाख दे देता। यह मान की गांठ कहलाती है। 'वाह-वाह, वाह-वाह', अरे, एक दिन तक 'रहा या न भी रहा'। कुछ भी नहीं लेकिन नहीं, वह अच्छा लगता है। टेस्ट आता है। मैंने भी खोज की, कि मन बड़ा है फिर भी ऐसा कंजूस क्यों हो जाता है? लेकिन वाह-वाही में मन बड़ा था। पता लगाना चाहिए न, कि अपना मन कैसा है?

यह मन की गांठ कैसी है? न हो वहाँ तक झंझट नहीं है और बीस लाख आएँ तो उन्नीस लाख लिखता है। पूरे बीस नहीं लेकिन उन्नीस, किसलिए? वह भाई कहेंगे, 'जरा तो सोचो', तब कहेगा, 'ले, ये लाख रहने दिए!'

**प्रश्नकर्ता :** दादा, वह मान की गांठ कहलाएगी न?

**दादाश्री :** हाँ, मान की गांठ! वह मान की गांठ, जहाँ वाह-वाही हो वहाँ पर देता है। धर्म के लिए नहीं देता है।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसी गांठ तो वणिकों में भी होती है। जहाँ वाह-वाही हो, तख्ती में आए, वहाँ पर देते हैं।

**दादाश्री :** होती है, होती तो है लेकिन वाह-वाही की वह गांठ इनके (क्षत्रियों) जैसी नहीं होती। वे पैसे बर्बाद नहीं करते। वाह-वाही की तो होती ही है लेकिन उतनी बड़ी गांठ नहीं, इनके जैसी नहीं।

वणिक में लोभ की गांठ बड़ी और क्षत्रियों में वाह-वाही की गांठ बड़ी। दोनों ही गांठें नुकसानदायक हैं।

## हैं, फिर भी खर्च नहीं करता

**प्रश्नकर्ता :** लोभ की ऐसी कौन सी गांठें पड़ी होती हैं कि वणिक लोगों में अधिक और पटेलों में इस तरह की होती हैं?

**दादाश्री :** वह तो ऐसा है, ब्राह्मणों में लोभ की ऐसी गांठ नहीं होती। वे लोभी होते हैं लेकिन (पैसे) नहीं है इसलिए। समझ में आया न? गांठ इकट्ठा करके खाते-पीते नहीं हैं और गांठ बढ़ाते रहते हैं। इस लोभ को भगवान ने लोभ नहीं कहा है। ज़बरदस्त पैसा होने के बावजूद भी खर्च न करें तो उसे लोभ कहते हैं। मारवाड़ियों के कपड़े देखें तो वे अच्छे नहीं होते और अपने (पटेल) लोग तो... तीन सौ की साड़ी हो फिर भी वह पूछती है कि 'तेरह सौ की ले आऊँ?' तब पति कहता है, 'हाँ, ले आ न, तू अच्छी दिखे तो मेरा अच्छा दिखेगा।' जबकि, मारवाड़ी में वह जैसी दिखे, वैसी लेकिन पैसे खर्च नहीं होने चाहिए! लेकिन मारवाड़ियों में एक गुण होता है कि दस लाख कमाएँ हों तो डेढ़ लाख भगवान के वहाँ दे आता है। यह हर एक मारवाड़ी का गुण है। और कहीं पर खर्च नहीं करता लेकिन भगवान के वहाँ दे आता है। पैसे इसीलिए आते रहते हैं न! लेकिन पत्नी ने कैसी साड़ी पहनी है, वह ऐसा कभी नहीं देखता! वह तो रात-दिन पैसों में ही पड़ा रहता है। वहाँ सात लाख हैं, सिक्योरिटी में तीन लाख हैं, कुल मिलाकर दस और एकाध लाख और मिल जाए तो अच्छा और फिर चले जाते हैं! उस समय बेटा चार नारियल ले आता है! 'बिना पानी के बाँधना', कहता है। वह अभानता में भुगत लेता है!

और अधिक छोड़कर जाए तो क्या होता है? बेटे शराब पीना सीख जाते हैं। वे तो काम में ही व्यस्त रहें, ऐसा करना चाहिए। नकद हाथ में नहीं जाना चाहिए, व्यवसाय मिले और भी कुछ मिले, लेकिन नकद नहीं मिलना चाहिए। हो सके तो थोड़ा कर्ज़ छोड़ जाना चाहिए। लाख रुपयों के एसेट देना और पचास हजार का कर्ज़ भी छोड़ना! समझ में आया न? ताकि बेटे का विकास हो सके।

## तब मन पीछे हटता है

लोभ की गांठ का टूटना बहुत मुश्किल है।

**प्रश्नकर्ता :** होने के बावजूद भी नहीं दे पाते।

**दादाश्री :** नहीं दे पाते, नहीं दे पाते। वह लोभ की गांठ कब टूटती है? जब सरकार अचानक टैक्स लगा दे, या फिर चोर दस-बीस हजार रुपयों की चोरी कर ले। तब लोभ छूटता है कि इसके बजाय तो किसी अच्छी जगह खर्च किए होते तो अच्छा था।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन वह गांठ जड़ से नहीं टूटती न, दादा!

**दादाश्री :** नहीं टूटती, नहीं टूटती।

फिर भी एक बड़े व्यक्ति ने मुझसे कहा था कि 'मुझ में लोभ की गांठ बहुत है उसे तोड़ दीजिए!' मैंने कहा, 'भाई, यह ऐसा नहीं है कि जमीकंद की गांठ की तरह कट जाए।' 'फिर भी आप कुछ कृपा कीजिए न!' मैंने कहा, 'इसमें दो चीजें हैं। या तो हमारे कहे अनुसार डाल दो या फिर आपको नुकसान हो जाएगा, तब।' बीस लाख का साधन हो और आठ-दस लाख का नुकसान हो जाए तो चुप! तुरंत! अब कोई पैसे नहीं चाहिए। अब आग लगे इसको! यह धंधा अब नहीं करना है। अब तो इज्जत से अच्छी तरह खाने को मिल जाए, तो बहुत हो गया। हम तो अब खा-पीकर मौज करें और धर्म करते रहें। लेकिन जब तक नुकसान नहीं हुआ तब तक क्या हो सकता है?

## नुकसान, फिर भी उबार देता है

जो लोभी डूबने वाला हो न, तो वह नुकसान नहीं होने देता और जो तैरने को हो तो? नुकसान होने देता है और फिर से तैरने लगता है। नुकसान हो तो पलट जाता है। अतः हम क्या आशीर्वाद देते हैं कि किसी को नुकसान न हो, लेकिन नहीं, लोभी का तो अवश्य ही नुकसान हो!

एक भाई की लोभ की गांठ नहीं जा रही थी। उसने मुझसे कहा कि 'दादा, यह लोभ की गांठ निकाल दीजिए न!' लेकिन वह नहीं गई तो नहीं ही गई। मैंने कहा कि नुकसान होगा तो चली जाएगी। व्यापारी इंसान तो हो ही। उनका कॉटन का कामकाज था। उनका ऑफिस अहमदाबाद था। एक बार एक पार्टी ने पूरे पंद्रह लाख दबा दिए तो उसके साथ यह पार्टी भी बैठ गई, एकदम से! मैंने कहा, 'लोगों को लौटा देना। थोड़ा-थोड़ा करके लौटा देना'। उन्होंने सब चुका दिया और उनकी लोभ की गांठ टूट गई। बड़ा नुकसान आता है न, वह आना ही चाहिए, तब वह टूटती है। पंद्रह लाख का नुकसान हो गया!

निन्यानवे के धक्के से लोभ की गांठ शुरू हो जाती है। लेकिन निन्यानवे का धक्का लगने पर भी जो दिल का राजा है, उसमें गांठ नहीं बनती। दिल का राजा होता है न, उसे आने से पहले ही खर्च कर देने की आदत होती है। न हों तो अच्छा। खाली हाथ, फिर भी दिल के राजा अच्छे। लोभ की गांठ तो नहीं बंधेगी! बहुत खराब है लोभ की गांठ!

### यात्रा से लोभ घटे

लोभी की चाल को लोग समझ नहीं सकते। कृपालुदेव अच्छी तरह समझ पाए, वह यहाँ तक कि यात्रा में जाने से लोभ की गांठ छूटती है। क्या आपने पढ़ा है?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, तीर्थयात्रा में पैसे खर्च किए, इसलिए।

**दादाश्री :** जब पैसे कम हों तब वह गांठ छूटती है। किसी भी रास्ते आप लोगों से पैसे खर्च करवाओ।

**प्रश्नकर्ता :** यह कैसा ऑपरेशन कहलाएगा?

**दादाश्री :** किसी भी रास्ते से ऑपरेशन करके यह गांठ निकलवा देना। मानी को कोई ज़रूरत नहीं है। मानी को डाँटने की कोई ज़रूरत

नहीं है। मानी न हो तो वह बेशर्म हो जाता है तब लोभ का वर्चस्व होता है!

### निंदा करनी, निज लोभ की

**प्रश्नकर्ता** : आप जो कहते हैं कि मुट्टी नहीं खुलती, वह तो अनेक जन्मों के संस्कार पड़े हुए हैं, कोठी में जो भरा हुआ माल है, वही निकलेगा न?

**दादाश्री** : फिर भरे हुए माल का हमें क्या करना है? भरा हुआ माल! भरा हुआ ही निकलता है लेकिन हमें खुद से कहना है कि अरेरे, ऐसा किया आपने! आपने ऐसा किया! क्या इसे अच्छा कहा जाएगा? हमें तो बल्कि डाँटना चाहिए, तब लोभ से छूट पाएँगे। हम छूट जाएँगे। लोभ की निंदा करने पर लोभ से छूट सकते हैं। वह तो लोभ की प्रशंसा करता है। दूसरा लोभी मिले तो उसे अच्छा लगता है। अरे, लोभ तो कहाँ तक का? चाय में ज़रा सी शक्कर डाले तो चलता है। फिर उसका मन बदल जाता है। हर बात में लोभ, खाने-पीने में, कपड़े-वगैरह में, सब में लोभ!

### ज्ञानी को भी न माने

**प्रश्नकर्ता** : एक भाई मेरे पास आए थे। मुझसे कहने लगे, 'मेरे पास पाँच लाख रुपये हैं और हम दो ही लोग हैं। बेटा तो बहुत कमाता है लेकिन मेरी लोभ की गांठ नहीं जाती।' आज दादा के पास आने वाले थे लेकिन आए नहीं।

**दादाश्री** : एक व्यक्ति मुझसे कह रहा था कि, 'मेरे पास सत्तर लाख रुपये हैं। और उसमें से पच्चीस लाख रुपये कहीं अच्छी जगह पर खर्च हों, ऐसा कुछ करना है। लेकिन मेरी लोभ की गांठ के कारण मुझसे चार आने भी नहीं दिए जाते।' तब मैंने उनसे कहा, 'आप यहाँ आते रहना।' वे एक-दो बार आए लेकिन बाद में फिर नहीं आए। यहाँ अच्छा तो लगता था, सब अच्छा लगता था। लोभ की गांठ उन्हें

नहीं आने देती। वह गांठ फिर उन्होंने खुद ने ही बनाई थी। दवाई लगाते जाते हैं और पुड़िया बाँधते जाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** उसने तो ज़बरदस्त की थी।

**दादाश्री :** मज़बूत कर ली थी, उखड़ती ही नहीं थी। वह लोभ की गांठ नहीं छूटती। ज़रा सा लोभ लेकिन उसे निकालने के लिए... अब मैं कैसे लोभ छुड़वाऊँ? हमारे कहे अनुसार तो चलना नहीं है। लोभ छोड़ने के लिए जैसा ज्ञानी पुरुष कहे उस तरह से तू पैसे डाल।

### पछतावा कर देता है ढीला

लोभ टूटने के दो रास्ते हैं। एक, ज्ञानी पुरुष खुद अपने वचन बल से तुड़वा देते हैं और दूसरा, भारी नुकसान हो जाए तो छूट जाता है कि मुझे कुछ भी नहीं करना है। अब जो बचे हैं उतने में निभा लेना है। मुझे कितने ही लोगों से कहना पड़ता है कि घाटा आने पर लोभ छूटेगा, वर्ना लोभ नहीं छूटेगा। हमारे कहने से भी न टूटे, ऐसी पक्की गांठ पड़ चुकी होती है।

**प्रश्नकर्ता :** ज्ञानी पुरुष तोड़ देते हैं लेकिन खुद का भाव होना चाहिए। लोभ, दृष्टि में आना चाहिए। लोभ तो पीड़ा है ऐसा मान्यता में आना चाहिए न?

**दादाश्री :** ऐसा मान्यता में आ जाए फिर भी नहीं छूटता क्योंकि गांठ लगा दी है फिर क्या हो सकता है? पछतावा होता है। पछतावा होने पर हल्का होता जाता है।

लोभी की गांठ नुकसान से जाती है या फिर ज्ञानी पुरुष की आज्ञा मिल जाए तो उच्चम। जो आज्ञा का पालन करने को तैयार न हो, उसे कौन सुधारे!

### और ऐसे ग्रंथि का छेदन होता है...

इस शरीर में तरह-तरह की गांठें पड़ी हुई हैं। जब ग्रंथियाँ निर्मूल

हो जाएँगी तब निर्ग्रथ होगा। गांठों का छेदन कर-करके निर्ग्रथ होगा। पहचान ने पर ही छेदन हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** क्रमिक में दोष निकालने पड़ते हैं और अक्रम में देखने से ही दोष निकल जाते हैं।

**दादाश्री :** खुद का दोष दिखने लगे। दोष कभी दिख जाए किसी को दिखाना न पड़े और चला जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** खुद जागृत हो गया इसलिए अपने आप ही वे चोर नहीं रहेंगे।

**दादाश्री :** अपने आप चले जाते हैं। यानी देखने से सारी गांठें विलय हो जाती हैं। लेकिन भारी गांठ ऐसी होती है कि उसे देखने में भी धोखा खा जाते हैं। उसे हम वहाँ पर छेड़ते हैं। देखने में भी धोखा खा जाते हैं। दिखाई ही नहीं देता न!

### उसमें जागृति की ही ज़रूरत

उसके लिए एक भी खराब भाव नहीं होना चाहिए, उसे कहते हैं संयम। और उसके लिए खराब भाव आए तो तुरंत ही वह धो दे तो उसे कहते हैं संयम! जो संयम में नहीं रहते, वे बाद में डेवेलप होते हैं! ज्ञान लेने के बाद तो संयम की ज़रूरत है। इतनी अधिक जागृति हो तो हर्ज नहीं है। जो भी हो वह जागृतिपूर्वक चला जाए, तब तो उसे पूरा विज्ञान फिट हो गया, ऐसा कहा जाएगा। जागृति हो नहीं और अंदर भारी गांठें हों तो उसे जागृति कैसे रहेगी?

**प्रश्नकर्ता :** जागृति गांठों की जोखिमदारी नहीं लेती।

**दादाश्री :** लेना चाहती है लेकिन गांठें उसे लेने ही नहीं देतीं। उस पर गांठ की परछाई रहती है। जागृति का प्रकाश गांठ पर पड़ना चाहिए उसके बजाय गांठों की परछाई उस पर पड़ती है। अब कैसे उसे पहुँच पाएँगे?

## गांठें पिघलें, सत्संग से ही

यह जनरेशन बहुत गांठें नहीं लाई है। मोह की ही गांठें हैं। लोभ की या ऐसी कोई गांठ नहीं है। आप अपने बच्चों को देखते होंगे न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** अन्य गांठें नहीं हैं न? आज की यह पूरी जनरेशन गांठों वाली नहीं है। हमारी पिछली जनरेशन बहुत गांठों वाली थी! लोभ की भारी गांठें! इस वजह से चोरी करते थे, झूठ बोलते थे, धूर्तता करते थे, सभी कुछ करते थे। वैसी चोरी नहीं, पकड़ में आ जाए, ऐसी चोरी नहीं। मानसिक, बुद्धि से ट्रिक्स लगाते थे। उस चोरी की बजाय ऐसी चोरी गलत कही जाएगी। बस पकड़ा नहीं गया, इतना ही।

सत्संग में रहने से ही गांठें विलय होंगी। वर्ना जब तक सत्संग में न रहो तब तक गांठों का पता नहीं चलेगा। सत्संग में रहने से वह सब निर्मल होता हुआ नजर आएगा। आप अलग रहे न! बहुत दूर रहकर देखो आराम से। तब आपको सारे दोष दिखाई देंगे। उसमें तो गांठों में रहकर देखते हैं, तो दोष दिखाई नहीं देते। इसीलिए कृपालु देव ने कहा है, 'दीठा नहीं निज दोष तो तरिए कौन उपाय!'

## अब बदलो ध्येय

अनंत जन्मों से यही किया है न? और इसी से, लोभ से ही मुझे शांति रहती है, मन में उसे ऐसा फिट हो चुका है न! अब, वह लोभ भी कभी मार खिलाता है। जबकि इससे शांति रहती है और सुख मिलता है। आत्मा हुआ तब फिर लोभ छूटता जाता है। अभी तक अंतिम स्टेशन लोभ था, अब अंतिम स्टेशन आत्मा हुआ इसलिए अपने आप प्रवृत्तियाँ बदलती जाती हैं!

## समर्पण का साइन्स

आप जो पाना चाहते हो वह मुझसे कब पाओगे? मेरे नज़दीक



कब आ सकते हो? आपकी सब से प्यारी चीज़ मुझे अर्पण कर दोगे, तब। संसार में, व्यवहार में जो प्यारी चीज़ हो, उसे अर्पण कर दोगे तो नज़दीक आ सकोगे। आपने तो मन, वचन, काया मुझे अर्पण किए हैं लेकिन अभी भी एक चीज़ बाकी रह गई है, लक्ष्मी! उसे आप अर्पण करोगे तो नज़दीक आ पाओगे। अब, मुझे तो ज़रूरत नहीं हो तो फिर मुझे कैसे अर्पण करोगे? तब कहते हैं कि ऐसा कोई रास्ता निकले, तो अर्पण किया जा सकता है! यानी पिछले साल आपने जब लक्ष्मी दी, उसके बाद से आप और भी करीब आ गए, क्या आपको ऐसा लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, दादा।

**दादाश्री :** यही वह कला है इसकी, वर्ना जुड़ते नहीं। अलग ही रहा करता है। अब, अपने यहाँ तो पैसे लेने का कुछ था ही नहीं न! हम तो लेते ही नहीं थे न? तब तक मन जुदा ही रहता था। पैसों की बात आए तो मन वहाँ जुड़ जाता है। वर्ना मन वहाँ से उखड़ जाता है। ज्ञानी पुरुष पर लोगों की प्रीति होती है इसलिए ज्ञानी पुरुष कहते हैं कि तू इसे बाहर दे दे!

लक्ष्मी पर प्रेम घटा कि आत्मा हो गया!

**बीज, लेकिन क्या खा सकते हैं?**

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, ज्ञानी पुरुष ऐसा कहें कि तू दे दे और ऐसा न हो पाए तो वह किस प्रकार का लोभ होगा?

**दादाश्री :** नहीं देता, फिर भी थोड़ा-बहुत कुछ दे तो गांठ थोड़ी-बहत छूटकर ढीली हो जाती है। करेगा ज़रूर क्योंकि हिसाब लगाता है कि इनको खुद को कुछ भी नहीं चाहिए और मैंने पूर्व जन्म में कुछ किया है तो इस जन्म में मिला है तो फिर से खेत में डालूँगा। खेत यों ही खाली पड़े रहें उसके बजाय पर्याप्त बीज डालने चाहिए या सारे खा जाने चाहिए? क्या सारे बीज खा जाने चाहिए या थोड़े खेतों में डालने

चाहिए? हमारे पटेल लोग तो सारे खा जाते हैं! भोले लोग हैं! जबकि आप लोग तो समझ से, आपको लगता है कि खुद के लिए रखने हैं।

### तब लग जाता है चित्त भगवान में

कृपालुदेव ने कहा है कि ज्ञानी पुरुष की तन, मन और धन से सेवा किए बगैर मोक्ष नहीं है। अब, ज्ञानी पुरुष को धन का क्या करना है?

**प्रश्नकर्ता :** ज्ञानी पुरुष का और धन का कोई कनेक्शन ही नहीं लगता।

**दादाश्री :** फिर तन की सेवा का उन्हें क्या करना है?

**प्रश्नकर्ता :** तन से तो वे अलग हैं। यह तो सामने वाले के भले के लिए है।

**दादाश्री :** आपके खुद के लिए करना है। धन का क्या करोगे? लोभ की गांठ आपकी टूटे इसलिए जहाँ ज्ञानी कहें, उस अच्छी जगह पर पैसे डालो। जिससे अगले जन्म में आपके काम आएँगे और अभी लोभ की गांठ छूटेगी। अच्छी जगह पर डालोगे तो क्या वह अगले जन्म का ओवरड्राफ्ट नहीं होगा, नहीं? या खर्च कर देंगे, वह ओवरड्राफ्ट है? हम मौज-मजे में खर्च कर देंगे तो क्या वह ओवरड्राफ्ट माना जाएगा? या फिर वह रेस में लगा दे, तो वह ओवरड्राफ्ट नहीं है?

**प्रश्नकर्ता :** वह तो उल्टा ओवरड्राफ्ट हो गया।

**दादाश्री :** वह सब गटर में गया। आप जितना खर्च करोगे वह सब गटर में, इसलिए भगवान ने इस प्रकार से कहा है कि अच्छी जगह पर खर्च करवाओ तो लोभ की गांठ टूट जाएगी। फिर चित्त उसी में रहा करेगा। फिर 'अपनी' गाड़ी चलती रहेगी। कोई अड़चन नहीं आएगी और जिसने किसी भी अच्छी जगह पर पैसे डाले, उसे दुःख आएगा ही कैसे? दुःख उसकी राह नहीं देखता। राह किसकी देखता है? जो खुद के लिए खर्च करता है, दुःख उसकी राह देखता है।

**प्रश्नकर्ता :** मूल भ्रांति गई तभी से यह लोभ छूटने लगा न!

**दादाश्री :** हाँ, भ्रांति के पहले भी लोभ छूट सकता है। लोभी तो समझे और उसके पहले ही छोड़ दे, तो बहुत बड़ा पुण्य बंधता है, ज़बरदस्त! लोभ छोड़ दे। कोई समझाए तो छूट जाता है तब पुण्य बंधता है। मंदिर बनवाना और खुद के लिए खर्च न करे, वह सब ओवरड्राफ्ट!

### सर्वस्व समर्पण, किसे?

इसलिए श्रीमद् राजचंद्र ने कहा है कि ज्ञानी पुरुष जो मोक्ष देते हैं, मोक्षदाता पुरुष होते हैं, मोक्ष का दान देने आए हों, ऐसे ज्ञानी पुरुष, उनकी तन, मन, धन से सेवा करनी चाहिए। तब कहते हैं कि 'साहब, तन और मन तो हम अर्पण करते ही हैं लेकिन धन की उनको ज़रूरत ही नहीं है।' तब कहते हैं, 'फिर आपकी लोभ की गांठ कौन तोड़ेगा?' ज्ञानी पुरुष तुझे ऐसा कहेंगे कि उस जगह धर्म दान दे दो, तो वह रकम तू उनके कहने पर देगा। वर्ना तू, अपने आप नहीं देगा। लेकिन खुद से तो अगर तू कट मरे फिर भी नहीं देगा। उनके कहने पर, उन पर प्रेम है, उस प्रेम के आधार पर तू देगा तो तेरी ग्रंथि टूट गई। और एक बार दिया तो मन खुल जाएगा। फिर लोभ टूट जाएगा। देना चाहिए एक बार। ये ग्रंथियाँ ही हैं। लोभ है तब तक इनका निबेड़ा नहीं आएगा। यानी ऐसा सब लोभ को तोड़ने के लिए करते हैं, न कि तेरी पूंजी कम करने के लिए। इसलिए कृपालुदेव ने लिखा है कि ज्ञानी पुरुष की तन, मन, धन से भक्ति करना।

**प्रश्नकर्ता :** तब तक भक्ति फल नहीं देती।

**दादाश्री :** हाँ, भक्ति फल नहीं देती। परिणामित नहीं होती और उन्होंने जो कहा है, वह अनुभव से कहा है। वर्ना हम कहाँ झंझट करें इन गांठों को तोड़ने की?

ज्ञानी पुरुष को खुद को कुछ भी नहीं चाहिए। क्योंकि उन्हें

किसी चीज़ की भीख नहीं होती। जब सभी प्रकार की भीख खत्म हो जाए, तब भगवान का प्रतिनिधित्व मिलता है।

किस-किस प्रकार की भीख? कीर्ति की भीख, मान की भीख, लक्ष्मी की भीख, सोने की भीख, स्त्रियों की भीख! स्त्रियों का हमें विचार तक नहीं आता। किसी भी प्रकार का, इस देह का भी मालिकीपना ही नहीं है न? तब भगवान का प्रतिनिधित्व मिलता है।

### ‘दादा’ के पास दोनों पंख

**प्रश्नकर्ता :** दादा की जो आध्यात्मिकता है, वह जितनी वैयक्तिक है उतनी ही वैश्विक एवं सामाजिक भी है।

**दादाश्री :** वह बहुत ऊँचा सामाजिक है। यह तो आदर्श सामाजिक है। अन्य आदर्श वाले लोग कबूल करते हैं कि ऐसा उच्च सामाजिक उत्पन्न ही नहीं हुआ है। समाज यदि इसे समझे न, तो बहुत उच्च स्तर हो जाएगा।

जो आदर्श व्यवहार से रहित है, वह अध्यात्म रुखा कहलाता है। और रुखा पूरा फल नहीं देता इसलिए हमेशा एक्जेक्टनेस होनी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** रुखा कैसे फल दे सकता है?

**दादाश्री :** हाँ, बस, वह रुखा है। उससे संतोष भी नहीं होता।

### संज्ञा समझो ज्ञानी की

यदि समाज की व्यवस्था इस तरह से समझे तो काम निकाल लेगा। कोई भी पैसों की भावना न करे तो हिन्दुस्तान कितना सुंदर हो जाएगा! पैसा तो आपके पास आना ही है, पैसा आना, वह तो परिणाम है। आपको तो कॉज़ेज़ का सेवन करना है, उसके बजाय पैसों का सेवन करते हो? पैसा क्या है? परिणाम। यानी यह तो परीक्षा में पास होने की चिंता करते हो? परीक्षा में पास होने के लिए मानता रखते

हो? अरे, अच्छी परीक्षा देने की मानता रखो कि अच्छा पेपर कैसे लिख पाऊँ। उसके बजाय ऐसा उल्टा ही करते हो। परीक्षा में पास होने की मानता रखते हो! आपको समझ में आ रहा है?

**प्रश्नकर्ता :** लक्ष्मी, जो कि परिणाम स्वरूप आने वाली है उसके लिए भी आशा क्यों रखते हैं हम?

**दादाश्री :** लोकसंज्ञा से चले, इसलिए। वह कहता है कि, मुझे लक्ष्मी अधिक मिले, ऐसा चाहिए। वह दूसरा भी लक्ष्मी के लिए दौड़-भाग और भावना करता है। कोई 'बाबा जी' हों उनके पास जाता है। कहता है, 'बाबा जी, मुझे लक्ष्मी अधिक मिले, ऐसा कुछ कर दीजिए।' अरे, परिणाम के लिए? बाबा जी को भी शर्म नहीं आएगी? यानी इस मूल बात को समझे बगैर चला है यह जगत्? और इसी से दुःख है। वर्ना जगत् में कभी दुःख होता होगा? मुझे मूल बात का तुरंत पता चल जाता है इसलिए मुझे दुःख नहीं आया है। ज्ञान नहीं था फिर भी। मुझे दुःख सिर्फ किसका था? कि अंबालाल भाई नाम के दुनिया के सब से बड़े व्यक्ति, ऐसा मैं मान बैठा था। बात में कुछ भी दम नहीं था। ऐसा मान बैठने का बहुत दुःख था। हम खुद मानते रहें, उसका क्या अर्थ? मन ही मन में वैधव्य भोगें और मन ही मन शादी करें, उसे क्या शादी करना कहेंगे? नहीं। तो क्या विधुर हुए, ऐसा कहा जाएगा? नहीं।

अर्थात् सारा जगत् पैसों के लिए झंझट करता है न?

**प्रश्नकर्ता :** और दूसरे लोग करते हैं इसलिए हम भी करते हैं।

**दादाश्री :** उसे भान नहीं रहता है कि यह करने लायक है या नहीं!

### जीवन जगमगाओ, मोमबत्ती की तरह

हमारा जीवन किसी के लाभ के लिए बीते, जैसे कि यह जो मोमबत्ती जलती है, वह क्या खुद के लिए जलती है? औरों के लिए,

परार्थ के लिए जलती है न? औरों के फायदे के लिए जलती है न? इसी प्रकार यदि मनुष्य औरों के फायदे के लिए जीएँ तो तेरा फायदा तो उसमें है ही। वैसे भी, मरना तो है ही! इसलिए, यदि औरों का फायदा करने जाएगा तो तेरा फायदा तो उसमें है ही। और यदि औरों को कष्ट देने जाएगा तो अंदर तुझे कष्ट है ही। तुझे जो करना हो, वह कर। तो क्या करना चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** परोपकार के लिए ही जीना चाहिए।

**दादाश्री :** हाँ, परोपकार के लिए ही जीना चाहिए लेकिन अब आप तुरंत ऐसी लाइन बदल दो तो ऐसा करने में पिछले रिएक्शन तो आएँगे, तब फिर आप ऊब जाते हो कि यह तो मुझे अभी सहन करना पड़ रहा है लेकिन कुछ समय तक सहन करना पड़ेगा। उसके बाद आपको कोई दुःख नहीं रहेगा। लेकिन अभी तो आप नए सिरे से लाइन डाल रहे हो इसलिए पिछले रिएक्शन तो आएँगे ही। अभी तक जो उल्टा किया था, उसके फल तो आएँगे ही न?

परार्थ यानी क्या? औरों के लिए, बच्चों के लिए, दूसरों के लिए जीना, इसमें तुझे क्या मिला? यहाँ करोड़ रुपये इकट्ठे करते हैं, बिना हक़ का लेते हैं, सबकुछ भोगते हैं और फिर बच्चों के लिए सब छोड़कर चला जाता है। ऐसा है यह जगत्!

### पाओ ज्ञानी का अंतर हेतु

हर एक काम का हेतु होता है कि किस हेतु से वह काम किया जा रहा है! उसमें यदि उच्च हेतु तय किया जाए यानी क्या, कि जैसे यह अस्पताल खोलना है, वहाँ पेशेन्ट्स किस प्रकार स्वस्थ हों, किस प्रकार सुखी हों, कैसे वे लोग आनंदित हों, कैसे उनकी जीवनशक्ति बढ़े, ऐसा हमारा उच्च हेतु तय किया हो और सेवा भाव से ही वह काम किया जाए तब उसका बाइ प्रोडक्शन क्या? लक्ष्मी! अतः लक्ष्मी तो बाइ प्रोडक्ट है, उसे प्रोडक्शन मत मानना। सारे जगत् ने लक्ष्मी को ही प्रोडक्शन कहा है। इसलिए फिर उसे बाइ प्रोडक्शन

का लाभ नहीं मिलता। अतः आप सिर्फ सेवाभाव ही तय करो तो उसके बाइ प्रोडक्शन में लक्ष्मी तो और भी अधिक आएगी। यानी लक्ष्मी को यदि बाइ प्रोडक्शन ही रहने दे तो अधिक लक्ष्मी आएगी। लेकिन ये तो लक्ष्मी के हेतु के लिए लक्ष्मी बनाते हैं इससे लक्ष्मी नहीं आती। इसलिए आपको यह हेतु बता रहे हैं कि ऐसा हेतु सेट करो। 'निरंतर सेवाभाव।' तो बाइ प्रोडक्ट अपने आप आता रहेगा, जैसे बाइ प्रोडक्शन के लिए कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती, खर्च नहीं करना पड़ता, वह 'फ्री ऑफ कॉस्ट' होता है, वैसे ही यह लक्ष्मी भी 'फ्री ऑफ कॉस्ट' मिले तो वह कितनी अच्छी! इसलिए सेवाभाव का निश्चय करो, मनुष्यमात्र की सेवा क्योंकि हमने यह अस्पताल खोला है इसलिए हम जो विद्या जानते हो तो उस विद्या का सेवाभाव में उपयोग करना, इतना ही अपना हेतु होना चाहिए। उसके फलस्वरूप अन्य चीजें फ्री ऑफ कॉस्ट मिलती रहेंगी। और फिर लक्ष्मी की तो कभी कमी नहीं पड़ेगी और जो सिर्फ लक्ष्मी के लिए ही करने गए, उन्हें नुकसान हुआ है। हाँ, क्योंकि लक्ष्मी के लिए ही कारखाना लगाया फिर बाइ प्रोडक्ट तो रहा ही नहीं न! क्योंकि लक्ष्मी ही बाइ प्रोडक्ट है, बाइ प्रोडक्शन के लिए हमें प्रोडक्शन तय करना है, तो बाइ प्रोडक्शन फ्री ऑफ कॉस्ट मिलता रहेगा।

आत्मा प्राप्त करने के लिए जो कुछ भी किया जाता है वह प्रोडक्शन है। और उसके कारण बाइ प्रोडक्शन प्राप्त होता है, जिससे संसार की सारी ज़रूरतें प्राप्त होती हैं। मैं अपना एक ही तरह का प्रोडक्शन रखता हूँ, 'सारा जगत् परम शांति प्राप्त करे और कितने ही लोग मोक्ष प्राप्त करें'। मेरा यह प्रोडक्शन है और उसका बाइ प्रोडक्शन मुझे मिलता ही रहता है! हमें चाय-नाश्ता आपसे कुछ अलग तरह का मिलता है, उसका क्या कारण है? आपकी तुलना में मेरा प्रोडक्शन उच्च कोटि का है। उसी प्रकार यदि, आपका प्रोडक्शन उच्च कोटि का होगा तो बाइ प्रोडक्शन भी उच्च कोटि का आएगा!

अन्य सारा प्रोडक्शन, बाइ प्रोडक्ट है, जिसमें आपकी ज़रूरत

की सारी चीजें मिलती रहेंगी। और वे ईजिली मिलती रहेंगी। देखो न! यह प्रोडक्शन पैसों के लिए किया है इसलिए आज पैसे ईजिली नहीं मिलते, दौड़-भाग करते हैं, हड़बड़ाहट में घूमते रहते हैं और चेहरे पर अरंडी का तेल लगाकर घूम रहे हों ऐसे दिखाई देते हैं! घर में अच्छा खाना-पीना है, कितनी सुविधाएँ हैं, रास्ते कितने बढ़िया हैं। रास्ते पर चलें तो पाँव में धूल न लगे! इसलिए मनुष्यों की सेवा करो। मनुष्य में भगवान रहे हुए हैं, भगवान भीतर ही बैठे हैं। बाहर ढूँढने जाओगे तो वे मिलें, ऐसे नहीं हैं। आप मनुष्यों के डॉक्टर हो, इसलिए आपको मनुष्यों की सेवा करने के लिए कहता हूँ। जानवरों के डॉक्टर हों तो उन्हें जानवरों की सेवा करने के लिए कहूँगा। जानवरों में भी भगवान बैठे हैं लेकिन इन मनुष्यों में भगवान विशेष रूप से प्रकट हुए हैं!

### बदलो जीवन का हेतु, इस तरह

**प्रश्नकर्ता :** कर्तव्य तो हर व्यक्ति का है, चाहे वह वकील हो या डॉक्टर हो, लेकिन कर्तव्य तो यही होना चाहिए, कि मनुष्य मात्र का भला करना है।

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन यह तो 'भला करना है', ऐसी गाँठ बाँधे बगैर ही, बस किए जाते हैं। कोई डिसिजन नहीं लिया, कोई भी हेतु तय किए बिना, गाड़ी ऐसे ही चल रही है। किस गाँव जाना है उसका ठिकाना नहीं है। और किस गाँव उतरना है, उसका भी ठिकाना नहीं है। रास्ते में चाय-नाश्ता करना है, उसका भी ठिकाना नहीं है। बस, दौड़ते ही रहते हैं इसलिए सब उलझ गया है। हेतु तय करने के बाद सब करना चाहिए।

लक्ष्मी तो बाइ प्रोडक्शन है, उसका प्रोडक्शन नहीं हो सकता। उसका यदि प्रोडक्शन हो सकता तो कारखाना लगाने पर प्रोडक्शन में पैसे मिलते। लेकिन नहीं, लक्ष्मी तो बाइ प्रोडक्शन है। पूरे जगत् को लक्ष्मी की जरूरत है। इसलिए यह समझने की जरूरत है कि हम ऐसा



तो क्या करें कि अपने पास पैसे आएँ! लक्ष्मी तो बाइ प्रोडक्शन है। इसलिए अपने आप प्रोडक्शन में से आएगी, सहज स्वभाव से आए ऐसी है। जबकि लोगों ने लक्ष्मी के कारखाने लगा दिए, उसी को प्रोडक्शन बना दिया।

हमें तो सिर्फ हेतु ही बदलना है, और कुछ भी नहीं करना है। पंप के इंजन का एक पट्टा इस ओर लगाने से पानी निकलता है और उस ओर लगाने से धान में से चावल निकलते हैं अर्थात् सिर्फ पट्टा लगाने में ही फर्क है। हेतु तय करना है और फिर वह हेतु आपके लक्ष में रहना चाहिए। बस, और कुछ नहीं है। लक्ष्मी लक्ष में नहीं रहनी चाहिए।

जगत् का काम करो, आपका काम होता ही रहेगा। जगत् का काम करोगे तब आपका काम अपने आप ही होता रहेगा, तब आपको आश्चर्य होगा।



[ 7 ]

## दान के प्रवाह

### अच्छे कार्य किसे कहेंगे ?

**प्रश्नकर्ता :** अच्छे कार्य करने के लिए व्यक्ति को क्या करना चाहिए ?

**दादाश्री :** कौन से अच्छे कार्य करने हैं ?

**प्रश्नकर्ता :** हमें कोई भी शुभ कार्य करना हो, धार्मिक या कोई भी ?

**दादाश्री :** क्या दस लाख रुपये दान करने हैं ?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं-नहीं! दान की बात तो बाद में आती है।

**दादाश्री :** तो क्या करना है, वह बताओ न मुझे ?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन उसमें बुद्धि का क्या उपयोग करें ?

**दादाश्री :** बुद्धि का ? आपको यह तय करना चाहिए कि आपके पास पैसे न हों फिर भी आपको रोज़ रात को यह तय करना चाहिए कि मुझे सुबह जो कोई भी हो, उनके काम के लिए चक्कर लगाना है, चक्कर लगाना है, उन्हें सही सलाह देनी है। यदि कोई व्यापारी उलझन में हो, हिसाब-किताब में उलझ गया हो, तो आप कहना कि,

‘भाई, मैं तुझे हिसाब-किताब समझा दूँगा’। दिन भर ऐसा कुछ न कुछ करना। ओब्लाइजिंग करो तो चलेगा या नहीं हो सकेगा ?

**प्रश्नकर्ता** : चलेगा।

### लक्ष्मी का सदुपयोग किसमें?

**प्रश्नकर्ता** : लेकिन मान लीजिए यदि किसी के पुण्यकर्म से उसके पास लाखों रुपये आएँ, तो क्या उसे गरीबों में बाँट देना चाहिए या खुद के लिए ही उपयोग करना चाहिए?

**दादाश्री** : नहीं, घर के किसी व्यक्ति को दुःख न पहुँचे उस तरह से उन पैसों का उपयोग करना। घर के लोगों से पूछना चाहिए कि ‘भाई, आपको कोई तकलीफ नहीं है न?’ तब यदि वे कहें कि, ‘ना, नहीं है’ तो वह उनकी पैसे खर्च करने की लिमिट हुई। तब फिर आपको उस तरह से करना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता** : सन्मार्ग में तो खर्च करना चाहिए न?

**दादाश्री** : फिर बाकी का सब सन्मार्ग में ही खर्च करना। जो घर में खर्च होंगे, वे सब गटर में जाएँगे। जबकि अन्य कहीं खर्च होंगे, वे आपके खुद के लिए ही सेफसाइड हो गई। हाँ, यहाँ से साथ नहीं ले जा सकते लेकिन दूसरे तरीके से सेफसाइड की जा सकती है।

**प्रश्नकर्ता** : लेकिन वैसे तो वह साथ ले जाने जैसा ही कहलाएगा न!

**दादाश्री** : हाँ, साथ ले जाने जैसा ही, अपनी सेफसाइड वाला। यानी किसी भी तरह से दूसरों को कुछ सुख पहुँचे, उसके लिए खर्च करना। वह सब आपकी सेफसाइड है।

**प्रश्नकर्ता** : लक्ष्मी का सदुपयोग किसे कहते हैं?

**दादाश्री** : लोगों के उपयोग के लिए या भगवान के लिए खर्च करो न तो उसे सदुपयोग कहेंगे।

## दान में स्वार्थ

**प्रश्नकर्ता :** दान क्यों किया जाता है ?

**दादाश्री :** ऐसा है न कि, दान देकर खुद पाना चाहता है। सुख देकर सुख लेना चाहता है। दान, मोक्ष के लिए नहीं देता। लोगों को सुख दोगे तो आपको सुख मिलेगा। आप जो दोगे वही आपको मिलेगा। यह तो नियम है। वह तो, देने से खुद को मिलता है, प्राप्ति होती है। ले लेने से वापस चला जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** उपवास करना अच्छा या कुछ दान करना अच्छा ?

**दादाश्री :** दान करना यानी क्या कि खेत में बोना। खेत में बो आना तो उसका फल मिलेगा। जबकि उपवास करने से भीतर जागृति बढ़ती है। लेकिन भगवान ने शक्ति के अनुसार उपवास करने के लिए कहा है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, लोग तो कितना अधिक दान करते हैं, जैनों में उपाश्रय में बहुत करते हैं।

**दादाश्री :** वे दान करते हैं लेकिन सगे-संबंधियों को नियम से बाहर नहीं देते। दान करते हैं क्योंकि खुद को उसका फल पाना है न! मुझे उसका फल पाना है, वह तो एक तरह का स्वार्थ है। दान तो स्वार्थ है लेकिन वे सगे-संबंधियों को नहीं देते। नियम से बाहर नहीं देते। वह तो मैंने पूरी बिरादरी में देखा है।

## मंदिरों में या गरीबों में ?

**प्रश्नकर्ता :** हम मंदिरों में गए थे न, वहाँ लोग करोड़ों रुपये पत्थर के पीछे खर्च करते हैं। भगवान ने कहा है, ये जीते जागते अंतर्दामी हैं और हर एक जीवमात्र में बिराजमान हैं। और जीते-जागतों को लोग दुत्कारते हैं और पत्थर के पीछे करोड़ों रुपये खर्च करते रहते हैं। वह क्या चीज़ है ?

हर एक के भीतर भगवान हैं, प्रत्यक्ष हैं। फिर भी वे लोगों को गिड़गिड़ाने के लिए मजबूर करते हैं। और यहाँ करोड़ों रुपये पत्थर की मूर्ति के पीछे खर्च कर देते हैं, ऐसा क्यों?

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन लोगों को गिड़गिड़ाने पर मजबूर करते हैं वह तो अपनी नासमझी से करते हैं न, बेचारे को? क्रोध-मान-माया-लोभ की निर्बलता के कारण गिड़गिड़ाने पर मजबूर करते हैं न?

पैसे कमाने निकलते हैं। अब घर पर जो है अच्छी तरह से घर चले, ऐसा है। फिर भी पैसे कमाने निकलते हैं। तो हम नहीं समझ जाएँगे कि वह अपने क्वाँटा से ज़्यादा पाने की कोशिश कर रहा है? जगत् में तो सभी का क्वाँटा एक समान है लेकिन ये लोभी लोग ज़्यादा क्वाँटा ले जाते हैं। जिससे कुछ लोगों के हिस्से में ही नहीं आता। अब ऐसा है कि वह पुण्य यों ही ऐसे ही गप्प से नहीं मिलता!

पुण्य ज़्यादा किया इसलिए आपके पास ज़्यादा धन आया तो इन पैसों को फिर खर्च कर दो आप। आपको समझना चाहिए कि यह तो फिर से इकट्ठा होने लगा, यदि खर्च कर दोगे तो डिडक्शन (माइनस) हो सकेगा न? पुण्य तो इकट्ठा हो ही जाता है। लेकिन डिडक्शन करने का तरीका तो जानना चाहिए न?

अतः लोग जो करते हैं, ठीक करते हैं। उन्हें तरीका चाहिए। उन्हें कहाँ दर्शन करने हैं? वे जहाँ दर्शन करने जाएँ न, वहाँ उन्हें शर्म नहीं आए, ऐसा चाहते हैं। जीवित लोगों से उन्हें शर्म आती है जबकि आपके कहने से मूर्ति के सामने नाचेंगे भी। अकेला ही नाचेगा-कूदेगा! लेकिन जीवित लोगों के सामने उसे शर्म आती है। ये जीवित नहीं हैं और जीवित लोगों के पास कुछ नहीं कर पाते। जबकि यदि जीवित के सामने करे तो उसका कल्याण हो जाएगा। परम कल्याण हो जाएगा। आत्यंतिक कल्याण हो जाएगा। लेकिन ऐसी शक्ति नहीं होती न? ऐसे पुण्य नहीं होते!

भगवान के पास देते हैं न, वह सब निष्काम नहीं, सकाम है।

‘हे भगवान, बेटे के वहाँ एक बेटा हो! मेरा बेटा पास हो जाए। घर के वे बुजुर्ग हैं न, उन्हें पक्षाघात हुआ है, वह मिट जाए’ उसके लिए दो सौ एक रुपये चढ़ाता है। अब यहाँ तो कौन रखे! क्या हमारा ऐसा कोई कारखाना है? और यहाँ लेगा भी कौन जो रखें?

### दान किसे दे सकते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** यहाँ अमरीका में कोई गरीब नहीं हैं इसलिए हम किसी को दान नहीं दे सकते। इसलिए हमें पुण्य पाने का चान्स कम मिलेगा न?

**दादाश्री :** आप गरीब को पैसे देते हो न, उसकी यदि जाँच करो न, तो उनके पास पौने लाख रुपये पड़े होते हैं। क्योंकि वे लोग गरीबों के नाम पर पैसे इकट्ठे करते हैं! पूरा व्यापार ही चल रहा है। दान तो कहाँ देना है? जो लोग माँगते नहीं हैं और भीतर ही भीतर दुःखी रहते हैं और दबकर रहते हैं, वे जो कॉमन लोग हैं, वहाँ पर देना है। उन लोगों को बहुत मुश्किलें हैं, उस मध्यम वर्ग को!

### लक्ष्मी दी और तख्ती ली

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा नहीं दादा, कुछ लोग बिना समझे देते हैं तो उसका कोई अर्थ ही नहीं है।

**दादाश्री :** नहीं, बिना समझे नहीं देते। वे तो बहुत पक्के होते हैं, वे तो खुद के हित के लिए ही करते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** धर्म को समझे बिना, नाम के लिए देते हैं, तख्ती लगाने के लिए देते हैं।

**दादाश्री :** वह नाम तो, नाम के लिए तो अभी ऐसा हो गया है! पहले नाम के लिए नहीं था। ये तो अभी, बेचने लगे हैं नाम, इस कलियुग के कारण। बाकी, पहले नाम-वाम था ही नहीं। वे देते ही रहते थे निरंतर इसलिए भगवान उन्हें क्या कहते थे? श्रेष्ठी कहते थे, और अब वे सेठ कहलाते हैं।

## नामी की तो अर्थी

**प्रश्नकर्ता :** दिया, वह भी अहंकार से दिया। तख्ती लगवाकर दिया। हम यदि तख्ती न लगाएँ तो बाद वालों को कैसे पता चलेगा कि अपने बाप-दादा ने ऐसा किया था! तख्ती पढ़ेंगे तभी पता चलेगा न! कि यह धर्मशाला मैंने बनवाई।

**दादाश्री :** क्या नाम है आपका?

**प्रश्नकर्ता :** चंदूलाल।

**दादाश्री :** ऐसा है न, फिर तो आप चंदूभाई बनकर ही रहोगे। चंदूभाई तो सिर्फ नाम है। उसमें आपको क्या? यहाँ से अर्थी उठेगी न, तब सब खत्म हो जाएगा। वह ज़ब्त हो गया, वह किस काम का? समझ में आया न? इसलिए नाम की कीमत मत आँकना। नाम तो, यहाँ से जब अर्थी निकलती है, तब वहाँ ज़ब्त हो जाता है। यहाँ अर्थी का रिवाज़ है न? यह तो जो नाम पर है वह तो सारा ज़बती में चला जाएगा जबकि आप हो अनामी। अनामी की अर्थी नहीं होती। नामी हुए इसलिए अर्थी निकलती है। यहाँ मैं आपको ऐसा अनामी बना दूँगा कि फिर अर्थी नहीं निकलेगी। नाम की निकलेगी लेकिन आपकी नहीं निकलेगी।

## क्यों नहीं टिकती लक्ष्मी?

**प्रश्नकर्ता :** मैं हर महीने दस हजार रुपये कमाता हूँ, लेकिन मेरे पास लक्ष्मी जी क्यों नहीं टिकती?

**दादाश्री :** 1942 के बाद की लक्ष्मी टिकती नहीं है। यह लक्ष्मी जो है वह पाप की लक्ष्मी है इसलिए नहीं टिकती। अब से चार-पाँच साल बाद वाली लक्ष्मी टिकेगी। हम 'ज्ञानी' हैं फिर भी लक्ष्मी आती है लेकिन टिकती नहीं है। यह तो इन्कम टैक्स भर सकें उतनी लक्ष्मी आ जाए तो बहुत हो गया।

**प्रश्नकर्ता :** लक्ष्मी टिकती नहीं है तो क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** लक्ष्मी तो टिके ऐसी है ही नहीं लेकिन उनका रास्ता बदल देना चाहिए। उस रास्ते जाती है तो उसका प्रवाह बदलकर धर्म के रास्ते मोड़ देना चाहिए। वह जितनी सुमार्ग में गई उतनी भली। भगवान के आने के बाद लक्ष्मी जी टिकती हैं, उनके बिना लक्ष्मी जी टिकेंगी कैसे? जहाँ भगवान हों वहाँ क्लेश नहीं होता। यदि सिर्फ लक्ष्मी जी हों तो क्लेश और झगड़े होते हैं। लोग ढेर सारी लक्ष्मी कमाते हैं लेकिन वह बेकार जाती है। किसी पुण्यशाली के हाथों लक्ष्मी सही मार्ग में खर्च होती है। यदि लक्ष्मी सही मार्ग में खर्च हो न, तो वह बहुत भारी पुण्य कहा जाएगा।

1942 के बाद की लक्ष्मी में कोई सत्व ही नहीं है। अभी तो लक्ष्मी यथार्थ जगह पर खर्च नहीं होती। यदि यथार्थ जगह पर खर्च हो तो बहुत अच्छा कहा जाएगा।

यदि पैसे गलत रास्ते पर जाएँ तो कंट्रोल करना चाहिए और यदि पैसे अच्छे रास्ते खर्च हों तो डीकंट्रोल कर देना चाहिए।

### मन बिगड़े, इसलिए...

**प्रश्नकर्ता :** मैं कुछ समय तक अपनी कमाई में से तीस प्रतिशत धर्म में देता था। लेकिन वह सब बंद हो गया है। जो भी देता था वह अब नहीं दे पाता हूँ।

**दादाश्री :** वह तो यदि आपको करना है तो दो साल बाद भी आएगा ही! वहाँ कोई कमी नहीं है। वहाँ तो ढेर सारा है। यदि आपके मन बिगड़े हुए हों तो क्या हो सकता है?

### ऐसे पड़ते हैं अंतराय

ये भाई किसी व्यक्ति को दान दे रहे हों तब कोई बुद्धिशाली व्यक्ति कहे कि, 'अरे, इसे कहाँ दे रहे हो?' तब ये भाई कहेंगे, 'लेकिन यह गरीब है, देने दो न' ऐसा करके वह दान देता है और वह गरीब ले लेता है। लेकिन वह बुद्धिशाली बोला, उससे उसने अंतराय डाला।



फिर उसे दुःख में भी कोई दाता नहीं मिलेगा। और खुद जहाँ पर अंतराय डालता है, उसी जगह पर ये अंतराय काम करते हैं। कोई विषय में अंतराय डाले तो उसे विषय का अंतराय आता है। खाने में अंतराय डाले हो तो, यहाँ सब जगह होटल हैं, ढाबे हैं लेकिन वह जब जाए तब सारे ढाबे बंद होते हैं या फिर भोजन खत्म हो चुका होता है।

**प्रश्नकर्ता :** वाणी से अंतराय नहीं पड़े हों लेकिन मन से अंतराय पड़ गए हों तो ?

**दादाश्री :** मन से डाले हुए अंतराय ज्यादा असर डालते हैं। उसका असर तो अगले जन्म में होता है जबकि वाणी से डाला हुआ इस जन्म में असर डालता है। वाणी निकली कि नकद हुआ। कैश हुआ, तो फल भी कैश आता है। जबकि मन से सोचा वह तो अगले जन्म में रूपक में आएगा।

### और ऐसे अंतराय खत्म होते हैं

**प्रश्नकर्ता :** यानी इतनी जागृति रखनी चाहिए कि ज़रा सा भी उल्टा-सीधा विचार न आए।

**दादाश्री :** ऐसा हो नहीं सकता। वैसे विचार तो आए बिना रहेंगे नहीं। हम उन्हें मिटा दें, वही हमारा काम। हम ऐसा तय करें कि वैसे विचार नहीं हो, वह निश्चय कहलाता है। लेकिन विचार ही न आए, ऐसा तो वहाँ नहीं चलेगा। विचार तो आएँगे लेकिन बंध पड़ने से पहले ही उन्हें मिटा देना चाहिए। आपको विचार आया कि 'इसे दान नहीं देना चाहिए' लेकिन आपको ज्ञान दिया है इसलिए जागृति रहेगी कि हमने कहाँ बीच में अंतराय डाला ? तो फिर आप उसे मिटा देते हो। पोस्ट में चिट्ठी डालने से पहले मिटा दो, तो कोई हर्ज नहीं है लेकिन ज्ञान के बिना उसे कोई मिटाता नहीं है न! अज्ञानी तो मिटाएगा ही नहीं न ? बल्कि हम यदि उसे कहें कि 'ऐसा उल्टा विचार क्यों किया ?' तब वह कहेगा कि 'ऐसा तो करना ही चाहिए था उसमें आपको समझ में नहीं आएगा।' और वह इस तरह डबल करता है व और भी ज्यादा

कर देता है। अहंकार पागलपन ही करता है, नुकसान करता है। उसी को अहंकार कहते हैं। खुद अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारता रहे, उसे अहंकार कहते हैं।

अब तो हम पश्चाताप से सब मिटा सकते हैं। और मन में निश्चय करें कि ऐसा नहीं बोलना चाहिए। और जो बोला, 'उसके लिए क्षमा माँगता हूँ' तो मिट जाएगा। क्योंकि वह चिट्ठी के पोस्ट में जाने से पहले ही हम बदल दें कि पहले हमने मन में विचार किया था कि 'दान नहीं देना चाहिए' वह गलत है। लेकिन अब हम सोचते हैं कि 'यह दान देना अच्छा है' ताकि पहले का मिट जाए।

### उसका प्रवाह बदलो

ज़रूरत पड़ने पर धर्म ही आपको मदद करता है, इसलिए धर्म के प्रवाह में लक्ष्मी जी को जाने देना। सिर्फ सुषमकाल की लक्ष्मी मोह करने योग्य थी। वे लक्ष्मी जी तो आई नहीं! अब इन सेटों को हार्ट फेल और ब्लड प्रेशर कौन करवाता है? इस काल की लक्ष्मी ही करवाती है।

पैसों का स्वभाव कैसा है? चंचल है। इसलिए आते हैं लेकिन एक दिन वापस चले जाते हैं इसलिए पैसे लोगों के हित के लिए खर्च करने चाहिए। जब आपका खराब उदय आया हो तब लोगों को जो दिया होगा, वही आपको हेल्प करेगा। इसलिए पहले से ही समझ जाना चाहिए। पैसों का सदुपयोग तो करना ही चाहिए न?

चारित्र से प्योर हुआ कि सारा जगत् जीत लिया। फिर भले ही खाना हो तो खाए, पीये, और अधिक हो तो खिला दे। और क्या करना है? क्या साथ ले जा सकते हैं? जो धन औरों के लिए खर्च किया, उतना ही धन अपना। उतनी अगले जन्म के लिए पूंजी। अतः यदि किसी को अगले जन्म के लिए पूंजी जमा करनी हो तो पैसे औरों के लिए खर्च करो। फिर अन्य जीव, वह चाहे कोई भी जीव हो। फिर चाहे वह कौए हों। यदि वह थोड़ा सा भी चख जाए, फिर भी

वह आपकी पूंजी होगी! लेकिन आपने और आपके बच्चों ने जो खाया, वह आपकी बचत नहीं है। वह सब गटर में गया। तब गटर में जाते हुए रोक नहीं सकते, वह तो अनिवार्य है, तो क्या कोई उपाय है? लेकिन साथ ही समझना चाहिए कि यदि औरों के लिए उपयोग नहीं किया तो वह सब गटर में जाता है।

लोगों को नहीं खिलाते लेकिन कौओं को खिलाओ, चिड़ियों को खिलाओ, इन सब को खिलाओ, तब भी वह औरों के लिए खर्च किया, ऐसा कहा जाएगा। मनुष्यों की थाली की कीमत तो बहुत बढ़ गई है न! चिड़ियों की थाली की कीमत कोई खास नहीं है न? तब फिर जमा भी उतनी कम ही होगी न?

### बदले हुए प्रवाह की दिशाएँ

कितने प्रकार के दान हैं क्या आप जानते हैं?

चार प्रकार के दान हैं।

एक-आहारदान, दूसरा-औषधदान, तीसरा-ज्ञानदान और चौथा-अभयदान।

### प्रथम आहारदान

पहले प्रकार का दान है, अन्नदान। इस दान के लिए तो ऐसा कहा गया है कि भाई, अपने घर कोई व्यक्ति आए और कहे, 'मुझे कुछ दीजिए, मैं भूखा हूँ', तब कहना, 'बैठ जा यहाँ खाना खाने। मैं तुझे परोसता हूँ।' वह है, आहारदान। तब अक्ल वाले क्या कहते हैं कि, 'इस हट्टे-कट्टे को खिला रहे हो तो फिर शाम को किस प्रकार से खिलाओगे?' जबकि भगवान कहते हैं, तुम ऐसी होशियारी मत लगाना। इस भाई ने खिलाया तो आज का दिन तो वह जीएगा! कल फिर उसे जीने के लिए कोई और आ मिलेगा। समझ में आया न! फिर कल का विचार हमें नहीं करना है। आपको अन्य कोई झंझट नहीं करनी है कि कल वह क्या करेगा? कल तो उसे फिर मिल

जाएगा। आपको उसके लिए चिंता नहीं करनी है कि, 'हमेशा दे पाएँगे या नहीं?' आपके यहाँ आया इसलिए आप दो। जो कुछ भी दे पाओ, वह। आज तो जीवित रहा। बस! फिर कल उसका दूसरा कोई उदय होगा। आपको फिक्र करने की ज़रूरत नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** अन्नदान श्रेष्ठ कहलाता है ?

**दादाश्री :** अन्नदान अच्छा माना जाता है लेकिन अन्नदान कितना दे? हमेशा के लिए तो नहीं देते न लोग? एक पहर भी खिला दें तो बहुत हो गया। दूसरे पहर फिर आ मिलेगा। लेकिन आज का दिन, एक पहर तो जीवित रहा न!

### औषधदान

और दूसरा, औषधदान। वह आहारदान से भी उत्तम माना जाता है। औषधदान से क्या होता है? साधारण आर्थिक स्थिति वाला कोई व्यक्ति बीमार पड़ा हो और वह अस्पताल में जाए, तब वहाँ कोई कहे कि, 'अरे, डॉक्टर ने तो कहा है लेकिन मेरे पास दवाई लाने के लिए पचास रुपये नहीं है, दवाई कैसे लाऊँ?' तब हमें कहना है कि 'ये पचास रुपये दवाई के और दस रुपये अन्य चीज़ के।' या फिर कहीं से दवाई लाकर हम उसे मुफ्त में दे दें। हम पैसे खर्च करके लाएँ और उसे फ्री ऑफ कॉस्ट दें। जब वह दवाई लेगा तो वह बेचारा कोई छः साल, दस साल जीवित रहेगा। अन्नदान से ज़्यादा औषधदान से अधिक फायदा है। आपको समझ में आया न? किस में फायदा ज़्यादा है? अन्नदान अच्छा या औषधदान?

**प्रश्नकर्ता :** औषधदान।

**दादाश्री :** औषधदान को आहारदान से ज़्यादा कीमती माना है क्योंकि वह दो महीने भी जीवित रख सकता है। व्यक्ति को थोड़े ज़्यादा समय तक जीवित रखता है। वेदना से थोड़ी-बहुत राहत दिलाता है।

फिर उससे आगे कहा गया है, ज्ञानदान।

## उत्तम है ज्ञानदान

ज्ञानदान में पुस्तकें छपवानी, लोगों को सही रास्ते पर ले जाएँ और लोगों का कल्याण हो, ऐसी पुस्तकें छपवाना आदि, वह ज्ञानदान है। ज्ञानदान दें, तो अच्छी गतियों में, उच्च गतियों में जाता है या फिर मोक्ष में भी जा सकता है।

इसलिए ज्ञानदान को भगवान ने मुख्य चीज कहा है और जहाँ पैसों की जरूरत नहीं है, वहाँ अभयदान की बात कही है। जहाँ पैसों का लेन-देन है, वहाँ ज्ञानदान के लिए कहा है और साधारण स्थिति, नरम स्थिति के लोगों के लिए औषधदान और आहारदान, इन दोनों के लिए कहा है।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन पैसे ज़्यादा हों तो उसका दान तो करेंगे न ?

**दादाश्री :** दान तो उत्तम है। जहाँ दुःख हों वहाँ दुःख कम करो और दूसरा, सन्मार्ग में खर्च करना। लोग सन्मार्ग पर जाएँ, ऐसा ज्ञानदान करो। इस दुनिया में ज्ञानदान उत्तम है! आपको एक वाक्य समझने मिले तो आपको कितना अधिक लाभ होता है! अब यदि वह पुस्तक लोगों के हाथ में जाए तो कितना अधिक लाभ होगा!

**प्रश्नकर्ता :** अब ठीक से समझ में आया।

**दादाश्री :** हाँ! यानी जिनके पास ज़्यादा पैसे हों, उन्हें मुख्य रूप से ज्ञानदान करना चाहिए।

## सर्वोत्तम है अभयदान

और चौथा, अभयदान। अभयदान तो, किसी भी जीवमात्र को दुःख न हो ऐसा वर्तन रखना, वह है अभयदान।

**प्रश्नकर्ता :** अभयदान के बारे में थोड़ा विस्तार से समझाइए।

**दादाश्री :** अभयदान यानी, हम से किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी दुःख न हो। इसका उदहारण देता हूँ। कम उम्र में, बाईस-पच्चीस

साल की उम्र में मैं सिनेमा देखने जाता था। जब वापस लौटता था तब रात के बारह-साढ़े बारह बजे होते थे। लौटता था, तब हम जूतों के नीचे जो नाल लगवाते थे, उससे आवाज़ होती थी। रात को ज़्यादा ही आवाज़ आती थी। रात को बेचारे कुत्ते सो रहे होते, वे आराम से ऐसे सो रहे होते थे। वे यों करके कान खड़े करते थे। तब हम समझ जाते थे कि चौंक गया बेचारा हमारे कारण! ऐसे तो हम कैसे पैदा हुए इस मोहल्ले में कि कुत्ते हम से चौंक जाते हैं? इसलिए पहले से ही, दूर से ही जूते निकालकर हाथ में पकड़कर आता था। चुपचाप घुस जाता था लेकिन उसे चौंकने नहीं देता था। कम उम्र में हमारा यह प्रयोग था। हमारे कारण चौंकते थे न!

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, उसकी नींद में भी खलल पहुँची न?

**दादाश्री :** हाँ, फिर यदि वह चौंके न, तो वह अपना स्वभाव न भी छोड़े और फिर कभी भौंक भी दे, क्योंकि स्वभाव है। इसलिए उसके बजाय यदि सोने ही दें तो क्या बुरा? वे मोहल्ले वालों पर नहीं भौंकते।

अतः अभयदान। किसी जीव को किंचित्मात्र भी दुःख न हो, पहले ऐसा भाव रखना चाहिए, फिर बाद में वह प्रयोग में आएगा। भाव किए होंगे तो प्रयोग में आएगा लेकिन यदि भाव ही नहीं किए होंगे तो? इसलिए भगवान ने इसे बड़ा दान कहा है। इसमें पैसों की कोई आवश्यकता नहीं है। सर्वोत्तम दान यही है लेकिन ऐसा मनुष्यों में सामर्थ्य नहीं है। लक्ष्मी वाले हों फिर भी ऐसा नहीं कर सकते। इसलिए लक्ष्मी वालों को लक्ष्मी से पूरा करना चाहिए।

अतः भगवान ने कहा है कि इन चार प्रकार के आलावा अन्य किसी प्रकार का दान नहीं है। अन्य सब जिस दान की बात करते हैं, वे सारी कल्पनाएँ हैं। ये चार प्रकार के ही दान हैं। आहारदान, औषधदान, ज्ञानदान और अभयदान। जहाँ तक हो सके मन में अभयदान की भावना करनी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन अभयदान में से क्या ये तीनों प्रकार के दान निकल आते हैं, इस भाव में से?

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा है कि अभयदान तो बड़ा व्यक्ति ही कर सकता है। जिसके पास लक्ष्मी नहीं होगी, वह साधारण व्यक्ति भी यह कर सकता है। बड़े पुरुषों के पास लक्ष्मी हो या न भी हो, इसलिए लक्ष्मी से उनका व्यवहार नहीं है, लेकिन अभयदान तो अवश्य ही कर सकते हैं। पहले लक्ष्मीपति अभयदान करते थे लेकिन अब उनसे यह नहीं हो सकता, वे कमजोर हैं। लक्ष्मी ही कमाकर लाए हैं न, वह भी लोगों को डरा धमकाकर!

**प्रश्नकर्ता :** भयदान किया है?

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा नहीं कह सकते हैं। ऐसा करके भी ज्ञानदान में खर्च करते हैं न! कहीं से भी 'चाहे कुछ भी करके आया हो लेकिन यहाँ पर ज्ञानदान में खर्च करता है, वह उत्तम है', ऐसा कहा है भगवान ने।

अब वह ज्ञान कैसा होना चाहिए? लोगों के लिए हितकारी हो, ऐसा ज्ञान होना चाहिए। हाँ, लुटेरों के बारे में बातें सुनने जैसी नहीं हैं। उनसे तो स्लिप होते जाते हैं। उन्हें पढ़ने से आनंद तो आता है, लेकिन नीचे अधोगति में जाता रहता है।

### ज्ञानी की दृष्टि से...

**प्रश्नकर्ता :** आपकी दृष्टि से विद्यादान व धनदान में से कौन सा दान श्रेष्ठ है? कई बार इसमें द्विधा उत्पन्न होती है।

**दादाश्री :** विद्यादान उत्तम माना जाता है। जिनके पास लक्ष्मी हो उन्हें विद्यादान, ज्ञानदान में लक्ष्मी देनी चाहिए। ज्ञानदान अर्थात् पुस्तकें छपवाना या और कुछ करना। ज्ञान का प्रचार किस तरह से हो? उसी के लिए पैसे खर्च करने चाहिए। लक्ष्मी हो उन्हें, और लक्ष्मी न हो उन्हें भी अभयदान का उपयोग करना चाहिए। किसी को भय

न लगे, उस तरह हमें सचेत होकर चलना चाहिए। किसी को दुःख न हो, भय न लगे, वह अभयदान कहलाता है।

बाकी, अन्नदान और औषधदान, वह तो अपने यहाँ स्त्रियाँ व बच्चे सभी सहज रूप से करते रहते हैं। वह कोई बहुत कीमती दान नहीं हैं, फिर भी करना चाहिए। हमें कोई ऐसा मिल जाए, हमारे यहाँ दुःखी इंसान आए, तो जो तैयार हो तुरंत उसे वह दे देना चाहिए।

दान के बारे में, लोग तो नाम कमाने के लिए दान करते हैं वह उचित नहीं है। नाम लिखवा कर तो ये सारे स्मारक बनवाते हैं न। स्मारक किसी के टिके नहीं हैं। जबकि यहाँ दिया हुआ साथ में कब जाता है? विद्या फैलाएँ, ज्ञान फैलाएँ, ऐसा कुछ करें तो वह हमारे साथ आएगा। या अभयदान, किसी को दुःख नहीं देने की दृष्टि। आज से ही तय कर लो कि, 'मुझे इस जगत् में किसी को ज़रा सा भी दुःख नहीं देना है। मन-वचन-काया से किंचित्मात्र भी कष्ट नहीं देना है।' ऐसा तय करोगे न, तो भीतर वैसा ही चलेगा। आप जैसा तय करोगे भीतर में वैसा ही चलेगा। जैसा आपका निश्चय होगा वैसा चलेगा।

### ज्ञानी ही देते हैं 'यह' दान

अतः श्रेष्ठ दान अभयदान, दूसरे नंबर पर ज्ञानदान। अभयदान की तो भगवान ने भी प्रशंसा की है। पहला, आपसे कोई डरे नहीं, वैसा अभयदान दो।

दूसरा, ज्ञानदान, तीसरा, औषधदान और चौथा आहारदान।

ज्ञानदान से तो श्रेष्ठ है अभयदान! लेकिन लोग अभयदान दे नहीं सकते न? वह तो सिर्फ ज्ञानी ही अभयदान देते हैं। ज्ञानी और ज्ञानियों का परिवार ही अभयदान देता है। ज्ञानी के फॉलोअर्स होते हैं न, वे अभयदान देते हैं। किसी को भय न लगे, उस तरह से रहते हैं। सामने वाला भय रहित रहे इस तरह से वर्तन करते हैं। कुत्ता भी न चौंके, उस तरह का उनका वर्तन होता है क्योंकि उसे दुःख दिया कि खुद



के भीतर पहुँचा। सामने वाले को दुःख दिया कि खुद के भीतर पहुँचा। इसलिए हम से किसी जीव को किंचित्मात्र भी भय न लगे इस तरह रहना चाहिए।

### फिर ज़िम्मेदारी 'हमारी'

दान यानी अन्य किसी भी जीव को सुख, चाहे मनुष्य हो या अन्य प्राणी हो, उन्हें सुख देना, उसे कहते हैं दान। और सभी को सुख दिया तो उसके 'रिएक्शन' में हमें सुख ही मिलेगा। सुख दोगे तो तुरंत ही घर बैठे आपको सुख मिलेगा! सुबह-सुबह तय करना चाहिए कि, 'इन मन-वचन-काया से इस जगत् के किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी दुःख न हो, न हो, न हो' और ऐसा भाव तय करके निकलना चाहिए। फिर बाकी सारी ज़िम्मेदारी मैं ले लेता हूँ।

अब हमें जो भी उल्टे विचार आएँ उन्हें मिटा देना तथा जगत् का कल्याण हो, वही भावना रखना। और 'किसी को दुःख न हो', ऐसा सुबह-सुबह नियम से पाँच बार बोलना और तभी घर से निकलना। फिर किसी को हम से जान-बूझकर या अनजाने में दुःख पहुँचे, उसकी जोखिमदारी अपनी नहीं रहेगी। जान-बूझकर हुआ हो तो उसका तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। अनजाने में हुए, वे तो अनजाने (के खाते) में चले जाएँगे, हमें पता भी न चले, उस प्रकार से। जिस तरह अगर दो साल के बच्चे की माँ मर जाए तो वह बच्चा कितना रोएगा? उसी प्रकार दुःख अनजाने में भुगत लिया जाएगा।

### 'लक्ष्मी' तीनों में आती है

**प्रश्नकर्ता** : तो लक्ष्मीदान का स्थान ही नहीं है ?

**दादाश्री** : लक्ष्मीदान तो ज्ञानदान में आ गया। अगर यदि आप पुस्तकें छपवाओ न, तो उसमें लक्ष्मी आ ही गई। वह ज्ञानदान।

**प्रश्नकर्ता** : लक्ष्मी द्वारा ही सब होता है न? अन्नदान भी लक्ष्मी द्वारा ही किया जाता है न?

**दादाश्री :** औषधि देनी हो न, तब भी हम सौ रुपयों की औषधि लाकर उसे देंगे तब न? इसलिए लक्ष्मी तो हर चीज़ में खर्च होती ही है। लेकिन लक्ष्मी का इस प्रकार से दान हो, वह सब से उत्तम।

### वह किस प्रकार दे सकते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** यानी दान में, कैश (नकद) देने का वर्णन नहीं किया गया है।

**दादाश्री :** हाँ, कैश (नकद) देनी भी नहीं चाहिए। दो इस तरह से कि ज्ञानदान, यानी पुस्तकें छपवाकर दो या खाना तैयार करके दो। कैश (नकद) देने के बारे में कहीं भी नहीं कहा गया है। अन्य सब नाम कमाने के लिए देते हैं। अन्य कहीं तो जो कैश (नकद) देते हैं वह तो नाम कमाने के लिए देते हैं। कीर्ति के लिए, उसे कीर्तिदान कहते हैं।

### ये दान तो कैसे

गाय मरने वाली हो तब उसे दान में दे आते हैं और क्या कहते हैं? 'मैंने गाय का दान किया!' अरे, इसे किस प्रकार का दान कहेंगे? यह तो निर्दयदान कहलाएगा!

कुछ तो हकीकत में होना चाहिए या नहीं? अरे, मरने वाली गाय देने जाते हो? कैसी गाय देनी चाहिए? न्याय क्या कहता है?

यह सब तो मिथ्यादान कहलाता है। सम्यक्दान बताऊँ, कि किसे कहते हैं? आहारदान, किसी को एक बार भी भोजन में हेल्प करे न, वह सम्यक्दान कहलाता है।

अब इसमें भी ये लोग बचा-खुचा देते हैं या ताज़ा बनाकर देते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** बचा हुआ हो वही देते हैं। अपनी जान छुड़वाते हैं। बच जाए तो फिर अब क्या करें?

**दादाश्री :** तो उसका सदुपयोग करते हैं भाई! लेकिन यदि ताजा बनाकर दें तब मैं कहूँगा कि करेक्ट है। वीतरागों के वहाँ नियम होंगे न? कि गप्पबाज़ी चलेगी?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, नहीं, क्या गप्पबाज़ी हो सकती है?

**दादाश्री :** वीतरागों के वहाँ नहीं चलेगी अन्य जगह चलेगी।

### जो काम में आए वह पुस्तक काम की

**प्रश्नकर्ता :** धर्म की लाखों पुस्तकें छपती हैं, लेकिन कोई नहीं पढ़ता।

**दादाश्री :** वह ठीक है। आपकी यह बात सही है। कोई नहीं पढ़ता। सब पुस्तकें वैसे ही पड़ी रहती हैं। जो पढ़ी जाती हो वैसे ही पुस्तक हो तो काम की। क्या आपको समझ में आया? आपका कहना ठीक है। आजकल कोई पुस्तक नहीं पढ़ी जाती। सिर्फ धर्म की ही पुस्तकें छपवाते रहते हैं। वे महाराज क्या कहते हैं? मेरे नाम से छपवाओ। ऐसा कहकर वे महाराज अपना नाम डालते हैं, उनके दादागुरु का नाम डालते हैं। यानी हमारे दादा ऐसे थे, हमारे दादा के दादा और उनके दादा..., वहाँ तक पहुँच जाते हैं। लोगों को कीर्ति प्राप्त करनी है और उसके लिए धर्म की पुस्तकें छपवाते हैं। धर्म की पुस्तक ऐसी होनी चाहिए कि ज्ञान हमारे काम आए। ऐसी पुस्तक हो तो लोगों के काम आएगी। ऐसी पुस्तक छपाना काम का है, वर्ना ऐसे ही भटकते रहने का क्या मतलब? और वे सब कोई पढ़ता ही नहीं है। एक बार पढ़कर रख देते हैं। दोबारा कोई नहीं पढ़ता और एक बार भी कोई पूरी नहीं पढ़ता। लोगों के काम आए ऐसा कुछ छपवाया हो तो उनके पैसों का सदुपयोग होगा और यदि पुण्य होंगे तभी, अच्छे पैसे होंगे तभी छपवा सकते हैं। वर्ना छपवा नहीं सकते न! वह मेल नहीं बैठता न! पैसे तो आएँगे और जाएँगे। क्रेडिट कभी भी डेबिट हुए बगैर नहीं रहता। आपके वहाँ कौन सा नियम है? क्रेडिट ही रहता है या डेबिट भी होती है?

**प्रश्नकर्ता :** दोनों साइड हैं।

**दादाश्री :** यानी हमेशा क्रेडिट, डेबिट ही होता रहता है।

**प्रश्नकर्ता :** वही होना चाहिए।

**दादाश्री :** लेकिन उसके दो रास्ते हैं। डेबिट या तो सुमार्ग में जाता है या फिर गटर में जाता है। लेकिन दोनों में से एक रास्ते में ही जाएगा। पूरे मुंबई का धन गटर में ही जाता है। पूरा धन ही गटर में जाता है।

### मुंबई यानी पुण्यशालियों का मेला

**प्रश्नकर्ता :** सब से अधिक दान मुंबई में ही होते हैं। लाखों और करोड़ों रुपये दिए जाते हैं।

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन वे सारे दान तो कीर्तिदान हैं। उसमें कुछ अच्छी चीजें भी हैं। औषधदान होता है ऐसी बहुत सी अच्छी चीजें हैं। यानी कि मुंबई में और भी बहुत कुछ है।

**प्रश्नकर्ता :** उन सब को लाभ मिलता है या नहीं?

**दादाश्री :** बहुत लाभ मिलता है। बहुत लाभ मिलता है। वह लाभ तो छोड़ता नहीं है न उन्हें! लेकिन इस मुंबई में धन कितना सारा है? उसके कारण तो यहाँ कितने सारे अस्पताल हैं? मुंबई का धन ढेर सारा, समुद्र जितना धन है और वह समुद्र में ही जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** मुंबई में ही लक्ष्मी मिलती है, उसका क्या कारण है?

**दादाश्री :** मुंबई में ही लक्ष्मी मिलती है।

**प्रश्नकर्ता :** उसका क्या कारण है?

**दादाश्री :** नियम ही ऐसा है कि मुंबई में सर्वश्रेष्ठ चीजें खिंची चली आती हैं।

**प्रश्नकर्ता :** वह भूमि का गुण है?

**दादाश्री :** भूमि का ही तो! मुंबई में सब सर्वश्रेष्ठ चीजें खिंची चली आती हैं। मिर्च भी उच्च (किस्म की) और महापुरुष भी सारे मुंबई में ही होते हैं और निम्न से निम्न (कोटि के), नालायक लोग भी मुंबई में होते हैं। मुंबई में दोनों ही क्वालिटी होती हैं यानी अगर गाँव में खोजने जाओ तो नहीं मिलेंगे।

**प्रश्नकर्ता :** मुंबई में समदृष्टि वाले लोग हैं न?

**दादाश्री :** सभी पुण्यशालियों का मेला है यह। एक प्रकार का पुण्यशाली लोगों का मेला है। और सारे पुण्यशाली एक साथ खिंचे चले आते हैं।

### धन चला, गटर में

मुंबई के लोग सब निभा लेते हैं। वे वैसा कुछ नहीं करते। समझ में आया न? और उनके पाँव पर यदि किसी का जूता पड़ जाए न तो, प्लीज़-प्लीज़ करते हैं। थप्पड़ नहीं मारते, प्लीज़-प्लीज़ करते हैं। जबकि गाँवों में तो मारते हैं इसलिए ये मुंबई के तो डेवेलप्ड कहलाते हैं।

लोगों का धन गटर में ही जा रहा है न! सुमार्ग पर तो किसी पुण्यशाली का ही जाता है न! धन गटर में जाता है क्या?

**प्रश्नकर्ता :** सारा जा ही रहा है न!

**दादाश्री :** इन मुंबई की गटरों में तो बहुत धन, ढेर सारा धन चला गया है। निरा मोह का, मोह वाला बाज़ार है न! तेज़ी से धन चला जाता है। वह धन भी गलत है न। धन भी सही नहीं है। सही धन हो तो सुमार्ग में खर्च होता।

### स्वर्ण दान

**प्रश्नकर्ता :** अपने धर्म में वर्णन मिलता है कि पहले तो स्वर्ण दान देते थे, तो उसे लक्ष्मी ही कहेंगे न?

**दादाश्री :** हाँ, वह स्वर्ण दान, वह स्वर्ण दान जो होता था न, वह तो किसी खास प्रकार के लोगों को ही दिया जाता था। वह हर किसी को नहीं दिया जाता था। स्वर्ण दान तो कुछ खास श्रमण ब्राह्मणों को, उन सब को जिनकी बेटियों की शादी रुकी हुई हो। दूसरा, संसार चलाने के लिए भी वे सब को देते थे। अन्य किसी को स्वर्ण दान नहीं दिया जाता था। व्यवहार में रहे हुए हों, जो श्रमण हों उन्हीं को दिया जाना चाहिए। श्रमण, यानी जो किसी से माँग न पाते। उन दिनों बहुत अच्छे रास्ते पर धन खर्च होता था। अभी तो ठीक है, भगवान के मंदिर भी 'ऑन' (मूल कीमत से ज़्यादा में बेचना) के पैसों से बनवाए जाते हैं। इस युग का असर है न!

### श्रेष्ठी-शेट्टी-सेठ-शठ

अभी तो धन, दान देते हैं या ले लेते हैं! और दान होता है तो 'मीसा' का (तस्करी)। दानेश्वरी तो मन-वचन-काया के एकाकारी होते हैं।

ये तो, मन में कुछ और होता है, वाणी से कुछ और बोलते हैं, ऐसा कहीं अनुभव होता है या नहीं? मन में कुछ और वाणी में कुछ और, वर्तन में कुछ और! कुछ बड़े लोग तो हस्ताक्षर करने के बाद भी पलट जाते हैं। कहते हैं, 'मैंने हस्ताक्षर ही नहीं किए थे।' अब बताओ, वाणी की बात ही कहाँ रही? क्या ऐसा अनुभव नहीं हुआ है?

पुराने ज़माने में, उस समय दानेश्वरी होते थे। वैसे दानेश्वरी तो, मन-वचन-काया की एकता होगी, तब दानेश्वरी तैयार होते हैं। भगवान ने उन्हें 'श्रेष्ठी' कहा था। उस 'श्रेष्ठी' को अब मद्रास में 'शेट्टी' कहते हैं। अपभ्रंश होते-होते 'श्रेष्ठी' में से 'शेट्टी' हो गया है वहाँ पर। वह अपने यहाँ अपभ्रंश होते-होते 'सेठ' हो गया है।

एक मिल के सेठ के वहाँ मैं सेक्रेटरी से बात कर रहा था। मैंने पूछा, 'सेठ कब आने वाले हैं? क्या कहीं बाहर गए हैं?' उसने

कहा, 'चार-पाँच दिन लगेंगे।' फिर मुझसे कहता है, 'ज़रा मेरी बात सुनिए।' मैंने कहा, 'हाँ भाई!' तब वह कहने लगा, 'ऊपर से मात्रा निकाल देने लायक है।' मैंने कहा, 'अरे, ऐसा नहीं बोलना चाहिए, तू वेतन लेता है। जब तक उनसे वेतन लेता है तब तक ऐसा नहीं बोलना चाहिए।' मैंने उसे समझाया कि अभी तू वेतन लेता है तब तक ऐसा मत बोलना। यहाँ से अलग होने के बाद बोलना हो तो बोलना। सेठ चाहे कैसा हो लेकिन जब तक उनका नमक खाते हो तब तक सेठ बोलना चाहिए। वह मुझसे कहने लगा, 'साहब, ऊपर से 'मात्रा' निकाल देना।' मैंने कहा, 'मैं समझ गया हूँ, क्या मैं इन लोगों को नहीं पहचानता? मैं सब को पहचानता हूँ लेकिन बोलने में मर्यादा होनी चाहिए।' बाकी 'मात्रा' निकाल देंगे तो क्या बचेगा? बाहर पूंजी में?

**प्रश्नकर्ता :** 'शठ' रहा।

**दादाश्री :** मत बोलना, नहीं बोलना चाहिए!

ऐसी दशा हो गई है। कैसे जगदुशा जैसे सेठ हुआ करते थे! वे 'सेठ' कहलाते थे।

### मिथ्यात्वी के पक्ष में मिथ्यात्वी

**प्रश्नकर्ता :** महाभारत में कर्ण को दानेश्वरी कहा गया है। वह दानेश्वरी है या उसमें भी गड़बड़ है?

**दादाश्री :** वह दानेश्वरी है। इन सेठों जैसा। श्रेष्ठी थे न, उनके जैसा ही। सिर्फ कृष्ण भगवान का समकक्ष था, उतनी ही झंझट थी। इसलिए दुर्योधन के पक्ष में गया, इसलिए विरोधी कहलाया। पर दानेश्वरी होने में कोई हर्ज नहीं है लेकिन मोक्ष जाने में हर्ज था। दुर्योधन का पक्ष मिथ्यात्वी का पक्ष था। कम्प्लीट मिथ्यात्वी का जबकि वह समकित का पक्ष था। कृष्ण भगवान समकित के पक्ष में गए, पाँडवों के पक्ष में।

**प्रश्नकर्ता :** द्रोणाचार्य, भीष्मपितामह, वे सब जितने भी दुर्योधन के पक्ष में थे, क्या वे सब मिथ्यात्वी में आएँगे?

**दादाश्री :** यदि अच्छा इंसान, संत पुरुष भी मिथ्यात्वी के पक्ष में हो जाए न, तो वह भी मिथ्यात्वी हो जाता है। उसके घर का अनाज खाए, यदि एक ही दिन मिथ्यात्वी का अनाज खाए न, तो वह मिथ्यात्वी हो गया। यदि मिथ्यात्वी का शब्द घुस जाए न तो कब उलझन खड़ी कर देगा, वह कहा नहीं जा सकता।

### सुमार्ग में खर्च करो

पैसे तो कम भी हो जाते हैं और घड़ी भर में बढ़ भी जाते हैं। अच्छे काम के लिए राह नहीं देखनी चाहिए। अच्छे काम में खर्च करने चाहिए, वर्ना गटर में तो गया ही लोगों का धन। मुंबई में लोगों के करोड़ों रुपये गटर में गए। घर में खर्च किए और जो औरों के लिए खर्च नहीं किया, वह सब गटर में गया। तो अब पछता रहे हैं। मैं कहता हूँ कि गटर में गया, तब कहते हैं, 'हाँ, ऐसा ही हुआ है'। तो भाई, पहले से ही सचेत हो जाना था न? अब फिर से आए तब सचेत रहना। तब कहता है, 'हाँ, अब तो कमजोर नहीं बनूँगा, फिर से तो आएगा ही न'! धन तो कम-ज्यादा होता रहेगा। कभी दो साल खराब बीतेंगे तो फिर पाँच साल अच्छे रहेंगे, ऐसा चलता रहेगा लेकिन सुमार्ग में उपयोग किया वह तो काम आएगा न? उतना ही अपना, बाकी सब पराया।

'इतना कुछ कमाया लेकिन गया कहाँ? गटर में! क्या धर्म दान किया? तब कहता है कि 'उसके लिए तो पैसे मिलते ही नहीं हैं, इकट्ठे ही नहीं होते, तो दूँ कैसे?' तब धन गया कहाँ? यह तो कौन जोते और कौन खाए? जो कमाए, उसका धन नहीं है। जो खर्च करे, उसका धन। इसलिए जितने नए ओवरड्राफ्ट भेजे उतने आपके। नहीं भेजे तो आप जानो!

### वास्तविक दानी

लक्ष्मी तो, जो कभी खत्म न हो, उसे कहते हैं लक्ष्मी! खुले हाथों से धर्म दान करते रहें न, तब भी खत्म नहीं हो, उसे लक्ष्मी



कहते हैं। ये तो धर्म दान करते हैं, उसमें बारह महीनों में दो दिन देते हैं। उसे लक्ष्मी कहते ही नहीं हैं। एक दानी सेठ थे। अब, 'दानी' नाम कैसे पड़ा कि, उनके वहाँ सात पीढ़ियों से धन देते ही जाते थे। फावड़े से खोद कर (खुले हाथों से) ही देते थे। जो भी आता उसे, कभी कोई आए कि, 'मुझे बेटी की शादी करनी है', तो उसे दिए, कोई ब्राह्मण आए तो उसे दिए। किसी को दो हजार की जरूरत है तो उसे दिए। साधु-संतों के लिए जगह बनवाई थी। वहाँ साधु-संतों को भोजन करवाते। यानी दान तो ज़बरदस्त चलता था इसलिए 'दानी' कहलाए! हमने देखा है वह सब। हर किसी को देते ही रहते उतना ही धन भी बढ़ते जाता था।

धन का स्वभाव कैसा है? यदि कहीं अच्छी जगह पर दान में जाए तो बेहिसाब बढ़ता है। धन का ऐसा स्वभाव है और यदि जेब काटे तो घर में कुछ भी नहीं रहेगा। इन सारे व्यापारियों को इकट्ठा करके हम पूछें कि, 'भाई, आपका कैसे चल रहा है? बैंक में दो हजार तो होंगे न?' तब कहेंगे कि, 'साहब, बारह महीनों में लाख रुपये आए लेकिन हाथ में कुछ भी नहीं है!' इसलिए तो कहावत बनी है न कि 'चोर की माँ, कोठी में मुँह डालकर रोती है!' कोठी में कुछ हो ही नहीं तो रोएगी ही न!

लक्ष्मी का प्रवाह दान है और जो वास्तव में दान देने वाला होता है, वह कुदरती तौर से एक्सपर्ट ही होता है। व्यक्ति को देखते ही पहचान जाता है कि, यह भाई ज़रा वैसा लगता है। इसलिए कहता है कि, 'भाई, बेटी की शादी के लिए नकद पैसे नहीं मिलेंगे। तुम्हें यदि कपड़े-लत्ते चाहिए या और कुछ चाहिए तो ले जाना और कहेंगे कि, 'बेटी को यहाँ ले आ' और बेटी को कपड़े, जेवर सब देते हैं। सगे-संबंधियों के वहाँ मिठाई अपने घर से भिजवा देते हैं। इस तरह पूरा व्यवहार संभाल लेता है लेकिन समझ जाता है कि यह बेशर्म है। उसे नकद हाथ में देने जैसा नहीं है। यानी कि दान देने वाले भी बहुत एक्सपर्ट होते हैं।

## स्वर्ग क्या और मोक्ष क्या?

**प्रश्नकर्ता :** स्वर्ग और मोक्ष के बीच में क्या फर्क है?

**दादाश्री :** स्वर्ग तो, यहाँ से जो पुण्य करके जाते हैं न, पुण्य यानी अच्छे काम करे, शुभ काम करे, तो वे स्वर्ग में जाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** अच्छे काम यानी कैसे?

**दादाश्री :** अच्छे काम यानी लोगों को दान दे, किसी को दुःख न होने दे, किसी की मदद करे, ओब्लाइजिंग नेचर रखे। ऐसे कर्म नहीं करते हैं क्या लोग?

**प्रश्नकर्ता :** करते हैं।

**दादाश्री :** यानी, अच्छे काम करे तो स्वर्ग में जाता है और खराब काम करे तो नरक में जाता है और अच्छे-खराब कर्मों का मिक्सचर करे लेकिन खराब काम कम करे तो मनुष्य योनि में आता है। इस प्रकार किए हुए कर्मों का फल चार हिस्सों में मिलता है और काम करने वाला मोक्ष में नहीं जा सकता। मोक्ष के लिए तो, कर्ता भाव नहीं रहना चाहिए। ज्ञान देने पर कर्ता भाव टूटता है और कर्ता भाव टूटता है तब मोक्ष हो जाता है।

## वह धन पुण्य बाँधेगा

**प्रश्नकर्ता :** दो नंबर के रुपयों का दान दे तो क्या वह नहीं चलेगा?

**दादाश्री :** दो नंबर का दान नहीं चलेगा लेकिन फिर भी यदि कोई व्यक्ति भूखा मर रहा हो और दो नंबर का दान दे तो उसे खाने के लिए चलेगा न! दो नंबर का नियमों के अधीन दिक्कत आती है, दूसरी तरह से कोई दिक्कत नहीं है। वह धन होटल वाले को दे तो वह लेगा या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** लेगा।

**दादाश्री :** हाँ, व्यवहार शुरू हो ही जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** आज के जमाने में धर्म में दो नंबर का पैसा खर्च होता है, तो क्या उससे लोगों को पुण्योपार्जन होगा?

**दादाश्री :** अवश्य होगा न! जितना उसने त्याग किया न, उतना! खुद के पास आए हुए का त्याग किया न! लेकिन उसमें हेतु के अनुसार फिर वह पुण्य वैसा हो जाता है, हेतु वाला! पैसे दिए, तब एक ही चीज़ नहीं देखी जाती। पैसों का त्याग किया, वह निर्विवाद है। बाकी पैसे कहाँ से आए? हेतु क्या है? वह सब प्लस-माइनस होने के बाद जो बाकी रहेगा, वह उसका। उसका हेतु क्या था कि सरकार ले जाएगी, उसके बजाय इसमें डाल दो न!

### वह भी हिंसा ही है

**प्रश्नकर्ता :** व्यापारी मुनाफ़ाखोरी करे, कोई उद्योगपति या व्यापारी मेहनत के अनुपात, कम मेहनताना दे अथवा कोई बगैर मेहनत की कमाई हो तो क्या वह हिंसाखोरी कहलाएगी?

**दादाश्री :** वह सब हिंसाखोरी ही है।

**प्रश्नकर्ता :** अब वह मुफ्त की कमाई करके धन का उपयोग धर्म में करे तो वह किस प्रकार की हिंसा कहलाएगी?

**दादाश्री :** जितना धर्म के कार्य में खर्च किया, जितना त्याग कर दिया, दोष उतना ही कम लगेगा। जितना कमाया था, मान लो एक लाख कमाया था और उसमें से अस्सी हजार का अस्पताल बनवाया, तो उसे उतने रुपयों की जोखिमदारी नहीं रही। बीस हजार की ही जोखिमदारी रही। यानी कि वह अच्छा है, बुरा नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** लोग लक्ष्मी जमा करके रखते हैं, वह हिंसा कही जाएगी या नहीं?

**दादाश्री :** हिंसा ही कही जाएगी। जमा करना, वह हिंसा है। दूसरे लोगों के काम नहीं आती न!

## 1942 के बाद की लक्ष्मी

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन अब, वास्तव में जो मेहनत और ईमानदारी से कमाए हुए पैसे हों, ऐसी लक्ष्मी आई हो तो वहाँ धर्म रहता है या नहीं? या वहाँ भी नहीं?

**दादाश्री :** आजकल तो सच्ची ईमानदारी होती ही नहीं है। 1942 के बाद से किसी भी व्यक्ति के पास ईमानदारी वाली लक्ष्मी नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** हर महीने हम काम करते हैं, नौकरी करते हैं, उसका जो वेतन मिलाता है, वे ईमानदारी के पैसे नहीं कहलाएँगे?

**दादाश्री :** पैसा ही गलत है तो फिर! 1942 के बाद का पैसा गलत ही है। '42 के पहले सही था। पहले किसी भी नौकरी करने वाले के बचते ही नहीं थे जबकि अभी नौकरी करने वालों के बचते हैं। सच्चा पैसा बचता ही नहीं। मेरा क्या कहना है कि सच्चा पैसा बचता ही नहीं।

## निरपेक्ष लुटाओ

**प्रश्नकर्ता :** भले ही 'ऑन' के पैसे खर्च हों लेकिन धर्म की ध्वजा लग जाती है कि धर्म के नाम पर खर्च किए।

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन धर्म के नाम पर खर्च करे तो अच्छा है। वह 'ऑन' के नाम से करता है न, क्योंकि 'ऑन' ले तो वह कोई बड़ा गुनहगार नहीं है। 'ऑन' यानी क्या कि, सरकार का जो टैक्स है, वह लोगों को भारी पड़ जाता है कि, 'आप हमारी धारणा से अधिक लगा रहे हो', इसलिए लोग उसे छुपाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** कुछ पाने की अपेक्षा से जो दान करते हैं, उसकी भी शास्त्रों में मनाही नहीं है। उसकी निंदा नहीं की है।

**दादाश्री :** वह अपेक्षा न रखें तो उत्तम है। अपेक्षा रखने से वह 'दान निर्मूल हो गया, सत्वहीन हो गया', ऐसा कहा जाता है। मैं तो कहता हूँ कि पाँच ही रुपये दो, लेकिन बिना अपेक्षा के दो।

## वह है 'कैमोफ्लेज' के समान

**प्रश्नकर्ता :** जो दो नंबर के पैसे हैं, वे जहाँ भी जाते हैं वहाँ गड़बड़ होगी या नहीं?

**दादाश्री :** पूरी हेल्प नहीं करेगा। अपने यहाँ भी आते हैं लेकिन कितने? दस-पंद्रह प्रतिशत, ज्यादा नहीं आते।

**प्रश्नकर्ता :** धर्म में हेल्प नहीं करते, जहाँ जाए वहाँ उतनी हेल्प नहीं मिलती?

**दादाश्री :** हेल्प नहीं करते। वैसे दिखने में लगता है कि हेल्प कर रहे हैं लेकिन फिर खत्म होते देर नहीं लगती। वे सारे वॉर क्वालिटी के स्ट्रक्चर हैं। सारे वॉर क्वालिटी के स्ट्रक्चर! आपने देखे हैं न! वे सारे कैमोफ्लेज हैं। क्या कैमोफ्लेज से मन में खुश होना चाहिए?

## अहरन चोरी, सुई जितना दान

**प्रश्नकर्ता :** बहुत से लोग ऐसा कहते हैं कि दान करने से देवता बनते हैं। क्या वह सही है?

**दादाश्री :** ऐसे भी हैं कि जो दान देने पर भी नर्क में जाते हैं क्योंकि दान किसी के दबाव से देते हैं। ऐसा है न कि इस दूषमकाल में लोगों के पास दान करने योग्य लक्ष्मी ही नहीं होती। दूषमकाल में जो लक्ष्मी है वह तो अघोर कर्तव्य वाली लक्ष्मी है इसलिए उसका दान करने से तो बल्कि नुकसान होता है। फिर भी हम किसी दुःखी व्यक्ति को दें, दान करने के बजाय उसकी मुश्किलें दूर करने के लिए करें, वह अच्छा है। दान तो नाम कमाने के लिए करते हैं, उसका क्या मतलब है? भूखा हो, उसे खाना दो, कपड़े न हों तो कपड़ा दो। बाकी, इस काल में दान देने के लिए रुपये कहाँ से लाएँ? वहाँ सब से अच्छा तो दान इत्यादि देने की ज़रूरत नहीं है। अपने विचार सुधारो। दान देने के लिए धन कहाँ से लाएँगे? सच्चा धन ही नहीं आया न! और सच्चा धन सरप्लस रहता भी नहीं है। ये जो बड़े-बड़े दान देते

हैं न, वह तो बहीखाते के बहार का, ऊपर का जो धन आता है, वही है। फिर भी जो दान देते हैं उनके लिए गलत नहीं है क्योंकि गलत रास्ते से लिया लेकिन सुमार्ग में दिया, तब भी पाप से कुछ तो मुक्त हुआ! खेत में बीज बोया तो उगा और उतना तो फल मिला!

**प्रश्नकर्ता :** कविराज के पद में एक पंक्ति है न कि,

‘कर चोरी करने वाले सुई दान से छूटना चाहें’। - नवनीत

तो इसमें एक जगह पर कर चोरी की और अन्य जगह पर दान दिया, तो उसने उतना तो पाया न? ऐसा कह सकते हैं?

**दादाश्री :** नहीं, पाया है, ऐसा नहीं कह सकते हैं। वह तो नर्क में जाने की निशानी कही जाएगी, वह तो दानतचोर है। करचोरी करने वाले ने चोरी की और सुई जितना दान दिया, उसके बजाय दान न करे और सीधा रहे न, तो भी अच्छा है। ऐसा है न, छः महीने की जेल की सजा अच्छी, बीच में दो दिन बगीचे में ले जाएँ, उसका क्या अर्थ?

ये कवि क्या कहना चाहते हैं कि यह सब कालाबाजारी, करचोरी, आदि सब किया और फिर पचास हजार का दान देकर, खुद का नाम खराब न दिखे, खुद का नाम न बिगड़े इसलिए ये दान देते हैं। इसे सुई दान कहा जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** यानी आज वैसे सात्विक तो नहीं हैं न?

**दादाश्री :** संपूर्ण सात्विक की आशा तो रखी ही नहीं जा सकती न! लेकिन यह तो किसके लिए है कि जो बड़े लोग करोड़ों रुपये कमाते हैं और इस तरफ एक लाख रुपये दान में देते हैं, वह किसलिए? नाम खराब न हो इसलिए। इस काल में ही ऐसा सुई का दान चल रहा है। यह बहुत समझने जैसा है। अन्य लोग भी दान देते हैं, कुछ गृहस्थ होते हैं, साधारण स्थिति वाले होते हैं, वे लोग दान दें उसमें हर्ज नहीं है। ये तो सुई जितना दान देकर खुद का नाम नहीं बिगड़ने

देते। खुद का नाम ढकने के लिए कपड़े बदल लेते हैं! सिर्फ दिखावे के लिए ऐसे दान देते हैं!

### गांठ के गोपीचंदन

गांठ के गोपीचंदन खर्च करके, अपनी जेब के पैसे खर्च करके, गर्व महसूस करते हैं। 'गोपीचंदन' यानी घर के पैसे, जेब के पैसे। 'गांठ का गोपीचंदन' ऐसी अपने में कहावत है न? जब भी लोग कुछ पैसे खर्च करते हैं न, नाम कमाने के लिए, तब गांठ का गोपीचंदन खर्च करते हैं।

### तख्ती में डूब गया दान

आजकल पूरी दुनिया का धन गटर में जा रहा है। इन गटरों की पाइपें बड़ी कर दी गई हैं वह किसलिए? धन को जाने के लिए स्थान तो चाहिए न? कमाया हुआ सब खा-पीकर गटर में उड़लते रहते हैं। एक पैसा भी सुमार्ग पर नहीं जाता और जो पैसा खर्च करते हैं, कॉलेजों में दान दिया, फलाना दिया, वह सब इगोइज़म (अहंकार) है! बिना इगोइज़म वाले पैसे जाएँ तो अच्छा कहा जाएगा। बाकी, इससे तो अहंकार को पोषण मिलता रहता है और आराम से कीर्ति मिलती रहती है! लेकिन कीर्ति मिलने के बाद उसका फल आता है। फिर जब वह कीर्ति उल्टी होती है, तब क्या होता है? अपकीर्ति होती है। तब परेशानी ही परेशानी हो जाती है। इसके बजाय तो कीर्ति की आशा ही नहीं रखनी चाहिए। कीर्ति की आशा रखेंगे तो अपकीर्ति आएगी न? जिसे कीर्ति की आशा नहीं है, उसे अपकीर्ति आएगी ही क्यों?

कोई धर्म के लिए लाख रुपये दान देता है और तख्ती लगवाता है जबकि कोई व्यक्ति एक रुपया ही धर्म दान देता है लेकिन गुप्त रूप से देता है, तो यह गुप्त रूप से देने की बहुत कीमत है फिर भले ही एक ही रुपया दिया हो जबकि तख्ती लगवाई तब तो वह 'बैलेन्स शीट' पूरी हो गई। आपने मुझे सौ का नोट दिया और मैंने आपको छुट्टे दिए, उसमें मुझे कुछ लेना भी नहीं रहा और आपको कुछ देना

भी नहीं रहा! आपने धर्म दान देकर अपनी तख्ती लगवा ली, फिर लेने-देने को कुछ रहा नहीं न? क्योंकि जो धर्म दान दिया, उसके बदले में उन्होंने तख्ती लगवाकर ले लिया। और जिन्होंने एक ही रुपया गुप्त रूप से दिया होगा, उसने लिया नहीं इसलिए उनका बैलेन्स बाकी रहा।

हम मंदिरों में और सब जगह घूमे हैं। वहाँ कितनी ही जगहों पर पूरी की पूरी दीवारें तख्तियों, तख्तियों, तख्तियों से ही भरी होती हैं! उन तख्तियों की वैल्युएशन कितनी? यानी कीर्ति हेतु से! और जहाँ कीर्ति की ढेर सारी तख्तियाँ हों, वहाँ लोग देखते ही नहीं कि इसमें क्या पढ़ना? पूरे मंदिर में एक ही तख्ती हो तो पढ़ने की फुर्सत होगी लेकिन ये तो ढेर सारी, पूरी दीवारें ही तख्तियों वाली कर दी हों तो क्या हो सकता है? फिर भी लोग कहते हैं कि मेरी तख्ती लगवाना! लोगों को तख्तियाँ ही पसंद हैं न!

### मान के भिखारी को...

जहाँ भीख है, वहाँ भगवान होते ही नहीं। लक्ष्मी की भीख, मान की भीख होती है। मान यानी, 'मुझे मान देंगे और इन लोगों से इस प्रकार से (मान) मिलेगा', ऐसी इच्छा रखना, भीख ही है, वह तो।

कैसे पता चलेगा कि मान की भीख है? कई साधु भी कहते हैं कि हमें मान की भीख नहीं है। अच्छा! अभी अपमान करेंगे तो पता चलेगा कि वह मान की भीख थी या किसकी थी? अपमान से चिढ़ जाए तो समझ लेना कि मान चाहिए! और हम अपमान से नहीं चिढ़ते यानी मान नहीं चाहिए। इसका विश्वास हुआ न?

**प्रश्नकर्ता :** हुआ।

**दादाश्री :** मतलब कि हमें मान की भीख नहीं है। कीर्ति की भीख नहीं है, किसलिए कीर्ति? कीर्ति देह की होती है। क्या आत्मा की कीर्ति होती होगी? जिसकी अपकीर्ति होती है न, उसकी कीर्ति होती है। आत्मा की तो कीर्ति भी नहीं और अपकीर्ति भी नहीं।



## दान भी गुप्त रूप से

**प्रश्नकर्ता :** आत्मार्थी के लिए कीर्ति अवस्तु है न?

**दादाश्री :** कीर्ति तो बहुत नुकसानदायक चीज़ है। आत्मा के मार्ग पर कीर्ति तो उसकी बहुत फैलती है लेकिन उस कीर्ति में उसे इन्टरेस्ट नहीं होता। कीर्ति तो फैलेगी ही न! चमकदार हीरा हो तो उसे देखकर सब कहेंगे ही न कि, 'कितनी अच्छी लाईट आ रही है'। कहते हैं कि 'कितने सारे पहलू हैं' लेकिन उसे खुद को उसमें मज़ा नहीं आता। जबकि ये जो सांसारिक संबंधों की कीर्तियाँ हैं, वह कीर्ति का ही भिखारी है। कीर्ति की भीख है उसे इसलिए लाख रुपये हाईस्कूल में देता है, अस्पताल में देता है लेकिन उसे कीर्ति मिल जाए तो बहुत हो गया!

बाद में वे व्यवहार में कहते हैं कि दान गुप्त रखना। अब गुप्त तो कोई ही देता है। बाकी सब को तो कीर्ति की भूख है इसलिए देते हैं। तो लोग भी प्रशंसा करते हैं कि, 'भाई, ओहोहो, इन सेठ ने लाख रुपयों का दान दिया!' यानी उसे उसका फल यहीं पर मिल जाता है।

यानी देकर उसका फल यहीं पर ले लिया और जिसने गुप्त रखा उसने उसका फल अगले जन्म में लेने के लिए बाकी रखा। फल मिले बिना तो रहता ही नहीं है। आप लो या न लो लेकिन उसका फल तो आएगा ही।

खुद की इच्छानुसार दान देना चाहिए। यह सब तो ठीक है, व्यवहार है। कोई दबाव डाले कि आपको देने ही पड़ेंगे और फिर फूलों की माला पहनाए तो वह दे देता है।

दान गुप्त होना चाहिए। जैसे मारवाड़ी लोग भगवान के पास चुपचाप डाल आते हैं न! किसी को पता ही न चले तो उसका फल मिलता है।

## वाह-वाह की प्रीति

अरे, मैं तो अपना स्वभाव नाप कर देखता हूँ न! मैं एक बार

‘अगास’ जा रहा था। उस समय कोन्ट्राक्ट का काम था। अब हमें सौ रुपयों की कोई तंगी नहीं थी। 1942 और 1940, 1939 और 1935 में भी हमें सौ रुपयों की तंगी नहीं थी। उन दिनों पैसों की बहुत कीमत थी। पैसों की तंगी नहीं थी फिर भी जब मैं ‘अगास’ जाता था तब वहाँ रुपये (दान) देता था सौ का नोट निकाल कर कहता था, ‘लो, पच्चीस ले लो और पचहत्तर वापस दो’। अब पचहत्तर वापस नहीं लेते तो चलता लेकिन मन कंजूस और भिखारी, अतः पचहत्तर वापस लेता था। मन कंजूस था इसलिए।

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी, आप तब भी कितना सूक्ष्म देखते थे ?

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन मेरा कहना यह है कि यह स्वभाव, प्रकृति जाती नहीं है न! फिर मैंने जाँच की। वैसे तो लोग मुझे कहते थे कि ‘आप बहुत नोबल हैं’! मैंने कहा, ‘यह किस प्रकार का नोबल’? यहाँ पर कंजूसी करते हैं। फिर जाँच करने पर मुझे खुद को पता चला कि जहाँ मेरी वाह-वाही करें वहाँ लाखों रुपये खर्च कर देता हूँ वर्ना एक रुपया भी नहीं देता। वह स्वभाव सिर्फ कंजूस नहीं था लेकिन वाह-वाही न करें, वहाँ धर्म हो या जो भी हो लेकिन वहाँ नहीं दे पाता था और वाह-वाही की, कि सारी कमाई मिट्टी में मिला देते हैं। उधार लेकर भी करता था। अब वाह-वाही कितने दिन? तीन दिन। उसके बाद कुछ भी नहीं। वाह-वाह होती है, फिर बंद हो जाती है। तीन दिनों तक ज़रा वाह-वाह होती है।

और ये पक्के, वे (वणिक) बैठे हैं न, वे बहुत पक्के। वे वाह-वाही से धोखा नहीं खाते। वे तो, आगे के लिए जमा होता है या यहीं का यहीं रहता है? वह वाह-वाही वाला तो यहीं पर चुकता हो गया। मैंने उसका फल ले लिया, चख लिया जबकि ये तो वाह-वाही नहीं खोजते, वहाँ फल ढूँढते हैं, वह ओवरड्राफ्ट है। बहुत पक्के, विचारशील लोग हैं न! हम से अधिक विचारशील। हम क्षत्रिय लोग तो, एक झटका और दो टुकड़े! सारे तीर्थंकर भी क्षत्रिय थे। साधु खुद ही कहते हैं, हम तीर्थंकर नहीं बन सकते क्योंकि हम साधु बन जाएँ तो सबकुछ

त्याग करके एकाध 'गिन्नी' अपने पास रहने देते हैं अंदर! कभी यदि तकलीफ पड़ी तो? वह उनकी मूल ग्रंथि जबकि आप तुरंत दे देते हो। प्रॉमिस टु पे, यानी प्रॉमिस ही सबकुछ और कुछ आता ही नहीं है न! अंदर समझ ही नहीं है न! 'थिंकर' ही नहीं हैं लेकिन उन्हें जल्दी छुटकारा मिलता है।

**प्रश्नकर्ता :** जल्दी छुटकारा मिलता है।

**दादाश्री :** हाँ, वे लोग मोक्ष में जाते हैं। 'केवलज्ञान' होता है लेकिन तीर्थंकर तो क्षत्रिय ही होते हैं। वे सब लोग कबूल करते हैं मेरे पास... हम क्षत्रिय कहलाते हैं। हमें वह नहीं आता, वैसा नहीं आता। बहुत गहन है यह जबकि यह तो विचारशील प्रजा! सबकुछ सोच-सोचकर, हर तरह से सोचकर काम करते हैं जबकि हमारे (क्षत्रियों के) पछतावे का अंत ही नहीं है। उन्हें पछतावा कम होता है।

देखो न, मुझे याद आ रहा है। सौ देकर पचहत्तर वापस लेता था। मुझे अभी भी वह दिखता है। वह ऑफिस दिखता है। मुझे लगा, 'ऐसा ढंग'! इन लोगों के मन कितने विशाल होते हैं! मैं अपने ढंग को समझ गया था। सारे ढंग। वैसे तो मन बड़ा ही था लेकिन वाह-वाही, मीठा-मीठा बोलने वाला चाहिए होता था। कोई मीठा-मीठा बोले कि शुरू हो जाता था।

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी, वह जीव का स्वभाव है।

**दादाश्री :** हाँ, वह प्रकृति है, सारी प्रकृति है।

**वहाँ 'खुद' स्वीकार नहीं करता**

**प्रश्नकर्ता :** मैं जो दान करता हूँ उसमें मेरा भाव धर्म के लिए, अच्छे काम के लिए होता है। उसमें लोग वाह-वाही करें तो वह सब बेकार नहीं चला जाता?

**दादाश्री :** इसमें बड़ी रकम का उपयोग होता है और उसका सब को पता चल जाता है और वाह-वाही होती है और ऐसी रकम

भी दान में जाती है कि जिसे कोई नहीं जानता और वाह-वाही नहीं होती इसलिए उससे लाभ मिलता है! हमें उस झंझट में नहीं पड़ना है। हमारे मन में ऐसे भाव नहीं हैं कि लोग 'खिलाएँ'! इतना ही भाव होना चाहिए! जगत् तो महावीर भगवान की भी वाह-वाही करता था! लेकिन उसे वे 'खुद' स्वीकार नहीं करते थे न! इन 'दादाजी' की भी लोग वाह-वाही करते थे लेकिन उसे वे 'खुद' स्वीकार नहीं करते थे न। इन दादाजी की लोग वाह-वाही करते हैं लेकिन हम उसे स्वीकार नहीं करते जबकि ये भूखे लोग तुरंत स्वीकार कर लेते हैं। दान जाहिर हुए बगैर रहता ही नहीं न! लोग तो वाह-वाही किए बगैर रहेंगे नहीं लेकिन यदि 'खुद' उसे स्वीकार न करे तो फिर क्या परेशानी है? स्वीकार करने पर ही रोग घुसेगा न?

जो वाह-वाही स्वीकार नहीं करता उसे कुछ भी नहीं होता। खुद वाह-वाही को स्वीकार नहीं करता इसलिए उसे कोई नुकसान नहीं होता जबकि प्रशंसा करने वालों को पुण्य बंधता है। सत्कार्य की अनुमोदना का पुण्य बंधता है। यानी ऐसा सब अंदरूनी तौर पर है। ये सब तो कुदरती नियम हैं।

जो प्रशंसा करते हैं, वह कल्याणकारी होती है। जो सुनता है उसके मन में अच्छे भाव के बीज डलते हैं कि, 'यह भी करने जैसा तो है', हम तो ऐसा जानते ही नहीं थे!

### वहाँ खिलती हैं आत्मशक्तियाँ

बाकी, साथ में तो वही जाने वाला है। यह साथ में नहीं जाएगा। यहाँ उसकी कीमत तुरंत ही मिल जाती है, उसकी कीमत वाह-वाही, तुरंत ही मिल जाती है और जो आत्मा के लिए दिया हो वह साथ में जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** साथ में क्या जाएगा, कहा?

**दादाश्री :** साथ में तो, हम जो वहाँ देते हैं, आत्मा के लिए

जिससे अपनी आत्मा की शक्ति एकदम खिल उठती है। वह हमारे साथ आता है।

**प्रश्नकर्ता** : और यहाँ पर तो जो उपयोग किया, उसकी तो वाह-वाही करते हैं, बस वही मिलता है न?

**दादाश्री** : मिल गई, वाह-वाही मिल गई।

**क्या किसी के निमित्त से किसी को मिलता है?**

**प्रश्नकर्ता** : वाह-वाही तो जिसके लिए उपयोग किया उसे मिलेगी न? न कि आपको। आप जिसके लिए जो कार्य करते हो, उसका फल उसे मिलता है। हम जिसके लिए पुण्य करते हैं, वह उसे मिलता है, हमें नहीं मिलता। जो करता है उसे नहीं मिलता।

**दादाश्री** : आप करो और उसे मिले? ऐसा सुना है कभी?

**प्रश्नकर्ता** : हम उसके निमित्त से (नाम पर) करते हैं न?

**दादाश्री** : उसके निमित्त से आप करो न, उसके निमित्त से आप खा लो तो क्या हर्ज है? नहीं-नहीं, उससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। ये सब तो, बनावट करके लोगों को उल्टे रास्ते ले जाते हैं। उसके निमित्त से! उसे नहीं खाना हो और हम खाएँ तो क्या गलत है? पूरा जगत् नियमानुसार है!

**वाह-वाही में पुण्य खर्च हो जाता है**

**प्रश्नकर्ता** : आप जो कह रहे हैं, वैसा नियम है, तब तो हीरा बा के बाद उनके नाम पर जो खर्च किया तो आपको पुण्य मिलेगा।

**दादाश्री** : मुझे क्या मिलेगा? हमारा कोई लेना-देना नहीं है। मुझे तो कोई लेना-देना ही नहीं है न! इसमें पुण्य नहीं बंधता। यहाँ तो पुण्य भोग लिया जाता है। वाह-वाही मिल जाती है।

या फिर कोई बुरा कर जाए तो कहेंगे, 'देखो न, इसने सब

बिगाड़ दिया'। यानी सबकुछ यहीं का यहीं हो जाता है। हाईस्कूल बनवाया था, तो यहीं पर वाह-वाही मिल गई। वहाँ नहीं मिलेगी।

**प्रश्नकर्ता :** स्कूल तो बच्चों के लिए बनवाई, वे पढ़े-लिखे, सद्विचार पैदा हुए।

**दादाश्री :** वह अलग बात है लेकिन आपको वाह-वाही मिले तो हो गया, खर्च हो गया।

### बाहर स्वीकारे, भीतर में वीतराग

**प्रश्नकर्ता :** लोग वाह-वाही करें, लेकिन खुद स्वीकार नहीं करे तो ?

**दादाश्री :** स्वीकार न करे या करे, लोग वाह-वाही करें तो हो गया। कौन ऐसा है जो स्वीकार न करेगा ?

रामचंद्र जी करते थे, कृष्ण भगवान स्वीकार करते थे। सभी स्वीकार करते थे।

**प्रश्नकर्ता :** इन सब ने स्वीकार किया तो, 'दादा ने मेरा यह किया' ऐसा कोई बोले तो क्या आप स्वीकार करते हैं ?

**दादाश्री :** तो क्या, मुझे कड़वा लगता होगा ? ये सब कहें कि 'दादा ने अच्छा किया', तो मीठा ही लगेगा न !

मीठा है फिर भी हमें उस पर राग नहीं और कोई कड़वा बोले तो उस पर द्वेष नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** वही, स्वीकार करने, और स्वीकार नहीं करने की बात है। इसी तरह क्या वे सब भी स्वीकारते थे राग-द्वेष से ? रामचंद्र जी या कृष्ण भगवान ?

**दादाश्री :** इसी तरह स्वीकार करते थे न !

**प्रश्नकर्ता :** उन्होंने स्वीकार ही नहीं किया न ?

**दादाश्री** : तो और क्या कहेंगे? जगत् भी ऐसा ही समझता है न!

**प्रश्नकर्ता** : राग-द्वेष रहित। बाकी बाहर तो सब था ही और डाँटते भी थे।

**प्रश्नकर्ता** : कृष्ण भगवान ने युद्ध करवाया।

**दादाश्री** : हाँ, लेकिन बाहर तो थी धाँधली-धमाल, बाहर तो सब था ही लेकिन राग-द्वेष नहीं थे।

बाहर का सारा व्यवहार ही पराधीन है और आंतरिक व्यवहार स्वाधीन है। तो पराधीनता में क्या कर सकते थे?

### परिग्रह छूटने पर आत्मा प्रकट होता है

**प्रश्नकर्ता** : लेकिन ममता या क्रोध-मान-माया-लोभ, सब ज्ञान से छूटते हैं न?

**दादाश्री** : ज्ञान से तो आत्मा की प्रतीति बैठती है कि मैं शुद्धात्मा हूँ, ऐसा भान हो जाए, उसके बाद फिर पूरा चारित्र इसी से बनता है, स्टेडी होता है।

**प्रश्नकर्ता** : यह भी व्यवहार चारित्र हुआ न, यह भी व्यवहार चारित्र में आया न?

**दादाश्री** : वह काम का नहीं है। मूल चारित्र चाहिए। मूल चारित्र इसी से आता है, वर्ना नहीं आता।

### सचेत करें ज्ञानी, लक्ष्मी-ममता से

**प्रश्नकर्ता** : ममता का विस्तार कितना बड़ा होता है! ममता का विस्तार कुछ छोटा नहीं रहता।

**दादाश्री** : कौन कहता है, छोटा? आप छोटा समझते हो। ममता पर तो पूरी डिजाइन बनती है। आप जितना समझते हो न, उसका एक

अंश भी नहीं है यह बात। ममता की डिज़ाइन बहुत बड़ी है। इतनी विस्तृत है।

**प्रश्नकर्ता :** वह सब समझाने की ज़रूरत है।

**दादाश्री :** सब समझा ही दिया है न, लेकिन छोड़ा नहीं है न। इंसान के लिए थोड़ा भी छोड़ना मुश्किल है। बेटी की शादी करानी हो तो करवा देता है, तीन लाख रुपये खर्च करके लेकिन वैसे छोड़ना मुश्किल है। ये कमाकर दो लाख छोड़ पाए तो वह मुझे बहुत उत्तम लगा, कि पाटीदार होकर!

**प्रश्नकर्ता :** ममता सिर्फ लक्ष्मी पर ही नहीं होती लेकिन और भी कितनी ही जगहों पर होती है।

**दादाश्री :** लेकिन लक्ष्मी की ही ममता छूट जाए तो बहुत हो गया।

अन्य ममता तो छूट जाएगी। लक्ष्मी के कारण ही ये सारी चीज़ें लिपटी हुई हैं।

**प्रश्नकर्ता :** पत्नी है, बच्चे हैं न!

**दादाश्री :** वह सब लक्ष्मी के कारण ही और विषय भी भटकाता है। विषय की और लक्ष्मी की, दोनों की ममता छूटनी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** आ गया न, विषय में पत्नी-बच्चे आ गए न?

**दादाश्री :** विषय को तो छोड़ सकता है, लक्ष्मी किसी से नहीं छूटती। इसीलिए कहा है न, डाँट कर भी इस ममता को छुड़वा लेना चाहिए!

**प्रश्नकर्ता :** शील-दर्शक में साफ कहा गया है, दादाजी ने हर पन्ने पर कहा है कि सब छूट जाता है लेकिन विषय ही नहीं छूटता। सब से अंत में विषय जाता है।

**दादाश्री :** विषय और लक्ष्मी, ये दोनों नहीं जाते। लक्ष्मी तो



विषय को छुड़वा देती है और विषय छूट गए हैं न! तथा जो स्त्री से संबंधित विषय है, वह दादा भगवान छुड़वा देते हैं लेकिन लक्ष्मी तो नहीं छूटती। विषय छुड़वा देते हैं लेकिन लक्ष्मी नहीं छूटती।

### वह थर्मामीटर ज्ञानी के पास

**प्रश्नकर्ता :** किसी का छूट गया है या नहीं, वह हमें कैसे पता चलेगा ?

**दादाश्री :** हमें सब पता चलता है।

**प्रश्नकर्ता :** वह भीतर की बात है। उसका उपयोग करता है या नहीं भी लेकिन भीतर क्या है वह कैसे पता चलेगा ? उसके डिस्चार्ज में हो। यहाँ भीतर जो है, उसका कैसे पता चलेगा ?

**दादाश्री :** डिस्चार्ज में हो या न हो, वह ज़रा अलग है। डिस्चार्ज तो होता ही है, लेकिन ममता छूटनी मुश्किल है।

### स्थूल कर्म : सूक्ष्म कर्म

**प्रश्नकर्ता :** इस जीवन में जो अच्छे या बुरे कर्म होते हैं उसका फल इस जीवन में मिलता है या अगले जीवन में ?

**दादाश्री :** इसके दो प्रकार हैं। यहाँ वाणी से किसी को गाली दें या हाथ से किसी को मारा तो उसका फल यहीं पर मिल जाता है। जबकि मानसिक सूक्ष्म कर्म, जिसे भाव कर्म कहा जाता है, उसका फल अगले जन्म में मिलता है।

दो प्रकार के कर्म, एक स्थूल कर्म और एक सूक्ष्म कर्म। स्थूल कर्म का फल यहीं पर मिल जाता है। यह भाई वहाँ किसी को मारपीट कर आए तो वह कभी न कभी मौका देखकर वापस दे जाएगा। उसका फल यहीं पर मिल जाता है।

## शुभ भाव करते रहो

**प्रश्नकर्ता :** एक ओर भीतर भाव होता है कि मुझे दान में सब दे देना है लेकिन रूपक में वह भी नहीं हो पाता।

**दादाश्री :** वह दे नहीं पाते न! देना क्या सरल है? दान देना तो कठिन बात है! फिर भी भाव करना। धन सुमार्ग में देना वह आपकी सत्ता में नहीं है। भाव कर सकते हैं लेकिन दे नहीं सकते। और भाव का फल अगले जन्म में मिलेगा। लट्टू, दान कैसे दे सकते हैं? और जो देते हैं, वह तो 'व्यवस्थित' दिलवाता है इसलिए देते हैं। 'व्यवस्थित' करवाता है इसलिए लोग दान देते हैं और यदि 'व्यवस्थित' नहीं करवाता तो लोग दान नहीं देते। 'वीतराग' को दान लेने का या देने का मोह नहीं होता। वे तो 'शुद्ध उपयोगी' होते हैं!

## होता है आंतरिक भाव फलित

इन 'वीतरागों' का साइन्स कैसा है? आज किसी ने पचास हजार दान दिया और बाद में वह व्यक्ति वहाँ हमें कहे कि ये तो सेठ के दबाव के कारण दिए हैं, वर्ना मैं कभी भी इस तरह पैसे नहीं देता। मैं कोई कच्चा खिलाड़ी नहीं हूँ। अब बोलो, 'वीतराग' के खाते में क्या जमा होगा?

**प्रश्नकर्ता :** कुछ नहीं।

**दादाश्री :** तो क्या, उसका दिया हुआ बेकार गया? अभी जो देता है वह बेकार नहीं जाता। वीतराग कितने सयाने और पक्के हैं, उसका उदाहारण देता हूँ। अब, वह बोलता है न कि, 'इन सेठ के दबाव के कारण मैंने दिए।' वीतराग तो हर जगह होते ही हैं न? देहधारी में वीतराग बैठे हुए ही हैं न? तो क्या उनका बेकार गया? नहीं। तो क्या किसी काम में आया? हाँ! उसने स्थूल में 'नकद' दिया इसलिए उसका फल स्थूल में मिलता है। यानी उसे नकद का फल यहीं पर मिल जाएगा। यहाँ उसे कीर्ति मिलेगी। यह जितना भी

मिकेनिकल है न, उस मिकेनिकल भाग को, कीर्ति और अपकीर्ति, दोनों मिलते हैं और फिर सर्वनाश हो जाता है लेकिन उसने सूक्ष्म में जो भाव किया था कि, 'मैं ऐसा नहीं हूँ कि दूँ, तो अगले जन्म में उसका फल आएगा। अब वहाँ पर तो जो भाविभाव किया था, वही देखते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** दान देता है, वह तो निमित्त के द्वारा दान देता है न?

**दादाश्री :** वह दान देता है, वह पूर्व जन्म में भावना की थी इसलिए आज देता है लेकिन आज जो उल्टी भावना करता है उसका फल अगले जन्म में आएगा। अभी बीज डल रहा है कि, 'मैं किसी को दूँ, ऐसा नहीं हूँ।' इसलिए दान देने पर भी बीज उल्टा डला! यदि ऐसा कहे कि 'ये पचास हजार रुपये दिए वह तो बहुत अच्छा हुआ। ये सेठ न होते तो मैं दे नहीं पाता। ये तो सेठ थे इसलिए मैं दे पाया, वह बहुत अच्छा हुआ।' तो वह उसने उच्च भाविभाव किया!

भाविभाव यानी आज ज्ञान पलटा। उसने व्यवहार ज्ञान शुद्ध किया उसे शास्त्रों में भाविभाव कहा गया है।

अब, यहाँ किसी को गाली देकर आए और फिर कहे कि, 'यह तो करने जैसा था', तो क्या होगा? एक तो, दुनिया में अपयश मिला और ऊपर से वहाँ भी, भाविभाव का उल्टा हिसाब बंधता है।

यानी क्या कहना चाहते हैं कि स्थूल फल सारा यहीं पर खत्म हो जाए, ऐसा है। वह वहाँ अपने साथ आए, ऐसा नहीं है लेकिन भीतर में सूक्ष्म में आपको इतना बदलना है। जैसे उस व्यक्ति ने बदला, भले ही नासमझी या लौकिक समझ से बदला, कि 'इस सेठ के दबाव के कारण दिया वर्ना मैं दूँ, ऐसा नहीं हूँ', लेकिन यह उल्टा ज्ञान है। मेरे जैसा मिल जाता तो उसे समझा देता कि, "बोल, 'सेठ थे तो दे पाया। वह बहुत अच्छा हुआ।'" उसे समझाए बगैर सीधा ज्ञान नहीं होगा।

**प्रश्नकर्ता :** क्या इसे धर्मध्यान नहीं कहेंगे ?

**दादाश्री :** यह धर्मध्यान ही कहलाएगा। मेरे हर एक वाक्य के साथ धर्मध्यान अवश्य होता ही है। आपको यह 'ज्ञान' दिया है इसलिए अंदर शुक्लध्यान है और धर्मध्यान मेरे वाक्यों के कारण उत्पन्न होता है। जहाँ धर्मध्यान रहा तथा अंदर शुक्लध्यान रहा तो वही संपूर्ण मोक्ष का साधन है।

ये सभी वाक्य धर्मध्यान के लिए हैं। शुक्लध्यान भी धर्मध्यान के रक्षण से रहे ऐसा है।

### साइंटिफिक समझ

अर्थात् यह पूरा साइंटिफिक (वैज्ञानिक) रास्ता है। शायद कभी आपको वैसा उल्टा ज्ञान उत्पन्न हो जाए, फिर भी आपको किस बात का बोझा? आपको दादा के बताए अनुसार ज्ञान हाज़िर रखना है कि ऐसा नहीं होना चाहिए। आपको कहना है कि, 'चंदूभाई, यह गलत कर रहे हो। ऐसा नहीं होना चाहिए।' ऐसा बोले, तो आप अगले जन्म के लिए छूट गए। यहाँ तो अपयश मिलेगा! जैसे अच्छी चीज़ उल्टा बोलने से बिगड़ जाती है, वैसे ही जो उल्टी चीज़ हुई है, वह अच्छा बोलने से सुधर जाए, ऐसा विज्ञान है यह। फिर उल्टा बोलने वाले का क्या दोष है? अब आपको अच्छा बोलना आ गया है!

और यह बाहर का स्थूल सारा मिकेनिकल है, बिल्कुल मिकेनिकल है। पचास हज़ार दिए उससे कुछ बदला नहीं। उसके पीछे सूक्ष्म में भाविभाव क्या है? वीतराग वह देखते हैं। यह तो, वहाँ जो दिए वे भाव से दिए। भाव के बिना दिया नहीं जा सकता लेकिन वह भाव पिछले पुरुषार्थ से जागा पर इस बार उसने वापस क्या पुरुषार्थ किया? कि 'ये सेठ के दबाव में आकर दिए। दे दूँ ऐसा नहीं हूँ', अभी उसका ज्ञान ऐसा उल्टा हो गया है।

### मुक्ति, वीतराग विज्ञान द्वारा

यह वीतराग विज्ञान आपको अंदर से कितना मुक्त कर देता है!

सोचने पर क्या ऐसा नहीं लगता? कितना अच्छा है! यदि समझना है तो 'ज्ञानी पुरुष' से समझ ले और अपनी बुद्धि सम्यक् करवा ले तो काम चले, ऐसा है। व्यवहार वाले लोग भी अगर मुझसे बुद्धि सम्यक् करवा लें, कुछ समय मेरे पास बैठकर, भले ही ज्ञान न लिया हो, फिर भी यदि मेरे साथ कुछ समय बैठें तो बुद्धि सम्यक् हो जाएगी। तब उनका काम आगे चलता रहेगा!

यह ज्ञान न हो तब कैसी दशा होगी? यदि ऐसा लोग समझें तो काम का!

**प्रश्नकर्ता :** ज्ञान लिए बिना तो इसका अंत ही नहीं आएगा, ऐसा है।

**दादाश्री :** अंत ही नहीं आएगा, ऐसा है। वह तो बात ही नहीं करने जैसी है। वह पचास हजार रुपये दान देता है फिर भी बाद में आपसे क्या कहता है कि, 'इस सेठ का दबाव है, इसलिए दे रहा हूँ, वर्ना देता ही नहीं'। खुद अकेला समझे, ऐसा नहीं है, आपको भी बताता है, फिर अन्य लोगों को बताता है कि 'मैं तो ऐसा पक्का हूँ। यह देख रहे हो न, सब बाहर तो यह सब...'? बेकार ही बर्बाद हो गए। इसीलिए जो इस सत्संग में पड़े रहे उनका काम बन गया न! सारी दुनिया की झंझट गई न!

### अतिरिक्त बहा दो

यह तो, लोकसंज्ञा से दूसरों का देख कर सीखते हैं लेकिन यदि ज्ञानी से पूछें न तो वे कहते हैं कि, 'नहीं, यह क्यों इस तरह गड्डे में गिर रहा है?' दुःख के गड्डे से निकला तो फिर पैसों के गड्डे में गिरा वापस। अधिक हो तो डाल दे धर्मादा में यहीं से। वही तेरे खाते में जमा है और बैंक वाला वह जमा नहीं होगा। ज़्यादा हो तो दे दे धर्म दान में। अड़चन नहीं आएगी तुझे। जो धर्म दान करता है उसे अड़चन नहीं आती।

## बच्चों को दें कितना ?

**प्रश्नकर्ता :** जब पुण्य के उदय से ज़रूरत से ज़्यादा लक्ष्मी की प्राप्ति हो तो ?

**दादाश्री :** तो खर्च कर देनी चाहिए। बच्चों के लिए बहुत नहीं रखनी चाहिए। उन्हें पढ़ाना, सिखाना, सब कम्प्लीट करके, उन्हें सर्विस पर लगा दिया, तब फिर वे काम पर लग गए इसलिए बहुत नहीं रखनी चाहिए। थोड़ा बैंक में, किसी जगह पर दस-बीस हजार रख देना तो जब कभी परेशानी में हो तो उसे दे देना। उसे बताना नहीं कि, 'भई, मैंने रख छोड़े हैं'। हाँ, वर्ना परेशानी में नहीं होंगे तब भी आ जाएँगे।

मुझसे एक व्यक्ति ने प्रश्न किया कि, 'क्या बच्चों को कुछ नहीं देना चाहिए?' मैंने कहा, 'बच्चों को देना। आपके पिता ने आपको जो दिया वह सब देना है। बीच का जो माल है, वह आपका। उसे आप जहाँ अच्छा लगे, वहाँ धर्म दान में खर्च करना।'

**प्रश्नकर्ता :** हम वकीलों के कानून में भी ऐसा है कि पैतृक प्रॉपर्टी में से बच्चों को देना ही पड़ेगा और स्व-उपार्जित से पिता को जो करना हो वह करे।

**दादाश्री :** हाँ, जो करना हो वह करें। अपने हाथों से ही कर लेना चाहिए! अपना मार्ग क्या कहता है कि तेरा खुद का जो माल है, उस माल को तू अलग रखकर खर्च कर, तो वह तेरे साथ आएगा। क्योंकि यह ज्ञान लेने के बाद अभी एक-दो जन्म बाकी रहते हैं, तो साथ में चाहिएगा न! बाहर कहीं जाते हैं तो थोड़ी रोटियाँ ले जाते हैं। तो क्या यह सब नहीं चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** उत्तम तो क्या कहा जाएगा? ट्रस्टी के तौर पर रहेंगे तो ?

**दादाश्री :** ट्रस्टी के तौर पर रहना तो उत्तम है लेकिन ऐसे नहीं

रह सकते, सब से नहीं रहा जा सकता। वह भी संपूर्ण ट्रस्टी बनकर नहीं रह सकते। ट्रस्टी यानी तो ज्ञाता-द्रष्टा हुआ लेकिन संपूर्ण रूप से ट्रस्टी के तौर पर नहीं रहा जा सकता लेकिन ऐसा भाव हो तो थोड़ा-बहुत रह सकते हैं।

और बच्चों को तो कितना देना चाहिए? हमारे फादर ने दिया हो, कुछ न दिया हो फिर भी हमें कुछ न कुछ तो देना चाहिए। बच्चे शराबी बन जाते हैं क्या, यदि बहुत वैभव हो तो?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, बन जाते हैं। बेटे शराबी न बनें उतना तो देना चाहिए।

**दादाश्री :** उतना ही देना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** अधिक वैभव दें तो ऐसा हो जाता है।

**दादाश्री :** हाँ, वह हमेशा उनका मोक्ष बिगाड़ देगा। हमेशा पद्धति के अनुसार ही उचित है। बच्चों को अधिक देना, वह गुनाह है। यह सब तो फॉरेन वाले समझते हैं। कितने समझदार हैं! और इन्हें तो सात पीढ़ियों तक का लोभ! मेरी सातवीं पीढ़ी के बेटे के वहाँ ऐसा हो। कितने लोभी हैं ये लोग? बेटे को हमें कमाऊ बना देना चाहिए। वह हमारा फर्ज है और बेटियों की शादी करवा देनी चाहिए। बेटियों को भी कुछ देना चाहिए। आजकल तो बेटियों को हिस्सा दिलवाते हैं न, पार्टनर के तौर पर! शादी में खर्च होता है न? और ऊपर थोड़ा-बहुत देना चाहिए। उसे ज़ेवर दिए, यानी देते ही हैं न! लेकिन खुद का धन तो खुद को उपयोग करना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** बेटों को घर, व्यापार सौंपना और कर्ज सौंपना चाहिए न?

**दादाश्री :** आपके पास मिलियन डॉलर हों या आधा मिलियन डॉलर हों तब भी जिस मकान में बेटा रहता हो, वह बेटे को दे देना। उसके बाद व्यापार शुरू करवा देना, जो उसे पसंद हो वह। कौन सा

काम उसे पसंद है वह पूछकर उसे जो ठीक लगे वह व्यापार शुरू करवा देना चाहिए और 25-30 हजार बैंक से लोन पर दिलवा देना। लोन वह चुकाता रहेगा अपने आप, और थोड़े आप दे देना। उसे जितना चाहिए उसका आधा आप दे देना और आधा बैंक का लोन वह चुकाता रहेगा। फिर यदि बेटा कहे कि, 'इस साल मैं लोन नहीं भर पाऊँगा', लोन न भर पाए तब कहना कि, 'मैं तुझे पाँच हजार ला देता हूँ लेकिन जल्दी लौटाना!' और पाँच हजार ला देना। बाद में आप उन पाँच हजार की याद दिलाना, 'वे जल्दी वापस लौटाने हैं, ऐसा कहा है।' इस तरह याद दिलाने पर यदि बेटा कहे, 'आप अभी किच-किच मत करो।' तब आपको समझ जाना है 'बहुत अच्छी बात है यह।' तब फिर वह वापस माँगने ही नहीं आएगा न! ऐसा कहे कि 'किच-किच करते हैं', उसमें हर्ज नहीं है, लेकिन लेने तो नहीं आएगा न!

यानी अपनी सेफसाइड हमें रखनी है और फिर बेटे के सामने खराब नहीं दिखेंगे। बेटा कहेगा, 'पिता जी तो अच्छे हैं, लेकिन मेरा स्वभाव टेढ़ा है। मैं उल्टा बोला इसलिए। बाकी, पिता जी बहुत अच्छे हैं!' यानी छूटना, भाग जाना है इस जगत् में से।

### आदर्श विल ( वसीयत )

**प्रश्नकर्ता :** अपनी जो सम्पत्ति होती है, उसकी विल बनानी होती है बच्चों के लिए, तो आदर्श विल किस प्रकार की होनी चाहिए? एक बेटा और एक बेटी हो तो?

**दादाश्री :** बेटी को कुछ हद तक देना। आपको बेटे से पूछना चाहिए कि, 'तुम्हें क्या व्यापार करना है? क्या करना है? सर्विस करनी है?' देना, लेकिन कुछ ही हद तक, आधी सम्पत्ति तो आपके पास रहने देनी चाहिए। यानी प्राइवेट! यानी कि, ज़ाहिर न की हो। बाकी सारी ज़ाहिर कर देना और कहना कि 'हमें चाहिए, हम दो लोगों को जीवित रहने तक चाहिए न?' और फिर बैंक से ऋण दिलवा देना।



बैंक से ऋण न ले, वैसा काम मत करना। यानी उस पर अंकुश रखने वाला कोई चाहिए ताकि वह शराब न पीए। समझ में आया न? यानी कि आपको तरीके से, समझदारी से काम करना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन व्यक्ति की मृत्यु के बाद की विल कैसी होनी चाहिए?

**दादाश्री :** नहीं, मरने के बाद तो आपके पास जो है न, मान लो कि आपके पास ढाई लाख रुपये बचे हों, वे तो आपकी उपस्थिति में ही, मरने तक रहने ही नहीं देने चाहिए। जहाँ तक हो सके ओवरड्राफ्ट करवा ही लेने चाहिए। अस्पताल के, ज्ञानदान आदि के ओवरड्राफ्ट करवा लेने चाहिए और फिर जो बचे वह बेटे को देने चाहिए, बचाने भी चाहिए कुछ। उनको लालच है न, उस लालच के लिए पाँच हजार रखना, और बाकी दो लाख के तो ओवरड्राफ्ट करवा लेना, अगले जन्म में आप क्या करोगे? ये सभी पिछले जन्म के ओवरड्राफ्ट का अभी उपयोग कर रहे हो, तो क्या इस जन्म में ओवरड्राफ्ट नहीं निकलवाना पड़ेगा? इसे क्या कहा जाएगा?

**प्रश्नकर्ता :** ओवरड्राफ्ट।

**दादाश्री :** हाँ, आपने किसी को नहीं दिए। लोगों के हित के लिए, लोक कल्याण के लिए जो खर्च किए, उसे ओवरड्राफ्ट कहते हैं। बेटे को देकर तो पछताए थे, ऐसे पछताए थे, सच में!

बेटे का हित कैसे करना चाहिए, आपको समझना चाहिए। उसके लिए आकर बातचीत कर लेना मुझसे।

## दुःख-आनंद का नियम

**प्रश्नकर्ता :** लोग दूसरों को भोजन करवाते समय क्यों ज्यादा *लागणी* (भावुकता वाला प्रेम) बताते हैं? क्यों आग्रहपूर्वक खिलाते हैं और किसी को खिलाने में आनंद का अनुभव करते हैं?

**दादाश्री :** सिर्फ भोजन करवाने से ही नहीं लेकिन यदि तुम

इन सब को आइस्क्रीम खिलाओ तब भी तुम्हें आनंद होगा। लोगों को तुम कुछ भी दोगे, तो तुम्हें आनंद होगा। तू अपना देता है तो तुझे आनंद होता है और तूने ले लिया तो दुःख। इस जगत् में लोग लेना सीखे हैं, देना नहीं सीखे। उसी से ये दुःख बढ़े हैं।

देने से सुख उत्पन्न होता है, इसलिए सिर्फ भोजन करवाने से ही नहीं परंतु कुछ भी देने से, अरे! रुपये न हों और 'आइए, पधारिये' ऐसा कहोगे तब भी आनंद होगा।

### वह व्यवहार अच्छा माना जाएगा

**प्रश्नकर्ता :** हीरा बा के बाद आपने जो खर्चा किया, वह व्यवहार में कैसा कहलाएगा ?

**दादाश्री :** सांसारिक व्यवहार में अच्छा माना जाएगा वह।

**प्रश्नकर्ता :** हमें तो सांसारिक व्यवहार में ही रहना है!

**दादाश्री :** संसार के व्यवहार में तो है लेकिन उसमें वह अच्छा दिखता है। और वह मैंने इसलिए नहीं किया कि अच्छा दिखे। वह तो हीरा बा की इच्छा थी इसलिए मैंने किया। मुझे इस तरह सही या गलत की परवाह नहीं है, फिर भी खराब न दिखे, उस तरह रहते हैं हम।

**प्रश्नकर्ता :** यह तो आपकी बात हुई, लेकिन हमारे लिए क्या ?

**दादाश्री :** आपको थोड़ा व्यवहार करना पड़ेगा। साधारण, बहुत खींच-तान करने की जरूरत नहीं है, साधारण व्यवहार करना पड़ेगा।

### लक्ष्मी वहीं पर वापस आती है

**दादाश्री :** आपका परिवार पहले श्रीमंत था न ?

**प्रश्नकर्ता :** वह सब पूर्वकर्म के पुण्य!

**दादाश्री :** लोगों को कितनी अधिक हेल्प की होती है, तब

हमारे यहाँ लक्ष्मी आती है वर्ना लक्ष्मी आती ही नहीं न! जिन्हें ले लेने की इच्छा है, उनके पास लक्ष्मी नहीं आती। यदि आए तो चली जाती है, रुकती नहीं है। 'कैसे भी करके ले लेना है', उनके वहाँ लक्ष्मी नहीं आती। देने की इच्छा करने वाले के वहाँ पर ही लक्ष्मी आती है। जो औरों के लिए काम करे, धोखा खाए, नोबिलिटी रखे, वहाँ आती है। ऐसा लगता ज़रूर है कि चली गई लेकिन लौट कर वापस वहीं आ जाती है।

### देखना, दान रह न जाए

हमेशा ही, जो बहुत सेवाभावी होते हैं न, उनका मन तो पावरफुल होता है। वे भाई क्या कह रहे थे, 'मुझे उनके दर्शन करने वहाँ जाना है'। उनका वह भाव कितना अच्छा! मुंबई से अहमदाबाद आकर दर्शन कर जाते थे!

सेवाभावी यानी, लोगों से लेकर दूसरों को दे आए।

देखो न, कहते थे न कि एक व्यक्ति हर महीने साढ़े सोलह हज़ार रुपये देता है। ऐसे भी तो होते हैं न! वह तो, आने पर ही दे सकते हैं न! और जब कुछ न हो तब मन में क्या सोचते हैं, जानते हो? जब मेरे पास आएँगे तब दे देने हैं और आएँ तब लिफाफे में एक तरफ रख देते हैं। मनुष्य मन का स्वभाव ऐसा होता है कि, 'अभी डेढ़ लाख हैं, दो लाख पूरे होंगे तब देंगे।' वह फिर वैसे ही रह जाता है! ऐसे काम में तो जो आँखें बंद करके दे दिया वही सोना (तो उत्तम)।

### रिवाज़, भगवान के लिए ही धर्म दान

मारवाड़ी लोगों के वहाँ जाता हूँ तो पूछता हूँ कि, 'काम कैसे चल रहा है?' तब कहते हैं, 'काम तो अच्छा चल रहा है।' फायदा-वायदा? तब कहते हैं, 'दो-चार लाख का तो है'! भगवान के वहाँ देने करने का? 'वहाँ हर साल बीस-पच्चीस प्रतिशत दे देते हैं।' उन्हें

क्या कहा जाएगा? 'खेत में बोएँगे तो दाने निकलेंगे न? बोए बगैर दाने कैसे लेने जाऊँ? बोएँगे ही नहीं तो?' मारवाड़ी लोगों के वहाँ यही रिवाज़ है कि भगवान के काम में दे देने। ज्ञानदान में, भगवान में, अन्य कहीं दान में देने का, लेकिन उस प्रकार के दान में नहीं, हाइस्कूल इत्यादि में नहीं। सिर्फ एक ही जगह।

### हैसियत के मुताबिक सहारा देना

**प्रश्नकर्ता :** 'दो लाख होंगे तब खर्च करूँगा', ऐसा कहने वाला व्यक्ति ऐसा करते करते ही चला जाए तो?

**दादाश्री :** लेकिन वह चला जाता है, और रह जाता है।

रह जाता है और कुछ प्राप्त नहीं होता। जीव का स्वभाव ही ऐसा है। फिर जब नहीं होगा तब कहेगा, 'मेरे पास आएँगे न तो तुरंत दे देने हैं, आते ही तुरंत दे देने हैं।' अब, जब आती है, तब माया उलझा देती है।

अब, यदि किसी व्यक्ति ने साठ हजार रुपये नहीं दिए तब कहेगा, 'चलो, होगा कुछ। अपने नसीब में नहीं था', वहाँ तो छूट जाता है लेकिन यहाँ नहीं छूटता। मनुष्य का स्वभाव ऐसा है कि माया उलझाती है उन्हें। वह तो हिम्मत करे तभी दिया जा सकता है इसलिए तो हम ऐसा कहते हैं न कि, 'कुछ करो।' फिर माया नहीं उलझाएगी। फूल नहीं तो फूल की पंखुड़ी। वह भी, एक ऊँगली से सहारा देने की ज़रूरत है, अपनी-अपनी हैसियत के अनुसार। बीमार व्यक्ति को भी ऐसे ज़रा सा मदद करने में क्या हर्ज है?

### हमारी भी सदा भावना रही

और मेरे पास लक्ष्मी होती तो मैं भी लक्ष्मी दे देता, लेकिन ऐसी कोई लक्ष्मी अभी तक मेरे पास आई नहीं है और आए तो अभी भी देने को तैयार हूँ। क्या मुझे सब साथ ले जाना है? लेकिन कुछ न कुछ दो सब को! फिर भी जगत् को लक्ष्मी देने से ज़्यादा तो, किस

प्रकार इस जगत् में सुखी हो सकते हैं, जीवन निर्वाह किस प्रकार कर सकते हैं, ऐसा मार्ग दिखाओ। लक्ष्मी का तो ऐसा है कि किसी को दस हजार दें तो अगले दिन वह नौकरी छोड़ देगा इसलिए लक्ष्मी नहीं देनी चाहिए। उस तरह लक्ष्मी देना तो गुनाह है। लोगों को आलसी बना देती है इसलिए पिता को बेटे के लिए अधिक लक्ष्मी नहीं देनी चाहिए वर्ना बेटा शराबी बन जाएगा। इंसान को आराम मिला कि बस, अन्य उल्टे रास्ते चला जाता है!

### बात को समझने की ज़रूरत

ऐसा है, रामचंद्र जी वनवास के लिए गए थे जंगल में तब भरत को राजगद्दी सौंपी। सौंपते समय ऐसा कहा कि, 'तू देखना, प्रजा दुःखी न हो।' उन बेचारे को राज चलाना नहीं आता था और कोई सही और अच्छे सलाहकार नहीं मिले इसलिए उन्होंने क्या किया कि जब लोगों की फसल ठीक से न उगती थी न, तो तिजोरी में से सब को दिलवाते रहे और कहा, 'अरे भाई, दुःखी मत होना, अभी कर मत देना।' ऐसा कहा। लोगों को कर भरना पड़ता तभी कुछ काम करते न? कोई कर भरना नहीं रहा इसलिए सब उजाड़ होने लगा। अयोध्या के आसपास के सभी प्रदेश उजाड़ होने लगे।

फिर रामचंद्र जी अयोध्या लौटे। तो आते ही सब ऐसा सूखा हुआ देखा, तब उनके मन में ऐसा हुआ कि यह क्या हो गया? भरत को राज चलाना नहीं आया? पब्लिक ऐसी क्यों हो गई? तब आकर भरत राजा से पूछा, 'भाई, क्या किया तुमने? ये लोग कुछ सुखी नहीं दिखाई देते।' तब उन्होंने कहा, 'मैंने सारी तिजोरी लुटा दी। उसमें कुछ भी नहीं रहने दिया। मैंने देने में कुछ बाकी नहीं रखा।' तब रामचंद्र जी ने कहा, 'तूने बहुत बड़ी गलती कर दी।' भरत राजा ने पूछा, 'क्या भूल की?' तब रामचंद्र जी ने कहा, 'तू कर नहीं लेगा तो लोग आलसी हो जाएँगे। सोते रहेंगे, आराम से।' फिर उन्होंने उन सभी लोगों पर बारह साल का कर लगाया। ढिंढोरा पिटवाया कि, 'बारहों साल का, अपने खेतों का कर भर जाएँ।' तुरंत ही लोगों की नींद उड़ा दी और

फिर दूसरी शर्त रखी कि जिन्हें कुएँ खोदने हों, वे ऋण ले जाएँ। इसे थोड़े से ब्याज के साथ लौटा देना और ब्याज भी नहीं के बराबर। तब लोग भागदौड़ करने लगे, 'हमें कुआँ खोदना है, हमें कुआँ खोदना है'। लोगों ने कुएँ खोदे! और फिर खींच-खींच कर पानी निकाला और सारे प्रदेश को हरा भरा कर दिया लेकिन चरसा (चमड़े का थैला) खींचते समय वे क्या करते थे कि, वे उसमें कंकड़ रखते थे। एक चरसा खींचते तो एक कंकड़ रखते लेकिन उस समय बोलते क्या थे? 'आया राम, गया राम' कहते थे। अब भी चरसा खींचते समय बोलते हैं, 'आया राम'। यानी बात को समझना है। जीवनकला सिखाने की ज़रूरत है और वह पुस्तकों द्वारा भी सिखाई जा सकती है!

दान में रुपये नहीं देने हैं। मेन्टनन्स के लिए उनकी हेल्प करनी है। काम पर लगाना। हिंसक व्यक्ति को रुपये दोगे तो वह ज़्यादा हिंसा करेगा।

### लोभ से परेशानियाँ

मुंबई में एक व्यक्ति ने मुझसे आकर कहा कि, 'दादाजी, मेरे पास पच्चीस लाख रुपये हैं और वे पच्चीस लाख रुपये मुझे अच्छे काम में खर्च करने हैं। फिर भी मुझ में लोभ नामक अवगुण ऐसा है कि जब मैं खर्च करने जाता हूँ तब वह सामने आकर मुझे परेशान करता रहता है। तो मुझे क्या करना चाहिए? खर्च करने की मेरी इच्छा तो अवश्य है'। मैंने कहा, 'आप मेरे पास आना, मैं आपको दिखाऊँगा कि ओवरड्राफ्ट कैसे निकालना चाहिए और आपका लोभ जोर नहीं लगाएगा। मेरी उपस्थिति में लोभ बोल नहीं सकेगा। हमारा लिहाज़ रखेगा वह। हमारा लिहाज़ रखकर वह सहमति दे देगा। वर्ना लोभ तो रात को भी पीछा नहीं छोड़ता, परेशान करता है, सिर भी फोड़ देता है लेकिन हमारी उपस्थिति में सहमति दे देगा। मैंने कहा, 'जब आपको पच्चीस लाख खर्च करने हों, तब कहना'। लोगों को पैसे तो बहुत खर्च करने हैं लेकिन किस तरह खर्च करें, वह पता नहीं है। कहाँ खर्च करें, जानते नहीं हैं।

इसलिए मैं कहता हूँ कि खाक में मिल जाएँ उसके बजाय किसी सुमार्ग में खर्च हो, ऐसा कुछ करो। साथ में काम आएगा और वहाँ जाते समय तो चार नारियल बाँधे जाएँगे न! और उस पर भी बेटा क्या कहेगा, 'ज़रा सब से सस्ते, बिना पानी वाले देना न'! जो बहुत लोभी हैं, वे सचेत रहना अब। बेटों को बहुत पैसे मत देना। बेटों को कोई व्यापार करवा देना और रहने की सामान्य व्यवस्था कर देना। बाकी, यदि अधिक पैसे दिए तो शराबी बन जाएँगे। आपके जाते ही वहाँ तुरंत शराबी बन जाएँगे इसलिए सुमार्ग में पैसे खर्च करना। लोगों के सुख के लिए खर्च करना। आपके पास यदि अधिक पैसे हों तो जितना लोगों के सुख के लिए खर्च करोगे उतना आपका, बाकी गटर में...!

ऐसा सब नहीं कहना चाहिए, फिर भी कहते हैं।

### बवंडर का व्यवहार

हम एक व्यक्ति के वहाँ बंगले में बैठे थे। उस समय बवंडर आया जिससे दरवाज़े तेज़ी से खड़-खड़ करने लगे। उसने कहा, 'बवंडर आया है, क्या दरवाज़े बंद कर दूँ?' मैंने कहा, 'दरवाज़े बंद मत करना। एक दरवाज़ा, भीतर प्रवेश करने के लिए खुला रखो और निकलने के दरवाज़े बंद कर दो तो अंदर कितनी हवा आएगी? भरी हुई खाली होगी तो और हवा आएगी न! वर्ना चाहे जो हो, बवंडर घुस नहीं सकेगा'। बाद में उसे अनुभव करवाया। तब मुझसे कहने लगा, 'अब नहीं घुसता'।

तो इस बवंडर का ऐसा है। लक्ष्मी को यदि रोकोगे तो फिर नहीं आएगी। इतनी ही भरी हुई रहेगी जबकि यदि उस तरफ से जाने दोगे तो दूसरी आती रहेगी। अन्यथा रोके रहोगे तो उतनी की उतनी ही रहेगी। लक्ष्मी का काम भी ऐसा ही है। अब कौन से रास्ते से जाने देना है यह आपकी इच्छा पर निर्भर करता है, कि बीवी-बच्चों के मौज-मजे के लिए जाने देना है, कीर्ति के लिए जाने देना है, ज्ञानदान

के लिए जाने देना है या अन्नदान के लिए जाने देना है? किस चीज़ के लिए जाने देना है, वह आपकी इच्छा पर है लेकिन जाने दोगे तो और आएगी। जाने नहीं दोगे तो उसका क्या होगा? जाने दोगे तो क्या और नहीं आएगी? हाँ, आएगी।

### दान, लेकिन उपयोग पूर्वक

ऐसी जागृति रखनी ही नहीं चाहिए कि पैसे खर्च हो जाएँगे। जिस समय जो काम आ जाए, वही सही। इसीलिए पैसे खर्च करने के लिए कहा है, जिससे लोभ छूट सके और बार-बार दिया जा सके।

उपयोग, वह जागृति है। आप शुभ कर्म करो, दान दो, तो वह दान कैसा? कि जागृति पूर्वक लोगों का कल्याण हो। कीर्ति, नाम इत्यादि आपको न मिलें इसलिए गुप्त रूप से देना, वह जागृति पूर्वक कहा जाएगा न! उसे उपयोग कहा जाएगा। उसमें तो नाम न छपा हो तो दोबारा देते ही नहीं।

### पाँचवाँ हिस्सा औरों के लिए

**प्रश्नकर्ता :** अगले जन्म के पुण्य के उपार्जन के लिए इस जन्म में क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** इस जन्म में जितने पैसे मिलें, उसका पाँचवाँ हिस्सा भगवान के वहाँ मंदिर में डाल दो। पाँचवा भाग लोगों के सुख के लिए खर्च करना ताकि उतना तो वहाँ ओवरड्राफ्ट पहुँचे! ये पिछले जन्म के ओवरड्राफ्ट तो भोग रहे हो। इस जन्म का जो पुण्य है, वह फिर आगे मिलेगा। अभी की कमाई से आगे चलेगा।

### स्वार्थी, परार्थी, परमार्थी

यहाँ किसकी बातें चल रही हैं? यहाँ परमार्थ की बातें चल रही हैं। हिन्दुस्तान में परमार्थ होता नहीं है। कभी ही कोई एकाध परमार्थी होता है! परमार्थी पुरुष होते नहीं। सारे दुकानदार, जो परमार्थी कहते



हैं न, परमार्थी नहीं तो क्या स्वार्थी हैं? नहीं, स्वार्थी नहीं हैं। परार्थी हैं! स्वार्थी तो नहीं हैं क्योंकि बीवी-बच्चों को छोड़ा और बैरागी बन गए हैं। उसका क्या मतलब है? लेकिन वे परार्थी हैं परमार्थी नहीं। परमार्थी तो, जो मोक्ष की ओर ले जाए वह परमार्थी पुरुष! परम अर्थ जो सिद्ध कर ले, वह! परम अर्थ! तभी मोक्ष! और परम अर्थ वाली वाणी। परमार्थ वाणी भी अलग होती ही है, परम अर्थ का वर्तन अलग ही होता है। वह वाणी, वर्तन और विनय मनोहर होता है। अपने मन का हरण कर लें जबकि ये लोग दुकान खोल कर बैठते हैं और 'हम परमार्थी-परमार्थी' कहते हैं, लेकिन वे परमार्थी? सच्चे स्वार्थी तो नहीं कहलाएँगे लेकिन परार्थी कहलाएँगे। उनके चार शिष्य हों न, तो उन शिष्यों में ही वे पर हैं और परार्थी हैं। उसमें तेरा क्या? वर्ना बेटे भी पराये हैं और परार्थी जीवन जीते हैं। वह परमार्थी जीवन नहीं है, परार्थी है। इस दुनिया में जितने स्वार्थी हैं, वे सब परार्थ के लिए मर गए, औरों के लिए सब ज़ब्ती में चला गया। यदि ऐसे परमार्थ किए होते तो कितना अच्छा होता! परमार्थ के लिए लक्ष्मी खर्च करें तो काम का। यह तो, सब परार्थ के लिए जा रहा है। क्या करें?

### ऐसा है मोक्षमार्ग

वीतरागों ने मोक्ष का मार्ग किसे कहा है?

जो पास में है उसे खर्च कर दो और वह भी अच्छे काम के लिए, मोक्ष के लिए या फिर मोक्षार्थियों, जिज्ञासुओं के लिए या फिर ज्ञानदान के लिए लुटा देना। वही मोक्ष का मार्ग है? ये भाई लुटा देते थे और फिर मुझसे पूछते थे, कि 'क्या मोक्ष का मार्ग है?' मैंने कहा, 'यही मोक्ष का मार्ग है। इसके अलावा और कौन सा मोक्ष का मार्ग होगा? खुद के पास जो हो, वह लुटा देना, उसे कहते हैं मोक्ष का मार्ग। मोक्ष के लिए! अंत में तो सब को मरना ही है न? अंत में तो मरना है, हर किसी को मरे बगैर चलता है? आपको क्या लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** जलाना ही पड़ेगा न!

**दादाश्री :** हाँ, अंत में तो जलाना ही पड़ेगा। देखो न, काका कितने सारे रुपये छोड़कर गए हैं!

तू लुटाना सीखा है? तूने क्या तय किया है?

**प्रश्नकर्ता :** लुटाने का ही।

**दादाश्री :** तू जितना कमाएगा, क्या उतना सब लुटा देगा?

**प्रश्नकर्ता :** अंत में तो ऐसा ही होगा लेकिन अभी से ऐसा प्रयत्न तो चल ही रहा है।

**दादाश्री :** ऐसा नहीं, अपने पास पाँच पैसे हों तो भी चार पैसे लुटा देना। ये लखपति लोग कुछ भी करें, करोड़धिपति हों, वे चाहे जो करें! हम यदि उनकी बराबरी करेंगे तो बीमार पड़ जाएँगे। वैसा नहीं करना है लेकिन भावना वैसी ही रखना कि लुटा देने हैं।

**प्रश्नकर्ता :** लुटाने के लिए जिगर चाहिए?

**दादाश्री :** हाँ, जिगर चाहिए। मोक्ष में जाना हो तो जिगर अपने आप होगा। देखो, कितना जिगर है!

इस काल में ज्ञान मिलने से मोक्ष होगा तो ज़रूर लेकिन साथ ही यदि यह भावना हो न, तो बहुत हेल्पफुल होगा। स्पीडी होगा। बिना रुकावट के होगा। मोक्ष तो ज्ञान का ही फल है लेकिन साथ ही यह एक भावना चाहिए, लुटाने की! बाकी, जमा करने की आदत तो अनादिकाल से पड़ी हुई थी! चींटियाँ कितना इकट्ठा करती होंगी? ये चींटियाँ चार बजे ही उठ जाती हैं। आप चार बजे चाय पी रहे हों और वहाँ शक्कर गिर जाए तो वे लेकर चली जाती हैं। वे सुबह इतनी जल्दी उठ जाती हैं और देर रात तक जागती हैं! और फिर इतना जमा करती हैं। फिर थोड़ा सा चखकर स्टोर में रख देती हैं। तो इतना जमा करती हैं और चूहा घुस कर खा जाता है! क्या? तो जमा करने का यही फायदा है न? क्या फायदा है? चूहे घुस कर खा जाते हैं न! चूहे तो दूँढते ही हैं कि कहाँ पर किसने जमा किया है!

## भावना से है पुष्टि

**प्रश्नकर्ता :** कोई भी चीज़ पूरण से गलन हो जाएगी, वह तय ही है। निर्विवाद बात है।

**दादाश्री :** पूरण का गलन हो जाना निश्चित ही है। तो गलन कहाँ होने देना है वह आपको समझना है। जो पूरण हुआ, उसका समय पर गलन हो जाना है। पूरण होना तो संयोग कहलाएगा और संयोग वियोगी स्वभाव वाला ही होता है। आप रोको फिर भी वियोग हुए बगैर रहेगा ही नहीं। इसलिए उसे किसी भावना से पुष्टि देनी चाहिए। भावना करनी चाहिए। पुष्टिबल देना चाहिए।

क्या ये सभी संयोग वियोगी स्वभाव वाले नहीं होते? उनका तो स्वभाव ही वियोगी है। हमें वियोग करवाना नहीं पड़ता।

अभी से ऐसा सीख लेना है। सब सांसारिक लोगों को बचपन से ही जमा करना अच्छा लगता है। वह बंधन है। इकट्ठा करने की भावना तो बंधन का मार्ग है। और लुटा देने की भावना मोक्ष का मार्ग है!

## ज्ञानी से पूछ-पूछ कर...

**प्रश्नकर्ता :** पिछले पाँच सालों से धार्मिक प्रवृत्ति की शुरुआत की है। उसी के फलस्वरूप दादाजी मिले हैं।

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन इतना ध्यान रखना कि जितना अपने साथ आए उतना ही अपना है।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा कोई रास्ता है कि उसे साथ ले जा सकें?

**दादाश्री :** आपके कितने बेटे हैं?

**प्रश्नकर्ता :** तीन। दो बेटे और एक बेटी।

**दादाश्री :** माथापच्ची किसने की? आपने की। और भोगेगा कौन? वे सब। वे लोग साथ में लेकर आए हैं!

**प्रश्नकर्ता :** मैं छोड़ जाऊँगा तो बच्चे खर्च करेंगे।

**दादाश्री :** बच्चे भी सौंप कर जाएँगे कि यह सौंपा, क्योंकि वे भी साथ कहाँ ले जा सकते हैं ?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन क्या ऐसा कोई रास्ता है कि साथ ले जा सकें ?

**दादाश्री :** क्या ये बच्चे लेकर आए थे? ये बच्चे कहाँ से लेकर आए थे? क्या उन्होंने मेहनत की? क्या उन्होंने माथापच्ची की? और तैयार मिला न? साथ लेकर ही आए हैं न!

**प्रश्नकर्ता :** क्या ये भाई यहाँ से साथ ले जा सकेंगे ?

**दादाश्री :** अब क्या ले जाएँगे? पास में था वह तो यहाँ खर्च कर डाला। अब तो मेरे पास आकर मोक्ष का कुछ मिले तो कुछ होगा! अभी भी जिंदगी बाकी है, अभी भी लाइफ टर्न कर सकते हैं। जागे तभी से सवेरा!

वहाँ ले जाने के लिए कौन सी चीज़ें आती हैं ?

आपने यहाँ पर जो भी खर्च किया वह सब गटर में गया। आपके मौज-शौक के लिए, आपके रहने के लिए जो कुछ किया वह सब गटर में गया। सिर्फ औरों के लिए जो कुछ भी किया उतना ही आपका ओवरड्राफ्ट है।

**प्रश्नकर्ता :** उतना क्रेडिट मिलेगा।

**दादाश्री :** उतना ओवरड्राफ्ट है, समझ में आया न? इसलिए औरों के लिए करना। औरों के लिए, ज्ञानियों से पूछ-पूछकर करना।

### जैसा भाव, वैसा फल

**प्रश्नकर्ता :** यदि हमने कुछ अच्छे कर्म किए हों और आत्मा जब अन्य जगह पर जाता है, जब अन्य देह में प्रवेश करता है, तब उसका असर उस नए शरीर में रहता है ?

**दादाश्री :** हाँ, हाँ। इस तरह से रहता है। आपने जो भी अच्छे कर्म किए, लोगों को ओब्लाइज किए, लोगों की हेल्प की, महाराजों की सेवा की, धर्म में दान दिया, अन्य जो कुछ भी किया, उन सब में यदि मन-वचन-काया की एकता हो तो अगले जन्म में साथ जाता है। जैसा मन में हो वैसा ही वाणी द्वारा बोलो और वैसा ही वर्तन करो और फिर महाराज की सेवा करो, तो उसका फल अगले जन्म में मिलता है। अभी कितने लोग करते होंगे?

**प्रश्नकर्ता :** बहुत नहीं।

**दादाश्री :** इसलिए अभी क्रमिक मार्ग बंद हो गया है। महाराज की सेवा करते हैं लेकिन मन से न जाने कहाँ होता है।

**प्रश्नकर्ता :** मेरा चित्त हमेशा भटकता ही रहता है।

**दादाश्री :** वह तो, अपना अक्रम है इसलिए मैंने चला लिया। उसमें ऐसा नहीं चलता। उसमें तो, मन-वचन-काया की एकता हो तभी तक क्रमिक मार्ग है! जैसा मन में हो, वैसा वाणी से बोलो और वैसा वर्तन में रखना पड़ता है।

कई लोगों को दान नहीं देना हो, मन में न देना हो और वाणी से बोलो कि, 'मुझे देना है', और वर्तन में भी रखता है। देता है लेकिन मन में हो कि नहीं देना है तो उसका फल नहीं मिलता।

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी, ऐसा क्यों होता है ?

**दादाश्री :** कोई व्यक्ति मन में देता है। उसके पास उतने साधन नहीं हैं लेकिन वाणी से बोलता है कि, 'मुझे देना है', लेकिन दे नहीं पाता, उसका फल अगले जन्म में मिलेगा क्योंकि वह देने के बराबर है। भगवान ने स्वीकार कर लिया। आधा लाभ तो हो गया।

मंदिर में जाकर एक व्यक्ति ने एक ही रुपया डाला जबकि किसी सेठ ने एक हजार के नोट वहाँ धर्म दान में दिए, यह देखकर आपके मन में होता है कि, 'अरे, मेरे पास होते तो मैं भी देता।' वह

आपका वहाँ जमा हो जाता है। यहाँ तो देने की कीमत नहीं है, भाव की कीमत है। वीतरागों का साइन्स है।

देने वाले का कभी कई गुना हो जाएगा, लेकिन वह कैसे? मन से देना है, वाणी से देना है और वर्तन से भी देना है, तब उसका फल तो, इस दुनिया में क्या नहीं मिलेगा, वह पूछो! अभी तो सब कहते हैं कि, फलाँ भाई के कारण मुझे देना पड़ा, वर्ना मैं नहीं देता। फलाँ साहब ने दबाव डाला इसलिए मुझे तो देने ही पड़े। तब वहाँ जमा भी वैसा ही होगा, हँ। वह तो हमने मन से, खुशी से दिया हो तो काम का।

क्या लोग ऐसा करते हैं? क्या किसी के दबाव के कारण देते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ-हाँ।

**दादाश्री :** अरे, कुछ तो रौब जमाने के लिए देते हैं। नाम व खुद की आबरू बढ़ाने के लिए। भीतर मन में ऐसा होता है कि देने जैसा नहीं है लेकिन जाने दो अपना नाम खराब दिखेगा, तब वैसा फल मिलता है। जैसा वह चित्रण करता, वैसा फल मिलता है।

जबकि किसी व्यक्ति के पास न हो और ऐसा कहे कि 'मेरे पास होते तो मैं भी देता' तो कैसा फल मिलेगा?

### दान, समझदारी से

एक भाई को मन में ज्ञान हुआ। क्या ज्ञान हुआ? 'ये लोग ठंड से मर जाते होंगे, यहाँ घर में ही ठंड में रहा नहीं जाता। अरे, सर्दी आने वाली है। इन फुटपाथ वालों का क्या होगा?' उसे ऐसा ज्ञान हुआ, यह एक तरह से ज्ञान ही कहा जाएगा न! ज्ञान हुआ और उनके संयोग अच्छे थे। बैंक में पैसे थे, तो सौ-सवा सौ कंबल ले आए, हल्की क्वॉलिटी के! और दूसरे दिन सुबह चार बजे जाकर, सब को ओढ़ा दिए, जहाँ सोए थे वहाँ जाकर ओढ़ा दिए। फिर पाँच-सात दिन बाद वहाँ वापस गए न, तो कोई कंबल नहीं दिखा। उन सब ने नए के नए बेचकर पैसे ले लिए थे।

अतः मैं कहता हूँ, 'अरे, ऐसे नहीं देना चाहिए, क्या ऐसे देना चाहिए?' उन्हें तो हाट (साप्ताहिक बाज़ार) से जो पुराने कंबल बिकते हैं, वे खरीदकर देने चाहिए तो वे कोई बाप भी नहीं खरीदेगा, उनसे। हमने उसके लिए सत्तर रुपयों का बजट रखा हो, एक व्यक्ति के लिए, तो सत्तर रुपयों में एक कंबल लाने के बजाय पुराने तीन मिलते हों तो तीन देना। तीनों ओढ़कर सो जाना, (उसे फिर) कोई बाप भी लेने वाला नहीं मिलेगा।

अतः इस काल में दान देना हो तो बहुत सोचकर देना। पैसा तो मूल स्वभाव से ही बुरा है। दान देने में भी बहुत सोचने पर ही दान दे पाओगे, वरना दान भी नहीं देते और पहले सही रुपया था न, तो जहाँ दो वहाँ वास्तविक दान ही होता था।

आजकल तो नकद रुपया नहीं देना चाहिए। आराम से कहीं से खाना लेकर बाँट देना चाहिए। मिठाई ले आए तो मिठाई बाँट देनी चाहिए। मिठाई का पैकेट देंगे तो आधी कीमत पर बेच देगा। अब इस दुनिया का क्या करें? आप तो आराम से चिवड़ा, मुरमुरे, यह सब जो है और पकोड़े लेकर, तोड़ कर दे देना। ले भाई! हर्ज क्या है? और यह दही लेता जा। वह पूछे, 'ऐसे तोड़ क्यों दिए?' उसे शंका न हो इसलिए। दही ले जा, ताकि तेरे दहीबड़े बन जाएँ। अरे, लेकिन क्या करें! ऐसा कुछ होना तो चाहिए न!

इसमें तो पार पा सकें, ऐसा नहीं है। और वे माँगने आएँ तभी देना लेकिन नकद मत देना क्योंकि उसका दुरुपयोग होता है। ऐसा अपने देश में ही है। पूरे वर्ल्ड में इस इन्डियन पज़ल को कोई सॉल्व नहीं कर सकता!

यह किस तरह, यह क्या है, इसको सॉल्व करने भेजें कि, 'भाई, हमारे यहाँ ऐसा क्यों है? ये कंबल दान में दिए वे कहाँ गए? उसकी खोज करो'। तब कहेंगे, 'सी.आई.डी. बुलाओ'। अरे भाई, यह सी.आई.डी. का काम नहीं है। हम तो यह बगैर सी.आई.डी. के पकड़ लेंगे।

यह पज़ल, इन्डियन पज़ल है। आपसे सॉल्व नहीं होगा। आपके देश में सी.आई.डी. से पकड़ लेना। हमारे देश वाले क्या करते हैं, वह हम जानते हैं! अगले दिन जाओ व्यापारी के वहाँ।

यानी पैसे में बरकत कब आएगी? कोई नियम या नीति होनी चाहिए। सामान्य रूप से तो होगा न! काल विचित्र है ज़रा इसलिए सामान्य नीति तो होनी चाहिए न! बिल्कुल ही ऐसा कैसे चलेगा?

सब बेच देते हैं, यहाँ तक कि बेटियाँ भी बेच देते हैं। लक्ष्मी के लिए तो बेटियाँ भी बेची हैं, वहाँ तक आ गए हैं! अरे, मत करना।

### कहने वाला विश्वसनीय

और कोई आपके हाथ से पाँच हज़ार डॉलर छीनकर भाग जाए तो आप क्या करोगे?

**प्रश्नकर्ता :** ऐसे तो बहुत छिन चुके हैं। सारी जायदाद भी चली गई है।

**दादाश्री :** तो क्या करते हो? मन में कुछ होता नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** कुछ नहीं।

**दादाश्री :** इतना अच्छा है, तब तो समझदार हो। छिन जाने के लिए ही आते हैं। यहाँ नहीं गए तो वहाँ चले ही जाने हैं। इसलिए अच्छी जगह पर डाल देना, वरना अन्य जगह पर तो चले ही जाने हैं। पैसों का स्वभाव ही ऐसा है कि यदि अच्छे रास्ते नहीं गए तो गलत रास्ते चला जाएगा। सही रास्ते कम गए हैं और गलत रास्ते ज़्यादा गए।

**प्रश्नकर्ता :** अच्छा रास्ता बताइए। कैसे पता चलेगा कि अच्छा रास्ता कौन सा और गलत रास्ता कौन सा?

**दादाश्री :** अच्छा रास्ता तो जैसे, मैं एक पैसा नहीं लेता। मैं अपने घर के कपड़े पहनता हूँ। आपको समझ में आया न? इस देह का मैं मालिक नहीं हूँ! छब्बीस सालों से इस देह का मैं मालिक नहीं



हूँ। इस वाणी का मैं मालिक नहीं हूँ। अब जब आपको कुछ भरोसा आ जाए, मुझ पर थोड़ा विश्वास आए, तब मैं आपको बताऊँ कि, 'भाई, इस जगह जैसे डालो तो अच्छे रास्ते जाएगा। आपको मुझ पर थोड़ा भरोसा आए, तब मैं बताऊँगा तो कोई हर्ज है ?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** वही रास्ता अच्छा है और कौन सा? कहने वाला विश्वसनीय होना चाहिए। विश्वसनीय! जिसका ज़रा सा भी कमीशन न हो, समझ में आया न! एक पाई का भी उसमें कमीशन न हो तब वे विश्वसनीय कहलाते हैं! क्या कहा? ऐसा बताने वाला हमें मिला नहीं। हमें तो हर चीज़ में कमीशन... (जाए ऐसा दिखाने वाले मिले)!

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी, हमें रास्ता दिखाते रहना।

**दादाश्री :** जहाँ कमीशन है वहाँ धन गलत रास्ते पर जाता है। वहाँ तो अवश्य, जहाँ किसी भी तरह का कमीशन है, वह गलत रास्ता है! अब तक तो इस संघ के चार आने भी, किसी भी कार्यकर्ता या उसके खाते में खर्च नहीं हुए! सब अपने घर के पैसों से काम चला लेते हैं ऐसा यह संघ है, पवित्र संघ! आपको समझ में आया न! यानी यह सुमार्ग है। जब देने हों तब देना और वह भी यदि हों तो, न हों तो मत देना। अब ये भाई कहें कि, 'मैं फिर से दूँ, दादाजी?' तो मैं कहूँगा, 'नहीं भाई, आप अपना व्यापार करते रहो।' अब इन्होंने एक बार तो दे दिए! यहाँ दोबारा देने की ज़रूरत नहीं है! यदि हों, तो हैसियत के मुताबिक देना! दस रतल वज़न उठा सकते हो तो आठ रतल वज़न ही उठाओ, अठारह रतल मत उठाओ। यह दुःखी होने के लिए नहीं करना है! लेकिन अतिरिक्त धन गलत रास्ते न जाए इसलिए यह रास्ता दिखाते हैं। यह तो, चित्त सिर्फ लोभ में ही रहा करता है, घूमता रहता है! इसलिए ज्ञानी पुरुष बताते हैं कि फलों जगह देना।

## सरप्लस का ही दान

**प्रश्नकर्ता :** सरप्लस किसे कहते हैं ?

**दादाश्री :** आप आज दो और कल चिंता हो जाए ऐसी स्थिति आए उसे सरप्लस नहीं कहते। समझ में आया न? अगले छः महीनों तक आपको परेशानी नहीं आएगी, आपको ऐसा लगे, तो काम करना, वर्ना नहीं।

वैसे यह काम करोगे तो आपको परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। वह तो देखनी ही नहीं पड़ेगी। यह काम तो अपने आप ही पूरा हो जाता है। यह तो भगवान का काम है। जो भी लोग करते हैं उनकी अपने आप ही पूर्ति हो जाती है। फिर भी मुझे आपको सचेत करना चाहिए। मुझे क्यों आपसे कहना चाहिए कि बिना सोचे समझे करना? अंधाधुंध करना, ऐसा क्यों कहूँ मैं? मैं तो आपके हित के लिए सचेत करता हूँ कि पिछले जन्म में आपने दिया था इसलिए इस भाई को अभी मिल रहे हैं। और अभी देंगे तो फिर से मिलेगा। यह तो आपका ही ओवरड्राफ्ट है। मुझे कोई लेना-देना नहीं है। मैं तो आपसे अच्छी जगह पर दान दिलवाता हूँ, बस इतना ही है। पिछले जन्म में जो दिया था, वह इस जन्म में ले रहे हैं। क्या सब में अक्ल नहीं है? तब कहते हैं, 'अक्ल से नहीं दिए, दिखावटी ही हैं! यदि आपने बैंक में ओवरड्राफ्ट क्रेडिट किया होगा तो आपके हाथ में चेक आएगा। यानी कि बुद्धि ठीक हो न, तो फिर से सब जॉइन्ट हो जाएगा।

और कुछ पूछना हो तो पूछना सब। आपके सारे खुलासे हो जाएँगे!

यहाँ पर किसी को देना हो तो श्री सीमंधर स्वामी का मंदिर बन रहा है उसमें देना। समझ में आया न? वह भी खुद के पास सहूलियत साधन हो तभी, वर्ना नहीं।

### **अनन्य भक्ति हो, वहाँ दे पाते हैं**

हमें मोक्ष में जाना है तो वहाँ मोक्ष में जा पाएँ उतना पुण्य चाहिए। यहाँ आप सीमंधर स्वामी का जितना करोगे, उसमें आपका सब आ गया। बहुत हो गया। इसमें ऐसा नहीं है कि यह कम है।

उसमें तो आपने (देने के लिए) जो भी सोचा हो न, वह सब करो। तो बहुत हो गया। फिर उससे ज़्यादा कुछ करने की जरूरत नहीं है। फिर जो अस्पताल या और कुछ बनवाते हो, वह सब अलग रास्ते पर जाता है। वह भी पुण्य तो है लेकिन पापानुबंधी पुण्य। अनुबंध भी पाप का करवाता है और वह तो पुण्यानुबंधी पुण्य है।

### सीमंधर स्वामी

अपने यहाँ सीमंधर स्वामी का नाम तो सुना है न?

वहाँ ऊपर तस्वीर है! वे अभी तीर्थकर हैं महाविदेह क्षेत्र में! अभी महाविदेह क्षेत्र में तीर्थकर हैं। वे हाजिर हैं आज।

सीमंधर स्वामी की उम्र कितनी, साठ-सत्तर साल की होगी? पौने दो लाख साल की उम्र है! अभी और सवा लाख साल जीवन बाकी है! उनके साथ तार जोड़ देता हूँ क्योंकि वहाँ जाना है। अभी एक जन्म बाकी रहेगा। यहाँ से सीधा मोक्ष नहीं होने वाला। अभी एक जन्म बाकी रहेगा। उनके पास बैठना है इसलिए तार जोड़ देता हूँ।

और ये भगवान पूरे वर्ल्ड का कल्याण करेंगे। पूरे वर्ल्ड का कल्याण होगा! पूरे वर्ल्ड का कल्याण होगा, उनके निमित्त से क्योंकि वे जीवित हैं। जो जा चुके हैं वे कुछ भी नहीं कर सकते। (उनकी भक्ति से) सिर्फ पुण्य बंधता है।

### वे दोनों एक ही हैं

**प्रश्नकर्ता :** अभी ये सब लोग, जो कीर्तन कर रहे हैं, 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो', उसमें दादा भगवान की पहचान कैसे करवाते हैं?

**दादाश्री :** ये दादा भगवान नहीं हैं। ये जो दिखाई देते हैं, वे दादा भगवान नहीं हैं। जो वास्तव में दादा भगवान हैं, जो सारे वर्ल्ड के मालिक हैं, सारे वर्ल्ड के भगवान हैं, उन दादा भगवान की बात

कर रहे हैं। ये दादा भगवान नहीं, भीतर जो प्रकट हुए हैं, चौदह लोकों के नाथ प्रकट हुए हैं, मैं भी उन भगवान को नमस्कार करता हूँ। दिस इज दी कैश बैंक! बोलते ही तुरंत फल देने वाली है। बीमार व्यक्ति दवाखाने में बोले तो तुरंत फल मिलता है।

**प्रश्नकर्ता :** ये सब जब दादा भगवान का कीर्तन कर रहे थे, तब आप भी कुछ बोलकर कीर्तन कर रहे थे, वह किसका?

**दादाश्री :** मैं भी बोल रहा था न! मैं दादा भगवान को नमस्कार करता हूँ। मेरी चार डिग्री कम है और भगवान की तो तीन सौ साठ डिग्री हैं। मेरी तीन सौ छप्पन डिग्री है। मेरी चार डिग्री कम हैं। इसलिए मैंने पहले बोलने की शुरुआत की। तभी तो ये सब बोलते हैं। उनकी भी कम हैं। क्या आपकी कम नहीं हैं?

**प्रश्नकर्ता :** ये दादा भगवान आप बुलवाते हैं वे, और ये सीमंधर स्वामी, ऐसे उनमें संबंध क्या है?

**दादाश्री :** ओहोहो! वे तो एक ही हैं लेकिन इन सीमंधर स्वामी को दिखाने का कारण यह है कि अभी मैं देह सहित हूँ इसलिए मुझे वहाँ जाने की ज़रूरत है। क्योंकि जब तक सीमंधर स्वामी के दर्शन नहीं होंगे, तब तक मुक्त नहीं हो सकते। एक जन्म बाकी रहेगा। मुक्ति तो, इन मुक्त हो चुके (भगवान) के दर्शन से मिलेगी। हालांकि मुक्त तो मैं भी हो चुका हूँ लेकिन वे संपूर्ण मुक्त हैं। वे हमारी तरह लोगों को ऐसा नहीं कहते कि, 'ऐसे आना या वैसे आना, मैं आपको ज्ञान दूँगा।' ऐसी सारी खटपट नहीं करते। आपको समझ में आया न?

### ये हैं जीते-जागते देव

लक्ष्मी के सदुपयोग का सब से सही तरीका कौन सा है अभी? तब कोई कहे, 'बाहर दान देना, वह? कॉलेज में पैसे देना, वह? तब कहते हैं, 'नहीं हमारे इन महात्माओं को चाय-पानी, नाश्ता कराओ। उन्हें संतुष्ट करना, वह सब से अच्छा रास्ता है। ऐसे महात्मा वर्ल्ड में

कहीं नहीं मिलेंगे। वहाँ सत्युग ही दिखता है और सब आए हों तो आपका किस तरह से भला हो दिन भर यही भावना।

यदि सत्संग में जाओ और धन न हो न, तो महात्माओं के वहाँ खाओ, पीओ, रहो, वह सब आपका ही है। आमने-सामने, परस्पर है। जिनके पास सरप्लस है, वे उपयोग करें।

यदि अधिक हो तो मनुष्यमात्र को सुखी करो, वह अच्छा है, और उससे भी आगे, जीवमात्र के सुख के लिए खर्च करो।

बाकी, स्कूलों में दोगे, कॉलेजों में दोगे तो उससे नाम होगा लेकिन यह सही है। ये महात्मा बिल्कुल सही हैं उसकी गारन्टी देता हूँ। भले, चाहे कैसे भी हों। धन-दौलत कम होंगे फिर भी उनकी नीयत साफ है, भावना बहुत अच्छी है। प्रकृति तो अलग-अलग होती ही है।

ये महात्मा तो जीते-जागते देवता हैं। आत्मा भीतर प्रकट हो चुका है। एक क्षण भी आत्मा को भूलते नहीं हैं। वहाँ आत्मा प्रकट हो चुका है। वहाँ भगवान हैं।

### इस तरह समझाना भी पड़ता है

एक व्यक्ति मुझसे सलाह माँग रहा था कि, 'मुझे देना है, वह किस प्रकार से देना है?' तब मैंने सोचा, 'इन्हें कैसे देना है? तो कहा, 'हाँ'। तब मैंने उसे कहा, 'इस तरह से देना'। मैं जानता था कि वह व्यक्ति दिल का बहुत साफ और दिल का भोला है। उसे सही समझ दो।

बात ऐसी बनी थी कि हम एक भाई के वहाँ गए थे। उन्होंने एक व्यक्ति को मुझे छोड़ने के लिए भेजा। सिर्फ छोड़ने के लिए ही। उसने डॉक्टर से कहा, 'दादाजी को गाड़ी में छोड़ने में जाऊँगा। आप मत जाना। मैं छोड़ आऊँगा'। वे सिर्फ छोड़ने के लिए आए। और ऐसे में बातचीत हुई! वे भाई मुझसे सलाह माँग रहे थे कि, 'मुझे कैसे देना

हैं तो कहाँ देने चाहिए, किस प्रकार से देने चाहिए?’ ‘बंगला बनवाया है, तब तो पैसे कमाए होंगे, फिर अब?’ तब उन्होंने कहा, ‘बंगला बनवाया, सिनेमा थियेटर बनवाया। अभी हाल ही में मेरे गाँव में सवा लाख रुपये तो दान में दिए हैं’। तब मैंने कहा, ‘अधिक कमाए हों तो एकाध आप्तवाणी छपवा देना’। तुरंत ही उन्होंने कहा, ‘आप कहें उतनी ही देर है। ऐसा तो मुझे पता ही नहीं था। मुझे कोई समझाता ही नहीं’। फिर कहने लगे कि, ‘इस महीने में तुरंत ही छपवा दूँगा’। फिर पहुँचकर पूछने लगे कि, ‘कितना खर्च होगा?’ तब मैंने कहा कि, ‘बीस हजार होंगे’। उन्होंने तुरंत कहा कि, ‘इतनी पुस्तकें मुझे छपवा देनी है!’ मैंने उस भाई को जल्दबाजी करने से रोका।

यानी ऐसे भले लोग हों न, जिन्हें समझ में न आता हो दान देना, और वे पूछें तो उन्हें बता देते हैं। हम जानते हैं कि वह भोला है। उन्हें समझ में नहीं आता तो उन्हें बता देते हैं। बाकी, समझदार को तो हमें कहने की ज़रूरत नहीं है न! वर्ना उसे दुःख होगा। यदि दुःख हो तो ऐसा हमें नहीं चाहिए। हमें पैसों की ज़रूरत ही नहीं है। सरप्लस हो तभी देना। क्योंकि इस जगत् में ज्ञानदान जैसा कोई दान नहीं!

क्योंकि ज्ञान की पुस्तकें पढ़ने से कितना अधिक परिवर्तन हो जाएगा इसलिए हों तो देना, न हों तो हमें वहाँ कोई ज़रूरत नहीं है!

### स्पर्धा नहीं होती यहाँ

और स्पर्धा करने के लिए वैसा बोलने की ज़रूरत नहीं है। यह कोई स्पर्धा की लाइन्स वाला नहीं है कि यहाँ बोली लगाई कि इन्होंने इतना घी बोला और इतना यह बोला! वीतरागों के वहाँ ऐसी स्पर्धा नहीं होती लेकिन यह सब तो दूषमकाल में घुस गया है। दूषमकाल के लक्षण हैं सारे। वीतरागों के वहाँ स्पर्धा नहीं होती। स्पर्धा करना तो एक भयंकर रोग है। लोग स्पर्धा में पड़ते हैं। हमारे यहाँ ऐसा कोई लक्षण नहीं है। यहाँ पैसों की माँग नहीं है।

## घर के घी के दीये

यानी यहाँ पर लक्ष्मी का लेन-देन है ही नहीं। यहाँ पर लक्ष्मी है ही नहीं। यहाँ से पुस्तकें फ्री ऑफ कॉस्ट ले जाओ। यहाँ पैसों का लेन-देन नहीं है। यहाँ रोज़ आरती होती है, फिर भी दीये के घी के लिए कोई नीलामी नहीं कि यहाँ घी के लिए बोली लगाओ।

दीये तो सब अपने-अपने घर से करते हैं। रोज़ उनके वहाँ सत्संग होता है न, सारे दीये उन्हीं के, खर्च भी उन्हीं के न! यहाँ घी के पैसों की वसूली नहीं करते।

## लेते हुए भी कितनी सूक्ष्म समझ!

यहाँ तो सिर्फ पुस्तकें जो छपती हैं उतनी ही और उतना विश्वास है कि अपने आप ही पुस्तकों के लिए पैसे आ जाएँगे। उसके लिए पीछे निमित्त हैं, वे सब मिल जाते हैं। उनके लिए कोई नीलामी लगानी या भीख नहीं माँगनी पड़ती। किसी के पास माँगने से उसे दुःख होगा और कहेगा, इतने सारे? 'इतने सारे' कहने के साथ ही उसे दुःख होता है, ऐसा हमें भरोसा हो गया न? और किसी को दुःख हुआ तो अपना धर्म रहा नहीं इसलिए हम ज़रा भी माँग नहीं सकते। वह खुद अपनी मर्ज़ी से कहता हो तो हम पैसे ले सकते हैं। वे खुद ज्ञानदान को समझे तभी ले सकते हैं।

इसलिए जिस-जिस ने दिए हैं न, वे खुद ज्ञानदान समझ कर देते हैं। अपने आप ही देते हैं। अभी तक माँगा नहीं है।

## पुस्तकें छपवाने की व्यवस्था

यहाँ पुस्तकों के पैसे नहीं लगते। (सत्संग के लिए कहीं ठहरो तो) मकान का किराया भी नहीं लगता। पुस्तकें छपवाने वाले पुस्तकें छपवाते हैं। यहाँ किसी से पैसे नहीं लिए जाते। जहाँ पैसों का व्यवहार हो वहाँ भगवान नहीं होते और जहाँ भगवान होते हैं वहाँ पैसे नहीं लिए जाते। माया घुसी यानी सब घुस गया।

अब कोई धनवान व्यक्ति होगा तो वह कहेगा, 'हमें पुस्तकें छपवानी हैं, दो सौ-पाँच सौ', तो हम उन्हें अनुमति देते हैं। उनके पास सरप्लस पैसे हों, तभी। वर्ना तू ही ये पुस्तकें ले जा न यहाँ से! उसमें हर्ज ही क्या है? उसकी कीमत क्या है? वह पुस्तक लाओ, उस पर उसकी कीमत लिखी हुई है। उतनी ही कीमत ले सकते हैं। अन्य कोई कीमत नहीं ली जा सकती। अब ये जो रुपये आ रहे हैं, वे भी नहीं लेते हैं। वे तो काला बाज़ार के होंगे या सफेद बाज़ार के, क्या ठिकाना? सफेद ज़रा कम ही होते हैं लोगों के पास! वह, *ऑन* के होते हैं! यहाँ तो लक्ष्मी का व्यवहार है ही नहीं। पुस्तक की कीमत लिखी हुई है?

'परम विनय और मैं कुछ नहीं जानता वह भाव', यहाँ तो यही कीमत होती है। यहाँ तो मोक्ष देना है। मोक्ष हो वहाँ तो परम विनय ही होता है और कुछ नहीं होता। परम विनय से मोक्ष होता है और कुछ नहीं करना है।

### यह है अमूल्य वाणी

पुस्तकों के पैसे तो मिलते ही रहते हैं। हिन्दुस्तान कोई खाली नहीं हो गया है। लोगों के लिए तो इसकी कीमत नहीं है, लेकिन जो वणिक हैं, उनके लिए तो बहुत कीमत है और जिनके लिए कीमत है, वे पैसों के बारे में सोचते ही नहीं हैं न! और पुस्तकें फ्री ऑफ कॉस्ट दी जाती हैं क्योंकि यह आप्तवाणी है। उसके पैसे नहीं लेने हैं।

### दादा के हृदय की बात

पुस्तकों के लिए इतने पत्र आते हैं कि हम कैसे कर पाएँगे, यही परेशानी है। इसलिए अब जब अन्य लोग छपवाएँगे, तब। हम तो ये फ्री ऑफ कॉस्ट देते हैं। सिर्फ पहली बार, फर्स्ट टाइम। बाद में लोग अपने आप छपवा लेंगे। हमारा यह जो ज्ञान प्रकट हुआ है न, वह मित न जाए इसलिए छपवा लेनी हैं, और कोई न कोई मिल ही



जाता है। अपने आप ही तैयार हो जाते हैं। हमारे यहाँ कोई चीज़ अनिवार्य नहीं है। हमारे यहाँ 'लॉ' नहीं है। 'नो लॉ, वही लॉ।'

यहाँ ऐसा कोई ऑफिस नहीं है, जमा-उधार नहीं है या चार आने भी पूंजी नहीं है। ये भाई दो हजार दे गए थे तो मैंने कहा, 'वापस लौटा दो।' फिर उन्होंने खुद के नाम पर ही बैंक में रखे। यहाँ कौन संभाले?

### यहाँ पैसे की ममता ही नहीं

जहाँ पैसा है, वहाँ धर्म नहीं है। पैसों की ज़रूरत ही कहाँ है? यदि पैसा हो तो फिर ममता खड़ी रहेगी, संभालने की ममता। 'हमने' एक बार पाँच हजार रुपये इकट्ठे करके रखे थे। यहाँ लोगों ने दिए थे। मैंने सोचा, यह क्यों सिर पर लिया? और फिर याद रखना? कोई पुस्तक छपवा दो। अब फिर से मत लेना। लेना ही नहीं। झंझट ही नहीं है न!

यहाँ पुस्तक छपवाई होगी न, तो आपके पैसों का सही उपयोग होगा और ऐसा तभी हो पाएगा जब पुण्य होगा। पैसे शुद्ध होंगे तभी छपवा सकते हैं वर्ना नहीं छपवा सकते। और वह मेल नहीं बैठेगा न!



[ 8 ]

## लक्ष्मी और धर्म

### दान कहाँ देना चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** कुछ धर्मों में ऐसा कहा गया है कि जो भी कमाया हो उसमें से कुछ प्रतिशत दान करो। पाँच-दस प्रतिशत दान करो। तो वह कैसा है?

**दादाश्री :** धर्म में दान करने में कोई हर्ज नहीं है लेकिन जहाँ पर धर्म की संस्था हो और लक्ष्मी का धर्म में सदुपयोग होता हो, वहाँ दो। जहाँ दुरुपयोग होता हो, वहाँ मत दो। किसी और जगह पर दो।

पैसा सदुपयोग में जाए, खास तौर पर ऐसा ध्यान रखो वर्ना यदि आपके पास अधिक पैसा होगा तो आपको अधोगति में ले जाएगा। इसलिए कहीं भी उन पैसों का सदुपयोग कर लो। पर इस वजह से धर्माचार्यों को पैसे नहीं लेने चाहिए।

### जैसा आया, वैसा जाएगा...

ये तो, भगवान के नाम पर, धर्म के नाम पर सब चल रहा है!

**प्रश्नकर्ता :** दान देने वाला व्यक्ति तो ऐसा मानता है कि मैंने श्रद्धा से दिया है। लेकिन जिसे उपयोग करना है, वह कैसा करता है, उसका हमें क्या पता चलेगा?

**दादाश्री :** लेकिन वह तो, यदि अपने रुपये गलत होंगे तभी वे उल्टे रास्ते जाएँगे। धन जितना गलत, उतना गलत रास्ते खर्च होता है और शुद्ध धन अच्छे रास्ते खर्च होता है!

### वहाँ है सत्संग

जहाँ पर पैसों की बातें हैं, स्त्रियों की बातें हैं, वहाँ निरा कुसंग है। जहाँ धर्म की बात हो, सच्चे सुख की बातें हों, जहाँ किसी को सुखी करने की इच्छाएँ, भावनाएँ हों, ऐसी सब बातें हों, वहाँ सत्संग है।

### तीन गुण होने चाहिए

मोक्षमार्ग में दो चीज़ें नहीं होनी चाहिए। स्त्री के विचार और लक्ष्मी के विचार! जहाँ स्त्री का विचार भी हो, वहाँ पर धर्म नहीं होता और जहाँ लक्ष्मी का विचार भी हो, वहाँ धर्म नहीं होता। इन दो माया से ही तो यह संसार खड़ा है। हाँ, इसलिए वहाँ पर धर्म ढूँढना भूल है। जबकि अभी लक्ष्मी के बिना कितने केन्द्र चल रहे हैं?

**प्रश्नकर्ता :** एक भी नहीं।

**दादाश्री :** वह माया छूटती नहीं है न! गुरु में भी माया घुस चुकी है। कलियुग है न, इसलिए घुस जाती है न, थोड़ी-बहुत? अतः जहाँ पर स्त्री से संबंधित विचार हैं, जहाँ पैसों से संबंधित लेन-देन है, वहाँ सच्चा धर्म नहीं हो सकता। सांसारिक लोगों के लिए नहीं लेकिन जो उपदेशक होते हैं न, जिनके उपदेश के आधार पर चलते हैं, वहाँ यह नहीं होना चाहिए। वर्ना सांसारिक लोगों के वहाँ भी ऐसा है और आपके यहाँ भी ऐसा? ऐसा नहीं होना चाहिए।

और तीसरा क्या? सम्यक् दृष्टि होनी चाहिए।

अतः जहाँ लक्ष्मी और स्त्री संबंध हो वहाँ मत रुकना। देखकर गुरु बनाना। लीकेज वाला हो तो मत बनाना। ज़रा सा भी लीकेज नहीं चाहिए। गाड़ी में घूमते हों तब भी हर्ज नहीं है लेकिन यदि चारित्र में फेल हो तो हर्ज है। बाकी, यदि अहंकार हो तो उसमें हर्ज नहीं है,

कि बाप जी, बाप जी करने से खुश हो जाते हैं। तो उसमें हर्ज नहीं है। चारित्र में फेल न हो तो लेट गो करना चाहिए। सब से मुख्य चीज है, चारित्र।

### व्यवहार कैसा होना चाहिए?

व्यवहार चारित्र यानी व्यवहार में किसी को दुःख न हो वैसा सब वर्तन हो। दुःख देने वाले को भी दुःख न हो, ऐसा वर्तन, ऐसा व्यवहार व चारित्र और विषय बंद होना चाहिए। व्यवहार चारित्र में दो मुख्य चीजें कौन सी हैं? कि विषय बंद होना चाहिए। कौन सा विषय? स्त्री विषय और दूसरा लक्ष्मी बंद। जहाँ लक्ष्मी हो वहाँ चारित्र नहीं हो सकता।

**प्रश्नकर्ता :** जहाँ लक्ष्मी हो वहाँ चारित्र नहीं होता, यह कैसे?

**दादाश्री :** वह चारित्र कहलाएगा ही नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन उसमें सद्व्यवहार भी होता है न?

**दादाश्री :** नहीं। सद् करते हैं तभी से दुर्व्यवहार शुरू होता है। सद् भी नहीं और असद् भी नहीं, ऐसा व्यवहार ही नहीं करना है। हमारा बीस सालों से, पच्चीस सालों से पैसों का व्यवहार नहीं है किसी भी प्रकार का। फिर कोई झंझट ही नहीं है न! चार आने भी नहीं होते हैं मेरी जेब में कभी। ये बहन हमारा सब मेनेज करती हैं!

### उसमें है दृष्टि की भूल

**प्रश्नकर्ता :** लक्ष्मी और स्त्री, ये सच्ची धार्मिकता के विरुद्ध है। लेकिन कहा जाता है कि स्त्रियाँ तो अधिक धार्मिक होती हैं।

**दादाश्री :** स्त्री में धार्मिकता होने में कोई दिक्कत नहीं है। स्त्रियाँ धर्म में हों तो हर्ज नहीं है लेकिन दृष्टि का हर्ज है। कुविचार का हर्ज है। स्त्रियों को भोग का साधन मानते हो, उसमें हर्ज है। वह आत्मा है, भोग का साधन नहीं है।

गुरु भी अच्छे तैयार होंगे। अब सब बदलने वाला है। अच्छे यानी शुद्ध। हाँ, यदि गुरु को पैसों की मुश्किल हो तो पूछना चाहिए कि, 'आपके खुद के निर्वाह के लिए किस चीज़ की ज़रूरत है?' बाकी, अन्य और कुछ नहीं होना चाहिए। या फिर बड़ा बनना है, फलाना होना है, ऐसा नहीं होना चाहिए।

### तो वह कहलाती है रामलीला

बाकी, जहाँ लक्ष्मी ली जाती है, फीस के रूप में लक्ष्मी ली जाती है, कर के रूप में ली जाती है, वहाँ धर्म नहीं होता। जहाँ पैसे हों वहाँ धर्म नहीं होता और जहाँ धर्म हो वहाँ पैसे नहीं होने चाहिए। यानी कि समझ में आए ऐसी बात है न? जहाँ विषय और पैसे हों, वहाँ गुरु है ही नहीं।

धर्म में यदि फीस आ जाए न, तभी से उसे पहले के ज्ञानी रामलीला कहते थे। रामलीला वाले पैसे पहले नहीं लेते थे। बाद में लेते थे। ये तो पहले ही ले लेते हैं। जैसे सिनेमा वाले पहले ही पैसे ले लेते हैं न? उसके बाद ही भीतर जाने देते हैं न? फिर सिनेमा अच्छा न लगे तब भी हम पैसे वापस नहीं ले सकते। जहाँ मोक्ष है वहाँ फीस नहीं होती। डॉक्टर भी फीस लें और मोक्ष वाले भी फीस लें तो दोनों में फर्क क्या है? मोक्ष वाले कहीं भी फीस लेते होंगे? कहीं भी नहीं लेते?

### पैसा कहाँ खर्च करना?

अब पैसे सही मार्ग में जाए ऐसा करना। सही मार्ग पर यानी खुद के अलावा औरों के लिए खर्च करना। सिर्फ गुरु को ही नहीं दे देना है। गुरु तो फिर अपनी बेटियों या बेटों की शादी करवाएँगे! जिन्हें परेशानी हो, दुःखी हों, उन्हें कुछ दे देना या फिर अच्छी पुस्तकें छपवाकर दी जाएँ, तो लोगों के लिए हितकारी होंगी और वह ज्ञानदान कहा जाएगा। सुमार्ग में, धर्म दान में लगा रहे हों तो जाने देना। और

वह तो यदि पूर्वजन्म में दिए होंगे तभी अभी ले पाते हैं। यदि दिए ही नहीं होंगे तो फिर लेना क्या?

### पधरावनी या पज़लें

कुछ लोग पधरावनी करवाकर पैसे ले लेते हैं। गुरु लोग तो पैर रखने के (पदार्पण करना) भी रुपये लेते हैं। इन गरीबों के घर में पैर रखो न! गरीबों के साथ क्यों ऐसा करते हो? क्या गरीबों की ओर दृष्टि नहीं करनी? एक, पधरावनी करवाने वाले से मैंने कहा कि, 'अरे, रुपये गवाँ रहे हो और बेकार ही समय खराब कर रहे हो। उनकी पधरावनी करवाने के बजाय किसी गरीब की पधरावनी करवा जिसमें दरिद्रनारायण पधारे हों। इन सब गुरुओं की पधरावनी का क्या करना है?' लेकिन पब्लिक ऐसी लालची है कि कहती है कि, 'चरण पड़ेंगे' तो अपना काम बन जाएगा। बेटे के घर बेटा हो जाएगा, पंद्रह साल से नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** लोगों को श्रद्धा है, इसलिए।

**दादाश्री :** नहीं, लालची हैं इसलिए! श्रद्धा नहीं है। उसे श्रद्धा नहीं कहेंगे। लालची।

ये तो मुझसे भी लोग कहते हैं कि, 'दादा ने ही यह सब दिया है।' तब मैं कहता हूँ कि क्या दादा कुछ देते होंगे? लेकिन सारा श्रेय दादाजी को दे देते हैं! आपका पुण्य और मेरा यशनाम कर्म, मुझे यश मिलना होगा तो मिलता ही रहता है। हाथ लगाऊँ तो आपका काम हो जाता है। जबकि ये सब कहते हैं, 'दादाजी, यह सब आप ही करते हैं।' मैं कहता हूँ कि, 'नहीं, मैं नहीं करता। यह सब आपका ही आपको मिला है, मैं क्यों करूँ? मैं क्यों यह झंझट मोल लूँ? मैं क्यों इन तूफानों में पड़ूँ?' क्योंकि मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। जिनकी कोई इच्छा नहीं है, किसी चीज़ की भीख नहीं है, तो वहाँ अपना काम निकाल लो।

मैं तो क्या कहता हूँ कि हमारी पधरावनी करवाओ लेकिन लक्ष्मी

की वांछना पूर्वक मत करना। ठीक है, ऐसा कोई निमित्त हो, तो हमारी पधरावनी करवा लो।

### यहाँ मीठा-मीठा बोलने से किसी को 'लाभ' नहीं होगा

**प्रश्नकर्ता :** घर के उद्धार के बजाय खुद का उद्धार हो जाए, ऐसा तो कर सकते हैं या नहीं?

**दादाश्री :** हाँ, सब कर सकते हैं। सब हो सकता है। लेकिन लक्ष्मी की वांछना नहीं होनी चाहिए। ऐसी नीयत नहीं होनी चाहिए। और यदि आप मुझे फोर्स करके उठाकर ले जाओ, तो क्या उसे पधरावनी कहेंगे? पधरावनी तो राज़ी खुशी से होनी चाहिए। फिर चाहे आप मुझे शब्दों से राज़ी करो या कपटजाल से राज़ी करो। लेकिन मैं कपटजाल से राज़ी हो जाऊँ ऐसा हूँ नहीं। सारे वर्ल्ड को मैं बनाकर बैठा हूँ और सारे ब्रह्मांड का मैं स्वामी हो चुका हूँ।

हमें भी ठगने वाले आते हैं, मीठा-मीठा बोलने वाले आते हैं लेकिन मैं नहीं ठगा जाता! हमारे पास लाखों लोग आते होंगे, वे मीठा-मीठा बोलते हैं, सब करते हैं लेकिन राम तेरी माया...! और यहाँ किसी को मीठा-मीठा बोलने से कोई लाभ नहीं होता! वे समझ जाते हैं कि दादा के पास कोई बात नहीं बनेगी, इसलिए लौट जाते हैं! ऐसे गुरु देख लिए हैं, सभी ठग गुरुओं को देख लिया है। ऐसे गुरु आएँ तो मैं पहचान जाता हूँ कि ये आए हैं। ठग को गुरु ही कहेंगे न? और क्या कहेंगे? 'ठग' नहीं कह सकते, गुरु ही कहेंगे न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** ऐसे बहुत से मिले हैं। उनके मुँह पर कुछ नहीं कहता। वे अपने आप ही उकता जाते हैं कि, 'मैं यहाँ कहने आया हूँ लेकिन ये कुछ सुनते ही नहीं हैं। इतना कुछ देने आया हूँ', लेकिन फिर वे उकता जाते हैं कि, 'इन दादा के पास कोई बात बने ऐसा नहीं लगता। यह खिड़की भविष्य में खुलेगी नहीं।' अरे, मुझे कुछ

नहीं चाहिए, क्यों खिड़की खोलने आए हो? जिसे चाहिए वहाँ जाओ न! चाहे कोई भी आए, वापस भेज देता हूँ कि, 'भाई, यहाँ नहीं'।

लोग तो कहने आएँगे कि, 'आओ चाचा', आपके बगैर तो मुझे अच्छा ही नहीं लगता। 'चाचा, जितना आप कहेंगे उतना काम कर दूँगा आपका। जितना कहेंगे उतना सब, आपके पाँव दबा दूँगा।' अरे, यह तो मीठा-मीठा बोलकर खुश कर रहा है। वहाँ बहरे हो जाना। समझ में आया न?

अतः अब सरल हो गया है, तो अब अपना काम पूरा कर लो। इतना सरल नहीं आएगा। ऐसा चान्स फिर नहीं आएगा। यह चान्स उच्च प्रकार का है न, तो यह सारी मिठास कम होने दो न! उस मिठास में मज़ा नहीं है। मीठा-मीठा बोलने वाले लोग तो मिलेंगे लेकिन उसमें आपका हित नहीं है। इसलिए अब इस एक जन्म में मीठे का शौक छोड़ दो! अब तो आधा ही जीवन बचा है न? अब पूरा जीवन कहाँ रहा है?

### प्योर ही प्योर बोल सकते हैं

**प्रश्नकर्ता** : आपने ऐसा कहा। अन्य कोई ऐसा नहीं कहता।

**दादाश्री** : हाँ, लेकिन प्योर हुआ हो तो बोलेगा न! वर्ना वह कैसे बोलेगा? उन्हें तो दुनिया का लालच चाहिए और दुनिया के सुख चाहिए। वे क्या बोलेंगे? इसलिए प्योरिटी होनी चाहिए। पूरे वर्ल्ड की चीजें हमें दें तो भी हमें उनकी ज़रूरत नहीं है। इस वर्ल्ड का सोना हमें दे दे तब भी हमें उसकी ज़रूरत नहीं है। सारे वर्ल्ड के रुपये हमें दे तब भी हमें नहीं चाहिए। स्त्री संबंधी विचार ही नहीं आते। यानी हमें इस जगत् में किसी भी प्रकार की भीख नहीं है। आत्मदशा प्राप्त करना क्या कोई आसान काम है?

### शुद्ध चारित्र ही चाहिए

**प्रश्नकर्ता** : यानी कि किसी भी गुरु का व्यक्तिगत चारित्र शुद्ध होना चाहिए।



**दादाश्री :** हाँ, गुरु का चारित्र संपूर्ण शुद्ध होना चाहिए। शिष्य का चारित्र न भी हो लेकिन गुरु का चारित्र तो एक्जैक्ट होना चाहिए। गुरु यदि बिना चारित्र के हैं तो वे गुरु ही नहीं हैं, उसका मतलब ही नहीं है। संपूर्ण चारित्र चाहिए। अगरबत्ती चारित्रवान होती है। इतने रूम में यदि पाँच-दस अगरबत्तियाँ जल रही हों तो पूरा रूम सुगंधित हो जाता है, तब फिर क्या चारित्रहीन गुरु चल सकते हैं? गुरु तो सुगंधीदार होने चाहिए।

### उन्हें मिलेंगे जगत् के सभी सूत्र

जिनकी सर्वस्व प्रकार की भीख खत्म हो गई, उनके हाथ में इस जगत् के तमाम सूत्र दिए जाते हैं, लेकिन भीख जाए तब न! कितने प्रकार की भीख! लक्ष्मी की भीख, कीर्ति की भीख, विषयों की भीख, शिष्यों की भीख, मंदिर बनवाने की भीख, सारी भीख, भीख और भीख ही है! वहाँ आपको क्या प्राप्त होगा?

### धर्म या धंधा?

और यह तो, लोग सिर्फ बिज़नेस में ही पड़े हैं। वे लोग धर्म के बिज़नेस में पड़े हैं। उन्हें खुद को पुजवाकर फायदा उठाना है। हाँ, और ऐसी दुकानें तो हिन्दुस्तान में बहुत सारी हैं। ऐसी क्या दो-तीन दुकाने ही हैं? वे तो बेहिसाब हैं लेकिन हम उन दुकानदारों से ऐसा कैसे कह सकते हैं? यदि वह कहे कि, 'मुझे दुकान खोलनी है' तो हम उसे मना भी कैसे कर सकते हैं? तो ग्राहक को हमें क्या कहना चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** रोकना चाहिए।

**दादाश्री :** नहीं, रोक नहीं सकते। दुनिया में तो ऐसा चलता ही रहेगा।

**प्रश्नकर्ता :** आजकल तो करोड़ों रुपयों का चंदा इकट्ठा करके आश्रम बनवा रहे हैं न, लोग उसके पीछे पड़े हैं।

**दादाश्री :** लेकिन ये रुपये ही ऐसे हैं न! रुपयों में बरकत नहीं है, इसलिए।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन यदि वे लक्ष्मी को सही रास्ते खर्च करें, शिक्षण के काम में खर्च करें या किसी उपयोगी सेवा में खर्च करें तो ?

**दादाश्री :** ऐसे खर्च कर सकते हैं, फिर भी मेरा कहना है कि उससे भगवान को कुछ नहीं पहुँचता। वह अच्छे रास्ते खर्च हो तो उसमें से ज़रा सा खेत में जाए तो बहुत अच्छी उपज होगी लेकिन उससे उसे क्या लाभ हुआ? बाकी, जहाँ लक्ष्मी है, वहाँ धर्म नहीं होता। जहाँ लक्ष्मी जितनी ज़्यादा है, वहाँ धर्म उतना ही कच्चा है!

**प्रश्नकर्ता :** लक्ष्मी आए तो फिर उसका ध्यान रखना पड़ेगा, व्यवस्था करनी पड़ेगी।

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा नहीं है। उसकी व्यवस्था के लिए नहीं। व्यवस्था के लिए लोग तो कहेंगे, 'ऐसा कर लेंगे' लेकिन जहाँ लक्ष्मी है वहाँ धर्म उतना कच्चा। क्योंकि सब से बड़ी माया है लक्ष्मी और स्त्री! ये दोनों सब से बड़ी माया है। जहाँ माया है वहाँ भगवान नहीं होते जबकि भगवान हों वहाँ माया नहीं होती।

और पैसा घुसा, तो कितना पैसा घुस जाएगा उसका क्या ठिकाना ? यहाँ कोई नियम है ? इसलिए पैसा तो मूल से ही नहीं होना चाहिए। शुद्ध होकर आइए, धर्म को मैला मत करना!

### जहाँ फीस है, वहाँ नहीं है धर्म

फिर, फीस रखते हैं सब, जैसे कोई नाटक हो, वैसा! नाटक में फीस रखते हैं, फिर वैसे फीस रखते हैं। उनमें पाँच प्रतिशत अच्छे भी होते हैं। बाकी तो, जैसे सोने के भाव बढ़ गए, वैसे ही उनके भाव भी बढ़ जाते हैं न! इसीलिए मुझे पुस्तक में लिखना पड़ा है कि जहाँ पैसों का लेन-देन है वहाँ भगवान नहीं हैं और धर्म भी नहीं है। जहाँ

पैसों का लेन-देन नहीं है, व्यापार जैसा नहीं, वहाँ भगवान हैं! पैसे, लेन-देन वह व्यापार कहलाता है।

सभी जगह पैसा। जहाँ जाओ वहाँ पैसा, जहाँ जाओ वहाँ पैसा! सब जगह फीस, फीस और फीस हैं! हाँ! फिर बेचारे गरीबों ने क्या गुनाह किया है? और फीस रखो तो गरीबों के लिए ऐसा कहो कि, 'भाई, गरीबों से सिर्फ चार आने लेंगे, बहुत हो गया' तब तो गरीब भी वहाँ जा सकेंगे। यहाँ तो सिर्फ धनवान ही लाभ लेते हैं। बाकी, जहाँ फीस रखी हो वहाँ क्या दशा होगी? एक बार 'ज्ञान' लेने के लिए तो आप खर्च कर दोगे लेकिन बाद में कहेंगे, 'ज्ञान मज़बूती से पालेंगे, लेकिन अब दोबारा फीस नहीं देंगे।'

हम किसी का नाम लें वह गलत कहलाएगा। यह तो आपको रूपरेखा दे रहा हूँ कि आजकल धर्म की क्या दशा हो गई है। गुरु जो व्यापारी बन बैठे हैं, वह सब गलत है। जहाँ प्रेक्विशनर होते हैं, फीस रखते हैं कि आज आठ-दस रुपये फीस है, कल बीस रुपये फीस है तो वह सब बेकार है।

जहाँ पैसों का व्यापार है वहाँ गुरु हैं, ऐसा नहीं कहा जाएगा। जहाँ टिकट है, वह सब रामलीला कहलाती है। लेकिन लोगों को भान नहीं रहा इसलिए बेचारे टिकट वालों के वहीं चले जाते हैं क्योंकि वहाँ पर झूठ है और वह खुद भी झूठा है इसलिए दोनों एडजस्ट हो जाते हैं। यानी एकदम झूठ और एकदम पोलम्पोल चल रहा है बिल्कुल।

ये तो फिर कहेंगे, 'मैं निःस्पृह हूँ, मैं निःस्पृह हूँ'। अरे, ऐसा क्यों बार-बार गा रहा है! तू यदि निःस्पृही हो तो तुझ पर कोई शंका नहीं करने वाला। और यदि तू स्पृहा वाला है, तो तू चाहे कुछ भी कह ले, फिर भी तुझ पर शंका किए बगैर नहीं रहेंगे। क्योंकि तेरी स्पृहा ही बता देगी। तेरी नीयत ही बता देगी।

### उसमें दोष किसका?

ये सब तो भीख के लिए निकले हैं। अपना पेट भरने निकले

हैं। हर कोई अपना पेट भरने निकला है। या फिर अगर पेट नहीं भरना हो, तो कीर्ति फैलानी हो। कीर्ति की भीख, लक्ष्मी की भीख, मान की भीख! यदि बिना भीख वाला व्यक्ति होगा तो उनसे जो माँगो वह प्राप्त होगा। भीख वाले के पास हम जाएँ तो वह खुद ही सुधरा हुआ नहीं होगा और हमें भी नहीं सुधार पाएगा, क्योंकि दुकानें खोल रखी हैं लोगों ने। और ये ग्राहक भी मिल आते हैं आराम से!

एक व्यक्ति ने मुझसे पूछा कि, 'उसमें दुकानदार का दोष है या ग्राहकों का?' मैंने कहा, 'ग्राहकों का दोष'! दुकानदार तो चाहे कैसी भी दुकान लगाकर बैठे लेकिन क्या हमें नहीं समझना चाहिए? ज़रा सा आटा पिन में चुपड़कर मछुआरा उसे तालाब में डालता है तो उसमें मछुआरे का दोष है या खाने वाले का? जिसे लालच है उसका दोष है या मछुआरे का? जो पकड़ा जाए उसका दोष! ये सब लोग पकड़े ही गए हैं न, इन सब गुरुओं से!

लोगों को अपनी पूजा करवानी है, इसलिए संप्रदाय बना दिए हैं। इसमें दोष बेचारे ग्राहकों का नहीं है। दलालों का दोष है। इन दलालों का पेट भरता ही नहीं और जगत् का भरने नहीं देते। इसलिए मैं यह खुला करना चाहता हूँ। ये तो दलाली में ही आनंद और मौज कर रहे हैं और खुद की सेफसाइड ही ढूँढ ली है लेकिन उन्हें नहीं कहना कि उनका दोष है। कहकर क्या फायदा, भाई? उसे दुःख होगा। हम दुःख खड़ा करने-करवाने नहीं आए हैं। हमें तो समझने की ज़रूरत है कि कमी कहाँ है? अब दलाल क्यों खड़े रहे हैं? क्योंकि बिक्री बहुत है इसलिए। यदि बिक्री न हो तो दलाल लोग कहाँ जाएँगे? चले जाएँगे। लेकिन मूलतः तो बिक्री का दोष है न! इसलिए मूल दोष तो अपना ही है! दलाल कब तक टिकेंगे? बिक्री हो तब तक। अभी ये मकानों के दलाल कब तक चलते रहेंगे? मकानों के ग्राहक होंगे तभी तक। वर्ना बंद, चुप!

### कलियुग, तेरी रीति उल्टी

बाकी, आजकल तो संत व्यापारी बन गए हैं। जहाँ पैसों का

व्यापार चले, वे संत ही नहीं कहलाएँगे और लोगों को इसकी समझ ही नहीं है। सही हो तो उसकी भी कीमत और गलत हो तो उसकी भी कीमत। गलत की कीमत ज्यादा है। गलत है वह मीठा बोलता है न कि, 'आइए चंदूभाई, आइए चंदूभाई'। वह कड़वा नहीं बोलता न? इसलिए गलत की कीमत ज्यादा है वह भी इसी काल में, अन्य काल में ऐसा नहीं था। अन्य काल में तो झूठे की कीमत ही नहीं थी न!

संत पुरुष, तो पैसे लेते ही नहीं। दुःखी है इसलिए तो वह आपके पास आया है और ऊपर से उसके सौ हड़प लिए! हिन्दुस्तान को यदि किसी ने खत्म किया हो, तो ऐसे संतों ने खत्म किया है। संत तो उसे कहा जाता है जो अपना सुख दूसरों को दे दें, सुख लेने नहीं आए होते।

### लेने वाला होगा दिवालिया

ये क्या सुखी हैं? मूलतः तो लोग दुःखी ही हैं और उनसे रुपये लेते हो? दुःख मिटाने के लिए तो गुरु के पास जाते हैं न! तब आप उनसे पच्चीस रुपये लेकर उनका दुःख बढ़ाते हो! एक पाई नहीं लेनी चाहिए। दूसरों से कुछ भी लेने का नाम जुदाई है और उसी को संसार कहते हैं। वही उसमें भटका हुआ है। जो लेने वाला व्यक्ति है, वह, 'भटका हुआ' कहा जाएगा। उसे पराया समझता है इसलिए वह पैसे लेता है।

इस दुनिया की कोई भी चीज़, यदि एक रुपया भी मैं खर्च करूँ, तो मैं उतना गरीब हो जाता हूँ। भक्तों की एक पाई भी खर्च नहीं कर सकते। यह व्यापार जिन्होंने शुरू किया है, वे खुद ही दिवालिया की स्टेज में जाएँगे। इसलिए उन्हें जो भी सिद्धि प्राप्त हुई है, वह खोकर चले जाएँगे। जो भी थोड़ी-बहुत सिद्धि प्राप्त हुई, उसके आधार पर लोग इकट्ठे होते थे लेकिन फिर सिद्धि खत्म हो जाएगी। किसी भी सिद्धि का दुरुपयोग करो तो सिद्धि खत्म हो जाती है।

## यहाँ माँगो, रखो नहीं

कुछ लोग यहाँ आकर पैसे रखते हैं। अरे, यहाँ पैसे नहीं रखने हैं, यहाँ माँगने हैं, यहाँ क्या देना होता है? जहाँ ब्रह्मांड के मालिक बैठे हुए हैं, क्या वहाँ कुछ देना होता है? आपको तो माँगना है कि मुझे ऐसी अड़चनें हैं, वे निकाल दीजिए। बाकी, पैसे तो किसी गुरु को देना। उन्हें कुछ कपड़े चाहिए हों, और कुछ चाहिए हो, तो। ज्ञानी पुरुष को तो कुछ भी नहीं चाहिए!

यह संघ इतना अधिक शुद्ध है कि मैं (दादाजी) तो अपने घर के कपड़े और धोती पहनता हूँ। मेरे खुद के कमाए हुए, खुद की कमाई में से ही, इसलिए ऐसे साधारण (कपड़ों में) घूमता हूँ। संघ के पहनता तो धोती चार सौ-चार सौ की भी मिलती है न? अरे, मैं तो नहीं लेता, लेकिन ये (नीरू) बहन भी नहीं लेतीं! ये बहन भी मेरे साथ रहती हैं और वे अपने घर के कपड़े पहनती हैं।

## पैसे नहीं, दुःख लेने आया हूँ

एक मिल के सेठ ने सांताक्रुज़ में, जहाँ हम रहते थे, वहाँ इतनी बड़ी-बड़ी तीन पेटियाँ मजदूरों के साथ ऊपर भिजवाईं। फिर सेठ ऊपर मिलने आए। मैंने पूछा, 'सेठ, यह सब क्या है?' तब सेठ ने कहा, 'कुछ नहीं, फूल नहीं तो फूल की पँखुड़ी...'। मैंने कहा, 'किसलिए ये पँखुड़ी लाए हो?' तब वे कहने लगे, 'कुछ नहीं, कुछ नहीं साहब'। मैंने पूछा, आपको कोई दुःख या अड़चन है? तब उन्होंने कहा, 'बच्चा चाहिए'। अरे, बच्चे किस जन्म में नहीं थे? कुत्ते में गया वहाँ भी बच्चे, गधे में गया वहाँ भी बच्चे, बंदर बना तो वहाँ भी बच्चे, जहाँ गया वहाँ बच्चे। 'अरे, किस जन्म में नहीं थी यह मिट्टी? अभी भी यह मिट्टी चाहिए? भगवान आप पर खुश हुए हैं तब भी आप मिट्टी ढूँढ रहे हो? और मुझे रिश्त देने आए हो? अपनी सिनक मुझे चुपड़ने आए हो? मैं व्यापारी आदमी हूँ, फिर मुझे सिनक आए तो मैं किसे चुपड़ने जाऊँ? बाहर इन सब गुरुओं को चुपड़ आओ। उन बेचारों

को सिनक नहीं मिलती है। यह मुसीबत यहाँ क्यों लाए? तब वे कहने लगे कि, 'साहब, कृपा कीजिए'। तब मैंने कहा, 'हाँ, कृपा करेंगे, सिफारिश करेंगे।'

आपको जो दुःख है उसके लिए हमें तो बीच में, 'इस तरफ' का फोन लेना है और 'उस तरफ' करना है। हमारा, बीच में कुछ भी नहीं है। सिर्फ एक्सचेन्ज करना है। वर्ना हम ज्ञानी पुरुष को तो ऐसा होता ही नहीं न! ज्ञानी पुरुष इसमें हाथ नहीं डालते लेकिन इन सभी के दुःख सुनने पड़े हैं न! ये सारे दुःख मिटाने पड़े होंगे न? अड़चन आए तो रुपये माँगने आ जाना! अब, मैं तो कोई रुपये देता नहीं। मैं फोन जरूर कर दूँगा! लेकिन लोभ मत करना। तुझे अड़चन हो तभी आना। तेरी अड़चन मिटाने के लिए सब करूँगा लेकिन लोभ करने जाएगा तो मैं उसी समय बंद कर दूँगा।

आपके दुःख मुझे सौंप दो और आपको यदि विश्वास होगा तो वे आपके पास नहीं आएँगे। मुझे सौंपने के बाद यदि आपका विश्वास टूटेगा तो आपके पास वापस आएँगे। इसलिए यदि आपको कोई दुःख हो तो मुझे कहना कि, 'दादाजी' मुझे इतने दुःख हैं वे मैं आपको सौंप देता हूँ। मैं वे ले लूँगा तो निबेड़ा आएगा, वर्ना निबेड़ा कैसे आएगा?

मैं इस दुनिया में दुःख लेने आया हूँ। आपके सुख आपके पास रहने दो, उसमें क्या आपको कोई हर्ज है? आप जैसे लोग यहाँ पैसे देंगे तो मुझे पैसों का क्या करना है? मैं तो दुःख लेने आया हूँ। आपके पैसे आपके पास रहने दो, वे आपके काम आएँगे और जहाँ ज्ञानी हों वहाँ पैसों का लेन-देन नहीं होता। ज्ञानी तो बल्कि आपके सभी दुःख मिटाने आए होते हैं, दुःख बढ़ाने के लिए नहीं आए होते हैं।

एक व्यक्ति को तो शुद्ध रहने दो इस दुनिया में। उन सेठ से मैंने कहा, 'आप लोग किसी को शुद्ध (प्योर) नहीं रहने दोगे। एक को शुद्ध रहने दो। दुनिया में कोई सबूत रहेगा। ऐसे तो आप सबूत ही मिटा रहे हो'। उसके बाद वे शांत हो गए। फिर मैंने कहा, 'आप

आओ-जाओ, दर्शन करो, सब करो, आपकी इच्छाएँ पूरी होंगी ऐसा है। ज्ञानी पुरुष के पास लेकिन इच्छा नहीं रखनी है। आपको सौंप देना है कि 'साहब, आपको सौंप दिया सब बात' तो आपकी इच्छाएँ पूरी हो जाएँगी।' लेकिन ऐसी रिश्त लाया यहाँ? मुझे चुपड़ने आया है? अब यह क्वालिटी कैसी है? ज्ञानियों को भी नहीं छोड़े, ऐसी है। साधु-सन्यासियों को तो ठीक है, क्योंकि उन्हें सिनक नहीं आती। अगर उनको चुपड़ आए तो हर्ज नहीं है। लेकिन हमें सिनक चुपड़ने आए? फिर मैं किसे चुपड़ने जाऊँ? ऐसा कहा तो वे सेठ घबरा उठे। वैसे तो बहुत चालाक होते हैं, चंचल होते हैं!

### 'हम' आउट ऑफ बाउन्ड्री में

इस दुनिया में, एक घर शुद्ध रखना है, और भी बहुत से लोग शुद्ध होंगे, लेकिन वे शुद्ध भी उनकी बाउन्ड्री में हैं। आउट ऑफ बाउन्ड्री नहीं रह सकते। यह आउट ऑफ बाउन्ड्री! अभी वर्ल्ड की बाउन्ड्री में हैं।

सबकुछ पास होते हुए भी नहीं भोगते। खुद के पास है, इसके बावजूद भी हमें विचार नहीं आते और उनके पास नहीं है इसलिए विचार नहीं आते।

जब तक कोई रिश्त के पैसे देने वाला नहीं आता, तब तक रिश्त के विचार नहीं आते। ऐसा एविडेन्स नहीं मिला है। और ऐसे दृढ़ निश्चयी लोग भी हैं जिन्हें कोई देने आए तो भी न लें ऐसे भी हैं। लेकिन वे बाउन्ड्री में कहलाएँगे। मनुष्य आउट ऑफ बाउन्ड्री में नहीं रह सकते। वह तो ज्ञानी पुरुष का ही काम है। जो देह से परे हो चुके हैं, देहातीत हो चुके हैं, दूसरों का काम नहीं है।

### सोना या फ़ंदा?

प्योरिटी है नहीं इस दुनिया में। सबकुछ इम्प्योर है। अब कहीं पर अच्छे संत पुरुष होंगे, सीधे लोग होंगे, तो उनमें कुशलता नहीं



होती। सीधे होते हैं तो कुशलता नहीं होती! सीधे हैं, हैं अंदर से! यदि मैं लोगों से पैसे लूँ, तो लोग तो मुझे जितने चाहिए उतने पैसे देंगे। लेकिन मुझे पैसों का क्या करना है? क्योंकि वह सारी भीख खत्म होने के बाद ही तो मुझे यह ज्ञानी का पद मिला है!

मुझे अमरीका में गुरुपूर्णिमा के दिन, सोने की चेन पहना जाते थे, दो-दो, तीन-तीन तोले की! लेकिन मैं वापस कर देता था सब को, क्योंकि मुझे क्या करना है? तब एक बहन रोने लगी कि, 'मेरी माला तो लेनी ही पड़ेगी।' तब मैंने उसे कहा, 'मैं आपको एक माला पहनाऊँ तो पहनोगी क्या?' तो उस बहन ने कहा कि, 'मुझे कोई एतराज नहीं है लेकिन मैं आपका नहीं ले सकती।' तब मैंने कहा, 'मैं आपको दूसरे से पहनवाऊँगा। एक मन सोने की माला बनवाएँ और फिर रात को वह पहनकर सोना पड़ेगा। ऐसी शर्त रखें तो क्या पहनकर सो सकती हो?' अगले दिन कहोगी, 'लो दादाजी, यह आपका सोना।' यदि सोने में सुख होता तो सोना ज्यादा मिले तो आनंद होना चाहिए। 'इसमें सुख है', यह मान्यता है आपकी। रोंग बिलीफ है। क्या इसमें सुख हो सकता है? सुख तो, जहाँ कोई भी चीज़ न लेनी हो, वहाँ सुख है। इस वर्ल्ड में कोई भी चीज़ ग्रहण नहीं करनी हो, वहाँ पर सुख है।

### भगवान को अर्पण करो

आप सारे पैसे कमाने में लगाते हो, जबकि मैं कहता हूँ कि, 'अरे, पैसे खर्च कर दो यहाँ और मैं तो पैसे छूता भी नहीं।' पैसे सत्य नहीं हैं। संपूर्ण सत्य नहीं है। वह सापेक्ष सत्य है। यह सोना मुझे दो तो, वह मेरे काम का ही नहीं है। मुंबई में सभी बहनों ने गले की मालाएँ निकालकर दीं तो मैंने कहा कि, 'ये मेरे काम की नहीं है। यदि आपको मोह हो तो रहने देना। मुझे आपके ये नहीं चाहिए।' तब उन्होंने कहा, 'नहीं, हमने इतना भाव किया है, इसलिए दे देना है।' तो मैंने कहा कि, 'आपकी मर्जी की बात है। बाकी हमें नहीं चाहिए।' 'सीमंधर स्वामी भगवान के मुकुट बनाने के लिए ऐसा भाव किया है।' तब मैंने कहा, 'दे दो आप।' बाकी, हमें कुछ नहीं चाहिए।

## रहने दो हमें शुद्ध

मैं तो खुद के घर का, खुद के व्यापार की आय में से, मेरे प्रारब्ध का खाता हूँ और कपड़े पहनता हूँ। मैं किसी का पैसा लेता भी नहीं और किसी का दिया हुआ पहनता भी नहीं। ये धोती भी अपनी कमाई की पहनता हूँ। यहाँ से मुंबई जाने का प्लेन का किराया मेरे घर के पैसों से देता हूँ! फिर पैसों की ज़रूरत ही कहाँ रही? मैं तो अगर एक भी पैसा लोगों से लूँ तो मेरे शब्द लोगों को मान्य ही कैसे होंगे? क्योंकि मैंने उसके घर की जूठन खाई। हमें कुछ भी नहीं चाहिए। जिन्हें किसी प्रकार की भीख ही नहीं, उन्हें भगवान भी क्या दे देंगे?

एक व्यक्ति मुझे धोती देने आया, कोई कुछ और देने आया। यदि मेरी इच्छा हो तो बात अलग है लेकिन मेरे मन में किसी चीज़ की इच्छा ही नहीं है! मुझे तो, फटा हुआ हो तो भी चलेगा। इसलिए मेरा कहना है कि जितना शुद्ध रखोगे उतना इस जगत् के लिए लाभदायी हो जाएगा!

## शुद्ध किसे कहें?

इस दुनिया में जितनी शुद्धता, उतनी ही यह दुनिया आपकी! आप मालिक हो इस दुनिया के! जितनी आपकी शुद्धता!! मैं छब्बीस सालों से देह का मालिक नहीं हूँ इसलिए हमारी शुद्धता संपूर्ण है! अतः शुद्ध (प्योर) हो जाओ, शुद्ध!

**प्रश्नकर्ता :** शुद्धता का स्पष्टीकरण कीजिए।

**दादाश्री :** शुद्धता अर्थात् जिसे इस दुनिया की किसी भी चीज़ की ज़रूरत न हो, जिसे भिखारीपना ही न हो!

## वह तो, उच्छेद कर दे

यानी आत्मा तो अलग ही वस्तु है, और लोगों को हर जगह धर्म में व्यापार चाहिए। कहते हैं, 'व्यापार में धर्म रखना।' जो भी

व्यापार करते हो उसमें धर्म रखना। लेकिन धर्म में व्यापार मत करना वर्ना उच्छेदन हो जाएगा (जड़मूल से वंशावली खत्म हो जाएगी)। उच्छेदन यानी किसका? सिर्फ बेटे का ही नहीं, सिर्फ बेटे का उच्छेदन होता तो फायदेमंद रहता। इससे तो भीतर से पूरा उच्छेदन हो जाता है। भीतर से उच्छेदन हो जाएगा और फिर मिलेगा पत्थर का जन्म। पहाड़ होकर पड़ा रहेगा, लाखों सालों तक। अरे, धर्म में व्यापार मत करना। फिर भी लोगों ने धर्म में व्यापार किए हैं।

ठीक है, घर पर पाँच, सात, दस लोग आ जाते हैं और चलता है। फिर मिल भी जाते हैं। 'जैसे को तैसा मिला, तैसे को मिली ताई। तीनों ने मिलकर पुंगी बजाई'। तीनों पुंगी बजाते हैं और फिर सब चलता रहता है।

इतना ही यदि समझ जाए तो धर्म में व्यापार मत करना। धर्म में किंचित्मात्र भी व्यापार नहीं। व्यापार, व्यापार की जगह पर करना और लोगों से कहना कि यहाँ धर्म नहीं, अभी मैं व्यापार करने के लिए बैठा हूँ। इस तरह से व्यापार करना। किसी के वहाँ नाश्ता करने जाओ तो कहना कि, 'भाई, अभी मुझ में व्यापारी भाव है', तो उससे दोष नहीं लगेगा। यदि तू इतना जान जाएगा तो ठगा नहीं जाएगा। वर्ना खुद भी ठगा जाएगा। बेभानपन हो जाएगा और जोखिमदारी आएगी।

### इसमें नहीं है कोई दोषित

और इन आचार्य महाराज ने गलत नहीं किया है। मंदिर आदि बनवाया और भी बहुत कुछ किया। कुछ काम तो किया ही है बेचारों ने! मंदिर बनवाए, बड़े-बड़े अस्पताल बनवाए। ऐसा सब किया, कुछ तो उपाय किए न और वे कोई कर्ता नहीं हैं। हमें इस जगत् में कोई भी जीव दोषित नहीं दिखता। हमें कोई गालियाँ दे तब भी वह दोषित नहीं दिखाई देता और हमें फूल चढ़ाए तब भी दोषित नहीं दिखाई देता।

फिर हम ये दूसरी बातें क्यों करते हैं! जानने के लिए हैं ये! और वह भी मैं नहीं करता। वह भी टेपरिकॉर्ड है। मैं करता होऊँ तो मैं

पकड़ा जाऊँ। मैं पकड़ में आऊँ ऐसा हूँ नहीं। मैं पकड़ में आऊँ ऐसा इंसान ही नहीं हूँ। वीतरागों ने क्या किया? पूरे जगत् को अंटी में डालकर, वीतराग होकर बैठ गए। पूरे जगत् को अंटी में डाल दिया, एकदम से।

### अब भी जागो

इस काल में अब भी कुछ समझने लायक है। अब काल ऐसा आ रहा है कि लगभग दो-तीन हजार साल तक ठीक चलेगा। बहुत ऊँची स्थिति आएगी। भगवान महावीर के समय जैसी स्थिति आएगी। इसलिए उस अरसे में काम निकाल लो तो अच्छा है। अब नए सिरे से परिणति बदलनी है कि अब ज्ञानी के लिए ही जीना है। बाकी का सब तो हिसाब है न, तो मिलता रहेगा, आपको कार्य करते रहना है। आपका कार्य करना है। फल तो उसका मिलता ही रहेगा। बाकी सारे भाव, दूसरी परिणति बदलने जैसी है। बाकी, क्या साथ ले जाने वाले हो यह सब?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** तो ऐसा है न, जो किया उसके लिए पछतावा करो। अभी भी पछतावा करोगे तो इसी देह में रहते हुए पाप भस्मभूत कर सकोगे। पछतावे की ही सामायिक करो। किसकी सामायिक? पछतावे की ही सामायिक। कैसा पछतावा? तब कहते हैं, मैंने लोगों से गलत पैसे लिए, वे सारे जिनके भी लिए हों, उनका नाम लेकर, उनका चेहरा याद करके, व्यभिचार आदि किया हो, दृष्टि बिगाड़ी हो, वे सभी पाप धोने हों तो अभी भी धो सकते हो।

### प्योरिटी ही आकर्षित करती है सब को

लोगों का कल्याण तो कब होगा? जब हम बिल्कुल शुद्ध हो जाएँगे, तब, बिल्कुल शुद्ध! प्योरिटी ही सभी को, पूरे संसार को आकर्षित करती है! प्योरिटी!!! प्योर वस्तु जगत् को आकर्षित करती है। इम्योर चीज संसार को फ्रेक्चर कर देती है। इसीलिए प्योरिटी लानी है!

- जय सच्चिदानंद

## पैसों के व्यवहार से संबंधित आप्तसूत्र

- ❖ दो कारणों से लोग जीते हैं। आत्मा के लिए जीने वाला तो कोई ही व्यक्ति होता है। अन्य सभी लक्ष्मी के लिए जीते हैं। पूरा दिन लक्ष्मी, लक्ष्मी और लक्ष्मी!
- ❖ लक्ष्मी 'लिमिटेड' है और लोगों की माँगें 'अनूलिमिटेड' हैं।
- ❖ कमाई हो तब खेद करना चाहिए कि कहाँ खर्च करेंगे? और खर्चे आएँ तो मज़बूत हो जाना चाहिए कि ऋण चुकाने का संयोग मिला। कमाई, वह ज़िम्मेदारी है और खर्चा तो चुकाने का, ऋण से छूटने का साधन है।
- ❖ पैसे खर्च हो जाएँगे ऐसी जागृति कभी रखनी ही नहीं चाहिए। जिस समय जो खर्च हो जाए वही सही इसलिए पैसे खर्च करने को कहा था, जिससे लोभ छूट जाए और बार-बार दिया जा सके।
- ❖ पैसों का अंतराय कब तक होता है? जब तक कमाने की इच्छा हो तब तक। पैसों की ओर लक्ष्य हटे तो वह ढेर सारा आएगा।
- ❖ लक्ष्मी जी का दुरुपयोग करना तो बहुत बड़ा गुनाह है।
- ❖ लोभी के दो गुरु हैं, एक ठग और दूसरा है नुकसान। जब नुकसान होता है न, तो लोभ की ग्रंथि को तेज़ी से तोड़ देता है!
- ❖ लोभ का मतलब क्या है? दूसरों का हड़प लेना।
- ❖ धन का बोझ रखने जैसा नहीं है। बैंक में जमा हो तो आनंद होता है और जाए तो दुःख होता है। इस जगत् में कुछ भी आनंद लेने जैसा नहीं है क्योंकि टेम्पेरी है।
- ❖ लक्ष्मी सहज भाव से आती हो तो आने देना चाहिए, लेकिन उसके सहारे मत रहना। 'सहारा' लेकर 'चैन' से बैठ जाएँ लेकिन वह सहारा कब चला जाएगा कुछ कहा नहीं जा सकता। इसलिए सावधान रहो ताकि *अशाता* (दुःख-परिणाम) वेदनीय में परेशान न होना पड़े।

- ❖ ईमानदारी से व्यापार करना। फिर जो हो वह सही, लेकिन हिसाब मत लगाना।
- ❖ व्यापार के दो बेटे हैं, एक का नाम नुकसान और एक का नाम फायदा। नुकसान वाला बेटा किसी को भी पसंद नहीं है लेकिन दोनों ही होते हैं। वे दोनों तो जन्मे ही होते हैं।
- ❖ लक्ष्मी कब नहीं मिलती? लोगों की निंदा-चुगली में पड़ें, तब। मन की स्वच्छता, देह की स्वच्छता और वाणी की स्वच्छता हो, तब लक्ष्मी मिलेगी।
- ❖ वास्तव में, ठगने वाले खुद ही ठगे जाते हैं! और जो ठगा जाता है वह अनुभव प्राप्त करता है, गढ़ा जाता है। जितना गलत धन होता है, उतना ही लुटता है और सही धन सुमार्ग में खर्च होता है!

## मूल गुजराती शब्दों के समानार्थी शब्द

अणहक्क	- बिना हक्क का, अवैध
पूरण	- चार्ज होना, भरना
गलन	- डिस्चार्ज होना, खाली होना
अशाता	- दुःख-परिणाम, अशांति
शाता	- सुख-परिणाम
तरछोड़	- तिरस्कार सहित दुत्कारना
उपाधि	- बाहर से आने वाला दुःख, परेशानी
निकाल	- निपटारा
पोतापणुं	- मैं हूँ और मेरा है ऐसा आरोपण, मेरापन
चोविहार	- सूर्यास्त से पहले भोजन करना
ऑन	- मूल कीमत से ज्यादा में बेचना, ऊपर के पैसे
लागणी	- सुख-दुःख की अनुभूति, लगाव, भावुकता वाला प्रेम
उद्दीरणा	- भविष्य में फल देने वाले कर्मों को समय से पहले परिपक्व करके वर्तमान में खपाना
अजंपा	- बेचैनी, अशांति, घबराहट, आक्रोश, अकुलाहट
कढ़ापा	- कुढ़न, क्लेश
पुद्गल	- जो पूरण और गलन होता है
ऊपरी	- बॉस
लक्ष	- जागृति

## दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें

- |  |   |
|--|---|
| <ol style="list-style-type: none"> <li>1. आत्मसाक्षात्कार</li> <li>2. ज्ञानी पुरुष की पहचान</li> <li>3. सर्व दुःखों से मुक्ति</li> <li>4. कर्म का सिद्धांत</li> <li>5. आत्मबोध</li> <li>6. मैं कौन हूँ ?</li> <li>7. पाप-पुण्य</li> <li>8. भुगते उसी की भूल</li> <li>9. एडजस्ट एवरीव्हेयर</li> <li>10. टकराव टालिए</li> <li>11. हुआ सो न्याय</li> <li>12. चिंता</li> <li>13. क्रोध</li> <li>14. प्रतिक्रमण ( सं, ग्रं )</li> <li>16. दादा भगवान कौन ?</li> <li>17. पैसों का व्यवहार ( सं, ग्रं )</li> <li>19. अंतःकरण का स्वरूप</li> <li>20. जगत कर्ता कौन ?</li> <li>21. त्रिमंत्र</li> <li>22. भावना से सुधरे जन्मोंजन्म</li> <li>23. चमत्कार</li> <li>24. प्रेम</li> <li>25. समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य ( सं, पू, उ )</li> <li>28. दान</li> <li>29. मानव धर्म</li> </ol> | <ol style="list-style-type: none"> <li>30. सेवा-परोपकार</li> <li>31. मृत्यु समय, पहले और पश्चात्</li> <li>32. निजदोष दर्शन से... निर्दोष</li> <li>33. पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार ( सं )</li> <li>34. क्लेश रहित जीवन</li> <li>35. गुरु-शिष्य</li> <li>36. अहिंसा</li> <li>37. सत्य-असत्य के रहस्य</li> <li>38. वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी</li> <li>39. माता-पिता और बच्चों का व्यवहार ( सं )</li> <li>40. वाणी, व्यवहार में... ( सं )</li> <li>41. कर्म का विज्ञान</li> <li>42. सहजता</li> <li>43. आप्तवाणी - 1</li> <li>44. आप्तवाणी - 2</li> <li>45. आप्तवाणी - 3</li> <li>46. आप्तवाणी - 4</li> <li>47. आप्तवाणी - 5</li> <li>48. आप्तवाणी - 6</li> <li>49. आप्तवाणी - 7</li> <li>50. आप्तवाणी - 8</li> <li>51. आप्तवाणी - 9</li> <li>52. आप्तवाणी - 13 ( पू, उ )</li> <li>54. आप्तवाणी - 14 ( भाग-1 )</li> <li>55. ज्ञानी पुरुष ( भाग-1 )</li> </ol> |
|--|---|

( सं - संक्षिप्त, ग्रं - ग्रंथ, पू - पूर्वार्ध, उ - उत्तरार्ध )

- ★ दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा गुजराती भाषा में भी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। वेबसाइट [www.dadabagwan.org](http://www.dadabagwan.org) पर से भी आप ये सभी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।
- ★ दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा हर महीने हिन्दी, गुजराती तथा अंग्रेजी भाषा में "दादावाणी" मैगज़ीन प्रकाशित होता है।



## संपर्क सूत्र

### दादा भगवान परिवार

अडालज : त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाईवे,  
पोस्ट : अडालज, जि.-गांधीनगर, गुजरात - 382421  
फोन : 9328661166, 9328661177  
E-mail : info@dadabhagwan.org

मुंबई : त्रिमंदिर, ऋषिवन, काजुपाडा, बोरिवली (E)  
फोन : 9323528901

---

---

दिल्ली	: 9810098564	बेंगलूर	: 9590979099
कोलकता	: 9830080820	हैदराबाद	: 9885058771
चेन्नई	: 7200740000	पूणे	: 7218473468
जयपुर	: 8890357990	जलंधर	: 9814063043
भोपाल	: 6354602399	चंडीगढ़	: 9780732237
इन्दौर	: 6354602400	कानपुर	: 9452525981
रायपुर	: 9329644433	सांगली	: 9423870798
पटना	: 7352723132	भुवनेश्वर	: 8763073111
अमरावती	: 9422915064	वाराणसी	: 9795228541

---

---

U.S.A. : DBVI Tel. : +1 877-505-DADA (3232),  
Email : info@us.dadabhagwan.org

U.K. : +44 330-111-DADA (3232)

Kenya : +254 722 722 063

UAE : +971 557316937

Dubai : +971 501364530

Australia : +61 421127947

New Zealand : +64 21 0376434

Singapore : +65 81129229

---

---

[www.dadabhagwan.org](http://www.dadabhagwan.org)

---

---



## दादाश्री का गणित

हम पैसा बढ़ाते रहें तो कहाँ तक बढ़ेगा ? फिर तो पैसों का मैंने हिसाब लगाया कि इस दुनिया में किसी का पहला नंबर नहीं आया है। लोग कहते हैं कि 'फोर्ड का पहला नंबर है' लेकिन चार साल बाद किसी दूसरे का नाम सुनने को मिलता है। यानी, किसी का भी नंबर टिकता नहीं है, बेकार ही दौड़-भाग करते रहें, इसका क्या अर्थ है ? पहले घोड़े पर इनाम होता है, दूसरे पर थोड़ा देते हैं और तीसरे को भी देते हैं जबकि चौथे को तो झाग निकाल-निकालकर मर जाना है ? मैंने कहा, 'मैं क्यों इस रेसकोर्स में उतरूँ ?' ये लोग तो चौथा, पाँचवाँ, बारहवाँ और सौवाँ नंबर देंगे न ? फिर, हम क्यों बेकार मेहनत करें ? क्या फिर झाग नहीं निकलेगा ? पहला आने के लिए दौड़े और आए बारहवें, फिर तो चाय भी नहीं पिलाते हैं। आपको क्या लगता है ?

- दादाश्री



[dadabagwan.org](http://dadabagwan.org)



Printed in India

Price ₹ 200